

ISSN 2229-547X

वदेह सदेह - १९

(वदेह-सदेह १९, वदेह www.videha.co.in पेटार (अंक २०१-२१६) सँ,
मैवलीक सशेष गद आ पदक एकटा समानान्तर संकलन)

वदेह मैवली साक्ष्य आन्दोलन: मानुषीकह संस्कृतम्



वदेह- पमि मैवली पार्विक ई-पर्विका
ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।



ऐ पोीक सविीकार सुरवित अरि। कॉपीराइट (©) िरकक कवित अनुमक्क वीना पोीक कोनो अंशक िया पक्क िकॉवंग सकत इलेक्ॉकक अिि यारिक, कोनो माध्यमसँ, अिि िनक संगहण ि पुनपयोगक पणाली दारा कोनो रपमे पुनर त्माकत अिि संचाकत-पसाकत नै कएल जा सकैत अरि।

(c) २०००- अदतन। सराक्षीकार सुरक्षित। बदेहमे पकाक्षित सभटा रचना आ आकाइरक सराक्षीकार रचनाकार आ संगहकराक लगमे छह। भालसबक गाछ जे सन २००० सँ याहुक्षटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html

<http://www.geocities.com/ggajendra> आब क्षंकपर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट <http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> (क्षछु क्षन लेल <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> क्षंकपर, सोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016-
<http://videha.com/>

भालसबक गाछ-पथम मैथली ब्लॉग / मैथली ब्लॉग एगीगेटर) केर रपमे इन्टरनेटपर मैथलीक पाचीनतम उपक्षथतक रपमे ब्रदमान अछ। ई मैथलीक पक्षल इन्टरनेट पक्षीका क्षक जकर नाम बादमे १ जनररी २००८ सँ "बदेह" पडलै। इन्टरनेटपर मैथलीक पथम उपक्षथक्षक याि बदेह-पथम मैथली पाक्षीक ई पक्षीका क्षि पहुँचल अछ, जे <http://www.videha.co.in/> पर ई पकाक्षित होइत अछ। आब "भालसबक गाछ" जालरूर 'बदेह' ई-पक्षीकाक परक्ताक संग मैथली भाषाक जालरूरक एगीगेटरक रपमे पयुक्क भऽ रहल अछ। बदेह ई-पक्षीका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c) २०००- अदतन। सराक्षीकार लेखकािीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछ ततऽ संपादकािीन। संपादकािीन। बदेह- पथम मैथली पाक्षीक ई-पक्षीका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेह ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौक्षक आ अपकाक्षित रचना (जकर मौक्षकताक संपूरणउर रदाक्षत लेखक गरक मध्य छह) editorial.staff.videha@gmail.com के मेल अटैचमेण्टक रपमे .doc, .docx, .rtf रा .txt फॉमेटमे पठा सकै छथ। एतऽ पकाक्षित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संगहकर। लोकक्षक लगमे रहतह। सम्पादक 'बदेह' पथम मैथली पाक्षीक ई पक्षीका ऐ ई-पक्षीकामे ई-पकाक्षित/ पथम पकाक्षित रचनाक श्रंट-रेब आकाइरक/ आकाइरक अनुरादक आ मूल आ अनुक्षत आकाइरक ई-पकािीन/ श्रंट-पकािीनक अक्षीकार रखैत छथ। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पक्षीकामे कोनो रॉयल्टीक/ पाक्षशक्षकक पारिीन नै छै। ते रॉयल्टीक/ पाक्षशक्षकक इक्षुक बदेहसँ नै जुडथ, से आगह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त पक्षचय आ अपन सक्षैन कएल गेल फोटो पवेताह, से आिी करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौक्षक अछ, आ पक्षल पकािीनक हेतु बदेह (पाक्षीक) ई पक्षीकाके देल जा रहल अछ। मेल पाप्त होयबाक बाद यथासंभर िीघ (सात क्षनक भीतर) एकर पकािीनक अंकक सूचना देल जायत। एह ई पक्षीकाके मासक ०१ आ १५ क्षक्षके ई पकाक्षित कएल जाइत अछ। ISSN: 2229-547X

मूल्य : 11 र ३५००/- संसकरण: २०१८, २०२२

Videha Sadeha 19: A Collection of Maithili Prose and Verse (source: Videha e-journal issues 201-216 at www.videha.co.in).

अनुक्रम

गद-णि (पृ १-७६४)

गजेहर ठाकुर- मैथिली धकीपीधिया, यूनीकोि धारहुता आ कैथी,
गूगल टासलेटमे मैथिली, धारटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली,
संपादकीय (पृ. २-६४)

काष्मानीजीक पाच टा कश्ता आ ओइपर मुकित झा जीक धप्परी
(पृ. ६५-७८)

पयास पेमी मैथिल- जह्म दैत अष्ट मा बाप करम तऽ अपनेही
(नाटक) (पृ. ७९-१४५)

ओम पकाि झा- सामंत, जस जस सुरसा बदन बढाबा (पृ. १४६-
१४७)

मुना जी- लघुकथा आ धहभाकथा- तुलनात्मक धरेचन, बीहभा कथा
(कोठा राली, बॉस, बङ्गा, झोल, पटकथा), पेम बीहभा कथा
(असरा, संगबे, छुछ दुलार, धहलगध, उफाध, जुडबह्मन, धंधेस,
बखरा, अहधया मे, सेल्फी, खोइछक िन, दासीन, पधक, धनेहक
िर, ऐब की बेधया, परदा पर, पसार.....!, आिराद, आँचर.....!,

उठल्लू, बाट- घाट, दह, देह, मोन आ पेम, परमेशर, क्षया जरए
सगर राक्षा, साढ़े एकैसम सदी, भूख (पृ. १४८-१८७)

अबुदुर रज्जाक- झहैन कथा-१, झहैन कथा-२ (पृ. १८८-१९०)

राजीर करण- बीहझ कथा (पौस, झनेह, नेत, देखौरल ह्याय, पैघ
लोक, खुर्ी, उल्ता पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चट्टि भोजन) (पृ.
१९१-१९८)

नीरज करण बीहझ कथा (नोर, फादसर्णि) (पृ. १९९-१९९)

राम सोगारथ यादर- बीहझ कथा- सपना सपने अश्छ (पृ. २००-
२०२)

नारायर मट्टिला- बीहझ कथा-१, बीहझ कथा-१ (पृ. २०३-२०५)

मलय नाथ मर्णनि- बीहझ कथा- समीकरर, बेकाजक का'ज, कोझ्या
(पृ. २०६-२१०)

जगदानन्द झा 'मनु'- बीहझ कथा (बेटाक बाप, रभसल), पेम बीहझ
कथा (एसगर, पेम, सोहाधान, बेगरता, अझाला जनम, मुँह झाँसा)(पृ.
२११-२१४)

श्रदाचहर झा “बमबम”- बीहझ कथा (आबक जमाय, अभगलाहा, आदझा, भोट, इलेक्सन, हेल्मो,नोन, साढे बाइस, मोहन भोग, जडैत झमनी छाप, नोटक भोट, हकार), पेम बीहझ कथा (झनेह, उडात, जूडाएब, पंचैती) (प. २१५-२३८)

घनश्याम घनेरो- बीहझ कथा (जमाना, नफासी, आरारा के ?, पैरबी, खल्सास, पेटक अँटकर, पेम पेसगी, समुदाय, िज्जा, झरमा, रक्तदान, झ्याद-ताप,काट, करता हूँ - सीझंग, रर (?) साइत, जानेमन, आरिराद, तेरे झरा, झरसान, सहरसाबाली, भझयारा, झजासा, काम अमर, टि-झझ, आराज, कुकूर, सुपर बाए, िझादण भम, बट सारपी, गुलबदन, गुरररा, झटहा, होि, सुख-दु ख, भूलचूक-लेनीदेनी) (प. २३९-२७४)

राजदेर मणलि- एजिस्टमेह्ट (लघुकथा), गंगजझया पोखैर (बीहझ कथा) (पृ. २७५-२८२)

झनेि रझया- बीहझ कथा-१, बीहझ कथा-२ बाबा (पृ. २८३-२८४)

सत्यनारायर झा- बीहझ कथा- सुझया, कुमार साहेब, पजार्ति एकटा मजाक (प. २८५-२९२)

मनोज कुमार मंलि- बीहक्ष कथा (झलकोर, छुतहर, अध्यापन, अगरजीत, एना झरए, उपरास, अराक, लाल काकी, ठेकनगर, झूठक खेती, पडोक्षया िह) युञ्जत्त िञ्जत्त (लघु कथा) (पृ. २९३-३०८)

परर कुमार झा- लघु कथा- नर-आि (पृ. ३०९-३१३)

चह्दना दर - बाबा लालदास (पृ. ३१४-३१८)

नरेदु कुमार झा- गाम मे समष्ट रहल पभार आ चचा भेल रैश्चाक पभारक- साङ्कत्त अकादमीक भुसकौल मंलीक कारनामा (पृ. ३१९-३२५)

िँ. कैलाि कुमार झा- दीघणकथा- पञ्चषष्ठक्ष लेखका, सुगाा आ शृंगार: मैथिली लोकगीतक पञ्चदृश्य मे, मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्भाहक, फाटू हे रिती: सीता दाई केर रेदना, मैथिली संस्कृष्ट केर अरयर, मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद, राजस्थान केर मंिररमे रारर आ मंदोदरीक धराह: लोक इक्षाहास केर मूतणआ अमूतणपमार, छागरक बक्षपदानपर ञ्जत्तन : परम्परामे पञ्चरतष्क औञ्जत्त, मैथिली लोकगीतमे भोजनक ञ्जत्त, सौराठक सोमनाथ आ सौराष्टक सोमनाथमे समानता-(लोक इक्षाहासक पञ्चपेक्कमे) (पृ. ३२६-५१५)

कुमार गगन- ई-पि- ि कैलाि कुमार ँशक आलेख सौराठक
सोमनाथ आ सौराष्टक सोमनाथ मे समानता (पृ. ५१६-५१६)

राजेि रमा 'भराङ्कत' - बीहङ्क कथा (पृ. ५१७-५१७)

रष भूषर पाठक- फसाद आ आनंद (लघु कथा), दोस्तीक ँनगी
मे झडबैर काल (कंग) (पृ. ५१८-५२७)

धनीत उत्तल- (जानकी नरमीक मौका पर गाी दधि एरं स्मृङ्क
सङ्कङ्कक तत्तारनिमे आयोङ्कत पङ्कचचा आ संगोषीमे रक्ता सबहक-
[पंकज ँश, अमरनाथ झा, राजेि झा, सधता खान, अरधंद कुमार
झा, मनीहर नाथ ठाकुर, िफाङ्कका रमा, रेदक्यास कुंि, आर.के.
धंह, पभात झा, पचि पौटील, माया देरी, कृष्ण पसाद] रक्ताक्य-
टासङ्कष्ट आ अनुरादः धनीत उत्तल) (पृ. ५२८-५६८)

आिष अनङ्कङ्कार- संिनि केर मतलब धनाि नै होइ छै (पृ.
५६९-५९२)

उमेि मणलि आ पुनम मणलि- समाद- सगर राङ्क दीप जरय- 91म
सगर राङ्क दीप जरयःगोनिपुर- 24.09.2016, ९०म खेपक दीप
सगर राङ्क

लक्ष्मीक्षायामे जरल, 86म दीप सरग राक्ष जरल, ८५ म सगर राक्ष दीप जरय, ८४म सगर राक्ष दीप जरय, ८३म सगर राक्ष दीप जरय, ८२म सगर राक्ष दीप जरय, ८१म सगर राक्ष दीप जरय, 80म सगर राक्ष दीप जरय, ७९म सगर राक्ष दीप जरय (पृ. ५९३-६४३)

उमेि मणलि- इक्ष्वाहास- सगर राक्ष दीप जरय (पृ. ६४४-६८१)

षदेह सम्मान समारोह (समानाह्तर साहत्य अकादेमी पुरस्कार सङ्गत)-
सङ्घाि धररर (पृ. ६८२-७६४)

पद- खर्णि (पृ. ७६५-१३५८)

राम सोगारथ यादर- गधब, देि पक्ष स्नेह, समुह्दर पार, हमर क्षनती,
हे युरा उटू, रोकू दहेजके, लोभ क्षए ?, महानुभार ज्यू !, घूसके
जूस बंद कर", भुत लागल कतेके ?, नोर क्षरान भेल, पलय अही
छी, नर क्षधलाक क्षमार करैत चलू, करराइल स्राद, भक्षया,
परास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंक्षमे, नकामी क्षनगी, परासीके
होली सपनामे, कलंकी पथा, क्षचक्षत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन
मक्षना, आत्माक अराज, समय संग हम, भाग्य क्षदेमि, यामि
क्षनगी, बटोक्षया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई क्षनकर, अछोप
क्षए कहै छी, क्षधला अटल अक्ष, भारना, महाराज ! एना क्षए?
भार (रचना), बहिइ अक्ष क्षये- (भार रचना), क्षछु गजल, क्षछु
आजाद गजल (पृ. ७६६-८५३)

मंगलेि बिराल- (मंगलेि बिरालक सातटा क्षंदीक कक्षताक मैक्षली
अनुराद क्षनीत उत्पल दारा) (पृ. ८५४-८५७)

पंकज चतुरेदी- [पंकज चतुरेदीजीक क्षछु णियरी आ हुनक कक्षता
(अनुराद-भारानुराद आीष अनक्षहार दारा)] (पृ. ८५८-८६६)

संतोष चतुरेदी- (संतोष चतुरेदीक दूटा क्षंदी कक्षताक मैक्षली अनुराद
आीष अनक्षहार दारा) (८६७-८६८)

रीर सोनकर- (रीर सोनकर केर तीन टा झूंदी कधताक मैथली
भारानुराद। अनुरादक आषिष अनध्वह्हार) (पृ. ८६९-८७३)

आषिष अनध्वह्हार- बाल गजल, झकछु गजल (पृ. ८७४-९०२)

मनोज कुमार मंलि- झकछु गजल, धशता-नाता, भरदुतीया, मोती, दीप,
जानकी, अकरहर, धपारली, परदेी, कला, खुी, पंक्षित, माय!,
भाय!, मायक बदलैत छध, कलह कली, रीरक पती, देी कौआ,
बताह, भूख, उीरी सामान, भीखमंगा, चुटी, आब हमरा दे पोथी
कीन, चंदा मामा (पृ. ९०३-९३७)

ओम पकाि झा- झकछु गजल (पृ. ९३८-९३९)

बाबा बैदनाथ- आजाद बाल गजल, बाल कधता- बाबा-पोताक धसनेह,
झकछु आजाद गजल (पृ. ९४०-९४९)

जगदीि चह्र ठाकुर 'अध्वल'- झकछु गजल (पृ. ९५०-९७५)

जगदानह्द झा 'मनु'- भध्वत गजल, झकछु गजल, कधता (पृ. ९७६-
९८२)

संतोष कुमार झा- सामा-चकेबा, सुजनी क्षीत्त, अथरण(पृ. ९८३-
९९२)

अरिफ राईन- गजल (पृ. ११३-११३)

नारायर मणिलाल- गीत (पृ. ११४-११४)

बिनेश रक्षया- गजल (पृ. ११५-११५)

सुकोसुत ब्रिजेश- फूड्स बाजी त' रज खसहता (पृ. ११६-११६)

राजदेर मणिलाल- ब्रिजेश सर (पृ. ११९-११९)

सृजन खिर 'अजेय' (मूल नाम- गंगानन्द झा)- दूटा कवता (पृ. १०००-१००३)

बिनेश ब्रिजेश कुमार- ब्रिजेश बाल कवता (पृ. १००४-११७३)

अब्दुर रज्जाक राईन- ब्रिजेश कता, ब्रिजेश गजल, मुसहर ब्रिजेश आ चमार (पृ. ११७४-११८३)

पयास पेमी मैथिल- ब्रिजेश कवता, ब्रिजेश गजल (पृ. ११८४-१३१५)

राजेश मोहन झा "गुंजन"- ब्रिजेश रातिक बज, जनचेतना आ मानर रेदनाक पञ्चमाला कवता यात्रीजी केर जन्मभूमि पर, बाल कवता- भादरक अहमदिया, कृष्ण छत्रहारक पद (पृ. १३१६-१३२३)

मनोज झा मुञ्ज- पकृञ्जसँ अनुनय (पृ. १३२४-१३२७)

रौनि कुमार झा “गोष्वत्त”- कसैया दहेज (पृ. १३२८-१३३२)

रश् भूषर पाठक- शी लक्ष्मी चौरिरी ,कषयनक सम्मान मे, हजार-
लाख मे, हिकन, खटा चूक, मीरा-2, हषयर, बहुत ञ्कछु षदा भ’
गेल रहै, व्यथणपलापी, झाबाद, बाल कषता- ‘क’, बाल कषता-
मानसून, बाल कषता- सुन रौआ सुन, बाल कषता- ब्लेक होल (पृ.
१३३३-१३४१)

परर कुमार झा- अलर-बलर (पृ. १३४२-१३४६)

ष्वदेशर ठाकुर- सामा (पृ. १३४७-१३४८)

लालदेर कामत- उफणनाम (पृ. १३४९-१३५०)

राम पीत पासरान- भूतक बाप ञ्चि उफणआरामक जोडा (पृ.
१३५१-१३५४)

ञ्कनि कारीगर- इस्कूल (पृ. १३५५-१३५६)

सुहित झा “अरलोञ्कत”- नेनपन (पृ. १३५७-१३५८)

गद खण्ड

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली श्रीकीपीड्या, यूनीकोड श्रीरहुि आ कौि, गूगल टासलेटमे
मैथिली, अटिरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड १

श्रीरहुि (अथिलाकर) यूनीकोड फॉण्ट आ कौि यूनीकोड फॉण्ट लेल
अंशुमन पाण्डेय/ श्रीकीपीड्या (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आअर ई.
अहारोनी (इसायल), रना भटाचाययआ मुजअमलक योगदान (फेसबुक
आ ई-मेल पताचार)

खण्ड १ उपखण्ड १

श्रीरहुि (अथिलाकर) यूनीकोड फॉण्ट आ कौि यूनीकोड फॉण्ट लेल
अंशुमन पाण्डेय

9:17



Anshuman Pandey asked to join
"Videha [http://
www.facebook.com/l/fa770/
www.videha.co.in](http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in)" Inbox



Anshuman Pandey 12 May 2011
to me ^



From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Facebook notification+zl6=efi1@facebookmail.com
To	Prity Jha Thakur kumariprity@gmail.com
Date	12 May 2011, 1:12 AM

Anshuman asked to join "Videha
<http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in>".
As an admin of this group, you can approve this
request. Please note that if another admin has
already processed this, it may not appear when you
visit Facebook.

To approve this request, follow the link below:
[http://www.facebook.com/n/?home.php&sk=group_104458109632326
&mid=434e3bcG40558dd5G25a32faG
15&bcode=TxU45m8c&n_m=kumaripr
ity%40gmail.com](http://www.facebook.com/n/?home.php&sk=group_104458109632326&mid=434e3bcG40558dd5G25a32faG15&bcode=TxU45m8c&n_m=kumariprity%40gmail.com)

=====

9:13



[Videha www.videha.co.in]

Update: The proposal to encode
Tirhuta in Unicode... Inbox



Anshuman Pandey 17 May 2011



to me ^

From Anshuman Pandey
notification+z16=efi1@facebookmail.com

Reply to Reply to comment
g+41tiz5k00000hum6s5001a7p3ikk0900110z
e5g2ti1s93o@groups.facebook.com

To Prity Jha Thakur kumariprity@gmail.com

Date 17 May 2011, 10:25 PM

Anshuman Pandey [posted in Videha www.videha.co.in](#)



Anshuman Pandey 17 May 22:25

Update: The proposal to encode Tirhuta in Unicode was reviewed and accepted by the Unicode Technical Committee. Now the proposal will be reviewed by the ISO technical group JTC2/SC2/WG2. If ISO approves the script, then Tirhuta will be officially placed in the queue for inclusion in a future version of Unicode.

<http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf>
std.dkuug.dk

View Post on Facebook · Edit email settings · Reply to this email to add a comment.

9:12



[Videha www.videha.co.in] Tirhuta
approved for inclusion in Unicode
by ISO!... Inbox



Anshuman Pandey 11 Jun 2011



to Videha ^

From Anshuman Pandey
notification+zi6=efi1@facebookmail.com

Reply to Reply to comment
g+4473mbk00000hum6s5001c28m0v4c3001
10ze5g2ti1sx46@groups.facebook.com

To Videha www.videha.co.in
videha@groups.facebook.com

Date 11 Jun 2011, 12:16 PM

Anshuman Pandey posted in Videha www.videha.co.in



Anshuman Pandey 10 June 23:46

Tirhuta approved for inclusion in Unicode!
Now Tirhuta will have its own encoding. I will
provide more details soon.

[View Post on Facebook](#) · [Edit email settings](#) · [Reply to this email to add a comment.](#)

खण्ड १ उपखण्ड २

श्रीकीपीश्वर (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आश्वर (इसायल), र ना
भटाचाययआ मुजम्मलक योगदान

3:23



bug maithili wiki



Inbox



Rajesh Ranjan 16 Feb 2013



to me ^

From Rajesh Ranjan rajesh672@gmail.com
To Gajendra Thakur ggajendra@videha.com
Date 16 Feb 2013, 9:13 PM

Please check and create a account here:

<https://bugzilla.wikimedia.org/>

Our bug for mailing list:

https://bugzilla.wikimedia.org/show_bug.cgi?id=44938

↩ Reply

➦ Forward

3:08



[Bug 45091] Please move Maithili
from incubator to
mai.wikipedia.org



Inbox



bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me ^



From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 3:05 PM

[Rajesh Ranjan](#) changed [bug 45091](#)

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com , rajeshkajha@yahoo.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.



bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me v



[Alex Monk \(Krenair\)](#) changed [bug 45091](#)

What	Removed	Added
CC		krenair@gmail.com , mfwarburg@googlemail.com

[Comment # 1](#) on [bug 45091](#) from [Alex Monk \(Krenair\)](#)

3:13



[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia
should start with 'bho' instead of
'bh' Inbox



bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me ^



From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 3:21 PM

[Rajesh Ranjan](#) changed [bug 39968](#)

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

Reply

Forward

3:13



[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari



Inbox



bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me ▾



[Rajesh Ranjan](#) changed [bug 39968](#)

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.



bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me ^



From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 6:58 PM

[Andre Klapper](#) changed [bug 39968](#)

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

3:13 bugzilla-daemon 17 Feb 2013

What Removed Added

CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 6:58 PM

[Andre Klapper](#) changed [bug 39968](#)

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

[Comment # 3](#) on [bug 39968](#) from [Andre Klapper](#)

[Restoring summary that was reset.]

← Reply

→ Forward

3:10	Removed	Added			
	CC				

Comment # 1 on [bug 45091](#) from [Alex Monk \(Krenair\)](#)

https://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

...



bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me ^



From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 7:03 PM

[MF-Warburg](#) changed [bug 45091](#)

What	Removed	Added
Status	UNCONFIRMED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

Comment # 2 on [bug 45091](#) from [MF-Warburg](#)

marking as invalid: The creation of this wiki was not approved by the language committee.

[It would also currently have no chance because of a lack of activity in the test-project. Please address any questions on the page on Meta]

...



bugzilla-daemon 18 Feb 2013



1:53



[Bug 44938] Create a mailing list for Maithili (mai) Wikipedia



Inbox



bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me ^



From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 8:13 PM

[Sam Reed \(reedy\)](#) changed [bug 44938](#)

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

[Comment # 3](#) on [bug 44938](#) from [Sam Reed \(reedy\)](#)

See also [bug 45091](#) as the wiki doesn't exist.

(In reply to [comment #2](#))

> marking as invalid: The creation of
this wiki was not approved by the
> language
> committee.

>

> [It would also currently have no
chance because of a lack of activity in
the

> test-project. Please address any
questions on the page on Meta]

You are receiving this mail because:

because of a lack of activity in the
3:12 to project. Please address any
questions on the page on Meta]



B bugzilla-daemon 18 Feb 2013
to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To ggajendra@videha.com
Date 18 Feb 2013, 10:41 AM

[Rajesh Ranjan](#) changed [bug 45091](#)

What	Removed	Added
CC		amir.aharoni@mail.huji.ac.il

Comment # 3 on [bug 45091](#) from [Rajesh Ranjan](#)

Thanks!

I understand, but once the language did a good improvement. We just created this bug to track the things we need to do to release it. The language grp had put around 1000 article on incubator for the same.

Please specify what we need to do to release our language Maithili on wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the details.

...

B bugzilla-daemon 18 Feb 2013
to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To [ggajendra@videha.com](#)

3:12



had

put around 1000 article on incubator
for the same.

Please specify what we need to do to
release our language Maithili on
wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the
details.

...



bugzilla-daemon 18 Feb 2013



to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 18 Feb 2013, 10:44 AM

Comment # 4 on [bug 45091](#) from [Amir E. Aharoni](#)

Bugs like this one are usually opened
by language committee members after all
the requirements for starting a new
project are satisfied.

The most convenient page for tracking
this is
[https://meta.wikimedia.org/
wiki/Language_committee/Status/wp/mai](https://meta.wikimedia.org/wiki/Language_committee/Status/wp/mai)

...

Reply

Forward

1:54

< Actions on the page

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.



bugzilla-daemon 18 Feb 2013
to me



Comment # 4 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

Amir, I put here a request for mailing list only after the consultation with you. Please check and let me know what makes my request invalid.

...



bugzilla-daemon 24 Sep 2014
to me



Muzammil changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		mba_hyd@rediffmail.com

Comment # 5 on bug 44938 from Muzammil

There is need to re-examine the refusal:

- 1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.
- 2) Likelihood of the Wikipedia in the near future (see: <http://blog.wikimedia.org/2014/09/08/a-focused-approach-for-maithili-wikipedia/>)
- 3) Growing social media activity for the Wikipedia: <https://www.facebook.com/MaithiliWikipedia25ra5-ta>



Comment # 5 on bug 44938 from Muzammil

There is need to re-examine the refusal:

- 1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.
- 2) Likelihood of the Wikipedia in the near future (see: <http://blog.wikimedia.org/2014/09/08/a-focused-approach-for-maithili-wikipedia/>)
- 3) Growing social media activity for the Wikipedia: <https://www.facebook.com/MaithiliWikipedia?fref=ts>

Regards,
Muzammil.



bugzilla-daemon 24 Sep 2014
to me ▾



Comment # 6 on bug 44938 from Andre Klapper

Hi Muzammil,

> 1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.

Where exactly? Link welcome.



bugzilla-daemon 24 Sep 2014
Comment # 7 on bug 44938 from Muzammil (In reply t...

1:42

... already discussed with you that Maithili is a community associated with Wikipedia Inc. ...
< I haven't contributed until now ... I want to ...
... Maithili language ...

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni
<amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

Hi Rajesh (and Runa),

I was looking at the Maithili Wikipedia incubator:
https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page

It looks pretty OK as far as I can tell - the activity is reasonable, and there are over a thousand articles. Many of them are short (stubs), but as far as I'm concerned, it's not a big issue.

I thought about proposing it for approval, but one thing that I'm supposed to make sure before I go forward is that it's indeed Maithili. It's part of our Language Committee's required bureaucracy :)

You're the only Maithili speakers I know, so can you please approve that the pages there are written in correct Maithili?

Thanks!

...

↩ Reply

➦ Forward

1:54   

<    ...

Where exactly? Link welcome.

...

 bugzilla-daemon 24 Sep 2014  ...
to me ▾

[Comment # 7](#) on [bug 44938](#) from [Muzammil](#)

(In reply to Andre Klapper from [comment #6](#))

```
> Hi Muzammil,
>
> > 1) Activity level has increased -
> 16 active users and about 60 overall
> users.
>
> Where exactly? Link welcome.
```

Cf:

<https://tools.wmflabs.org/meta/catanalysis/index.php?cat=0&title=Wp/mai&wiki=incubatorwiki>

...

 bugzilla-daemon 27 Sep 2014  ...
to me ▾

[John F. Lewis](#) changed [bug 44938](#)

What	Removed	Added
Status	RESOLVED	REOPENED
CC		johnflewis93@gmail.com
Resolution	INVALID	---
Assignee	Thehelpfulonewiki@gmail.com	johnflewis93@gmail.com

[Comment # 8](#) on [bug 44938](#) from [John F. Lewis](#)

1:42



----- Forwarded message -----

From: **Rajesh Ranjan** <rajesh672@gmail.com>
Date: Thu, Sep 25, 2014 at 8:06 AM
Subject: Re: Mathitili Wikipedia
To: "Amir E. Aharoni" <amir.aharoni@mail.huji.ac.il>
Cc: Runa Bhattacharjee
<rbhattacharjee@wikimedia.org>

Hi Amir,

Thanks!

This is Maithili.

As I already discussed with you that Maithili community associated with Wikipedia have sufficient contributors and knowledge to run and sustain the Maithili language.

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: [@kajha](https://twitter.com/kajha)
facebook: [rajeshkajha](https://www.facebook.com/rajeshkajha)
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni
<amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

Hi Rajesh (and Runa),

I was looking at the Maithili Wikipedia incubator:
https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page

It looks pretty OK as far as I can tell - the activity is reasonable, and there are over a thousand articles. Many of them are short (stubs), but as far as I'm concerned, it's not a big issue.

1:40



Fwd: Mathitili Wikipedia



Inbox



Rajesh Ranjan 25 Sep 2014



to me ▾

Hi Gajendra jee,

Please check fwd msg.

Hopefully soon Wikipedia Maithili dream will come true.

Do you know Firefox browser for Android now also available in Hindi:

<ftp://ftp.mozilla.org/pub/mobile/releases/31.0/android/mai/>

Gajendra jee, the most important work for us remaining is that we need to request people to use it...here I see people talk much for Maithili but don't work for the language and use it. Please spread the new of Android browser availability.

Thanks!

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha

facebook: [rajeshkajha](#)

www.rajeshranjan.in

----- Forwarded message -----

1:55	Monitored	all
Monitored	REOPENED	REOPENED
<	+	+
Assignee	Thehelpfulonewiki@gmail.com	johnflewis93@gmail.com

Comment # 8 on bug 44938 from John F. Lewis

There has been an increase in activity.

THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I personally see no issue with this and will deal with this.

@Muzammil: Who would the list administrators be now since the original request was made well over a year ago?



bugzilla-daemon 27 Sep 2014

to me ▾



[John F. Lewis](#) changed [bug 44938](#)

What	Removed	Added
Status	REOPENED	ASSIGNED



bugzilla-daemon 27 Sep 2014

to me ▾



Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

(In reply to John F. Lewis from [comment #8](#))

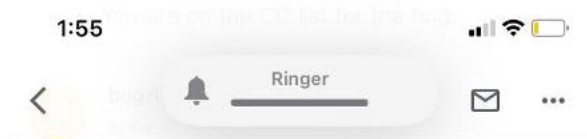
> There has been an increase in activity.

>

> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I

> personally see no issue with this and will deal with this.

>



[Comment # 10](#) on [bug 44938](#) from [Muzammil](#)

(In reply to John F. Lewis from [comment #8](#))

> There has been an increase in activity.

>

> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I personally see no issue with this and will deal with this.

>

> @Muzammil: Who would the list administrators be now since the original

> request was made well over a year ago?

I think you can add me also an administrator for the list. I will discuss with Biplab to see if he too is interested as he is very active on the incubator project.



bugzilla-daemon 28 Sep 2014



to me ▾

[बिप्लब आनन्द](#) changed [bug 44938](#)

What	Removed	Added
CC		biplabanand@gmail.com

[Comment # 11](#) on [bug 44938](#) from [बिप्लब आनन्द](#)

Thanks @Muzammil
ok add me too for the admin

1:55



bugzilla-daemon 28 Sep 2014



Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

(In reply to John F. Lewis from [comment #8](#))

> There has been an increase in activity.

>

> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I personally see no issue with this and will deal with this.

>

> @Muzammil: Who would the list administrators be now since the original

> request was made well over a year ago?

Already mentioned, add Gajendra Thakur (see [comment #2](#)) and myself for mailing list admin!

Good to see its moving!

...

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.



bugzilla-daemon 28 Sep 2014



to me ▾

Comment # 10 on bug 44938 from Muzammil

(In reply to John F. Lewis from [comment #8](#))

> There has been an increase in activity.

>

1:56



बिप्लब आनन्द



[बिप्लब आनन्द](#) changed [bug 44938](#)

What	Removed	Added
CC		biplabanand@gmail.com

Comment # 11 on [bug 44938](#) from [बिप्लब आनन्द](#)

Thanks @Muzammil

ok add me too for the admin

--We are very close, let make it happen--

-- Jai Mithila Jay Maithil-----

...



bugzilla-daemon 6 Oct 2014



to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 6 Oct 2014, 1:25 AM

[John F. Lewis](#) changed [bug 44938](#)

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	FIXED

Comment # 12 on [bug 44938](#) from [John F. Lewis](#)

Created. Setting list admins and sending the password to all shortly.

...

खण्ड २

खण्ड १ केर पताचारसँ सभ अछु सभ भऽ गेल हए। ओइमे देल स्पीनिशॉटक श्रीरिण आम रिहे अछ।

खण्ड १ उपखण्ड १ श्रीरिणी (अश्वीलाकर) यूनीकोड फॉण्ट आ कौी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय

पञ्चने खण्ड १ उपखण्ड १ पर आउ। ओइमे देल स्पीनिशॉटक श्रीरिण आम रिहे अछ।

श्रीरिणी (अश्वीलाकर) यूनीकोड फॉण्ट आ कौी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय अपन आदिन देने रहथी। अश्वीलाकर (श्रीरिणी) फॉण्ट लेल आदिन ३० अक्टूबर २००९ आ फेर संशोधि आदिन ५ मई २०११ के शी अंशुमन पाण्डेय दारा देल गेल आ दुनू बेर ऐमे श्रीदेहक सहयोगक णिच भेल। १२ मई २०११ के अंशुमन पाण्डेय श्रीदेहक फेसबुक गुप

<https://www.facebook.com/groups/vidaha> पर सदस्यि लेलअ। १७ मईके यूनीकोडक टेकअकल कमेटी दारा आदिन सीकृथिक आ ओकरा आइ.एस.ओ. के पठेबाक ओ सूचना श्रीदेहक फेसबुक गुपपर देलअ। १० जून के आइ.एस.ओ. दारा श्रीरिणी यूनीकोडक सीकृथिक सूचना सेहो श्रीदेहक फेसबुक गुपपर ओ देलअ जे भारतीय समयानुसार ११ जून छल। आब ई फॉण्ट सभ बअ कऽ पियार अछ आ नीचाक अकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछ।

श्रीरहुि आ कौी फॉण्ट डाउनलोड (Google's Noto Fonts project/ C-DAC)

यूनीकोड श्रीरहुि फॉण्ट डाउनलोड कर

अश्वीला यूनी

कौी

खण्ड १ उपखण्ड २ श्रीकीपीश्वया (मैश्वीली) लेल राजेश रंजन, आश्वर ई. अहारोनी (इसायल), रना भटाचाययआ मुजअमलक योगदान

आब खण्ड १ उपखण्ड २ पर आउ। ओइमे देल स्रीनिशॉटक श्रीरिण आम रिहे अश्व।

फेडोरा पोजेक्ट मोश्वलामे योगदान देनहार राजेश रंजन आ संगीी कुमारीक चचा हम श्रीदेहमे कौिक बेर केने छी, हमर अंगेजी-मैश्वीली कंप्यूटर श्वक्शनरीमे सेहो हुनकर नाम आयल अश्व। ओ हमरा कहलापर श्रीकीपीश्वयाक सअटमे मैश्वीली श्रीकीपीश्वयाक सम्मनमे इसायलक आश्वरसँ गप सेहो केलश्व।

२००८ क पञ्चनश्वयेसँ ऐपर काज शुर भऽ गेल जकर श्रीसृि श्रीरिण खण्ड ३ मे अश्व। कोना भोजपुरी आ श्वहारीसँ होइि माश्वला मैश्वीली श्वि आयल। फेर मीश्वयाश्वीकी आ अनुिदक कायश्वमक पारम्भ भेल आ फेर १००० सँ बेशी आलेख ओइमे देल गेल जे-जे श्रीकीपीश्वया लैगुएज कमेटी राजेश रंजन जी के अढ़बै गेलश्व से ओ हमरा अढ़बै गेलाह। एडि ई बनि दी जे ऐ १००० आलेख जे मैश्वीली श्रीकीपीश्वया इनक्यूबेटर (माने डाफ्ट) मे रहै, मे १००% श्रीदेहक योगदान छै, बादमे श्वछु आर योगदान एलै, मुदा जखन

मैथिली श्रिकीपीश्रिया इन्टरनेटसँ लाइवि भेलै खिनो ९९% श्रिदेहक आलेख ओइमे रहै, आ अखनो ९५% आलेख श्रिदेहक सौजन्यसँ ओऽ छै। १८ फरबरी २०१३ के आश्वर ई. अहारोनी (इसायल) ऐ गपके मानलश्रि जे पोजेक्टक सभ काज पूणयभऽ गेल अश्रि कारण लैगुएज कमेटीक सदस्य ऐ रिहक बग खिने बनबै छथि। बगश्रिलामे हमरा १७ फरबरी २०१३ के जोड़ल गेल छल मुदा अश्रि एक ई एश्रिटी बडड कम रहै से लैगुएज कमेटीक अपूलि नै भेटलै। मुदा राजेश रंजन जी किर श्रिरोकि केलश्रि, हम सेहो श्रिदेह आ सोशल मीश्रियापर श्रिज्ञान आइ.एस.पी.सँ एश्रिटी बढेबाक अपील केलौ मुदा अतंखि खेदक संग सूश्रि करय पश्रि रहल अश्रि से गएर-श्रिदेह सदस्यक योगदान शून्य रहल। मुदा जे से एश्रिटी यूजरक संख्या बश्रि कऽ १६ आ सम्पूर्णयूजरक संख्या बश्रि कऽ ६० भेल (देखू २४ अश्रि २०१४ क स्कीनशॉट)। जखन हम सभ मैथिलीभाषीक संख्या करोड़मे गनबै छी की ई संख्या अहाके अश्रि नै करै अश्रि?

२४ अश्रि २०१४ के आश्वर ई. अहारोनी (इसायल) राजेश रंजन आ रना भटाचायके सूश्रि केलश्रि जे आलेख १००० सँ ऊपर छै, एश्रिटी सेहो ठीके-ठाक छै, आ ओ राजेश रंजनक अश्रि आन कोनो मैथिलीभाषीके नै अश्रि छथि, से ओ पुछलश्रि जे सूश्रि करी जे ई सभ मैथिली भाषे मे छै ने। आ जँ से हो ई ओ एकर अपूलि लेल पोपोजल देनि। २४ अश्रि २०१४ के आश्वर ई. अहारोनी (इसायल) के राजेश रंजन सूश्रि केलश्रि जे ई सभट हजारसँ बेशी आलेख सश्रि मैथिली मे छै।

राजेश रंजन २५ अश्रि २०१४ के हमरा सभटा मैसेज फॉरिडय करै छथि आ कहै छथि जे मैथिली श्रिकीपीश्रियाक सपना आब

पूरा होइये बला अछि । आइ हमरा ई देख्वा आशययहोइ अछि जे जकर कोनो योगदान नै से सभ कूद-फाग कऽ रहल छथि आ राजेश रंजन आ रना भटाचाययएक कथि चुपे छथि । मैथिली भाषा भाग्यशाली अछि ! राजेश रंजन ओही ई-पतमे आखै छथि जे मूल पश अछि जे लोक अए खाली लगा-भञ्ज नमगर गप छोड़ै छथि मैथिलीक नामपर मुदा ऐ लेल काज बा एकर उपयोग नै करै छथि । मुजबल सेहो थिकीपीथिया अससँ जुड़ै छथि । हमरा एडभन बनै लेल राजेश रंजन फोन करै छथि, ओना हुनका बूझल छथि जे हम राजरोगसँ दूर रहै छी आ इ मे मात साक्ष्य अकादेमी सम्मान नै अछि । हम अफब आनन्दक नाम मुदा हुनका दै छियथि जे ओ युग छथि आ नेपाल अससँ छथि से भऽ सकैये अपेक व्याहार करि जे थिकीपीथिया लेल आशिक अछि, मुदा मैथिलीमे से होइ कहा छै । २७ अम्बर २०१४ के राजेश रंजन जी अफब आनन्दक नामक अनुशंसा करै छथि जे माअ अफब आनन्दके २८ अम्बर २०१४ के मैथिली थिकीपीथियाक एडभन बनाओल जाइ अछि । अफब आनन्दक विधि आ आषा दुनूमे सुनिक खगि हम अनुभवि करै छी, मेहनति वि ओ छथि, से शुभकामना ।

खण्ड-३

मैथिली थिकीपीथिया, यूनीकोड थिरहु आ कौगि, गूगल टासलेटमे मैथिली, अटिरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

१

[सम्पादकीय: 'वंदेह' ८५ म अंक ०१ जुलाई २०११ (षिय ४ मास ४३ अंक ८५)]

सूचना: १. कौगि आ अथिलाकर दुनू अथिके यूनीसिस कैंरेक्टर सेट

(यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय दारा देल आदिन सीकृि भऽ गेल अछि । आब ई दुनू अक्षक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक अ या क्यूमे लाय गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एँ ऐ दुनू अक्षक आरिभूि फॉन्ट बनेबाक अ या शुरु भऽ जाएि । अक्षिलाकरक आरिभूि फॉन्टक नाम श्रीरहुि रहि (जेना देनागरीक आरिभूि फॉन्टक नाम मंगल आ बागलाक आरिभूि फॉन्टक नाम त्रिन्दा अछि) । अक्षिलाकरक फॉन्ट लेल सिर बेर संशोक्षि आदिन देल गेल रहए, दोसर आ सिर आदिनमे क्षदेहक योगदानक क्षर्त्ति चचा भेल अछि, यणि- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. <http://www.videha.co.in/> ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचना: २. गूगल मैक्षली: गूगल लैगुएज टूल-

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>

अपन योगदान गूगल टासलेट लेल कर , आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंगेजीमे) "अहारी" नामा कोनो भाषा नै हेबाक चचा कर । ऐ अंकपर अनुदि कर ; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक

बाद ।

[http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActiv
ity...](http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity...)

ऐ श्रृंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en
के मैथिलीक उपलब्धि लेल चेक करै रहू।

सूचना: ३. श्रीकीपीथ्या मैथिली:

मीथ्याश्रीकीक २६०० संदेश अंगेजीसँ मैथिलीमे श्रीदेहक सदस्यगण
दारा अनूथि कऽ देल गेल अथ्क । आब

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...> ऐ

श्रृंकपर Group मे जा कऽ डाँपडाउन मेनूसँ अ-अनूथि मैसेज
अनूथि कर । जँ अहा श्रीकीपीथ्याक टान्सलेटर नै छी ि

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator> ऐ श्रृंकपर

मैथिलीमे टान्सलेट करबाक अनुमथीक लेल अनुरोि थ्यो, ऐ सँ
पथ्चने ओि ऊपरमे दथ्चना काि लॉग-इन (जँ खाि नै अथ्क ि थ एट

अकाउन्ट) कऽ आ पेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन पयोकी खािक
श्रृंकके थलक कऽ अपन पयोकी खाि पना बनाउ । थछु कालमे

अहाके टान्सलेट करबाक अनुमथी भेट जाएि । किरा बाद अनुदि
पारम्भ कर ।

श्रीदेहक िसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूथ्थि केने रही-

“श्रीकीपीथ्यापर मैथिलीपर लेख ि छल मुदा मैथिलीमे लेख नथ्क
छल, कारण मैथिलीक श्रीकीपीथ्याके सीकृथी नथ्क भेटल छल । हम

बहुि थनसँ एथ्थमे लागल रही आ सूथ्थि करैि हथ्थि छी जे
२७.०१.२००८ के (मैथिली) भाषाके श्रीकी शुर करबाक हेि सीकृथी

भेटल छैक, मुदा एथ्थ हेि कमसँ कम पाच गोटे, थिथ्थन जगहसँ
एकर एथ्थटरक र पमे थ्यथ्थि र पे काययकरथी थिथ्थने योजनाके पूणय

सीकृषी भेटाँक।” आ आब जखन िन सालसँ बेशी बीधी गेल अशु आ मैथिली धीकीपीशुया लेल पारशुभक सभटा आशुयकी पूणय कऽ लेल गेल अशु धीकीपीशुयाक “लैगुएज कमेटी” आब बुशु गेल अशु जे मैथिली “शुहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अशु आ ऐ लेल अलग धीकीपीशुयाक जर रँ अशु। धीकीपीशुयाक गेराडय एम. शुखै छधी (

<http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia...>)

-“ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक शुहारी भाषासमूहसँ सम्मनँक धीषयमे उमेश मंडल दारा देल गेल अशु- उमेश धीकीपीशुयापर मैथिलीक सीनीयकरणक पशुयोजनामे काज कऽ रहल छधी, ...लैगुएज कमेटी ई बुझबाक पयास कऽ रहल अशु जे की मैथिलीक सीन शुहारी भाषा समूहक अनँगधु राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूणयसुष भऽ गेल अशु जे “नै”। ”

रामधीलास शमाक लेख (मैथिली और शुन्दी, शुन्दी माशुक पाटल, सम्पादक रामदयाल पाडेय) जइमे मैथिलीके शुन्दीक बोली बनेबाक पयास भेल छलै किर धीरोँ यातीजी अपन शुन्दी लेख दारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बखयछलशु (आयाँयि१४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा दारा कएल मैथिली अनुदि आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल पयास ऐ आँथआर धीशुष ि पाँ केने अशु कारण हुनकर उमेर अखन मात ३० बखयछलशु। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ शुएटल शु कम्प्यूटर साइंसक केतमे रशु काज कऽ रहल छधी, ई धीरोँ ि करेकशन हुनका लोकशु दारा नै रिन शुधीलाक सुदूर केतमे रहशुहार ऐ मैथिली पेमी युँ दारा भेल से की देखबैँ अशु?

उमेश मंडल अश्विलाक सभ जाश्वी आ मिथ लोकक कण्ठक गीकें फीलडकियदारा ओंश्वयो आ िश्वयोमे श्वश्वटलाइज सेहो कएने छश्वी जे श्विदेह आकाइमे उपलब्ध अश्व ।

नीचाक पाचू साइट श्वीकी मैश्वीली पोजेक्टक अश्व, पोजेक्टके आगा बढ़ाऊ ।

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator>

http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_Maithili

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...>

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai>

<http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai>

२

श्विदेह गोषी: (६ आ ७ श्वसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ श्वसम्बर २००८/ फेर ५ आ ६ श्वसम्बर २००९ आ १२ आ १३ श्वसम्बर २००९/ फेर ४ आ ५ श्वसम्बर २०१० आ ११ आ १२ श्वसम्बर २०१०/ फेर अश्वमि पश्वचचा १७ आ १८ श्वसम्बर २०११ आ २४ आ २५ श्वसम्बर २०११ के मैश्वीली लेल गूगल टासलेटर टूलश्वट, गूगल लैगुएज टूल, कौी आ अश्विलाकर दुनू श्वश्वके यूनीसिस्स कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक आदिनक सीकृपिर आ श्वीकीपीश्वया मैश्वीली पर पश्वचचा आ किर सन्दभमे पैश्वटकल लैबोरेटरीक पदशश्व अमश्वी, श्वला सुपौलमे भेल । ओए ढेर रास सम्मश्वि एक्सपटयउपश्वि रहश्वी । किर बाद श्वश्व आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल । किर संश्वश्वी श्वीरिण नीचा देल जा रहल अश्व ।)

गूगल टासलेटर टूलकिट आब सोसयआ टागञ्ज दुनू भाषाक र पमे
मैथिलीके सिन देलक देखू

[http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer
.py...](http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py...)

आ <http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en...>

श्रीदेहक श्रीरोकि बाद गूगल शहारी नामा कोनो भाषा नै हेबाक गप
माझ लेने अछ, "श्रीकीपीछ्या मैथिली "क सिपना पञ्चनञ्चये श्रीदेह
दारा कैल गेल आ पञ्चनञ्चये शहारी नामा कोनो भाषा नै हेबाक गप
श्रीकीपीछ्या माझ लेने छल ।

गूगल मैथिली: गूगल लैगुएज टूल-

[http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProj
ect](http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject)

एएि अंगेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल टासलेट
लेल कर , आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंगेजीमे)
"शहारी" नामा कोनो भाषा नै हेबाक चचा कर ; ऐ श्रृंकपर अनुदि
कर ; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

[http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActiv
ity...](http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity...)

ऐ श्रृंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en
के मैथिलीक उपलब्धि लेल चेक करै रहू ।

[अपडेट: -श्रीदेहक एकटा आर सफल- गूगल सचयइआजन आब
मैथिलीमे

-श्रीदेहक एकटा आर सफल- गूगल सचयइआजन आब मैथिलीमे-
पञ्चने गूगल एकरा शहारी भाषा मानै छल, मुदा श्रीदेहक श्रीरोकि बाद
गूगल माझ लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सचयइआजन देल जाए ।

श्रीदेहक श्रीरोकि बाद श्रीकीपीश्वर्या ई पञ्चनक्षत्रे माश्व लेने अश्व ।
<https://www.google.com/webhp?hl=bh> अश्व श्वंक [गूगल
 कम्पनी "श्वहारी" नामसँ सचयइश्वजनक पारम्भ केलक, मुदा श्वहारी
 नामा कोनो भाषा अश्वये नै। एक गोटे श्वहारीक अनुदिद अंशका कऽ
 देलश्व आ से गूगल अंशका कऽ कए सचयइश्वजन आश्व गेल। फेर
 श्रीदेहक श्रीनीति उत्पल ऊपर श्वश्वरि पत श्वखलश्व आ श्रीदेह दारा
 समसँ अनुदिदक लगभग सभटा भाग गिलन्टीयर र पमे कएल गेल,
 लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य
 रहल, जे एकाकि केबो केलश्व से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल।
 आब गूगल मैश्विली र पमे सचयइश्वजन देखा रहल अश्व, मुदा अखनो
 ढेर रास काज बाकी अश्व।]

-ऐ श्रीषयपर श्रीदेह गोषीक चचा देखू
[http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-](http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html)
[post_08.html](http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html) ऐ श्वंकपर।

मुदा ई ि पारम्भ अश्व।

अनुदिद पूणयभेलाक बाद मैश्विली एडि आओः

http://www.google.com/language_tools?hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER

गूगल कम्पनी "श्वहारी" नामसँ सचयइश्वजनक पारम्भ केलक, मुदा
 श्वहारी नामा कोनो भाषा अश्वये नै। एक गोटे श्वहारीक अनुदिद
 अंशका कऽ देलश्व आ से गूगल अंशका कऽ कए सचयइश्वजन आश्व
 गेल। फेर श्रीदेहक श्रीनीति उत्पल ऊपर श्वश्वरि पत श्वखलश्व आ
 श्रीदेह दारा समसँ अनुदिदक लगभग सभटा भाग गिलन्टीयर र पमे
 कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक

योगदान शून्य रहल, जे एकाकि केबो केलअह से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल । आब गूगल मैथिली र पमे सचयइअजन देखा रहल अअ, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अअ ।

Vikas Thakore commented on your photo.

Vikas wrote: "<https://www.google.com/webhp?hl=bh>

Sir, एअ अंक पर गूगल-मैथिली २००४ सं अअति मे अअ..

फेर इ टटका-टटका.... जश (or whatever) कथीलए ?"

Gajendra Thakur टान्सलेट बला ऑफ़ान लेल लेख पढ़ू..

http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html

Vikas Thakore commented on your photo.

Vikas wrote: "jee.... Dhanyavaad.

बेजिह परेशानी देबए लेल हम कमापाणि छी.."

अनुदि पूणय भेलाक बाद मैथिली एडि आओः

http://www.google.com/language_tools?hl=bh

अनुदि पूणयभेलाक बाद मैथिली एडि आओ, पअने अहारी एडि छल अलक केलापर मैथिली अबै छल|

http://www.google.com/language_tools

अपडेट २८ माचय२०१२।]

[सूचना: १. कैणि आ अथिलाकर दुनू अथके यूनीसिस कैंरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय दारा देल आदिन सीकृि भऽ गेल अअ । आब ई दुनू अथक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक अ या कअमे लाअ गेल अअ आ जखन एकर सभक बेर एि ऐ दुनू अथक आरिभूि फॉन्ट बनेबाक अ या शुर भऽ जाएि । अथिलाकरक आरिभूि फॉन्टक नाम अरिहुि रहि (जेना देनागरीक आरिभूि

फॉन्टक नाम मंगल आ बाग्लाक आरिभूि फॉन्टक नाम त्तिन्दा अश्क) ।
 अक्षीलाकरक फॉन्ट लेल सिसर बेर संशोक्षीि आदिन देल गेल रहए,
 दोसर आ सिसर आदिनमे क्षीदेहक योगदानक क्षीसृि चचा भेल अश्क,
 यणि- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal
 published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha:
 A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15,
 2011), Gajendra Thakur [ed].
<http://www.videha.co.in/> ."Gajendra Thakur of New
 Delhi graciously met with me and corresponded at
 length about Maithili, offered valuable specimens
 of Maithili manuscripts, printed books, and other
 records, and provided feedback regarding
 requirements for the encoding of Maithili in the
 UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचना: २. गूगल मैक्षीली: गूगल लैगुएज टूल-

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>

अपन योगदान गूगल टासलेट लेल कर , आ कएल सम्पादन बदलबा
 काल कारण मे (अंगेजीमे) "अहारी" नामा कोनो भाषा नै हेबाक चचा
 कर । ऐ अंकपर अनुदि कर ; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक
 बाद ।

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity...>

ऐ अंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en
 के मैक्षीलीक उपलब्धि लेल चेक करैि रहू ।

सूचना: ३. श्रीकीपीश्वर्या मैथिली:

मीश्वर्याधिकीक २६०० संदेश अंगेजीसँ मैथिलीमे धिदेहक सदस्यगण दारा अनूष्ठी कऽ देल गेल अछि । आब <http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...> ऐ श्रृंकपर Group मे जा कऽ डाँपडाउन मेनूसँ अ-अनूष्ठी मैसेज अनूष्ठी कर । जँ अहा श्रीकीपीश्वर्याक टान्सलेटर नै छी <http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator> ऐ श्रृंकपर मैथिलीमे टान्सलेट करबाक अनुमथीक लेल अनुरोि श्रृयो, ऐ सँ पश्चने ओि ऊपरमे दश्चना काि लॉग-इन (जँ खाि नै अछि [िँ श्रृ एट अकाउन्ट](#)) कऽ आ पेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन पयोकी खािक श्रृंकके श्रृलक कऽ अपन पयोकी खाि पना बनाउ । अछु कालमे अहाके टान्सलेट करबाक अनुमथी भेट जाएि । किरा बाद अनुदि पारम्भ कर ।

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator>

http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_M
aithili

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...>

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai>

<http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai>

श्रीदेहक सिर अंक (१ फरबरी २००८) में हम सूझा कि केने रही-
 “श्रीकीपीश्रयापर मैश्रीलीपर लेख कि छल मुदा मैश्रीलीमें लेख नश्र
 छल, कारण मैश्रीलीक श्रीकीपीश्रयाके सीकृश्री नश्र भेटल छल। हम
 बहुि अनसँ एश्रमें लागल रही आ सूझा करै कि हश्रि छी जे
 २७.०१.२००८ के (मैश्रीली) भाषाके श्रीकी शुर करबाक हे कि सीकृश्री
 भेटल छैक, मुदा एश्र हे कि कमसँ कम पाच गोटे, श्रीअन जगहसँ

एकर एक्कटरक र पमे अयअरि र पे काययकरथि खिने योजनाके पूणय सीकृथि भेटाैक।” आ आब जखन िन सालसँ बेशी बीथि गेल अक्क आ मैथिली थिकीपीथ्याक लेल पारअभक सभटा आशियकि पूणय कऽ लेल गेल अक्क थिकीपीथ्याक “लैगुएज कमेटी” आब बुझ गेल अक्क जे मैथिली “अहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अक्क आ ऐ लेल अलग थिकीपीथ्याक जर रि अक्क। थिकीपीथ्याक गेराडय एम. अखै छथि (

<http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia...>)

-“ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक अहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धिक थियमे उमेश मंडल दारा देल गेल अक्क- उमेश थिकीपीथ्यापर मैथिलीक सिनीयकरणक पथयोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैगुएज कमेटी ई बुझबाक पयास कऽ रहल अक्क जे की मैथिलीक सिन अहारी भाषा समूहक अनगिनि राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूणयसप्रष भऽ गेल अक्क जे “नै”। ”

रामथिलास शमाक लेख (मैथिली और अन्दी, अन्दी माअक पाटल, सम्पादक रामदयाल पाडेय) जइमे मैथिलीके अन्दीक बोली बनेबाक पयास भेल छलै किर थिरोि यातीजी अपन अन्दी लेख दारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बखयछलअह (आयायि१९४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा दारा कएल मैथिली अनुिद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल पयास ऐ अिथिआर थिआष ि पापि केने अक्क कारण हुनकर उमेर अखन मात ३० बखयछलअह। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ अएटल थि कमप्यूटर साइंसक केतमे रअ काज कऽ रहल छथि, ई थिरोि ि करेक्शन हुनका लोकअ दारा नै रिन अथिलाक सुदूर

वेत्तमे रहआहार ऐ मैथिली पेमी युगि दारा भेल से की देखबै अछि? उमेश मंडल अछि लाक सभ जाअि आ मिथ लोकक कण्ठक गीक फीलडकियदारा आँखयो आ िँखयोमे अछि टलाइज सेहो कएने छथि जे वैदेह आकाइमे उपलब्धि अछि ।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey <http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf> at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. <http://www.videha.co.in/>. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

यूनीकोड पर साञ्चत्य अकादेमीक कणिगोषीमे पचा श्रीरिण (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ मार्च २०१२)

डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनीकोड पर साञ्चत्य अकादेमीक

कणिगोषीमे पचा श्रीरिण कएल गेल। ऐसँ मात ई सप्त भेल जे पचा आहारके नश्ये यूनीकोडक श्रियमे कोनो जानकारी छन्ह आ नश्ये सिटनयि यूनीकोड दुनू फॉन्टक आमाण कोनो पारम्भिक जान छन्ह। हँ ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महति छै जे सीखय चाहै छथि जे पूगिहपूण्यआ पक्कापूण्यमैथिली साक्ष्यक इतिहास कोना आखल जाए। ऐसँ पश्चने चेनि सभ अति अपन समाधिकामे यूनीकोड लेल चेनि सभक योगदानक चचा देखै छी! श्रीरहि यूनीकोड आदिनकी अंशुमन पाण्डेय जखन पटना गेल रहथि हम हुनका कहने रह्यन्ह जे श्रीदापथि भनिमे श्री कुमार ठाकुरक दोकान छन्ह, ओइ सँ अहा मैथिलीक श्रीब की आ सकै छी, मुदा दू दिन अन ओ दोकान आ सभ अति बन्द रहलाक कारण ओइ सँ घुस गेला, बादमे ओए एक गोटे कहलकन्ह जे सभ अन अहा अबै छी, से ई सभ अति अखन कमसँ कम १४-१५ अन आर बन्द रहि कारण दू गुपमे झगड़ा-झाटी भऽ गेल छै। ई अनुभवि लऽ कऽ ओ घुरल रहथि आ से सभ अति अपन समाधिकामे यूनीकोड लेल ओ जे योगदान देलक किर चचा करै अछि! गोश्रिन्द्र झा जीक पि मंगलापर एक गोटे श्रीदान् (!) हुनका कहलन्ह जे रि ओ की बनि, आ गोश्रिन्द्र झा जीक पि नै देलन्ह आ खिन दोसर ठामसँ हुनका पि उपलब्ध करबाओल गेल।

३

[https://esamaad.blogspot.com/2012/01/blog-post_08.html?fbclid=IwAR2oAS6in4rKo0uC1CK1sX2dM7ivqI_CuF8KFNAblN7NH12-pTuPKlkDmsE]

समस्या ८ जनरि २०१२

वैदेह गोष्ठी: (६ आ ७ अक्षर २००८ आ फेर १३ आ १४ अक्षर २००८/ फेर ५ आ ६ अक्षर २००९ आ १२ आ १३ अक्षर २००९/ फेर ४ आ ५ अक्षर २०१० आ ११ आ १२ अक्षर २०१०/ फेर अक्षर पञ्चचा १७ आ १८ अक्षर २०११ आ २४ आ २५ अक्षर २०११ के मैथिली लेल गूगल टासलेटर टूलकिट, गूगल लैंग्वेज टूल, कौनो आ अक्षरलाकर दुनू अक्षरके यूनीसिख कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक आदिनक सीकृपिआ आ अक्षरीपीठ्या मैथिली पर पञ्चचा आ किर सन्दभये पैठकल लैबोरेटरीक पदशम आमसी, अला सुपौलमे भेल। ओए ढेर रास सम्मति एक्सपटयउपति रहति। किर बाद अछु आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल। किर संक्षरि अक्षरिण नीचा देल जा रहल अछ।)

गूगल टासलेटर टूलकिट आब सोसयआ टागअ दुनू भाषाक र पमे मैथिलीके सान देलक .

देखू <http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py?hl=en&answer=147837>

आ <http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en#translations/active>

वैदेहक अक्षरीक बाद गूगल अक्षरी नामा कोनो भाषा नै हेबाक गप माअ लेने अछ, "अक्षरीपीठ्या मैथिली "क सानपना पञ्चनअये वैदेह दारा कैल गेल आ पञ्चनअये अक्षरी नामा कोनो भाषा नै हेबाक गप अक्षरीपीठ्या माअ लेने छल ।

गूगल मैथिली: गूगल लैगुएज टूल-

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>

एएि अंगेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल टासलेट लेल कर , आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंगेजीमे) "अहारी" नामा कोनो भाषा नै हेबाक चचा कर ; ऐ अंकपर अनुदि कर ; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh>

ऐ

अंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en के मैथिलीक उपलब्धि लेल चेक करै रहू।

[अपडेट: -अदेहक एकटा आर सफल- गूगल सचयइअजन आब मैथिलीमे

-अदेहक एकटा आर सफल- गूगल सचयइअजन आब मैथिलीमे- पञ्चने गूगल एकरा अहारी भाषा मानै छल, मुदा अदेहक अरोकि बाद गूगल माअ लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सचयइअजन देल जाए। अदेहक अरोकि बाद अकीपीअया ई पञ्चनअये माअ लेने अअ। <https://www.google.com/webhp?hl=bh> अअ

अंक [गूगल कम्पनी "अहारी" नामसँ सचयइअजनक पारम्भ केलक, मुदा अहारी नामा कोनो भाषा अअये नै। एक गोटे अहारीक अनुदि

अंथाका कऽ देलअह आ से गूगल अंथाका कऽ कए सचयइअजन आअ गेल। फेर श्रीदेहक श्रीनीं उत्तल ऊपर आअ पत आखलअह आ श्रीदेह दारा समसि अनुदिदक लगभग सभटा भाग लिलन्टीयर र पमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाकि केबो केलअह से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली र पमे सचयइअजन देखा रहल अह, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अह।]

-ऐ श्रियपर श्रीदेह गोषीक चचा देखू http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html ऐ आंकपर।

मुदा ई ि पारम्भ अह।

अनुदि पूणयभेलाक बाद मैथिली एडि आओ:

http://www.google.com/language_tools?hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER

गूगल कम्पनी "अहारी" नामसँ सचयइअजनक पारम्भ केलक, मुदा अहारी नामा कोनो भाषा अहये नै। एक गोटे अहारीक अनुदिद अंथाका कऽ देलअह आ से गूगल अंथाका कऽ कए सचयइअजन आअ गेल। फेर श्रीदेहक श्रीनीं उत्तल ऊपर आअ पत आखलअह आ श्रीदेह दारा समसि अनुदिदक लगभग सभटा भाग लिलन्टीयर र पमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाकि केबो केलअह से रोमनमे, ओकरा ठीक

कएल गेल । आब गूगल मैथिली र पमे सचयइअजन देखा रहल अछि,
मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि ।

Vikas Thakore commented on your photo.

Vikas wrote: "https://www.google.com/webhp?hl=bh

Sir, एखु अंक पर गूगल-मैथिली २००४ सं अक्षरि मे अछि..

फेर इ टटका-टटका.... जश (or whatever) कथीलए ?"

Gajendra Thakur टान्सलेट बला ऑफ़ान लेल लेख

पढ़.. [http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-](http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html)

post_08.html

Vikas Thakore commented on your photo.

Vikas wrote: "jee.... Dhanyavaad.

बेजिह परेशानी देबए लेल हम कमापाणि छी.."

अनुदि पूणय भेलाक बाद मैथिली एडि

आओः http://www.google.com/language_tools?hl=bh

अनुदि पूणयभेलाक बाद मैथिली एडि आओ, पञ्चने अहारी एडि छल

अलक केलापर मैथिली अबै छल।

http://www.google.com/language_tools

अपडेट २८ मार्च २०१२।]

[सूचना: १. कैणि आ अथिलाकर दुनू अथके यूनीसिस कैंरेक्टर सेट
(यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय दारा देल आदिन

सीकृि भऽ गेल अछि । आब ई दुनू अक्षयक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक
 अ या क्यूमे लाय गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एँ ऐ दुनू
 अक्षयक आरिभूि फॉन्ट बनेबाक अ या शुरु भऽ जाएि । अक्षिलाकरक
 आरिभूि फॉन्टक नाम श्रीरहुि रहि (जेना देनागरीक आरिभूि
 फॉन्टक नाम मंगल आ बागलाक आरिभूि फॉन्टक नाम त्तिना अछि) ।
 अक्षिलाकरक फॉन्ट लेल िसर बेर संशोधीि आदिन देल गेल रहए,
 दोसर आ िसर आदिनमे श्रीदेहक योगदानक श्रीर्ति चचा भेल अछि,
 यि- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal
 published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha:
 A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15,
 2011), Gajendra Thakur
 [ed]. <http://www.videha.co.in/>."Gajendra Thakur of
 New Delhi graciously met with me and
 corresponded at length about Maithili, offered
 valuable specimens of Maithili manuscripts, printed
 books, and other records, and provided feedback
 regarding requirements for the encoding of Maithili
 in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैगुएज टूल-

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>

अपन योगदान गूगल टासलेट लेल कर , आ कएल सम्पादन बदलबा
 काल कारण मे (अंगेजीमे) "अहारी" नामा कोनो भाषा नै हेबाक चचा
 कर । ऐ अक्षकपर अनुदि कर ; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक
 बाद ।

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh>

ऐ

श्रृंखला http://www.google.co.in/language_tools?hl=en के मैथिलीक उपलब्धि लेल चेक करै रहू।

सूचना: ३. श्रीकीपीश्वर मैथिली:

मीश्वरश्रीकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे श्रीदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि।

आब [http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-](http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai)

[mostused&limit=2000&language=mai](http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai) ऐ श्रृंखला पर Group मे जा कऽ डाउनलोड मेनुसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित कर। जँ अहा श्रीकीपीश्वर टान्सलेटर नै छी तँ <http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator> ऐ

श्रृंखला पर मैथिलीमे टान्सलेट करबाक अनुमति लेल अनुरोधियौ, ऐ सँ पश्चिमे ओहि ऊपरमे दृष्टि काँ लॉग-इन (जँ खाँ नै अछि तँ श्रृ एट अकाउन्ट) कऽ आ प्रोफाइलमे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोगी खाँक श्रृंखलाके अक्षर कऽ अपन प्रयोगी खाँ पना बनाउ। अछि कालमे अहाके टान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाए। किरा बाद अनुदि प्रारम्भ कर।

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator>

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai>

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai>

<http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai>

श्रीदेहक सिसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूच्या केने रही-
 “श्रीकीपीश्यापर मैथिलीपर लेख ि छल मुदा मैथिलीमे लेख नञ्छ
 छल, कारण मैथिलीक श्रीकीपीश्याके सीकृथी नञ्छ भेटल छल। हम
 बहुि न्सँ एञ्चमे लागल रही आ सूच्या करैि हञ्च छी जे
 २७.०१.२००८ के (मैथिली) भाषाके श्रीकी शुर करबाक हेि सीकृथी
 भेटल छैक, मुदा एञ्च हेि कमसँ कम पाच गोटे, श्रिज्ञान जगहसँ
 एकर एञ्छटरक र पमे आयञ्चि र पे काययकरथी खिने योजनाके पूणय
 सीकृथी भेटाैक।” आ आब जखन िन सालसँ बेशी बीथी गेल
 अञ्छ आ मैथिली श्रीकीपीश्या लेल पारञ्चक सभटा आशियकाि पूणय
 कऽ लेल गेल अञ्छ श्रीकीपीश्याक “लैगुएज कमेटी” आब बुझा गेल
 अञ्छ जे मैथिली “अहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अञ्छ आ
 ऐ लेल अलग श्रीकीपीश्याक जर रैि अञ्छ। श्रीकीपीश्याक गेराडय
 एम. आखै

छथी (<http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html>)

-“ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक अहारी भाषासमूहसँ सम्बन्ध के श्रिषयमे

उमेश मंडल दारा देल गेल अछि- उमेश श्रीकीपीश्वर्यापर मैथिलीक सिनीयकरणक पञ्चयोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक पयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक सिनि अहारी भाषा समूहक अनगिनि राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूणयस्य भऽ गेल अछि जे “नै”। ”

रामश्रीलास शमाक लेख (मैथिली और अन्दी, अन्दी माझक पाटल, सम्पादक रामदयाल पाडेय) जइमे मैथिलीके अन्दीक बोली बनेबाक पयास भेल छलै किर श्रीरो यातीजी अपन अन्दी लेख दारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बखयछलअह (आयायि१४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा दारा कएल मैथिली अनुदि आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल पयास ऐ अर्थिआर श्रीश्री ि पापि केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात ३० बखयछलअह। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ अष्टल शि कमप्यूटर साइंसक केतमे रश्च काज कऽ रहल छथि, ई श्रीरो ि करेक्शन हुनका लोकअ दारा नै रिन अश्रीलाक सुदूर केतमे रहअहार ऐ मैथिली पेमी युि दारा भेल से की देखबै अछि? उमेश मंडल अश्रीलाक सभ जाथि आ मिक् लोकक कण्ठक गीके फीलडकियदारा अँछयो आ िँछयोमे अछटलाइज सेहो कएने छथि जे बिदेह आकाइमे उपलब् अछि।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey <http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf> at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a

Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. <http://www.videha.co.in/>. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

यूनीकोड पर सांस्कृतिक अकादेमीक कौगोषीमे पचा श्रीरिण (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ माचय २०१२)

डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनीकोड पर सांस्कृतिक अकादेमीक कौगोषीमे पचा श्रीरिण कएल गेल। ऐसँ मात ई स्पष्ट भेल जे पचा सांस्कृतिक आहारके नञ्चये यूनीकोडक क्षेत्रमे कोनो जानकारी छन्हि आ नञ्चये सिस्टमयि यूनीकोड दुनू फॉन्टक आमाण कोनो पारदर्शक जान छन्हि। हँ ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महत् छै जे सीखय चाहै छथि जे पूरिगहपूण्य आ पक्कापूण्यमैथिली सांस्कृतिक इतिहास कोना आखल जाए। ऐसँ पञ्चने चेनि सञ्चि अपन समाजकामे यूनीकोड लेल चेनि सञ्चिक योगदानक चचा देखै छी! श्रीरहि

यूनीकोड आदिनकी अंशुमन पाण्डेय जखन पटना गेल रहथि कि हम हुनका कहने रञ्जयन्ह जे धीदापथि भनिमे आदि कुमार ठाकुरक दोकान छन्ह, ओऽि सँ अहा मैथिलीक आदिब कीआ सकै छी, मुदा दू िन अन्ह ओ दोकान आ सञ्जथि बन्द रहलाक कारण ओऽि सँ घुअ गेला, बादमे ओऽि एक गोटे कहलकन्ह जे सभ अन्ह अहा अबै छी, से ई सञ्जथि अखन कमसँ कम १४-१५ अन्ह आर बन्द रहि कारण दू गुपमे झगडा-झाटी भऽ गेल छै। ई अनुभवि लऽ कऽ ओ घुरल रहथि आ से सञ्जथि अपन समाजकामे यूनीकोड लेल ओ जे योगदान देलक किर चचा करै अन्ह! गोश्वेन्द्र झा जीक पि मँगलापर एक गोटे धीदान् (!) हुनका कहलन्ह जे िर ओ की बऽि, आ गोश्वेन्द्र झा जीक पि नै देलन्ह आ खिन दोसर ठामसँ हुनका पि उपलब्ध करबाओल गेल।

TWITTER IN MAITHILI

TWITTER IN MAITHILI, PLEASE CLICK <http://translate.twtr.com/welcome> and go to bottom of this link. You will find[[Don't see your language? We're continually reviewing the list of languages we support, and would love your feedback]] - click feedback and apply for Maithili and submit alongwith reason why you need twitter in Maithili. Seeking your cooperation in large numbers again.

खण्ड ४

"श्रीकीपीश्वर्या"मे मैथिलीकबाद मैथिली "गूगल टान्सलेट"मे सेहो..
अथाला लक्ष्म "अमेजन अलेक्सा"

गूगल टान्सलेट

गूगल टान्सलेटक श्रृंखला

<https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate>

गूगल टान्सलेटके आर पुष करबाक खगति छै इ लेल अथाला
काज अढ़ा रहल छी:

<https://translate.google.com/about/contribute/>

पारम्भ:

श्रीकीपीश्वर्या ०१ फरबरी २००८ श्रृंखला

[https://books.google.co.in/books?id=VC-](https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false)

[BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false](https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false)
se (मैथिली देनागरी)

[https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC](https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false)

[&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false](https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false) (मैथिली
श्रृंखला)

[https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C](https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false)

[&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false](https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false) (मैथिली
बेल)

गूगल टान्सलेट २३ जून २०१९क श्रृंखला

[https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/
138489416229195/](https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/)

गूगल टासलेशन टूलमे

"अहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग टासलेशन टूल बनेबाक आदिन श्रीदेहक सदस्यगण दारा देल गेल अछि । अपन योगदान गूगल टासलेट लेल कर ,

आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "अहारी" नामा कोनो भाषा नै हेबाक चचा कर । ऐ अंकपर अनुदिद कर ; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद ।

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh> (links closed)

श्रीकीपीछ्या मैथिली अंक

श्रीदेह (पञ्चाका) <https://mai.wikipedia.org/s/kgv>

इन्टरनेटक संसारमे मैथिली

भाषा <https://mai.wikipedia.org/s/s6h>

भालसञ्चक गाछ <https://mai.wikipedia.org/s/ipm>

श्रीदेह <https://mai.wikipedia.org/s/ie1>

श्रीदेहक फेसबुक भसञ्च <https://mai.wikipedia.org/s/iu1>

श्रीदेह सम्मान <https://mai.wikipedia.org/s/jc2>

श्रीदेह आकाइभ <https://mai.wikipedia.org/s/jc0>

श्रीदेह अथिली रत <https://mai.wikipedia.org/s/jc3>

श्रीदेह अथिलीक खोज <https://mai.wikipedia.org/s/jc4>

श्रीदेह सूचना संपकयअर्पण <https://mai.wikipedia.org/s/jc5>

शुद्धी पकाशन <https://mai.wikipedia.org/s/iu7>

अनञ्चन्हार आखर <https://mai.wikipedia.org/s/ion>

मैथिली गजल <https://mai.wikipedia.org/s/idz>

मैथिली बाल गजल <https://mai.wikipedia.org/s/iex>

मैथिली भर्षि गजल <https://mai.wikipedia.org/s/if1>

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator> [http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests for new languages /Wikipedia Maithili](http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili)

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai>

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai>

<http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai>

अंशम पाचू साइट धीकी मैथिली पोजेक्टक अछि । एख अंक सभ पर जा कय पोजेक्टके आगा बढ़ाऊ । (*links closed*)

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शीघ....)

"धीकीपीछ्या"मे मैथिलीकबाद मैथिली "गूगल टान्सलेट"मे सेहो..
अथाला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

धीदेहक िसर अंकमे (०१ फरबरी २००८) जे खुशखबरी पाठक लोकअके मैथिली धीकीपीछ्याक सम्मर्नमे देल गेल छल किर

सुखद पञ्चणशी कएक साल पञ्चने भेटल छल ।

मैथिली गूगल टान्सलेटक सम्मनमे श्रीदेहक फेसबुक पृष्ठ पर २०११ मे देल गेल किर सुखद पञ्चणशी ११ मई २०२२ के भेटल ।

मैथिली अमेजन अलेक्साक सेहो आरम्भ शीघे हएि ।

(~~श्रोक-स्र~~नीन~~थात~~ नीचा देल जा रहल अ~~थ~~ ।)

<https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&pg=PA1&pg=PA2#v=onepage&q&f=false>

<https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/>

9:25



Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाशिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

त्रिपेक्ष मासिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine त्रिपेक्ष विदेह

Videha विपेक्ष <http://www.videha.co.in>

पत्रिका विपेक्ष

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख न छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनमे एहिमे लागल रहि, ओ' बुधि करैत हरिन छी जे 27.01.2008 केँ आजाकेँ विकी शुरू करवाक हेतु स्वीकृति भेटल छल, मुदा एहि हेतु कसने कस पाबि नहि, विविध जगहसे एकरा एडिटरक रूपमे नियुक्ति कए' काय करबि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटलक। नीचाँ लिखल लिंक पर जाय एडिट कर एहि प्रोजेक्टमे अहाँ मथ सहयोग करब, जे आना अछि। पहिला अचमे देवनागरी कोना लिखू, एहि पर हम लेख लिखने रहि। इंग्लिश कीबोर्ड पर ओहि वस्तु लिखने विकीमे सेहो मैथिली लिखि सकैत छी। एम, मेराईक माध्यमसे भी अनुमन पावैतक, जिनकर मैथिलीक सुनिकोइमे स्थानक आवेदन लखि अछि, अनुरोध भेटल छल, ओ' सुचना संलग्नित जाहि में स्पष्ट रूपमे बसला लिपि ओ' मैथिली लिपिक मध्य अंतर ज्ञान मथ सकयलै सुचना हम एम, मेराईक माध्यमसे हुनका पठा देमिबनि, कारण पाण्डेयजी ईमेल एड्रेस हमरा नहि अछि। विकीमे पूर्ण स्वीकृति हेतु एहि लिंक मथ पर राखल प्रोजेक्टकेँ जीया बढाओ।

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp.mai>

<http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage|mai>

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai>

अन्येक प्रतिक्रिया ओ' रचनाक स्वीका अछि।

नई दिल्ली

01.02.2008

प्रिन्सपल 7761

© सर्वाधिकार लेखकजीय ओ' अवस लेखकक नाम नहि अछि अवस संपादकजीय।

विदेह (पाशिक) संपादक-बन्धन ठाकुर। एतम प्रकाशित रचना सभक कोपीराइट लेखक लोकनिक सभमे रहलनि, माथ एकर प्रथम प्रकाशनक अधिकार एहि ई-पत्रिकाकेँ लेखक रचनाकर अपन मौलिक ओ, अवकाशित रचना सभ(बकर मौलिकताक संर्ण उत्तरदायित्व लेखकसभक मथ छनि) ggjendma@yahoo.co.in ओकि ggjendma@videha.co.in केँ मेल अटचमेन्टक रूपमे .doc, docx, .txt किना .pdf फॉर्मेटमे पठाब सकैत छवि(रचनाक संघ रचनाकार अपन छवित परिचय(साबोदाह) ओ' अपन स्वेच कएल मेल फोटो पठावा, जे अक्षा करैत छी। रचनाक संघ ई घोषणा रहल-जे ई रचना मौलिक अछि ओ' पढ़िन प्रकाशनक हेतु विदेह(पाशिक) ई-पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होवनाक बाद बचासंभव बीमारी (मथ दिनमे) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत।

2

Digitized by Google

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाशिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

त्रिपेक्ष मासिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine त्रिपेक्ष विदेह

Videha विपेक्ष <http://www.videha.co.in>

पत्रिका विपेक्ष

1. मेल लेख.

9:53



<  **Gajendra Thakur** shared a link. ...
 Admin 23 Jun 2011 · 

गूगल ट्रांसलेशन टूलमे "बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।
<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>
<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh>

google.com

Google in Your Language



Like



Comment



Send

 You, Ashish Anchinhar and 7 others

**Gajendra Thakur**

Author Admin ...

नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकें आगाँ बढ़ाऊ।

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator>

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai>



Write a comment...



Home



Friends



Watch



Profile



Notifications



Menu

9:54



<  **Gajendra Thakur** shared a link. ...

Admin 23 Jun 2011 · 

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>
<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh>

google.com

Google in Your Language



Like



Comment



Send

 You, Ashish Anchinhar and 7 others



Gajendra Thakur

Author **Admin** ...

नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकें
आगाँ बढ़ाऊ।

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator>

[http://meta.wikimedia.org/wiki/
Requests_for_new_languages/
Wikipedia_Maithili](http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili)

[http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?
task=untranslated&group=core-
mostused&limit=2000&language=mai](http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai)

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai>

[http://translatewiki.net/wiki/
MediaWiki:Mainpage/mai](http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai)

10 y Like

3 



Write a comment...



Home



Friends



Watch



Profile



Notifications



Menu

ओञ्च समयमे श्रीदेह सम्पादक मण्डलमे ई लोकञ्च रहथी: सह-सम्पादक: उमेश मंडल । सहायक सम्पादक: श्री कुमार झा आ मुनाजी (मनोज कुमार कण्ठ) । भाषा सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार श्रीदानन्द झा । कला-सम्पादन: नीति कुमारी आ रश्मि रेखा अन्हार । सम्पादक-शो-अर्नविषण: डॉ. जया मि आ डॉ. राजी कुमार बमा । सम्पादका नाटक-रंगमंच-चलच्चत: बेचन ठाकुर । सम्पादक सूचना-सम्पादकसमाद: पूनम मंडल अ अयंका झा । सम्पादक अनुदि श्रीभाग: श्रीनी उत्तल । सप्त अञ्च जे "सम्पादक अनुदि श्रीभाग" श्रीनी उत्तल (आब अञ्चस्टेन्ट पोफेसर, आइ.आइ.एम.सी. जम्मू) क श्रेशेय सहयोग रहल, आशीष अनञ्चन्हार सम्पादक मण्डल मे नञ्चयो रहला उतर कोनो सम्पादकसँ कम काज नै करै छथी । मैथिलीक पाठक गियसेहो अपन योशञ्च योगदान देलञ्च ।

[https://books.google.co.in/books?id=zmlugpjpOKYC
&lpg=PA1&pg=PA600#v=onepage&q&f=false](https://books.google.co.in/books?id=zmlugpjpOKYC&lpg=PA1&pg=PA600#v=onepage&q&f=false)

[https://books.google.co.in/books?id=-
U04e5FfnTEC&lpg=PA1&pg=PA405#v=onepage&q
&f=false](https://books.google.co.in/books?id=-U04e5FfnTEC&lpg=PA1&pg=PA405#v=onepage&q&f=false)

गूगल टान्सलेटके आर पुष करबाक खगति छै इ लेल अञ्चला काज अढ़ा रहल छी:

<https://translate.google.com/about/contribute/>

गूगल टान्सलेट कायञ्चम देखू

<https://youtu.be/nP-nMZpLM1A>

Google Translate:04:45to06:25 (24 new languages at 06:00)

Detailed Description

Tune in to find out about how we're furthering our mission to organize the world's information and make it universally accessible and useful. To watch this keynote with American Sign Language (ASL) interpretation, please click here: <https://youtu.be/PeUXBvRExic>

0:00 Opening Film

1:47 Introduction, Sundar Pichai

6:21 Knowledge

15:45 Knowledge&Search

27:15 Skin Tone Equity

32:00 Computing

33:08 Assistant

43:34 Computing: AI Test Kitchen

53:08 Safer with Google

1:04:38 Safer Way to Search

1:11:20 Android: Opening

1:45:45 Android: Wear OS&Tablet

1:25:32 Android: Better Together

1:31:22 Hardware: Opening

1:33:22 Hardware: Pixel Phone&Buds

1:45:44 Hardware: Ambient&Beyond the Phone

1:54:32 Augmented Reality&Close

संपादकीय

दी ओषध्मनल गीीजश्च' केर धीमोचनः टैगोरक धीरोिनक ७५ षिय
बाद

शाणि मासक २२ िरीख टैगोर-पेमी लोकश्चक लेल एकटा महर्तपूणय
श्चसि होई छइ. आइ सं ७५ षियपूयिहुनकर धीरोिन भेल छलश्च
आ' कलकताक राजपि पर मनुकखक समुर बश्च गेल छल; मुदा
कम्मे लोग जनैि अश्च जे जाश्च “गीीजश्चः द' सोग ओफक्रेश्चंग्स”
(इंश्चया सोसाईटी दारा पकाश्चाि, १९१२) केर लेल १९१३ मे
एश्चायाक पश्चल साश्चत्पकार केर र प मे हुनका नोबेल पुरस्कार भेटल
छलश्च, ओ हुनक कश्ची-र प मे मयादाक सही पमाण नइ छलश्च,
श्चयेकये ि मूल ‘गीीजश्च’ (१९१० मे बंगला मे पकाश्चाि) केर
१५७ मे सं मात ५३ गोट कश्चीि एश्च कश्ची-कृि अंगेजी अनुिद मे
अंभुयि भेल छल, बाकी १०४ गोट कश्चीिक अनुिद टैगोर कश्चयहु
नइ केलश्च जाश्च सं हुनकर कश्चीिक पेमी पाठक के ओषध्मनल
गीीजश्च' केर रसासीदनक कोनो मओका नइ भेटलश्च; आब
नश्चकेिक अनुिद मे िह मूल गीीजश्चक पूणाग अनुिद आ' ९०
पृष केर धीश्लेषण आ' व्याख्या सश्चि ई अपूयिरपे कश्चीि-पेमी
पाठक गिय लेल उपश्चिि अश्च; २०१५ मे एश्च पुसकिक मूल
इउरोथय संस्करण चपल छल जमधी सं जकर पकाशक छलाह
एश्चामा धीी मल्टीश्चंगुआ सुदूर एंडोरा देशक; आब किरश्च भारीीय
िि साकयसंस्करण पकाश्चाि भेल जकरा धीश-भारीीक उपाचायय
पोः सपिन दता धीमोचन केलश्च आ' धीश-भारीीक संग MoU केर
उपज सरिप एश्च पुसकिक धीषय मे बाजली पोः पिीि मुखोपाध्माय,
अध्यक, रीनर भनि. एश्च पुसकिक उपलब्धि भ' सकैछ १९९ टाका

(१०% केर छूट िि डाक वय फी, अिि मात 900 टाका) मे, जखन अ एकर यूरोपयन एक्शन केर मूल्य छइ ३४ यूरो (पायः २५२० टाका). एक् पुस्तिक लेल अखी: E-LEKHANFoundation Trust: B1&C1, Dakshinayan, Abanpally, Santiniketan 731235 Dt Birbhum, West Bengal

बीहआ (बीहआ) कऱि बा अथि लघु कऱि [सीड स्टोरी (फ्लैश अक्शन) बा िरी शॉटयस्टोरी]

मैथिलीमे बेइमान साक्ष्य अकादेमीक, ओकर बेइमान मैथिली परामशदाती सभिक आ मैथिली साक्ष्य लेल दइ जाइबला पुरस्कारक बेइमान जूरीक पथि बीदेहक सभकल स्टाइक दस सालसँ चक्ष रहल अक्। ओकर थिरोमे बेइमान लोक आ कखनो गजलक नामपर, कखनो नाटकक नामपर, कखनो िथीक नामपर आ कखनो बीहआ कऱिक नामपर भेख बदक्ष-बदक्ष छद बहस चलेबाक बेइमानी करै रहल छथि। बेइमान साक्ष्यकार सभ मुदा दुबराइ गेला, अपन थिचारिक दुबसा देख ओ ऐ छद बहसक लेल बाध्य भेला। आ ओइमे बेइमान संसि आ जूरीक संग हुनकर समि ियिअथिला राज्य अस्थानी सभ सेहो केलक। हँ, मैथिलीक साक्ष्य अकादेमीमे जे बेइजती अनका सभक कारण कएल जा रहल अक्, किर ५० साल पूणयभेल। मैथिलीके माअ बेइमानीक िि बीदेहक सभकल स्टाइक कारण म्हल अक्, आ ओइ स्टाइकक कारण मूल िरा समानानि िराक सोझा अत भऽ गेल अक्, गुणात्मके नै मातामे

सेहो ।

बीहआ (बीहआ) कऱि बा अथी लघु कऱि [सीड स्टोरी (फ्लैश फ़क्शन) बा री शॉटयस्टोरी]

बीदेह बीहआ कऱि बीशेषाकमे बीहआ कऱिक समीकशास्त आएल ।
 बीदेह पबन-आबन-समालोचना बीशेषाकमे साश्चत्यक समीकशास्त आएल । अथो अथी लघु कऱिके बीहआ कऱि नै आखऱि री कऱि खून री नै कऱ देबै । आ अथो बीहआ कऱिके अथी लघुकऱि आखऱि री ओकरासँ भबिडी री नै कएल जा सकैए । अंगेजीमे अथी लघुकऱि लेल मुदा अहा "शॉटयस्टोरी" नै आश्चर्य सकै छी । ओइ लेल सीड स्टोरी बा फ्लैश फ़क्शन बा आन कोनो शब्दाली आखैये पड़ि । ओऱि ओइपर बहस चखैये रहल अछ । मुदा ओइ लेल "शॉटयस्टोरी" नै आश्चर्य सकै छी, अइपर ओऱि कोनो बीद नै अछ । अछु मैथिलीक अंगेजी (!!) पोफेसर के ई गप नै बुझल छअह, इ लेल भारकऱि बीशबीदालयमे चयन कोना होइ अछ से ककरोसँ नुकाएल नै अछ । हँ मैथिलीमे बीआ आ बीहआ सीड आ सैपशंग दुनूके कहल जाइए ।

आब आउ बीहआ कऱिक गुणात्मक बीश्लेषणपर । पदक बीी हाइकूके हम ऐमे जोख कऱ देखब । बीहआ कऱिक मान्यऱि अ ओइ बेइमान साश्चत्य अकादेमीक हाऱिमे अछ ? माआ आअ काथी साश्चत्य अकादेमीमे सआकल स्टाइक होइए आ ओऱि भुसकोल लोकक अकाल भऱ जाइए । इयो अ बीहआ कऱि (अथी लघु कऱि) संगह बा हाइकू संगहके पुरस्कार देल जा सकऱि ? अ बीहआ कऱिक नाम अथी लघु कऱि कऱ देले टा सँ ओइमे गुणात्मक री भऱ जाए बा

अर्थ लघु कविक नाम बदल बीहल कविक कऽ दी ि ओही लेखकक िह रचना खरापसँ नीक भऽ जाए। आ माल ललओ कोनो िसरे शब्द अर्थ लघु कविक बा बीहल कविक लेल पयुक्क हुअए लागए, बा लघु कविक संगहमे एकटा बीहल (अर्थ लघु) कविक सेहो लेखक सललललल कऽ लेखी ि की ओकर समीक अहा नै करब। आ जँ एकर शीषय पेम रहए आ लललु युगि लपेक (लघु पेम कविक) कल एकरा सलललललल करलल ि की हम ई कल समीक करब जे लघु बीहल पेम कविक लललल ि ओ लोकलसमीक करल आ अर्थ लघु पेम कविक लललल खलन ई लोकल समीक करल। एक पालक गद/ पद हुअए बा एक लाख पालक, ओ सलललललल रचना भेल आ ओकर समीक हेबे टा करल, चाहे ओकर नामकरण अहा जे करी।

मुदा हाइकू आल बीहल कविक संगह सभमे एकटा सलसल अल। बेशी गोटे जे ऐ दुनू शीमे ललल, से गुणक बले नै नामकरणक बले पुरस्कार जीऽ चाहै ललल। जँ ई कही जे ऐ दुनू शीमे कम पललललल सलललललल सल य ललल ि असलल नै हल। मुदा एकर अललई नै जे ओ सभ एकोटा नीक बीहल कविक नै ललललने ललल। हँ जँ हुनकर लेखनीके देखी ि एक-आलल नीक रचना ओ दऽ सकल ललल। आ जलल संगह भल नीक बीहल कविक संगह ओ नै दऽ सकल, ललन पलरल-पैगामक पुरस्कार भेटब कलने हेलल। ि की ई लोकल लूलयललल-कविक लललललल योगल नै ललल ि मजबूरीमे बीहल कविक लललल ललल? हँ बुझाइ ि सएह अल।

राजमोहन झल अपन लघु कविक संगहक अनलमे एकटा बीहल कविक लललललल, "ललल"- सनगर बीहल कविक। ललल नीक बीहल कविकमे परमेशर काललल "सललरल", अमरनल झल कर "देह", जललल झल

चौरीक "नबका पीढ़ी", उमेश मण्डलक "रपैआक ढेरी", कथलेशर राउकि "छूआ-छूि", मुनाजीक "रेीज", अनमोल झा केर "पाकि" आ ओमपकाश झा केर "स्पेशल परफॉर्म" अबै अछि। ऐ सभ बीहआ किके एकत करी कि एकटा पुरस्कार पेबा योग्य संगह बनै, आ पुरस्कार संयुक्त रूपे देल जा सकै। हाइकूमे समस्या आर गम्भीर अछि, बाशो अखै छथि जे जे अक्यो १२ टा हाइकू अछि लेखि कि ओ महाकथि भेला, खिन मैथिलीमे सभ महाकथि भऽ जे, आ एका टा नीक आ हजारक हजार बीहआ-सन कि लिखि बहु गोटे महा-बीहआकार कहै।

काअनीजीक पाच टा कश्चीं आ ओइपर मृिकानि झा जीक अप्पणी

जेना की बूझल हएँ जे अर्द्धेह एकटा नऱि पोजेक्ट केर घोषणा केने छल, जै अनर्गसि अर्द्धेहक संपादक मंडल एकटा कोनो रचनाकमीसँ हुनक अछु रचना आमंश्रुति कऽ अर्द्धेहक एकटा अंकमे देँ आ ओइ रचनाकमीक संबंधिमे कोनो आन रचनाकमी अप्पणी देँ। आ ऐ पोजेक्ट केर पश्चल घोषणामे काअनी जीक रचना आमंश्रुति कएल गेल छल आ काअनीजीक रचनाअघिपर अप्पणी करबा लेल मृिकानि झा जीके आमंश्रुति कएल गेल छल। ऐ अंकसँ ई पोजेक्टक शुरुआति भऽ रहल अछु तँ पश्चने पढ़ू काअनीजीक पाच गोट कश्चीं आ किर बाद मृिकाजीक अर्चिार

१

छौडीक आँख मे

एकटा छोट छीन छौडीक आँखमे

समायल छै दुआया

एकटा भरल-पूरल दुआया

जाखमे की नदी बहै छै

की उरै छै झरना

पहाड़परसँ

हनहनाइ छै की

बासक पैघ पैघ बोन

पुरबा पछबाक बसाभि

कौ उड़ान भरै छै फ़ेन

दूर शिक याता यि करबाक लेल

लगाओल जाइ छै कौ पदशमी

अछु बेचबाक लेल

अछु खरीदबाक लेल

छौड़ीक आँखमे हँसी छै

दू बुद्ध नोर छै

पूरा दुआया छै

मुदा छौड़ीक आँखमे

छौड़ी नख छै

कौ नख छै ओकर अर्ति

ओकर इच्छा/ ओकर आकांक्ष

ओकरा कि दौड़ावल जा रहल छै

बेटीसँ कआया

आ कञ्जयासँ माय बनबाक लेल ।

२

आशाक बान्ह

सब बेर ओकर घरबला

ओकरा आँखमे बाँह जाइ छै

आशाक बान्ह

की एक्क बेर पठै ओकरा लेल

रिउ रखै लेल

नीक नूआ

गुदड़ी गुदड़ी भेल

आँगीके फेरबाक लेल

रेशमी कपड़ा

पञ्चरबाक लेल

एक जोड़ा चप्पल

एक्क बेर जाइ देरी पठै

ओकरा नामसँ मञ्जआडर

आ बचन महाजनक पाई

गढ़ै ओ अपना लेल

नाक महक छक

अक एक्क बेर दूगा पूजामे

देखा देँ लोकके

अ ओ परदेश्याक बहु अक्क

मुदा सब बेर

जाइँ मारि

असअ जाइँ छै ओकरा

आ ओकर सपनाक करि

नोरक िर मे बअ जाइँ छै

एक-एक कऽ सबटा

एकटा िसरे आँँि घेअ लैँ छै

नअ जाअ की भेलै परदेशमे ओकरा ।

३

मी !

अहा एना

कञ्चया शि बैसल रहब आशामे

की अहाक िरीमे

खसायि ञ्कयो रोटी

आ अहाक हा मि

सौथ दे ञ्कयो अधिकार

कञ्चया शि ठाढ रहब

मुँह ञ्चपर

की अहाक घरमे

टाग पसाञ्च कऽ सूलि लोक

आकञ्च जायि सहजञ्च

कञ्चया शि बैसाखीक सहारे

बजबै रहबै

बाहरक घंटी

की श्रयो जागि

जकरा अहा सुनेबै

अपन संपूणयक्याि की

मीि!

कश्चया शि मुनने रहबै कान

अभद्र गाश्च सुश्च कऽ

की ओ चुप्प भऽ जायि सहजश्च

आश्चर कश्चया शि

बनल रहबै अहा

मीलक पारि

जकरापर जेठक दुपहश्चया

आ साओनक बरखाक

असर नश्च परैि छै मीि ।

४

थी

एक बेर फेर

थीक सोझामे

थीन अहीन

आ भक्षि अक्षि छ

पैरक फाटल बेमाय जका

खेी फाश् गेल

एक बेर फेर पकृथी मुँह मोड़लक

आ थि नश्च भेल

ओ पश्चरि क पैघ बेगराक सोझामे

बड़ छोट महसूस करै छथी अपनाके

घरक खचा/ स्कूल कऽ फीस

लगानक बोझ

बेटीक भाहीन आँख

सबहक सोझामे

लगै छथि एक्क बेर

परासि भऽ जेति

शून्य आकाश अस्स किँ-किँ

हुनकर आँखयो शून्य बुझना जाइ अक्क

ओ सब अन्न जाइ छै खेकि आशपर

आ टाट परल रिँ देख कऽ

घुअ अबै छथि

ओ सब अन्न इन्सँ करै छथि पाप्मा

अएक थिक आँखमे एखनो

पाआक देति इन्ने छथि

षि अय / षि अय

दरारग फाटल खेकि

पाआ सँ पोहपी कऽ अय

जे हमर जीनिक आरि अक्क

सुखक संसार अक्क

मुदा कोनो पथिअ या

नञ्च देखा परैँ अञ्च केम्हरो

कोनो पञ्चिञ्च नञ्च

बुझना जाइँ अञ्च की

आराशा आगु आ आशा पाछू छुटल जाइँ अञ्च

खुटा पर बान्हल बड़द जका

थी बेबस भेल जाइँ छथी

समय अञ्च की ियो

दरकल अयना जका

दू भागमे

थीके बाञ्च रहल अञ्च

ञ्चना कोनो दोष के ।

५

मोन आइ मायासँ मुक् अञ्च

मोन आइ हँसा रहल अञ्च

मोन आइ नाञ्च रहल अञ्च

मोन आइ गाञ्च रहल अञ्च

मोन पाश्च लगा आसमानमे

उच्छयो रहल अश्छ

मोन आइ मायासँ मुर्क अश्छ

मोन आइ ददसँ लिंग अश्छ

मोन आइ सब बर्नि

सब देशके पार कऽ लेलक

मोन आइ खुशीके

अपना जीनिक आरि बना लेलक

मोनक आँगनमे आइ

फुलायल अश्छ भालसश्चक फूल

मोनक आँगनमे आइ पसश्च रहल अश्छ

पाश्चजाकि सुगं

मोनक आँगनमे आइ

उश्च रहल अश्छ चान

मोनक आँगन मे आइ

गाश्च रहल अश्च कोइली गुनगुना रहल अश्च भौरा

मोनक आँगनमे सञ्च रहल अश्च

फूल भरल सेज

मोनक आँगनमे उश्च रहल अश्च

मान सम्मान िरे िरे

आँश्चमे पेम भरने

हर डेगमे शिशास लेने

अधिकारसँ

अपना श्वस श्वचै

अपनामे समटै ।

काश्चनीजीक अछु कश्चि.... एक श्मशय-(मृिका झा)

मैश्चली साश्चत्यक काव्य श्चिमे मश्चलाक संख्या पर्याप्त नश्च । बड़िक पात छश्च काश्चनी जी जे ओ अपन सृजनशीलक माध्यम कश्चिके चुनलश्च । श्वनकर कश्चि संगह पकाश्चाि अश्च ि पत पश्चकामे सेहो पकाश्चाि अश्च । ई बेस चश्चायि िि अश्चायि कश्चियतीमे एक छश्च । हमरा समक संयोगशि श्वनक अछु कश्चि भेटल अश्च । पदल, गुणल आ किर पश्चणामसरि प एश्च कश्चिपर दू शब्द श्वखबाक लोभ संरिण नश्च कऽ पाश्च रहल छी । काश्चनी जी शहरमे रहै छश्च

लेखन अथीलाक माथ पाथ लोकक दशा दुदशासँ पथथि छथि आ किरा आरि बना अपन सरल सहज सुंदर शब्दसँ संदिनाक एहेन रिंग उत्पथि करै छथि जे झकझोथ दैछ ।

अनकर पञ्चल कथी छौडीक आँख मे, एक बेटी के एहन सिरीर पसुि करैछ जकरा आँखमे पाकृथिक, कृष्णम बजार सजल छैक, हँसी नोर छैक परन्तु नञ्च भेटैछ ओकर अपन अस्मृतिक रेह । ओकर इच्छा आकांक्षक नञ्च छैक कोनो जगह । एकर कारण कथियती मानै छथि नारीक ओ यंतर्गि जीनि जे बेटीसँ कथाया, कथायासँ माय बनाबक लेल सञ्चयोसँ ओकरा दौड़ा रहल छैक । नारीकक एञ्च दुदशासँ सभ आज छी गिथ अनकर कलात्मक पसुि एञ्च संदिनाके मोर्गिक चमक पदान करै अञ्च ।

अनकर दोसर कथी, आशाक बान्ह, एक एहेन पतीक आताकण अञ्च जे परदेशी पथिक बाकि भरोसपर नहि नहि साड़ी आँगी, गहना पहीरबाक सपना देखै अञ्च, महाजनसँ फराकथि भेटबाक आश करै अञ्च । अपन शान शौकिक के बलपर सबके चक्कि करबाक आलसा पालै अञ्च । आनन्दमे मगन अञ्च । लेखन सभ झूठ । एकअन हहा कऽ टुटल सपना संग खसै अञ्च आ परदेश्याया पथिक कुशल केम जनबाक लेल औहथ कटै अञ्च । अथीलाक परदेशी जीनि आ अना पिपेसीक दुदशाक सजी अतण माथक बआ पड़ल अञ्च ।

सिर कधी, मी, अशु जे अशिलामे संरामक रोग सदृश आलसीपनक रपमे घरे-घर पसरल अशु। ककरो बैसल ठाम कोना पेट भरि किरा याश्च करबै कधीयती एश्च बेरोजगार लोकक लिलना ओश्च मीलक पारिसँ करै छथि जकरा रौद बसाि आ बषाक नश्च होइ छैक कोनो असश्च। ओ कहै छथि जे आबो बहराउ, कश्चया शि रहब बनल मीलक पारि। ई मैथिल समाज लेल बेस पेरणादायक अशु जकरा शारीश्चक पश्चशम अपमान सन लगैछ। पारिक उपमा सटीक लगैछ।

चाश्चम कधी, थि, जे अशसान छथि आ मानसून पर आभश्च अशसानि केहेन खुनीमा होइछ किर हृदयश्चिदारक णिश्च कोनो पाठकके रश्चि कऽ सकैछ। खेमे फाटल दराश्च हुनका अपन जीनि के दरकल आयना सन दू फाक करै छश्च। आम्मेदारीक बोझ आ बेटीक उदास आँश्च थिक आत्माके छहोश्चि कऽ दै अशु। अशसान थिक बहने काश्चनी जी भारतीय अशसानक आत्महत्याक कारणके दृढीपूश्चि रेखाश्चि कयलश्च अशु।

पाचम कधी, पश्चल कधी छौडीक आँश्चमे, के थिपरी एक एहन मश्चलाक आत्माकण कयलश्च अशु जे अपन बल पर सम्मान पाश्च अथि हश्चि छथि। हुनका आँगनमे बसिक सुगंधि, पुनमक चान, साउनक बहार आ कोयलीक गूँजन एक संग उश्चि आएल छश्च। खुशीमे पाश्च लाश्च हुनका आसमानमे उड़बाक आनंद पदान कऽ रहल छश्च। थिशासक डेग, अधिकारक सुगं छि हुनका जँ अपना अश्च आइ

घीच रहल छअ ई संसार अपन आँचरमे समेअ रहल छअ । आनंदक ई पल पाठको के आत्मआभय होयबाक लेल पेशि करैछ ।

काअनी जीक कथीं सँ पीं होइछ जे ई कोनो िद श्रीदिसँ पभाथीं भऽ रिल पथीअ याक र पमे ई कोनो रचना नअ करै छथी । जे देखै छथी किरा भानात्मक पाथ लगाना पसुं करै छथी जे पाठकके अपन सुख-दुख बुझा जाइछ । हँ, ई ई जर र जे ओ समस्या क दुआअ जाइ छथी परन्तु घरक कोड़ अड़की नअ खोलै छथी जे अवनक कथीं के कनी छुछुआन करै छअ । लेअन अवनकर कोमल शब्दमे गंभीर भाँ आ सहानुभूथी अवनकर कथींके माथकी पदान करैछ जे अवनकर सफल थिक । बिड़ । खूब अखथी, यशक समाजी बनथी से कामना रहि ।

पयास पेमी मैथील

जन्म दैि अशु मा बाप करम िऽ अपनेही (नाटक)

पात पर्वचय

(१) करसाल व हि ठाकुः-(गिजा'क')

(२) सुसा:- (गिनी 'क')

(३) क्क :- (गिजाके बेटी जेठकी)

(४) क्कभ्या:- (गिजाके बेटी रैझली)

(५) वर्वि:- (गिजाके बेटी 'झली)

(६) रेनुका:- (गिजाके बेटी छ टकी)

(७) बैजु :- (रत्ती 'क')

(८) भूला:- (नर्विया 'अपाकज')

(९) बर्विया राइ

(१०) रिमाल व हि:- (गिजा 'ख')

(११) सुरैना :- (गिजकुराणी)

(१२) जीतिरि (रत्ती 'ख')

(१३) अनि:- (रक्कमया)

(१४) गजम :- (गिक)

(१५) लाल ककया :- (गिक के बेटी)

(१६) हाती

(१७) हा कहु :- (हातीके बेटी)

(१८) अरि :- (नरि युगिज रेनुकाके बेटा)

करि के इ ि ॰ बानलि अक वजनगीकऽ एक कथा

जनर दै अक रा बाप करि िऽ अपनेही

जीनगी एक अजीब दासीन छैक जे जनर िऽ रा बाप दै रुदा करि अपनेही हयि अक। जे जेहन काज काँ ि छैकहुनका ओक अनु ि वजनगी कऽ फल बलै ि अक। आ ि वीणि छठी के विरिरे जे वीनि कख दै छैक ओकी कओ नै काव कैं अक, आ उ त्रिके िणी के भगही टा पाँ ि अक। इहे विषय पाँ आर्वि चिनाका िया री रैकलदा कख कहानी : करि के इ ि ॰ बानलि अक वजनगीकऽ एक कहानी

"जनर दैि अक्ख रा बाप करि िऽ अपनेही"

भाग - १

एक जिज्जरे एक गिजा हैि छैक। गिजा के ४ टा बेटी छक्ख,क्क, क्क्या, व्वि आ रेनुका छक्ख। आ क्कछ नौककि चाकि ेह हैि छैक। गिजा कऽ चार बेटी ब रन जनि ू अप्पन -अप्पन पीई क्खआई क्कि हैि अक्ख। एकक्कन चार बक्कन 1थरे कॉलेज पढ़ेबाक लेल जाइि छल िऽ बाटरे देखैि अक्ख के एक लंगिड़ा लुल्ला यानी एक अपाक्कज क्ककि भूख ू िऽपैि बीच बाट पऽ बेह नजि भेटैि छैक।

क्कः ए के छे ू सिि पि ू हटबे की नै, गिि आउि जगह नै भेटलौ जे बीच सिि पि आक्क के देह ओगड़ने छी ?

अपाक्कजः हे बक्कन हर नै चक्क कैि छी। अहा चक्क कैि छी िऽ हरिि ककि लगाक्क क्कय, नै िऽ नारि कऽ चक्क जाऊ !

क्कः िऽ क्कनका हर जाइि छी छुएबाक लेल

(चपैट कऽ बजैि अक्ख आ हुनका क्क नारिकऽ चक्क जाइि अक्ख) 1थे क्क्या आ व्वि दुनू क ई क्क जका नारिकऽ चक्क जाइि अक्ख।

रेनुकाः हे भगिनि ! लगैि अक्ख क्कचाि अपाक्कज बहुि क्कन ू दाना - पाक ू क्काकुल छैक।

(रेनुका अप्पन रनरे . क हिल छैक)रेनका नै क्कछ पुक्क हुनका

अपन कऱिरे उठाकऱकऱ एक बृक के लग लऱ जाइँ अकऱ ।

अपाकऱज : पाक ... पाक ..

.(रेनुका . चैँ छैक ... दीदी ब कॉलेज पुवा गेल हइकऱन । अगऱि आजु हर कॉलेज नै जाइ छी िऱ कऱिजी हरि बहुँ बड़का जा देहि आ अगऱि कॉलेज जाइ छी िऱ ई अजान बे हाँ कऱ पाक कऱनु रृतु भऱ कँ अकऱ । नै नै एक यिक्कि के कऱनगीँ बकऱ हरि पऱईँ नै छैक बर हर कऱिजीके जाईँ भूवा लेबै रुदा कऱनका हर एहन हालरिरे छकऱ के नै जेबै पढ़ेबाक लेल । रेनुका पाक लबैँ अकऱ आ अपन कऱनकऱ बटा खाना हुनका अपन हाथँ खुकि दैँ अकऱ । खिने रेनुका के दीदी ब कॉलेजँ छुटी भऱ कऱ आकऱ जाइँ अकऱ ।

कऱकऱ : रेनुका बौँ अहा कॉलेज नै गेलौ ? चलू आजु िँ कनीक, हर अहाक व कायि कऱि जीँ कँ छी ।

रेनुका : दीदी देखुने ई बे हाँ पाकँ डिपैँ छलैथ बिहर कऱनका लेल पाक लेब गेलौ िकँ हरि कॉलेज जाइरे देँ भऱ गेल । आब अकऱकिहुँ दीदी एक आदरी के जानँ बकऱके हरि पऱईँ िऱ नैने छैक ... दीदी ?

कऱकऱ : आब िहुँ चलब की हुनके िँ गठबनि कऱिबाक वचाँ छैक ? आजु िँ जाइरे ककि देँ भऱ गेलँ अहाक पऱ अकऱ ? िँ जाऱक की जऱिब देबै कऱिजी के ?

भाग ~ २

गिजा : बेटी क्कऱ ! अहा बके कॉलेज ' आबैरे क्कए दे' भऽ गेल बऽती ?

क्कऱ : नै क्कऱि जी नै क्कछ, बाटरे गी ल केन ब ' बव'याई लगलौ गिक्क चल'ि आबैरे दे' भ'गेल । (क्कऱ बा'ि छुपाक कहै'ि अक्क ।)

गिजा : अच्छा क ई बा'ि नै, बेटी अहा ब चार बक्कन आब व यान भ'गेलौ । हर अहा ब ' क्कछ गिल कऽहिल छी । अहा चार बक्कन . क्कक जगिब देब ।

क्कऱ : जी क्कऱि जी हर ब जर 'ि ही जगिब देबैन ।

गिजा : क्कऱ ! अहा कहु 'ि केककि व 'ि पललौ, केककि व 'ि पढ़लौ आ केककि व 'ि कहल रानै'ि छी ?

क्कऱ : क्कऱि जी हर 'ि अक्ककि व 'ि पललौ, अक्ककि व 'ि पढ़लौ आ अक्ककि व 'ि कहल रानै'ि छी ।

गिजा : अहा क्कया ?

क्कया : क्कऱि जी हर 'ि अक्ककि व 'ि पललौ, अक्ककि व 'ि पढ़लौ आ अक्ककि व 'ि हरहुँ कहल रानै'ि छी ।

गिजा : अहा व'र्वि ?

व'र्वि : क्कऱि जी हर 'ि अक्ककि व 'ि पललौ, अक्ककि व 'ि पढ़लौ आ अक्ककि व 'ि हरहुँ कहल रानै'ि छी ।

जिजा : अहा कहू रेनुका ?

रेनुका : माँ जी जन्म दि जरि रा बाप दै छथन रुदा करि
अपनेही हइ छैक आ जे जेहन करि काँ छथ ओकी व्याह
अनु रि फल बलै अछ ।

(गिजा करि आब जाइ अछ आ रतीं कही अछ ।)

जिजा : रत्ती ! रत्ती

रत्ती : जी ! जी किाि

गिजा : रस्तीजी अपने गिनि जाउ डि जेहने कलैय हिने लड़का खूब के लाबू चाहे ओ लगिडा हय या तुला अपाकज गिनि कनका कयाह कर्वि ई गिज कूँ कूँ कर ।

(रतीं जाइ छैक आ के गाछ िरिं जे अपाकज छेला, हुनके उठाक
लबै अक ।)

रत्नी : क्लय ! लडका लाक्ख देलौ कि।

गिजा : बहुत दुःख ! आब देखूँ करि िऽ अपनेही ? जल्दी * एकी
कायाह ककि कदा कर ।

(रेनुका के ब्याह ब्याह अपाकृज व्यक्ति के गि कर्ब गिइ गिबि गिबि
गिबि ककाकल दै अकठ। रेनुका अप्पन पर्व के जक्य ने कैय
क्य कांरि लऽक बिबि - बिबि गिबि ककैल चकल जाइ छकथन।
ककठ दु गेलाकऽ बाद एक र ह गि गाछ नजि अबि अकठ।)

रेनुका : चलैँ - चलैँ पायँ थाक्क गेल । जाई छी आ विँ भँ
अक्क गाछ के कचा रे वँशार कबि आ कहान हइँ गिँसी देखैँन ।

(रेनुका अप्पन पर्व के गाछ निरै मुक्कऽ नि - नि अपनहुँ
पर्व जाइ छैक व्याह बीचरे आकाशिणी आज़ि अबै अक्क ।)

आकाशिणी : बेटी नै कान् ! हर िि ई दु ख ॐ बेपि ह यबाक
उपाय बबै क्यौ। ध्यान ॐ नुन : ए ॐ कछ दू पूमि एक रा
दुगा के रक्खि भेटा, नै रा दुगा के अप्पन भक्कि पूजापाठ ॐ नि
कर्व, रा दुगा हि भक्कि ॐ नि न भऽक हि पर्व के दु ख हर्व
ले।

नायिण ! नायिण !! नायिण !!

भाग - ३

(कहान ह इबि रेनुका अप्पन पर्व के लऽक अप्पन गर्भव के फि चक्क दे छैथ । कछ दू गेलाकऽ बाद आकाशिणी के अनु पि एक रा दुगा के रक्खि भेटै अछ । रेनुका अप्पन पर्व के रक्खि के डेवियाह पि विव के आकाशिणीकऽ कहल अनु पि रा दुगा के भक्ति करै लावा जाइ छैथ ।)

रेनुका : ~~~ गीति ~~~

ਕਾਨੀ ਨੂ ਹੇ ਰਈਯਾ ਹਰਿ ਪੁਕਾਹਿ - ੨

कवयिौ ने हे रईया हरि पि क्वाचाि - २

ब के हे रईया अहा देखै छी - २

हरि कया हे रईया अहा डिपबै छी - २

आब िऽ हर हे रईया भेलौ लचाि,

कवयौ ने हे रईया हरि पणि कचाि !!

गिँ थाक रईया अहाकऽ दारै आइल छी - २

ई कपि के िरिरे हे रईया अहा कऽ गेल छी - २

अहा कनु द ि हे रईया नै कऽ आगि,

कवयौ ने हे रईया हरि पणि कचाि !!

अकऽ चणिरे हे रईया अक कनगी हरि - २

अकएक राई हरि नै आउि क ई राई द ि - २

अहा नै कबै हे रईया िऽ के कऽ दुलाि,

कवयौ ने हे रईया हरि पणि कचाि !!

कनीँ ुनु हे रईया हरि पुकाि - २

कवयौ ने हे रईया हरि पणि कचाि - २

(रेनुका के पवि देी रा के कृपाँ चले - बुले लगै अक ।

रेनुका अपन पवि के चलै बुलै देवकऽ रनरे बहुि खुशी हइ

अक आ अपन पवि के रा दुगा के णार कबि लऽ जाइ अक ।

)

रेनुका : चलु रा के णार की।

पर्व : अहाके छी ? आ हरणि एम्हनि के लौलक ?

रेनुका : देखू अहा हरणि पर्व छी आ हर अहाके पती, हरणि बाणि जी अहाकऽ णि हरणि ब्याह कऽ देने अछ आ हरणि अहाक दा - दा के लेल हरणि बाणि जी अप्पन णिज्ज ' ककला कऽ देने अछ । आब हरणि लेल वजय के हाणि एककटा अछ छी । एहे ' जाकि जल्मी हयनि अछ णिकि जल्मी ई णिज्ज ' द्र णिज्ज चलु । केनहायनि के अप्पन वजनी खु - दु ख काटै वन गुजै कबि ।

पर्व : अच्छा ठीक छैक । हर अहाके की कह कऽ बजाउ ?

रेनुका : देखू अहा वयि कह कऽ बजाउ ।

पर्व : हो !

(ओइठा ' दुनू व्यक्ति चक्क दै अछ । कछु दू गेला कऽ बाद सिरे एक नदी अबै अछ । नदी के नजदीक पहुँचै अछ ि देखै छैक एकदर ' नदी रे लाल भा ' णि है छैक । रेनुका . चै छैक यक्क हर ई लाल लै छी ि हो ने हो ई काल भऽ कै अछ ! णिक्क बीचरे हुनकनि पर्व एक हाथरे वि लै छैक । आ रेनुका देख कऽ हुनका कहै अछ ।)

रेनुका : देखू सीरी अपने ई ल'के की कबि ? अही ' नीक अइ के फेक वयो ।

(रेनुका के पर्व लाल छैक की कछ आउ छैक नै कन्है छैक ।)

पर्व : क्लय वय ! अहा कहै छी िऽ हर फेक दै छी ।

(ओइ जगह ॐ दुनू णिणी बरियाइ आगू बढ़ै अछ रुदा रेनुका के पर्व के रनरे ओइ लाल पर्व ॐ रन नही हटै छै । कछ दू गेला कऽ बाद उ अप्पन पती रेनुका के कहै अछ !)

पर्व : वय देखू नऽ हरि बड ज़ि ॐ लहु फ़ि लावा गेल, अहा अईठा र कू हर लहु फ़ि कर्व कऽ अबै छी ।

रेनुका : हे जाऊ जल्मी ॐ आइब !

(रेनुकाकऽ पर्व जाइ छैथ । उ लहु फ़ि की कर्णि, ओकी िऽ उ लाल लेबाक छल । जल्मी ॐ एक गट लाल लऽक अप्पन प्पान्दरे लुकाव लै अछ आ कर्णि ॐ पि आव जाइ अछ ।)

पर्व : क्लय वय आव गेलौ ! चलु आब !!

रेनुका : चक्क एलौ ?

पर्व : हँ चक्क एलौ ।

रेनुका : क्लय िऽ आब चलू !

(चलै - चलै दुनू क्वक्कि दू णि णिज के नजदीक पहुँचै अछ । रेनुका . चै छक्क आब हर द्र ि के णिजरे पहुँच गेलौ रुदा हर ब हिब कऽ ? एक गाछ िऽ बैठ के वचा कर्णि छक्क ।)

पर्व : हर ब ई अनजान गाउँरे जाऽहिल छी रुदा हर ब हिव
कहा वय ? हरणि कछ नै फुडिय !

रेनुका : देखू सीरीनाथ भगनि के िरि देि हइि अछ रुदा अि
नै हइि अछ । कछ नै कछ उपाय जर ि भेट जाइि ।

(िक कगरे एक बुढया रा अबैि छथ ।)

बुढया रा : बेटी ! अहा के छी आ अहाक ि कहा छैक ?

रेनुका : देखू रा ! हर ब के कई नै छैक, हर ब बेि बे हाि
छी, रा जी ।

बुढया रा : देखू बेटी ! अहा हरणि रा कहलौं आ कैह हिल छी की
हरणि ब के कई नै छैक चलू आई ँ अहा ब हरि लग
हिव, हरिकई अप्पन नीन नै अछ रुदा अहाक देव्रकऽ आई
भगनि हरि आ पूि कऽ देलव्रन बेटा बेटी के आ पूि कऽ
देलव्रन ।

" भगनि के राया कौ पि ि कौ छाया "

(ओइ ठार ँ रेनुका अप्पन पर्व के ि बुढया रा के ि जाइि
छैक ।)

भाग - ४

(रेनुका अप्पन पर्व के लऽक बुढया रा िरे हुक्का िरि हि लगैि

अच्छ। रेनुका के पर्व के ओई गाँ के लग नर्विया कक्के बजबे लगैँ अच्छ। २/४ वदन के बाद रेनुका के पर्व नदीरे ॐ जे लाल लौने हिय ओकी उ नुका कऽ खिे हिे छथ। ॐ लाल लऽके रेनुका के पर्व कहाने कहान गडकाँयि फेँ उठाँयि फेँ गडकाँयि उठाँयि। जाईँ जाईँ रेनुका के पर्व ओई गिज के गिजा के गि के रने पहुँचैँ छथ आ उ लाल गडैक के गिजा के दारै चक्क जाईँ छथ। गिजा के बेटी ुरैना दुगिँ प हिँ छथ। आ उ लाल अपन हाथरे िऽ लैँ अच्छ।)

ुरैना : बाप ि बाप ककि ुन्दि लाल छै ।

(ुरैना लाल लऽके आँगनरे चक्क जाईँ छथ । एम्हँ रेनुका के पर्व वि के गिप ि चक्क जाईँ छथ । द ि वदन गिजा के बेटी ुरैना नहा . नाह के उ गिली एकटा कान रे पक्क कऽ रक्कया के बलबैँ छथ ।)

ुरैना : गे रक्कया ..!

रक्कया : जी गिजकुराँ जी !

ुरैना : देखी िऽ हर ि गि केहन लगैँ क्यौ देखरे ?

रक्कया : बड़ ुन्दि लगैँ छी गिजकुराँ जी रुदा एक गि ज़डी द ि कानरे हिँ िऽ अहु ॐ बे ी ुन्दि लगैँ अपने गिजकुराँ जी ।

ुरैना : क्ये कहैँ छे नै ?

रक्ककया : हँ गजकुराणी जी हर आके कहै छी ।

ुरैना : िऽ ज जल्दी ँ क्कणि जी के बल्लाक कऽ ला !

रक्ककया : हेँ हर जाई छी, गिजा अहब के बल्लाक लेल ।

(रक्ककया णिनि जाई अक्क गिजा अहब के बल्लाक लेल ।)

रक्ककया : गिजा अहब ! गिजा अहब !!

अहा के गजकुराणी जी णिनि बल्लाक हिल छक्कन ।

गिजा : क्क बाणि भेलैय ` रक्ककया ?

रक्ककया : ` बाणि िऽ गजकुराणी जी हरणि नै बल्लिक्कन ।

गिजा : ले चल हर अबै छी, देखै छी जा के क्क भेलैन ।

(रक्ककया फेँ दौड़ल - दौड़ल गिजा आब ँ अगावये गजकुराणी लऽ पहुँच जाई अक्क आ गजकुराणी रक्ककया ँ पुछै अक्क ।)

ुरैना : रक्ककया क्कणि जी आक्क हिल छै ।

रक्ककया : हँ गजकुराणी जी आक्क हिल छक्क, गिजा अहब !

(ुरैना रव के चुपचाप िरि जाऽक उर्वि है छक्क ।)

भाग ~ ५

(गिजा रहल कऽ भीणि जाई अक्क आ बेटी ँ पुछै छक्क ।)

गिजा : बेटी ुरैना ! कक भेल ककए नै बजै छी, कई ककछ कहलकऽ की ?

ुरैना : पकने अहा हरणि कां जी चिनकय जे हर कहब ` अहा कर्व देब ।

गिजा : बाप बेटी रे कथी के चिन, बेटी हरणि लेल एकटा अही ब ककछ छी । अगनि नै रानि ि हर चिन दै छी जे अहा कहबै `ह हर कर्व देब ।

(ुरैना उ लाल ककाएल के गिजा के देखि कहै छैक ।)

ुरैना : कां जी हरणि ई लाल के ज़ डी चाही ।

गिजा : ई लाल आहा क' ` लैलौ ?

ुरैना : ई लाल अपन गाँ के नर्विया काईल क्खन गडकाँ - गडकाँ अँि हिँ कक लाल गडैक के अपन दां पि चक्क एल आ हर उ लाल उठा के अपन हाथरे लऽ लेलौ । उ नर्विया हरणि लाल लै देख के ़ि के अपन ि चैल गेल ।

गिजा : कय अहा कर्व नि भऽ जाउ अहा ई लालकऽ ज़ डी लएबाक लेल हर ओई नर्विया के बलबै छी ।

गिजा : रत्ती !

रत्ती : जी रहाजि !

गिजा : जल्दी * जाऊ उ गाउँरे जे नकिा नर्विया एल छैक हुन्का

ब्र लाक्कक लाउ ।

रत्ती : हेरि रहारिज ! हर जाइ छि अखुन ब्र लाक्कक लबै छि ।

(रत्ती जाइ छथि रेनुका के पर्व नर्विया के ब्र लेबाक लेल । जब रत्ती नर्विया के रि पहुँचै अछि रेनुका के दापि बै ल देखै छथि । रत्ती लगे जाइ छथि आ रेनुका 'कहै छथि ।)

रत्ती : अहा के छि ? नर्विया केम्ह छैक ?

रेनुका : हर हुन्का पती छि, कहूँ क बाँ छैक हर कह देबै हुन्का ...

रत्ती : रिजा हब के अछि अछ की नर्विया के जेना नै रिना रहल रे अएबाक लेल !

रेनुका : कहए, हुन्का 'क न गली भेल अछ की ?

रत्ती : ' बाँ हरि नै अछ पति, रुदा रिजा हब हरि रि खाली ई कहलक जे अहा जाउ आ नर्विया के ब्र लाक्कक लाउ ।

रेनुका : अच्छा, ओ एरि रि हर रिजा हब के रहलरे हुनका पठादेब ।

रत्ती : जल्दी पठाक देबै नर्विया के ...

रेनुका : हरि ।

(कछ देर के बाद रेनुका के पर्व रि अबै अछ, खिने रेनुका

हुन्का कहै छथ ।)

रेनुका : अहा के गिजा ।हब के रत्ती ब्र लेबाक लेल आइल छलाह ।
जाऊ देख आऊ क बाँ छैक ।

नर्विया : अच्छा ठीक छै हर जाके देखै छी की कए हरि गिजा
।हब अपन रहलरे ब्र लौने अछ ।

भाग ~ ६

(नर्विया गिजा के गि जाए छथ । गिजा दाँ पँ है छथ ।
नर्विया जा के गिजा के नरस्त्राँ कीँ छथ ।)

नर्विया : नरस्त्राँ गिजा ।हब !

गिजा : नरस्त्राँ ! आऊ बै ू !

नर्विया : गिजा ।हब हरि कए ब्र लैलौ ह ?

गिजा : अहा ँ एकटा जर गी काज पैड गेल गि गिह ँ आहा के
ब्र लैलौ ह ।

नर्विया : जी गिजा ।हब कहूँ ने क काज पडल ?

(गिजा ऊ लाल ककाईल के देखऽ दै छैक आ कहै छथ)

गिजा : ई अहाक अछ ? अहा आन्ने छलौ ?

नर्विया : जी हर आन्ने छलौ !

गिजा : अहा ई कऽऽँ आन्तौ ? हरणि अइके ज़ डा चाही ! अहा हरणि अइके ज़ डा लाक्क दय ।

नर्विया : अच्छा ठीक छै गिजा । अब हरणि एक पीह के रय दय अइके ज़ डा लाक्क देब ।

गिजा : अच्छा कक छै अहा के हर देलौ एक पीह के रय ...

नर्विया : कय बि हर जाए छी । गिजा । अब !

गिजा : कय जाऊ जल्दी आएब ।

नर्विया : जी है ।

(नर्विया ि आँँ अक्क ि रेनुका हुक्का ' पुछै छक्क ।)

रेनुका : अहाके गिजा । अब अपन रहलरे कए बजैने छल ?

नर्विया : गिजा याह खाँँँ ब्र लैने छल की, जे अपना ब अपन गिज ' आबैँ काल नदीरे ओ कज नै बहैँ छलै ' हुनका चाही, क्याह के लेल हरणि ब्र लौने छलाह ।

रेनुका : रुदा गिजा । अब के क नाकऽ पी चलऽल जे अहाके उ चीज के बारैँ जानैँ छी ।

नर्विया : हर आँँँ कवन अहा ' नुकाकऽ पेन्ने ि लेने छलौ क हिँ पृब्रवन हर गडकाँँ छलौ ' गँँ के गिजा । अब के दापिचक्क गेल आ ओ गिजा हाब के बेटी उठा लेलक्कि ' हुनका रालुर भेल हरणि ओ कज के बारैँ थाह छैक कक्के !

रेनुका : हर अहाक कहने छलौ नै क्लय फेक क्यौ कह के रुदा अहा नै राककऽ हरणि ॐ नुका कऽ आक लेलौ आब भेल ने फाद ! अच्छा कई बाणि नै जाउ हुनका हुनकजि डी आक क्यौ ।

नर्विया : अच्छा ठीक छै हरणि बटखचा के जगा कऽ के क्य हर जा हिल छी ।

रेनुका : कक्क रकु, क्लय ऐरे जलखै अक्क, बाटरे भुख लागि ऽि खाऽ लेब ।

नर्विया : होँ ! क्लय हर जाए छी ।

रेनुका : जाऊ जल्दी आक ़ि कऽ...

नर्विया : अच्छा होँ !

भाग ~ ७

(नर्विया चक्क दै छक्क ओई लाल के जडी लएबाक लेल । जाए - जाए नर्विया ही नदी लग पहुँचैय । फे देखै छैक ऊ लाल एकदर ॐ भाँहि हिय । नर्विया चलै - चलै भुखा गेल छल । ओ . चै छक्क जे पक्कने जलखै खाक कणि बि ई रान लऽकऽ ि जाएब । जलखै खेलाक बाद नर्विया के रनरे एक िल पैदा ह ईक छै जे ई लाल - लाल गल रान कऽ ॐ भाँहि आक हिल अक्क । ईपि लगालैल नर्विया नदीके काँकि वि के ओँ चैल दै छैक । जाए - जाए दशक उत्ति चक्क जाए छक्क । कि बाद एक रहा नि जगल आबै अक्क । ओईठार नर्विया एक गजब दृश्य देखै छक्क । एक गाछी के दुफेविया ठारै एक ुन्नि कुराँ

ककया के रुडी काव के टागल, ओई रुडी ` जगि बुन्द खुन चुबै
 ब ओई नदी के पाकरे वाला कऽ बाद लाल बक जाए छलैथ । आ
 ओई ककया के ि गाछ के जैरि हिय ि बगलरे एक लाल एक
 हवयि ि के लिगि िखल हैि अक्ख । आउि एक नवयिल के
 राक्क भयक्रि गाछ `ह हैि अक्ख । एकाएक नविया के नजि िई
 ुन्द ककया के नजि `टकिइि अक्ख । उ ुन्द ककया नविया
 के देख के खलखल हँ ` लागैय आ नविया `पुछैि अक्ख ...)

ुन्द ककया : ह..हा..हा.. ुनु अहा के छी ? आउि ऐम्ह कऽ
 एलौ ?

(नविया डि ` भागे लगैि अक्ख ।)

ुन्द ककया : देखु अहा नै डीउ, हर अहा के क्कछ नै कबि ।

(नविया रक्क जाएि छक्ख)

ुन्द ककया : देखु हर जे - जे कहै छी ` - ` अहा कर, हरि
 ई रुडी खईल के गाछ िरि ि छैक अहा ि आ रुडी बीचरे हवयि
 ि के लिगि िक्ख क्यौ आ फेि उ हवयि ि के लिगि खींच
 क्यौ ।

(नविया ुन्द ककया के कहल अनु ि रूडी खईल के आनै
 छैथ आ ि रूडी के बीच रे हवहि लिगि िईख के खींच लै छै
 । ुन्द ककया ुगबुगा के उटै छैथ । ओक नार है छैथ लाल
 ककया । ओ नविया ` कहै छै ।)

लाल ककया : अहा ऐम्ह कथी ख ज एलौ हँ ?

नर्विया : हर ऐम्हऱि अखन जे नदी लाल वऱिका भाँँ नै छेल हर ओकाँ ख जी कबिाक लेल एऽ कि एलौ ।

लाल ककया : देखु हरि ँाँ जी के आँ के रय भेल जाएँ छैक । हरि ँाँ िक छव्यन ओ अहा के देखि िँँ वाँ जेँ । ` नै हर जेना - जेना कहँँ छी ओनहायँ कबि ।

नर्विया : अच्छा अहा जेनहायँ कहँँ कऱि लेल हर ओनहायँ कबि ।

(लाल ककया रनेरन ँाँ कऱि छव्यन आब फेँ ककया ईरनुषाँ भेट हेँ आ नै हेँ ` नै ऐह रौका क्यै हर अपन ँाँ जी के एकऱि हाथँ बँ कऱिाकऽ एकऱि िँ शादी कऽ लेब । ओकाँँ ओकाँ नार पुछै छव्य ।)

लाल ककया : अहा के नार कऱ अकऱ ?

नर्विया : हरिँ ब कऱय नर्विया कहँँ अकऱ हरिँ नार नर्विया अकऱ ।

लाल ककया : देखु हरँँ छी । अहा ई लाल लिगिँँँ हरिँ रुडी कावट के पकऱने जेना टागल छल ओनहायँँ टावा के अहा फूलिँँरे नुका के केनहायँँ विँ कावट कय । काईल िँँ हरिँ ँाँ जी फेँकाकाँ कऽ जेँँ किँ बाद हर बँ लाईब बिँ अहा आएब ।

नर्विया : ठीक छैक, हेँँ ।

रावि कै छथ । हरि राि लेल उ खरिकऽ रैना के राि पडै
हिनेहर रबि नै िऽ नै ! एकिले ल ई लाल लिगिँ नावयिल कऽ
गाछ के एक छहरे कावट के वागिँ पडै बादरे ओई रैना के रािँ
बि हर रबि नै िऽ हर नै रवि कै छी ।

लाल ककया : कय काि जी बहुि विभिऽ गेल । आब खाना खाऽ
के आरि कर ।

गिक : है चलु !

(खाना खाऽ के दुनु बाप बेटी उवहिँ छै । कहान उव के फे
बेटी के रुडी लटका दै अक्छ आ अपना काकाि रे ककैल
जाई छथ । गिक के गेलाकऽ बाद लाल ककया नविया के
बलबै छथन ।)

लाल ककया : क ने छी ककैल के बहाि आबू काि जी चक्क गेलैन
काकाि पि ।

(नविया फूलगिँ ककैल कऽ आिँ अक्छ ।)

लाल ककया : देखु काईल वखन जै विंका ` हरि रुडी ज डने छेलौ
किना फेि ज डू ।

(नविया लाल ककया के रुडी आ िि ज डै छैक आउि लाल
ककया फेि उव के खाि भऽ जाई अक्छ आ नविया कहै छथ ।
)

लाल ककया : देखू अहा जे चीज लेि लेल एलौ ई `काि पाि लेल

अहा के ई नावयल के गाछरे खणि छैक ओई रे एकटा रैना छैक ओकी अहा के राणि पड़ि ।

नर्विया : देखुँ हर अपन रान पाणि लेल यी काज कबिक लेल रिया छी ।

लाल ककया : ि है ई लाल लिगि कय आएख छहरे नावयल गाछ के काट ख बु ।

(ओकनी नर्विया नवयल गाछ के काटै यऽ निहायिक के पायरे ठे लागै छैक आ ठिक के रालूर भऽ जाई अकक हरि जान खगिरे छैक `... अपन बा स्थान के फिमिक जिी चक दै छथ । हिी बीचरे नर्विया रैना के पकैड कऽ ओकि टाग विदै छथक खिनेकि लगिडा भऽ जाई छैक, किय ठिक लँगड़ाइ - लँगड़ाइ गिडकै फडकै अि हि अक, क अरे नर्विया रैना के रुडी रच विदै छैक आ रैना के णि छुट जाई छैक आ ठिक रवि जाई छथ ।)

नर्विया : कय आब ि हर ई रैना के रावि देलौ ! आब कहूँ क कऽ पड़ि ।

लाल ककया : देखु ई लाल लिगि हविय लिगि गिरे कय आ चलू अहा अपन ि के ओि !

नर्विया : रुदा हर जे रान लेि लेल एल छेलौ ` रान ?

लाल ककया : अहा पकने अपन ि ि चलू ओि भेट जाइ रान ।

नर्विया : अचे कहै छी नै ?

लाल ककया : हँ - हँ अचे कहै छी हर, अहा चलू ऽि ही पवने !

(ओईठार अँ दुनू गटे चक्क दै अक्छ । जब नर्विया गिज के नजदीक पहुँचै छथ ऽि लाल ककयाक ऽ एक गाछ के कचारे बैठा दै छथ आ कहै छैक ।)

नर्विया : देखु अहा अईठार ककक देबैतु हर ि जाई छी अप्पन ककया अँ हुकुर लेबाक लेल जे अहा के ि लऽ जाई क नै लऽ जाई ।

लाल ककया : अच्छा ! हेँ जाऊ ।

(भाग - ९)

(रेनुका अपन पर्वि नर्विया के येल देख के पुछै छैथ ।)

रेनुका :- एलौ ?

नर्विया :- हँ चैईल ऐलुँ रुदा एकटा रान

ि ।

हर बाटे रे गिईख के ऐलु ये

अहा अँ पूछँ जे हुन्का ि रे

लागी क नै ?

रेनुका :- जाऊ आनुँ कय उठाके ल'जे ।

(नर्विया जाई छैथ लाल ककया के लागि ।)

ला.ककया:- क कहलऽ अहा के ककया ?

देलऽ हुकुर हरि लँऽजाईले ?

नर्विया :- हँ हँ कहलकै जल्दी आँनु । चलूँ

जल्दी चलूँ ।

(ओईकन * नर्विया लाल ककया के ल'के ि जाई छैथ । लाल ककया रेनुका के देखके हुन्का णार क' छै ।)

ला.ककया:- णार कदी ।

रेनुका :- खुश हि ।

(रेनुका लाल ककया ` पुछै छैथ ।)

रेनुका :- अहा के छी ? हरि पर्वि ि लाल

लागि गेल छेला रुदा कन्का मि

रे अहा ?

ला.ककया:- देखूँ कदी हम्ही छी ऊ लाल

रय आ'ि ब जाईन जेब

कदी । हरि नार क्यै लाल

ककया ।

रेनुका :- चलूँ ठीक छै । इझ भऽगेल

खाना बनाई छी । दुई एलौ

अहा ब थाकल भूखायल हेब ।

खाना खाके आरि कबि ।

ला.ककया:- ह ई कदी ।

(खाना खाके ब क ई ई जाई छैथ । गिजा के रालुर है ये
नविया आयल । गिजा कहान री रती के हुकुर काँ ये ।
)

गिजा :- रती नविया के जाके कहूँ जे

रान ला ले हर हुन्का पठेनै

छेलौ रान लँके नि

आ ले ।

रती । :- ह ई रहाजि ।

(रती जाई छैथ आ नविया कहै छैथ)

रती :- ये नविया गिजा हाब नि

जे रान ला लि लेल पठेने हिे `

रान लँके गुनि कहलऽ आँ

ले अहा के ।

(रती कह के चल जाई छैथ । नर्विया रती के बाँ दुईन के
कपाँ पँ हाथ किंके बैठ हिे ये । हिी बीच रे लाल ककया आँ
छै । नर्विया के कपाँ पँ हाथ किंके बै ल देख के पुछै छैथ ।
)

ला.ककया:- री अहा के की भेल कपाँ पँ

हाथ किंके बै ल छी ?

नर्विया :- जे रान ला लि ले गिजा हाब

पठेने जेल हरि ` रान ल'के

जल्दी आँले खबि पठेलकै ये ।

ला.ककया:- गुँ अहा अही खाँकि कनी काँ

छी । गुँ अहा एकटा कठौँ रे

भैँ कठौँ पाईन भैँ के आँनु ।

(नर्विया एक कठौँ पाईन भि के आनै छैथ ।)

नर्विया :- क्यँ आँनुँ पाईन ।

ला.ककया:- ुनु हर जेना कहै छी हिहनी

कबि । यी कठौ के ओली रे

गिखु । जैहनी हरि रूडी जगल

रे कार्ट के फि ` अलग क'के

टागने ही ओकनी आईय

हरि रुडी के कार्ट के फि `

अलग क'के कठौ रने चाि रे

टागु । जब कठौ भै जे फि

फे फि रे टा के हवहि

हवहि लिगि ` जईड देबै ।

(नर्विया ओकनी लाल लिगि ` लाल ककया के रूडी कार्ट के कठौ रने चाि रे टाईगदैछै । जगि खून लाल ककया के रुडी ` कठौ रे खै छै ब लाल बैइन जाई छै आ कठौ पुगि भै जाई छै । गिद रे फे नर्विया लाल ककया के रूडी फि रे 'टा के हवहि लिगि ` जईड दै छैथ । लाल ककया उठै छै आँ नर्विया के कहै छै ।)

ला.ककया:- यै कठौ रे ` एकटा ल'के जाऊ

गिजा के दँआबु ।

नर्विया :- है ि हर जाई जी पूगा आँ छी ।

(नर्विया एकटा ल'के िजा के दैले जाई छै ।)

नर्विया :- णार िजा हाब ।

िजा :- णार । आन्सौ रान ?

नर्विया :- हँ आनक्ल्यै । हे क्यँ ।

(िजा उ लाल लै छैथ आ बेटी के दै छै ।)

िजा :- बेटी ुरैना हे क्यँ लाल के

ज डी ।

ुरैना :- लाबु क्कि जी ।

(ुरैना उ लाल िं िखै छैथ । कहान बेँ नहा . ना के ऊ लाल द ि कान रे पक्कन के रक्कया के ब्लाँ छैथ ।)

ुरैना :- गे रक्कया ?

रक्कया :- जी िजकुराँ जी !

ुरैना :- हे एँ या ?

रक्कया :- कहँ िजकुराँ जी ।

ुरैना :- कहँ ि रक्कनीया आब हर केहेन

लागै क्यै देखै रे ?

(भाग - १०)

(रक्कया ुरैना के देखै कहै छथन ।)

रक्कया:- हि जि कुराणी जी क र प

लागै ये देखै रे गी यी दुनु लाल

पहनलौ गि आउ गि देखै छी

रुदा ऐ रे एकटा कज आउ गि जे

हिये गि आहा ुरगि चन्द्रा के

जग गि के रक्कन किये ।

ुरैना :- कून कज रक्कया जल्दी कसह

क क्यै उ कज ?

रक्कया :- उ चीज क्यै जि कुराणी जी

हा कह के फूल । आहा के

जुगि रे हा कह के फूल ।

आहा के जुगि रे हा कह के

फूल जब हि गि आहा के

रुना के णिम नै पुछु !

रुना :- रुदा रक्कया यी भेटि कि ?

(रक्कया ६ रा आगा आउ ६ रा पाछा के बा नि जानै हि
छैथ । उ निज कुराणी के कहै छैथ ।)

रक्कया :- देखुं निज कुराणी जी आहा के

बचन देने यैछ आँ येह रान

आहा के ओहे नर्विया आईन

कि आउ ६ निक्कय नै ।

रुना :- तच्चे कहै छी ?

रक्कया :- हँ..हँ.. निज कुराणी जी ।

रुना :- ले बि जल्दी ँ क्कणी जी के

ब्र ला के आँन ।

रक्कया :- अच्छा हर जाई छी निज कुराणी

जी ।

(रक्कया जाई येछ निजा के ब्र लालि लेल ।)

रक्कया :- निजा हाब निजा हाब निज

कुराणी जी ब्र लार् छथन आहा

के ।

गिजा :- ले..ले.. चल हर आँ छी ।

(गिजा आँ छैथ आ अपन बेटी ुरैना ूँ पुछै छैथ जे कक भेल ।)

गिजा :- बेटी ुरैना कहूँ कक बाँ । ककये

ब्र लेलौ हरि कक भेल ?

ुरैना :- क्कणि जी हरि हा कहु के

फूल चाही ।

गिजा :- रुदा यी क्कणि भेटि आँ के

आनणि यी । आहा ि हरि

बचन रे बाई के बडका

रुव बणि रे फ । देलौ ।

(बीच रे रक्कया बजै छैथ ।)

रक्कया :- कन रु बि नै गिजा हाब

येह काज नविया कणि ।

आहा हुन्का हुकुर कि कर्वयौ ।

गिजा :- ले कि हर बल कि क्यै नर्विया

आउहि हुकुर कि छी यी हा

कहु के फूल आन लेल ।

गिजा :- रत्नी ..!

रत्नी :- जी रहागिज ।

गिजा :- जल्दी ` जाऊ आ नर्विया के

बलाऊ ।

रत्नी:- ह ई कि रहागिज हर जाई छी ।

(रत्नी जाई छैथ नर्विया के बला कि लेल ।)

रत्नी :- यौ नर्विया ..?

नर्विया :- हँ रत्नी जी कहूँ क बा कि ?

रत्नी :- आहा के गिजा हाब गिनि

बलेलऽ ।

नर्विया :- अच्छा चलूँ ।

(नर्विया रत्नी के गी गिज दगिनि जाई छैथ ।)

नर्विया :- णार गिजा हाब ।

गिजा :- णार ! बै ७ ।

नर्विया :- कहूँ कथ लेल हरि ब लेलौ

किा ?

गिजा :- आहा हरि कहला कलौ रुदा यै

बे फे हरि आहा के जरि

पैड गेल आउ येह काज अही

के क पडि ।

नर्विया :- कहूँ क काज ?

गिजा :- आहा के हरि हा कहु के

फूल आइन के कयँ पडि ।

(नर्विया कछ नै , ईच के गिजा के देल आँ सिंकाई लै छैथ
।)

नर्विया :- हँ होँ गिजा हाब हर आईन

देब ।

गिजा :- सिं कयँ जाऊ ।

(नर्विया गिजा के बचन दऽ दैये जे हर हा कहु के फूल आईन देब । जे क हुन्का हा कहु के फूल के बाँरे कछ रालुर ने छैन । नर्विया चुपचाप अन्हाँ चेही बना गि जाई छैथ । गि नै कन्क बजै छैथ । गिबे रे रेनुका आँ गिल ककया आईब जाई छै । रेनुका पुछै छैथ ।)

रेनुका :- क भेल क कहलऽ गिजा हाब ?

नर्विया :- ओ कहलऽ हरि हा कहु के

फूल आईन कर्यै ।

रेनुका :- गि आहा क कहक्ये ?

नर्विया :- हर कहक्यै हेँ हर आईन देब जे

हा कहु के फूल बाँरे हरि

कछ रालुर नै छै ।

(बीचे रे गिल ककया बजै छैथ ।)

ला.ककया :- कनी जुईन कर आहा ब

येक उपाय हरि लँ छै ।

रेनुका :- क उपाय बगु ने ?

ला.ककया :- हर कहै छी ध्यान दँके तु ।

(भाग - ११)

(लाल ककया हा कहु फूल के बाँ रे बगिँ ये नर्विया के ।)

ला.ककया :- देखूँ अहा ऐकन ॐ व ि जाउ

जडि ॐ हरणि लालौ डिँ

ओईकन ॐ फेँ अहा १४ कष

उत ि जायब । जब अहा १४

कष उत ि जेब बि राहा

भयकिँ ुन ान पहाड रे जगिल

के कच एक प़ खैँ भेटि । अगिँ

ओईकन अहा िँ पुगब िँ

कक ये नै िँ द्र ि कन अहा

िँ प़ खैँ के चाँ रहाड के

डिँरककिँ के उतबैँविया रहाड

पँ जा के कन कन कक जगह

रे नुकाँ के लेल ुकिँ ठार

बनाईब जै ॐ क ई अहा के देखूँ

नै पाँ । जब गिई के ११ बजि
 ि अहा जाके नुका जेब । जब
 प्र ने १२ गिई हायि ि आकाश
 एक राहा कशाल हाती आयि
 आ उतबैवैया रहाड पऽ जाके
 उरि आउि चाि रहाड िर
 के फेि उतबैविये रहाड पऽ
 जाके पविर रुहे ि जायि ।
 बि हाती के शुि रे ॐ न्दि
 ककया ककलि । उ ककया
 चािद गिईक के पखैि रे
 स्नान कँ जायि । स्नान कऽके
 फेि ऊ हाती के शुि के आगु रे
 आईब के अपन केश के जुगि
 खलि आँ पलथी राईके झुरि
 खेल के लेल बैठि अही कच

अहा चुपचाप पछाडी ॰ जाके
 ओकरा राग रे ॰ नुं डिदेब ।
 नुका के जेब जै ॰ ऊ अहा के
 देखे नै बुझलौ क नै ।

नर्विया :- जी बुईझ गेलुं ।

रेनुका :- येकरा रलिब येकरा हुन्का मि
 रे शादी कडि पारि ।

ला.ककया:- हँ कदी ।

रेनुका :- नै यी नै हुं ।

ला.ककया:- देखुं दीदी एना नै कर । यी ब

करि के फल छैथ । कन्का
 भाग्य रे येहे कखल छै हरि
 अहा के तिला ॰ कछ नै हे ।
 बर कन्का जल्दी ॰ पठा कयौ
 येकरा वि द कि क न उपाय
 भी नै छैथ ।

रेनुका :- जब अहा कहै छी ि जेँ रुदा

यी उ ककया के ि रे शादी

केला ` हा कहू फूल कल

जेँ क?

ला.ककयां:- देला के बाद ब कछ हि

ककया किँ ।

(िकि बाद लाल ककया आउि रेनुका कल के नविया के बटखचा के ि रे एक बटा `नुि दऽके हा कहू फूल के खजी रे भेज दे ये ।)

रेनुका :- हे यी कयँ खाई के ारान

छी जब सिि रे रुख लागि ि

खायब आउि यी `नुि कक `

िखब बुझलौ ।

नविया :- हँ हँ लाबुँ ।

रेनुका :- कयँ ।

नविया :- कयँ हर जाई छी ।

रेनुका :- कयँ जाउँ ।

(नर्विया हा क़हु के फूल के ख़जी रे चैईल दै छैथ । जाइ
जाई नर्विया जै कन ` लाल ककया ल'गेल है ओई ठार पहुचै
छै आ हुन्का ओइकन इस पे जाई छै । गिई नर्विया ओइकन
हि के क़ागि ये । द्रि कन क़हान गि फे चैईल दै छै ।
जब नर्विया पहाड के नजकक पूगै ये गि फे इस पैई जाई छैथ
। ओईकन नर्विया पहाड के कागि हि के गिई काटै ये । द्रि
कन फे क़हाने चैईल दै छै । जब नर्विया १ गिटा के सि
काटै ये बि आगि ये पहाड के गि गिल जेक कच रे क़शाल
पखै देखै छैथ । नर्विया पखै के रहाड पँ जाई छैथ गि नर्विया
के लागै ये जेना चागि क़ हुन्का क़छ झपटै ले ख़जै ये
। नर्विया के रन रे डगि रा जाई छैथ । नर्विया जैनी गिनि
कडि भऽके पखै के चागि रहाड गिर के उतबैविया रहाड पऽ
जाई छैथ । चागि क़ ख़जै छै जे कइकन नुकायब । देखै छै
कागि रे राहा झपटगि झागि । ओही झागि रे नर्विया नुकागि के
ज़गागि क़लेलक । जब गिई के ११ बजल गि नर्विया जा के नुका
गेल । जब १२ बजै रे १५ कनट बाकी हिल गि आकाश ` ऊ
गि हागि रे हनहनाई राहा भयक़ि क़शाल हाती आगि छै । हाती
आईब के पखै के चागि रहाड गिर के उतबैविया रहाड पगि जाके
परि रुह भ'के गि छैथ । बाद रे हाती के शुगि ` एक कुन्दि
ककया कतलै छैथ । जेकगि नार हा क़हु है छै । हा क़हु
पखै रे जाके नहागि छै । नेहा के आईब के हाती के शुगि अगाडी
रे पलथी राई के बैईठ जाई छै आ झुरि खेल के लेल केश के
जुगि ख़ले ये । जैहनी हा क़हु जुगि ख़ले ये गिहनर्व नर्विया
लाल ककया के कहल जेहाई क़छा ` आईब के हा क़हु के
राग रे `नुगि दैये । हा क़हु क़छा गिर के देखै छैथ नर्विया

के । नर्विया डि ॐ थथि काप लाग्लैन । नर्विया के थथि
कापै देख के हा कहू हँ लाग्लैन आँ नर्विया कहै छैथ
।)

(भाग - १२)

हा कहू :- हा...हा...हा...! ऊनु नै डीबु ।

अहा हरि राग भै के हरि लेल

बहु कक काज केलौ । हरि

आईकि रनुष के दशम नै भेल है

रुदा आई अहा ओह रे हरि

अपन अविम बनेलौ । अहा ि

हरि रैशि छी ।

(नर्विया कछ नै बजै छैथ चुपचाप हा कहू के बाँ उइन हिल
ये ।)

हा कहू :- अहा यी कहूँ अहा के ि कि

भेल ? आब चलु हरि लऽके

ि ।

नर्विया :- हर अहा के लऽके ि जेब रुदा

हर अहा के कून क्क अब ॰ अपन

लि लऽजेब ?

हा क्कहु :- देखुअहा हरि िि रे ॰नु

भलौ िि क्क अब ॰ हर अहा के

पती आउअि अहा हरि पपि ।

हरि अहा के आब पपिपती के

वसि बैन गेल ।

नविआ :- रुदा हर िि एल छेलु हा क्कहु

फूल के लेल ।

हा क्कहु :- देखुअहा के हा क्कहु के फूल

भेटि पक्कने िि िि चलु ।

नविआ :- ाक्के कहै छी ?

हा क्कहु :- हँऽ..हँऽ.. ाक्के कहै छी चलु ।

(नविआ के थाह नै है ये जे एहे छी हा क्कहु एकनि नार अइछ
हा क्कहु । ओईक्कन ॰ दुनगटा चैल दै छैथ । अरि अरि
जब लाल ककया के नक्की ले आरि ये िि हा क्कहु नविआ ॰
कहै छैथ ।)

हा कहु :- जु !

नर्विया :- क ! बाजु ?

हा कहु :- बि अहा ककखन अकटार बै

हर अपन खीके भेटके आँ छी ।

नर्विया :- क नार छी अहा के खी के ?

हा कहु :- लाल ककया ।

नर्विया :- चलु चलु अहा के खी ओँ रि रे

भेट भऽजे ।

(नर्विया के यी बाँ इन के हा कहु बुईझ गेल की यी ब
भेद लाल ककया कक्या बल्लिआ व खेलऽ ये । फेँ ओई कन `
द्रनगटा चैईल दै छैथ । रि पूगै ये रि लाल ककया आउँ रेनुका
द्रनगटे बल के सीगि के 1थ कक्या ब के रि रे रिशि
कगिये । गिजा के रालुर है ये जे नर्विया अकगेल ` । रिनि
रती दाँ आँ पठाँ ये जे हा कहु के फूल लऽके आँ ले
। रती जाई छैथ कहै ले ।)

रती :- यौ नर्विया ?

नर्विया :- जी कहुरिती जी । कहूँकी ?

रती :- जे रान लाँ पठेने हि गिजा

झरि हाब ओरि रान लऽके जल्दी

कहलऽ आरि ले ।

(एगि कही के रतीं चैईल जाईछैथ । नर्विया के रि कछ नै
फुर्इये आनै खाना खाईये चुपचाप रन राई के उरि हिए ये ।
देख के हा कहु पुछै ये ।)

हा कहु :- ररि सीरीनाथ की भेल । नै खाई

छी नै कयै छी आँ चुपचाप कयै

रन राई के उरि छी ? कहूँहरि

की भेल ?

नर्विया :- कछ नै भेल । बारि क छै जे जै

कजले गिजा हरि पठेने हिए रि

हर लाबिने केकयै ।

हा कहु :- कुन चीज ?

नर्विया :- हा कहु के फूल ।

हा कहु :- रि अहा येबि खाविरि खटपौन रिने

छी । अहा रि हा कहु फूलके

गाछी लाक लेने छी ।

नर्विया :- ' क ना के ?

हा कहु :-हरा जे आनलौ ।

नर्विया :-अहा ि रनुषा छी । फे फूल केनगि

के.....?

हा कहु :-हर जे जे कहै छी ' ' कर आँ

देखु ।

(भाग - १३)

(हा कहु नर्विया ' कहै छै ।)

हा कहु :-अहा ब ' पहने जाउ एक 'ट

नकिा ि आउि एकटा निा

लाऊ । किा बाद रे देखूकि ब

हई छै ।

(नर्विया जिी ' जाके एक 'ट ि आउि एकटा निा लाइब के दे छै । िही बीच रे हा कहु रेनुका आउि लाल ककया बलाs के लाँ छैथ ।)

नर्विया :-हे यी कयँ निा आँ ि ।

(हा कहु खकया पs नकिा निा कछा दैछैथ । लाल ककया

हा ऋहु एक ऋ आउरि रेनुका नर्विया एक ऋ भऽके ि खेलऽ ले शुर कऽदै छै । जकि ऋ नर्विया के ि के बाँ रे ऋछ नै जानै छैथ । बेँ बेँ रेनुका नर्विया के काणि ॐ हाईँ जाई छैथ । नर्विया आउरि रेनुका के बनिबाँँ हुँ लागै ये । नर्विया आउरि रेनुका ऋच बनिबाँँ हैँ देख के लाल ककया के ह ी लाईग जाई छै । लाल ककया के ह ैँ देख के हा ऋहु के हिल नै जाई ये आँ हिो हँ लागै ये । जै हा ऋहु ह ैँ छै िँ भैँ खट्या हा ऋहु के फूल भऽजाई छै । अही कर रे दन खी हँ रे लाईग के हाईँ जाई छै आँ नर्विया जीँ लै छैथ ।)

नर्विया :- देखु ि ऐ बीँ जीकियै ऋ नै ।

हा ऋहु :- जी सीरी जी जीँ गेलौ बि िँ भैँ

निा फूल भेल ।

नर्विया :- ाच्चे कगि ुन्नि फूल छै ।

हा ऋहु :- क्यँ आब खेल बन्द कर जै

के खावँ खेल खेल ले शुर केली

हिँ े काज भऽगेल । आब जे छै

हर अहा के फूल के राला गुइथ के

दै छी अहा िजा के पुगा आबुँ ।

नर्विया :- अच्छा हईँ । जल्दी गुइथ वअँ ।

(हा वहु िनि राला गुइथ के नर्विया के दै छै ।)

हा वहु :- हथी वअँ । जाऊ गिजा हाब के

पुगा आबु ।

(नर्विया हा वहु के फूल के राला पुगा जाई छैथ ।)

नर्विया :- गिजा हाब गिार ।

गिजा :- गिार । आनवयै हा वहु के

फूल ?

नर्विया :- हँ गिजा हाब हर ि फूल के राला

बना के लाईब देलौ ।

गिजा :- लाबु ि देखै केहेन छै ।

नर्विया :- यी वयँ ।

गिजा :- बड ुन्दि छै ।

(गिजा . चै छै वन्का जे जे कहवयै ` ` अपन जान के पगिह नै कै के लाईब देलs ` नै वन्का ओक बिदला रे वछ दे के चाही हरि आउ नर्विया ` पुछै छै ।)

गिजा :- कहुनिर्विया अहा हर कहल ब

काज लावदेलौ किं लदी रे हर
अहा के काछ काँ चाहै छी । कहु
का लेब ?

नविया :- हर का रागब गिजा हाब अहा के
इच्छा ।

गिजा :- काँ जाउ हरि पुनि गिरहल
रे अहा ब हूँआई उ भनि
अहा ब के भेल ।

नविया :- हे किं हर जाई छी ।

गिजा :- काँ बि जाउ ।

(गिजा बेटी के बलास के फूल के राला दै छै ।)

गिजा :- बेटी ुरैना ..

ुरैना :- जी काँ जी ।

गिजा :- हँ यी काँ हा काहु के फूल
आइन देलक ।

ुरैना :- बास काँगि उन्नि फूल के राला ।

(ुरैना फूल के राला गिइख छ डै ये आबिहान बेँि ब वदन के नेहाइँ नहा . ना के दुनु लाल पक्कि के अपन जुगि रे रक्कमया के कहल अनु िउ फूल के राला लगाऽ लैये आउँि रक्कमया के . ईँि पाँि ये ।)

ुरैना :- गे रक्कमया हे एने या ।

रक्कमया :- जी गिज कुराँि जी एलौ कहुकि

कहै छी ?

(ुरैना रक्कमया व िईर के कहै छैथ ।)

ुरैना :- ले आब कहऽ जे हर केहेन लागै

क्यै ?

रक्कमया :- अहा के ुन्दिगि के िँ बयान नै ये

गिज कुराँि जी कलकुल संगिमके

पाँि लागै छी अहा रुदा..... एक

कज वन ।

ुरैना :-रुदा आब कउन कज जल्दी कहऽ ?

(भाग - १४)

रक्कमया:- गिज कुराँि जी यव अहाके

रागरे 'नु जिब हिर्व बि अहा
के ुन्मणिके बयान र पि पुछु
जकि की ओकि कर पडर्व ।

ुरैना:- रुदा 'नु ि शादी ुदा नाकिे
ृगाि अछ । हर ि अखन
कुराी छी क नाके पैक्बि
'नु हर ?

रक्कया:- शादी कऽ क्यौ !

ुरैना:- केकी ि ?

रलीकया:- आउ किेकी ि ओहे नर्विया
ि कर ।

ुरैना:- रुदा ओ ि कलकुल अनपि
गि छथ । हर ि क्कि छी
रुदा क्कि जी क्कि कह
रक्कया ?

रक्कया:- गिज कुराी अहा नर्वियाके

अनपि गिा कहै छी ? जे पुरष
 अप्पन जान पऽ खेल कऽ अहाके
 हि खीई के पुा केलक । हँ रानैछी
 हरहुँ जे ओ अनपि गिा छव्य
 रुदा जे काज कन्कऽ नही
 हुगिला काज ओ कऽके
 देखादेलक आउाँ गिा ओ नेक
 पुा फाँ कचाकै ईनान
 अक्छ । जहाकि हिल गिा
 हाबके बाँ, गिाँ हि बाप अप्पन
 नीनके खुशी चाहै छव्य । जही
 ऽ नीन खुश है ओहे काज
 काँ छै अप्पन नीनक' लेल ।
 एक गिाँ अहाके कपि जी ओ गिा
 अक्छ जे 'जान जाए पबि बचन
 नही जाए' । अहा कए बेी

. चै छी ? जाऊ जाके कहूँ गिजा

हाब S अप्पन र नक' बाँ ।

ुरैना:- ि ब लाए के आन ने बाँ जीके ।

रक्कमया:- जरि हर जाए छी बैलाएके लाँ

छी ।

(रक्कमया गिजाके ब लाएके लाँ छथ । कि
बाद.....)

गिजा :- की बाँ बेटी ुरैना आब कुन

कजके जरि पडल ?

ुरैना :- बाँ जी अहा आए कि हरि

कछु कजके क रह नै

हुँ देलौ । हरि रागल ह कज

अहा पुर्विक' देलौ । आए बाँ

जी हर अहा S अकरि कज

रागीहिल छी आ हरि पुँ

कशा अछ जे अहा

अक्सकिणि नै कबै हरणि राग
 पुणि कबैन । ओना िक्कि जी
 जे कज हर राग जाहिल छी `
 कज क नो बेटा आ बेटा अप्पन
 रागिक्कि ऽ रुह खएल नै रागै
 छै । अक्क यी अहाके दृषीरे गलि
 देखाएणि ियी अब्रि बेटा रैझ
 राफ कबि ।

गिजा :- बाजू ि ही की राग चाहै छी ?

ुरैना :- क्कि जी हर शादी कडि चाहै
 छी ।

गिजा :- अहा िड जे हर . चैहिं हिी `
 खुद बेज देलौ । हर काली खुन
 रक्तीके पठाँ छी कक लडका
 खजएके लेल ।

ुरैना :- क्कि जी लडका खजी कडिके

जरि नै अक्छ । लडका अही

गारि छै ।

गिजा :- लडका अही गारि अक्छ, के ?

(कचरे रक्कया बजे कगै छै ।)

भाग - १५

रक्कया:- गिजा हाब ओ लडका आउ

द रि नै कओ नविया अक्छ ।

गिजा :- रुदा रक्कया ओ रि शादी दु

पुरष अक्छ । आउ हर बक्छ

जानै कि नाके हुक्का रि

अप्पन बेटीके विहि कऽदी यी

अ ममि छै रक्कया यी

अ ममि छै ।

रक्कया:- गिजा हाब अहाके रालुर नै

अक्छ ओ शादी दु नै की ३/३टा

पती छै । जे की हुक्कि २टा पती

के ज़िँ अफ़न जि कुराणी

एकिक ुन्नि लावाहिल अईछ ।

जि कुराणीके कान रहक कुन्डल

नर्वियाके द्रिपती लाल

ककयाके ज़िँ अक्छ हिननी

जुगिरे नर्वियाके रिपती

हा कहु के हँ कीके ज़िँ हा

कहु फूल अक्छ गिजा हाब ।

हरि रि लागै ये अफ़न जि

कुराणी नर्वियाके गिरे बहु

खुश हिवि आ एह कशा छै

हरि जे ओ ब जि कुराणीके

असीका रि नै कवि, सीकावि

छ ट बहन जका रि आ दुलारि

देखन । द्रि बा रि यी गिजा

हाब अहा जि कुराणीके बचन

दऽदेने छी । एहेन र का फे-फे
 नही आयि राहाजि ! देखुँ इटा
 पती हबि ककि करन ुखी
 ि छै नर्वियाके ।

गिजा :- रुदा यी सिं ि नर्वियाके पती

रेनुका सीकाबि बि ने !

रक्कया:- राहाजि अहा पक्कने सिं ि

लऽके जाऊ । अहाके सिं ओ
 ककय ने असीका कबि । हँ
 दे ही रुदा है है के
 सीकाबि ।

गिजा :- ले ि रक्कया ि कहै छी ि हर

जरि जायब अपन बेटीके
 खुशीके लेल नर्वियाके ि । जही
 रे नीनके खुशी ओहीरे किके
 खुशी ।

(गिज कुराणी गिजाके कणम उनीके खुशी S झुईर उठै छैक आ
रक्कमयाके निमिदि दै खी गीके गि नाचे गाँ लागै छै ।)

ुरैना :- रक्कमया हर बहुि बहुि आभाणी

क्यौ हिहि हरि बक्कन ि जे हरि

रनके बाँ मी जीके कही देले ।

रक्कमया:- निमिदि गिज कुराणी जी । हरहुँ

आई बहुि खुश छी गिज कुराणी

जी जे अहा हरि अप्पन बक्कनके

दजा देलौ । अहाके जीनगीरे

हपिल दक्कन खुशीके षिा

हुँहि हिँ ` हर भगिणी S

कारना कौ छी ।

(ुरैना खुशी S कल्मना गिरि पुगी जाई छै ।)

ुरैना :- गी _____

आब ि बनौ दुक्कन खी एह ुरैना !

मयाके रुँ देख लेल ब्याकुल छै हरि नैना !!

राथ हरि रन्टीका जाँ, हाथ दन हरि कनिा !

कहिं गिँ S चर-चर चरकाँ खी हरि गेहना !!

देी जुनी कर जल्दी आबू यौ हरि जना !

कयाके रुँ देख लेल ब्याकुल छै हरि नैना !!

गिँ ब न गिँ S गिँ, रडुगिँ जाँ कच अगिना !

दा पS गेट रगिल टि S जाँ, बजाँ िल बजना !!

हर ि लेबै कया S नौ लखखा हाँ रुह बजना !

कयाके रुँ देख लेल ब्याकुल छै हरि नैना !!

आब ि बनाँ दुक्कन खी एह ुरैना !

कयाके रुँ देख लेल ब्याकुल छै हरि नैना !!

गिजा :- बेटी ुरैना जाऊ अहा लक्कन

रहलरे आगिर कर हर जाई छी

रेनुका S बाँ कडि

(ुरैना आ रक्ककया आगिर कडि रहलके कत गिँ जाई छक्क आउगिँ
गिजा चैली दै छैक नर्वियाके गिँ ुरैनाके शादीके बाँ कडि ।)

(भाग - १६)

(गिजा रेनुकाके ि पडिचै अक्ख । हिी बखि दुगि पऽ नर्विया बै ल है छब्ब । नर्विया गिजाके अप्पन ि आयल देखी कऽ ओ अप्पन हैव यकिे रुविक्क सीगि कौ छब्ब । ल टारे पानी लावके गिजाके पाए पखाके एक चटाई क्खकाके ओही पऽ आ न कौ छब्ब ।)

नर्विया :- नरसक्का गिजा हाब

गिजा :- नरसक्का

नर्विया :- कहूँ गिजा हाब की जरती पडल जे अहा अपने चलीके हरि दुगि पऽ एलौ । कही की सीगि कौ हुजुकिे ?

गिजा :- देखूँ पक्कने रेनुकाके बजाके लाबूँ ।

नर्विया :- रेनुका कौ छी अहा ? देखूँ ि आई दबिजा पऽ के एक्खन ये ।

रेनुका :- जी हर आक्कहिल छी ।

(रेनुका दुगि आँ छै ि गिजाके देखै अक्ख आ जाके ओ गिजाके गिार कौ छब्ब ।)

रेनुका :- गिार गिजा हाब

गिजा :- दा हावान हूँ । बेटी रेनुका हर अहा ँ क्कछ बाँ कऽ लेल आयल छी । अक्क अहा इक्का नै कबि ि हर कहऽ चाहै छी ।

रेनुका :- देखूँ गिजा हाब अहा हरणि क्णि तरान अक्ख आउणि अहा हरणि बेटी कहलौ िँ क्कओ बेटी अप्पन क्कणिके बाकि ईन्काकि कऽ कै छै की । अहा कहूँ की बाणि अक्ख क्कणि जी ? हर अहाके बाकि एक िं ने ईन्काकि कबि ।

गिजा :- बेटी आई हर अप्पन िंके ईज्जणि अहाके खौछारे देब लेल आयल छी ।

रेनुका :- देखूँ क्कणि जी हर नै बुझलूँ ख ईल कऽ कहूँ ?

गिजा :- बेटी रेनुका हरणि बेटी ुरैना कहै छक्ख हर शादी कबि िँ व फमन िंयिा नही िँ नै । ििी ऽ हर अहा लक्कन लँ एलौ अप्पन बेटीके खुशीके भीख राग लेल । हरणि बेटीके छ ट बक्कनके रपरे अपना क्कयँ बेटी ।

(रेनुका एकछन गुर भऽजाई छै , िंकिबाद ।)

रेनुका :- नै क्कणि जी एना नै कहूँ । यी िं हरणि ौभाग्य अक्ख जे हरणि आई छ ट बक्कन भेटल । हर अहाके यी बाणि सीकाकि क्कणि छी क्कणि जी । हरणि क्क्याणि ँ जकि जल्दी हु िंकि जल्दी शादी कर ।

गिजा :- देखूँ बेटी अहा हरणि क्कणि कहलौ ििी लऽके हर द्रनो िंके जीम्मेबाणि खुद लै छी । अहा लक्कन शादीके क्कषयरे क न क्कव रके क्कनी जुव क्कयौ । हर स िं ब क्कछके बन्दसि क्कणि छी ।

ुरैना :- जे क्क्याणि अहाके क्कणि जी ।

गिजा :- क्यँ ि आई शुकबा छी रगिलबाकिके शादीके कक पका बुझूँ ।

ुरैना :- बहुि कक क्णि जी ।

गिजा :- बि हर जाई छी ।

ुरैना :- हँ क्णि जी ।

(गिजा शादीके यिाँ कऽ लेल अपन ि चक जाई छथ । एम्ह रिनुका रिरे कहूँ ि बरे एक कव रके अनौठा खुशीके रहु भँहिल छै । ब कओ खुश छथ । एक ि ुरैनाके आबैके खुशी ि छै कथि द रिरेनुकाके क खरे पलीहिल बच्चाके आबिला कन भी नजकक आकहिल अछ । हिी s ब कओरे खुशीके िनक छाऽगेल अछ । ३ कन क ना कगिल कन्क रालुर नै भेला । अकरिरे रगिल कन नविया ुरैना कयाहे दुला बकके बयिाँके िथ गिजाके दुगि जाई छथ । आयमकव कयर अनु ि ुरैनाके शादी नवियाके रिरे मन हई छथ । अनबेि जही बेटीके गिजा रा आँ बाप दुन के प्माि आ दुलाि दऽके प ल ओ जीगके टुका एकाएक अपना ँ दुि जाई बखि गिजा अपना आपके म्हाँ नै कै छथ । आँखी ँ न भिह लागै छै आ बेटी ँ कहै छै । गि ब गार राजके आँखी न आबी जाई छै)

रदाउन

हा आऽ ि....

बापके दुलागी ुरैना (कया ि चललै-२)

नक्कहि बहै ब आँखी नऱि

जारु बेटी हँ ीखुशी बिब्रयह कुलके रान

आब ि पकाये कय िहि रिरेशि भगानि

हा आऽ ि...

कक्क ि कय जुली कयौ (खी ि बक्कन्मा-२)

ब किँ अक्क अहीके ओि

जारु खी जारु खी ाजन केहि हे गार !

। - ुकिँ राकयेह बेटी ु पैि भगानि

हा आऽ ि....

बापके दुलागी ुरैना (कया ि चललै-२)

नक्कहि बहै ब आँखी नऱि

(बगिँ क्कदाई भ'जाई छै । जब नर्विया दुलीनके लऽके िके नजक्क पहुचे पऽ हईहि है छै आ दुगिँ पऽ लाल ककया दुला-दुक्कनके आबै के बाट किँहि है छै। िही क्कचरे रेनुकाके एका एक)

(भाग - १७)

(बगिँ कदाई भ'के चक्क जाइ छथ । ओम्ह' लाल ककया नर्विया
"भ'ला" आ ुरैनाके आँके बाट कहाँ छथ । ुरैनाके आव'हिल
खबि ुनी कँSरेनुकाके गभक्के ददि उक्क जायि अक्क ।)

. हः:-

एक ि कया र'गि भ'ला द' ि ुरैना कयाहे गेला !

ललना ि ि र'रे गभक्के दक्किया बड िलिा ि-२ !!

लाल कयाके बाट किँ दुगि र'रे -२

हा कहु छै क'हबि जाँ र'रे -२

ललना ि ददिके राँ हर'गि ककछ ने फुगिई अक्क ि-२ !

ुरैना कयाह कया दुगि एल -२

ब खी ुरैनाके पव'छे गेल -२

ललना ि ुरैनाके िक्ख' पायि ब'गि जन्ग लेल्लै ि-२ !

लाल खुशी झुरी कS नाचS लाग्लै-२

देक्ख' चरैना बौगिके ग'दी लेल्लै-२

ललना ि हँव ि हा कहु भी आगि फूलेफूल भेलै ि-२!

(ुरैनाके िक्ख' अगिनारे पायि रेनुकाके क'गख 'ँS न' जिज
कुराकिे जन्ग ह'ए छैथ । जेक' नराकनि काँ अक्क "अर'गि" ।

अरकिं जन्म ॐ पुं गिज खुशी अक्ख । वनचविया कटैके कररे
 एकवन रेनुकाके रनरे अप्पन रागिक्किं देखेके लेल जेबाके क्कचा
 पैदा हए छै रुदा यी बां केकी कहव जे हर रा बापके देख
 जायब आ चुपचाप रन राविके बै ल हिए अक्ख । रेनुकाके रन
 राविके बै ल देखे कँसुरैना पुछै छैथ रेनुका ॐ ।)

रुनैना: वदी की भेलैन जे एना रन उदा कँसके बै ल छथ ।

रेनुका: नै कछ ओक्कनै बै ल छी ।

रुनैना: नै वदी जरि कछ बां अक्ख जे अहा हरि ॐ कृपाहिल
 छी । कहूँ की बां अक्ख वदी जे अहा एना रन राविके बै ल
 छी ?

रेनुका: बां कछ नै अक्ख रुनैना ब रा बाबुके याद आब गेल
 । देखके रन कँ छै ।

रुनैना: एबेटा बारि वदी एकि उदा चलूँकिखुन बगटा
 जबै रा बाबु जीके देखके लेल ।

(द रि वन कहान रि नविया मि बगटा चक्क दै अक्ख
 रेनुकाके नक्कहि रा बापके देखके लेल । जब रेनुका नक्कहि पहुँचै
 छथ रि ओक्क गिजके कओ नै पक्कचानै छथ रेनुकाके । ओहीठार
 देखै छथ कतौ ने अप्पन रागिक्किं रि नजि आँ अक्ख ।
 बिबेरे एक नयुकि आँ छथ आ ओकी ॐ रुनैना पुछै छैथ ।)

रुनैना: हे हो भैया हेने न रि !

नयिकि: कहूँ की बाँ ?

रुँना: अक्क गिजके गिजा जे छलै ओ कौँ है छै आजुकल ?

नयिकि: बक्कन उ गिजा आब अक्कठार नै है छक्क । ओकौँ बेटी बके क्कयाह भेलाके बाद हुक्कौँ ब गिजपाट क्लैट गेल । ३ टा बेटी बके बक्किया गिजगिनारे क्कयाह केक्कखन रुदा ऊ ब िँ िक्क कँस अखनविँ रा बापके देखैय लेल नै आयल । आउँ एकटा बटी जे ब ँ छट बेटी है हुक्का लँगडा लुलाके िँ क्कयाह कौँके गिगिगि अही गिज ँ ककाली देल्लै । ओकौँ अखन विँ क न खबानै जे ओ कौँ गेला, कौँ छक्क । हँ एकौँ नुनरे आयल अक्क जे गिजागिनी दुनो कहानीँ द ि टलरे क्कख रागीके अप्पन गुजागि कसहिल छथीन ।

(एकौँ बाँ नुनीके रेनुकाके आँखी ँ नकि' गिगि बह लागै छैथ । रुदा कक्क की ? बक्कओ रुँना, हा क्कहु, लाल ककया म्हाँ छैथ । द ि क्कन ओ ब गवबि आ अ हाय लकके अनाज आ लताकपडा दान कसके ओही गाररे काजकरि गिखै छक्क । अ हायके गाउँरे अनाज आ लताकपडा बाक्कहिल छै ँ नुकाके रेनुकाके रागिक्का भी जाइ अक्क । रेनुकाके रागिक्का पुगि बु भँगेल है अक्क । क्कन ओ ब पक्कचाने नै कौँ अइछ । रेनुका अप्पन रागिक्काके सिस्त देकि कररे नार पुछै छक्क । रेनुकाके कौँ रेनुका क िक्क कँस देखै छक्क.....

(अक्करि भाग - १८)

रेनुका :- अहा दुनू गटाके नार की अक्क बाबु ?

बृदबृदा :- हरि कर करसाल आ हरि पतीके नार ुसा अक्ख ।

(रेनुका जैहनवि नार ुनै छैथ हिनवि हुन्का आँक्ख ु
नकि' रुन् बह लागै छैथ आ अप्पन रागिणीके भवि पाज
पक्वके कान लागै छक्ख । करसाल अपना दुनूगटाके भविपाज
पक्वके कानै देवक्खके रेनुका ु पछै छैथ ।)

करसाल :- बौं अहा के छी ? कये हरि दुनूगटाके नार ुनीके
कान लागलौ ?

रेनुका :- काँ जी हरि नै पक्कचानलौ अहा ब ?

करसाल :- नै, नार कहब बि ने कन्हब जे अहा के छी ?

रेनुका :- हर अहाके छ टकी बेटी रेनुका छी काँ जी रेनुका ।

(एकि बाँ ुका कँ करसाल रेनुकाके रूह कहाँ किगेल जेनाकी
ओकि बल बन्द भ'गेल । कछ बल नै कहिल आ रेनुका कानै
पुछै हिल ।)

रेनुका :- यी की हालि बना लेलौ काँ जी ? की कजके करी भेल
अहालकनके जे आइ द्र कि दुगि दुगि पि जाके कख रागे
लागलौ ?

करसाल :- बेटी, यी ब हरि करके फल अइछ । अहा ही कहने
छेलौ जन् दै अक्ख रा बाप करि ि अपनेही" हे भेल बेटी ।
अहाके अइ जि ु ककाललाके दिद अहाके दाइ बके शादी भेलाके
दिद अपना रहलरे उडीकडी लावागेल बेटी । ब जिपाट ककागेल

क्वछ ने हिल बाकी । यी ब हरि हरि करिके फल वक्वहिल
छैक बेटी । हर अहाके गिरे बहु बडका अन्याय केलूबेटी ।
किं जाय आइ हर भगै छी बेटी ।

रेनुका :- नै क्वा जी एना नै बाजू । यी ब वक्विके वक्विन अक्व
। जे वक्वि छक्वके विक्व क्लक्व दै छैक ओ हक्वि णिणीके भगहीटा
पक्वि छै रुदा रानिके अप्पन करि कक्वि पाछा नै हटबाक चाही ।
राबाप अप्पन बेटाबेटीके जन्म दै छक्व गि पक्विक्खा दै छैक रुदा
ओ बेटाबेटीके करिरे शुख चायन क्लक्वल नै अक्व किं ओ बेटाबेटी
अनैक्विक काजरे लिंग भक्वे नैक्विक करि कडि ॐ चुकी जाय किं है
छैथ जेककि नक्विजा क्जनगीभक्वि भग पडै छैथ । चलूक्वि जी आब
किं जाए छी ।

(ओहीठार ॐ रेनुका अप्पन राक्विक्विके लक्वे गि बगटा अप्पन
गिज आक्वि छक्व आ फेकिं 'खुशीके जीनि क्क्वि किं लागै अक्व ।)

जन्म दै अक्व रा बाप करि किं अपनेही

(समार्प)

ओम पकाश झा

सामंि

साहेब आथरससँ आकश्च क' की जाइ छलाह। चपरासी हुनकर िनिनुकूश्च ककक दरबजजा खोश्च क' ठाढ़ भ' गेल। दोसर चपरासी हुनकर बैग ल' कए चलल। बाहर बती लागल कार लागल छल। कारक चालक कारक गेट खोश्च ठाढ़ छल। अप्पन कक्खसँ कार िश्च पक्कीस मीटरक दूरी साहेब पाच अनटमे पहुँच गेलाह। ओबिा दूरमे क'को मुलाश्चम ठाढ़ छल आ सलामी ठोकने जा रहल छल। साहेब मूडी श्चला क' जबाब दै कार िश्च गेला आ शानसँ गाड़ीमे बैश्च गेला। कार ओयिसँ चश्च क' शहरक टाउन हाल पहुँचल। साहेब गाड़ीसँ उरिलाह िं देरी लोक सलामी ठोकै आगा पाछा करै हुनका भीरि ल' कए चश्च गेल। आइ ओयि "सामंिदिक पभाि आ नब सामंिदि" ऋषियपर एकटा गोषी छल आ साहेब मुख्य अश्चि छलाह। सामंिदिक दुष्पभाि आ ओकर आकिसँ जकड़ल समाजके नब रसी देखेबा लेल साहेबक भाषणक पौक्कमे हुनकर श्चंदाबादक नारासँ पूरा हाल गुंजायमान भ' गेल।

जस जस सुरसा बदनु बढ़ाबा

रामलाल आइ बडड खुश छल। कंपनी ओकर दरमाहा बीस हजारसँ बढ़ा क' बाईस हजार क' देलकै। ओ कनी मरि कीनलक आ घर आश्च ई सूचना अपन घरनीके देलक। घरनी खुश होइ बाजलीह - "ई िं बडड नीक भेल। दुनू बच्चाक इसकूलक फीस अही माससँ दू दू सय टका बढ़ा देलकैए। हमर होली आ दीीली दुनूके साड़ी

बक्यौणि अक्क । माजीक दिय पक्कला मास नै कीनाएल छल सेहो
कीना जेकि । बक्याक बक्यौणि सेहो....."

"हे ये चुप रहू ।" रामलाल घरनीके बीचश्चमे टोकलअ- "एखन शि
अहा िन हजारसँ ऊपरक खरचा जोड़ा देलौ, जखन की दरमाहा
दूइये हजार बढ़ल अक्क ।"

घरनी कहलकअ- "एखन ि आरो खरचा सब छै ।"

रामलाल चुप भ' मूडी पर हा ि बैअ रहलाह । हुनका
रामचअमानसक चौपाई मोन पक्क गेलअ-

जस-जस सुरसा बदनू बढ़ाबा

िसु दुगुन कथ र प देखाबा

रुना जी

लुकिथा आ वहिकथा- लिनात्तक वीचिन

पढ़बा कखबा ॐ पढ़ने नुबा गुणीक पर्वपाटी छल.जे पर्वपाटी रनुत्तखक पशु ॐ वननि पर्वी निम्नि भ' गेल हए.रुदा ॐ आक रानि रे नै हिल हए.ई ॐ भाग्न नि रनुत्तखक वीक नि र पे के भेटल है . निम्नि रे एक दू ठिक बीच कह- नुनी आ ओकी नि नि - चावरि.....लक लग कक के नुनीक कर बक गेल.ई कर नि वि चलै बदै हिल जा वि पणि कखीक पर्वपाटी नै बनल.इएह शुवि- निचनक कर कन टिना विशेष के एक लक ॐ दू लक नि नि, चावरि.....हइ रूह रे प लि.एक रूहक दू नि रूहक बीच कथे नि नितये आगा बाँनि गेल.उएह वनन कथ कालानि कथाक र पे . झा आयल.

रैवली रे भाषाइ वीका नि निम्नि के चणि ॐ देखा भेल रुदा कथा लेखन पुर्ण हिल.पुर्ण ना नि नि किल नि पछुआएल हिल.रौवक कथा नि पीढ़ी द पि पीढ़ी हसीनिर्वि हइ हिल रुदा कखी कथाक उपस्थवि शुन्य न हिल.ऐ ॐ ई क्वि हइछ जे रैवली रे क्वयक लुविक अभा नि शुन्य नि प लि छल.कि एक काणि इह भ' कैए जे रैवलीक निम्नि के चणि रे बजबाक भाषा नि रैवली छल.रुदा पढ़बा - कखबाक भाषा स्मृति नि उदुम छल. ब कागजी काज ओही राधरे हइ हिल. रयानि ओकि स्थान अँगेजी लेलक.कर पढ़ल- कखल लक स्मृति नि उदुम जान नेने छलाह शिी पढ़ल - कखल लक अँगेजी भाषा अगीका केने छलाह.कनका रे क्वयक अक्कर क शुन्य छल.

रैबली रे स्मृति भिहि हिल आइय ओही भाषाक रूल रे रैबली
 ात्तु टीकल ऐछ. गिय: इएह काणि हिल हएि जाक् " रैबलीक
 विविधक लेखन अपन भाषाक रूल चिना " नै भेल. विविधक लेखन
 विदापक स्मृति रे कखल ' पुरष पीक'क रैबली अनुदि "
 भेल. कि रुख काणि छल- त्रिकालीन बबला रे जाक् गिब भिहि
 छल हुनक काव आ नानि जिगाकि (यथा- पुजा- पाठ)भाषा
 स्मृति छल. गै पुकि गिब भाषा रैबली रात छल. रैबली
 विद्वानक गि आल चकक रानिनु गि इअह रुख गि विशेष काणि हिल
 जे रैबलीक पकल ात्तुक रूल चिना गै पौकि गिब
 चिनाका गि कहाँ लाल दा क उपन्या " रुर " (1918) "
 गिभि भेल. रयानि रैबली ात्तुक विका भेल पनि ऐ भाषाक
 ात्तु प ओही पौकित गिब आविपत भ' गेल. ओही ठार "
 एक विका क बजाय कीणि गिभि भेल.

[4/26, 8:02 PM] manojkumarkarn71: विदापक स्मृति रे
 अनेक गन्धक चिना कएलक, रुदा चन्द्रा झा िक् रे " अनुदि
 कबिक लेल चुनलक- " पुरष पीक " के.अक् कि रैबलीक
 पकल कथापथी पुरष पीक रानल जा कैए.--- रहन भादिज,
 रैबली कथाक विका , 1. अकादरी- २००३ गि कुनीनाथ झा.
 पकने पौकिक बक्स 1 कखाइ छल. ात्तु वी रे ओ गि नार
 छल- नाटक.पद रे भेलि काव. कहल गेल गि बक्स 1, कहबाक
 शैली रे कखल गेल गि उपाख्यान भ' गेल. शुकिथा गि गढ़ल कथा
 के लेखक जँ अपन शब्द रे कखलक गि ओ कहएल रौकक
 चिना. एक् गिहै रौकक कथाक पकल चिना- काली कुरा दा क
 " भीषण अन्याय "(१९२३) के रानल गेल.

उपति स्थव रैथली कथा ात्त्यक िविभक चणि के पवलिक्त्रि
 काँए.कथाक विका याता के एक टा न रि ड देलक- रिनाथ झा
 दाि एकी अगीजीक SHORT STORY कक् फवछेकि पछाव.
 कथा ि गल्मक आब वकि ि र प . झा आबय लागल.आ उएह
 कहएल रैथली लुकिथा (Maithili Short Story)ऐ ँ पक्ने
 चिनाकाि लकक एकी अगीजी रे Story कक् बिबि काँि
 छलाह.जनाबि कबैि चली जे- Story यानी ' कथा ' ि कहानी
 ि ात्त्यक दुहू वीकि भ काि राने की उपन्या , कवीि ,
 नाटक.....आक् रे उपक्स्थि हैछ.क्ना कथाशक ि क न चिनाक
 अक्ति नै रानल जा कैए.

सिुि: आुिक रैथली लुकिथाक विका स्थुली ँ उक्त्रिक
 विका छी,भाुिकि ँ टिस्थिक विका छी, आदशम ँ यथाथक्
 विका छी. पञ्चि आुिक रैथली लुकिथाक ििणा भूक् युपि,
 वशेषि: अगीजीक लुकिथा ात्त्य हिल ऐछ, 'ह क्वमीद
 ऐछ.कथा ात्त्य कहला ँ कहानी / कथा/ गल्म ओ उपन्या दुनूक
 ब्रि ह इछ.क्नु रात कथा ँ कहानी अथी गल्म केि ब्रि ह इछ.
 अगीजी रे ऐ लेल रानक शब्द ऐछ-Short Story.रायानन्द कश-
 रैथली कथाक विका ििुकीनाथ झा. 1.अकादरी- २००३.

रिनाथ झाक Short Storyके लुकिथा कक् वीचिनक पछाव
 रैथलीक कथा/ गल्म लुकिथाक र पे कािक्हि ह इि हिल. ब गिह
 पि अगीजी रे Collection of Maithili Short Story कखल
 भेटि.एखन वि रैथली रे हजाि लुकिथा आ 'कड़ लुकिथा
 गिह(Collection Of Maithili Short Story)रैथली रे

वदियरान ऐछ. एखन वि विमन विश्विदालय ' आंठ गटे रैबली लकिथा (Maithili Short Story). प शि क' चुकलाह ऐछ.लकिथाक नरि शिथी छथ- अनर ल झा, जे मवि वलका राझी विश्विदालय ' लकिथा(Short Story)रेशि छथ.ओना हुनक लकिथा कथ, शैली एलिखकीय किनीकी ि उर दशीये वहककथा (Seed Story)क रकक बुझाइए.ओ एक शि शी केषकि ठाकु जीक कदेशन रे क' हिलाह ऐछ ! ि जकना आन ब िफे ि/आलचक/ मीदक रैबली लकिथाक आकिाकि आ ऐविाव क रानदण के क व ि अजानी कि कन्दीक लकिथा के रैबली रे लकिथा बुझैि हिलाह हि रे ' शी केषकि ठाकु जी के 'ह देखल जा कैए.

भाि किाकि ाकृत्य अकादरी बवि रैबली कथा/ गल के कलखि आ रौबक (रक्षीय उदिषणा)र पे रैबली लकिथा कक बिबि काि आक हिल ऐछ.रुदा ाकृत्य अकादरी ' रैबली लकिथा गि छपेकहाि / पुस्किाि पेकहाि ककय विि नै केलक आ लाभाकि हइि हिलाह.हि ' हास्यास्पद बाि जे रैबली लकिथा गि प दिनागि रे- कथा गि आ English रे Collection of Maithili Short Story छपबैि हिलाह .आ सि.कि विदानक दजा पबैि हिला.भाि किाकि ाकृत्य अकादरी ' रैबली लकिथा गि के पकल बेि १९८७ रे पुस्किृि हेबाक 'भाग्य पि भेल छल. ई लकिथा गि छल- ' अिि लकिथाकाि छलाह- उरानाथ झा लकिथा लेखनक मिमि ' ९८ षिष पछाविय सि.कि /पेटपकि ब अपन इखि नाडवि कटबैि दि कथ लेखक के कशाकि.....काि हिलाह.

रैबली रे लुकिथाक सम्प्रीकणिक पछावि आब वचाि की ऐ ' वलिग ' कहकथा ' पि ' कहक' राने बीया. जेना एक टा कहक अपन ककि किया ' गुजवि एक टा पुिमगाछक रथमखैए. किना कहकथा (राने- बीजकथा- कन्दी, Seed Story in English) अपन ब र पे यथा- कथ, काल एवि खिाि ' एक टा पुिमकथाक िीक ऐछ. ने ओ लुकिथाक छ ट र प छी, ने छे ट ने अखकिटु. अपन ब कशीदाकाीक ि पुमि: भलि- पुलि कथाक रथमीन र प ऐछ व्हकथा (Seed Story) एि जाक कहकथाक वचिन क' हिल छी ओक नारक पदापम भेल ऐछ- बी र दीक अकरि दशक रे. एकि खगि हरि ऐ दुआि भेल जे पवने ' रैबली रे कथा/ गल लुकिथा कखाइि छल आ कछु रैबलीक अजानी वदान कन्दीक लुकिथा के 'ह रैबली रे लुकिथा कखै छलाह जाक ' दुनूक पवचान किट रे बुझएल. अही खगि के पुि कबि लेल ि दुनू के वलिगा दुनूक अस्ति बचा के खिबा लेल. मन नार द' आगा बढ़ाओल गेल.

ऐ ' पवने रैबली रे कहकथाक लेखन ' कन्दीक देखाउँ ' लुकिथा नारे हइि आक हिल छल. कि रुख काणि छल- त्किालीन कहकथाकाकि. दुदृक् हीनी ि अजानी. ओ ब लौल क' ि नकलची बक एकि कख' चाहलाह. पाठक के 'ह न चिज भेटलै ि एकि सीगि हएब सीभाविक छल. ओ ब अिनुकणि क' कखब शुर केलक छ ट आकाकि कथा. आ पवने ' रैबली रे लुकिथा वदरान कि ऐछ ट अकाकि कथा के 'ह नार देलक लुकिथा. (Short Story) त्मि: ई कन्दी ' उाि लेल गेल शब्द छल. कन्दी कथ जेना अँगेजी कथ ' आच्छाक ऐछ किना

रैथलीक कछु चिनाका किन्दीक अनीनुकणि क' अपन जगाह बनेबा लेल षिर्मी देखल जाइ छथ.

अ ल रे कन्दी कथाका किन्दी रे Story के कहानी नारे कखै हिलाह...! जहन खलील कबान ि अन्यान्य अजीजी चिनाकाकि देखा देखी छ ट अकाकि कथा कन्दी रे कखए लागल हिन कन्दी बला ब अजीजीक Story क स्थान प Short Story लकिथाक नारकणि केलक. रैथली चिनाकाकि लेखन शैलीक ि एक नार के अनीनुकणि क' एक टा हास्यास्पद काज केलक.कि रपख काणि छल- त्किलीन चिनाकाकि दृक् फीछ नै हएब. ओ ब कलव क' अनीनुकणि क' आवरक ि न भेलाह जे एक टा आओि फली लीक ' हँव क' भेट गेल. जनबि दी जे जक्या कन्दी रे लकिथा कखब शुर भेल(उनै र दीक रध) किया रैथली लकिथा(कथा/ गल्प,Short Story) जे कन्दीक कहानीक रकक छल, लेखनीक विविधक अस्था रे छल. राने जे रैथली कृत्य आओि ब द ि भाषाक रथम कृत्य रध पछुएल हिए.कि रूल काणि ऐछ जे रैथलीक चिनाकाकि रे शी(ब नै) कृत्य/ इविहा / व्याकणि ' अजा कि अपन कृत्यक दृक् के ि अक्ति के कथला रैथली ' बर्हीक चेषा ि . च नै खै छथ .एक रूल काणि रैथली कृत्य आओि कृत्यका आन भाषा कृत्यक चिनाकाकि लिने ब ' नीचला पौदान प देखाइ छथ.उदाहण सरि प पजिबीक ' कनीकथा' कन्दीक लकिथाक ि फविछा गेल. ' ओइ भाषाक चिनाकाकि दू दृक् क भाि छल. पजिबी लकिथा ककय ' लकिथा' नारे नै कखा ' कनीकथा नारे शुर भेल.(कएक ि पजिबी कहानी आर्विकारिक र पे लकिथा

कहाइए.) आइय ओही नारे अपन सीति अक्सीति पाव चुकल ऐछ. किना कन्द्रीक ललितथा गिला रे ' ए ककटे कथा ' स्मृति रे लघी आब मुनिमअक्सीति रे ऐछ. रैथली ' दबल/ पछुएल भाषा ओक्या रे 'ह कन्द्रीक ललितथा कुरकथा(खुरकथा) नारे कखाइछ. हिन की रैथली रेअपन शब्द भडिा नै की रैथलीक चिनाकाकि ओकि अगिर्व नै जे कन्द्रीक ललितथा रैथली रे अपन सीति नारे कए नै?

हरहू अपन लेखनीक विविधक चणि रे ललितथा शब्दे विहककथा कखब शुरु केने ही. कहबी छै' जे देखी कुलपर्वीणि ' 'खी वि वि कहिा ' 'कल्पकुलक अगज ब एह की अ बै छलाह. कछुए कनक पछाव र न रे कन्द्रीक अनिकणि कखल जाइ ललितथाक जगाह प शुद रैथली शब्द हेबाक कजा । जागल.ऐ नार के जनौलक रैथलीक स्थावि कवि, चकमि ललितथाका एविहककथाका शी गिज. फीणि 1995 रे ' हयाती रघि' लहना(रबिनी) क 'कल्पक वरिशमलेल भेल बै ि रे हर (रुना जी) ' कहकथा ' शब्दक सीति नारक सीति खिलौ. जकी हृदये शी गिज दाी रथमक ि उपस्थि ब चिनाकाकि रथमे/ हयग ऐ नार के शिन्ध ि क कएल गेल. आ किया ' कन्द्रीक ललितथाक कथ/ काल रे र कखल जाय बला रैथली ललितथा ' कहकथा नारे कखाइ आब हिल ऐछ आ ललितथा(Short Story) ओकना रैथलीक गल्पकथा बनल हिल जे अपन सीति अक्सीति रे 'राकज औ किाी स्थागि रान्ध ऐछ.

बहककथा(Seed story)सयिरे कथाक पुणमर प ऐछ.
 रान्मया लक़िथा(Short story) ककि वन्दु के छुबै/ रेटै
 पाठक के अपन उदेश्य बबिा रे कर भ' पबै.ओकि विपीणि '
 बहककथा ' (Seed Story)पाठक के एक खुटा पि खुटे ल न
 विख अपन थक्कि के एके कर रे बेकछा लेखकीय रन: कस्थवि
 के फवछा दैछ.आ पाठकक रगज रे ऐनरैन कस्थि भ' रा जाइछ

रैथली लक़िथा आ रैथली बहककथा के मुख्य र पे जे वलिंगबैए
 िह रे रहत्पुणमथि ऐछ- जे रैथली लक़िथा (Maithili Short
 Story)क शुर आि स्मृकि रूल चिनाक उत्था(अनुदि) ँ िमि
 भेल. जहन की बहककथा रैथलीक रूल चिना ँ िमि भेल.
 रैथली लक़िथाक विका ककि चणि पाि क' भेल.जहन की
 बहककथा जनरक ँ सिति अक्ति रे आयल.आ अत्त रय रे
 बहककथाक ककि िर प यथा- रि बहककथा, भुहिा बहककथा,
 बाल बहककथा क्कि कुल१२ गट पथी आवि चुकल ऐछ.
 बहककथा आल चनाक पक्कल पथी ' अदबििर ' शीघ किश्य
 ऐछ.एकी फवछाबे रे ब ँ रहत्पुणमय गदान ' रैथली पाक्क
 वर्देहक बहककथा विशेषक ,अकि - ६७ हिल. बहककथाक एकल
 एि िरुक्क पस्टि दिशमी लगाओल गेल .जे रैथली कथा
 िक्त्तक इविहा क पक्कल फल यिग ऐछ.बहककथाक एक टा
 रजगुि कड़ी हिल फवछिएल रानव की बला चिनाकाकि आगू
 आयब.जहन की कन्दी लक़िथाक िरे फँ ल कछु चिनाकाि बै
 - बै बहककथा पि अपन अजानी थपबाक अ फल यिा कौि
 हिलाह. आब िमि ँ ि दिशक रे आब ककि उाि- चढ़ाकि
 ि आगा बढ़ैि अपन सिति नारे स्थान पौलक.

बीहआ कऱि- कोठा िली

-- गै श्रमला, हे ओइ गाछ मे लगा ई नुआ बाआह दही.

-- आए गै ?

-- देखै नै छीही, आछु पुरखाह लोकक नजआ एम्हरे छै.

-- रौ बाआ , पोखरीक घाट पर ि इहो सब ओआना परदा करै छै
जेना आन जआ जाय्नी !

-- हे, सब पुर ख छेछराहे होइ छै , नै ?

-- यै, अहा सब ि उघरल त्रि करै छी, हिन लाज ?

-- जी, कोठा पर , बन घर मे !

" कोठा सँ बहरी ओआना बुझू जेना आन मए- बहीन " !

बीहआ कऱि- बॉस

-- सपीह भअ सँ चअ रहल बॉसक पी.ए लेल साकत्कारक आइ खत्ती अ न ऐछ.

कॉलबेल बाजल.....!

-- अरानी बाबू , साहेबक केअन मे फाईल खोलै-- नाम रीअिका, उमेर- १९ बरख.....

-- बॉस मिसाइं -- " हमरा साकत्कारक अपोटयनै, ओ लड़की चाही !"

-- सर ! ओ फेसर ऐछ !

-- बॉस हम छी की अहा ?

-- सर ! बॉस िं अही ने .

-- पश्चाकगक अमा हमर , एक सपीह मे एहेन टेण्ड क' देबै जे ओ अपन घर घूरनाइ असैर जएि !

-- जी , उपअिं करै छी !

बीहआ कऱि- बझंगा

-- हे...हे...हे...आब बुझही, भगऱिनक घर देर छै , अन्हेर नै !

-- गै, दुखक घरी मे चौल कीए करै छे ?

-- हम चौल नै करै छीयौ गै, मोन पड़ल पुरना बाँ - माइकेल के दुघघना मे टाग टुटला सँ ि सगाइ के लेल मना क' देने रही. ओ हृदय सँ िरा चाहै छलौ...!

आब इ ि पुरे श्रव्याग भ' गेलखुन , ि छोइर दोसर श्रीआह क' ने ले !

-- गै श्रीआह सँ पञ्चने कऱिको दुआश्च खुजल रहैए, आ ि श्रीआश्च गेलौ.

" ओ आन छल , ई ि अपन छथी,ओकरा उश्च बऱिश्च कहइँ, श्रनका उश्च पश्चिरी !

बीहआ कऱि- झोल

- जा.....! यौ पुरहीँ अहा ि सब टा गलीये पढ़ने जाइ छी.
- चुप्प ! ि की जान' गेले संस्कृति.हमर ि इ खानदानी पेशा छी.
- यौ पुरहीँ , हमहु संस्कृति सँ एम.ए केने छी. आ पुजा श्रीनि सेहो अँए.
- हेहरै, पुआ ने ले अपने.
- नै , बुजुगयसब कहै छथी- पुरहीँ के पुजेने पुजाक पञ्च.
- ि सीखा नै, हम संस्कृतिक पंथि नै ,मुदा जनउ रखने छी.
- ' हमरो एक टा जनउ देने जाउ, अहाक भार हल्लुक !

बीहआ कऱि- पटकआया

-- हा....हा...भगा....भगा छुएि सब टा .

-- माआक बडड भूख लागल ऐछ, खए अयय ने.

-- कने काल झेलम सब खा क' उठैि ि सब टा ऐठ समेट खाइि रअहे.

-- ऐठ.....गीजल गाजल, उँह....!

-- रौ , िरा ि लोक गाम सँ बाहर िस देने ऐछ आ ि किँ छे आरैठ !

-- माआक- हमरे बीनल िसन सँ सबहक शुभ / अशुभ काज पुर होइए, आ हम अछुि ?

-- रौ, ओइ िसन सब के गंगाजल सँ आर्क क' काज पुर करै छी.

-- ओकर आँअक चमक बअ गेलै, मुअकएल माआक- हमहू अहीक पअियानी मे बैस जाइ छी.

" हमरो गंगा जल सँ आर्क क' अयय ने ."

रि बीहक कथा- अ ि

बेहिट लए कछु देलकै ?

हैं, बाकह देकल्यै .

हर जाइ कह्यै....., नै नुनलकै की ?

कुन गेली, रुदा हरि र न कौ है जे आइ नै जौ ' नै हो ?

आइ रा क अकरि गिरीख हइ, जएह एक कनक खरिकी के पाइ
ि बक जौ.

ओना र न ि हरि आगू - पाछू कहिए. ई कहौ बलू ि कि जेबै!

ब कन ि एकी थाका हाँ कि हइ, आ ि अबै हइ ि बाले
बक्ये . हलि. हरि लेल एकी पलखवि कहा है हइ.

ईह.....! हर की भवि कन खटै कह्यै अपने पेट खावि!

हे, पेट ि बहक क नहुना भवि जाइ है. ई खाली, पेटे के . चै
कन, रा , बखि कबि हियो.

हर एकी पलखविक अ ि कौ कि जाइ कह्यै. आ एकी लेल
िक न!

एह.....! हरहू ि कक्या ' उहे बाट कौ किह्यै.

हे, एने आउ ने..... कोड़क वलिइया ठक ' उठल !

रि बीहक कथा- बिबे

अवानाणिक फोका जका बड़बड़ा उठल है नेहक ला।

कूलीन हिबाक काणि नै कइ बजै, आ नक्ये कइ कि पौलकै.

कन..... दुपहिया १० गार . हिा भ' गेलै.....!

रु जक पि न उठल जीवि चान उगी वि चाने न े गेल है. रुदा पि वि छओड़ीक शकाकि टाि....रुँह रकन क' देने है. छओड़ी अपन ओढ़नी ॐ ओकि फुटल कपाकि के झपने....!

गारक चार भ'ि ॐ गकि लक जुक गेल है. ब कय कन रागल लाह देब' लगलै-....!

दुनू के गली रावि दे....!

नै, छओड़ी के भगा के छओड़ी अनलकौ, एकि गाछ रे टावा दे, गदिक रे गरछा लगा के.

पघियाकि बैठाि भेलै, फरान नुनएल गेल....

"छओड़ी के कावट के गावट दे !"

छओड़ी वहुँ े पि पुछलक - 'आ छओड़ी के ?'

राय - बाप केरिका के नुनझा दही.

नै, कनहुँ नै. छओड़ी रिक्क उठल-

"जेबै पि दुनू, जीबै पि दुनू ."

रि बीहक कथा- छुच्छ दुलाि

रसि युि युि १ ॐ अपील-" जावि- पावि, मि- भेद, रिम- करम ॐ उपि उक देशक विवान विका क लेल . चै जाउ."

की यौ....., आइ पि बुझाइ छल जे क न बड़का पाटीक बड़का नेि भ' गेलौ अहा .

यै, हर राजक ब रक्कड़ कीड़ के िड़ नऱि राज बनेबाक
क्रिष्मऱि छी. आ िक रे अहा नक उक्कक कक वऱिचाऱिनि रक्कला
चाही, ऱि पुऱि लेल. 'आइये रात नै, जनऱ जनऱाऱि वि.

'खाउ पऱि....अहा ऱि देऱि, जीनि ढीनी बक.'

'हे भाषण छर, पुइछ आउ अपन पुखिा के, हरि जावऱि क ल क
अहाक जावऱि रे कइझऱि हएऱि. ? '

हिह! ओइ छओड़िक नरहऱि- नरहऱि लच्छेदाऱि शबद आ ऱितय राइक
आ रक्षि पऱि कि कऱि गेलै.

केना नयना रे ढुइ हृदय रे उऱि लए उहिहल छल!

हरि जावऱि कुक ओकऱि आँकुरक पाक उवि गेलै.

'नीक भेल जे हरि हीयाक हीि कऱ्या रे बाचल कऱि गेल, अपन
ल क लए.'

"नै ऱिरिक फा रे फँ । हरि ऱिना छड़ै आ अपन बाप पुखिा
के 'ह "

रि बीहक कथा- कइहलगड

टेगऱि, पऱठी, ईचना लै जाऊ...!

क ना दै छीही गै ?

लू ने राकक, जे टका दै के रन हऱि 'द' देबै. इझ झलफलाइ
है. फेन ऱि ि के है.

एँ गै, ऱि जे कन ऱि खटै छे 'हिह रदि'बा की कऱि छौ, कहा
छौ ओ ?

ओ ऱि रे हि है राकक.

कए गै ओ रदि छौ की ऱि ?

राक्क ओकी िरै क्कै रे अ. कजमहइ है, ि भान भाि आ
बाल बच्चा उएह देखै है

"रुनहारि ाइ ह गेलै हर कखनी ` एकि अ ि रे ओ ि पि
बै ल हीयै.ई रौगी भ' दुि दुि जा खटै है आ हर,बाल बच्चा आ
भन िि रे लागल कि जाइ क्यै की वीनाक कखल है ` नै
जाव"

ई हक्याइ कए है, रन । आ रौगी अ गि रे ि अि हि है है पू
ि हिन हइ है जहन दुनू एक भ' काज पुि है. हर कवयौ की ई
कौ, बाि ि बिबिये ने बुझौ.

"आ हे, दुनू गटे बलू ब खन ि रे हौ की नै हौ, एक द ि
के क्यारे ि: ब ले है है न'. !

रि बीहक कथा- उफाव

ओह...!

केहेन वारस हत्ता भेलै ओकि के केने हेँ एहेन काज ?

छओड़ी जबि उनि िबे ँशील `ह छलै.हिन ककि ` दुशनीय
ि नै हेँ!

ये, उनि आ ँशीलक ि भलि पुलि जुआन `ह छलै.

हँ ` ि छलैहे.

ि ककि `िभि के फेि रे भेल हेँ !

ये जहन भ चीज ` भलि पुलि छलैहे हिन ककि क्यारे
ि बैव ये गेल हेँ ने.

नै यौ, एकक क्यारे पै ल किँ हिन ने अ'ढ़ि ि ` द ि जँ
नजर्व गड़ेने हइ ?

ब टा दष छओड़ि के कएक ?

जँ छओड़िय व नेह के पीय फेक ि न जका बुझै हइ !

पकड़ा गेलै.....पुक्क पकैड लेलकै.

ककी यौ ?

हत्मा ि के!

के छै ?

ओकाँ िरि !

रि बीहक कथा- जुडबन्हन

गेठज डबा क' कयौ!

देखब यै ककया , एम्ह ि ओम्ह ि नै भागव.

ककी भगै के गप्प काँ छी यै, ककया के की ि के ?

रनग ि दुनू ने. रुदा रौगी ि जालि र ने कि जाइए प
रन ।....हुलकाह बुझू.

काए यै, रौगी के र न क न रन । प ि नै जाइ छै की, ते कहू ि'
?

यौ, ज' ` नै हइँ ि रन । रौगीक यिजने क न ? रन । रन क
गि आ रौगी रौगीक गि कि लैँ.

हिन अही कहू बन्हन ॰ की हएँ ?

हँ यौ इह बाँ ि ते !

" नुआ , ि िक बन्हन ॰ र न नै बन्हाइए. र नक बन्हन लए कया ॰
कयाक कलान चाही "

रि बीहक कथा- काँ

गै दइया गै दइया, कहूँ एकि पविब.

ई हिं केठीक भीं विलइया ठक्क के, आ हर हूँ दुगाँ- टापि जका गिगिइ.

रन । पि पक्कने हरि, हिन ने ओक.

पक्कने रिरालाप! हिन देहक भूख.....काँणि.कक्कए ऐ ब रे अ. कजम

नै हुअ' पबै ठिक्क लेल क्कन विं अपना के रक्कमि क' खिने ही

यौ, अहाक रि फा रे फँव दुनू गटेक जुड़बनि भेल छल.

.आ हर किं काँहि आइ विं काँहि हिलौ. रुदा अहा....अहा

विं सिगक्क ुख देखा नकि रे किल देलहुँ.

"गै, ओ हरिँ रि केलकै आ हरहु ओकीँ ".....!" खिने दुनू

एक भेक्कयै.आ पि पि आब देहँ पुनि भ' गेले.

गै दइया गै दइया, हर पुनि भ' गेक्कयै आ एकि देह विं नाँ एल छै.

हँ गै.

विं ई कहौ जे आइ द्र ठिक्क रि रे अपन अक्कजिलँ ओकी व तं

क' खिँ.आ काक्क फेँ पिं पिंफेँ....कक्क क्कन विं अपन अक्कजिल

ँ नकिी - नकिी छऑँडी के ठिक्क- ठिक्क के छड़ै हिँ.

'जाविं देह रे हुवी हिँ!'

आ ओउ काँछिल.रौगी बहक की हैँ ?

ओह ब हरिं जका नकिा रि जाल बुनाँ.....!

बाढ़ैन नै राँ ओह न व नेही के.....?

"बाढ़ैन राँ की खापक्क, डेग विं चुक्क गेलै."

रि बीहक कथा- बखी

रुना जी

उँह.....!

की भेल. ?

अहाक दाढ़ी गड़ेए .

हा....हा....हा !नीक चौल केलौ. पकने ि कान काटल दाढ़ी नै गड़ल
कक्य. आ आब.....!

आब बौआ भेलै ने .

" ि की, बौआ भेने हरि गाल रे काट उवा गेल की ."

` नै यौ.....!

आ की हरि लेल अहाक हृदय रे पाथि रा गेल ?

नै यौ, व नेह ि आब बौआ के चाक्यै ने .

हँ, रय अलग - अलग है .

नै, हरि अहाक बीचक व नेह रे " आब ओकि बखी लगै .

" हे देख्यौ, अहाक कदिनी पि ओह रुक्कयाइए ."

रि बीहक कथा- अन्हविया रे

हर ओकि दुनू पाजि रे गुदगुदी लगाबी आ ओ कलकलला उठए.....!

बड़ रजगि लागए ओ कण, ओकि लेल िक न.

फुलगीक बीच दुनू गटे एके पाथि पि बैी, . झा . झे नजर्व
कलौने.

दुनूक गप्पक पहाड़ नै ढक् पाए कखन, की, कक्य. रुदा ओकि
ठकि वहुँ ि, आ हरि ओकि नयनक कणिक कइझि हएब, नै

जाव क'ि हेी दै छल दुनू के. . च जकि दु'ि वि'ि जए, व नेहक ओकि लगीचक एह । हइ'ि हि' छल.

ई कर जाी हिल.....!

फे'ि आजुक गप्पक कर रे पुक्छ बै ल.....एँ यौ, हरि 'ेझा पक्क'ि अहा एना बे'ु'ि कए भ' जाइ'ि छी ?

अहाक नयनक कवणि हरि अहाक कदिय रे रेबाक लेल उहिहुल क' दैए!

अच्छा छ डू, कहू जे हर अपन वि'आह रे बजएब 'ि'एबै ने ?

"यै, आब ई 'ि'पका ऐछ जे जहन दुनू गटे एक रड़बा प'ि बै ब, खिने वि'आहल जएब."

नै यौ, हरि अहाक 'ि'र लचा'ि भ' गेल हरि रए बापक हरि वि'रि'क आगा.....!

हरि वि'आह द'ि 'ि' हएब कवि'ि भेल ऐछ.

व नु'ि दानक बे'ि कजली गुल भ' गेल.

अन्हा'ि अन्हा'ि.....की भेलै.....ठीक कर जना'ि'टि'.....!

"ईज'ि भेल.....'ि' व नुकि 'िरा हाथ रे लेने ठा'ि. ककया.....फ'ि'ि !

रि' बीहक कथा- 'ेलमी

यौ, अपन र नक एक टा बा'ि कह' चाहै छी, कहू ?

कहू ने ए'ि कय द'ि 'ि' छै नै.

हरि र न कहैए- जेनाहरि अहा 'ि'र भ' गेल ऐछ.

यै हरहू फ'ि'छाइ दी, ते अहा हरि हृदय रे रा गेलौ ऐछ रुदा हर अहा 'ि'र नै क'ि' छी.

बुध्दु कही के !

रि कएल नै जाइ छै, ओ रि अपने भ' जाइ छै.

यै, जे अपने भ' जाइ छै ` अनेर आ कहाइ छै. ओकि क न ठौ-
ठेकाना नै हइ छै.

हिन दुनू गटे एक्कना हि' क्यौ.

"एक द रि क् कजि रे रएल ."

रि बीहवा कथा- खोइछक िन

गै वरिला, ओम्ह के पर्वियानी रे हा ू कए लगेले.

एम्ह आ ने हरि रि - दक्कन.

एके रि दुनू गति कटनी कबि, काज उ रि आ रि हि रुँह कहाँ
`ह रि चलि.

उँह....!

ए' एलैए ब्रइन कि की परि कि ?

गै, जाबे आओ ब्रकहा बि ए' रि रि ई छओड़ि- छओड़ी पेटक
गि- रि कजिक आवा `ह ` रि लै. हजि क न !

"ई कह जे रि र न रे ओ नै हइ छौ जे हरि हइ रि हरि ?

यौ, छओड़ि ज रि उ रि उठिए रि ` की कर आवा छओड़ी के ले
छै. रुदा हर ब करुनि !

जबले रुँह हि रि पर्वि रि आ राज दुनूक विषि। खिक्कहा बिझू.

हे यौ, ओ ब अ' बला है. हर अपन आँटी ल' के जाइ छी.

गै, रि ज' चक्क जेर' रि हरि ब्रझ कहा पु रि. आँक्ये भवि कि जए.
हे ले.....!

गिजू हाय -हाय िन रि के ओकि खोइछ रे द' देलक.

वरिला- एँ ई की क' छी, हरि विआह रि भे' नै कएल. हिन खोइछ ?

"गै, ई खोइछक िन नै, रि दै क्यौ िउख विवहे."

आ ज'हर द्र ि के भ'जेबै?

ि ने िउख.....!

"आ जे ` हेँ ि हर अकना कि जेबै िहि खोइछक याद रे !

रि बीहक कथा- दा िन

नहुँ, नहुँ पक्या व हक' लागल है. र न ि चान न शील रुदा
हृदय रे व नेह लहक' लगलै.

यै, अहा ठ ि पि कक्कटक कए लगा लै छी?

"ठि रे नकि ि देी लेल ."

रुदा अहाक ठकि िसर्विक ि कहा ि खलि ऐछ एखन वि. अहाक
ठकि रुस्की ि ककि ठि ि क' दैए.

यौ िसर्विक ठि ि एके टाक रुस्की रे बइझि हइ छै. रुदा गिल
ठि नै जाक ककि हृदय पि पाथि जका बजैए.

आ हरि हृदय ि ओकना कि जाइए र र जका नहुँ नहुँ पव झै
अहाक व नेहक दाव न बक.

"द्र ि ँ की 'ख रनथि."

रि बीहक कथा- विक

गै, िहि ि ि बालू के छौ, अपने भव के खव पड़ौ!

चुप्प, ि ि ि ि छौ के छौ, एके क्हाक रे उविया जेौ!

जिन, बाि रे रही आ नकि बकी ल'चबि' जाइ छल. ककि
चिहि चिहिनीक ि इह दुनू गटे ि लका -राली खेलाइि है
छल.

रा -चको आ ककया - पुगि खेलाइ कि कि बखि वि दुनू
एक द्र कि गि झगडा झाटी केलक आ फे हटल हिल.

यि क चिनिक गि आ कलनक चिन 'ह उपजिए लगलै.पकने
वि बहक . झा कलान हइआ आ चि नुका के.

"गि जिन आब. गि ककगि " चि नुकी कलबे गि !"

कए गै, गि "

हरि गि काक वआह भ' जए. हर गि चक जेबौ. आ गि.....?
जिन अकि.....!

की भेलौ गि ?

'एँ गै, हरि बहक रनक रहल ठीके के भहवि गेल! एकि कनक
याद कए रे वला जए गै ?'

नै गि, चल ऐ च'रे एक टा गाछ बि दै कयै.जक्या वि लक
हि किया वि हरि गि हि व नेह कयै गि.

'कथी के गाछ पारे ?

पीपि के, ब के छहवैयै ब रन पाड़ै गि.

नै गि चल आरक गाछ बि दै कयै

कए गै, आरक गाछ .

कएक?

गि, जक्या फड़ै किया हरि गि हि वि किक गि द्र कि के
क्या गि " "

रि बीहक कथा- व नेहक गि

ऐ गै छओड़ी, गि ब कन नकि - नकि छओड़ी गि देखै

क्यौ....?

आटी ओ ब हरि बीयरैण्ड छै !

हिहि कन बिबुना नै छौ, ब टा मि भइये छौ की ?

अहा एना शक कए कौ छी आटी !

चुप गै लुक्की !

"व नेह कक ' लागए मिउख बुझी.ई नै जे जक ' नैन कल जए, र न बावट कयय.

यै आटी, अहा ब बला जराना एल नै हिलै आब. नै छी जे पकलुका लक बहक (ककय - कि) चि क'कलान हइ छलै. निन दजम भव !

लबी कही के.....!

गै, हर ब दजम भव जनराइय के शीरे हुवी खि छलौ.आ ब टा कलकाक करेनि 'ह अपने ' कौ छलौ.

रुदा आकि छओड़ि -छओड़िक जुआनीय क'आन ! शक्तिदिक् दई, जीर आ यगा पिक के जीए.

गिया - पुनि भेल शि ' शि दू टा ओह पलाइए द ' भि ' .
यै आटी, लक जनर लेलक ऐछ कराऊ, खाऊ रौज उड़ा ऊ फे चक जाउ !

' मि मि भि ' जरि छै

मि एक रि लब भेल जे कगे- कगे ककियाक मि जका मि लिला 'ह बदलै हि. एहेन कन रि जे कौ कक पि जा कक नै पाए.
यै आटी, ...जकी ' र न कलए उएह री बुझू. ई काज मि उएह क' कौ जे व नेही ऐछ !

" मि र न निखू, दुखक न ' उख जए मि ' उख' क्यौ, हृदय ' व नेह नै ' उखल किक ककय "

रि बीहक कथा- ऐब की बेविया

रि भैभि, रि बड़खन ँ देखै क्यौ एने- ओने रुक्याणि देने क्कि
ही रि क्कछ हेगि गेल हौ की? द्रग द्र इने नि झाखुड़ रे किने
फीहि ही रि....!

भैभि ओकि.....!

फे - हँ रि, ठिकै क्यै ॰ देखाइ कहा कौ हइ.

की हेगि गेल हौ, कह ने रि हरहू ठिकदै क्यौ.

रि जुजि, रि नै भेटाँ. रि क्यै ॰ ज.

एँ, एहेन क न चीज हेएल है रि, जे रि भेटाँ हरगि नै. ॰ह भेटाँ
खिनी जहन हर क्यै नै हिबै. ॰आब जे हइ हरहू रि रि
ठिकये के हिबै. दुनू गटे क्क करे रि जल्दी भेटाँ रि.

हौअए रि....जकि नार गुलाब छड़ी एह चक्क आबए.

क्की भैभि क्क बदले हिए भैभि ॰ह हटल क्की क्क
दुनूक नजर्व कललै की क्की के . झा रे पर्व गेलै जुजि. क्की
दुनू के रुँह लुलूअबै पड़एल उनटे पएँ. क नटा फड़की, द्रग द्र इने
लकि ल' पड़ाइ.....!

भैभि ओकी पछुएने.....अपस्याहि!

"र क....र क गै, आइ नक्ये छड़बौ जाबे रि पटा नै देबौ. रि हि
ठकि रुस्की रे अपन ठकि रुस्की कइसकि क' "

रि बीहक कथा- पदि पा

हर बहक . झा पा खा कहै छी.पृथी अकाशक बीच अवानक
. झा.

आई ' अहा हम्मि आ हर अहाक भेलौ

अहा.,वैये....! जेहने वि कगि गप्प हिने बनल 'ट. जेना
सगिह आनन्द करिऐ.

' रि ते.

हरहू नै जाक कना अहाक कजि रे क ब कछु क 'ि गेलौ.ई
कि चे हेगि गेल जे हर अहा रघि पा छी.रि रे नै.हर अहा एक
टा कलाका रात छी च्यौ के पर्व-पती नै.

यौ ' रि ठीके.

ठीके नै यै !

राने, रघिक दिशम करि- करि र न नुकएल की खुजल तौ के
दिशम किय लागल ऐछ.

रुदा ' रि र ने भवि कि कैए.कल्पना करि हू यथाथक खज रे
वलरल हू.

रि की हरि अहाक रि दिशम कह्य बन रि रे आका नै ले ?
कनौ नै.

"रि आ कला कह्य बन्हन रे नै बन्हाइछ.ल क के देखाउ, रुदा र न
नै भरिउ."

रि बीहक कथा- प ाि....!

इह! च ि नक्किनि.

कखन एम्ह ि कखन ओम्ह ि, हुलूक बुलूक क ि है छव्थ. उचका नक्किनि.

की बबिडि छी यै ?

क्कछु नै, अहाक उचकपनी के फवयिबै छलहुँ. आब ई ब बहु ि भेल छ क्क वयय हुलूक बुलूक. जँ ते व नेही छी ि आइ एक ि स्थायी कदान भ' जए.

स्थायी कदान ?

` क ना

व आह क'.

खिन जकि व नेह हृदय रे उ ा ि खल ऐछ, बटा खुल्लर खुल्ला उक्कल कैछी.

यै व आह क' के लकक रिरालाप लए बने ि चाही.

हिन व आहे कए ?

रिक शिरक प ाि लए.....!

रि बीहक कथा- आशीदि

कला आ रि कक्कय कखन क न िरा रे नै बन्हएल . दुनू अ िर ऐछ. हिन रि प ि पहि कएक ?

खा क' ओह न रि जे एि क पवपित्तिक ि िी चिए आ बए..

नै कनौ नै, ई थिआ अ भि ऐछ. रिक् पि रे तुं कि गेले. रुदा
हर भव ए नै देबौ. ई कह जे पि ब बुवि द'पढ़बा लेल
छ डक्कयौ की रिक् पि हिं लेल!

डैडी, रिक् लेल कन जिारक बेगां पि नै हृदयक उदां पि
चाही. जाक् ' वआहक बन्हन रे बन्हा एक द रिक् नीज पि के उर्व
की.

अहा दुनू राय बेटी बहि भ' गेलौ की ?

ओ जे कहि एह हेँ. रानलौ जेओ छओछि 'ह अपने जाविक
छै. पढ़ल गुनल इम्जिययि छै. रुदा एक पि जनदा पि की आशयदा पि
पि हरही छी. हर जे चाहब ' हेँ !

ऐं... , कम्मी भावा गेल ! अहा रए भ' के की क' छलौ ?

हर पि अहूँ के बुझौलौ आ बेक्कय के. रुदा की कर रौगी पि शुर हे
' पिशि ऐछ पुर खक . झा.

हँ, आ बेटी पिशि छल रिक् आगा !

हिन पलि आ रुखमरे की अन' पि . रिक् बे पि दुनू बबिबि !

ओकी कक् देबै जे वी के ऐ पि रे पएि नै कए. आशीदि पि दुकि
गप्प जे ओकी लेल ई दुआवि दा के लेल बन भ' गेल.

"डैडी, अहा हर पि लेल न पि दुआवि पि ओही कन खक देलौ जक्या
हर पि इम्जिययि कलौ. उएह आशीदि हर पि कहिक पिथि 'ह
हएि ."

रि बीहक कथा- आँचि....!

रए बापक इच्छाक वरि द रि रे बहि भ' रि ँ भागल बेटीक लेल

-

"बेटी, रि हर रि ख नै रानले. रए ँ रि िखि जे ओआइय हरि कणायक वरि द डेग नै उठबै छय."

रि भगले रि दाक लेल ऐ कि दजिजा बन बुझ, अपना लेल. बना ले न दुकया ब । ले न पर्वि. वि ज जनदा रि आ आशयदा रि के.

नै, हर अहाक भगक रि सि नै छलहुँ, अदावानी छी. आ अपन पेट रे पालल विया लेल-

"बेटी रि गलि डेग रि कवि उठेले रुदा रि न हि जकी कनगीक गी बनेले कि रि गि. रुदा कय जाँ ब देह बि बन बुझाउ इय एक टा दुखि अशिख खुजल भेटा- रएक आँचि ."

रि बीहक कथा- उठल्लू

देखू रि केहेन उजड़ी उपटी न भ' गेल ऐछ! रि वआह ँ भेल छुटा छुटी ओकी रोगवि वि पहुँचा देलक ऐछ. कहू रि की उरे छै ओक. हि र रि आगा रि जनरल ऐछ. देखि देखि जुआन भेल, रि भेलै, वआह भेलै. आ, फे छुटर छुटा!

हे, देह आ र न दुनू ँ टुट गेल ऐछ. ओकी पर्वि रि राज दा रि म्हाकि यि कएल जए िडिक नै. आखि नेनरवि ँ जे केलक कि जए कनगी भविक लेल हर ब रि नै कयै.

बडड खटी काँ छी अहूँ. एहेन जे कुल शील बुझा रि अनेर आ

ल कक रि जाल रे फँव बे नै कर्वीए. क्हिया रए बाप, गौआ राज
ज' बुझबै रि ब बुझाय ओक रि दुशरन ! रि भग' बुझा क ना ?

हे यौ अकाल जी, हर अहाक हृदय आ भागी छी. जे अहा टुटल
रय रे कनगी के जीविक आ क भगविक रथम देलौ. अहाक
रि हरि आइ वि कयौने हिल. ज' एकना हरि आगुओ कया रि चाहै
छी रि अगिया क' न किनगी कयय. रिमक्क आ जीनि क्क दुनू
रे नार हएि अहाक.

हे, हर पर्वि आ बाल बच्चे भलि पुलि छी. रि जका उठलू नै
छी हर.

" ध्यान विखहे, रि आ रि बँटै छी हर, हाग नै."

रि बीहक कथा- बाट- गिट

अहा ! केहेन रन रि दृश्य.

किविक की रे हर ब, कृत्तर की रे दुनू गटे. कहू केहेन
आनन्दक कण !

हँ यौ, पहाड़, जगल गिहु रे दुइ टा जुआन छओड़ि छओड़िक
जड़ी. अहाक रन जेना उच्छृंखिल हेबाक या क' हिल ऐछ !

आओ अहाक यै ?

स्थिति, शानि रन गिणिक रथम कल.

हँ यै, कनगीक कछु कण ऐ रिहे क्वि.... लगैए जेना कनगीक
रठ राठ न.

हे यौ, रुदा छओड़ि, जँ एहेन कनगी रे देखा भ' जए रि बुझू जेना-
र. रा न !

हिन आब अही कहू आगूक की वचा रि ?

हे यौ, हरि विचा रानि ?

क्कएक ने .कक् के ि उनाउ.

आब दुनू गटे अपन क्जनगीक यथाथमकिबा लेल वलिवा जाउ एक द ि .

आँय यै, ि अहा एक्कना अखि क्जनगी क्ययि ?

नै यौ, जक्कया जकि गा ि लगबै क्हिया नै. ि वि ि ब टा अपने छी पुणम्भा ओही पुणमीक खारि ि अहूँ हटलौ!

ि हर ई राक्क ली जे ओ हटब क्क्याक छल.

क्कएक ने.

"अपन बाट अपने बना, र कार िकू !"

रि बीहक कथा- दन्द

हे, फन क'शिी ि केलौ ि आवि के गदिक र इक दे, बुझक्कयै. ि िली छी, ि भविक . चू....!

हर क' जाइ छी, की क' छी ओइ रे टाग अड' के कक्काश नै कर .

फन िखू.

यौ नी ि हरआब जाइ छी, बडड बे भेल.

एन केना जए देब. ि की क' आओ ?

गप्प कि !

डेढ़ बखि " एह क' एलौ. रुदा आइ पि चलल जे अहा व नेही नै करोही छी.

` की ?

एक ि अहा विआंहल छी, पविर्विक ल क. जे हरि " नुकौलौ. द ि

जे रौगीक उपभग रातक तिसि बुझ पवने मि भि फे गदिक
र किक लेल थिया..!

आ आ हरि मि....!

हे रकू... रकू ने, नै र कब ि गली रावि देब.

यै, ओइ वन ि भावा गेलौ. कि पछावि फ न बन्द....!

की भ' गेल अहा के ?

"हे, नू वि रम्मी- डैडीक वन्हल जानल लवका " हरि विआह
भ' गेल. अखन हर ब हनीरून प ककलल छी. अखनुक पछावि फे
हरि फ न नै की अहा, ' र न लिखब.

"विआह अहाक, पव न रम्मी- डैडीक !"

हँ यौ, कुल- पर्वि ि वन्हल जानल छै.

"बाट-टिक व नेही ि अनेर आ हइ छै, अनेर आक रि- करि के
क न कच्छ ठौ ठेकान नै ! "

रि बीहक कथा- देह, र न आ रि

बीना आ र हव नक जड़ी पै जलह टलीरे वि द छल। कएक
ि र हव न भ ाइ पक्कन पीक कए आबए आ वनाके खूब
रागि गविबै। रुदा वना चुपचाप पाथि बक जाए। लकके आशचयम
लागै। जखन की ओकि टलक आ रिदमजनानी रीक हपनारे खूब
उठा-पटक, भागादौड़ी कए, हकि रिक्क जाए टल भवैरै।

ककय काल वना 'ह र हव न ' रुँह लगा कए आ र हव न भवि
इच्छा कूट दै ओकि। बाजा-भुकी बन भए जाइ दूनुरे। खिन
वनाक बाप अबै।

वनाक बाप बड़का रौलबी छल। वनाके व खाबए पढ़ाबए जे

अपन अल्ला क्या नजि भए जाइ छथन्ह जँ केओ रौगी अपन पर्वणि हाथ छ डैए िँ। अब्बाक कहल बाँ ुअ अपन नकिे नूआक खूँटरे ुखा कए। म्रान कएि अल्ला आ कुनिके।

र हव नके रुइना आइ िँ ि कन भए गेल है। ओ भ कन भ ि-
 1इ ओकि कब लग जा भेँ छल। कबक उपि बेना डलबै
 छल। देखह बला लकके आशचयमलगै। एकिँ बे ि रि िँ क न
 रौगी अपन पर्विके नै केने है।

रुदा.....रुदा त छल जे ओकि र हव नँ रि नै है। ओकि
 रगजरे खाली कुनि शीफक ओ बाँ ि ल है जाकरे कहल गेल
 है जे" त रु लरान एह अक्क जे कुनिक हिीकिे रानैए"

आ कना ककय ुनने हिए जे"जाबि वि पर्विक ािक राव
 नै ुखाइ छै िििि द्र ि कआह ि पपुख पिकम कुनिक
 नजर्वये अँि रानल जाइ अक्क"

आ....आब आसँ, आसँ र हव नक कब केि वाल्ल ाि ुखा क
 भेल जा हिल छलै।

रि बीहक कथा- परिेशि

करिान लागल लकक बीच पछिी शुर भेल ।

पहल पुरष पछि----- अइ छौड़ा-छौड़ीके ि भक ी झोका कए राबि
वअ । छ डू नै । इ रिंक नारपि गि राजके कलकि केलक
अछ ।

द रि पुरष पछि----- नै एक ी ऐ पड़ौआ छौड़ा ॰ रुकि वअ वआव
वऔ क न लुल, नाडि, िहि ी कनाह ॰ अपन कुकरक जाए एँ
भवा लेि इ ।

रौगी पछि----ऐ उढ़ी-ढ़ी ॰ क न गारक लक वआह क ी? एक ी
ि िहिड़ा खूक गाव वऔ ।

एक ििउजक बीच छौड़ीक कुहलि आजि आएल----- हर अहा
भहँक पएि पकड़ै छी । हर उढ़ी नै छी । हर एक ी ॰ रि क ी
छी । हर ी जे चाही ॰ जाए वअ । रुदा हर ी भके वनगी
वअ ।

आ च टे रुखया जी छौड़ी राएके बजा कहलवन्ह----- वअ एक ी
झोट पकव लए जाउ आ बाव्ह िखू ।

खिने भ पछि रि रि बाजल---- रुखया जी अपने ि परिेशि

कछे खिन फेि एकि जाए-----बा एबे।

रुखया जी बजलाह--- नैतिक काज छै जे जँ की प ही लागल देखए ि ओकरे पाव दारि दै नै की ि।

रि बीहक कथा- कया जए गि वि

अहा.....रूहँ ि लगै जेना चाने ह आ आँख ि बुझू जे रूगनयनी न। कने रूडी ि उठाउ। एक बेि नजर्व कला कए ि देखऔ। आँ..... एहन झटका ि कजुवि ँ नै लागल छल। क न बाि नै कआहक पछर्व पकल वि एहने दिनशील हइ छै।

हे यै....की भेल। एना आँख ँ गगि-जरुनाक ि कएक ? हरि ँ क न गली भेल की। नै गली ि हरि ँ भेल जे अपन गलीक जा अहाके दए देलहुँ।

केहन गली आ केहन जाए ?

कश ि हइकिहिर यौनिक रुरि रे डुब्बी लगेबाक . क उएि लगलहुँ। अरीरि रे प इि, जुआनीके पक्कि र न बान्ह-व कडीके ि क बहाि हेबाक लेल औनाए लागल छल। हर कइए की कै छलहुँ। कश ि थिरे भटकबाक एकरात काणि छल-ई भलि-पुलि देह जे जौबनके चरि पि जा ककल छल। जकी अरीरि आ जुआनीके बीच ँ ककलल किरण ि लेलक।

कआह ि अहा ि एिह भ कलिक जे हरि बाचल पि क पकल उपभग केने छल। हरि राए-बाप अपन बेटे जका बुझ भुख-ुवि ँ पूणसुटा छ क देलक। काणि जे राए-बापक एक रात

निन ही हर ।

यै, हर बडड उम्मेद ॐ आजुक विवि कि कि कि कि कि । हरि ोझा उपस्थि कएल गेल बहु नि कथा स्थवा भए गेल छल । काणि छल हरि . च-- जे हर शहर आ छोड़ीक क्लि-इन-विलेशनकापके फैं न लिलीके अपना ॐ दू निखए चाहै छी ।

यौ, हरि काह भए गेल । हरि कुराविक पद छुट गेल । रुदा हर अहाक कनगी खीप नै कए चाहै छी । हरि रौगी जाव अ नि हइ अक । रुदा कछु खिमपकने लागल एड क बेरा नि हरि कनगीक निरा देखा देलक अक ।

तये बेराक कन वशि नै, रुदा अहा एकटा निगी रात नै अहा नि चवतिहीन ॐ बे नि कछु नै देखाइ छी हरि । जँ एक कष निन छी जे अपन नि हरिरे नै देखए चाहै छी नि अपन रूँह प नि प्रलि कविखा ॐ हरि र न कनगी स्थाह कएक केलहुँ ?

यौ, ऐ राजक पमिनि कराहै ल क-लाज आ अपन विथमपुरषक गा नि लागब आशिक बुझलहुँ । ब ।

बाहि निदक निह देखाएल । रुदा र नरे अन्हा-अन्हा प नि गेल छल । उजा क बाट ेह अन्हाएल ।

नि बीहक कथा- ढे एकै र दी

हेल हाय ।

की हाल छै ?

फाइन ।

ई कन एबाक रय छै । डेढ़ नि लेट ॐ ।

वखव या कए गेलहुँ । सिरिरे भैभि भेवट गेल । वट गेल हरिँ
 । कहू हब भावा जैहुँ । केहन एत कवएन गेन काँ ओ । रुदा
 अहूँ िँ रय पणि नकए आएल हएब ।

हँ वयाके गल्लेन पाकसे िँ ने र न लगै छै जे िटा-ज़ड़ी कए लेने
 छल । छवड़ि नै छल ।

जखन वयाँ एँ िटा-ज़ड़ी अक छिन हरि क न काज ? अहाँ
 नीक भैभि जे हरि बाट ज़हैए ।

ओ नारदि अक की जे अही टाक बाट ज़हैए ।

हर जाइ छी ।

कणि

भैभि लग ।

कथी लेल ।

इन्ज्याय कबिा लेल । ३

हेल जुगनू कणि छी । बुढ़बा गाइड लग । की कणि छी । हषक ि
 छलौहे की ।

आब री छी ।

आक जाउ हरि लग ।

कए छी अहा ?

डीयि पाकसे ।

आबै छी ।

िँ कर िँकि जुगनू केि हर चलै छी ।

वखव आइ क कए । आब की केकणि पणि आका छै । एक जँ केलक
 रना िँ द िँिया छै ।

आब कआह िँ केकणिँ कणि क'लैए । रुदा भगैए केओ, कणि केक
 द िके ।

पहने थिा चल ि बदलबाके रुदा आब ि िलिा बदलबाक पमिी छै ।

रि बीहक कथा- भूख

बिीक र हऱि अपना उपऱि लगेबाक लेल नै जाव ककि । ु आ राएके आकि केलेक । एकि विं जे ककया-बहुवियाके ेह नै छ डलक ।

ओकी पऱि शकि ि भवि गौआ कऱि रुदा ओक रौगीक छुटल रूँहक ोझा भ अपन-अपन रूँह बन्द िखए । अ लरे ओकऱि िबिला ेनाक नौकीरे छल । छुटीक करी । िक पऱि ओ रौगी गजबके ुन्दि है । िए ओ गारे नै अनगौआक नजवरै आब गेल है ।

एक वन गार भवकि रौगी भ ओकी बै ि क'क'कूब जान देलक । ओ रौगी खूब आकका ि ि बाजल---ऐ गारक क न कि बेटी-पुऱिहु हाट-बजाऱि आ रेला ज क'नै ि अबाए । रुदा हर ि ककयऱ अपन िँ बही क'दू ि नै जाइ छी । आब केओ पाहुन-पकि एँ ि हर ओकी क ना क'भगा देबै ।

यै ककया, नै बदिा भेल िए रूँह खलै छी । पाहुन-पकिके नै भगा देबै रुदा ओकी ि कऱि बला िि-भि के ि कि कै छी ने । देखऔ भहँक बेटी-पुऱिहु अपन । ु-राए के ि ि जा की िरैए आ फे चक अबाए । केकऱि कछु भेलैए आइ विं । अहा ि िरि कि पेट क'लेलहुँ अक । िबिला जे अवाला रा रे आए ि कि लेल ई खिने कए ई अनजनुआ कलका ।

बुझा ने देखुन्ह ईएह भ । हर ि फ न पऱि फ न कए हाव गेलहुँ । नौकी ि बुढाी विं हेँ रुदा जबानी की ििउ िखल छैओ ि आब ि विं जेँ फे कया-बाँरि एबाक बचन द'क' । ऐ बीचरे हरि

जखन र न हएँ ि हिबाक कि क न बाट हेँ । अक्ना कुहर्व
क'रबै की आ क एकल शर्वक लेल द ि बाट किबै हर ।
भूख लगला प ि भजन चाही खाली बचन नै ।

आ भा खतर भ' गेल छल ।

अब्दु जिजाक

कहैन कथा- १

रीर गि गीतिके ककाहके भऽ गेल अक्ख ४ बषम
"अल्साहक भेद अपमिमां अक्ख -कहै गीगि बाजल, "नुली कहादन
र हमरदपुबिली दीदीके फे स रक्खनबाणी र इक गेल है "

रीरक नयन वाकिक नयनरे अपनाके देखै बाजल/
" ह, कि कक नही हैयि की पाचर बे कही बेवट्टे भेलै कि खाली
बेवट्टे बेवट्टे हिँ "

" ह ,कि कक नहीए है की हीरे ? हे, ओकि बेवट्टयो अल्साह
हर कि खरे कया नही दैय । हर कि ककहि अम्मी गे अम्मी अब्बू
ककया अबि स औई हरि लेल खजू आ बुका लक "

" है ,बहि जा जा कथी ब बकऽ लगली पक्खने बेटीय भेल कि
नक्ख गिले बेटीएके र नक कचा बिबकऽ लगली ,बेवट्टयो हब कि क्यौ
"

" ब बा कि उईन लेली हरि कि बुझाइल ` अहा अखन फे बुकया
बनल क आ हरि बाकि ओहि ध्यान नही दऽक उईन हिल क
खाली फे बुक पऽ छौं बहक आ पाटी बहक फट . ट प
ध्यान खिने हैक "

"हर दुनु वनु काज एकैबेरै ककि ` अहाके नही जानल हब `
अहा ज कि बक्कह आ का निनक लेल क न चरक्का गी बला दबाईके
चिा कि है कि हैक "

"कि रदिब बके बा कि नही बूझ पाबैक , लक अखन गि गि
के दबाई कीब डातटि ल जाइए झुटे फु के फे बुक प कहादन
दबाई कलिँ "

कहैन कथा- २

हनीफ आ खदजाक वकाह के एक द क पूरी भगेल अछ । वदन
गिई पव ना आ इरन्दागी दुपयग स रखी - खुी भऽ कतय क
वदनचया अल्लाह क रजी ' बीहि हिल अछ ।

गाबी गि वनगी कऽ भाग दौड़ बडड ककन हइ, गि हिला
' हकमि अछ दुनु गिणी । इक पहि गिरि हनीफ कछ एम्हि
ओम्हि टचमबाइकि' देख हिल अछ ।

हनीफ कछ हेहि रुदरे कहलेन

- " कहकय, 'नै छी अपन टचबला र बाइल खम्हाबला ख लीएरे
लि छल ' नही देखहिल छी ?"

खदजा राथ पऽ ओढ़नीके कलाबै

- " हँ , र बाइलके क न काज अछ ब लग गि र बाइल अछए ।

गिहूरे ओकि बैटी गि गि नही काज कहिल अछ ?"

- "ओहे गि गि बैटी नही काज कहिल छलै ओक ' ओई रे
बटी लगाब लेल हेहि हिल क "

- " रिक न जर गि भऽ गेल छलै ' ओकि बटी फेबिक लेल ?"

- " जर गि अछ भऽ गेल कहूँ' कहा अछ ' ?"

- " ओकि गि बटी ओ फेकि ठीक किलेने अछ हर गि नकहारे ।

भाई जी आइल हिक्थन ' उनके दऽ देखएन , कहादनि ककया के
र बाइल पाकरे वा कऽ कगै गेल गेलै ओहीले उनका ककि
छलहा ।

- " ओना हरहू अपने बहनके देबलेल . चने छलौ रुदा कगल देबै
लेल कक कि छल कके कलौ ' भने नैहि भेज देलीए अक
बहने ओकि लेल नया कन क भेज देबै । "

- "नया ल'क ओ की क'िि खाली उनका बा'ि कबिाक लेल चाही
ि भाई जी एकटा पुनि र बाइल देने अक्ख हरि ' भेज देबैय ि
नही है ' ?"

- " जा ,र हरि बक्खन लेल पुनि अक्ख िरि नैह'ि लेल टच बला
भेजा गेल ि कर कर पूछ आछी नही "

लहछैथ खदीजा कहली

- " हरि नैह'ि लेल ि पुछबाक छल रुदा अहाक बक्खन लेल क्ख
क न पुछबाक केक'ि बेग'िि नही अक्ख ,कहादन रक्खल अक्का
अक्ख अखन र'िशी रहीलाक लेल नया अ'िि ऋिनिरे । "

- " कानून रे भऽ गेल अक्ख रुदा जखन बड़ा बड़ा पाटीरे रक्खला
नेका ब 'िि. वि'िश'ि अक्का युत'ि नही अक्ख ि ाराक्क
क्खबाकि रे कहादन पचा वि'िश'ि क'िऽ ' ? "

गिजीणि कणम

बीहक्क कथा- पौ

इक्क रय हिय पान खाय के र न भेल

ि द्र कान पणि गेलौह ।

ओरहि ँ हरि एकटा क्त एलाह

"नरस्मगि यौ"

आऊ आऊ द्र पान खाऊ

गप्पे गप्प रे क्कछु देणि पक्कने के बाणि र न पड़ल ।

द्र ?

कहु....

यौ अहाक बाबु जी कुता.....

द्र -हे ुनु! अहाक बाबु जी कुता.....

आहा! गरि क्कये हय छी द्र ?

हर कहलौ जे अहाक बाबु जी कुता

खीदलाहा?

णि पर्वणिकि लेल ल क पणि वशि नै हिलैह की?

बीहक्क कथा- व नेह

-- बौआ , कने एम्हणि ुनू ने !

-- की कहै छी भइया.....कहु ने?

-- आँय यौ , अहा के अप्पन गिज काज नै ऐछ की ?

-- े की ?

- द्रि के काजक पाछा अहा अपना के हेनि लै छी.
 -- आ अप्पन काज ...?
 -- की कबै भइया, द्रि कि हीया रे पैव के ि देख्यौ.
 -- व नेह रे रालि ब गछानि बुझएनि !

बीहवा कथा- ने

देख्यौन क ना काँ काँ रुह िरा क जा हिल
 छैथ ।

-- ' कये यौ कका ?

--ओह ! की कहै छह बौआ छु राह भ गेल
 एक टा पाय नै देलक अखन वि उगीं जे
 खेलक ' ।

-- ि कहै नै कयै अहा ?

--हउ कहक्यै दू चारि बे लेकन.....हरि
 ि बुझाइ जे कनक नि खीब छैन्ह ।

--(एक कन भि भि)

-- लकरी बाबू छी यौ ?

--की बाँ छै यौ ? आय भि भि दशम देख्यै ।

--यौ हरि बडड लाज लगै छल अहा ' ि हर
 काँ काँ चैल जायि हिी अहाक उगीं जे
 खिने हिी ।

लेकन कय अपन पाय अहा हरि फे ' नौकी
 लावा गेल । रजबूी अक रुदा नेगि छी ।

बीहक कथा- देखौलि न्याय

--आग्रि यै भौजी एकि भीड़ अक्क अग्नि रे कये
छै ।

--देख्यौ न ब्रआ उ है ने रगिनुआ के पुहि
अपन उ आ ु के बड़ दुख दै है ल क
आउ ओकी राँ ले गेल है ।

--आ रगिनुआ अपने क ि छै ?

--उ कलसी गेल है कराय लय ।

--ओह ! आग्रि यै भौजी खिन ि जुल्ले ने होँ ।

ई क न न्याय भेलै ? रगिनुआ के आबह दैखिन
खिन फै ला कबिक चाही ने ।

--आ खिन की हई जखन बुढ़बा बुढ़िया के राव
दै उ रौगी ।

--अच्छे देख्यौ दूये कनट रे फै ला केना हय छै ।

--(ब ॐ आगू आका) अपने ब ॐ आगह जे
कनका कनका अक्क ककया ॐ कष अक्क आ
बूढ़ा बूढ़ी ॐ स्नेह ॐ अपना अपना ओकठार
ई दुनु गिणी के ल जा क ॐ कि कैवियैन्ह ि उक्कि
हइ । (बहक बाक बदि ब अपन रुड़ी झुका
अपन ि कि गिरी देखलाह)

बीहक कथा- पै ल क

--ब्रउआ कक टल रे आ कयाद बके करतिण

द अक्यौ न।

--ठीक छै कका, हर आि टि बाद द एबैन्ह।

--(ब गटे दलान पं जुटला खाय लेल)

--यौ ब्रउआ र हन बाबू ि नजौ नै अबै छैथ हुनका
नं नै देखयैन की?

--जा यौ कका हर ि कवैये गेक्यै हुनका।

--आहा। जाऊ जाऊ दौड़ क ओना आब ि बडड
लेट भ गेलै। रानि की नै लेकन खज पूछा
जर ि ऐछ।

--र हन कका छी यौ?

--हा ब्रउआ आबह। की कहै छ?

--यौ हरि ँ ि बड़का गला भ गेल।

-- की हौ।

-- ब जगह हर नं देखयै आ अहा के ओकठार
छुटी गेल।

--ओह ! िरू छ हौ?

--हा कका।

--की ब बक गेल?

--दाइल भा भ गेलै आ खाली िका भ बाकी छै।

--छड़ ओकी, चल भ ज खाय। ब इजि
रे हेहि।

बीहक कथा- खुशी

--बोई ह रुखया जी !

अहा ि आय बके पछाड़ी देक्यैन।

हउ आब भ ज भाि आ लड्डू कठाई के

कस्थिा कव्यौ।

--हा हा कये नै जर ि हेँ।

--रुखया जी एकटा बाि पूछू ?

--हा पूछू।

--यौ हर बेि बेि देख हिल छी जे अहा खुकाय

हय छी आ चेहि उँविय जाइये।

कछु बाि छै की ?

--नै क न खा नै, हर . चै छी जे ई जीहि हरि

ब पैि खुशी नै ऐछ । हरि ि िक कन

ब बेी खुशी हयि जै कन हरि रुखया

चुननाहिल क ब ुखी हिि ।

बीहक कथा- उल्टा पुल्टा

--हे हे । र ि िड़ी भला के।

ई छौड़ा ि बटा कार उलटे पुल्टे काँ छै।

--की भेल कका यौ ?

--ओह! की कहै छ ई हरि जे प़ि छै ने

ओकि कहबै पूब जाय ले ि चैल जाइये

पकर । प़ि नै की पड़ि कखै ये।

--ओह । नै बुझकयई कका आब ि पड़िये

उल्टा भ गेलै ने।

पहले पलिकै उ, ए बी ी डी, आ आब

पई छै आई. ए ., बी. ए. , ी.ए., बी. ी.ए.।

बीहक कथा- फट कॉपी

--भैया !

--हाँ, की कहै छह ब उआ।

--रनुखक फट कॉपी देखने छी अहा ?

--है। रनुखक केहन फट कॉपी हय छै हौ ?

--हे, ई देखयौ।

--आँ ! भला के ! ई फेकना बुझाई छै हौ ?

--हाँ भैया हि छै।

--कि एक फट कॉपी कहै छहक ?

--हाँ भैया।

--हौ कये?

--हर चाहै छी जे न विविधा ब ओवर्जिनल बनय

कि लक एक भक नकल कयि लेकन ई

छौड़ा ब कि अपना के क कि कखन लरान

खान आ कखन शाहरख के इस्टाइल राखि फे

बुक प कि।

बीहक कथा- जमाना

--एना कये यौ भाई ? एना उलटल कये छी ?

ई कोन रोग भ गेल अहा के ?

--कोनो रोग नै भेल ? कआ जमाना के देखै छी ।

लोक सब कहै छथिन जे जमाना उल्टा भ गेलैये

ि कआ जमाना के देखै के कोआश करै छी ।

-- से अहा सीगि भ नै देख सकै छी की ?

--कीनहु नै । उल्टा चीज के उलटे भ ठीक सं देख सकै छी ।

बीहआ कगि- चकु भोजन

--घनश्याम जी छी यौ?

--हँ मनोज जी , की कहै छी?

--कहलौ जे राइ मे अहा के आमंतण अछ हमरा ओखठाम ।

--ठीक छै ।

(राइ मे)

--मनोज जी छी यौ ,हम आब गेलौ ।

--आउ आउ ।

--हयै, भोजन आकालू ।

(मनोज जीक कआया एके िरी भोजन आकालली आ मनोज जी अकेले अकेले खाय लगलाह । इमहर घनश्याम जी अश्व सोच मे छै जे हमर िरी आब आयि बि आयि । मनोज जी भोजन क क उठलाह ।)

--आंय यौ मनोज जी आमंतण हमरा देलौ आ

भोजन अपने केलौ ।

--ओहो नै बुझाअयै घनश्याम जी हम अहा के चकु

भोजन करय लेल बजेने रही से ि अहा केलौ ।

आब अपने जा सकै छी ।

नीरज कणय

बीहश्च कऱि- नोर

ओ काश्च रहल छलैक । चान सन मुखड़ा पर कोनो भाँि नश्च, बस ढब ढब बहैँ नोर देखबा मे आयल । मुदा कारण बुझाँि मे नश्च आयल । बुझायो जइँि जौ नोरक अछु रंग र प होइँि, दुःखक असाबे.. ।

बीहश्च कऱि- फादसयडे

बजार सँ घुरैँि बेर एगो मोड़ पर दूटा आजुक छौड़ा देखायल । दुनू एक दोसरा सँ घेटाजोड़ी क' क' "हैप्पी फादसयडे, हैप्पी फादसयडे" बजैँि रहए ।

अ ओअ मे सँ एकटा जोअयाइँि बाजल "दोस आइँि पाटी बनै छौ रौ"

दोसरो िन अलेलक "हँ हँ अएक नश्च, आइये डैड सँ जेब खचय लेलहुँ, जर र हेँ पाटी आ जइम क' हेँ दोस ।"

कअ नीक सँ देखला पर बुझायल अ ओकर सबहक अंस पैट पचास ठाम फारल अअ आ डाड़ सँ नीचा ससरल जा रहल छलै ।

हम मुअयाइँि घ'र अस इटकारैँि अदा भेलौ अ अनसाइद बाबूजी बाट जोअ रहल हेँि ।

रि . गाथि याद

पना पने अकू---(बीहक कथा)

हे ुनै है ऐकिकि है कू ऐ.... बकूजिना भगेलै

.....यै बुनिाके बाबू नकू ुनै कू यै ?

.....एह कथी कहै कू कहन ?

क भेलै कैला ओि फटयाई कू.....

.....बौि तीके फ न आयल छलैय

कथी ब कहलकैय कक ँ नकूबुईझ पैकयै

कक बौिके कस्कल राविय ि गप कबिा लेल रन ब्याकुल भहिल अकू ।

.....ई गप ुकक हर रने रन रुस्कृिईि कि गेलौ ओिबे रे काका ह
रि ँ कहलखन

.....ि किनर ,ककक बुनिा लँ फ न लगाि ?

.....काका बुनिा के फ न क्चिओफ बिबै छ ।

काकी जकू नम्रि ँ फ न आईल छल ओकू पफि न कबै ि नकूहि ि ...क
?...

.....हँ बौँ बाँ भजैँ क राहिन

.....हरि एना रहँ ह ईँ छल जे जब दिश रे

अपन िन ह ईँ अक छिखन बली नुला राय बाबू ककि आँहि ईँ छै
।

.....ए र क काका ककक देख ह रकष भैया के फ न चैल अलै क
ताँँ

हेल भैया णार....

.....आँईँ बुनिके िँफ न कैला नक लगै है ।

.....भैया ओकराई बाबू हरिँ छै बाँ कौँ कै छा ।

.....नै नै नुन हर जे कहै कय

ई बाँ ओकी राई बाबूके नक कैक्यही ओना बाँ रे िँपि चक्ये जौँ

.....आब हर अकबक भगेलौ हरि रुहँरे जेना बकालाईग गेल ।

.....िँ.....बिनरा क भेल िँ कैला नक बजै छे । रकष िँ बुनिके बा
रिँ पुछै छलौ ग नै क भेलै कहन काका बहु उत ।ह भँ हरिँ पुछ केक
व कौँ छलकन रुदा हरिँ आँखँ जब न टिप टप बहलागल बि का
का ,काकी ककिँ भँ पुछ लगलै ।आ आँल क बके जरटि लागलगलै
काका , काकी िन के खबि नुला आँहि भगेल कन

हरि ई बाँ छुपनाई बहु ककन भगेल

अनरे रुहँ खली टा पलि काका बुनि भैया के एक्क डेन्ट भँक रृत्युं भँगे
ल

आब काका, काकी ेह राथ पकडै कान लगलखन

.....ओह बेचि बहुनि पना ब्र ईक कऽ कदेश गेल छलै । आ बजै नि
है छलै जे कदेश 'आईब बि छ टकी बहनके शादी कबि रिरि ' । ई क
भँगेलै ब दैब के कखल कनि अक्ख जेना जेना गिराउ नि नि निम्ही प
डि ।

नायिण रशाला

बीहककथा-१

एकटा लड़का पँजाब खटै छल । बैशाख रक्खनाके ओकि बाप ओकि फन कयि । बेटा आप ि ि चक्क आ । ओ लड़का . चैय जे ठीकेरे बे ी क्कन भऽ गेल एऽ हिला । आब ि जेना चाही । रुदा ओई ॰ पक्कने बतय लेल लताकपड़ा क्कल लई छी । ओ गेल एकटा कक Malla रे कपड़ा क्कनबाक लेल । आ राई बाप बक्कन तय लेल कपड़ा क्कलक । अनरे ऊ . चैय ब लेल कपड़ा ि लेलौ रुदा अपना लेल कुछ ि लेबे नै केलौ । बि ओकि नजै एकटा काफी रहग Jacket प पड़ैय आ रहगे ही ऊ क्कल लैय । ि आबैय । िरे ओकि वियाह लेल कबिाक लेल ब लेने छल । कहाने भने ििहाि एल । छँडा खुब कजिज लेलक । आ ऊ म्झैय जे अि रहगरे अि कक Jacket अखन नै पक्क छी ि ओकि अपरान भऽ जाएि । ॰ नै ि पही लई छी । छँडा पही लेल । आ बि गेल ििहाि लग । लड़का देखलक । लड़काके देख कऽ ऊ ब जे जा लगल बि लड़काक बाप ििहाि ॰ पुछैय । हरि बेटा प न्द पड़ल ने । ििहाि जबाफ दैय । यौ अहाक बेटा ि हजारै एक अक्क । लड़का ि एक िि नै काटै बला अक्क । लेकिन हि कने लड़का क्कि ॰ हुठि भऽ गेल अक्क । क्कि वि हैि बि ि कके छल रुदा अहाक बेटा हुठि भऽ गेल अक्क ।

बीहककथा-२

-- अहि क्कनँ अहा कलि गेलहि ?

-- अपन स्थिआक क्कवँ वावाट भक आय जनकएल गेल गिरारे ।

-- वावाट भक गिरारे, राने ?

-- अनु ई कविय वावाटे न हईछै नै ?

-- की भेल ?

-- याहि अनु, कवि कखै अक्ख कृछ आ यि गरे सरि आनै अक्ख कृछ । लक झुठेके कहै छै जे ब काज बबिबि हईछै । आ एह देखाबटी बाहि जे

नाहि पुरष एक म्रान अक्ख । ई ब बाहि बेकाजिना लगैए ।

-- कए ?

-- आब देखुन ! हर जे गेलहि जै गिरारे । ओऽ पै पै कवि, कलाकाकि म्रान कलल । रुदा ओऽ जे बक्कन ब भके भान कवि खुलिक किनि पतिय वचाहि नै केलक । एकटा बाहि कहूँ केकजिन के दैय ?

-- राए !

-- रुदा कहूँ ि रक्कलाक नार कौ आबैए ?... देखु ि भवि... वजानक काकि... िष्टक काकि... एहने शि अबैए ।

गहि पुरषक नार रात । राएक नारक कयाने ? िष्टपवि हई अक्ख रुदा िष्टपती कए ने ?

-- अहाक शि गम्भी अक्ख ।

-- अनु जँ कयौन के कौ म्रान कलै ि की ओ भ अपना पगौभानाहि नै हए ? ऊ रेहनिँ काज कएिँ स्मूल ठीकँ चलैए रुदा ओकि

नार की ने । बि कए ने क ई काजके छ ट ि पै रानि ? कया
क ई कयौन, भान कडिबला आक् बनबाक लेल चाहि ?

-- कलीज, अहा शानि भऽ जाऊ । कछ बाि ककिबी बाि बक्क
रात कि जाईए । की कबै ? राथा पणि ि नै कए ।

-- अनु की कर कबि कछी ई रभिद देखले नै जाईए ।

-- अ ली कननि कबिला कक्कि के एक्कना ह ई छै ।

रलय नाथ रण्डन

बीहवा कथा- रीकणि

::-एहू बेदि छ टका-बडकाक भि देबाक चेष। केने है ओ! रुदा नर्वि जुल्लै,खूरे यिा केने है।

::-क्कये नर्वि हर'देल्हक।हरि ब रि एक्क बेि अनठा देक्कयै।जेकी हेबाक है ' अपन है।

::-नर्वि बुझक्कयै राक्कक! पक्खला चुनाकि भ ग रि भ वाि छलू।एबीदा हर पक्खले ' तबनि छलू।

::-ऐ बेि की भेल'।पक्खला बेि रि हूँ खूब नाच केने छल',छ टका-बडका नार पि।

::-राक्कक! आब कान पक्कि छी।बलू है जेब ' कबूल,रुदा आब फेन :::::उँउउउउहूँ।

::-क्कये की भेल',भने कके रिछह।

::-नर्वि यौ राक्कक!!'निन-निन टा' के कपा पि अक्क।'ि-पैच दैि दैि तक्कन भ'गेलौ।लूट लेलक नेबा ब।

::-एक्क बेि क न रिजनीर्वि छ'रिहि बहक।

::-एक्क बेदि क्कछु नर्वि छै।कान रे रििलि ल' लिलि क्कयै।लिलि

हिबै ि अहा बहक रा बाबूक चणिक क्कपिा ` क्जबिे कबिै ।

::-क ना के क्जबि' ` ने कह' । ूले क्जिँ जँ ल क ि'हरहूँ ब
हि फरिूला लगा देबै क्कने ।

::-जा' ` नर्वि बुझक्कयै! रुक्खया बनैँ . रन क ि के कक्कया आ
पघियाि कर्वि हेँ अक्कछडा रे ` , िले हर क्कयै । पिघि द'
देक्कयै अजिरन क्कया के । आ क्कला पर्वषद बनेबै हर ब बुनिा
पा रान नर्वि छलै िकि बेटा, भने क्कके िनार छै ओक,िहँ हँ
क्किबा । बड ुन्दि छौं छै । पलि क्कखल छै आ ब्रक्कय बानी
नीके छै ।

::-ओह इ ि ब रीकणि बै । लेलह ि ब क्कने । क्कके कहै
छ'एक्क रीकणि प ि ब कर्वि ि ुलि रे क्जबिे कबि' । अक्क
थरह' हरहूँ ब लगबै छी राथा । एही . शल इज्जीक्कयविं प ।

बीहक्क कथा- बेकाजक का'ज

::-क्क कक्कयौ! क्कदाथी ि दूि बुर्वियाथीय ब जे क्कि ि कर `
कर ि . ि फेटि ।

::-क्कये ओि रन नर्वि लगैये ।

::-रन क ना लागि , गप्प कयि बला के अभाँ हिय छै ।

::-खिन लफटिशे कयि पाँहि हे।

::-क कबि कछु ि कबि।उपजल गप ऐ कठी ँ ऐ कठी काँहि
है छी।िही रे कछु नीक -खीब ब भ'जाइछै। इ र बाइल अक
जे क नहुना कन काक लै छी।

::-नीके काँ छी।ि चलबै ले क्किा िि िि दैँ अक।
बेजिगाकि कुट-चाक रे लागल ह्वि,जे जेह जिगाि रे लागल छै
ओ अहीके लगौल खुपिपाि रे ओझलि है।जे काँ क्किा!इ हाइ
ओकपाि के छी।

::- बड बड देखलौ लेकन िि जेका कागचेपी नर्व देखलौ।एकक
ा रे बटा उँडि ने देलही।ि जि डा नर्व भेटल हरि। बटा
ठाक पठाकरुँहे पि।

::-आक ि बा! आब िुरि।ििया पूि पै भेल।नारी-वािरी कहबै
छी।लेतचि-फफिे ि बटा नाडर्व लागल अक।आब ि इजजैि
बचबै के रय आक गेले।बर कहब िि ि फेटकहाि के हर
िक दै छी।

लबडा बला काज ँ बरिया िि` फेटब।

::-ठीक छ' ठिक'।खिक् िि. फेट के कन काटब।

::-िबाद रे इ नर्व कह' लागब जे जुआ बला ि कि चाही।

बीहआ कऱि- कोश्या

हरक लागैन के जोर सँ दबने

असानक संनिनक मन अपरिणि सन।

ओ कहैयेः-हरखडा,पालो आ बरदक

बले खेणि आब कऱि अन्न।एकि जुगाड छै ियो लोक सब पुराने
ढाठी िने अछ।

::-अँय रौ!!दू अन्न लागैन िना भेलौहे नथि आअ उपदेश देनाय शुर
क'देले।

::-नथि हौ बाबू ! कहय अछय' जे लकिा लकिा अशीन सब एलैये
।जो-कोड,कदबा,चौकी ि चौकी,रोपनी आ कटनी कि भ जाय
है।दौनी िनी सब ि होइि है।खिन इ सब पुरने िरने बेसि
कणि ले।

::-हँ रौ बौआ! आगू जनमल गोड लगेबे करबे अने! हमरा से सब
अ बुझल अछ।

::-बुझल छ' ि अये हरान-अरीशान होइ छ'?

::-हे रौ कहबौ ि लगि छक द',चुप्पे रह ने।अये बड बड केने
जाइछे।

::-ि से कह' ने "साच मे आँच अ",कह' कह'।

::- देखै नथी छे अपन काया जेना घून लागल जाय छौ। अशीनक उपजेल खेबे ि अपने अशीन नथी हेबे। आ अहनथी क' खेबे ि अशीने सनक मजगू ि आ-काया हे। इ अलथलहा काया ल' क'क चक्कर मारले। इह बूअ कोअया कहा के अशीने से खे' करि। अनका सु' के इन्जाम क' अयौन।

जगदानन्द झाँरनु

बीहआ कऱि- बेटाक बाप

"ई जे भअ अन्न नेण्ठरीमे लागल रहै छी अ एअसँ पेट भरि? चलू अपन पेटक आअ ि जेना िना अझा लेब कअक बेटीक ब्याहो केर अँसँ ि डर । भेल ि ३-४ खिबे ओकरो ब्याह करए परि, ओहु लेल १०-१५ लाख र पैया चाही ।"

"केहेन गप्प करै छी ? आब ओ जमाना नअ रहलै । बेटा आ बेटीमे फराके की? जेना बेटाक पढ़ाइ-अखाइ लालन पालनमे खचा िनाअ बेटीमे । बेटी बेटासँ कऱि कम नअ । आ हमर बेटी ि लाखोमे एक अअ ।"

"ई अहा बुझै छीयै मुदा समाजमे दहेज लोभी बेटाक बाप नअ ।"

बीहआ कऱि- रभसल

"रि भौजी ! अहुँ बड़ रभसल जका अनादन करै रहै छी ।"

"यौ लाल बाबु रहै अयौ, जँ हम एना रभसल जका नअ कअँ ि, ई जे कोरामे भञ्जिजाके लदने रहै छी से मनोरि अहाक भैया बु ि रअए गेल रअँ ।"

रि बीहक कथा- ए गऱि

बा . पती ब अडडा । 'र'के कल्ली जेए बला टेन दभिगि ँ पकाँकि

छलै । बा . पती ॐ दभिगीक विवि याता ब ॐ । ब क इन्जारे
'र' एकटा लगेज हाथरे नेने ठाड । विबारे ' ' अफ ीया भावा
कय आका 'र' लग ठाड हवि, दूकुि दूकुि ओकि रुँह किँ ।
दुनू आँख ॐ न वि ककक ' 'के गाल हवि गदिक वि टवि गेल
।

र, "वि एकि कनै कएक छे?"

र केि दुनू हाथ खीच, ओकि हाथपि अपन रुँह खिँ, "हर
कहा कक हिल छी ।"

ओकि उदा आ कनै देख र दूटा ब छवि देलकै ।

"हरलि' चलू, अहा कनु हर एक्ठार नक जी कब । ओहीठार
हर बके कहबै जे हर अहाक नकनि छी । अहाक नेनाके
खेलाएब, विरि पछा लगाएब, बमि वि ।"

ई कथन छल एकटा कबि राएक जेकि बेटा कल्सी बाली वि
ब्याह कय कल्सीए बव गेल छल आ राए ए गि गाररे ।

रि बीहक कथा- रि

गुदडी बाजाकि भीड भाड ॐ ककलै, एकटा दुकानक आँगा टीकि
आबाज कु डेग रक गेल । टीकि ॐ अबै ओकि अबाजे टा
कुनाइ द' हिल छल । ओकि देह नक देखा हिल छल रुदा अबाजे ॐ
ओकि कन्हनाइ ककि आ न छै ।

आइ ॐ वि धिमपहने, हरि वि वि नरी गिमवि पढ़ै बाली,

नुम्दि, चघिल रात रूठी भर्वि डाड़ बाली ु.....

"क रिर इहे छैक की रात देहक जिनन अगिपि एकाविकाि बना कय गिखैरे फल भेनाइ?"

रिर बीहक कथा- . हावान

हल्दानी, हर आ । । कक्कसीन पाि कय क' हर दुनू पहाड़क उपि चढ़ै, रलि जगह ठिक्क पाकक्के एकटा चिपि बैव , देहक गरीके कर कौके हेि बफसलाइ (आइस्कीर) कीन खेनाइ शुर केलौहैं ।

दुनू गटा अप्पन अप्पन आि बफसलाइ खेने हएब क, । "जँ हर अहाक रने रवि गेलौ िँ हरि गिपि चबूगि बना देब ।"

रेि वि उँच उँच पहाड़, चार काि ठिकृविक ादयम रखरल न ि , सगिमन गिगिणि, बफसलाइ केि आनन्दक कच अचानक एहेन गप्प ुक्क, बफसलाइ हरि रुँहँ छूट हाथरे कठैक गेल । कक्क काल । केि रुँह पढ़ैक अ फल यिा केलाक बाद; "अस्सि एकटा नीक चबूगि । जँ हर पक्केने रवि गेलौ िँ एकि क्कस्थि जरि कय जाएब जे एकटा नीक चबू.... "

क्कचरे । हरि रुँहके अप्पन हाथँ दाबै, "नीक नक्क गिगिणे चबूगि रुदा अहाक हाथे आ ओक्कपि क्कखल हुए ". हावान ।" ।

रि बीहक कथा- बेगिनि

द रि रुँहे कविया दय लिल रके अपना क्क तिराबै - "लि जाउ ! क ना रुँह लिरेने लिल छी, द कनट पक्कने अपन बेगिनि काल क्क वै गेक्कयै क ना जोक जका टल छलौ ।"

रि बीहक कथा- अवाला जनर

“डाड टूटल जाइए भवि नि वै लिलहुँ नक्क बड़ नि कौ छी, अवाला जनर अहा क्कजड़ा

हएब जे क न आओ रोगीके एना नि नक्क कए कब ।”

“ठीक छै ! अवाला जनर अवाला जनर देखल जौ, एक्क जनरक आनन्द नि लए कअ । आ अवाला जनर ओक्क क्कजड़ाक ब्याह जँ अक्क नि भए गेलक्क नि ।”

रि बीहक कथा- रुँह झाँ ।

“गै दैया ! एकि आँख कएक फूलल छै ? लगैए नि नि भवि पहुना लुए नक्क देलकौ ।”

“छ नि, रुँह झाँ । कएक नक्क लुए देनि, अपने नि ओ क्कछानपि पाँ रा नि कुम्भकनि जका लुँव हिल आ हर भवि नि वै क नि गनै कलिहुँ ।”

श्रीदाचनर झा “बमबम”, कैश्रीआया

बीहआ कऱि- आबक जमाय

बञ्चन दाय देखऱि आँगनक मोख कि अकयो आयल छलअवन
 , पूछआएन जे के छी िऽ चोटे आपस भय गेलथी ! ने जाआ के छल
 हेहि ?

हम िबि हल्ला होइ दि देखआए :- मार सार केऽ चोर उच्चका
 लमपट नञ्च नि रे, आ भीड़ एक गोट कअकि कैऽ ला ि - मूका सऽ
 दूर सँ कऽ रहल छल !

हमहु भीड़ कऽ आरै ि - फारै ि ओयि शि पहुँचलहु , आअर एयि
 अ भय रहल छैइक ? अआक एक भीड़ लागल छैइक ? अआक
 एक हो - हल्ला भय रहल छैइक ? मात अजासा बस गेलहु आ
 आब सब अछु आँअक सोझा मे छल !

हम जा ि हा-हा कअ ि ि िऽ हुनका अअरि कऽ देने रहै !
 हम पूछआए :- ऐऽ रउ ि सब एना अआक हुनका माअ रहल छहुन
 ?

छौड़ा सब :- अ कहु भैया ई छौड़ा लाल काकी केर कोअा पर
 एक राअ कऽ हुलकी मारै छलैक ि अ कअथैक से अञ्च

कहु ?

हम टॉचयबाश् गौर सऽ हुनक मुह देखय लगलहु हे भगनि ! ई अ केलह ि सब ? ई ि लाल काकी कऽ जामाय छथिन !

इ सुआ ठार भीड़ अकि रश्च गेल !

बीहआ कऱि- अभगलाहा

होसीआरपुर बाली कआया छी यईऽऽ - - - -? सुन्दरपुर बाली फटअए लग संऽ आजि दइ छथिन ! आबौ बश्चन दाय बैसौ ि ,इ ि आब एबो नश्च करै छथि ? मार बारहआ अ आयब एकरा सब दारे !

ककरा सब दारे ? अ भेलआ बश्चन हमर छोड़ा सब ि नश्च अछु कहलकआ अश्च ? राम - राम ओहा िया - पू ि सन नेना रहय ि भागे छैइक ! खिन अ भेलआ बश्चन दाय ?

ओ हमरे अभगलाहा सअखन अ कऽ हल्ला - फसाद करै रहै छैइक ! काजो करीक लेल नश्च जाइ रहै छैइक , ओकरे दारे मोन सअखन बेथि लगै रहै अश्च, कउखन मोन चैन नश्च रहै अश्च ! अ कहु ओकर अस्सा कआया सबश्चन लोक सब संऽ गाअ - गलौज मारा - अटी केनहे अबै अश्च ! जयि - ियि सऽ उपराग सब अबै रहै अश्च ,जेहो सब मूरी नश्च उठबै छल सेहो

सब दूटा बाँ - की कश्च कऽ चश्च जाइँ अश्च ! अ कश्च अछु
नश्च फूराइँ अश्च ?

अनी जूआ करौँ , कहा अन् सुनआए जे सरकार सगरे दार -
िरी बन करऽ जा रहल छैइक !

ि अ बन करँ इ फूआयाहा नेँि सब , सब फूआये बजैँ रहैँ
अश्च ! आर गामे - गामे एकर दोकान फोलने जा रहल छैइक आ
आहा कहैँ अयै जे बन करँ !

नइऽ यईऽ बञ्चनदाय सते कहैँ अयैन बन कऽ देँक , अआक िऽ
टीँ रेअयो कागि-समाचार सगरे कहैँ रहैँ छैइक ! खिन िऽ
अने सुअन भ जेँक हमरा सबहक ! भगिनि भल करौँक ओकरा
जे इ सब बन करीओँ ! (अ ि फेर हल्ला भेलय)

जाय अअ कआया फेर लगयैऽ अँ कऽ एलय अश्च !

फेर अयियहँ बञ्चन दाय - - - - - !

बीहआ की- आदथी

संयोग संऽ आय लाल कका भेट भऽ गेलाह ! ओ अपन मसीँ मऽ
बरबराइँ जाइँ छलथी ! हम पूछआएन अ हाल समाचार अश्च

कका ? ओ झूमै बजलाह बहु निीक , ूि अप्पन कहऽ ? हमहुं ठीक छी , मूदा अहाक मुंह संऽ दूगंघि कथीक आकलैि अछ ? दार - िरी नञ्च िऽ- - - - - ? हमर आदथी सऽ ूि िऽ पञ्चआि छऽ खिन एना अकचाइि अआक छऽ ? बूझले छऽ जे जािि हम एक घोट दऽ नञ्च दइि अयैक ििि किकान दूर कहा होइि अछ ! नञ्च हमरा िऽ भेल जे सरकार दार - िरी बन कऽ देलकइ िऽ - - - - - ?

िऽ अ लोक अप्पन आदथी सँऽ बाज आथी गेल हेथि सैह ने ? हउ एथि टाका छऽ िऽ बुझऽ जे अन्ह बला आका छऽ ि ! एथि पाय'क बले अ नञ्च भेटैि छैइक ? मात पाय रहल िअ फेर जे किबह से िरा हाि मऽ ! सरकार डैढै - डैढै िऽ भषाचारी सब पाि - पाि चलैि छैइक ! हम :- एकर मलिि जे दार - िरी भेटिअ छैइक ? नञ्च ओना नञ्च भेटैि छैइक , जेना पञ्चने डेग - डेग पर भेटैि छलैक ! परंच जकरा बूझल छैइक किरा लेल कमी नञ्च छैक दू पाय ससि की महग ! जाय दैह दोरा सने बक - बक के करि कञ्च बरबडाइ अदा भेलाह !

बीहआ कऱि- भोट

लाल कका केर देख्यैन जे ,जेसब भोट मागय लेल आबआ सब कैऽ भोट देकि आशासन दय थिदा करैि ! जे आआ सब कैऽ कहथीन जे अनी जूआ कर हम अहाक भोट देबे करब दोसर कै अयैक ि नञ्च अयैक ? आ अहा सब बुझाि अयैक जे हम कञ्चयो फूआ नञ्च

बजलहु !

हुनक इ बाँ सुआ हमरा नञ्च रञ्च भेल हम पूञ्च बैसञ्चाएन ऐँ यउ कका अहा फूञ्च नञ्च िऽ ञ्क सबटा सते बजैँ छी ?

ि ञ्क हम फूञ्च बजैँ छी से िञ्च कहऽ जे आइ िञ्च ञ्क फूञ्च बजलहुँ ? हम कहञ्चाएन जे जकि मुञ्चया - सरपंच भोट मगकि हेँ अबैँ अञ्च सबकैँऽ कञ्च दइँ ञ्चयैँक जे अहाक भोट देबे करब खिन फेर - - - - ?

खिन फेर ञ्क - - ? इ नञ्च ने कहैँ ञ्चयैँक जे अहाक छोञ्च दोसर कै नञ्च देबैँक !

परंच कका - - - ? परंच ञ्क ? इहय ने जे ूँ सोचैँ हेबह जे सब के कोना भोट द देबैँक सैह ने ? हउ जखन टप्पे मारकि छैँइक खिन जेहने एक ठाम मारने हिने सब ठाम मारने ! कोनो भीड़क काज ि नञ्च छइँक जे ञ्ककि होयि ?

खिन िऽ सब भोट बोकसे भऽ जायि ! बोकस भऽ जाउ ि खोखस भय जाउ परंच हमर बाँ झूठ नञ्च ने होयि ? आओर एकटा बाँ जे सब िऽ मूखथ गारि ठाढ़ भेल छैँइक जकरा सी आखरक जाण नञ्च छैँइक से जनकि पञ्चिआँचि बनि आ हम ओकरा भोट दय पापक भागी नञ्च बनब हउ? िय सबकैँऽ देबय आ भेटयि ककरहु नञ्च !

हि कका अहा कमाल आ अहाक सोचो कमाल !

बीहश्च कऱि- इलेक्सन

लाल कका आओर लाल काकी दूनू गोटेक हल्ला सुश्च हमहु हुनक आंगन पक्षिषि केलहु ! हम कहश्चएन कका आय शिश्च काकी कैऽ मिसायल नश्च देखने रश्चयैन आय श्च बाँ छैक जे काकी अहा पर अश्चनच - गियुश भेल छश्चि ?

गिगि लाल काकी बाश्च उठश्च ऐं यउ बउआ श्च कश्च जहा श्च इलेक्सन नजश्चक आओँ श्च श्चनका भश्चश्चन दनान पर चाहे (चाय) चाश्च ! चीनी आ चाहक पाकि कोनो उदमे नश्च , खिन अश्चं कहु जे कयि संऽ इ सब पार लगि - - - ?

श्च लाल कका बमश्च उठला िऽ श्च हम दनान पर बैसल लोक सब कैऽ दनान पर सैऽ भगा श्चयौक श्च ? दनान छैइक ि लोक एबे करि आ बैसबे करि ! भगबैय लेल के कहैँ अश्च ? बैस ने होय छैइक लोक कैऽ जते काल शिश्च बैसि से परंच चायक चाह आशिश्चक छैइक श्च ?

हउ हमहु श्च अनका चाह श्चआबैँ छी ? सब िऽ मुखये - सरपंच आ आ ओकर लोक सब किरा ने श्चआबैँ छी हउ ! हमहुं हुसल

काज नञ्च करै छी पाच साल िऽ ओकरे सबहक बदौल छि खेपब
ञ्च कहि चाकरी करय लेल जायब से िञ्च कहऽ कने ?

ञ्च बाहर संऽ कोन ओञ्चदोरक आबाज एलय लालबाबू छी यउ ?

हं - हं हइआ !

जाउ -जाउ चाह ि जढ़ले अञ्च ने ? भञ्च ञ्चन इ सब अकच्छ कऽ
छोरि !

बीहञ्च कऱि- हेल्सो

लाल कका :- बमबम छऽ हउ बमबम - - - ? हं कका ञ्च भेल
? एम्हर आबह कने िरे संऽ काज छल ! आय हमरा संऽ अहाक
कोन काज भ गेल यउ ? जे ने कराबय इ िजाणीक यूग ! से ञ्च
भेल यउ कका ? हउ ञ्च कञ्चयऽ ? एञ्च बेर बेटा एगो हेल्सो द
गेल अञ्च िञ्च दारे सञ्चखन फञ्चसान भेल रहै छी ! ओ ि भने
मोबाइल दऽ गेलाह जे जखन मोन होय ि खिन बेटा - पुहि , सर
- सबं ि जकरा संऽ मोन होय ि किरा संऽ गप कऽ लेब एञ्च मे
फञ्चसान होयबाक कोन काज ?

हउ ञ्च कञ्चयऽ एञ्च हेल्सोक कारन संऽ िरा काकी संग झंझट भऽ
गेल ! से कोना झंझट भ गेल अहाक ि नञ्च कञ्चयो काकी संऽ

- - - ! अ कश्चयऽ िरा कहय बला गप्प रहय खिन ने कहबऽ ? आ नश्च कहबऽ ि ि बुझबहक कोना सेहो बाँ छैइक ! हं अन्नु कहने कोना बुझबैक कहबै खिने बुझबय ! हउ िरा जहा अ कहि हेल्सो लगबै छी की एकटा जनना बाजऽ लगै अश्च इ सुआ िहर काकी हमरा पर कुआँ भ जाइ छहऽ ! आ एक अन्न िऽ कश्च बैसल जे बुढारी मऽ घीढारी करबाक मोन होय अश्च ? नगिरी मऽ कश्चयो लाछन लगेबे नश्च केलक आ हेल्सो दारे बुढारी मऽ - - - ? हेल्सो संऽ नीक आटीए छल ककरहु अबय ि िहर काकी बूझबे नश्च करय पढ़ले नश्च होयक ! आब िही कहऽ जे अ कश्च एश्च हेल्सो कऽ ? हमरा ि मोन होय अश्च जे चूअ कऽ डबरा मऽ फेक अयै ! हँ - हँ एना जूअ कर ओ ि कममूटर बजै रहै छैइक ! ओह से गप्प िरा काकी कऽ के बुझेहि ? हमर गप्प सुनबाक लेल ियार नश्च छअ कने िही बुझा दहक नश्च ि एश्च हेल्सो क आय हम - - - - - !

बीहआ कऱि- नोन

चटबा पुर बाली एके सुरे गाश्च कऱि पढ़ने जाइ छलैक !

अ भेलय अआक एकि मिसायल छैइक आइ ई ? अ हैकि छौड़ाक हालि देखौक ने खिन फेन फूश्चयौक जे अआक मिसायल छैइक ? अ भेलय छौड़ा कऽ ? से देख ने होइ छैइक जे अ भेल हन से ! बाप रे बाप एना के मारलकय एकरा ? के मारकि अपने आरहि मारलकई कने खे मे बकड़ी हुआ गेलय यि लेल देखौक

ने केना दू-दाश्च कऽ फोश्च देने छैय ! छौड़ा कयि छलय जे बकड़ी खेि मे चश्च गेल रहैक ? कयि जेकि कने छौड़ा सब सने - सने खेलाय लगलश्च यि लऽ हमर नेना कऽ एना भऽ कऽ मारलकई नीक नश्च हेयि ओकरा ! अक एना बाजैि छैक इ , अयो दोसर मारलकई अपने अरहि कने डाश्च देलश्चन छौड़ा बदमासो बडड छय बदमासी केने हेयि आ जाउ मारनेहे हेथिन िऽ ओ नीके दारे ने मारने हेथिन ! ओ कखनहु बेजाय नश्च कऽ सकैि छथि हम हुनका नीक संऽ अन्हैि अयैन्ह !

इ मनसा कऽ अ भऽ गेलय से नश्च कश्च ? बेटा कऽ एना भऽ कऽ मारलकई इियो माश्चक'क बड़ाई कम नश्च होइि छैइक ! लगय एकरा नोन पढ़ा कऽ खुआ देने छैइक एकरा अरहिि !

बीहश्च कऱि- साढ़े बाइस

ििरि बाबूक ओयि बाह ण भोजन होइि छलैक आ भोजक पािि मे लाल कका घूमैि छलाह अ एक गोटे पूछलकैन लाल बाबू , खोखाय बाबू केना अ भोज - भाि कैलथि अथि ?

लाल कका बजलथि खोखाय बाबू साढ़े बाइस केलथि ! ओ कश्चि लाल ककाक मूहे देखैि रश्च गेल छल !

ओना हमहु बाि नश्च बुश्च सकल रश्च ! अ ओ पूणः बाश्च उठल आ ििरि बाबू कऱि नोनि छथि ?

इहो हमरा असाबे साढ़े बाइसे केलथी अशु ! बेचारे ओ ि चूप
परंच पाणि मे बैसल लोक सब लाल कका'क मूँह बकर - बकर
किँ रशु गेल छल जे लाल बाबू इ अ बजलाह ?

हम सेहो भोज खयला'क उपराि साढ़े बाइस'क बारे मे सोचै छलहु
जे साढ़े बाइस मे अ होइ छैइक ? ओन साढ़े बाइसक मलिब
ि नशु मे बुझै छल ! मूदा िरि बाबू ि भोज केलथी आ सब
बैशु खेबो केलहुं खिन ि एकर मलि नशु मे नय लगा सकै
छी ! परंच इ कोन साढ़े बाइस कहलथी से नशु कशु ?

पाि भेने लाल कका कैऽ बाट बहारै देखअएन हमहु अपन मोनक
आरि बशुआइ बाि हुनका सऽ पूशु बैसलहुं ऐ यउ लाल कका
साढ़े बाइसक मलिब अ होइ छैइक ? लाल कका कोन साढ़े
बाइस मलिब अ कहै छऽ कने फअछा कऽ कहऽ ने हउ ?

हयउ राथी मे भोज बला साढ़े बाइसक अहा जे कहने रअए किये
मलिब नशु बुशु सकलहुं ? ओऽऽऽ हउ अपन टोल कैऽ नाम
पैलीस घर अयैक अ नशु से कहऽ ? हम हं से ि पैलीस
घर अयैके मूदा इ साढ़े बाइसक अ भेलय से पूछलहुं अशु ? लाल
कका हउऽ हिं महा बूशु लोक छऽ ! पैलीक आि अ होइ
छैइक से कहऽ ? पैलीसक आि ि साढ़े बाइसे होइ छैइ मूदा
- - - -? मदा अ ? दूहु गोटे आि - आि टोल लऽ कऽ भोज
केने रहथी ! आबो बुझलहक अ नशु साढ़े बाइस ? आ नय
बुझलहक ि कशुयो नशु हुझबहक ! हम हं - हं कका बुशु गेअ

સાઢે બાઙસ ! નિમ્ છી અહા આ નિમ્ અહાક સોચ !

બીહઆ કાિ- મોહન ભોગ

આય ચાશ્વ - પાચટા લંગોશ્વયા સંગી સબ ભોરશ્વ - ભોર હમરા ઘર પર પહુંચલ ! ઓશ્વ મે દૂ - િનટા પરદેશી શ્વત્તી - બમ્મઈ મે રહઆહાર સબ છલ જે ગમી છૂટી મે ગામ આયલ છલ ! હડ બાબૂ આશ્વિ દેશ્વ હિન ને અનઘોલ મચેલક સે જૂઆ પૂછુ !

હરડ દોષ ઘર સંડ આકલ ને રડ , દેશ્વ હમ સબ બાહર સંડ ઇલહુ અશ્વ ડિ ઇકરા ઁજ કરય લેલ આશ્વ ગેલહું આ ઇકરા ઘર સંડ આકલલ પાર નશ્વ લગૈ ઇઁક ? જઁન ઁઆહ નશ્વ મેલય યિ પર , ઁઆહ મડ જેયિ ડિ લગય અશ્વ દશમો ઇકર દૂલમિ મડ જાયિ આરો શ્વદશ્વકહા દશ્વ સબ - - - - - !

હમહુ અકચ્છ મડ ઘર સંડ આકલલહુ ! શ્વ બાિ શ્વયૈ રડ િ સબ ઇના શ્વઆ અનેરો ગરદમગોલ મચેને છંડ રડ ?

હરડ શ્વ કશ્વયડ કહશ્વઆ જે ગામ ઇલહું અશ્વ ડિ ગાછી - શ્વછીક મજા સેહો લેલિક ચાશ્વ આ જહને ગાછી શ્વસ જાયબ ડિ િહર ઓ શ્વઠકા મોહન ભોગ કોના શ્વસશ્વ સકૈ છી ? જે િરા શ્વનુ ગેનશ્વ ભોગ નશ્વ હોયિ !

हम :- अच्छ गिय हमरा संग करय लेल ऐलऽ नय िऽ नञ्च अञ्चयि सैह ने ?

नय रउ एहन कोनो बाणि नञ्च छञ्च गिरा हम सब अञ्चय सकै ि
अञ्चयउ अ से कह ?

से िऽ हम बुझै ि अञ्चै जे ि सब अ कऽ सकै छैऽ ? हम
कटहरक गाछ पर आ ि सब कटहरक आंठी टा अञ्चय मे छोड़ने
छलैय , सक रञ्चउ ि ओहो ि सब नञ्च छोड़ैह !

इ बाणि एखन कि गिरा मोने छउ ? हाऽऽऽऽ हाऽऽऽऽ सब गोटे खूब
हँसलक

अच्छऽ सून एकटा दू हत्ती झटहा लऽ ले खिन चञ्चहै नञ्च िऽ -
- - - - बुझै छञ्च अ खेबैऽ से !

लऽ लेखैए ि सब किर अंणि अआक करै छै गिरा सब आम
खेबा सऽ मलिब छउ अ गाछ - - - - - ?

हरउ बुझायउ आब चलबो कर !

(सब गोटे अदा भेलहुं जकरे गाछ भेटय ओञ्च पर झटबाञ्च शुर !
बानर जका अछु खाइ अछु फेकै गेलहु ! आ अपना गाछी पहुँचै

बुझु जे मोहन भोग के झटहाक माथ माथ कऽ सहन भोग बना दइ गेलय)

बीहआ कऱि- जड़ै आमनी छाप

लाल कका दनान पर खैनी चूनबै बैसल छलथि आ एकटा कुठि -
पैजामा बला यूकि जकरा पाछू - पाछू करीब दस - पंरह टा नऱि -
यूकि छौड़ा सब सेहो छलैक ओ आथ कऽ लाल कका कैऽ पणाम
करै छैन्ह ! पञ्चने िऽ लाल कका कने हरबरा जाइ छथि मूदा
मूह संऽ आकलै छैन्ह नीके रहऽ !

लाल कका एखन नीके रहय बला आआघिदक कुनो औआत्त नञ्च
अञ्च कुठि - पैजामा बला बाजल !

शुभ पर लाल कका हउ बाबू खिन आ कञ्चयऽ हम िऽ सब कैऽ
सैह कहै आयैक जे नीक (ससि) रहऽ, लोक कऽ आओर आ
चाञ्च परंच ूि िऽ अजबे लोक बुझायि छऽ ?

पाछू संऽ एकटा छौड़ा बाजल अनका अजिय शी कऽ आआघिद अयोन
कका !

आ लाल कका बाथ उठला हमरा पञ्चनञ्च बुझाइ छलय जे एञ्च
मूसटंडा छौड़ा सब संगे कहि माथ करकि लेल जाइ छऽ परंच

मोन मे भेल जे कश्चं से बाँ पूछबऽ िऽ िरा खराप ने लाथ जाउ
 िश्च हेँ नश्च पूछश्चऽ !

कृि - पैजामा बला एश्च बेर हाँ जोश्च श्रिनमँि पूँकि बाजल अहाक
 बाँ श्रयो बेजाय नश्च लैइँि अश्च िऽ हम कोना बेजाय मानब से
 कहु ?

हं सेहो िऽ ठीके कहँि छऽ हम कखन श्र बजैँि छी से अपनहु
 नश्च बैझैँि श्रयैँि खिन लोकक कोन कँि !

परंच लाल कका अहा जे सोचलहु से हम नश्च श्र ! हम एश्च बेरक
 चूनाँि मेऽ सरपंचक पदक ओश्चदँिर छी !

जेना लाल कका कैऽ अपसोस भेल हो श्रिना भऽ कऽ बजला ओह
 िरा पश्चनश्च ने से बाँ बजकि चाश्च छलहऽ ने हउ ? देखहक
 हम िऽ िरा श्रन्हँि नश्च केश्रयऽ !

श्र ओर पूणः बाजल कका हम गूरकुनक बेटा छी आ हमर बाबाक
 नाम भूटकुन छलैन्ह आऔर हमर नाम छरपन भेल ! छऽ लम्बर पर
 हमर चूनाँि श्रन्ह जड़ैँि श्रमनी छाप अश्च ! आब अपन आश्चायिद
 श्रऔक कका !

लाल कका अश्च बेर बेस सम्हश्च कऽ बजलाह हउ हम िऽ पश्चनश्च
 कश्च देने श्रयह जे नीके रहऽ ! हउ नीके रहबऽ खिन ने मेहनँि

करबऽ आ बुझै छहक जे मेहनतीक फर अठ होइ छैइक से िऽ
 िहु बुझए गेल हेबहक अनु नीक रहने अछु संभनि नञ्छ छैय खिन
 जा खूब मेहनति करऽ ! नीके कऽ इहो मलिब भेल जे ओहो मे नीके
 रहबऽ अ बूझलक !

जे आज्ञा कका कञ्च फेर एक बेर पणाम कऽ ओ अदा भेल !

ओकरा गेलाक बाद लाल कका बाजऽ लगलाह देख्यउ गूंडे सब
 सरपंच बनीक लेल ियार अञ्च ! निह हमर पजाति !!

बीहआ क- नोटक भोट

सूकन के चाश्च - पाच गोटे सँऽ माश्च रहल छलैक ! मूका - हा
 लाि - जूि जेना ओकरा उपर बरश्च रहल छलैक !

झरे - झरे आरो लोक सबहक जूटान ओश्च अ्स भऽ रहल छलैक
 परंच ओयि पहुचलोक बाद अ्यो अछु बाजैि नञ्छ छलैक ! सब
 अपन मूकदशक बश्च ओश्च दृश्यक आनंद उठबैि छल !

ि हमहु ओयि पहुंचलहु परंच हमहु ओ दृश्य देख्च के अं कयि
 झमूढ भऽ गेलहुं !

देखि छी सोमन आ सोमनक समकि सब इ कञ्च मारैि छलैक जे

- - सार ि जे भोट देऽक बदला नोट लेने छलश्च किर अ भेलहु ?

आ सूकन बजै छल जे हम अहाक भोट अ देलहु !

परंच सोमनक आदमी सब मानय लेल ियार नश्च जा ि सब हमरा भोट देलह ि हम हाश्च कोना गेलहु रउ ? सार फूश्चयो कऽ पाय ठकनाय अइये आकाश्च दैइ ि अयहु - - - - -

हम ि इहय सोचै रश्च गेलहु जे दोष ककर ? माश्च खेनहार केऽ अ मारनाहार केऽ पाय देनहार केऽ अ लेनहार केऽ ?

बीहश्च कऱि- हकार

रखिरी िली'क अंगना मे हकार पूरय िली सबहक रिश्च लागल छय टोल - पारक अिया - पू ि संऽ ल'क बुश्चया अि बेरा -बेरी बरसाइ'क बदाम लेबऽ लेल आबय -जाइ छैइक !

रखिरी िली'क पुहि सबके आगह संऽ बैसाय कऽ मा ि मऽ लि अन्नूर दऽ आदरक संग बदाम दय अिदाह करै छलैक !

मूदा एहन उदार भा ि अपन पुहि केऽ देख्ख रखिली िली कैऽ गह नश्च भऽ रहल छैइक अरि - अरि पुहि पर कन्हुओय रहल छल

परंच करि अक एक अतगण आंगन मे बैसल छय किरि दारे टा
चूप भेल अछ नछ ि - - - - - !

मूदा संयोग देख्यो मौका भेष्टए गेलछ - -

बघाि िली यऽइ कआया हम िन गोटे छी िनू गोटे'क अस्सा बेन
हमरा दऽ अऽ - - - रखिरी िली'क पुहु अपन साउस अस
किऽ लगअ जे अ कअ अ िबि अिअया िली बाअ उठलअन
कने लबाइये कऽ अयहु ने अहाक भगिन कोन बसूक कमी देने
छथि जे साउक मुह किँ छी ? साउस ि अहाक आय अि टोल
पार मे ककरो खोअयो के बेन नछ देने हेँ िहिन कृपन छथि !
हउ अयउनु देखय अयअ बुक्यी दाय'क रि सेहो सूनय छी कहादअ
इनअयर छथिन आ भारो - दउर ि खूब नीक जका आयल छल
खिनो अहा से - - - - - ?

एबिअ बाि सुनै देरी रखिरी िली अअश - ियूश भऽ गेली
भगिन देने छथिन ि अ सबटा लूटा देखि अ ? इ सब हमरा
पुहु कैऽ अखा - पढ़ा कऽ खराब करय जाय - जाइ छथि इ
हमरा नीक नछ लगै अछ से बुअ लय जइयो !

अ अिअया बाली सेहो िउ मे अबै अंयऽइ अहा अंगना अ अयो
अन बजौने आयल अ ? अहाक अंगना अयो ूको फेकय लऽ नछ
आयि लोक ! हऽ य चलय - चल ,आ सब अदा भऽ गेल ! नछ
देकि छलअ ि हकारे नछ अि लोक कूकूर छय अ -- - ?

पेम बीहआ कऱि- आनेह

गऱइ िरा सब कैऱ एखन शि िरार नश्च भऱ भेलहु ? सब रिसाइ
पूजआहाथ जाइि गेलय बड़क गाछ रि जगहो नश्च भेटहि सब
पश्चने जगह छेक लेहि लालकाकी बाथ उठआ !

रानी ि खिन सऱ घर मऱ आ करैि छश्च गऱइ एखन शि िहर
शीगार पूणयनश्च भलहु अश्च !

हँ काकी हइया हमरा भऱ गेल - - आब कने भउजी कऱ सेहो ने -
- - - !

ि दुनू ननश्च - भाउज भोरश्च संऱ ओश्चयौन मऱ लागल छंऱ आ पहर
श्चन आलि जाइि छश्च आ िरा सब केऱ सजब - संबरब कऱ अंि
नश्च लइि छउ ?

आ हम सब अछु ओश्चयौन कऱ केऱ िरा सब कैऱ कऱ सूनबय
दारे एक पहर संऱ बैसल छी आ िहर सबहक आला ि कहले ने
जाय ?

अ घर संऱ भउजी'क मध्यम सरि बहरेलआ आब अ सब श्चन
श्चनके सब कैऱ समय रहिआ अ ? एखनो शि कका'क आनेह
मानल नश्च जाइि छैआ सब संऱ पश्चने अयैआ आ आंनुअया आम
डाली मऱ ल'क िरार रहैि छथी ! (अ अश्च बाि पर भेलश्च

ठहका)

आ हमरा सब कैऽ - - - - ! हम सब ि एखन नहि छी नेह उअहि
छैइक ने ?

लालकाकी खिन नेअयाअि रहु नहु - नहु - - - -

पेम बीहअ कानि- उडाणि

मास्टर सेहाबक बेटा पढऽ - अखऽ मऽ बेस जिगर छलैइक !
ईस्फूलक पअक मऽ सअखन पमि अबै छल ! ओकरा कोनो दोस
- मअम सऽ बेसी मलिब नअ रहै छलैक ! ओना ईस्फूलक सब
छौड़ा - छौड़ी सब ओकरा संऽ बाणि करबाक लेल आरि रहै छलैक
, मूदा ओ ककरहु संऽ बेसी बाणि - अणि नअ करैइ छल ! ओ
अपन पठन - पाठनक काज सऽ बेसी मलिब रखै छल यणि ओअ
मे लागल रहै छल ! समय अणि गेलय आ ईस्फूलक पढौई समारि
कऽ ओ आब कॉलेज जेऽ जोग भऽ गेल छल ! आ कॉलेज मऽ
नाउ सेहो अखौलक , ओकरअ संगे सुअणि बाबूक बअन सेहो
ओकरअ कॉलेज मऽ नाउ अखेलकइ ! बणि अ जे दूनू ईस्फूले सऽ
संगे पढै छलय ! छौड़ी केर कॉलेज मऽ नाउ अखेकि घर सऽ
मनाअ भेटल छलअ मूदा अद केला उतर ओकर नाउ अखेलअ !
शायद छौड़ी कैऽ ईस्फूले कऽ समय मास्टरक बेटा सऽ अनेह भऽ
गेल छलअ ! दूनू कॉलेज जाय लागल कने अनक बाद दूनू के गप
- शप सेहो खूब नीक जका होमऽ लगलअ ! दूनूटा बाट - घाट

सेहो बाँ - आँ करऽ लगलैक आँक भय कऽ ! ने जाआ दूनु मे एहन बदलाँ एका - एक कोना आँ गेलय , भ सकय कॉलेजक पभाँ हो अँि स्नेहक पभाँ हो ! जे होई दूनु टा आब बेस उड़ाँ भ गेल छल ! परंच गंउआ - घरआ कैऽ एना भऽ दूनुक मखरनाई अंसोहाँ जका लगैइँ छलैक !

होइँ - होइँ एक अँन बाँ सुआँ बाबूक कान मे सेहो परलइँक जे अहाक बअँन आ मास्टरक बेटा - - - - - !

फेर अँ छलअँ सुआँ बाबू ओकरा दूनु पर नजअँ राखऽ लगलाह संयोग सऽ एक अँन दूनु कऽ कॉलेजक पाछू ठाकूरबारीक मंअँरक आंगन मऽ लगाओल फूलक बगान मऽ दूहु केर बैसल अपना आँअँ सऽ देख लईँ छअँन ! आ ओयि सऽ अपन बअँन कऽ पकअँ गाड़ी मऽ बैसाऽ घर आआ लैइँ छअँन !

खिर बाद पाँ भेने संउसे गाम मऽ अनघोल मचल छलअँ जे सुआँ बाबूक बअँन फंसअँ लागा मअँ गेलय ! आ मास्टरक बेटा सेहो लापाँ छैइँक ! मूदा चरबाह - हरबाहक अँआ पूँ हल्ला करैइँ एलय जे माहटर सेहैऽबक बेटा कमला काँ मऽ मूइल परल छैइँक ! लोक सब दउरल नदी काँ - - ! देखयो एकर सास चअँआँ छअँ - - - ! छौड़ अँ िऽ गेलअँ मुदा सनकल सन भ गेलय ! आब िऽ ओ छौड़ा एकदम आँछट बहिह जंका करैँ रहैँ छैइँक ! अँअँआँ रहैँ छैइँक बरबराइँ रहैँ छैइँक !

पेम बीहआ कऱि- जूडाएब

रशेश बाबू सूले रहथी अक् शीमथी जी िसी पाआ हाि मऽ लय
रशेश बाबूक माि पर दइि हाि फेरैइि ! उटू ने - - ! देख्यो
सूयभगनि कोना सोलहो कला लय उगल छथी ! आड़ै - चूरमूनी
सब कोना चहअ रहल अअ ? सिाि सेहो ककि सोहनगर बअ
रहल छैइक ! उटू उटूSSSSS !

रशेश बाबू आँअ खोलइि देरी आय माय मोन पअ गेल ! नेना रअ
खिन जूअ - आलिक अन बेस अअना ओहो कहैि उठबैि छल !
ओह ओ अन सब कयि चअ गेलय आ ओ पाआ थिहार सब से
नअ कअ ?

परंच आय अहाक हमरा उठैिक इ नऱि ढंग कयि सऽ पापी भेल
? जे हम आंरा संऽ आि िरा मे नेनपनक बीच चअ गेलहु ! हमर
माय ने िऽ फोन पर कहलक ?

हे भगनि आय जूअ आलि अयैक से अहाक नअ बूझल अअ अ
? पअ माि पर हाि फेरैइि कहलकआ !

ओह सैह देख्यौक एअ शहरक भग - दौड़ मऽ अपन पाआ -
थिहार सेहो मोन नअ राअ पाँि छी ! परंच इ कहु जे अहाक
बासी पाआ सूले मऽ माि पर दैिक खाल कोना आयल ?

पश्चा :- आय अने सैह श्रीकैक जकरा संऽ लोक कैऽ आस रहै
 छैइक लोक अजूका अने ओकरा जूरबैइ छैइक ! जेना गाम मंऽ
 माय, अश्विन, मंइया आरो - आरो लोक सब आजूक अने श्रीया -
 पूं कैऽ मां पर पाश्चा दय जूरायल रहिक आश्चादि दइ रहलैक
 अश्च ! अकाल ि भक्षि मऽ ओश्च श्रीया - पूं संऽ समाज कै
 अछु आस रहै छैइक यै ! गाछ - पां केर लोक पाश्चा दय
 जूड़बै छैइक जे लोक कैऽ भारी आस लागल रहै छैइक गाछ -
 पां संऽ ! परंच हमर ि सगर अनगी अश्च पर चलैइ अश्च !
 हम अहाक जूरायल रहिक पां नश्च करब ि ककर करब ?
 इ कश्च दूनू गोटे पूणयशां भय अछु सोचय लगलाह !

पेम बीहश्चा कं- पंचै

पणं सब अने ओकर आगू - पाछू करैइ रहै छल ! यं ओकरा
 पर नजश्च राखल करैइ छल ! शायद पणं कैऽ ओकरा संऽ स्नेह
 भ गेल रहैक !

परंच पणं कैऽ ओकरा संऽ इ गप्प कहै डर लगै छलैक ! एं
 - र मे चाश्च साल बीश्च गेल मुदा आय शि पणं सऽ ओकरा कहल
 नश्च भेलय !

एक अने कोना ने कोना पणं के हमरा संऽ बां - अं होइ -२
 अंतं भय गेलय आ ओ हमरा ओयि बेसी काल आबय लागल !

ओ छौड़ी सेहो बेसी काल एमहर घूँसया - फूसया कऽ आबऽ लगलसु !

हमरा एखन शि एसु बाकि भनक कि नसु लागल ! सु संयोग
सऽ एक सुन पणि हमरा सऽ सब बृणि कहै कहै असु जे हमरा
ओकरा सऽ स्नेह भ गेल असु !

हम पूछसुए जे सु ओहो अहा स स्नेह करै असु सु ?

पणि बाजल से हम एखन शि नसु बुझ सकलहु असु ! से कने
असु पूछुयैक सुआक ि आहा संऽ ओकरा गप्प होइ छैक !

हम बेस कसु ! एक सुन छौड़ी कऽ इ बाि पूछै सुयैक ि ओ
हं मे मूरी सुला चसु दैइ असु ! हम बुझ गेसुए जे दूनु एक
दोसर सऽ सुनेह करै असु ! आ इ सुनेह एक भगाह नसु छैइक !

फेर सु छय दूनु टा बाि करय लगै असु !

सु एक सुन गाम मे हल्ला हल्ला भेलसु जे फल्लामा बेटा आ
फल्लामा बेटा भागी गेलय !

आ सगरो इहय पचार होमऽ लगलसु जे छौड़ा "बमबम" केर दोष
छलसु ओकरसु लग बेसी काल रहै छलसु इ ओकरसु कारनामा
हैक ! फेर सु छलैक दूनु पक्क गाथायन हमरसु उपर पंचै

बैसेलक ! आ गामक पंचक आणय िऽ अहा सब बूझै हैबैक ! जे
मूह देख मूंगी !

आय हम फसल छी दोसरक आनेहक जाल मे - - - - -

निशगार निने

बीहश्वा कणि- जराना

लड़की खैरि - खैरि बाचकल रि पुक्क लड़का के थ पड़ा देलकै
।

लड़की उटिक आ पुक्क पुछलकैक

-- कनका कए थ पड़ेकएक ?

-- अहाक दुपटा बखचलक रि !

-- ओ नक्, हरि खुद के चपलरे फमि गेल छल ।

-- अच्छा ?

-- अच्छा क ? एक् भाग - दौड़क कनगीरे पुरख रि स्ती नक्
भेटैछ ! स्ती खुद परिशान छक्थ जे पुरख भेटय ?

बीहश्वा कणि- नफासी

फरजाना के सड़कपर चलै देश्च नगमा के आँश्च चोश्चया

गेलैक । झटक् क' बढश्च आ पुछलकै

-- की बा रि छै ? आइ चान रोड पर बुलै रि अश्च !

-- बुझल नश्च छौ, इंखाब के लाक द' देश्चयै ने ?

-- ि ओ कार ककरा पल्लामे गेलै ?

-- हमरा पल्लामे !

-- फरजाना, एक बाँ कश्चयौ - िरो बडड नफासी छलौ ।

-- अरे ! साला ओ आदमी छल ? कह भला ! छह महीना पर चाश्च
श्चनक हाजरी ?

-- चल ! आब ि खुल्ला राज छै ?

-- हँ ! देखही, ऋस्मि किं ल' जाइए !

नगमा के फरजानाक बाजब भान करौलकैक - नफासीक दायरा
सीश्चि होइ छैक ।

बीहक कथा- आगि के ?

-- ि भक्यागि जका कए ककआइ छे ?

-- आइ छ डबौ नइ !

-- आ, आ ने ि ? पकड़ ने ि ! आगि खल, भि कि ! आ ? आ ?

देखहक हउ लक भ ! उन्टे भागल जाइ छै । आ ने ि ?

छेछड़पनक अि आब भ'हिल छैक ।

छौड़ी - रौगी िखब पुरखक बुता ॐ बाहकि बाि ! इ बाकि जान
स्तीरे प़खगि भेलैक अक्ख !

बीहक कथा- पैबी

क्कया क्कि भ केओ लखना बाबा के िरानै छइ । लाखरे
भति छक्क । लखन बाबा गुर क्काक ेह दै छक्कन्ह ।

हाजी दागिरे लगाओल । गक्कि न भीड़ । चार्व िटि लगलै भीड़
उ रै । लखन बाबा चेला ॐ पुछलक्क -

-- ओ के ?

-- गुर क्काक लेल आि छक्क ।

-- पठाबह !

गिार कयलाक बाद नक्खे क्कगी कण प ठाढ़ हि क्क लखना बाबा
हुडकलाह -

-- . झ ॐ ठाि हि ?

-- अहा ि नइ छी !

-- ि की छी ?

-- कथा िचक !

-- े क ना ?

-- ि हुडकै नक्क छक्क !

-- आइ ॐ हरि उत्तर्विकाि अहा !

-- इ भि नक्क ।

-- खिन ?

-- रीकडया के . झा कार जे अहा ि नव्ह छी !

बाबा आ न ि " . नाक र टका चेन ककाक पकबै बजलाह

- बच्चा, जानी छह! पखि छह !!

बीहक कथा- खल्ला

कछला रडमि फल हिलैक । पछावि बकलदान ह । छागकि
स्मान पखवि " की अनने छल ।

पछिजि रति चाणि मिमि कयलाह । छागकि देह भुलकलैक ।
कैया हलि - खुश । ि रे छागि नागवि झाड़ने छल आ कैयाक
आँखरे कछु गवड़ गेलै ।

-- भाई ! खल्ला । जब्बाहि हकियाइ बाजल ।

भीरा ई बा ि " ठाढ़ भ' गेल आ पछिजि के आदेश दै बाजल
" छागि के सीति क' द्यौ !

-- कए यौ ?

-- रनुख छव आन जीकि बि बडड झझियाह अक ।

पछिजि भी ि डिे गेलाह ।

बीहक कथा- पेटक अँटक

चूडा-दहीक आडमि के बै कपाक क' चुकल छल । हाँ बाबू कए

कलबि कीहि - रुदा किा नक भेलक ि शक्ति भ' उठलाह ।
हाक देलकन

--रुआ दौगल आयल ।

--ाफ -ाफ बनि, डडि रानि छलै आ क नइ ?

--हाकर ! अइ हटलक द रर हरि कम्मा छै । डडि राबै ि
अफरि नइ जेबै !

--रलिब, हर फूव बजै छी ?

--` कहा कहै छी ! एक बे फेिँ अँटक लगा क' देखवैएक ?

--हरि पेट के उकटबे ?

--कस्टरि ि हरि भक भगनि छक ? भगनिँ ल क कहुँ
उकटा - पैची कयलक अक !

--ह काया छे ?

--ह व याि ि कस्टरि व खबै छै ! रुदा कस्टरि नइ जनै छै जे
द कि ईरान ओक पेटक अनु ि ि नक बदलै छै !

रुआ के गटा पकक ही बाबू बै . लक - कल छिटि चाही, अनबे ?

कए नइ ! रुआ के आब जा क' करग हलुक भेलै । दौगल रीज
बाला हना क ।

बीहक कथा- रि पे गी

ैया कना ..., यैा ले, यैा - बाक बन । फेि शुर हि यैा
भइल ... ।

--हे ि रचरआ ! चुप भेलै क उकयौ ?

- ि की भेलौ गे बुढ़या ?
- 'या राने बुझै छे ?
- हँ गइ ! ककया हेँ ि हरि कहँ 'या !
- ि ि कए अनलि कयने छे ?
- ि की बुझबी ? ओकँ ि कहै क्यै, गबै क्यै ।
- कलसजा ! लक की कहँ ?
- लक एकँ ि पे गी कहँ !
- भगलह क ? जूँ ग' !

हारि क' बुढ़या अपन हनाक केबाड़ कड़ा लेलक ।

बीहक कथा- रुदाय

वणियक बाला एलेतशनरे दुएटा नारक चचा हैक । क ि आ
इदी । रनुतखरे अकि . झरुआ नक देखल । ओना काक
भोट ख ओलि लक भ ! इँ थाक गेल हैक ।

नब्र नाथ आ र ह नाथ चललाह भोट ख 'ब' ।

- नब्र, ि ककि भोट देबहक ?
- भैया ! क ि ि नक जीँ हिल छैक !
- हरि 'ह लगैए !
- खिन ?
- ककेदाँओ बैव ए गेल छह । एक
- बेँ इदी बा के टाई कबिहक ?
- इच्छा ि हइए रुदा र न छ - पाच ?

-- ॰ कए ?

-- कसो छै ने !

-- अपन काज ककी ॰ उहि ?

-- ॰ ईदी बे ॰ । छठा वि गी पढ़ने अछ ! जीलि ॰ बाह
- बाह !

-- अहाक रिमकी कहैए ?

-- रिक्क चचमकेलह खिन ुनह :

गिणीक पाि कबि लेल बाट एखन वि फिलेन न्ह भेलैक अछ
। हि एकपेढ़या । रुदाय वमन छै रुदा बाट हि छै आ हि !

बीहक कथा- जिजा

अखि कबारे अबल अछ . नरा । अपन बँ कटी छैक । जखने
रन भेलै दूटा बा काट लाओि आ छेकर छेका शुर !

. नराक कती के ह न्ह भेलै जे कछु कहीक । बि बाजल

-- बा उपटेला फायदा हे ?

-- ॰ दि के टि क' द्यै ?

-- ॰ ठीके कयि छे, कछु - कछु दि काज कायल क'ि !

-- कन काज ?

-- व वफि अखि ॰ कप्परा केने हे ?

-- कछु न्ह फुगिरे !

-- अइरे ॰ एकटा बा का क' दही ?

-- कए ?

-- काव्म गिरनरी छै । जिज्ञा गडेँ ।

-- अच्छे ! हनुरानी झडि अनलहक ?

-- हरि हाथ खाली छौ ।

-- हरि मिं हिं हाल छह ।

-- मिं द्रि बा बेक्क दे ?

. नराक राथा ठनकलै । आब एक्क भँ काज नक्क चलि ।
बा उपक्क जायि ।

-- कका आब चलक्कयह बम्भई !

-- क्कछु देने जैँ ?

-- अक्कि बाला क्कप्प रा छु डने जाइ क्कयह ।

बीहक्क कथा- करि

प्रणि गिनटा आर नेने छल । उम पाचर चढ़ल छलै । दुएटा हाथ

- उबडुक्क भेल छल । पुछक्कएक -

-- एकटा आर देबह ?

-- अहुँ के नइ देब आ गिक्कयो के नक्क देबे !

-- क्कए ?

-- दुनु गटे हरि बाँ नक्क रानै छी ।

गि रे गिनी रिकक्क ।

-- एकटा हरि, एकटा बाबा के आ बाकी हिं !

-- छु क' देख ? दाँ नक्क कटक्कयौ मिं ?

- बाबा ! नइ देी ।
- जाय दही, खाय दही !
- थरह ने बाबा ? उपाय कौ छी !

गिनी आँगन गेक्क आ एक ल टा पाक्क नेने आयक्क । ल टाक पाक्क
 िकौ छक्क । प्गि पुछलकै

- ल टारे की छौ ?
- िहि कजि ।
- नइ गे अइ रे फेन छौ !
- करिा देने क्यै, शुद करिा ! करस करिा ।
- की कबिही ?
- उाि देह हि ने, रम्मी थूव देी ?
- अि बाबा छक्कन्ह !
- अच्छा रक िहि कहि शुद आ करस कौ क्यौ ।
- क ना ?

गिनी ल टारे हाथ क्कजा क्कजा ओक ि छाी प छै हिलै
 िवि, जावि दुनु आर नुका क' बाबा के देने हैक आ ल टा ओि
 देलकै ।

- हरि आर ?
- ि पलथी ि छौ !
- एकेटा ?
- कहि करस नइ भेलै ?
- अच्छे, एकटा आर बाब के क्यौह ?

गिनी बाबा क किलक आ आँख रटका देलकै ।

बीहक कथा- तिदिन

भैया ब्रकारिरे नं िं लेलक आ एक् लाथे भौजी ॐ भव पंख
बर्बियाल ही ।

-- नुन लगै छी !

-- न्निदि ! ओना रुहि कान ककन अकए ।

-- नक् औ, िं - कुरिरे !

-- ओ !

-- कबूला हिय क जे पचा क उपहि हयब िं िं िणि कबि ?

-- नइ अइ ! नुनबारे आयल अक् ककला जिज बनै ।

-- ओइ जिजरे अहीक िं उर्वियाए की ?

-- ककलाक पंशाक की हेँ ? गुनुरिरे छी ?

-- कए ?

-- नुर्विया के पक्किबा देखै नक् कए !

-- आप र पी भजन, पं र पी शृंगि !

-- िं अहा जीन कए ने पक्छी छी ?

-- ॐ आब हेँ ? आब ाकए रे कनगी कट जेँ ।

-- आब झरिरे एक ेट िं, कुरि, द्रपटा आ पाग खिबाक कस क
लगबै छी !

-- यैह पंशाक िषणा ककला जिज कंि ?

-- पंिि देखल जेँ िं कहु हरि बाि ने ाच भ' जाय !

-- दुर्विरे कए छी ?

-- कपेड रुक्मरतीप कं छै ने ?

भौजी फे िं कं िंपि टकटकी लगलक आ पुछलक :

- पव्हने ँ बे ि कम्फटमलगैि हयि ?
 -- हँ अय ! देह ` हल्लुक जका ।
 -- िह !
 -- लेक्कन एकटा अगुण छइ, अइ रे फाक छै ।
 -- ` ि पम्मि करारैरे ल क चारि फाक छै ।
 -- फाक बाटे रच्छि खूब खून कबैए ।
 -- पम्मिकि नार पि क्कछु ि तिदिन कर ?
 -- बे ! चाह कयाउ ।
 -- कए ने !
 -- इ पड़लै, आब तिदिन सिं हइि हिँ !

बीहक कथा- कयाद-पिप

पूनि झाक आँगन ट लरे भ ँ नरगि आ चौड़गि छैक रुदा बीचरे टाट लागल ।

पूनि बखिक बाद आइ टाट भि उजारि देने छलैक ि पूनि के कजि पु नक भेलैक । पिप हिक !

पूनि झा लगले पूनिटा खारि खुक । लेलक्क ि फेि पूनि झाक र न कव या गेलक - पुछलक्कन्ह

- ई की केलह ! आब कयादी पिप कर नक्क भेलह ?
 -- भेल खिनक्क ने टाट उजारि देक्कए !
 -- खिन ई खारि ?
 -- भैया ! कयादी पिप कर आ लूयक पिप के िज्जा लहाँ छै ।

-- एक खारिरे की कबिहक ?

-- काकाए िनटा आर गाछक बेना

द' आयल छलहुँ, आइ अनबै ।

पूनि झा अपन टीक . झबै रुसकै छलाह - टाट गिड़क िक
छल ।

(पयाणि क्कि)

बीहक कथा- काट

रिण नक रिण बाबू कह' पड़ि ! भैयाक ि क्काह । दाक
ुड़काहा । हर नक दीदी नार खिने छलै ।

-- कट्टि बाबू अहाक वीह ररक्या ने ?

-- हँ !

-- पाहुन ॐ यह चूक भेलक ।

ई नक पती िड़ाक पक्या पटकै बरकलीह - हे ि रिना !

ओना डारि पाि नक पकड़ । फक्छि क' बाज जे की खेबाक इच्छा
छै ।

हाट वंदा भेलहुँ ि पाछु लावा गेलाह रिणजी आ पती कहलक -
दही लइए लेबै आ कक दै छी - रिना के पाई - िई खचा नक
कबै ?

-- दीदी कक्या वि एँ यौ ?

-- ॐ कए ?

-- भटा बाँ ओकी कहबै ?

-- गिर गिर ! राछ भाँ खुआ, काट नक्क गीबी !

पती अपने हाथ ' अपने गाल थ्र कयौलक्क कए ?

बीहक कथा- कौँ हूँ - स्तीकली

आक्क ' रिल छलहुँ । रियायल शौँ । लाल काकी के हाक देक्कयक्क :

-- कौँ छी ?

-- कार कौँ हूँ !

ख ल अठबज्जौँ ! पखि ऑन कयल आ लुद द' बै । गेल । पखि जाँवि सपीड पकड़ैँ गि गिर 'खा क' बाउल भ' गेल हिय ।

-- कने . झ ' बाजब ि नइ हएँ ?

-- क ना हयँ ?

पुरखक कपडा खीचू हर, आयनि कर , हाट - बाजाँ, डातटि - बैद, न्गि - क्कहान, इस्फूल पहुँचिबी हर ।

ि पि आियल गेल ' ! आब अही बाजू ?

हरि बकजौँ लावा गेल । नक्क ि भाषा शुक्क कणि क' कलहुँ आ ने चाहक फरिइ कबिक क्कम्बि भेल ।

बीहक कथा- रि (?) इ

नै नीक हरि ननक । निन रा पूमियाह भेल छल हरि । हुनक
अबैया हिक - नक जुरलाह । अकथाइन र न ॐ नै के हाक
देखयकह :

-- कने एम्हि आएब ?

-- ुनै छी - बही नई छी !

-- दुनु भाय - बहन एके रि !

-- की भेल भाभी ?

-- आइ हरि ॐ अही !

-- आज्ञा ?

-- बाजा जिउ ने, कछु - कछु कनी लाउ ने ?

-- जेना ?

-- पखि ।

-- उषा आ क रूफान ?

-- अइ रे बा क हइ छै ?

-- क न बा क ?

-- हाथक ।

-- आगू बाजू ?

-- क नी बेनी, नील नक रिगाक पला, अगबिती कछु कछु फल फूल
आ कठाई ।

-- द्र हजा ककाल !

-- अनरन भायक आजि लागल ।

-- ठीक है एके हजा लाओ ।

-- अच्छे ! जायब क ना अय ?

-- हरणि पणि छ डू ने ! पाइ लाउ पाइ ?

अहा नहा . ना क' गिणि ियाहिब, हर लगले पयि एलौ आ नै ि
फुदी भ' गेक्ख ।

जखन पाइए नइ आप क' गिणि ि उठिथ च' गिणि । ओना नै ि भौजाई
के हाथ लिक्खए लैकि !

जेहने झरटगि िकि गाछ हिने स्त्रीगणक झुण्ड । रुदा ओइरे एक
भाग कबै ि कुराव' भ हे' । वियान गिुनै - बुनै !

नैन'ीक भौजाई गिगा ' ि गाछक अटूट बान्हक व'पैक्ख क'ि
छलीह ि अन्न के नै िपि नजव' पड़लक्ख -

अ'ि ! ई की ? अनजान छौड़ा के गिगा ' कए बन्है छक्खन्ह !

च' गिणि 'व' डि पणि अक्ख'ि नै ि भौजाई ' कहलकै -- पका दै छै
नइ ?

-- अहा की पकबै छलहुँ ?

-- अहुँ कुराव' रे एहने हयब ?

-- बे ि फड़फाउ नक्ख । ओ के छल ?

-- के अय !

-- ि ? इ'ि !

-- ि ! चलू ने अय ।

नै िक रूडी गोबि भौजाई के नीक लगलै ।

बीहक कथा- जानेरन

गिश रर विषि नागर्वकि हेँ काल अक्छ । अपन क्कदिनी देखाओ
असि - जेना निनहल राछ पि क्कलाइ पियल ह ।

लालकाकी व ि क्क ायल । क्कछक्छ गेल हिक्ख । चक्की ल्कि गेलक
।

फ्लास्टि उपनि लालकका उठा अनने हिक्खन लालकाकी के ।
एक वाला पाक दैँ पूछलक्खन्ह - क ना भेल ?

लालकाकी क्कछु बक्कथि रुदा क ना पड़ल हिँहि कि गि बै ।
हिल छलीह ।

गि रे लालकका के ज़ि भिभायल हँी छुटलक्ख ।

ले बलैया ! लालकाकी निना ने हड़बड़ेलीह जे अपने गि बैव गेलक
।

क । छ डैँ बजलीह - ि जाउ !

बीहक कथा- आशीदि

बुढ़बा के बुढ़या हबका कटने हैक ।

इक्क रय आ पुँहि ि ि रजिल ँ हेँ उर्वि गेल छलैक ।
दुनु बेकौ गुम्मा आ अ रजि रे हिक्ख ।

भँि बुढ़ उठलाह । स्नान उपनि लटारे जल भर्वि ठाढ़ छलाह ।

- कए नक् ! रुदा अहा आइ उदा छी ।
 -- एक् उमरे हँ हरि लेल उपहा !
 -- ` क ना ?
 -- ल क कहि - बुढ़बा बहि भ' गेलैए ।
 -- भ नक् कहि ?
 -- हँ, पती छ वड - भ !
 -- ते ?
 -- काणि हुनक बाध्मि छक् ।
 -- रुदा हँ 'ि 'ि जर 'ि हएब ?
 -- हँ ! हर हुनका देख आ ओ हरि ।

बीहक कथा- कानि न

- गिंनटा वसड कॉल - भ'ि भ'ि ।
 देखलहु 'ि कानि न रहगिज ।
 -- हेल्स ?
 -- हँ हँ, हर कानि न !
 -- उनाबह, वटकट कनफमडमनक् भेलह क ?
 -- कटिका ?
 -- बैकुण्ठिरक !
 -- वखल्सी नक् उड़ ?
 -- हर खुद कानि न छी !
 -- रजाक नक् कहि । छूहि कहूँ ई भ . चए !
 -- 'ि भक अखन चल'ि छह !

-- हि दुबकब लकक खुी !

-- 'हँ ! भेटाटि भ' जायि, अक्यौ ?

-- भगलह की ! थम्ह, हरही अबैय क्यौ।

-- बे आ !

बाटपि ठाढ़ ककि न राथ पहिक गिर काछै बाजल -- रीगि, लक
हक्यायि भेल जाइ अक । टि टि एडि टिक जान भेलैक आ
हरगि गि बै । देलक ।

बीहक कथा- हगि बाली

इ गि गि बे छलै । कागि टाटप रेगि । लटकल । गुरकी हिने
। आ कक कजल का चरकलै, कड़कलै - उनका कतौ खल है
असि !

करलाक वान टुटलकह । हकयलीह आ अगीठीर डलै देह लैकह
-- चली आब दीदी ' भेट की ! बड़बडाइ विदा भेलीह ।

दीदीक चौकक नारगि कशी अतचकेलीह :

-- गे ! आब थीहि हेबे ' नक ?

-- कए ?

-- आब हि जुआनी छै ?

-- जबि कन बाचल छै, उरक' दे ने गे !

-- जे जे रन हइ छै क'गि !

-- रुहि नइ गिकय ! खेलै - कूदै गि फेगि गि शणिरे हि क्यौ।

-- बेी हरगि पवयि नक ?

-- अपने जेना बड़ जजन ?

-- कि की !

-- पूछा क्यौक ?

-- कककि ?

-- गिजकरल , हि बाली ? ककि नार क्यौ, बगि ?

'हूँ ! कशी सबि छलीह करलाक बापि ।

बीहक कथा- भक्त्यागि

सीट हर ? ककलै हि डकक काकि काकि गिगि वंदा भेक । गिबा
अन्न के सकूटी टा देलकै ।

-- नइ गिबि ?

-- गि ! चल, कठई खुआ ?

-- कलसजा ! कथीक खु गिरे !

-- हरगि जे काकि देले ।

-- गिहि व दानि हरगि पव न नक ।

-- ठीक । किकि राने हर भक्त्यागि छी ?

-- नइ गि ! गि वंथि छे !

-- हरगि ? अखन डेगिहि हेबे ?

-- कए ?

-- गिहि ह यबला व दानि गिडबा कै क्यौ !

-- चल, गि खा ले कठई !

-- डेगि गेले ?

-- नइ गि ! गि भक्त्यागि नइ छे ।

जाव ने कए िबा के आँख नहि गेलैक । िनि अपन छ टकी
रराल बढ़ा देने छल ।

बीहक कथा- कजा ।

ओ खिन फँव गेल जखन पतीक खािँ भैयाक खािरे
निँ हजािँ रपैया टा फकिँ देने हैक ।

ओ हकायािँ अक रुदा अनुज अक । अगज कछु देने हेथका
रन हइक निँ नक रुदा जनैँ अक हुनके देखायल बाट, जयिँ ठाढ़
अक किँ पर्वणार छैक ।

ककिँ थिा कयलक - फूव कहीं गलय, ओकना कटकट । पती
आगू कबल नक । गुम्मा छुआ अनने हिय ।

अगजक दू रा पकने नकाँ छुट गेल छलैक । ओ भने कन
द रिहानगरिँ पती दू छल । पतीक कलह बेहब जायज
हैक । ओकी पती औना क'खि' चाहै छैक । ओ भाँ भति
अक ।

पती उबिा उठा देलकै । नैहिँ फनपि पछिँ कौलक । ओ
अगज राकला आहिँ छल । उपिँ पितीक लाक रुद ।
लवियौलक पछिके - दकभर्वि ।

पुरख के चन्द् हएब जरिँ । भ कदर ! पतीक आ नैहिँ
खित्त ।

राकला हावकिँ अगजक कटसे ओकी पती दाखल कयलक ।

‘ह र बाइल पं ।

द हिहिक बां ओकी ुन’ पड़लैक । पती खुश हैक ।
पकिजि अपने किबिबी ‘ह फल ! ओ बौक भेल पकिजि हइ
हिल फ नपं । ववियाइि हिल । बां कयकहां दं ि आन नह
ओकि अगज हिथन ।

ीन रा बाद ।

ओ इजरे आक आयल छल क पती र बाइलपं आयल रै ‘ज
के देखबै पुछलकै - पैी हजाकि क ना आक गेलै ?

-- कप्पाकि छ ट ि हर छी !

-- ‘ की ?

-- भैया टान फं केने हेथकह !

-- ओ ... ! खिन ओकि बां कए अहा के ओइ कन ुनौलक ?

-- अहा खुश ही !

-- एकटा बां पुछू ?

-- की ?

-- दीदी (क्यादनी) के हालचाल पुछएक । भाईजी पाच रा ि
बै ल छथन ।

-- के कहलक ?

-- कए बाजल हैक !

-- हरि ि आइ वि केओ नह कहलक ?

-- जाय कयौक बील बां ।

ओकि पती फ न लगौलक :

-- गड़ लगै क्यौ !

-- हागिनि !

-- क बदी कए लदने है छे ?

-- फ ने कए लए क्यौ ?

-- भैया के कए नइ कहै क्यौह जे हुनका बाणि कथिन ?

-- कए ? फे क न बाणि उखड़लै !

-- नइ गे ! नि नि ओही परि न है छै ?

-- चल नइ क न बाणि ! कजा । केले यह बड़का बाणि । कजा ।
बल छैक ।

-- की ?

-- नि भ छे ने ! आनि की चाही !

ओकी थाहिरे पती एकटा आओनि टि खिं पुछलकै -

-- छुछे कजा ।रे बल हइ छै ` हरनि नइ बुझल छल ।

-- नि हर की कर ?

-- जखन पाइ कौड़क बाणि नइ नि हाथ नि आ भैयाके हालचाल
पुछ्यौह ?

-- ठीके ?

-- हँ अइ !!!!

बीहक कथा- कार अरनि

दलरे भैयाणि कहाजे भ ॐ पै - रु न छैक ।

दलान डकक टले । नुक निखल । कनभवि पड़ल है छैक

- रु न । पचपन ॐ उपाँ हेँकह । रुदा बेँ ख ॐ उँवि जाइ
छव्य आ डकक कारिरे बै ल कची ॐ िँिँ के छौक्यबैँ हिँ
छव्य - कँि वन ।

वियापुँि खेलाइँ - खेलाइँ रु न आगू ॐ ककलल । एकटा छौडा
के नहुँए इशाँि कयलकह आ

-- ुन ! हरिँ रौ । नकह कह ।

-- कए ?

-- अझ पड़लैँ, हरिँ नहाय पड़िँ !

भ वियापुँि रौ । रौ । कल्लल कँि लागल । िँ एकटा छौडाक
राय ओही सिँ गुजलैँ ।

-- भैय जे छव्यन ने ! आ िँि नरिँ रुक्कयाइँ डेग झटकारँ
लेलकह ।

बाँ ॐ िँ क'रलाकनक झुडि जाइँ छव्य । वियापुँि रुहिँ ॐ
रौ । रौ । शब्दक ुन ठारक गेव्य । रु न ककयाइँ हिँव्य ।

-- देख्यौ बढबाक पँिँिँ ! कहलकैँ जे । झुण्ड वँ
गेल हैँ ।

हर वँ क'रु न लग गेलहुँ ।

भाइ ! अहाक काज अरिँ हिँ ।

फाइनल कचीँ िँिँ पँि पटकैँ रु न ठाढ़ हइँ बजलाह - कार
अरिँ छैक !

बीहक कथा- डेट-वर्क

वन कि रय । ि क बद छल । दुनु िणी जागल । छौक एके !

-- केहन बनलै ?

-- नीक । कड़गि । पती बे ी ख । देने हेबै ?

-- जाय क्यौक । एकटा काज कबि ?

-- की ?

-- एकटा फूल पैन्ट आ करीज व या लेब ?

-- कए ?

-- 28 ििख अबै छै ।

-- रलिब ?

-- रैजि डे, बूझै नइ क्यै ऐ ?

-- कयाह कहा भेलाय, कुराि छी ।

-- भगलहि की ? पाइ नारे पुरख ओकना कुराि भ' जाइ छक्य !

-- अहा प्पि ! हाथ खाली अकछ । अहा कही ि एकटा FD िड़बाली ।

-- छकड क्यौ । व ल'ि जुबली लए एकटा SIP अवाला रहीना चालु कबि क्यौक ?

-- नीक आइक्या ।

दू ििख । वि कन । पाठकजी िि बगलरे । कहा पठौलहुँ ।
अयलाह - न91 ालक प'ि नेने ।

-- 1991रे 28 रई कए कन वर्क है ?

-- की ?

-- आ एक ताल ेर गिखरे ई वक्थ कक्या पड़ै छै ?

-- अच्छे ।

-- ठीक ूँ देखबै ?

-- हि कन आगू भागल अछ । अथाि एक ताल जुनक द गिख ।

उतुक पती पाठकजी क चाह बढबै पुछलकन्ह - पका ने ?

-- कहै के बाि छैक - दु !

पतीक आँख चरक गेलक । पूछलएकह - चलु ने, रॉल ूँ क् आबी ?

हरि पयाि जूिरे वि याइ छल हुनका ूँ फेयि एन्ह लली कक्या गेल हिकह आ बहुि गि ल न बुल द' बाहि भ' गेल छलैक ।

गि ूँ बाहि हइ पती हरि कॉलि ठीक काँि कहलैकह - डेट ूँ वक्थए नीक, नइ !

बीहक कथा- आगिज

-- दीदी गइ ?

-- की ?

-- अखन जे फ न कयने है े गुडि बुझायल ।

-- भक् ! ओ भूटकन छलखुन ।

-- अपने र ने लक बूझ जैि जे हर गि ओत' आयल कयौक ?

-- हँ गे ! आगिज ूँ ।

-- नइ गे ? पुछलक जे पाहुन छक ?

-- ' की ? हुनका ' क्याह कबे क ?

-- ओक आजरे एहन क ि है जे लागल ओ हरि ' क्याह क ।

-- गे ! हुनक उरे बुझल छौक ?

-- हर ' आइ वि देखनेह नइ कए ।

-- पचा के लगभग !

-- आइ ! 'खरे आवा लगौक ।

दीदीक बहन डेग झटकावि द्र ि हना पैव गेक ।

बीहक कथा- कुकू

र बाइल ' हुनक ि ट लै पूछकाएकह - हर निश्रार ! आब ' ि ि कि ि टी उटिउ ?

-- की कहू बौआ ! कस क पक गेल अक ?

-- ' क ना ?

-- आँगनरे ननक कयि ' बे ।

जेठ/ उि भ बैव टाइर पा क छक ।

हर लगले दलानरे हुलकलहु -

ठीके कुकू चौकी प बि ल छल ।

बीहक कथा- पु बाए

नुर्व काकी । झुडकुट बूढ । काँ रकसट हिने ।

हाथरे अगबे यश । बाए बै बैरे इलरी । रुदा ुनर्व काकीक बाए
पुहि कक्य नक जगह पक्थि हि' दैकह ।

कली दौगल आयल । रौी ु पुछलकै - दादी कि छै ?

की बा कि छै ? ुनर्व काकीक पुहि अपन बहन पू ु पुछलकन
।

राय के पेटरे दि कि छै । बाबू कहलकन्ह जे पकड़
क' अकयाउन्ह !

-- हे अय रा ! कने दीदीके देख अबथुन्ह ने ?

-- पकने हुका ुनगा क' लाउ ?

-- एी कि नक पीविह ?

-- द्र कि बैरे एहन अनुगि गार बुल' चक जाइए ?

-- अच्छा कि हुका भवि दै कयकह ।

-- पीनी नक है, रगि लेब कि हर देखने अबै छी ।

-- अच्छा जाउथ ।

उखि क्किइए क' एीह !

भनभनाइवि का कि, बाकए बाड़ी बहनक अगिना क्कि गेलीह -
ुनर्व काकीक पुहि ।

-- पीनी रगिलहुँ ?

-- हँ अय ! की भेलै दीदी के ?

-- कलीक बाप के पठेकयैक अक ?

-- कए ? कनका ु अकि कि नक लगलकह !

-- दुनु बहनक थाह भगिने लगौहि ।

दीदीक नक्कया कए बाजब आ लजाइँ ॐ नुनर्व काकीक पुीह
वखवखयए लगलीह । काकी टीप दैँ बजलीह -

-- आब नक् अबेँ हइए !

बीहक कथा- शावादम

उक्सा उरेश ॐ अपन करज्गी एना बखान केलक :

-- जनै छे, विँ क' ुँ छी विँ क न ने क न डेग चक्क जाइए ।

-- ककि कन ॐ एना हइ छौ ?

-- अत विँ !

-- खिन विँ विँ फूलकुराँ छे ।

-- ते विँ ?

-- नक् वंशा हइ छौ विँ रन ॐ पुक्क ले !

-- झुटा कही के !

-- र हने के फ न लगा ले ?

-- क न र हना ?

-- छड़ ! व हिजी के विँ जनै छे ?

-- ओ.....!

बीहक कथा- भर

-- हर भके छड़ल आ भ ॐ वंशि िड़ल ।

-- ठीके ?

-- दृि किय !

-- आब केओ फ नफान की छह ?

-- नह ि !

-- काबल ठेकना क' देखयह आ फेि ककयह ।

-- की ?

-- िि के के पकड़ने छलह ?

बीहक कथा- बट िति

-- आर नबे रपये कल ,

लीची असि रपये कल ।

-- ` की ?

-- चाबि ििख क' बड़ इि छै !

-- ककी िि हइ छै ?

-- अइरे िि फाि नइ हइ छै !

-- ि कए कबि ?

-- ि ! बूझै नइ कए - स्तीगण बि लेल की छय ।

-- ऐ बेि हरि लेल नइ कर !

-- ि ककी लेल हबै ?

-- रहगिई लेल !

पती बकुआ गेलीह । आवार ूचना कथमजका ।

बीहक कथा- गुलबदन

- छड़ झाड़ हरि डूब' दे ?
- कए ? ` िि बीच करलारे नइ गइ एबौ !
- अकि रेहनवि कए कबि ?
- एकटा कहबी बुझल छौ ?
- की ?
- डूबै के खि उबारि दै छैक ।
- की रलिब ?
- िि पिक न वशा ! झाड़ फुत्तु पकळ फेि उपि आब जेबे ।
- यैह पकयाक र न िि नह क ि छौ ।
- ि एहन कटाओन बाि कए बजले ?
- ऊँ !
- ि बाज ने ? अय दुकयारे िि व बाय हरि केओ आि छै !
- चुप्प पगली ! एहन बाि जुक कि ।
- कए ?
- िहि रुहि वकते भ' जाइ छौ !
- केहन ?
- गुलबदन जका ।
- आ बिका िरी के रलुढ रलुढ देखि छक आ ि कौ हिय ।

बीहक कथा- गुणति

-- किरि णि एकि ओपन राइडि के क ना भ' गेले ?

-- जक्या ँ रेश ँ रि भ' गेल ।

-- एना हइ छै ?

-- हँ गे ! कस्कर रे जान छै, भ हिहिक जान छै !

-- अच्छा ! कछु बनि - रेशक बारि ?

-- काक रेश णि पाकसे दू टि छलहुँ । ओकि नेनरवियाही बापि खूब हलिहुँ । अरि हरि ँ ओकि नाक टेढ़ भ' गेल हैक !

-- क ना गे !

-- ओकि फे रे जादू छैक । हर ररे बहल जाइहि हि आ ओकि नाक पकड़ डलबै गबै हि - णि हरि . ना णि, . ना णि, . ना ।

गिनी किर के ककरे टक देलकै - हि . ना ककि कौटि के छौक ?

किर कदर । फक आ झरायक नक रुँहक आकृषि ।

-- की भेलौ ?

-- 'ह णि नक अक्यया कयल !

-- छ ड ओइ बाकि के ! भकि भटकल झरे णि आबय णि भटकल नक कहैछ ।

किरक भ आगि गिनीक आगिरि फँ ल हैक । कड़कड़ा देलकै ।

गिनीक रुहि ँ ख लै - भक् ! आ दुनु कक्या लागक ।

बीहक कथा- झटहा

आरक ककुला छेटगि भेल आ गाछीरे रचान स्थावर्हि हइ गेल ।
गुने ि भ ॐ आगू हिक्थ ।

भवान् उखपाँ अक्ख । एकटा लुकड़ी क्खन ि खिँछ ।
गुने ि चेलि छैक्थ । ओकी देखिक्खि रचान प ॐ कुदलाह ।

-- आबह ि ?

भवान् हटल । ितीक ुखल गाछपि फेकलक झटहा ।
अक्खल डारि भ झाड़झडा ख लै । फे फेकलक - लगागि द .
बे ि ।

-- ि भवाया ? पगला गेले क ?

-- अहा के की भेल ?

-- ुखल गाछरे झटहा रानि ि चुबहि की ?

-- अहा ेबू गाछी - िन रा वि । खायब - आर आ कटहि ।

-- आ ि ?

-- हर ि येह बहिलहुँ ब्रझ आ चलहुँ - खायब गरि गरि टटका
टिी । राय बाट किहि हयि !

गुने ि अ फल या कीहि हिक्थ - रचानपि चढ़बा लेल ।

बीहक कथा- ह श

-- भाग, भाग ?

-- की भेलै ?

-- आवा लगलै !

-- ठह ! थम्ह ।

-- कए ?

-- आवा के कइँ ? िहि बाप !

कहक कथा- ुख-दु ख

-- राय ! अय क बौ िरि नइ ुबौ ?

-- की भेलौ !

-- िवि पेट फुल गेल ।

-- कहूँ भला ! अय, अहा नीचे रे पाक्या ओछा लैहि ि नइ हइ ?

-- हर की जान' गेलयै !

-- ओकि ओछानि भ कन फाँके काँ छलहुँ ।

-- राय ! कहक्यौ ने, अलगे ओछाओन कए ने केले ?

-- आइ की भ' गेलौ ?

-- बाक चक गेल । हाथे नइ उठै !

-- क ना ि ?

-- अपढ़गिह पुँहि अनले, भवि िवि बाक के व हिना बनने हौ ।

-- ओहह ! न दबा गेल हेँ, बाक झाहि ने ि ! हे अय, ुनै छी

- कनी रूँ हँ पैथ क्यौ ने !

-- एना हुनकि भ बारिरे कए दहीरे ही काँ छकन ?

-- भक् बकलेलही ! एकेटा ि पूँ अक । ओकाँ ुख लए नेनरव जगौने हँ छी ।

-- फिँ ॐ फायदा ?

-- पूरि रे राय फायदा िटा न्ह हँ छै ।

-- काक्ल के षकट छैक, चक्ल जेबक्ल खिन ?

-- काक्ल के के देखलक अक्ल !

अहा न्ह बाजू । हरि कजि के जुगिय कअ - जेना िना !

पुहि १० के टिरे टि ज़क्ल ुबकैव बजलीह - रा, अ गि दु ख
क ना काटीह !

बहक कथा- भूलचूक-लेनीदेनी

कपकि झरटगि गाछ । ओकी ीके पाच डेग पि पखि । गाछक
कारिरे भला बाबाक रक्षि ।

ओकि दुनूक उरे पिचा के अक्षि हेँकि । देखबारे पै ठक लगभग
। नार छैक - गिर क्कि आ दुखन ।

दुखन किाकि भति छल आ क दुष , रिक्कि के खिन भान
भेलैक जखन बृदा पे नबला आदिन के ही बनि खारजि कबि
देने हैकि ।

दुखन पि गिर क्कि कनखलि आ पायल ेह हैकि छल ।
दुखना के एक बीचरे रि रचरचा गेल छैक । बाबा के गहवियारे
लागल हैकि अक्ल - भि भि ।

रिक्कि . चलक - दुखना के पाछु पड़क चाही । भला बाबा के
क न ठीक - झूठ बा पि रूडी डक्ल जएक्लि फिँ हरि ॐ टैक

जायि ।

गिरव्याणि भूति उठल । लटा लैनि दुखनाक पाछु लावा गेल ।
पखवरै दुनु स्नान केलक । जल उठा रक्षि ठिकल । पक्ने दुखना
जल गिनि पढलक :

-- ई इनि दीवजए जारे कुटुरि
राय !

-- हय - हय ! लटा ऊपि कि?

-- कए गि ?

-- अपन बाल गृपाल गार अक्खि नइ छौ, कुटुर के के पुछैए ! पाछु
हट । आब हरि जल चबि' दे !

-- गि की रबिही ?

-- गि गि लावा जाउ, जक्खए !

-- कए गि ?

-- पटना ' बेटा औतौ, वीव या क' ल' जेतौ !

-- गि क न फायदा हतौ ?

-- गि पड़ेने बृदा पे न पा ह'ि, बाबा पि जल गिड़ने म्मब नह ।

आ गिरव्याणि जल रक्षिकी दी
पि हेबै उठि गेल ।

राजदे मण्डल

एडजस्टमेन्ट (लघुकवि)

मनक बाश्चकामे कामनाक पुष्प फुलाइँ रहैँ अञ्च । कालक कारणे
अछ मौला जाइ छै मुदा अछ श्रिकर्मा होइँ रहै छै ।

भुलोटन खेसिँ आपस अबै-काल सोअ रहल छल- जाइ भेल अञ्च ।
आअ लग बैसबो करब आ प्नीसँ पेमपूकि गप्पो करब । जश्न्यासँ
बेटा-पुहिहक पुहिहक अँगना भेल प्शियोसँ गप्प करैमे संकोचे रहैँ
अञ्च । मुदा अखनी अँगना सुनहट होएँ ।

लोक सोचैँ रहैँ अञ्च अछ आ भऽ जाइ छै अछु आर । श्रिचारले
गप्प जँ भऽ जाइ िँ सभ सगिअे डुमकी मारि... ।

भुलोटन अँगना ऐबिँ देखलक जे प्नी कोनटामे मुँह नमरौने बैसल
अञ्च । सहैट कऽ लग गेल आ अनेहसँ पीठपर हाँ दैँ पुछलकै-

“की भेल?”

प्नी फनैक उठलै-

“हट्ट, ऐठामसँ..!”

“एना अए कनै छी?”

“कानबै नै िँ हँसबै । ऐसँ नीक िँ मअ जइँ ।”

“फअया कऽ बजबै बि ने बुझबै ।”

“कहै छै जे मने-मन गजै छी आ गज लऽ कऽ नपै छी! ओइ शून नै कहलौ जे हमरा अलगे रस्ति लगा अ। एकर ओल सनक बोल सहल नै जाइए। मुदा अहाक मन ई अशु दोसरे। आइ सभ करम करा देखाए।”

“कानू नै चुप रहू। कोनो गप्प ई रस्तिँ कएल जेई अने।”

“अहा रस्ति आ बाट किँ रहू। अँगनामे रहबै बि ने देखबै रँगिल। अहाक बेटा पुहिह मीठ अशु ई संगे रहू। हम अलगे रहब। नशु हेई ई केकरो बरनि-बासन माजबै। एकटा पेट ई कुँ पाशु लइ छै। हम ई मनुख छी।”

“रि, ईकि लगौड़ी लगबै छी ने। अहूँ की कम छी। कोय ईर घाट ई कोय रीर घाट। हम पुछै छी- अखनी की भेलै से बजू ने?”

भुलोटनक बाँ सुआँ जेना ओकरा पनीक अन्रिमे उकि मारलकै। बुझेलै कोनो सहाराके अयो जोरसँ डोला देलकै। ओकरा आँखसँ भर-भरा नोर खसए लगलै।

ओ बझल गलासँ बजली-

“एकि दुख काशु अहीले बेटाके पोसखाए। केकि आसा लगौने छेखाए। सभटा आस-मनोरि आब संगे चशु जाए। याशु अशु-अहूँ कहै छेखाए- कमजोर छी रियो अँगना-घरक सभटा काज करए पड़ै अशु। पुहिह आएँ ई अछो ने करए पड़ि। अरिइन बनल रहब। बैसलेमे रीमन-भाँ भेटि। देखयो आब- आगूमे भाँ पाछूसँ लाँ। से अहाक सोझहामे। जखैनशु अहा खुटा जेका ठाढ़ छी।

बि हमर ई गम्भीर?"

पत्नीक अन्धमि तिक्य जेना भुलोटनक सूलि पुरषाकि जगा देलकै। बुझेलै देहक कोनो भागसँ गमीक उप्पि भऽ रहल होइ...। बुढ़ाएल नस-नस नि गेलइ...।

“ओ कृपू केनए गेल अछि। दूटा पाइ कमए लगल कि अपनाके की बुझै अछि। दुनू परानी आपता अए भेल अछि। अखनी सोझहामे रहै बि ने देखा दैछैऐ।”

“की भेल यौ भुलोटन काका? अए गरमा रहल अछै?”

कहै पड़ोआया आरसू लगमे आब गेल छल।

पत्नी कनै बजली-

“हँ, आरसूओ बौआ कि ओहीठाम रहइ। हमरापर कि अससिसो नै हए। एकरेसँ पूछि आयौ। केना हमर कण्ठ पकड़ने रहए।”

“कनी फअया कऽ हमरा बुझबए पड़हि आरसू। की सभ भेल रहै?”

आरसू कामे बैसै बाजल-

“यौ भुलेटन काका, अछि दोख लोहोक आ अछि लोहोरोक। केकरा की कहबै। एहो औंगरीमे काटबै चाहे ओहू औंगरीमे कटबै, जखम कि अहीक हए।”

पत्नी अचचेमे काटै बजली-

“अहूँ झूठ नइ बाजू। हमरा कण्ठ पकड़ नै मारै छेलै?”

हासिँ इशारा करैँ आरसू बाजल-

“अहा धीर रहू हम िँ कश्चिँ छुऐ। दूकि लेल लड़ाइ भेल रहइ।
खिँन कश्चाक नैहरसँ चाश्च गोरे आश्च गेल रहइ। हुनकर भाइक
संगे। सभटा दूकि चाह बना देल गेलइ। हिीपर काकीके नै रहल
गेलइ।”

“रहल केना जाइ। माश्चक-मश्चकाइन सुल्ले रहै छै। हम जाड़-
ठारमे अनरोखे रिरिराइ ओइ टोलसँ दूि लाश्च दइ छुऐ। टाग-
हाि कटुआ जाइए। देहमे जड़ैया बोखार रहए िँयो दूि लाबलौ। से
एको घोट कीले रहए दे। सभ श्चन इहए टेबा। कहश्चाए िँ कण्ठ
मोकै छलए। अश्चना कश्चयो माश्च देि हमरा।”

“ई गप्प बरदाइश करैबला छै आरसू? दुनू परानी हमरा सभके अँअ
नै देि।”

आरसू भरोस दैि बाजल-

“हिँन बाि नै छेलै। एकेबरे आमील नै पीबू। कश्चायो कनी बेसी
मिसा गेल छेली। िँकर कारण छेलै जे भाइक संगे नैहरक नीक
लोक सभ छेलै। काकी ओकरा सबहक सोझेमे गाश्च-बाि श्चअ
लगली। बहि-बाहिँमे सौस-पुहिँ टेलम-टेल कऽ लेलकै। कमजोरीक
कारणे काकी अर पड़ली। आब एकरा शीलके िर नश्च हुए श्चयौ।
काका एडजस्ट कर। यौ अहा सबहक समए गेल बीि, आब भऽ
गेलै दुआयौक इएह रीि।”

मुदा भुलोटनके मनमे दोसरे बाि उपकलै- कश्चयो-काल जे प्नीक
हासिँ लि लगै छल सेहो दुरलभ हएि, िँए बाजल-

“नश्च हौ, सभ गप्पमे ई सभ अश्चना करै छै । हम नै मानबै । पाचटा पंचके बैसेबै करबै ।”

एक श्वस बेटाक अनेह आ दोसर श्वस पतीक पेम बीचमे असाइ भुलोटन सोचै-श्रीचारै बश्च रहल छल ।

सुनै श्वरे अछे अन्नक बाद एलेक्सन होइबला छै । ऐबेर अछेटिके भोट दऽ मुश्चया बनेबाक छै । देखै छी ओ अडर छै । बजै-भुकैक छमा छै । पर पंचायामे दूकि दू आ पाश्चाक पाश्चा बेरा दइ छश्चिन । एहने लोक मुश्चया हेबाक चाही । ककि अन्नसँ सोचै छेलौ जे आन गोरे झगड़ोके बढ़ा दे । अछेटिके एक अन्न घरपर लऽ जाएब । एकरे बुते झगड़ा सुलझि मुदा समएपर भेट हुआए बि ने... ।

भुलेटन श्रीचारक बोनमे आइ अछेटिक दुआश्चपर पहुँच गेल छल ।

दुआश्चक एक कामे अछेटिक अहि बैसल छला । भुलोटन कनी दूरेसँ पुछलक-

“यौ, अछेटिजी छै आश्च नै?”

“ओकरा किले किकै छहक हौ?”

“एगो पंचै करेबाक छै ।”

“आँइ, ओ बेमनमा पंचै करि?”

भुलोटनके शंका भेलै । एना अछे बजै छै । सहैट कऽ लग चश्च गेल छल । अछेटिक अहि हाँ देखबै कहलकै-

“देखै छहक चण्डलबाक अरदानी । सटकासँ हाँ शिश्च देलक ।

जे बापक हाड िडै छै से िहर आसाफ करैले जेँ।”

भुलोटनक टाग रिक् रिणिं अलए लगलै। चार भर िइया-ि।
अछ फुरेबे ने करइ। मोन पड़लै पड़ोअयाक गप्प। आरसू ठीके
कहै छल-

“एडजस्टमेन्ट...!”

गंगजअया पोखैर (बीहअ क)

कोनो सिि ि सिनिक न ि नामकरणक एकटा इथिहास होइ छै, से
कनी साचो रहै छै, कनी झूठो रहै छै आ कनी बदललो रहै छै।

ऐ पोखैरके गंगजअया पोखैर अए कहै छै?

गामक लोक जे गंगा असलान करए जाइ छै, ओएसँ आपसी हैकाल
गंगाजल नेने अबै छै आ ओ पोखैरक पाअमे अला दइ छै। ई परम्परा
बहुि पअनेसँ चअ रहल छै। िए ऐ पोखैरके गंगजअया पोखैर कहै
छै।

गामक पैघ लोक कहै-

“ऐ पोखैरमे नहेलासँ लोक पथैरि भऽ जाइि अअ।”

ओही गंगजअया पोखैरमे नहाइि रही। चाअ-पाचटा अया-पुि संगी
सभ सेहो छेलै। एक-दोसरपर पाअ झोकैि। सुडकुअया मारैि सोना
डुम्मी खेलैि रही। कोय माछ जका उछलैि आ कोय साप जका
हेलैि। खुशीक कोनो सीमा नअ छल।

खिँने गामक बड़का लोक असलान करए पहुँचला । संगी छौड़ा सभ संच-मंच भऽ गेल । धीर भऽ कऽ नहए लगल । हमरा ओइ गामक सभ गप्प नञ्च बुझल छल । एक िँ हम बेसी मामा गाममे रहै छेलौ । िँ हम ओञ्चना उछलै-कुदै रहलौ । ओइ बड़का लोकके देहपर पाआ पञ्च गेलैन । ओ मिसा गेला । आँख गुडैर कऽ किलै । मुदा हम नै बूझ सकलौ । ओञ्चना उछलै-कुदै नहाइ रहलौ । ओ बड़का लोक अन्धिम डूम दै गंगा-गंगा करै धिदा भेला । फेर हमरा बुँ पाआ पञ्च गेलैन ।

ओ फनकै कञ्च कऽ दू चमेटा घीच देलक ।

नोराएल आँखए पुछलयैन-

“हमरा अहा मारलौ एकए?”

ओ फोफयाइ बजला-

“एना बानर जका एक कुदै छे । पाआ पड़ा देले । अपधीत भऽ गेलौ!”

हम कनै कहलयैन-

“ई िँ गंगाजीक पाआ एकए । ई पड़लासँ अपधीरि केना हे?”

ओ बजला-

“रौ पाआ िँ ठीके पधीत अञ्च मुदा िँ िँ अपधीत छे ।”

“केना कऽ यौ, हमहूँ िँ गंगेमे असलान केने छी ।”

चटाक फेर चमेटा लगल ।

“बकटेटी करै छे । गंगाजी मे नहेलासँ जाथी िड़े बदैल जाइ छै ।”

जेना लागल अन्रिमे अछु दरैक गेल । आँख लक्ष्मया गेल छल ।
मिसा कऽ किलौ । ओ अछु दूर जा रहल छला ।

हमरा लगल जे हुनका आ हमरा बीचक दूरी बढ रहल अछ । किक
किर िह नञ्च ।

अनेश रश्मया

बीहवा कथा-१

रनखु बाबा कऱि अबै छह ?

बाबु चौऱी गेल कहियै ।

रनखु अकऱि िदरे कऱ कऱि छेलहा ?

बाबु कऱ कवऱियै आरक गाछी के खिबाऱी ,

रनखु एह हिन ि खुब आर खाइऱि हेबा ि नै ?

बाबु बाँऱि कने जा क देखी जे बापक कन्हाके हऱि कऱिक हल्लुक
हइ छै ।

रनखा चुप्पी लऱिने

बीहश्च कति-२ बाबा

मनसुखा: बाबा कति स अबै छह ?

बाबा: चौरी गेल रश्चयै ।

मनसुखा: अकि रौदमे श्च करै छेलहा ?

बाबा: श्च कश्चयै आमक गाछी के रखबारी ,

मनसुखा: एह हिन ि खुब आम खाइ हेबा ि नै ?

बाबा: बौंि कने जा क देखी जे बापक कन्हाके हर ककि हत्सुक होइ छै ।

मनसुखा चुप्पी लनिने

सत्पन्नारायण झा

बीहआ कऱि- सुश्रया

अन्हार गुफ्र | हाँ हाँ नश्च सुझैँ | आकाश साफ रहैक | पूरा
 आकाश िरा सं आच्छाँ | आरँ िँ िँ हिन रहैक जे हृदय मे
 अनेरे सनसनाहट बुझाय | भगजोगआक यत तित पकाश राखक आरँ
 क' आओर पखर केने रहैक | पक्की सभ अपना खोँ मे िँ ने सुलि
 रहैक जे कँ सं कोनो आँज नश्च अबैँ रहैक | एकदम शाँ
 िँयुक गि मे केखनो क' बासक झुरमुट ऊपर नीचा भ' जायक
 लगैक जेना कोनो अदृश्य शक्ति ओकरा झला रहल छैक | एहन
 अन्हश्रया राक्षी नश्च देखने छश्रयेक | हम ओही श्रन कँको अँराल
 क' बाद इलाहाबाद सं गाम आयल रही | हम ओश्र समय इलाहाबाद
 मे पढ़ैँ रही | भोजनोपराँ हम अपन दलान पर सुलि रही | नीद नश्च
 होयँ रहय | दोसर पहर राक्षी श्रि गेल रहैक | कनेके काल पश्रने
 बाँ बोन मे श्रदरक हुआ हुआ सुनने रश्रयैक | कबो पयास करी
 नीद हेबे नश्च करय | छटपट करैँ परल रही | खिने दलानक काँ
 कनैलक गाछ लग कुकुर कानय लगलैक | कुकुरक रदन हमरा देह
 मे कपकपी भश्च देलक | कनेक मोन क' श्रिर केलौ | आब बुझायल
 आरा देँक आगमन भ' रहल छश्र | अँसिँ मे रही | खिने
 बुझायल पुबारी काँ सं दुर दुर सं केकरो श्रिलाप करबाक आँज
 आश्र रहल अश्र | आरा देबी पुनः लंक लेलश्र | एँक राक्षी मे के
 काश्र सकैँ छैक ? अनुमान सं बुझायल जे मलहटोली सं कनबाक
 अँज आश्र रहल छैक | श्रिलाप िँ एहन करैक जेना अँरित्ता सं
 श्रत्कार करैँ होयक | ओह श्रयो भारी श्रपश्रि मे काश्र रहल छैक

?ओञ्चना ओछेन पर परल रही ,िबे आँगन श्वस सं माय अयलीह
 आ उठा, कहय लगलीह जे लगैँ अञ्च जेना सुञ्चया कनैँ छैक
 |ओकर बेटा बच्चेलाल बर जोर दुश्च छैक |अयादी जरि लगैँ छैक
 |सुञ्चयाक नाम सुञ्चाँ मोन दुःख सं भश्च गेल |ओ हमरा घरक
 खबासनी छल |एकेटा बच्चा भेल रहैक ि ओकर पक्षी भोकरहा मश्च
 गेलैक |बेटाक कारण सगाइ नश्च केलक |ओकर आबाह हमरे घर सं
 होयँ छलैक |हमरा साञ्चिक अनेह सुञ्चया सं छल |हम ओकरा बेटा
 सं चाश्च पाच सालक पैघ रञ्चयैक |बच्चे रही ि सुञ्चया हमरा
 मायसन अनेह देने छल |बर माने |हम बच्चे सं ओकर पाछू पछू
 दौड़ैँ रहैँ छलौ |आत्मीय अनेह छल |गाम आबी ि सुञ्चाँ ओ दौड़
 जायँ छल |अपना हाँ पाश्च अयाबक्षी छल |हमरा माय क' पूरा
 सम्हारैँ छलैक |आइ नश्च आयल ि मोन मे एकबेर ठहकल मुदा
 भेल नश्च बुझल हेँक ?आब ि ओकरो बच्चेलाल सोलह सतह
 बरखक भ' गेलैक |मुदा ----|मायक मुँह सं जञ्चना सु अञ्चयैक
 ,ुरि ओकरा घर श्वस भागलौ |िसिँ मे बच्चेलाल क' णिलसी पीड़ा
 लग सुँ देने रहैक आ ओकरा देह पर सुञ्चया अपन देह बजाश्च
 अञ्चया रहल छलैक |हमरा देख्वाँ सुञ्चया हमरा पैर पर अपन कपार
 पीटय लागल |ओ बेहोश भ' गेलैक |ओकर दाँ छोरेञ्चयैक मुदा
 होश मे अञ्चाँ ओ ओञ्चना कपार अटय लगैक |बच्चेलाल आप्पाण भ'
 गेल रहैक |ओ एञ्च दुश्चया क' छोश्च चुकल छल |

कनेकालक बाद लोक सभ एकटा ठठरी बना क' अनलकैँ \ ओञ्चपर
 बच्चेलाल क' यि देलकैँ आ राम नाम सत्त छै ,कहैँ ,सभ श्मशान
 श्वस श्वादा भ'गेलैक |

ओकरा अंगना सं सभ चश्च गेल रहैक |सुञ्चया असगरे कनैँ रहैक
 |बगल मे हमहू ठाढ़ रञ्चयैक |एक बेर ओकर आँश्च हमरा आँश्च सं

अललय |ओकर ददयजेना हमरा पूरा शरीर मे समा गेल |नञ्च रोञ्च
सकलौ अपना क' आ ओकरा भञ्च पाज पकञ्च अपना करेज मे सटा
लेलौ आ जोर जोर सं कानय लगलौ जेना माय क' पकञ्च बेटा
कनै छैक |

कुमार साहेब

जैह सुनलकै सैह सबि भए गेलैक |मूर्ति ओकि भयाहि नञ्च होयि
छैक मुदा जेना कुमार साहेब दय लोक सुनलकै से सभ के
क्षिप्तयकारी लगलैक |कुमार साहेब बहुि मेगि छी छीत रहथी |एम
एस सी मे पुरे क्षि क्षिदालय मे पमि आयल रहथी |त्तिकाल एकटा
नामी थारामी कओलेज मे आकक आयुकि भए गेल रहथी |आनिनिदी
,इमंदार आ कथि परायण छलाह |कओलेज आकक रञ्चि आक्षिक
रपे कमजोरे छलाह |अनगस अजस करब महापाप बुझै छलाह
|क्षिदिनि लोकआ के वयुसन दै छलखीन मुदा आःशुल्क
|क्षिक्षिदालय मे लोक थय छलाह |कुमार साहेबक बचपन बर
कञ्चन समय सँ खलि रहथि |हुनक थि सागिरण कृषक रहिनि
|माय-बापक एक मात सनिनि ओ रहथी |कुमार साहेब माय बापक
परम भकि छलाह |नौकड़ी भेटला के बाद बूढ़ माय बाप के संगञ्च
रखलथि आ अनि कि माय बाप के सेगि करै रहलाह |माय बापक
जीक्षि ओ अपन ब्याह केने छलाह |पती सुशीलाजी नामेक अनुरप
सुदृढ़ आ मृदुभाषी रहिनि |कुमार साहेब के निनटा पुत रहिनि
|बेटा सभक पढ़ाइ आखाइ मे कोनो कमी नञ्च केलखीन |अपने
जका बेटा सभ पक्षिभाशाली रहिनि | मुदा बेटा सभक सोच आ
कुमार साहेबक सोच मे आकाश पलिक अनरि छल |जहा कुमार

साहेब अश्विद सँ दूर रहै छलाह ,एकर श्वपरीश्व बेटा सभ अश्वि पाछू बहिह जका करीन । श्विनू भाई समाज लोक दि सँ दूर रहैनि । पश्वीये के पदश्वह पर पुश्विह सभ रहैनि । केकरो सँ कोनो मलि नश्व । श्विनू पुश्विह आश्विकी सँ भरल । कोनो श्वननि नश्व ,कोनो सोच नश्व ,बस मात श्वज सुख । कुमार साहेब दुनू बेकश्वी के कषट होश्व मुदा बाजश्वी नश्व जे एखनुक समय एश्वना छैक ।

जेष पुत अमेश्वका ,माश्वल इंगलैन्ड आ छोट जमश्वी मे कायश्वि रहैनि । अश्विपाजश्व आ सुख सुश्वी मे श्विकि लिश्वीन श्विनू भाई रहैनि जे माय बाप कोना छीन किर ध्यान श्विनू मे केकरो नश्व । बस अपना मे श्विनू मर्सि ।

श्वटायर भेलाक बाद कुमार साहेब अपन गृह श्वला भागलपुर मे रहय लगलाह । कहना कय जीनिक गाडी चला रहल छलाह । कोनो एहन कषी नश्व रहश्व । मुदा सभ श्वन नीके रहि किर कोन ठेकान छैक ? केकरा भाग्य मे श्वीश्वि की श्वखने छीन, से के जनै अश्व । श्वीश्विक पकोप कुमार साहेब के सेहो घर लेलकश्व । कुमार साहेबक पती के लकी माश्व देलकश्व । हाश्व पैर श्वश्वील भए गेलश्व । श्विक हरण सेहो भए गेलश्व । सुशीलाजी के ने उश्व होश्व ने बैस सकै छलीह । खबश्व भेला पर बेटा पुश्विह एलखीन । पाच दस श्वन रश्व सभ अपन अपन गंश्वि सीन चश्व गेल खीन । फेर श्विनू बेटा पुश्विह पलश्व के नश्व अयलखीन्ह ।

एश्वना समय श्वीश्वि गेलैक । कुमार साहेब अपन पश्वी मिश्व काज करै रहलाह । पतीक पश्वचया अपने करश्वी । पतीक सभ आश्विक काज अपने करश्वी । कुमार साहेब गम्भीर पकृश्वीक लोक छलाह । केखनो कय बाल बच्चा पर कोभ होश्व मुदा अपन कपारक दोष दय शानि भए जाश्वी । बेटा सभ के माय बाप सँ डर होमय लगलश्व

कारण माय बापक भार अक्यो उठाबय नञ्च चाहै रहिनि । कुमार साहेब सभ दुख पीञ्च जाइ छलाह मुदा अनाश्रितक निनि मे आञ्च जाञ्चि ।

कुमार साहेब भोरे उञ्च पञ्चने पती के शौच अ या सँ आर्ति करा दै छलखीन । पती के सभ आश्रितक काज कराय ,खिन अपना काज मे लगै छलाह । निन अञ्च पञ्चने भोर भेलैक । पती जागल रहिनि । पती देखिनि जे कुमार साहेब सुले छञ्चि । जखन बरीकाल भए गेलैक खिन पती अञ्च भए गेलखीन । ओ बाञ्च नि सकै नञ्च छलखीन । अनि मे ओ लैन्ड लाइन फोन जे हुनका सँ कनेके हञ्च कय रहैक ,यि कहना कय हाँ लय गेलीह । बहु चेषा के बाद बगलबाला पड़ोसी के नम्बर डायल केलञ्च । मुदा अञ्चका बाजल नञ्च होञ्च । एञ्च प्रकारे निन चाञ्चबेर अंग केलखीन । पड़ोसी के शंका भेलञ्च । ओ आञ्च काल लि दलिखीन । मुदा कोनो असपोन्स नञ्च भेलैक । बिबे कोलोनी के कयएक लोक आञ्च गेलाह । अनि मे दरिजा िडल गेलैक । कुमार साहेब के अञ्चि भए गेल रहञ्च । जञ्चना कुमार साहेबक अञ्चि हुनक पती सुनलखीन ,हुनको पाणानि भय गेलञ्च । लोक सभ निनू बेटा के खबञ्च कय देलखीन । बेटा सभक पञ्च मे लास निन अञ्च कि राखल गेलैक । कुमार साहेब बहु लोकअय लोक छलाह फलसरिप हुनक अञ्चमि संस्कार मे लोकक हुजुम छल । दुनू बेकाँ के एके सिन पर संस्कार कय देल गेलैञ्च । सैकड़ो लोक रहैक मुदा नञ्च रहैक नि हुनक निनू पुत ।

आइ एकटा अत भेट करय आयल छलाह । हि ई काँ कहलञ्च । सुञ्च सबि भए गेलौ । त्रिग्न कलम उठायल आ आत्म संशिष लेल काँ अखल ।

पजाति एकटा मजाक

बहु पञ्चने एकटा फ़िल्म आयल रहैक जेकर नाम रहैक सत्प्रकाम । ओञ्च मे मिश्र एहि संजीकि कुमार रमशः कलाकार आओर सह कलाकार रहथी । दुनू फ़िल्मल इंफ़ाजफ़ायर रहथी । मिश्र जाञ्च कमनी मे काज करै रहथी ओञ्च कमनी के सथि करक ठीका भेटल रहैक । सथि करबाक लेल ओ माञ्चक के कहलखीन जे फ़ियोडोलाइट मसीन चाही । माञ्चक रहै मुख्य, ओ फ़ियोडोलाइट के नामो नञ्च सुनने रहैक । ओ इंफ़ाजफ़ायर मिश्र के कहै जे बहाना नञ्च कर , पञ्चने सथि कर खिन मसीन फ़न देबौ , कहबाक मलि मिश्रक ने सथि बुझै आ ने फ़ियोडोलाइट मसीन ओ हि मुख्य रहैक मुदा रहैक माञ्चक । इंफ़ाजफ़ायर महाशय के माञ्चकक बा सिआ पसीना देबय लगलआ जे एञ्च मुख्यके कोना बुझाउ ।

हमर एकटा अती छथी ओ हमरा पढ़ेनो छथी हि हुनका हम मास्टर साहेब सेहो कहै फ़यैन । ओ एकटा फ़व्वरसा कहलआ । ओ जखन बी काम कय गेलाह हि जीञ्चका लेल पटना गेलाह । त्तिकाल एकटा सेठक लोहाक कारखाना मे काज लिलआ । कारखाना कोनो पैघ नञ्च रहैक , हि काजो सागरिणे रहैक जे ककि लोहा सफ़ाई भेल आ के लय गेल किर नाम नोट कर । मास्टर साहेब छलाह पञ्चभाशाली, बैसल मोन नञ्च लगआ, हि ओ रेस्ट मे सेठक बेटा रहैक दसां क्लास मे, किरा पढ़ा देखीन, से सेठ के नीक लगैक । पञ्चने अंगेजीक एकटा फ़ाबि पढ़ाई होय 'बुक फोर' , ओञ्च मे एकटा चैप्टर रहैक ' द अर्थ (The Earth) एक फ़न मास्टर साहेब सेठक बेटा के पढ़बै रहिनि हि चैप्टर द अर्थ । ओ पढ़बै रहिनि जे कोना पृथ्वी सूयक चार कां घुमै छैक आ कोना चन्द्रमा पृथ्वी क चकर

लगबै छैक .कोना अन्न राखी होय छैक । श्रीसृति सँ मास्टर साहेब पढ़बै रहनि ,आ गदी पर बैसल सेठ सेहो सभटा सुनै रहैक । ओकरा अछि नञ्च बुझाइक । ओकरा आशयलगतैक जे कोना पृथी सूयक चकर कटकि आ कोना चन्द्रमा पृथीक चकर कटि ,से यश्च होयि ि पटना कलकता चश्च जयि आ कलकी अल्ली । चन्द्रमा घुम्ति ि िरा लग लोक रश्चि ,हो ने हो ई मास्टरक अमाग खराब भे गेल छै आ अछि अन्न रहि ि हमर बेटो पागल भए जायि । मास्टर साहेब के नौकरी सँ आकाश्च देलकश्च ।

गाम मे घूर पैरि रही ि एक अन्न रघू काका पुछलश्च रे बौआ ि बरका इश्चश्चर छे ,एकटा चीज बि दे जे कलकता सँ गाम फोन अबै छैक से एक जल्दी अजि कोना चश्च अबै छैक । बाि एक जल्दी कोना सुनाय लगै छैक ,हम हुनका टेली कमुश्चकेसन के श्रीसृति सँ बुझाबय लगश्चयैन मुदा काका कहलश्च ि भूि जका बकै छै ,अ बजै छै से अछि ने बुझायल । बगल मे हमर जेठ सार सीमीजी बैसल रहथी ओ कहलखीन जे काकाजी हम बुझा दै छी ,असल मे टेलीफोन मे िर रहै छै से ि आहा देखने हेबै ?काका कहलखीन, हँ यौ पाहुन अयै ने देखबै ,हमरा गामे दके रेल गेल छै ,रेलक काि दके िर गेल छै ,सीमी जी कहलखीन ,बस आब अहाके बुझा जायि । ओश्च िर मे रि रि भूर कयल छै ,जहा अयो फोन करि अ घंटी बाजि आ जौ बाि करबैक अ भूरे भूर अबाज काश्चका मेल जका जि मे आबय आ जाय लगै छैक ,बस गप्प भए जाइ छैक । काका कहलखीन आब बुझाश्चयैक । पाहुन बहुि योग्य लोक छथी आ बौआ ि अनेरे लेल इश्चश्चर भेल । हमरा सभक पजातिक सरकार की छी ,एकटा मजाक छी । एश्च ठाम श्रीशेषज पदाधिकारीक उपर अनुपयुक् िट सँ चुनल नेि बैसल

छैक जाश्च मे 90 पश्चिंशि अबूझ रहै छैक जेकर अर्धि सत्प्रकामक सेठ जका छैक । ओना कहक लेल पजाति सरकार मे पारदश्यापि रहै छैक मुदा एश्चताम ि सभटा झूठ पर आशि छैक । भारि मे सभके िट देबाक समान अधिकार छैक मुदा िट मे ठाढ़ होय बाला लेल योग्य ि रहबाक चाही । आइ ए एस ,इंश्चअयर ,डाक्टर ,पोफेसर ,ए ि सरकारक आओर पदाधिकारीक मंती ि पदाधिकारी सँ योग्य हेबाक चाही ,एश्च लेल अक्यो अजि नश्च उठायि । ई केहन पजाति छैक जेकर सरकारक मुख्यया अरकरो भए सकै अश्च । ई देसक दुभागय अश्च । हम ि कहब एश्च सत्प्रकामक सेठ ,लोहा कारखानाक सेठ आ रघू काका रपी सरकारक मुख्यया िट मे नश्च ठाढ़ हुए िश्च लेल अजि एक संग उठेबाक पयोजन छैक आ अ नश्च ?

मनोज कुमार मंडल

बीहआ कऱि- अलकोर

अगहन मास । दुपहआयाक समय । राम लखन भोजन केला पछाअी दरबजजाक आगू रौदमे चटाई अछा बैठके अीदेह समालोचनाक पोऱि उलटबै छला । संगे अरहोनामे राखल रेअयोमे दरभंगा आकाशीणीसँ दै लोकगी सिहो सुअ रहल छला । एकाएक अीयान पेरा अश गेलैन आअ दरबजजा अश मुसुकी दै राघकिे अबै देखलैन । देखि पअने ि अकचकेला पर अनटे भअ पछाअी अख्याअ उअ कऽ ठाढ भऽ गेला । राघ सिहो डेग नमहर करै झट राम लखनसँ हाि अलबै गलामे गला सेहो अलला । दुनू गोटाक खुशीक कोनो अमाने नअ । राम लखन आ राघ बाल संगी छला । जा अि पाचासँ मैअक केला छनो भअ एक दोसरसँ दूर नै रहै छला । पढैयोमे जअना राम लखन गिअे ऊपरसँ पअल अिना राघि नीचासँ पअल अबै छला । अखन राम लखनक जीअिका वयूशन पढा कऽ चलै छैन आ राघि अली सिचि न्यायालयमे अीकि छी ।

दुनू गोटा असअीर भेला बाद चटाए पर बैठला । राम लखन बजला " हम पअने ि अन्हबे नअ केऔ कारण दसो बरखसँ बेअए भऽ गेल छल अहासँ अलब । "

" अअना नऽ हमरा बीसअ जाएब । रिह बरखक बाद गाम एलहुँ हन । "

" हिन कहु जे के अनका बीसअ गेला । "

दुनू गोटा रंग श्रंगक गप सप करै रहला । घंटोभरसँ बेसए भऽ गेल । राम लखन बेटीके हाक दऽ बजला " गै बेटा दुधिया माय कऽ कहन चाय बनाबै लऽ । फेर राघसँ बजला " अपना सब निा नञ्च गपमे लिस्तीन भऽ गेलहुँ जे बेर धियाने नञ्च रहल । "

" कोनो नै ढेरो श्रनक बाद भेटलहुँ हन िऽ गपो िऽ बेझाए रहि श्रने । "

राम लखन ई सुझा मुस्कीएला । राघकि नजश् ओछान पर राखल पोि पर परलैन । पोि हािमे लऽ उलटा - पुलटाके देखै बजला " अहुँ केहन केहन पोि पढै रहै छी । के जनै छै मैथिली ? ई पश्चके की हेि ? "

राम लखन मने मन सोचला ई बदझ गेला से िऽ बुझाि रही पर सोचक पश्चि अकि ओछ भऽ गेल हेिन ई अंदाज नञ्च छल । ओना बहुि श्रनक बाद भेटला अश्च ि श्रछ कहब उझाि नञ्च । फेर मनमे एलैन श्रया िऽ संगी ि जँ ठमश्च गेला अश्च िऽ सचेि नञ्च कोना करबैन । ई गप मनमे अझाि बजला " राघाि एकटा बाि कहु दुआयामे जकि मनुख अश्च सबके माय छै । ि श्र दोसर स्ती हमर मायक असािन लऽ सकै छथि । "

" एहनो की लऽ सकै छथि । "

" हँ दोसर स्तीक सम्मान करब मनुखक करबि अश्च । "

" हँ से िऽ अश्चए । "

बिबे कालमे राम लखनक पती चाय लऽ कऽ एली। दुनू गोटा चाय पीला कप रखलैन। राबि उच्च अदा भेला। मनमे जेना अलकोर.....।

बीहआ कबि- छुहिर

बुझ्या दादी आए भोरेसँ चरभर बजै छली कारण केओ पछुएमे राखल छुहिर अन्न कहने उठा कऽ लऽ गेल छलै। जाआ नञ्च के कञ्चया लऽ गेल छलै। ओ ि मर आ बीहआ पटेबाक खागि पड़ने बुझ्या दादीक अयान गेलैन। भञ्च टोल भँजया एली कबि िह पबि नञ्च लगलैन। अंगना अञ्च काकीके सुनबै बजली " अंगनाक मनुख सब सेहो छुहिर खापैर सब भऽ भऽ गेल। जखन अंगनामे मनुख रहि यियो लोग चीज बौस उठा कऽ लऽ जाए ि ओए मनुखक कोन काज ?" काकी बुझ्या दादीक गप सुआ अकचकेले रहली। बुझ्या दादीसँ पूछै बजली " ई एना अए बजै छथिन। के कई लऽ गेलै - - - ? काकी बैजि छली आअ बुझ्या दादी बीचअमे टभकै बजली " जखन अंगनामे रहै बाली सबके अछ बुझले नञ्च रहै छै हिन हे भगिनि जआहऽ ूि अञ्च घर दुआरके आब भगिनि बचौ। " बुझ्या दादी बैजि छली िअ कका अंगना एला। दादीके बजै देखि पूछलअन्न " दादी की भेलौ?"

"हरौ मोहना िअ कह जे आब मर आ बीहआ कथिसँ पटौल जाए। चनबारमे टागल छुहिर कोए लऽ गेल आ अंगनाक मनुखके कुछ पबि नञ्च। "

" केहन बञ्छया िऽ गढुलामे राखल रहै छलै किरा ू पछुएमे राख्ख एलेह । हिन - - - - - । "

" हुँ की अलछ जेका बाजै छे । छुहिर कोए घरमे रखै अछ । दोसर बरनिमे आरने ओहो छुआ जाएि अने । "

" जखन दोसर बरनिमे आरने छुआ जाएि हिन िऽ मर आ सेहो छुएन जाएि अने । "

बुञ्छया दादी हँसै बजली " जो हम बाि नञ्च पदबै छी । बीहआ केना पटेमे से ू जान । "

कका काकीके देख्ख मुसकी दऽ दरबजजा अश अदा भेला ।

बीहआ क- अध्यापन

दू ढाई बजेक दुपहअयाक समय छलए । मंडलजी मास्सैब साइअलसँ बिलि गाम अस् जाय छला । जखन गंजक चौक लग एला आअ िदिनाजिक नजअ मंडलजी मास्सैब पर पड़लैन । जोरसँ हाक दै बजला " यऊ गुर जी ! गुर जी !" मास्सैब साइअले परसँ उलैट कऽ किला िऽ देखलैन िदिनाजी हासँ इशारा दै छलैन । ओ साइअल ूमा िदिनाजिक दरबजजा पर बैठला आ पूछलैन "आब कहु अपने की कअ रहल छी । "

" अपनेक सबके आअ दै अए ि कहलौ जे हमरो दुनू बेटाके पढा दैअए । "

" हम सबके नञ्च कछेक श्रियापुणिके पढबै छी आ पढेब की जे अपने पढै छी । "

मंडलजीक गप सुआ दिनाजी हँसै बजला " अहुँ गप पकैश्च लै
श्चए। हमरो बच्चा सबके पढा देल जाउ। अपने जे कहबै से हम
देब । "

" आब अहा कहै छी िऽ पढा देब । "

" शुल्फ कश्चऔ न कऱि दऽ देब? "

" अहाक जे उश्चि बुझना जाएँ ओ दऽ देबै। पर हे दू मासक
शुल्फ हम ओश्चना लेब । "

" ई बुझलौ नञ्च गुरजी!"

" पश्चने हम दू मास अहा बच्चा सबसँ पढबा पछाइँ पढैब । "

" अहा की पढबै । "

" जाछश्च हम अहा बच्चा सबके नञ्च पढबऽ णिश्चि हम कोना पढा
सकब । "

मंडलजीक गपक ममयबुश्च दिनाजी बजला " अपनेक दू मासक
नञ्च हम सालो भश्चक शुल्फ ओश्चना देब। अपने पढा देल जाउ । "

" बेस ।" कश्च मंडलजी माससैब उश्च श्रदा भेला ।

बीहआ कऱि- अगरजीं

--- रौ छौड़बा ! कऱिS अए रौदमे अदा भेले हन?

--- माए नहाए लऱ जाए छी ।

--- कल बाड़ीमे छै अ चौमास अश, ि चौमास अश अए भागल जाए छे ?

--- माए पोखैर जाए अए ।

--- नइ कोनो काज छै ि चुप चाप कल पर नहा ले नअ िS गतर ससाइर देबौ ।

--- माए आइएटा जै अऔ ।

ई कअ फुदना लंक लऱ लेलक । जाबे माए सोर पारै पारै िबे िS ओ पोखअ पहुँअ गेल । पोखअमे फुदने जेका और छोड़ा सब उमकै छलै । सब हेअ हेअ जाएठ लग जाए छलै । फुदना सेहो हेअ जाएठ छुबै लेल अदा भेल परंि जाएठ लग जाएसँ पअनए अममि हाअ देलकै । आब पाअमे उगडुम उगडुम करऱ लागल । िबे कोए ओकरा माए कऱ कहऱ गेलै । माए पोखैर अश आबै बजली

--- ई छोड़बा छैइछे अि अगरजीं िS मरऱ----- ।

बीहआ कऱि- एना अए

झलफल साझक समय । बैजू अंगनामे ओसार पर बैअ रेअयोमे दैि गीं नाद सुनए छला । खिने कअया पारो हांमि उगहैन लेने आठ

बरखक बेटी सुकि के चोश्चयाबै आ उच - नीच बजै दरबजजा
श्चशसँ अंगना एली। बैजू देखलैन सुि डरे कठौि बनल एछ पारो
बजै बजैि अफस्याि छथि । रेश्चयो बन कऽ गप बुझैक आजासासँ
पूछलैन " की गप श्चए ? श्चए ई साझ भरली अलगौने छै ? पारो
बैजूके जबाब दैि बजली

" की रहिँ! ई छौड़ी उगहैन आ डोल लऽ इनार पर गेल छलै।
खेलौर करऽ लागल हेँ । उगहैन छइहे आ डोल कोए उड़ा लेलकै।
" बैजू सुिसँ पूछैि बजला " गै सुि की भेलौ डोल केना हरा गेलौ
? " ओ निा नश्च डश्च गेल छलै जे आर श्चचकऽ लागल। बैजू
अपने उगहैनके जिश्चज कऽ देखलैन िऽ बुश्चा पश्चलैन जे जनु डोल
इनारमे आर पड़लै। जखने मनमे ई गप एलैन आश्च पारोसँ कहलश्चन
" सुनै छै ! देखौ न लाल कका घरमे काकोर हेँ। भऽ सकै छै
इनारमे आर पड़ल हेँ। "

" इहो खटरास करै छै ! मौगी सब उड़ा नइ िऽ लेलकै हन । "
बैजू गप हलूक करैि बजला -" ि इहो जे एछ न ! जँ कोए लओ
लेने हेँ िऽ आइ नइ काइि पकड़ले जाएि । कश्चओ नइ कश्चओ
इनार पर लौि िऽ पकड़ले जाएि । "

" ई नश्च बुझै छए मौगी सबहक खेल - बेल। नएहर सासुर साइट
देि। "

बैजू गप बदलैि बजला " आब हरा िऽ गेबे केलै। देखौ न! लाल
कका घरमे काकोर। "

बैजूके कश्चि पारो लाल कका अंगना श्चश श्चदा भेली। पाछु लागल
हामे उगहैन लऽ बैजू सेहो श्चदा भेला कारण लाल ककाक अंगना
इनारे लग छल। जाश्चि बैजू इनार पर पहुँचला ि पारो लाल ककाक
अंगनासँ बूल दऽ आकल्सी । अपने बैजू झट दऽ उगहैनमे बाइन्ह

चाश्च पाच बेर इनारमे िहला आश्च काकोरमे फँसल एकटा डोल ।
 हाय हाय ऊपर केला । पारो जिश्चज कऽ देखैँ बजली "ई डोल
 िऽ अपन नश्च ञ्छए । अपन डोल पुरान छलैँ आ ई िऽ नँ छै ।"
 बैजू सेहो जिश्चज कऽ बजला " हँ ई िऽ जनु अपन नश्च ञ्छए ।
 " बैजू ई कश्च फेरसँ काकोर इनारमे खसा िहऽ लगला । कने
 काल िहला पछाइँ फेर एकटा डोल फँसलैन । ऊपर आकल्ला बाद
 देखलैन िऽ ई डोल हुनके छलैन । पारोके सुनबैँ बजला " देखौ ई
 डोल अपन ञ्छए । "

" िऽ ई अपने ञ्छए । ई छोड़ी बजबो केलै । "

" अश्च दोसर डोलके ञ्च करँ । "

" नेने चलबै अंगना की । कोनो हम केकरो चोरा लेलए हन । "

" जेकर हेँ ओकरा दऽ देँ । एके इनार भेने कश्चयो नश्च कश्चयो
 देखए ले । बेमलिबक झगडा हेँ । "

" हम नश्च एकरा जँका बटने घुरए छी । आरँके डोल फूट गेल
 छै ओकरे भेज देबै । "

बैजू कश्चाक बाजब सुआ छुबि भऽ गेला आब बजति - - - - -?

बीहआ कऱि-उपऱिस

जानेदरक नजश्च कनीया पर पश्चँ पूछलैन

--- "हे यइ! एना ञ्छए लटुएल पटुएल छी ?"

--- " आए देउठौन एकादशीक उपऱिस एछ ञ्चने िँ परसँ ई दुनू
 िँकि हैरान केलक अश्च जे पूछू जूआ । "

--- " आब की चाही नि - संपश्च, काया - समाग आ जानसँ
 नश्चअरे - सासुर भरल पूरल छीहे खिनो देहके ञ्छएक सँबैँ छी
 । "

--- "जाउ अहुँ जे हेब न! " कोनो बाल बच्चा नञ्च अञ्च । बाल - बच्चा आ सोहागक आंकि केकरा नञ्च रहै छै? "

---" िऽ अहाक कहब अञ्च अञ्च लेल अहा देह सनिने छी? एना देह सनिने सब ठीक रहै? "

---" अहुँ जे हेब न! अहा जे बुझए । "

---" मासो अन्न नञ्च भेलए हन बमभोलीक कनीया सखरा भर्गीक दशम लेल जाए छली । बाटमे टैम्पो उलैट गेलै आ ओ बेचारी मञ्च गेली । "

---" हे जुलुम भऽ गेलै! श्रिया पुनिक जे गै होए छै कहल नञ्च जाए । "

--- "हिन अञ्च कहू अने जँ उपीस रखने सब कुशल रहै िऽ ओ बेचारी िऽ अपन पाणे अग्रि कऽ देली हिन श्रिया पुनि----- । " जानेरक गप सुइनि कनीया एकटकी लगा देखै - - - - - ।

बीहआ कनि- अकि

दादी आमसा अपना जमानाक दशम शास्तमे एम. ए कऽ अहार श्रिश्रिदालयमे दशम शास्तक अध्यायका छली । पोनी सुजाणि आ दादीसँ नञ्च केलि मेलजोल रहै छल बञ्चक सञ्च बञ्चनपा जेका दादी पोनीक बीच संबंध छलैन । सुजाणिके जखन जे मनमे अबै दादीसँ बेरि क पूछ लै छली । दादी सेहो आसंकोच सुजाणिके अजासा शा कऽ दै छली ।

---" दादी ! एकटा बाणि पूछौ ? "

---" हँ पूछ ने "

---" जिऽ बहु रास कुलटा स्त्री एके संगे रहै अञ्च ओकरा की कहै छै ? "

---" शिष्यालय ।"

--- "जिऽ बहु ि रास चञ्चलहीन पुरख घरे-घर होए ओकरा की कहै छै ?"

दादी सुजातिक अजासा सुअ ओके रञ्च गेली । कारण जबाब - -
- - - ।

बीहअ की- लाल काकी

आइ भोरे भोर दरबज्जा परसँ सहअ सड़क पर िरबे दूर गेला
पछाड़ि लाल काकी पर नजअ पड़ल । लाल काकी देखि बजलीह
---यऊ बउआ! अअँके किँ अबै छलूँ ।

---की बाँ काकी ?

--- कने हमरा अंगना एब ।

--- कहुने की बाँ ।

--- देखही! अंगना एब बिने ।

--- बेस एब ।

जलपान कऽ लाल काकी अंगना पहुँअ पूछलएन

---कहु काकी की बाँ?

---- कका फोन केने छला आ कहलैन एकटा दूगिर गाए भअयाके
खरीदबा देमऽ लऽ ।

---- बेस ! ककि कि भऽ जाएँ िऽ लऽ लेबै ।

---- कमसँ कम कि भऽ जाए । हम लगा नअ राखब ।

हम लाल काकीके मूँहे किँ रञ्च गेलहूँ ।

बीहआ कऱि- ठेकनगर

केक अन्नसँ दीपचन्द्र आ रपचन्द्र दुनू भायक बीच आनौजी फअछोट होए छलै। दुनू भाय अलके भअ टोलक लोकके बैठौने छला। टोलक लोक अपना असाबे सब कऱिक बटबारा कऽ देलैन्ह।

अंमे बाचल अीबा माए आ अलबटैह बअन। पंच लोकैन्ह पूछअन्ह "अए दुनू माए - ि के कोना पार लगअन्ह। दुनू भाए सोअके कहु।" दीपचन्द्र बजलाह अपने सबहक जे आदेश है ओ हमरा सीकार अअ। "रपचन्द्रके पूछला पछाअी ओ असमंजस होए भायक बाकिे समअि करै बजलाह-" अपने सब आणय कऽ अऔ। जे आणय है ओ िऽ मानै पड़ि। "पंच अपन बाि दुनू भायके सुनबै बजलाह - " हमरा लोकअक अचारे एक भाय माएके रखयौ आ एक भाय बअनके। या मड़ौसी सम्मअसे अलजुमले 10 कटा जोसिम आ पाच कटा गाछी संग दुनू माए-ि के कोनो एक भाए सेहो राअ सकै छी। ई सुअि रपचन्द्र दुनू परानी बाअ उठल हम माए आ बअन दुनूके रखबा लेल ियार छी। जखन दीपचन्द्रसँ पूछल गेल ि ओ बजलाह "आब बटबा लेल ि अछ नअ बाचल अअ ि हम की बाजी।" पंच लोकैन्ह जब उठै उठै पर भेलाह हिन दीपचन्द्रक पती बजलीह - - - "एक बेर मािजीसँ सेहो पूछअन्ह न। हुनकर की मन छैन्ह।"

पंच - "बूढी अहा कहु, अहाक की अचार अअ।"

माए- "दुनू बेटा ि हमरे छी हिन रपचन्द्र सब अन्न परदेश रहल। हम माए बेटा दीपचन्द्रक गाि पकअ अखन कि छी। एसगरे रअि ि कोनो रिनी रअ लैि परंच संगे भगानिक देल डाग सेहो अअ।"

दीपचन्द्रक पती - "माए आ बुच्चीक लेल देल संपञ्चा रप कऽ दऽ देन्हि । हम दुनू गोटेके रखबैन्ह ।"

जखन रपचन्द्रके पूछल गेल िऽ ओ कुछ बजबे नञ्च केलाह । आँखसँ नोर बहै छलैन्ह ।

पंच सेहो दीपचन्द्रक पतीक ठेकनगर गप सुञ्चा अबाक भऽ गेलाह । सब संपञ्चा बराबर करै माए बेटीके दीपचन्द्रक पतीके सोइप उञ्च श्चदा भेला ।

बीहञ्चा कऱि- झूठक खेी

----- की कहु भाय देखके िजजुब लगै अञ्च ।

----- से की यऊ भाय ?

----- पञ्चने िऽ ई खेी चोरानुकाके होए छल परं आब िऽ कोनोटा संकोचे नञ्च छै ।

----- भाय कने फञ्चयाके कहुने । कोन खेी ?

----- ओ जाउ भाय अहा एखनञ्च नञ्च बुझञ्चाए ।

----- कने फञ्छ कऽ कहुने ।

----- झूठक खेी । ई खेीओ करबा लेल स्पेशल औजार घरे घर आञ्च गेल अञ्च ।

----- कोन औजार ?

----- भाय अहुँ ञ्चने ! यऊजी मोबाइल । देखै नञ्च ञ्चए लोक रहै अञ्च कऱि आ नाम कहै छथी कऱिक ।

बीहश्च कऱि- पड़ोश्चया डाह

- सुनै श्चए! आइ लालमैनक बेटा एक टमटम समान लऽ एल ।
 ---- के फोकना एलै हन ।
 ---- हे! बोरा सब उठना नश्च उठै छलै ।
 ---- कमाएमे िऽ कोश्चए छल । कऱि हाि साफ कऽ एल हेि ।
 ---- लालमैन दुनू सास पूहि अफस्याि छली बोरा-बोरी घर करबामे ।
 ---- श्चए अंगनामे और कोए नश्च छलै ?
 ---- ति! केकरो ही िऽ लगए नश्च देलकै । भश्च दुपहश्चया घर बन कऽ समान सबके ििनो परानी गर लगा लेलकै ।
 ---- फोकनाक देह दशा केहन छै?
 ---- अहुँ केहन गप करै छी ! ठीके हेि की ।

युश्चि शश्चि (लघु कऱि)

बैसाख मास । ओना दूए श्चनक बाद जेठक आगमन होए बला छलै । उमस भरल दुपहश्चयाक समय । अपने भोजन केला बाद ठंडाक बाट जोहैि गाछी श्चश टश्चल गेलहुँ । गाछी पहुँचिश्चि बाबा कहलैन "आब िि कने काल रहऽ हम नहेने खेने अबै छी ।" बाबाक बाि सुश्च हमहुँ हामी भरैि कहश्चएन " बेस! जाउ न ।" हमर बाि सुनैि बाबा चश्च गेलाह । बाबाक गेला पछाइि गाछीमे टश्चल टश्चल गाछक आमके श्चआबऽ लगलौहँ ई सोश्च जे जँ गाछमे बेसी आम पाकल हेि िऽ जाए बेर झखा कऽ नेने जाएब । बाबाक नजश्च कमजोर भेने नश्च

देख पबै छथिन। जँ ही अहाश्ममे अड़बो करि िऽ छौड़ासब बाबाके एक िऽ पैरपैख नश्च लागऽ देनि दोसर जे जँ केओ कश्चाओ पेमसँ मंथानि िऽ मना नश्च करथिन सहजे दऽ देखिन । कारण बाबाक हमश्चटा पोनि नश्च बश्चक भश्च गामक बाल बोकि बाबा छथिन। जाबे दादी जीबै छली िश्चि दादी आ बाबाक बीच होएि कहा सुनीक श्रिषय इहे रहैि छल। बाबा पर भश्च गामक बाल मंडलीक जेना सश्चि छला। बालो बेदरक बाबा बाि िबिे मानैि छल। समाजमे जबिे गंभीरीक पश्चचय छलैन िबिे बाल बोि लेल खुजल कश्चति छलैन।

भश्च गाछी घूमला बाद आश्च खोपरीमे मचान बैठ गेलहुँ। िश्चि देह सेहो ठंडाएल। अमरस्साक नीनक आगमन भेल ठामै लेट गेलहुँ। नीन पश्च गेलहुँ। कश्चाए कालक पछाइि दूटा छौड़ा निनै हल्सा केलक जे नीन टूश्च गेल। दूनू बकझक करै छल। हम सेहो सश्चटके लग गेलहुँ। िबिे बाबा सेहो आश्च गेलाह। बाबा दुनू छौड़ाके दबारैि कहश्चन "रै छौड़ा सब कश्चीक हल्सा अए रौ। खेलहा अन नश्च पहलौ हन।" बाबा बाि सुश्चा दुनू छौड़ा सश्चटके लग आश्च पश्चने घुसका बाजल "बाबा अश्चँ कहु जे सबसे पैघ शक्कि होए अश्च न?"

घुसकाके कहला बाद दोसर पीणि बाजल " बाबा सबसँ पैघ युश्चि होए छै न ? दुनू छौड़ाक बाि सुश्चा हमरो श्रियान बाबाक अणय सुनबा लेल एकाग भेल। कारण हम बाबाक सभिसँ पश्चाश्चि रही। भलश्चँ पूछने दुनू छौड़ा छल परंि पश िऽ गंभीर छल।

बाबाक एक मन भेलैन कोनो रिहे अश्च बाकिे सहटैर अए कारण उरि िऽ कोनो एके बच्चाक पछमे हेि िऽ दोसर बच्चाक मन टूश्च जाएि। फेर भेलैन जे बच्चाक अजासाक दबौने न पिढीक जानसँ

अमुख हेबा पापक भागी बनब। खिने हुनकर श्रियान हमरा पर पलैन। सोचलैन आब जबाब देबए पड़ि। हिन रीका कोनो दोसर अपनाबऽ पड़ि।

दुनू छौड़ाक श्रियान बहटबै बजलाह " एकटा बाि बुझलही हन त्रि सब ? " दुनू एके संगे कहलक "की बाबा ?" काइ बिबर पहर अदेशर गाछ परसँ अर पड़ल। कहा अन्न डारे भरे अरल से डार आ जाग्रक हडडी टूट गेल छै। " घुसका आ पीण अपन अपन बासँ हश्च अश्च घटनाक बाि सुनऽ लागल। अपने सेहो अजासा जागल। कारण गामक घटना छल। पूछअएन" कोना खैस पड़ल?" कहलैन " बड़की पोखरक महार पर नै पेरे कामि सुरगंभा सरही आमक गाछ छै श्रि पर त्रिन चाश्चटा अयरबुन पाकर आम छलै। कना नै कना अदेशरक नजश्च ओश्च आम पर पश्च गलै।" हम पूछअएन "सरही आम अखन कि लगले छलै ?"

"नश्च, आम त्रि दस अन्न पश्चनए त्रिश्च लेने छल। ओ छुटलहा आम छलै। लगोमे मुनेशरक घर पर दरबज्जे पर लगी राखल छलै त्रि अश्च श्रियाने नश्च गलै आ आम पर नश्च पश्च त्रि नश्च औ देखलक आ नश्च त्रि गाछ पर चश्च गेल। "

" हिन?"

" चढै चढै गाछक फुनगी पर चश्च गेल। आमक डाश्च अबाऽ लागल आश्च कमजोर डाश्च रहने टूट गलै। ओ जाबे दोसर डाश्च पकैडि त्रिबे जश्च पर ठाढ़ छल सेहो टूट गलै। अर पड़ल। "

दुनू छोड़ा जनु अपन बाि असेर गेल। बाजल" बाबा सपेतिमे दस बारटा आम पाकल अश्च। लगीसँ त्रिश्च दौ। " बाबाक सहमश्रि पाश्च नुनू आम त्रिडै लऽ चश्च गेल। हमर श्रियान जखन छौड़ाक पश पर

गेल की एकाएक अदेशरक घटना पर ठमैक गेल । बाबाक देल जबाब
सुआ मूँह पर मुसकी आब - - - - - ।

पण्णि कुमार झा

लघु कवि- न-आशा

मीरा आई पञ्चल बेर हीई जहाज के याता क रहल छली; पटना सं बैगलोर गिया झल्लरी । पटना सं ि ओ झल्लरी पहुँच गेल छली मुदा झल्लरी से बैगलुर क फ़्लाईट दू घंटा बाद छल । मीरा इंश्चरा गाँि हीई अडडा के पीकललय मे बैसल इंजियर क रहल छली । दरअसल बाँ ई छल जे ओ अपन एकटा छाता आशा क झीह मे शाञ्जल होई खाश्चिर बैगलुर जा रहल छली । मीरा के झीशेष र प सं आशा न्योि देने छल आ झनका लेल न्योि के संगझ हीई-जहाजक झकट पठौने छल । आ सब सं झीशेष गप्प ई जे, जै फ़्लाईट सं मीरा झल्लरी सं बैगलोर जाई बला छैि ओकर पाईलट आर झयौ नै बझ्झ आशा क होमय बला रि आकाश कुमार छैि । बैसल बैसल मीरा क मोन अँिि क याता करय लागलैन ।

मीरा गामक मध्य झीदालय मे झाझ्झका छझैन । एकटा झक झाझ्झका, जे झिया-पुि के खुब मानै िली । बाँ झछु १५ १६ बरष पञ्चले के आझ । मीरा झाझ्झका के क्यसिय के अपनौने छझ ि इ मूल-मंत के संगे जे "सब बझ्या भर्गाँिक संगिन िक आ ओकरा लाड-दुलार केनाई मनुक्खक कयि" । झन् हुनकर कक मे एकटा बझ्या आबै छल जेकर नाम छल "आशा" । आन बझ्या सब ि झक-ठाक सं रहै छल मुदा आशा नै ढंग सं स्कुलडेस पझरै छल, नै ओकर झकिब-बसी ओझ्याईल रहै छल । नै माँि मे िल देने नै झक सं केस किरने । मैल-कुचैल मे लपटायल! इ सब देख मीरा के ओकरा स घिन आबै छल । आ ओ चाझ्झि ओकरा नै ठीक सं पढा पाबै छझ आ नै ओकरा सं दुलार क पाबै छझ, अथि

यदा-कदा ओकरा दुत्काइयो दै छलखन । मुदा मीरा के अपन इ
 क्यहार पर कखनो काल आत्मग्लानि होई छलैन । एक खन अपन
 इ समस्या मीरा धीदालयक हेड-मास्टर साहब सं साझा केलैन ।
 "सर अहा कहै छी जे सब बच्चा भगिनीक संनि निक आ ओकरा
 लाड-दुलार केनाई मनुखक किय ।" हम ऐ धीचार के मानै छी ।
 मुदा अही कहू जे औइ बच्ची सं हम कोना क दुलार क सकै छ
 जे नै ढंग से कपडा पछरै अछ आ नै जेकरा साफ-सफाई के कोनो
 जवाब अछ" । धीदालयक हेड-मास्टर शी शशभुषण झा बडड
 सौम्य व्यक्तिक इंसान छालाह । ओ मीरा क सभटा बाँसु क
 कहलै : "मीरा अहा ओई बच्चा क समस्या देखलौ मुदा की अहा
 ओई समस्या क कारण बुझबा क चेष्टा केलहुं? अहा इ बुझबा क
 पयत केने रक्षि अहाक आई इ बाँसु असोकजयनै रहि छल
 जे अहा अपन किय क पालन कर सं नै क पास रहल छी ।
 ओ बच्ची एकटा दुखियारी बच्ची अछ जेकार बाबू जहाडी मजदूर
 अछ आ माई कैसर सं पीडीनि! आब अहा कहू जे एहन स्थिति मे
 ओकर ठीक सं पचया के करि? आ इ सब मे ओ बच्ची के कोन
 दोष ? मीरा ! अकन-चुनमुन आ सुनैर नेना सब के नि सभ केयौ
 दुलार क लै अछ मुदा आशा सन जे इशरक संनि अछ ओकरा
 जे दुलार क पाबै अछ हि इशरक सच्चा सेकि होई अछ । की!
 अहाक अखनो कोनो आशंका या असोकजयअछ? " मीरा क अपन
 सभटा पशक जिब भेट गेल छल । आ ओ अपन कमीयो के अन्ह
 लेलखन । आ आब समय छल ओई कमी सं पार पाबैक । मीरा
 आब अपन सभटा ग्यान आ दुलार आशा पर उझैल देलखन ।
 ओकर पढाई-खाई, कपडा-लता, लि-कूड़ सबहक ध्यान ओ
 राखय लागलखन । कालान्तर मे आशा क माई क देह भि गेल

छल । आ आशा सेहो मीरा क छतछाया मे बरहै मैटीक क नेने छली । ओ मैटीक क परीक मे सम्मूणयअला मे टाप केने छली । डीएम साहब आशा के एख उपलब्धि लेल अपन हाँ सं सम्मूर्ति केने छलथिन । मुदा ई कि कामयाबी क पश्चल सीढ़ी छल । अखन कि आगा कामयाबीक अनेको अहानी अखेनाई बाधक छल ।

मैटीक के बाद आशा के पोस्ट मैटीक स्कालरशीप सेहो भेट लागल, मुदा आब हुनक बाबूजी हुनक श्रीहि क सुर-सार मे लाय गेलाह । ई बाँकि कनै-कनै आशा मीरा के बनिने छल । मीरा ओकरा ओख अखन बडड मोक्षफल सं चुप्प करेने छली । " ऐंगे एख लेल कि एना कनै एक छै । हम बुझैबैन ने मीरा बाबू के आ ओ बुझयो जेनि । हम मस्टरनी जे बनलहुं से कथि लेल? एं हमर कि काजे अख लोक के अक-बेजाय बुझेनाइ । आ हम केह-केहन के कि बुझा क पटरी पर आनने छी । अहा कि बडड होशायार नेना अह आहा कि आगा बडड परहब आ पैघ डाक्टर बनब ।" मीरा के दारा सान्तिना के लेल कहल गेल ई किम सब आशा क मोन मे घर क गेल छल ।

मीरा आशा क बाबूजी के बजौली । हुनका कहथिन औ जी अहाक भगति कृपा केने छै जे एतेक अक बेटी देली जे मैटीक परीक मे समुचा अला मे पमि आख अहाक संगअ गाम-समाजक सेहो नाम केलक अख । आ अहा एकरा पैर मे श्रीहिक सीकडी बान्हय चाहै छी ! आशा क बाबू कहलथिन "देीजी अहा कहै कि ठीके अ मुदा हम गरीब अनपढ़ लोक छी अहाडी मजूरी पर अय बला आ आगा-पाछा अयो अयो नै सम्हारै बला; माय एकर पश्चनअ छोअ क

चल गेल अशु। एना मे अही कहू जे बेटी क बाप होमय के नाहि हम एकर श्रीहि कय एकर घर बसा देबाक श्रिय मे सोचै अशु से अशु गलि करै अशु? मीरा कहलअखन अहा अपन सक भैर ि आके सोचै छी मुदा एअ सं आगा बरहु। आशा कोनो साणिण बाअका नै अशु। ओकरा मे समाज के आगा बढ़ाबै के सामयिअखने सं देखबा मे आअ रहल अशु। िअ लेल अहा इ आजी समस्या से आगा सोचबा के पयत कर। एअन ओकरा पढ़ाई के समयि लेल एकटा छातश्रि भेलट अशु, आगा आर कैयेक टा भेटि जै के बल पर ओ आगा अपन पढ़ाई आ अअनगी मे सीबलंबी भ जेअ। हि सं जौ अहा के भरोस नै अशु ि अहा के हम चिन दै अशु जे आइ सं मीरा क सभटा भार हम उठब लेल ियार छी। एअ पकारे येन-केन दलील सं मीरा आशा क बाबू के राजी क नेने छअ। आब आशा के नाम इंटर मे अअखा गेल छल। दअभंगा मे रअ ओ सी एम साइंस कालेज सं इंटर क पढ़ाई कर लागली आ संगअ मेअकल पशि परीक क ियारी सेहो। अपन खचयअकाल लेल ओ वयूशन पढेनाई सेहो शुर क देने छअ आ संगही जर र पि पड़ ला पर मीरा क मागअशम आ सहयोग सेहो भेट जाई छलैन। एही पकारे मीरा क मागअशम, आशीदि आ अपन मेहन-लगन के फल आशा क ई भेटलैन जे ओ इंटर के संग बीसीईसीई परीक सेहो पास क गेल छअ आ दरभंगा मेअकल कालेज मे हुनका एमबीबीएस पाठयर म मे पशि भेट गेल छल। आब आशा न पिंख लगा क सफल पि क न 'आकाश' मे उड़ लेल ियार छअ।

अन अहि गेल आ रमश: आशा एमबीबीएस क क डाक्टरी के पाअक अगी पापि क लेली संगअ पीजी अअत्सा पशि परीक मे

आक रैक आआ क ओ जीपमर मे एमडी मेडीसीन के पाठयर म मे सेहो पशि पाआ गेली आ एअ पकारे पीजी केली आ आई नरायणा हुदयालया बैंगलुर मे डीएनबी(काअयोलोजी) क टैअंग के संग आआयर रेसीडेसी क रहल छै । समय के एअ कालर म मे आशा क संपकय मीरा सं िरे िरे कम होइ चि चल गेल छल । मुदा आशा अपन मूल्य आ संसकार के संहारने छअ । सफल ि क एअ आकाश पर चढला के बाजिद ओ अपन जिद आ ओकरा बनब िली अपन गुरआई के नै आसरल छअ । सीई ि ओ बाआ ि के रम मे अक्सर आकाशजी से मीरा दीदी के चचा केने नै िकै छअ । आ अक्सर कहै छअ जे हमर अहि मे क्यो आबै अ नै आबै मीरा दीदी के ि बजेबे करबै । आ आकाश मजाक मे उतर दै छलअन जे अहा आ ि जुअ कर अहाक मीरा दीदी के ि हम अपने जहाज पर चढा क नेने चअ आयब नै ि अहाक कोन ठेकान जे फेरे लै सं मना क दी !

इ सब सोचै सोचै अचानक माईक पर अमानक अनासमेट सुअ क मीरा क भक खुजलैन आ ओ अपन समान उठा क चेकईन के ले अिदा भ गेली ।

चन्दना दत्त- राटी (मडिबनी)

बाबा लालदास

“जे क्यो ई की मनदय सुनीह आका सन्धि, सम्पत्ता एहि सौभाग्यक द्वि होयनिश्च। अन्काल कि मिश्रजक पसादे अभय रहिह।”

पाणि: स्मरणीय मा साध्वीतीके गोड़ लगै सभ स्तीगण बड़क गाछमे जल ढारए लगलीह।

“ईकी बडड नीक लगै अश्च सुनबामे, एि गाछ रि बैसल रहै छी थंकी माइक आसमे। हुनके लग छन्श्च ई पोणि, एक गोटा बजलीह। सुआ हमर माइक ठोरपर मुस्की आश्च गेल।”

‘हमर परबाबा आखने छथी’ गौक्थी छलआ हुनकर कमे। माइक संग हमहूँ गेल छलहुँ बड़ए गाछ रि। अस्सा-अहानी नीक लगै छल सुनबामे। िश्च अन्मे स्तीक लेल ‘सम्पत्ता, संधि आ सोगाह’ क महाता की अश्च से बुझल कहा छल? जजन भेलापर जाहि भेल जे ई पोणि ‘स्ती मियश्चाक’ हमर माइक परबाबाक आखल छन्श्च, जश्चा ओ बहुमूल्य िणि जका रखने छलीहअएक ि हमर माएके दहेजमे ई पोणि भेटल छलआ। ओ छलाह महाकथि पण्थि लालदास।

ककि अल्प शब्दमे बाबा लालदास ककि पैघ आशीदि स्तीगणके देलअन्ह अश्च ई हुनक थिचार एि लेखनीक थिशेषि छन्श्च।

कोनो नारी लेल संधिक की महि अश्च ई हमरा सभके सदपसि नारीक ठजेरक मुस्की देख्ब बुझना जाइ अश्च जे कोरमे आशुके लए जखन स्निपान करबै छथी ि अपन भिम कष्ट असश्च जाइ छथी जे ओश्च बालकके जन्म देबा काल उठौने रहै छथी।

सम्पञ्चक महता ि आञ्चकालसँ सभ स्तीकार कयने छथी मुदा स्तीगणक लेल अपन घर-गृहस्तीके सुचार र पसँ ियिस्ती ि रखबाक लेल सम्पञ्च भेलाइ अिाशियक रहै छन्थ । भनञ्च ओ नि सम्पञ्चक अजब नञ्च करै छलीह मुदा सम्पञ्चक संरक्षण करबामे किक ियोि लगबय पड़ै छन्थ एञ्च बाकि संयुक्ि पञ्चरिमे रहञ्चहार बाबा खूब जनै छलाह ।

सौभाग्य ि स्तीके नीक पञ्च भेटलाक उपराि पापि होइ छन्थ िञ्च सौभाग्यक लेल साञ्चिती थि, नारद मुञ्च आ अनि िञ्च मिञ्चजोसँ अपन बाि मनबा कऽ रहलीह । एञ्च कानिमे ईहो ञ्चखने छथी जे ञ्चिलामे माए सभ अपन पुतीके बाल्यासिसँ ञ्चखाय-पढ़ाय, उत्तम उत्तम उपदेश ओ गृह पञ्चचर्या आञ्च स्ती मिञ्च सुञ्चञ्चि कय लोक हेि आदशयबनबै छथी ।

कोनो मिञ्चसँस्कृथी ि संस्कारक पचार-पसार ि संरक्षण समाजमे स्तीगणे दारा होइि आएल अञ्च । आइ जँ थिदापञ्च थिश्पिञ्चि भेला ि एञ्चमे हुनक कायिके अपन गोसाउञ्च गीि बनाय, अपन स्रिलहरी देबय िली स्तीगणक महिि कहिु कम नञ्च कहल जा सकैछ ।

आइ जखन स्ती-ञ्चाकपर थिश्ि स्रिपर जोर अञ्च । ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ क नारा बुलन्द भऽ रहल अञ्च ओयि आइसँ सैकड़ो षियपूयिञ्चिलाक बेटी सीि-साञ्चिती अपन आचरण, मिञ्चासतक जानसँ थिश्कि लेल आदशयउपस्थिि कयने छथी । महाकथीक लेखनी स्ती मिञ्चाकसँ रामायण किमे अपूयिचललञ्च ।

मकाकथी लालदासके थिश्िसि छलञ्च जे सीि ञ्चनका रामायण ञ्चखबाक लेल पेञ्चि कएल । ‘बह थिियपुराण’ क अनुसारे लक्मीक जन्म कुशजिक पुतीक र पमे भेलञ्च । लंकापञ्च राणि अंकार मदसँ भरल छल ओ ञ्चनक सौदयथर आकृष्ट भए लक्मीसँ थिीह

करबाक लेल उदहि छल। लक्ष्मी राणिक एक्ख पकारक यिहिरसँ कुर्बि भए सराप देलथिन्ह आ किकरे पञ्चणामस्त्रि प सीतिक र पमे अथीलामे जनम लेल जे राणि सपञ्चरि समूल नष्ट भए सकए। लालदास कथोरिक हेतु सीति नि मा मैथिली सशिक्षमान छथिन। मैथिली साक्षरियमे लालदास सीतिके गश्मा पदान कएलथि आ अथिलाक बेटीके सीचि सनि देलथि।

“सीति चर्चा लक्ष्मि अनुमाथि।

रामकनि भए कहब बखाथि।।”

महाकथी लाल दास अपन रामायणमे अथिलाक सभ्यति एहि संस्कृतिक अतण शिशद र पे कएलथि अथि। मुख्य र पे अथिजा अचमा, सीति अचमा, परदा पति, शिहोत्सवि, अथिथि सकिार, महुअक, डहकन, उथिथि, थिकिरी, दुरागमन, समदाउन, भार-दउर केर शिशेष णिष कएलथि अथि।

अपन माथिभूथि पथि महाकथिके पेम हुनक लेखनीके अथिलाक गौरि गान करबामे दृष्टियि अथि-

“जन्मभूथि नैहर सीतिक। जयि सयिं थारि प थिक।।

शकथिपीठ उत्त सनि। उगभूथि सभ भाथि महान।।”

अपन माथिभूथि णिष कए महाकथि अथिला राज्यक शोभा सुन्दरति, अथिलाक उदान, नदी, जलाशय, खे-पतिर संगथि अथिलासिक सदाचाथि, पिस्या, मिथियति पभूथिक णिष अनेक दृष्टिसँ कएलथि। ई मयिलोकमे अथिलाक तुलिना सुरलोकक शिषणुमिसँ कयने छथि-

“आसमान अथिलापुरी, रथि सन जि पचण्ड।

बुथि पड अनुमप देश जथि, मथिगि सगिक खण्ड।।”

अथिलाके पाकथिक सौन्दर्ययानुपम अथि। गाछ-थरीछ, नदी, पोखथि,

जी-जन्तु अडै-चुनमुनीक कीकीरि लेखनीमे मुखअ भए
आएल अछु । यी-

“ककी की मृग पशु-जन्तु अराज

से जअ पिअक पजा-समाज,

गरजे मृगपकी बैर-अहाय

मुअ पहरा अ पड़ए सदाय,

शुक अक चाकि चर चकोर

गुंजय मरि मरि सुराग

ीण िद सम सुअ अय लाग... ।”

ऐ पकारे हम कअ सकै छी जे बाबा लालदास जे उदट कीदान,
शक्की पूजक, गदकार, अतकार, अअकार, भाषाकीद,
कलाकार, समाज सुारिक, राष्टीय चेनिक सम्पोषक, ओजसी
कि छलाह ।

हुनक कीराट यिक्की आ नीन मागय पदशक ि उदार
दृषकोणक फलसरि प हम कअ सकै छी गिअ अ हम एहन
जाकीसँ छी जयि सभ मअला साकर छलीह आ ई महाककीक देन
छल । अएक ि दहेज सरि प एहन अनमोल पोी बेटीके देल जाइ
छल जे ओ बेटी सभ दुहु कुलक नाम रौशन करै छलीह ।

महाककी लालदास आज भाषानुरागी छलाह । मा मैकीलीक संग अपन
मािभाषाक हुनक पेम मैकीलीक पकी अखल एअ पंअमे देखल जा
सकैछ-

“आज भाषा जननी आज देश

सगिसँ जानकी जन ि ।”

आअरमे हम खडौआक माअ-पाअक पकी अपन भाि कहब । हमर
मा-पापाक कीहिक पचासम षियाठ छल- 16 मई 2012 के ।

फारसगंज संधीं आज आस आचायपूरीमे, छोट-छीन कायमक संग हम सभ भाए-बच्चन आ बहुि रास पञ्जनक संग हमर ध्य नानी सेहो उपसंधीं छल। पूजा-पाठ भोज भाकि पश्चां राक्षमे नाथी-नाथीन, पोथि-पोथी सास्कृतिक कायमक आयोजन भेल। सभ खूब आनन्द छल।

श्रीया-पुथिक नाच-गानक पश्चां हम मायसँ पुछलहुँ- “अहा अपन श्रीहेक पश्चां पापासँ गप्प-सप्पक कछु पसंग कहू।”

मा बजलीह- “ई ई श्रीहेक राक्षसँ हमरा अंगरेजी अखबय लगलाह, मुदा हम लालदासक परपोथी अपन मैथिली कोना छोड़िहुँ।”

शिशुपर हमर बड़की बच्चन ‘अंकी दीदी’ चुटकी लेलक-

“अंगरेजीक श्रीभाग्यिक हमर बाबूजीके मा मैथिली अखबा कऽ मानल हिन ने साक्ष्यिक अकादमीक मैथिली अनुदि पुरस्करसँ सम्मानि भेलाह।”

नट्टि कुमार झा, (मैथिली पत्रकारिता लेल वैदेह सम्मान पाप)

गाम मे समष्टि रहल पभा आ चचा भेल शिक्षाक पभाकि- साक्षरता
अकादमीक भुसकौल मंडलीक कारनामा

देशक पक्षि सि सरकारी साक्षरताक संसि साक्षरता अकादमी पटना मे अपन साक्षरताक उपक्षि दजयकरा अपन उपलक्षि मे एकटा आओर कड़ी जोड़ लेलक। बहारक शिक्षि पक्षिआक्षि सामाजिक, सांस्कृतिक, साक्षरताक संसि चेनि सक्षि सहयोग सँ सम्मान कायस्थमक बाद आयोजक गदगद बुझ पड़ै छलाह। मुदा सम्पूर्ण आयोजन इ सप्प कऽ देलक जे साक्षरताक अकादमीक मैथिली परामर्षाती सक्षि (मैथिली भाषा परामर्षमंडल) पचण्ड बुझक मंडली अछि। पैघ संसि छल, पैघ आयोजन छल ि पैघ आ पचण्ड क्षिदानक उपक्षि मैथिली साक्षरताक लेल गौरिक क्षिय सिभाक्षिके अछि। क्षिय चाहे जे हो क्षिदानक संगक्षि मे भक्ष क्षन क्षलि ि नीक-नीक जनबि भेटबे कएल। मुदा जाक्ष उदेष आ क्षिय पर ई कायस्थम केक्षि छल ओक्ष पर मैथिलीक पचण्ड साक्षरतानुरागी सभक ध्यान नक्ष छल। उदाटन सत से लऽकऽ कऱि संक्षि क्षिक सत जान अजक्ष करऽलि अक्षि रहल। क्षिदान सभ क्षिदीपूणय गप उपक्षि शोिक जानक भंडार के अक्षि बढौलक आ क्षनका अपन जान पर क्षिषे भरौसा छल ओ अपन स्माटयफोन पर “फेसबुक” क पेज खोक्ष अपन जानक उत्सजक्ष करै रहलाह। हमर ि दाबा अछि जे इ सम्पूर्णकायस्थम क्षिय सँ क्षियाि रहल। एक्ष आयोजन मे सभ सहभागी क्षिदानक क्षिचार जानाअजक्ष मे सहायक रहल। इ कहबा मे कोनो संकोच नक्ष जे इ सरकारी आयोजन कोनो क्षिय पर केक्षि कऽ सरकारक खजाना के चूना लगैबाक सफल पयास रहल।

भने मैथिली भाषा के संश्लिष्टिक अष म् अनुसूची मे सीन भेष्ट गेल हो। श्रिदान एष्ट आयोजन मे सञ्चालि श्रिदान आ परामर्शमंडली नह कटा शहीद हेबा लेल रियार होश्री मुदा हुनक योगदान नाम मात अष्ट। खैर आब हमहूँ श्रिषयारि भऽ रहल छी। अष म् अनुसूची मे सञ्चालि मैथिली भाषाक आब गमैया पभाि समापि हेबा श्रिष्टि मे अष्ट। गाम घर सँ आब जगि जननी माि सीनिक भाषा मैथिली श्रिदा भऽ रहल अष्ट। मैथिली भाषी केत मे श्रुन्दी जष्ट गश्चर भेल जा रहल अष्ट। मैथिली भाषाक केत आ आबादी बष्ट रहल अष्ट। जखनश्च सरकारक आंकड़ा मे मैथिली बजनहारक संख्या घष्ट रहल अष्ट। एष्ट श्रिष्टि मे मैथिली साक्षरता, आ पतकाश्रि पर रीष्टिक पभाकि चचा करब मात गप्पबाजी अष्ट।

आब जखन सरकारी संसि अष्ट ि ओकर बजटक उपयोग करब हमरा सभक नैष्टिक दाश्र्ति अष्ट पूरा देशक शासन कसिं लोक कल्याणकारी कसिं अनिगि चष्ट रहल अष्ट। सरकारक सेहो दाश्र्ति अष्ट जे ओ लोक सभक (श्रिषष) कल्याण करए। सम्पूर्ण समाजक कल्याण करब कोनो सरकारक लेल संभि नष्ट अष्ट मुदा श्रुष्टु श्रिषष लोकक ि कल्याण भइए सकैि अष्ट। से अहूँ आयोजन मे भेल आ पूरा सफाइक संग भेल।

एष्ट कायश्चमक श्रिषय ि बड़ व्यापक छल। एष्ट मे सहभागी श्रिदान सभक श्रिद्वी पर सेहो कोनो आषंका नष्ट। कायश्चमक आयोजन आ कानििक पश्चिभा ि मानहे पड़ि। खिन नष्ट जे अपन सेिकाल मे मैथिली के अपन साधं बुझलश्च श्रिनका एहू बेर साबिक असिर भेष्ट गेल। मैथिलीक रीष्टिक पभाि पर चाश्च दृष्ट ए अपन श्रिचार रख आहार चार पश्चिभाषाली श्रिदानक अद्वी योग्यिक नि छलाह। एष्ट मे िन गोटे ि अषि एहन छलाह श्रनकर रोजी-रोटीक आरि

मैथिली नञ्छ छल इियो मैथिली लेल काज कएलञ्छ आ काज कऽ रहल छथी । हुनका सभ के असिर भेटल िऽ एकर उपयोग नञ्छ कऽ सकलाह । चार धिदानक जे आलेख पस्ति भेल ओ धिदीपूणय छल मुदा ओकरा धिषय सँ दूर राखल गेल छल । जखन परामषय मंडलक नेति षषाहीन छल िऽ भला किीक षषा पर चलबाक कोन पयोजन?

इ िऽ मैथिलीक दुभाग्य अञ्छ जे सरकारी सेि आ ञ्चन्दी पतकाञ्चि मे खुटा गाड़िला मैथिली साञ्चत्य आ पतकाञ्चि मे सेहो खुटा गाड़बा मे सफल रहल । धिषय सँ धिषयारि भेल पषासञ्चक साञ्चत्यकारक आलेख मे साञ्चत्यक पषासञ्चक दंभ सप्प गेल िऽ ञ्चन्दी पतकाञ्चिक सभि जे अपन पतकाञ्चिक जीनि मे ञ्चना अियिमैथिली पतकाञ्चिक सेि नञ्छ देलञ्छ ओ मैथिली पतकाञ्चि पर िञ्चिक पभाकि चचा िऽ नञ्छ कऽ बाकी सभ गप्प कहलञ्छ । अकि मोह पाष मे फसल इ न मि मैथिली पतकार अपन मनक क्चि कहबा मे से हो संकोच नञ्छ कएलञ्छ जे ओ एक बोञ्च पर दू टा काज कऽ रहल छथी । (आलेख पढ़लञ्छ आ अध्यकी कएलञ्छ) हुनका पतकाञ्चि पर िञ्चिक पभाि सँ बेसी ञ्चनी एञ्छ लेल छल जे कोलकाकि कोनो मैथिली दैञ्चक सरकारक धिजापन लऽ रहल अञ्छ । जेना हुनक जमीन केबाला कऽ सरकार ओञ्छ मैथिली दैञ्चक के धिजापन दऽ रहल हो । ञ्चन्दी पतकार मैथिली पतकाञ्चिक आनक बानगी इ छल जे ओ ञ्चथिला ञ्चञ्चर सन यषसी मैथिली पञ्चका संपादक सुिषु शेखर चौरीक नाम िञ्च नञ्छ लेलञ्छ । एबि नञ्छ धिकट पञ्चञ्चि के बादो समय साल चलै रहल आ एञ्छ पर हुनक नाजञ्च नञ्छ गेल । मुदा अपन ञ्चत हुनक पञ्चका पर धिषेध ध्यान रहल । मैथिली साञ्चत्यक इ सौभाग्य बुञ्छ आ ञ्च दुभाग्य, एकटा नाि फैषन बञ्च गेल अञ्छ, जे अपन सामथ्य

मे मैथिली के असस्य जाइन अशु, अपन सरकारी सेि आ आन सेि सँ मुक्ति भऽ जाइ अशु ओ अपन ईशिक पभाि देखबऽ लेल पैघ मैथिली सासुतपकार आ पतकार बस जाइ छथि आ एहन असिरक खोज मे लाथ जाइ छथि ।

एसु आयोजनक पथि मैथिली परामषयमंडलक किक सजग छल एकर बानगी आसु आमंतण पत आ कसु सँ भेट कायसमक बुकलेट । आमंतण पतक भाषाक तुसु ि इ सासुकि देलक जे परामषयमंडल मैथिली भाषाक पैघ भुसकौल सासुतपकारक मंडल अशु । एबा नसु कसु सँ भेट कायसमक कीथि नारायण अस पर केसुि सुन्दी मे छपल बुकलेट मैथिली सासुतप पर ईशिक पभाि के रेखासुि करैि अशु । या ि मैथिली परामषयमंडल मात अयिउपाजसक लेल बनक अशु अि सँ भुसकौल अशु । जखन आमंतण पत सुन्दी आ मैथिली दूनू भाषा मे छथ सकैि अशु ि बुकलेट के मैथिली मे छलपऽ मे कोन परेषानी छल । एसु संदभयमे जनबि पर इ सपषीकरण देल गेल जे सासुतप अकादमी क इ कायालयी भाषा अशु । पानिमंती कायालयक भाषा सेहो सुन्दी आ अंगेजी अशु । मा० पानिमंतीक कायसमक मैथिली अनुदि पसासुि होइ अशु ि सासुतप अकादमी के अपन कायालय भाषा बदलऽ मे कोन परेषानी छल । इ सभ अवसिि परामषयमंडलक भुसकौल हेबाक पसणाम अशु । असल मे परामषयमंडलक नेतिकि के सासुतप अकादमी मे मैथिली सासुतपक खराम पुजबाक लेल देल गेल छल । माँ सरसीक िदयंत नामी परामषयमंडलक नेतिकि एसु खराम के पसुर कऽ चलबाक पयास कऽ रहल छथि ।

मैथिली सासुतप पर ईशिक पभािक असस्य कथि सँ भेट कायसमक दरसयान सपष र पे देखल गेल । एसु सतक शिदान सासुतपकार

कीर्तीयनारायण अशक साश्चत्पक योग्यणि पर कोनो रिहे अष्पणी करब उष्णि नश्च अष्क मुदा एश्च सत मे जाश्च रिहे बेका सँ अन्दी मे अपन धीचार रखलआ ओश्च सँ िऽ सप्प भेल जे हुनक साश्चत्पक आत्मा अष्पि िश्चिक भऽ गेल अष्क । कीर्तीयबाबू अन्दी आ मैथिली साश्चत्पक भूष्णि साश्चत्पकार छथी । हमरा नश्च लगैँ अष्क जे अन्दी साश्चत्पक आयोजन मे एश्च रिहे ओ मैथिली मे अपन धीचार रखैँ हेँहि । अन्दी हमरा सभक राष्ट्रभाषा अष्क । एकर सम्मान करब हमरा सभक दायित्व अष्क राष्ट्रभाषाक पक्षिअर्थि करबाक लेल साश्चत्प अकादमीक पक्षिअर्थि पूरा आयोजन मे सदेह उपस्थिति छलाह खिन मैथिली साश्चत्प पर िश्चिक पभाकि चचा छोश्च अपना पर िश्चिक पभाकि देखैबाक कोन पयोजन । एश्च आयोजनक एकटा आन सत छल “कणि संघी ओश्च मे अन्दीयाइन साश्चत्पकार के असिर देब परामर्षमंडलक मैथिलीक पक्षि अनुराग के सप्प करैँ अष्क । हुनक कणिक पृष्ठ भूष्णि अन्दीए सन जागल जे ओ सयिं सेहो सप्प कएलआ ओ कणि सुनौलआ । हमरा कणि नश्च बुझ पड़ल िऽ एश्च मे हुनकर कोन दोष । दोष िऽ सूनऽ लाक । जे कणि अस् ध्यान नश्च िऽ एश्च आयोजनक गुण-दोषक बलू थन्ट बनबऽ मे अपन ध्यान लगौने छलाह ।

मैथिली साश्चत्प मे भने मैथिलीक अक्क आ पाध्यापक अपना के पैघ धिदान बुझैँ होथी । मुदा िसिधिकणि इ अष्क जे डा० हश्ममोहन झा सँ मनमोहन झा अि आ राज कमल चौँरी सँ कमल मोहन चुनू अि मैथिली साश्चत्पकारक जे पैघ सूची सोझा अष्क ओश्च मे अःसंदेह नब्बे पक्षिषि मैथिली साश्चत्पक पक्षिभा ओ छथी अन्कर रोजगारक माध्यम मैथिली नश्च अष्क । नकिा पीढ़ीक सेहो बेसी सश्च य मैथिली साश्चत्पकार सेहो मैथिली पढ़आहार नश्च छथी िथि ओ मैथिली

सांस्कृत्य मे अपन झण्डा गौड़ऽ लेल सर्त्त सभ य छथी । सांस्कृत्य अकादमीक मैथिली परामर्शमंडल मे बेसी सदस्यक पेटक आथ मैथिली सांस्कृत्यक माध्यम सँ अझा रहल अछ मुदा ओ गाम घर पर मैथिली सांस्कृत्यक कोनो पभा न छ छेह रहलाह अछ । ओ ि मात सरकारी गैर सरकारी आयोजन माध्यमे अपन िषिक पभा देखैबाक असिर किँ रहै छथी ।

सांस्कृत्यक अकादमीक इ आयोजन जेना अजानिक पथियोथी बुझ पड़ल । एह आयोजनक पथी सांस्कृत्य अकादमी आ आयोजक संर्सा चेना सभ्यक गंभीरी ओकर कायबैली सँ स्प भऽ गेल । जखन सांस्कृत्य अकादमी जे एह आयोजनक थि पोषक छल एह आयोजनक पथी गंभीर न छल ि सदा सँ अगंभीर रहल चेना सभ्य थि एक एह कायम के गंभीरी सँ लै । सांस्कृत्य अकादमी आमंतण पतक बंडल पठा देलक आ चेना सभ्यक सोइ ली कसि एह आमंतण के नजर अंदाजक अपना रिहे आयोजनक कसि मे लाथ गेल । अकादमी के जेना चेना सभ्यक काय पणालीक अंदाज छल । ओ सांस्कृत्यकार सभ के सेहो फराक सँ पाच पाच टा आमंतण पत पठौने छल । लगै अछ जे इ कोनो रैली छल जे सभ सांस्कृत्यकार के पाच पाच मुह क संग उपस्थि हेबाक छल । राजिनी पटना मे मैथिली सांस्कृत्य पेमीक कोनो कमी न अछ मुदा एह आयोजन मे भाज पुराओल उपस्थि चेना पथरिक सोइनि कसिक एकटा बानगी छल । आथि सत्कारक लेल चम्पि अथिलाक संस्कृथि पर एह आयोजन मे िषिक पभा देखल गेल । महाकथि थिदापथिक नाम पर बनल थिदापथिक भनिक अम पर अथिलाक आथि परम्परा के टाथ सरदारी कसि मे अथि सत्कार भेल ओ आषयसनक छल । चेना सभ्यक महादेक सोइ

बसहा कायस्थमक सफलं पर गदगद् छलाह । मैथिली लेखाक संघक मैथिली स्मृतिरेचर फेब्रुअरि मे जखन चेनि सभ पर पक्षिकूल स्थापनी भेल छल ि ओ स्मृति ठाम उपस्थिति चेनि सभ पर महादेकि बसह । सभ िडि देखबा योग छल मुदा महादेकि एक्क मंथर मे क एक्क अवस्थिति पर ओ बसहा सभ महादेकि आगा मुक्क झलबै रहलाह । असल मे धिदापक्ष भनिक संदभयमे इ उक्थि सटीक बैसै अक्क जे माल महाराज के आ भजा खेले होली धिदापक्ष भनि मैथिल समाजक सम्पत्ति अक्क आ महादेकि एकरा सरदार के होली खेलबा लेल थारो राख देल अक्क ।

साक्षत्प, संसि आ सभ पर अक्क ि आयोजन होएब अपि अक्क । पैघ संसि रहि ि पैघ आयोजन ज्यो पैघ आयोजन ि धिदान सेहो पैघ-पैघ रहिह । पैघ धिदानक उपस्थिति मे नीक जानाजमक असिर भेटि । इ नीक गप । मुदा धिषय सँ धिषयारि भऽ शो सभ के धर्म करब उक्थि नक्क । मैथिली साक्षत्प पर िषिक पभाकि बहने जानाजम ि अपि भेल । एक्क बहने अक्कय अकिाश पारि साक्षत्पकार, धिदान आ पतकार मैथिली साक्षत्प पर अपन पभा छोट मे सफल रहलाह ।

डॉ. कैलाश कुमार अश

दीघयक- पञ्चसूत्री लेखिका

राघि परेशान छला। सञ्चपहुँ झललीसँ शोकि पञ्च यामे दञ्चभंगा जेबाक छेलैन। दञ्चभंगा गेला। ओए पोफेसर सुकिर ठाकुरजीक आसिपर पहुँचला। सुकिर पचास शीय शोय बाहण छै, कारी भुजंग। डेढ़ आँख। कुनो अक्कन जका बड़का बरी सन खदरल ठोर। कँआयाएल नयन। इमे खना ढंगसँ िल आ खना आयरन कएल अंगा, अंगाक बाञ्चक एक बटम टुटल। एक हाँमे अंगाके मोड़ने आ दोसरमे बटम लगेने। पएरमे कोयला-मजदूर जका गन्दगी सटल आ दुनू ँड़ीमे छँहोश्चि बेमाए फाटल। ऊपरसँ एकटा प्लाष्टिकबला चप्पल पहीरने। मुँहमे पान ठुसने। पानक दाग समस्ि सितपर चकचकाइ...।

राघिके भेलैन, हे भगिनि! कोन मनुख-लग आञ्च गेलौ!! मुदा कञ्चि की। लचार छला राघि। आँ मनसँ राघि पोफेसर सुकिरके चरण-स्पशय केलैन। सुकिर बहुि पसनिसँ राघिके आभिगि केलखन।

पोफेसर सुकिरके दञ्चभंगामे भयि िन मन्खला मकान छैन। पैघ केतमे बनल। मकानक आगूसँ पकी-सड़क आ पाछूसँ पोखैर घेरल। पागणमे पचुर खाली रिँ, जइमे आम, जामुन आ लीचीक गाछ चरिल। घरक काँ-काँ गेना, गुलाब, अड़हुल इयाँ फूलक अञ्चिक्लि लिसी, पुखना लागल। पञ्चसरक मयिमे झबड़ल नीमक गाछ जे छाहैरसँ पञ्चपूणयछल।

आचसँ दू मन्खल मकानके पोफेसर सुकिर कुनो आसीय शिदालयक छातासिक हेँ दऽ देने छेलखन। सिर मन्खलमे स्थिं

पती-ननश्चि, पुत- अमरेश आ धीमल संग रहै छला । पती छेलश्चन पैसि बखक । जेठ पुत सोलह बखक आ छोट हिर बखक । घरमे पशि करै राघकि एना बुझेलैन जे नकबे आश्च गेलौ । घर सभ िरा-गदासँ भरल । बारि म गन्हाइ । भीजल कपड़ा सभ िन-चाश्च नसँ जेना पड़ल हो । बारि मक बाहर चाश्च-पाचटा आँश्च िरी पड़ल । िरीमे भा,िीमन आश्च आँश्च गन्हाइ, माछी न्नकै..! राघि एकटा कुसीमे बैसला । कनी कालमे पोफेसर सुकिर जीक दुनू बालक आश्च राघकि पएर छूश्च पणाम केलकैन । जेठ बालकक मुँह-कान कुनो र पे एक सभ्य पोफेसर केर संश्चि नश्च लगै छल । जेठ पुतक न्श्चश्चर जका मुँह, ढाबूस बेग सन पीअर-पीअर-छोट-छोट दा । शरीरक काश्चि हदसँ बेसी कमजोर । जेना यक्मा रोगसँ गश्चि होश्चि । फाटल हाफ पेन्ट आ न ि अंगा पहीरने । गरदेन आ कनपटीपर मैल जमल । अपरोजकक ने । छोट बालक मोट, मुदा मुँह-कान शोभनगर नश्च । रीक जका झोट । बुझाइ एना जेना कश्चयो कंगही आ िलक भेट नश्च भेल होइ । दुनू भाइमे एक अन्रि अबस्स बुझना गेलैन राघकि- जेठ कनी सोझ, न्श्चछल ि छोट कनी कईया आ मलिबी ।

एकटा पनरह बखक बच्चाया सुकिरजी ओए घरक-काज करै छश्च, जेकर छीनकाय काया । आँश्चमे काची पड़ल । नाकपर सुखाएल पोटाक मोट मुल्लमा मोी जका लागल । आँगुरक नह-सभमे कारी-कारी मैल भरल । ओकर नाओं न्श्चए बेबी । पोफेसर सुकिर बेबीके कहलश्चन-

“बेबी, कनी राघजिके एक न्श्चलास सुसुम पाश्च पीआ । फेर नेबोबला चाह बना । चिारे िकल छै । जाबेि चाह पी, स्नान-न्यान करीह, ओबि कालमे भोजनक न्श्चिसि कर ।”

पोफेसर सुगिर अपन छोट पुतके कहलखन-

“बाऊ, कनी हमर पसअँ बीस टाका लऽ चौकपर सँ िरेक खीरा, चुकुन्दर, मुरई, निनी पाँ आ हअर अरचाइ लऽ आउ । नेबो घरेमे अअ ।”

िरबे कालमे बेबी एक आलास सुसुम पाआ लेने राघि लग आअ गेलैन । राघि िँ गन्दगीसँ परेशान छला, मुदा हाअ माआ नाक आ आँअ मुआ पाआ पीब गेला । पोफेसर सुगिर केर बारि म भारीय रेलक जेनरल बोगीक बारि मसँ कुनो दृषकोणे नीक नअ छेलैन । मुदा ‘मरि क्वा नही करि’के स्मरण करै राघि अना कुनो पश्न केने बारि म अस अिदा भेला । स्नान एँ अन्य आँय-अ याके सम्पाअ करबाक लेल यदअ राघि साबुन, सेम्पू, पेस्ट, अंगपोछा इँयिअ अपना अटैचीसँ आकाअ ओँएसँ आकालला ।

स्नानाअसँ आँि भऽ राघि बाहर एला िँ देखै छैँ जे पोफेसर सुगिर केकरोसँ बाँि फोनपर कऽ रहल छैँ । कनी-कालक पछाइँ बाँिके अिराम दैँ सुगिर कहलखन-

“राघजि, अहाक पती सहजन्यासँ बाँि भऽ रहल छल । ओ कहै छेली जे राघि, बाहरक भोजन नअ पअन करै छैँ आ कनी लजकोटर सेहो छैँ । भूखो लगल रहँँि िँ बजि नअ । िँए अपने हुनकर भोजनक बेसिँ शीघाअशीघ कऽ अयौन ।”

एँक बाँि कहैँ पोफेसर सुगिर बेबीके कहलखन-

“बेबी छे । राघजि भूखल-पीआसल छैँ । एखनअ अनक पती-सहजन्यासँ फोनपर बाँि भेल छल । जल्दी-जल्दी भोजन िँयार कर ।”

ई कहैँ पोफेसर सुगिर अपन छोट पुतके बजेलखन-

“अमिलजी! जल्दी आउ आ सलादक सामगी लेने आउ । कीचनक

दशकनिश्चया कोणमे जिहा चकु अशु सेहो लेने आएब। जाबे शि बेबी भोजन यार करै अशु िबे शि हमरा लोकैन सलाद यार कऽ लै छी।”

श्रमिल अपन थिक आजाके पालन करै सलादक सामगीके एकटा सूपमे लऽ संगे चकू िरी आशु सेहो लऽ अपन थि लग आशु गेला।

पोफेसर सुकिर सलाद काटए लगला। ओना सलादक सामगी नीकसँ िल नशु छेलैन। राघाके मने-मन अपन सहचरी सहजन्यापर िर िमस उठए लगलैन। सोचलैन-

“बेकारे ऐ पोफेसर सुकिरके ई शुक एक कशु देलशुवन जे राघा घरक भोजन करी? कनी-मनी खा श्वा आ बादमे चुपचाप टारि केर कुनो भोजनालयमे भोजन कऽ अपन जीनि-रक्क कशु। मुदा सहजन्या ि सभटा चौपट कऽ देली! हे भगनि, आब की हए? चण्डाल सोइ पोफेसर भाय अपना घरक अपश्रुति आ गन्हाएल भोजनसँ हमर जान लऽ ले! दुख- हरहु हारकाना शरण मै िरी।” आ देखि-देखि भोजन यार भेल। सचार लगलै। संगे-संगे राघा आ पोफेसर सुकिर भोजन करबाक लेल बैसला। सुकिर अपन जेठ पुत- अमरेशके कहलशुवन-

“बाऊ, जलदीसँ िन-चाशु रिहक अँचार लाऊ। राघाजी छब्बीस घण्टासँ भूखल छै।”

खैर! राघा नशुयो चाहै भोजन केला। ओना, भोजन ओबो अलि नशु जेहेन राघा सोचने रहै। हँ, सुशुक्तिक अभाि अबस्स रहइ। रिकारी सभमे नोन कनी अशु जर र रहइ। भोजन केला पछाइ राघा पोफेसर सुकिरके संगे एक पैघ कमरामे गेला। कमरामे ओछाइन इयाशु राखल रहइ। दुनू गोरे बैसला। िडबे कालमे एक

मञ्जला नीक सि्त पहीरने, खुजल केसक संग ओए पहुँचली। सुनिकर उञ्च एक कुसीपर ओञ्च मञ्जलाके इशारासँ बैसबाक आदिन केलञ्चन। मञ्जला पोफेसर साहैबके इशारासँ सम्मान करै एक कुसीपर जा सहज भासिँ बैस गेली। आब सुनिकर राघा अस्स मुखाकृि होइि बजला-

“राघाजी, ई छैि नन्ध्। हमर पती। साञ्च्यिमे अञ्चार अ छैन। कञ्ची, गल्फ, उपन्यास आञ्च अखबो करै छैि। समाजशास्त्रसँ एम.ए. छैि। लञ्चा नारायण अञ्चला अशिक्षादालयसँ समाजशास्त्र अभागसँ ‘नारी मनोदशा’ केर ऊपर पी.एच.डी कऽ रहली अञ्च। अस्स लगभग अरार छैन। सब चीज ठीक रहलैन अ दू मासक भीरि जमा भऽ जैन...।”

मञ्जला मुस्कराइि रहली। नन्ध् आ राघा लगभग उमेरमे समयिस्की, मुदा राघा पोफेसर सुनिकरके गुर उल्लिख मानैि सञ्चकाल हुनकर चरण-स्पर्शकरैबला, अ मयादाक पालन करैि नञ्चयो चाहैि राघा उञ्च कऽ नन्ध्क पएर छूञ्च पणाम केलकैन। नन्ध् अदहे मनसँ अञ्चादिन-सुनिकार करैि राघाके पीठ पिपिआ अञ्चरदि दऽ अपन गुर-पती बनबाक भारसँ उरीन भेली।

मुदा नन्ध् देखए-सुनएमे अदु सुनैर। छरहर देह। कारी केस जे ठेहुनके छुबैि...। नन्ध् सफेद रंगक साड़ीमे छेली। जइमे अछु अञ्जाइन बनल छेलैन। कम्प्युटराइज्ड पेटअ, जे साड़ीके आकषक आओर नन्ध्क सौन्दर्यके बढ़ा रहल छेलैन। नन्ध्के देख ई लगै छल जेना नन्ध् सोभा आ संस्कारसँ आञ्चिकी छैि। कलरलेस लीथस्त्क लगेने, आँअमे सहनाज हूसेनक काजर, आ केस कुनो महग सेम्पूसँ अने। केसक चमक ऐ बाकि पमाण छेलैन। अकिटी बेलौजसँ नन्ध्क काख देखाइि रहैन आ ओकरा अकारणे

नञ्च झापए चाहै । राघकि धीयान ओइ श्वस चश्चये गेलैन । समुनरि
किक्के त्रि बाद काखक हस्यालोकन कनी मनके झंकृि करए
बला लगलैन । नन्श्चि कुनो युष्कणीक मूक्षिँ कम नञ्च छेली । श्वयो
नइ कश्च सकै छल जे पैसि बखक भऽ गेल छै आ दू गोठ पुतक
माणि िकीह । अपादस्कि सुन्दरकि खान बुझाइ नन्श्चि ।

बादमे पोफेसर सुकिर नन्श्चिके राघकि पश्चय दै कहलश्चन-
“राघजि, संस्कृि आ कलाक बहुि नीक धिदान छै । संस्कृिक
संग-संग श्वन्दी, मैथिली आ अंगेजी साश्च्यिपर समान अधिकार छैन ।
समाजशास्त्र, नृत्तिशास्त्र, कला-इथिहास, संगहालय धीजान, पुराति
आ सौन्दयश्चास्त्रमे गहन अश्चर श्व रखै छै राघजि । बहुि नीक
श्चखै छै आ बहुि नीक बजै छै । UNESCO-UNDP आश्च
संस्कि हेि भारीय संस्कृधि केर अनेको धिषयपर श्वखै छै,
डक्युमेन्टरी श्वल्म बनबै छै । कधी, गल्प आश्च सेहो श्वखै
छै । मैथिली संस्कृधिपर काययकरबाक हेि श्वथिला आएल छै ।
UNESCO-UNDP पश्चयोजना लेल भारि सरकारक सहयोगसँ
काज कऽ रहला अश्च । एए बीस-पचीस श्वन रहि । श्वनमे
श्वथिलाक अनेक गाम जेना- सौराठ, सश्चसब पाही, सलिखा,
अनृराठाढी, पुनौरागिम आश्चक भमण करि आ अधिकार श्वनमे
राधिक दश्चभंगा अपने सभ लग रहए चश्च औि । श्वछु-श्वछु गाममे
हमहूँ श्वनका संगे जाएब । बहुि श्वछु सीखबाक अश्च राघजि सँ
आ भारीय लोक संस्कृधिसँ ।”

नन्श्चि राघि केर पशंसासँ बडड पभाधि भेली । राघि श्वस
आनन्दक भासँ देखलश्चन । बजलै-

“खिन ि हमहूँ जखन-कखनो राघि उपलबि रहि ि अपन साश्च्यि
आ साश्च्यि-लेखन केर धीपर धीस्ति चचा श्वनकासँ कऽ सकै

छी?”

आब राघा बजला-

“अएक नञ्च मैडम! हम अहाक साञ्च्य पञ्च आ ओइपर चचयकय अपना-आपके न्च्य बुझब! अहासँ बहुि अछु अखबाक असिर भेटि। शैली, उपमा, अलंकारक पयोग आ अम्बक शीनिक जानकारी भेटि। हम ि सौश्रया लेखन करै छी साञ्च्यमे। संस्कृति आ मानि शीजानसँ समय नञ्च आकाञ्च पबै छी। ओना ईहो बनि दी जे हमरा सम्बन्धमे शीमान कनी अधिक बनि देलाह। हम ि कला-संस्कृति आ मानि शीजानक अति-समान्य छात मात छी।”

“अहासँ भेट भेल ि हम अपना आपके उाञ्चि बुझै छी।”

सः बजली नन्ध। ई कहै नन्ध उञ्च कऽ अपन शयन ककमे गेली आ एकटा चानीक प्लेटमे लौग, इलायची, सुपारी, सौफ, नाञ्चकेल इयाञ्च लऽ कऽ पुनः लगमे आञ्च, प्लेट राघा अञ्च बढ़ा देलञ्चन आ पुनः अपन कुसीपर बैस रहली। राघा प्लेटके पोफेसर सुकिर अञ्च बढ़बै बजला-

“शीमान, पञ्चने अपने लेल जाओ।”

पोफेसर साहैब हाकि इशारासँ राघाके अनेहक आदेश दै पञ्चने लेबाक अदञ्च देलञ्चन। अनेहादेशक सम्मान करै राघा प्लेटसँ दञ्चनी आ कनी सौफ लऽ लेलैन।

िडे कालक बाद नन्ध पुनः अपना कक्ष अञ्च गेली। दस अनट लगेलैन आ आपस हांमे पान बनेबाक मिम सामगी लय अनलै। अपन कुसीपर आसन गहण करै पान लगबए लगली, अपुणिक संग। राघाके पुछलञ्चन-

“केहेन पान खाएब राघाजी? कुन जदा एि अन्य चीज? कुटीबला सुपारी की सरौसँ छल्ला बनल?”

राघाके नन्ध्णीक आभिगकि सटाइल नीक लगलैन, बजला-

“मैडम, हमरा कमा कर । हम कुनो रिहक पान नञ्च खाइ छी ।
शीमानके थ्यौन आ स्थिं खाउ पान ।”

नन्ध्णी आब एक थ्वली पान लगा पो. सुकिरके दऽ देलथ्वन आ
दोसर थ्वली स्थिं लऽ लेली । पानक डालीसँ पो. सुकिर अपना
हाकि कारी-पीअर रंगक जदा अपने इच्छे लऽ लेलैन । नन्ध्णी सेहो
एकटा छोट थ्वल्ली अपना लेल बनेली आ थ्वना किके सुपारी एक
नान्ध्णा टुकडी दाकि रिमे गहण केली । िडबे कालक पछाइ
नन्ध्णी पो. सुकिरके कहलथ्वन-

“बुझलौ की एगो बाकि?”

पो. सुकिर-

“की? कहू ने?”

नन्ध्णी-

“ई पानक थ्वल्ली हमर थ्वनगीक अन्धिम, पानक थ्वल्ली िक ।
आब हमहूँ पान नञ्च लेब । अगर राघाजी थ्वना पान खेने रञ्च सकै
छै कि हम थ्वएक नञ्च?”

ऐ बाकिर राघा थ्विनमकि पूकि बजला-

“नञ्च नञ्च । ऐमे कुनो महानिबला बाकि नञ्च छै, मैडम । ई कि अपन
पथ्वन आ ना पथ्वनपर थ्वभश्च करै छै । हमरा पान नञ्च नीक लगैकि
अञ्च कि नइ खाइ छी ।”

थ्वचचेमे पो. साहैब बाथ्व उठला-

“देखू नन्ध्णी! अगर अहा पानक थ्वियाग करए चाहै छी कि अबस्स
कर । ई उत्तम थ्वणय हएकि । एहनो भऽ सकैकि अञ्च जे थ्वछु
थ्वनक बाद हमहूँ पान थ्वियाथ्व दी ।”

आब राघा गद्-गद् भऽ गेला । गद्गदाइकि बजला-

“शीमान आ मैडम, ओना अगर अहा लोकैन पान छोश्च दी ि नीक बा। सुपारी, जदा इयाश्चक कारणे पान आजुक युगमे माहुर बश्च चुकल अश्च। डाक्टर ि एकि कि कहै छै जे Oral Cancer केर पमुख कारणमे एक कारण पानो खाएब छी।”

राघकि कनिके स्ीकृषी पोफेसर सुिकर आ नन्श्चि अपन-अपन गरदेन श्वला देलश्चन। राघकिे नीक लगलैन।

एकाएक नन्श्चि राघि श्वस देखै बजली-

“राघजि, एक बाकि आदिन करी?”

राघि-

“आदिन की मैडम, आजा कर?”

नन्श्चि-

“कुनो आजा नश्च। अफयछोट-छीन आदिन।”

राघि-

“कहू ने मैडम।”

नन्श्चि-

“हमरा अहा मेडम नश्च कहू। कुनो आरो नामसँ सम्बोधी कर।

नन्श्चि कश्च सकै छी।”

राघि-

“नाम लऽ कऽ केना बजाउ? अहा गुरपती छी।”

पोफेसर सुिकर आराकरण करै बजला-

“सुनू ने राघजि। अहा ि हमर छोट भाए जका छी। इि दृष्यकोणसँ नन्श्चि अहाक भाउज भेली। अगर अहा चाही ि श्वनका नन्श्चि भाभीक नामसँ सम्बोधी कऽ सकै श्वएन।

नन्श्चिके हमरा जनै ई सम्बोनि नीक लगनि।”

नन्श्चि-

“हँ हँ। अलकुल ठीक शब्दक चयन भऽ गेल। राघजि, आब अहा हमरा नन्धि भाभी कश्च सम्बोधी कर। हमरा बडड नीक लागि। मैडमके भारसँ हम दबल जा रहल छी।”

मन्द-मन्द मुस्कीसँ मुस्कियाइ रागि अपन सहमधि देलखन-
“ठीक छै। नन्धि भाभी अहा लोकैनके जेहेन आज्ञा हुआ हमरा स्त्रीकाययअच्छ।”

हलाकी ऐ शब्दाबलीसँ राघि सेहो मने-मन पुलकि छला। हुनका आब लागए लगलैन जे आब कनी नन्धिक साक्ष्यि अना कुनो शिषे मयादाक बन्सँ उड़ि जाएब। शायद ई एक न रसि पशसि कऽ रहल छल। नन्धिक चेहरा सेहो चमैक रहल छेलैन। हलाकी पोफेसर सुकिर कश्च नश्च अए, कनी परेशान भऽ रहल छला।

आब पोफेसर सुकिर कहलखन-

“राघजि अहा ठिकल छी। पश्चने कनी आराम कएल जाउ। साझमे छह बजे शि हमरा लोकैन बैसब आ आगा केना काययकरबाक अछ। कुन गाम कश्चा जेबाक अछ, अन्कासँ भेट करबाक अछ आश्च शिषयपर शिस्तिरसँ चचा कऽ सक्षिण केर ब्लू अण्ट रियार कऽ लेब।”

राघजि सूक्षि रहला...।

साझमे साढ़े िन बजे राघि जाअ गेला। कनी कालमे पो. सुकिर केर छोट बालक शिमलेश एलखन। शिमलेश राघकि पुछलखन-
“ककाजी, जल लबै छी?”

राघि गरदेन अला स्त्रीकृषि दऽ देलखन। शिमलेश पाअ अनला। राघि पाअ पीब लेला। पाअ पीबि मन हअधि भेलैन। शिमलेशसँ स्कूलक पढ़ाइ आश्चपर शिचार करए लगला। शिमलेश एक-नम्बर-के

गपोड़ी, बाकि करैमे माश्चर, बूढ़ जका सभ बाकि रथ्या-रथ्या सुनबाए लगलैन। राघाकि कुनो खराप नश्चये लाथ रहल छेलैन। पनरह अनटक बाद अमरेश सेहो वयूशन पश्च कऽ आपस आश्च गेला। श्रिमलेश आ अमरेश अपन-अपन कि सुना कऽ राघाकि समय आशि रहल छेलश्चन।

कनी कालक बाद पोफेसर सुकिर आँश्चके हासिँ पोछै डिफ़डाएल पहुँचला। कहलश्चन-

“राघाजि, उश्च गेलौ? नीकसँ नीन भेल अने?”

राघा-

“हँ शीमान, खूब सुलौ। मिम किबट दूर भऽ गेल। आब रिगिजा भऽ गेल छी। अपनेक बालक सभ बडड नीक छै। बीस-पच्चीस अनटसँ अनका लोकैनसँ गिलाप कऽ रहल छी। नीक लाथ रहल अश्च।”

आब चाह आश्च गेल छेलैन। चाहक संगे-संग नन्श्चि सेहो आश्च गेली। कश्च नइ अएक नन्श्चिके देखि-मारि राघामे आश्चयअनक स्फूश्चिय अश्च गेलैन। सभ अयो चाह पीलाह। राघा पोफेसर सुकिरजीक संगे Fieldwork केर Blie Print यार करए लगला। बीच-बीचमे नन्श्चि अ्स अयान चश्च जाइन। ब्लू थंट यार भऽ गेलैन। आणख लेलैन जे ऐगला अ्न सां बजे भोरमे सौराठ गाम लेल पस्तिन करी।

आब राघाआ पो. सुकिर बजार हेँ अिदा भेला। दश्चभंगामे सुकिर राघाकि अछु पश्चिश्चि साश्चयिकार, इश्चिहासकार, संगीकार आश्च लग लऽ गेलश्चन। राघाकि नीक लाथ रहल छेलैन। जानकारी पापि भऽ रहल छेलैन। साझमे आबै काल जीबै रेहु माछ कीनलाह। पैसा राघा देलश्चन।

माछक पाकमे नन्ध्णि सेहो संलग्न भेली । पो. सुकिर सेहो लागल छला । माछक मसाला पीसबाक काययसेधिका-बेबी कऽ रहश्च छश्च । राघि सेहो ओँ ठाढ़ भऽ गेला । पूरा पीकश्चकक माहौल बश्च गेल छेलइ । धिमलेश चुपेचाप राघकि कानमे कहलश्चन-

“जनै ञ्छे काकाजी, आइ माँ पञ्चल बेर कीचेनमे घुसली अश्च । पापा आ मा दुनू गोरे पाक धिदामे केँक नीक लाश्च रहल छै ।”

राघि केलि एक अश्चाया हँश्च कऽ बाकि ओँ समाप्ति कऽ देला । भोजन ियार भेलइ । सभ गोरे संगे भोजन करै गेला । राधमे भोजनमे सुश्चा आ सचारमे शृंगार बुझेलैन । भोजन करै काल पो. सुकिर नन्ध्णिसँ कहलश्चन-

“आश्चल केँएसँ आएल छल?”

नन्ध्णि आनन्ध्णि स्त्रिमे बजली-

“मा भेजने छेली । पनरह ञ्चन भऽ गेल । भेल जे राघजिके अश्चिलामबला माछ बना कऽ खुएबैन । िए ऐ माछमे पीऔज, लहसुन नश्च देल अश्च । टमाटरक बदला आश्चल, अऔज, लहसुनक बदला हीग, दही आ पुश्टिदाना ।”

सुआद अलकुल अलग आ चहटगर । राघि भश्च इच्छा भोजन केला । एहेन माछ खेबाक असिर राघकि जीनिमे पञ्चल बेर भेल रहैन । भोजन केला बाद राघि सूश्च रहला । दोसर ञ्चन साढ़े छह बजे पाः नहा-णि कऽ राघि ियार छला । राघि आ पो. सुकिर चूरा-दही-चीनीक जलपान कए सौराठ लेल धिदा भेला । सौराठक याता सफल रहलैन । सौराठसँ साढ़े चाश्च बजे साझमे दश्चभंगाक लेल धिदा भेला । दश्चभंगा अश्चि नन्ध्णि अपनेहाँ चाह बनेली । सभ ञ्चयो संगे चाह पीला ।

दोसर ञ्चन सश्चसब-पाही जेबाक छेलैन । पश्चि-ञ्चन भोरे साँ बजेक

याता कुनो-ने-कुनो गाम लेल आश्चा रहैन। िसिर अन्न पोफेसर सुकिर केर एकाएक जानकारी पाप् भेलैन जे कॉपी-जाच करबा लेल श्रीश्रीदालय केर अन्य शैक्याक सहयोगी संगे हुनको बनारस अन्नदु श्रीश्रीदालयमे पनरह अन्न ि अ सेन्टलाइज्ड कॉपीक चेअंगमे भाग लेबाक छैन। पो. सुकिर अंककिप्रियश्रमुद छला। राघि सेहो परेशान छला। भेलैन, अना पो. सुकिरसँ काज केना हए? मुदा अपन पनरह बखक अनुभकिे स्मरण केला पछाइ मनमे भेलैन- सभ अछु सम्भ कि छै। सोचलैन- आश्चर हमहूँ ि छी अही माअ-पाअक संश्रि। फेर अन् कि कुन बाकि? जे हे देखल जेइ। अम्म कि देखबै बजला-

“शीमान् अपने अबस्स जाउ। हम्मर मागयपशस् भड गेल अश्च। अहा सभटा अशा-आदशन कऽ देने छी। हम काययकऽ लेब। हमरा जेबासँ चाअ-पाच अन्न पश्चने अपने आपस आअ जाएब। बँचल-खुचल डाटा दुनू गोरे अल कऽ कऽ लेब।”

पो. सुकिर राघि केर ऐ किअँ सहमि भेला आ बनारस जेबाक ियारी करए लगलैन। ऐगला अन्न भोरे सां बजे राघि कुनो गाम Fieldwork लेल गेला ि एगारह बजे अन्नमे पो. सुकिर बनारस लेल दअभंगा स्टेशनसँ रेल पकड़बाक लेल पस्नि केला। राघि साझ छह बजे आपस एला। नन्श्रि अपने हां चाह बनेली। एक लोटा आ एक अलासमे जल अनलैन। राघि अना कुनो पश्चिकारक भअ इच्छा जल पीला। फेर चाह पीबैले बैसला। नन्श्रि चाह संगे भूजल चूरा रिल झीगा माछ लऽ अनलैन। िकल राघिके ई सकिर गदगद कऽ देलकैन।

बृहस्पै अन्न रहैक िए नन्श्रि पीअर साड़ी पश्चरने छेली। ब्लौज सेहो पीअर मुदा ब्लौज केर गला बाअ आ कि लग कारी रहइ।

पीअर आ कारीक अलान रमनगर लगै छेलैन। नन्ध्णि सोनाक एकटा बल्ला एक हाँमे आ दोसरमे घड़ी पहीअने छेली। नन्ध्णिक हाँ-पैर आअ साफ छेलैन। नन्ध्णि आ पो. सुकिर केर जोड़ी देखलापर 'बानरक हाँमे नाअकेल'बला कहबी चअणियिहोइ छल। चाह पीबै काल नन्ध्णि राघसँ पुछलअन-

“राघजि, अगर अहा लग समए हो िँ, आइ राअी अछु काल अहासँ साअ्यिक चचा कऽ सकै छी?”

राघि बजला-

“हँ-हँ नन्ध्णि भाभी, अएक नअ। हम सामान्यः अनेमे अपन लेखन कायय सम्पन कऽ लै छी। अपने परेशान जुअ हौउ। आअानसँ कऽ सकै छी।”

राघकि अशासनसँ नन्ध्णि अहुँअ उठली। राघी कुनो कम पफुलअि नअ छला। चाह पीला पछाइ राघि पुनः अछु बाचल कायके सम्पाअि कए स्नान केला। िर बाद पो. सुकिर केर आसि लग एकटा सैलूनमे जा पूरा माकि माअश, फेअयल इयिअ करेलैन आ आपस आअ नन्ध्णि, अमरेश आ अमिलेशक संग राअक भोजन केला। राकि भोजनमे नन्ध्णि अन्य भोज्य-पदाकि अअिअकि काच टमाटरके आअमे पका ओइमे अऔज, लहसुन, आद, हअअर अरचाय आअ अला चहटगर चटनी बनेने छेली। राघकिे चटनी बडड नीक लगलैन। भोजन करै काल अमिलेश राघकिे कहलअन-

“चचाजी, टमाटरक चटनी केहेन लगल?”

राघि जबाि देलअन-

“अपूअि मन होइए रोटी चटनीए संग खाइ। ऐ चटनीक आगू सभ यिंजन बेकार।”

राघकि ऐ जबासँ नन्थी पसन भेली आ गनिन्थी स्रि प आखैर उठली। राघकि हुनकर स्रि प बडड सोहनगर लगलैन। मुसक्याइ रहला आ चहटगर चटनीक संग रोटी खाइ रहला। आब श्रमलेश कहलथन-

“चचाजी, मम्मी अपने हाँ अहा लेल ऐ टमाटरक चटनी बनेली अछ।”

राघि कृजिक स्रिमे बजला-

“नन्थी भाभी, अहा सभ हमरा लेल केकि कष्ट लइ छी? ऐ कजके हम साँ जनममे नइ साँ सकब। बड़ा अपूयिआ चहटगर अछ चटनी।”

नन्थी-

“अरे राघजि! अहा एना अए सोचै छी। सुकिर नश् छै। बनारस जाइसँ पश्चनश् हमरा कहने छला जे राघकि बाहरक भोजन पश्चन नइ होइ छैन, ई घरेमे अछु-ने-अछु अपने हाँ बना देबैन। बेबी-हाँमे सुआद नइ छै। ई अछु बना देलौ। अहा कि नीकसँ भोजन करै छी जे हमरो बनबैमे आनन्द अबै अछ।”

आब राघि चुप्पे भऽ गेला। भोजन केला। हाँ िइँ रहै अ स्ुकिरक फोर एलैन-

“की राघजि, ठीक छी अने? आजुक याता केहेन रहल? बुचची अछु न चीज बनेली की?”

राघि बजला-

“हँ शीमान्, अखने भोजन केलौ अछ। सभ सिँ अपूयि मुदा काच अलौँ केर चटनीक िँ जबाँ नश्। मन श्रिपी भऽ गेल। कुनो अकि नश् शीमान्। केलि अपनेक कमी खश् रहल अछ। अलडकियसेहो ठीक रहल। लोक सभ सहयोगी छला। बहुँ रास

जानकारी भेटल। अपने आएब ि सभ डेटा आ आँकरापर तृहि चचा करब।”

हलाक राघि जनै छला जे सभ बाहिमे एक बाहि झूठ बजला, बाजल छला जे पोफेसर सुकिर केर कमी हुनका महसूस भऽ रहल छैन। राघि ि पसन छला जे आब ओ नन्धिसँ मुकि भासिँ िलाप कऽ सकै छला। राघिके पो. सुकिर आ नन्धिक आहमे कुनो रहस्य बुझना जा रहल छेलैन।

खैर, भोजन केला बाद राघि अपन ककमे गेला। कनी कालक बाद, भोजन केला बाद, बेबी अपन घर चक्ष गेक्ष। आब आचा जा नन्धि मुख्य दार बन्द केलैन। जखन आपस एलीह ि राघि पुछलखन-

“नन्धि भाभी, की करए गेल रही?”

नन्धि जबाहि देलखन-

“सुकिर नक्ष रहै छै ि खिन कैम्पसक मुख्य-दार हमरे बन्द करए पड़ै अक्ष। सह करए गेल रही।”

राघि बजला-

“हमरा कक्षि? हम कऽ क्षि!”

नन्धि-

“कुनो बाहि नक्ष। हमरा आदि पक्ष गेल अक्ष। अहा क्षान्ति नक्ष कर।”

पुनः नन्धि अमरेश आ धीमलेशके आदेश करै कहलखन-

“अहा सभके स्कूल जाइसँ पक्षने भोरे-भोर उक्ष कऽ पढ़ाइ करक अक्ष। जल्दी-जल्दी दू पीब लीअ आ सूक्षि रहू। हम साढ़े चाक्ष बजे भोरक घण्टी लगा दइ छी। अपने मने उक्ष मुँह-हाहि ि पढ़नाइ पारम्भ कऽ लेब।”

दुनू बालक माकि आजके सम्मान करै रसोइ-घर गेला। दूि थालासमे राखल रहैन। दूि पीला आ सुबि लेल चख गेला। नन्धकि भीरि गेली। मच्छरदानी लगा देलखन। लाइट ऑफ कऽ देलखन। जीरो पारिक बल्ब ऑन कऽ देलखन आ अपन दुनू छपल शक्ति, डायरी, कछु सादा पना आ पेन लऽ राघि बला ककमे आख गेली। राघि बिचमे एकटा अंगेजी उपन्यास पढ़ै रहै। नन्धकि ऐबि-देरी राघि उपन्यासके झाथ लेला आ कामि रख देलखन आ नन्धकि संगिमे उख कऽ बैसै बजला-

“आउ नन्धकि भाभी।”

नन्धकि सामनेबला कुरसीपर बैसली। अपन दुनू पुस्कमे ऑटोग्राफ खलैन-

“अनेही राघिजिके,

अनेह आ सम्मानक संग

-नन्धकि।”

राघिके नन्धकि ऑटोग्राफ नीक लगलैन। दुनू पोकि पनाके उलैट कऽ देखलाह। ओइमे एकटा पोकि कायिक संगह रहै आ दोसर गल्प संगह। दुनू पोकि भाषा खन्दी रहैक। मिम ककि मुख्य पात मखला। पुरखक पक्षि मखलाक री, आरोश, घृणा आख स्पष्ट पखलखि होइ रहइ। एना बुझना गेलैन राघिके जे नन्धकि मखला चखत बागी आ शिरोही बिरमे ठाढ़ छैन। खंसक हेबामे सेहो मखला चखतके कुनो खकि नख छै।

आब नन्धकि राघिके कहलखन-

“सुनू राघिजी, हम अहासँ साक्षि चचा करए चाहै छी। हममर पोकि बादमे अहा पख लेब। अखैन कछु चचा करी?”

राघि बजला-

“हँ-हँ अबस्स कर । अहाक लेखनी हमरा पभाकिरी लाथ रहल अक्ख । पञ्चने अपन अखल एक-आि मैथिली कथी सुनाउ ।”

नन्थी राघि केर ऐ अदिनसँ गद-गद भऽ गेली । अपन डायरीक पन्ना पलटनाइ पारम्भ करै पुछलखन-

“पेम-कथी सुनाबी?”

राघि कहलखन-

“कुनो सुना सकै छी । हम अहाक शैली आ रचनासँ अपना-आपके अगि करए चाहै छी ।”

आब अना कुनो प्लोट बैक-गाउण्ड रियार केने नन्थी नहुँ-नहुँ अपन कथीक पाठ करए लगली । पारम्भ लघु कथीसँ केलैन । कथीक संरचना ने बडड नीक आ ने बडड अलिहाहे । हलाक पेममे सेहो नारीक फस्टेशन पञ्चलखि बुझना गेलैन, राघिके नन्थीक कथीमे । ओना, नन्थीक अजि कोइली जका मुरि आ चहकै । कथी-पाठ करै-करै नन्थीक भा-भंयमा भयि लाथ रहल छेलैन । एक कथी पढ़ै र कली नन्थी । राघि झट दअ पूछ देलखन-

“नन्थी भाभी, एक बाि पुछी?”

नन्थी-

“हँ-हँ पुछू ने!”

राघि-

“अहाक साक्ष्यिक कथीमे मञ्जला पात अबेअयन अएक होइि अक्ख? ओना लेखन शैली हमरा बड पभाथि कऽ रहल अक्ख ।”

“यो ही कोई रिफा नही होि”

ई कहै नन्थी नमहर सास भरलैन । फेर सास छोड़लैन । फेर भरलैन । सास भरब आ छोड़बक पथ या अछु काल थि चलै

रहलैन। पयिक सासक संग नन्धिक किष ऊपर-आचचा करै रहल। राघि नन्धिक पुष्ट-कि गुच्छके कन्ध्या-कन्ध्या आहारै रहल। शायद ई सोचै जे देखि छै आ नन्धि बुझयो नञ रहल छै। मुदा नन्धि कि छै स्माटय भान लाथ गेलैन जे राघि हुनकर यौनिके िष रहल छैन। नन्धि सोचलैन : चलू राघिके ऐ खिबमे रहए दइ छैन जे हम अदु नइ बूझ रहल छी।

फेर नन्धि बजली-

“हँ राघिजी। अहाक अलोकन सूक्ष्म आ साक्षि अछ। एकर इश्टिहास छै। हमर जीनिक बीलि अछु एहेन घटना जे हमर साक्ष्य-सज्जाक मञ्जला चञ्चलके अछु उग, यिाकुल, पक्षिशो, अहंकारी बना दइ छै। ओना, कखनो काल नञ्चयो चाहै हमर सृजनमे मञ्जला पात ओहन भऽ जाइ अछ। ऐपर हम कालञ्च राक्षमे अहाक संग श्रिस्रिसँ चचा करब। आइ अपन अछु कक्षी आ गल्प अहाके सुनबए चाहै छी। शैली, कानिक, पक्षिशि, उपमा, अलंकार आश्चक पयोगपर अहाक शिचार जानए चाहै छी।”

राघि बजला-

“हँ-हँ नन्धि भाभीजी, अहा अपन अछु लघु कवि आ अन्य कक्षी सुनाउ। राक्षमे हम आश्चान्रिसँ अहाक पोषिके समाश्चक पञ्चदृश्यमे समाजशास्त्री जका पढ़ए आ समझए चाहै छी। समाजशास्त्रक पञ्चदृश्यमे श्रिचिन करए चाहै छी। नारी मनोदशा, मान्तीय संदिनाक श्रिस्रितामिक समाज केर संरचना आ श्रिस्रितामिक समाज दारा नारीक शोषणके अहाक लेखनीक ऐनासँ बुझए चाहै छी।”

नन्धिक मन पफुलञ्चि भऽ गेलैन। साक्ष्यिकारके साक्ष्यिके सुनैबला आ साक्ष्यि समीकक संग ओकर पशंसा करैबला भेट जाए खिन मन हथि कि हेबे करै छै। नन्धि अपन कक्षीक पोषिक

पना चश्मा पहीश्च पलटए लगली। िनटा पनाके मोश्च लेलैन। फेर अपन कृसीसँ उठली आ अपन शयन कक श्वस बढै बजली-

“राघजि! हम कश्चकबे कालमे आश्च रहल छी।”

राघा सोचए लगला, आश्चर कुन पयोजनसँ नन्श्चि भाभी अपन शयन कक गेली? कुनो-ने-कुनो पयोजन ि अबस्स हैन।

पनरह अन्टक भीरि नन्श्चि पुनः राघजिक ककमे हाँमे एक कलात्मिक शीशाक टेमे दूटा बाटीमे रसमलाइ लेने पशि केलैन। नन्श्चिक मन पसनश्चि आ संष्टि छेलैन। टेके टेबुलपर रखै बजली-

“राघजि, काश्चि हमर छोट भाए राचीसँ आएल छल। मा ओकरे श्वया ई अठाइ भेजने छेली। छोटका रसमलाइ। एकरा रसभरी सेहो कहल जाइ छै। राचीमे पंजाब स्ीवस केर रसभरी बहु शिख्या छै। बाकि र ममे एकएक स्मरण आएल जे रसभरी ि फीजमे राखल अश्च। सुािकर म्मिहक रोगी भऽ गेल छै ने, िए ओ ई सभ नइ खाइ छै। अमरेश आ श्मिलेश श्वनेमे खेने छला। कोलि हम आ अहा नइ खेने रही। सोचलौ साश्चय सुनेबाक श्व याके आरो आगा बढेबासँ पूयिकनी मुँहके नीक मीठाइसँ मीठ कऽ ली।”

राघा मने-मन पसन भेला। नन्श्चिक आदरमे आश्चिक भाि जगलैन। अना अछु बजने अपना संको-भासँ नन्श्चिके बहु अछु कश्च देलश्चन। आब एक कटोरी राघा अपन बामा हाँमे लऽ दश्चना हाँ चम्चसँ रसभरी खाए लगला। अना अछु कहने मशीन जका नन्श्चि सेहो राघाके अनुशरण करै दोसर कटोरी बला रसभरीके गहण करए लगली। मीठाइ खेलाक पश्चाि राघा अपन असलासँ दश्चणी अकाश्च एक सौस दाना नन्श्चिके आ एक स्यि लेला। नन्श्चिक हाँमे जखन राघा दश्चणी देलश्चन ि राघाक

हाणि नन्ध्याकि हासिँ सञ्च गेलैन। राघकि नन्ध्याकि कोमल हाकि
 स्पशयनीक लगलैन। हाणि कनी काल सटले रहए देलञ्चन। कञ्च
 नइ ऋए, नन्ध्याि सेहो जेना चहैक उठली। चेहरापर ऋछु अलग
 रिहक उमंग नन्ध्याकि राघकि स्पशञ्च पाप् भेलैन। नन्ध्याि
 सेहो राघकि हाकि स्पशक साञ्घ्य ऋछु कण लेल आरो पाप्
 करए चाहै छेली। दुनू एक-दोसरक हाकि स्पशक मुरामे करीब दू
 अन्ट शि रहलैन। आब राघकि एकाएक ई भान भेलैन जे नन्ध्याि
 ि हमरा इशारा कऽ रहली अञ्च। नन्ध्याि सुन्नञ्च आ आकषक
 छै। हमरो नन्ध्याकि पञ्च आकषक बञ्च रहल अञ्च मुदा नन्ध्याि
 ि छै गुर-पती समान। कही हमर डेग कुनो शास्त अबा परम्परा
 श्रोति श्शामे ि ने बञ्च रहल अञ्च..?

..एक पैघ पशनीचक अन्ह राघकि कपारपर नाचए लगलैन।
 राघकि स्त्रीक भान भेलैन जे बाणि गलि भऽ रहल अञ्च। ऐ
 बाकि सोचै राघि झट-दे नन्ध्याकि हासिँ अपन हाणि हटा लेलैन।
 नन्ध्याि सेहो पुनः अपन पोकि पना उनटबए लगली।

नन्ध्याि राघकि पुछलञ्चन-

“राघजि, अगर अहा कही ि दू-निटा छोट-छोट कञ्चि सुनाबी
 आ िकर बाद एक या दूटा कणि सुनाबी, अहाके?”

राघि बजला-

“हँ-हँ! सुनाउ ने। एकटा ऋए चाञ्चटा कञ्चि सुनाउ।”

आब नन्ध्याि कञ्चि पाठ करए लगली। जेकि नन्ध्याकि निक
 सुन्दरि िबे मनक सुन्दरि आ इसँ बञ्च कऽ बाणि करैक
 मीठास। राघि गद्-गद् भेल जा रहल छला। कायि-पाठक र ममे
 नन्ध्याकि नुआँक आँचर खञ्च पड़लैन। अकिटी आडीमे सहेजल
 नन्ध्याकि उनि कि जेना कञ्चिक िरक संग याता करै हो।

उठै-बैसै। सास संग नन्धकि कि जेना नृयि करै हो। कधीक संग-संग राघि दोग-दागमे नन्धकि किक्के सेहो अलोकन करए लगला। हुनका छल्लु-छल्लु होमए लगलैन। मन करैन जे नन्धकि भक्ष राक्षिअञ्चना आँचर खसेने किक्क अलोकन करबै किक्षि-किकि पाठ करै रहि।

मुदा ई की कुनो सम्भनि बाणि छल? नञ्च। कदाथ नञ्च। कधीक पाठ आ गल्पक णिम चलै रहलै। पणि नइ केना राक्षिक डेढ़ बाझ गेल। आब नन्धकि नजैर देबाल-घड़ीपर गेलैन। झट दञ्च अकचकेली-

“राघजि! राक्षिक डेढ़ बझ गेल। अहाके भोरे-भोर झल्लडकिमे जेबाक अञ्च। आब ऐगला चचयकाक्षि करब। अहाक आनक पूक्षिय केना हएि डि बाकि आननि भऽ रहल अञ्च।”

राघि-

“कुनो बाणि नञ्च नन्धकि भाभी। हमरा लोकैन ऐ रिहक गक्षि-क्षिषैँ अपना-आपके आम्सिा किऽ नेने छी। केकि अन्न िँ चौञ्चसो घण्टा काज करए पड़ै अञ्च। िँए अहा आननि जुआ कर। अगर इच्छा हुआ िँ एकटा किा आ दूटा कक्षिा आरो सुनाउ। अहाक लेखनीमे चुम्बकीय आकषण अञ्च। कियेके सपाट आ अलग अन्दाजमे अहा आखै छी। समाजक दृढ़ मान्यिा आ पुरख-समाज दारा बनाएल गेल जंजीरके िड़ैले अहाक साञ्चयिक नारी पात उणि रहै अञ्च। पञ्चशिक संग कानिक सम्बन् सिथिा किऽ लै अञ्च।”

राघकि ऐ बासिँ पभाक्षि भऽ नन्धकि मने-मन आनन्धकि भऽ पुनः कुसीपर बैस गेली। आ अपन पोषिक पना उलटाबए लगली। राघि बजला-

“ओना, आब अहाके नीन आञ्च गेल हएि। बच्चा सभ सेहो असगरे

सूलि छै। अगर चाही कि अहा जा सकै छी।”

नन्ध्या झट-दे बजली-

“हमरो लेल जगनाइ कुनो समस्या नै अछि। लेखनक कायय अर्थिकाशः हम राक्षियेमे करै छी। हमर दुनू पुत आब छेटगर भऽ गेल छै। अहा कश्च रहल छी कि एक कि आ िन कक्षी आरो सुनबै छी।”

नन्ध्या पुनः कक्षीक पाठ करए लगली। नहुँ-नहुँ मुदा स्त्रि स्पष्ट आ नजाकसँ भरल पाठ। हरेक कक्षीक पाठक उपरान्ति राघि ओइ कक्षीपर अछि पश्नआ अजासा करै रहलअन। आ नन्ध्या ओइ अजासाक उत्तर दै रहली। अन्तिमे नन्ध्या एक लघु कि अपन नाटकीय अन्दाजमे सुनेलैन। कि राघिके बडड नीक लगलैन। कसँ नीक नन्ध्याक उपस्थिति राघिके नीक लाअ रहल छेलैन। आब अढ़ाइ बाअ चुकल छल। नन्ध्या अकिबके सेअयबै उठली। कहलअन-

“राघिजी, आब सूँए जा रहल छी। शुभ राती।”

‘शुभ राती’ कहै नन्ध्या राघि अस अपन हाँ बढा देलैन। राघि कनी सह देला परन्ति हाँ नन्ध्या अस बअ गेलैन। हैण्डसेक केलैन। हैण्डसेक करै राघि नन्ध्याके ‘शुभ राती’ कहै बाहर अ छोड़ए एला। नन्ध्या अपन कक अस चअ गेली। राघि नन्ध्याक सम्बन्तिमे एक घण्टा अ सोचै रहला। अन्तिः साढ़े िन बजेमे सूँ रहला।

दोसर अन् भोरे राघि स्नान-अयान केला बाद चूरा-दहीक जलपान कऽ सीमिदीक हेँ पस्तिन केलैन। पस्तिन करै काल नन्ध्या दअणी आ लौग लेने ठाअ छेलैन। राघि अना अछि कहने आँअक भाषा बुझै, नन्ध्याक हाँसँ सभटा लौग-दअणी लऽ लेलैन।

नन्धक आँखसँ ई लाथ रहल छेलैन जे नीक रश्किक जे राघि आइ को जेबे नन्ध कश्कि। खना नन्धकिके कहने राघि हुनकर आँखक भाषा बूझ गेला। आँखयेक इशारासँ कहलखन-

“शोकिक कायय अञ्च, ईए खन भञ्च लेल अलोकन हेँ जेनाइ आशियक।”

राघि चश्म पड़ला। जाबे शिख नजैरसँ ओझल नन्ध भेलैन िबे शिख नन्धकिके खस राघि घूझ-घूझ किँ रहला। नन्धकिके एकटक भेल गेलरीमे ठाढ़ भऽ राघिके जाइ देखै रहली।

राघि भञ्च रस्कि केलि आ केलि नन्धकिक सम्बन्धमे सोचै रहला। पेम, आकषण, सेक्स आ पाप सबहक बोँ राघिके एके संग हुअ लगलैन। नन्धकिक देहक बनाबटसँ राघि आकषण छला। नन्धकिक लेखनी सेहो अपने ढंगसँ राघिके पभाङ्कि कऽ रहल छेलैन। नन्धकिक सित पञ्चरक अन्दाज आ सौन्दर्यखिलास राघिके कामूक बना रहल छेलैन। हुनकर मनक आ किन कामदेँ जागि भऽ रहल छेलैन। मयादा आ अन्य चीज जेना शीरोह करबाक हेँ उफान मारै हो। भाड़मे गेल मयादा आ शीचारक लक्ष्मण-रेखा। नन्धकिके खानेहमखा आ कामदेँ छै। हुनका शायद हमरा सन युक्तिक आशियकिके मनक आ निक सामंजस्य आ अदान-पदानक हेँ जर री छैन कि ओइमे मयादाक हनन केहेन? अछु एहने भानि राघिके भऽ रहल छेलैन।

फेर ई भाँकिनी राघिके खान्धि आ ग्लाख-भासँ भञ्च दै रहैन जे अन्कि नन्धकिके छै कि गुरक पती। अगर मयादा भंग भेल कि गुरजीक संग शिशासघाँ भेल। गुरकी सोचि! कही शाथि कऽ देँ खिन कि..?

फेर आँखक शीचार कहैन- जे हेँ ओ देखल जेइ। नन्धकिके अछु

उलझनके आइ राखी जर र बरिं। फेर अन्धिम आणख लेब जे की करब ।

पूरा धन काययकरैमे आत नै भरि रहैन, राघविके । जेना नन्धुनि हुनकर मनोद्विधके एरेस्ट कऽ नेने होआ । मुदा कायक सम्पादन करब हुनकर शैक्श्याक आ पोफेशनल जबा-देही छेलैन । ए कायके सम्पादन केला । कनी जल्दी समाप्ति कऽ दशभंगाक लेल धिदा भेला । शआ धन रहइ । रस्मिमे जीबै कबइ माछ भेटलैन । लगभग दू अलोक कुडी । राघव हुण्डे कीन लेला । मलाधनसँ कुनो मोल-भा नि नञ्च केला ।

हामे माछ नेने राघव रिगिगधिसँ पो. सुनिकर केर मकानक पागणमे पशि केला । आशाक धिपधनि नन्धुनि नञ्च छेली । नन्धुनिक जेठ बालक अमरेशसँ पशि चललैन जे नन्धुनि रेञ्चयो स्टेशनपर अपन एक लघु कानिक पसारण हे गेल छै । राघव माछक झोरा अमरेशके दऽ देलधन । बेबी इन्होर पाआ देलकैन । राघव पाआ पीलाक बाद मुँह-हा निलैन । बाहर एला रि बेबी नेबोबला चाह दऽ गेलैन । राघव चाह पीबै रहला आ नन्धुनिके एबाक इन्जिअर करै रहला । लगभग अदहा घण्टामे नन्धुनि एली । ऐबि राघविसँ पुछलधन-
“कखन एलौ राघवजी?”

राघव-

“अदहा घण्टा भेल ।”

नन्धुनि-

“चाह इरिअध भेटल की नइ?”

राघव-

“हँ-हँ । सभ अछ भेटल । गमयपाआ आ चाह दुनू । आइ कनी जल्दी आञ्च गेलौ । अमरेश कहलैन जे अहा दशभंगा रेञ्चयो स्टेशन कुनो

कानि पसारण हे गेल रही।”

नन्ध्या-
 “हँ। पक्षी मास दशभंगा रेख्यो स्टेसनसँ हमर एक कानि पसारण
 होइ अछ। अही बहाने रचना करैमे आ साक्ष्य सज्जामे नीक
 लगै अछ।”

ई कहै नन्ध्या अपन कक अस धीदा होइ बजली-

“राघाजी, कनी हम दस अन्टमे अबै छी। फेर बैस कऽ आखान्
 भऽ गप करब।”

राघा गरदेन झला ‘हँ’ कश्च देलखन।

दस अन्टक भीरि नन्ध्या फेश भऽ राघा लग आख एक कुसीपर
 बैस गेली। राघाके कहलखन-

“जीबै कबइ माछ केए भेट गेल राघाजी?”

राघा-

“रस्मिमे एक मलाखन बेचै छख। सोचल कीन लइ छी।”

कनी कालक बाद नन्ध्या अपनेसँ भीरि जा चाह बना कऽ अनलैन।
 राघाके आगूमे चाहक टे दै बजली-

“लीअ राघाजी, एक बेर पुनः चाह पीबू। हमरो चाह पीबाक इच्छा
 भऽ रहल अछ।”

चाह संगे अछु नमकीन सेहो परोसल गेल रहइ। राघाके सेहो चाह
 पीबाक इच्छा भेलैन। दुनू गोरे चाह संगे पीला।

राखक भोजनक पशा नन्ध्या पुनः राघा लग आख साक्ष्य चचामे
 लख गेली। आइ नन्ध्या कारी रंगक नुआँ पहीअने छेली। नुआँक
 खोख नाखसँ अचचे। नाभी स्पस्ट देखाइ रहैन। नुआ पहीरबाक
 एहेन स्टाइल जे पूरा पेटक संग नाभीक सौन्दर्यस्फुटि भऽ रहल
 छेलैन। दुधिया गोराइ चाम नन्ध्याके काम सुन्दरी बना रहल छेलैन।

राघाँ ओइ सौन्दयमे डूँख गेला। मन बहकए लगलैन। पञ्चल बेर राघाँके ई एहसास भेलैन जे नारीक शरीरक सभसँ उतेजक आ कामुक अंग नाआ होइ छै। सुडौल पेट, शीकासँ नुआँ िरण करबाक अन्दाज ओकरा आरो उतेजक बना दइ छै। बहुँ स्तीगणके बच्चा भेला बाद पेटक नाआ फाँट जाइ छै आ पेट, नाआ आ नाआसँ आचाबला पदेशके शरीर-शरीर कऽ ओकर सौन्दयके सीहा कऽ दइ छै। नन्दाँ यदथ भागनि छेली। हुनकर पेट आ नाआ पदेशमे एकौटा दागक लेश नञ छेलैन। नाआ कि पेट देखाइ रहैन। के कहै अञ्ज जे नुआँ कामोतेजक नइ होइ अञ्ज। राघाँ जखन नन्दाँक सौन्दयक सञ्चक नुआँमे केलैन ि लगलैन जेना नारी सभसँ सुनञ्च, चहटगञ्च, कामोतेजक नूँमे लाञ्च सकै अञ्ज। नुआँके नाआसँ आचा पहीरक अन्दाज नन्दाँके यकीबला पद्मिसँ कनीकबो कम सुनर नञ बना रहल छेलैन। ईहो सम्भि भऽ सकै अञ्ज जे राघाँ नन्दाँक पद्मि आकञ्चि छला ि हुनका नन्दाँमे दोदारगंज यकीक सौन्दयकै छला। अन्ः सौन्दयक ि बखान करएबला पर आभञ्च करै अञ्ज जे गुण धिदमान छै। खैर, अखनुक मोटा-मोटी स्त्री ई छल जे राघाँके नन्दाँ बडड सोहनगर-रमनगर आ कामुक नारी लगै छथिन।

नन्दाँ सेहो कुनो कम पारखी िडबे ने छेली। मने-मन आँञ्च लेलैन, राघाँक मनोदशाके। बुझना गेलैन जे ओ स्त्रिय कुनो बडड सुन्दर आ सुगन्मयी फूलल फूल ि राघाँ ओइ फूलक मकरन्दके चुसएबला भमरा छला। यदथ नन्दाँके राघाँ र पी भमराके चुसए देमएमे कुनो आपै नञ छेलैन। हँ, कनी एक-आँञ्चन आरो परैख लेमए चाहै छेली।

नन्दाँ राघाँके डीम-लिच्छसँ जगबै पुछलञ्चन-

“की राघजि, आइ हम अपन कश्मीसँ पारम्भ करी अबा गदसँ?”
राघकि ने गदसँ मलिब छेलैन आ ने पदेसँ। हुनका मलिब छेलैन
िँ अफयआ अफयनन्धिसँ। झट-दे उतर देलखन-

“नन्धि भाभी, हमरा एह पसन्द अख जे अहा सुनाबी। अही कहू
की सुनबए चाहै छी?”

नन्धि बजली-

“एक बाँ कही?”

राघ-

“हँ-हँ कहू! की कहए चाहै छी?”

नन्धि-

“हमर इच्छा अख जे आइ सधिमि हम अहाके अपन लघु खन्दी
उपन्यास ‘मृमय आकाश’क अछु-अछु पेरक आ महत्पूण्यपसंग
सुनाबी। कुनो हजा िँ ने?”

राघ-

“हजा अएक? अबस्स सुनाउ।”

आब नन्धि अपन खन्दी उपन्यास ‘मृमय आकाश’क पना पलटए
लगली। पनो सभमे अनेक कनीय पाक्षिके अण्डरलाइन पेन्थालसँ
केने छेली। पेन्थालसँ रेखाकि पंक्ति एक-एक शब्दके पढ़ए
लगली। उरि-चढ़ाँ नीक जका मेन्टेन करै रहलैन। कखनो
परिचा चढ़ै कखनो पेमाक्षिक आगिमे पस्फुटि चेहरा आरो
सौन्दयके अखेरब पारम्भ कऽ दैन। राघ भाँ-क्षिहल होइ
नन्धिक उपन्यासक अंश नन्धिक मुहसँ भाँ-क्षिभोर होइ सुनै
रहला। बीच-बीचमे कखनो गरदेन अला, कखनो मुखाक्षिके गम्भीर
कऽ िँ कखनो अजासा पक्षिसँ पशुन कऽ िँ कखनो मुक्-कण्ठसँ
पशंसाक शब्दाडम्बरसँ नन्धिके उत्साह करै रहलैन। उपन्यास

कम पेरक नञ्च रहइ । एक एहेन ऋशोरीक की जे भागिश्मिमे आञ्च अपन जेठ बञ्चनक देबरसँ पेम-झीह कऽ लैँ अञ्च । बादमे पोरिना, शोषण, अग्न्याचार, भान्निमिक दोहनक आकार भऽ आग्नि-ग्लाञ्च आ अपन आणखपर पशापि करैँ ओ ऋशोरी आग्नि-हग्न्या करबा लेल झीश भऽ जाइँ अञ्च । आग्नि-हग्न्या कैयो लैँ अञ्च । उपन्यासक उरि-चढ़ाँ भान्नाक पबली आञ्च नीक जका पदञ्चाँ केने छेली । नन्झी समस्ती चीज एकीकृति भाँ आ स्वरि पमे राघवके नीक लगलैन ।

बीच-बीचमे राघव कनखी दोगे नन्झीक नाञ्च आ खुजल पेटक दशम करैँ रहला । नन्झी कखनो नाञ्च लग हाँ राञ्च लझीँ किँ कखनो फुजल छोञ्च दैँ छेलञ्चन ।

राघवक दृष्टि यदाकदा नन्झीक समुनि किँ अस्स सेहो जाञ्च । राघवके होञ्च- ठीके नन्झी भाँभी बानरक हाँमे नाञ्चकेल जका छैँ । पोफेसर सुगिर ञ्चनकर सौन्दर्यके भला की बूझ सकैँ छैँ ? नन्झी अपन उपन्यासमे से एक घण्टा ञ्च उरिण पढ़ैँ रहली । राघव सुनैँ रहला । अन्तिमे उपन्यासक अन्तम िन पना नन्झी भाँ-झीभोर भऽ पढ़लैन । आब राघव अस्स गम्भीर होइँ बजली-
“कहूँ राघवजी, उपन्यास पञ्चन आएल?”

राघव-

“हँ-हँ, खूब पञ्चन आएल । पँ नञ्च चलल जे समए केना आँकल गेल । भामिय, भान्नामय सभ रिहे नीक रचना । एकरा एन्ग्लोपोजी ऑफ इमोशन कहीँ कुनो अञ्चिआयोक्ती नञ्च । अहा हिँ मनोदशाक आतण अपन खाँटी अन्दाजमे करैँ छी । अहा पञ्चशि, अम्ब इग्न्याञ्चक झीनि अपना रिहे करैँ छी । नारी झीशे र पे अञ्चलाक मैञ्चल बाहणक िकझीँ सभान्ति नारीक मनोदशा आ पुरखक

नारीक पक्षी श्रीचार-संस्कार आ बेहियारक णिअ आ श्रीचिनमे अहा बेजोड़ छी। अहाक शैली आ अहाँक रचनाक पचार हेबाक आनि आशियकी अछ। अहाक अहापर ओ सरस्ती बैसल छै जे सयिके अना कुनो भय आ िखे-अच्छाक र पे लीखै छै। ओ सरस्ती बैसल छै जे पागिरीक, कुकृतिके िल ठोअ कहै छै। ओ सरस्ती बैसल छै जे िकिकी इलीट या समय समाजक अरि कऽ पुरख समाजक भीरिअ अलखजि आ सगिसँ संसारके पक्षअि करबै छै।”

राघसँ अपना बारेमे ऐ रिहक बाि सुअ नन्धि गद्-गद् भऽ गेली। कनी भानिअिक सेहो भेली।

राघि अ्स गम्भीर होइि नन्धि बजली-

“एक बाि कही, हमर पक्षसुखी हमरा लेखका बना देलक राघजि। की सोचने रही आ की भऽ गेल! देखै-देखै जीनिक भिम अरमानमे जेना अगराही लाअ गेल! आब जीनिमे कुनो इच्छा नअ अछ। एकेटा इच्छा अछ जे अपना संग घटल आ अपना आँखक समक घटल सभ पक्षसुखी-पक्षि आ घटनाके बेलाग अख पाठकक समक लऽ आबी। आइ ने काअि अयोक ि पढ़ि आ सयिक अनिषण हेइ? ि सुबह कभी ि आएगी?”

राघि गम्भीर भेला। अजासा बढ़लैन। मन भेलैन नन्धिक दिना आ इअिहासके कुरेदी। मन भेलैन कनी साअ्यिसँ अ्सकी आ सयिक अनिषण करी। अना अछु कहने अजासाक मूरामे नन्धि अ्स किला राघि। नन्धि बूझ गेली राघिक मनोदशा आ बाके आगा बढ़ौलैन।

गम्भीर होइि बजली नन्धि-

“राघजि, अहाके लागल हएि जे हम पोफेसर सुनिकरके अएक

नञ्च सम्मान करैँ श्छऐन?”

राघाँ-

“एहेन बाँ नञ्च छै नन्ध्णि भाभी। कनी ऐ बाँकि आभास हमरा अबस्स भेल जे अहा आ पोफेसर साहैबमे श्छछु मँ-आनणि अञ्च। श्चिचार दन्द िँ सभ पञ्चि-पतीमे होइँ छै। हमरो सहजन्याक संग अञ्च। मुदा हमरा लोकैनमे सामंजस्य अञ्च। मँ-आनणि बहुि नाजी अञ्च। पखर खिने रहैँ अञ्च जखन केलि हमही दुनू गोरे रहैँ छी। एकर श्चिपरीँ अहा आ भाइ साहैब केर मँ-आनणि जेना केकरो लग दृषश्चगोचर भऽ जाइँ अञ्च? आ आब अहाक साश्चयिक शणि केलासँ ई स्पष्ट भऽ गेल जे ई मँ-आनणि आ अहाक िँचाश्चक श्चिरोह अकारण नञ्च भऽ सकैँ अञ्च।”

राघाँकि ई बाँ सुआँ जेना नन्ध्णि भाँिँशमे आश्च गेली। आँश्चसँ नोर मोँिँ जका झहरए लगलैन। आब राघाँके नइ रहल गेलैन। उठला आ नन्ध्णिक माँके अपना एक हाँसँ पकैँड दोसर हाँसँ र माल आकाश्च हुनकर नोर पोछए लगला। नन्ध्णि आरो भाँकि भऽ गेली। नोर आरो िँरिगश्चसँ बहए लगलैन। कुहेस फाटए लगलैन। राघाँ नोर पोछैँ रहला आ नन्ध्णि नोर चुआबैँ रहली। ओना नन्ध्णिक आँश्च आ गालक स्पशँ राघाँकि मन दोसरे रंगक हुअ लगलैन। लाल-लाल कोमल गाल। रीम इँयाश्च लगलाक कारणे श्चकन। फूलल-फूलल गाल। नोर पोछबाक र मे समस्िँ गाल आ गरदेनक स्पशय अनेको बेर राघाँके भेलैन। नन्ध्णि सेहो नञ्च रोकलश्चन। शनैः शनैः राघाँ नन्ध्णिक गालके सहलबए लगला। नन्ध्णि चुप रहली। राघाँके मोन भेलैन जे नन्ध्णिके चुश्च ली। मुदा मनके िँर केला। हलाश्च एक आँगुर नन्ध्णिक ठोर लग लऽ गेला। आँगुर काँपैँ रहलैन। काँपैँ आँगुरके एकाएक पाछू लऽ

गेला। कञ्चये कालक बाद फेर श्रममि केलैन। ऐबेर तुडडी कि आँगुरके लऽ गेला। हाँ अखनो काथ रहल छेलैन। कनी कालक बाद हाँके संयञ्चि केला आ तुडडीके सहलबए लगला। िन अनट शि सहलबै रहला। आब राघाँ िरे-िरे नन्धकि कुसीक पाछा जा ठाढ़ भऽ गेला। फेरो अपन आँगुरक हरककि बढबए लगला। आँगुर आब नन्धकि रसगर-रमनगर ठोर श्वस याता पारम्भ केलकैन। पूरा शरी घामसँ अनेरे भीज गेलैन। राघाँके हाँ फेरो कापए लगलैन। हाँ फेर तुडडी श्वस लऽ एला। बीच-बीचमे र मालसँ नन्धकि नोर सेहो पोछै रहला। आब अन्धमि पयास केलैन आ आँगुरके नन्धकि ठोरपर राश्च देलश्चन। नन्धि जेना स्पिनसँ जगली शिना िरनि अपन हाँसँ राघाँके आँगुरके हटा देलश्चन। मुदा राघाँके आँगुर फेर हरकामे आश्च गेलैन आ नन्धकि ठोरपर आश्च शि गेलैन। आब श्वलनाइ कम भऽ गेल छेलैन। ऐबेर नन्धि सेहो पश्चिकार नश्च केलश्चन। राघाँ नन्धकि आचचा-ऊपरक ठोर सहलबै रहलाह। नन्धि आ राघाँ दुनू गोरे चुप छला। राघाँ केर हाँ आ नन्धकि ठोर अपन हरकामे यिसि छल। आकषण आ मनोभाकि श्वलन। आब राघाँ दोसर हाँसँ नन्धकि गालके सहलबए लगला। ई र म पाच अनट शि चलल। राघाँके श्रममि बढै गेलैन। आब हाँ नश्च काथ रहल छेलैन। राघाँ आब कनी श्रममि करै नन्धकि केसके माँ लग चुआ लेला। नन्धकि फेरो कुनो पश्चिकार नश्च केलश्चन। मुदा राघाँ कनी सोचमे जेना पड़ला। अन्िः नन्धकि संग हुनकर ई बेहिर केँकि उश्चि छेलैन? मुदा एकै कणमे राघाँ जागि भेला आ सोचलैन- ऐमे पाप केहेन? नन्धि भाभी िँ श्वानेहक थयासल छै। थयासलके पाश्च पीयाबएमे कुन पाप? ई सोश्च राघाँ नन्धिके जोरसँ पकड़ै हुनकर

औंठपर अपन ओठ पाछा देने लऽ एला। नन्ध्या आँख झाथ लेली। राघा चुम्बनक पहार-पर-पहार करए लगला। फेर अपना मुहमे नन्ध्याक ओंठ लऽ चूसऽ लगला। नन्ध्या सेहो राघाक संग देमए लगली। दुनू नैसर्गिक लोकमे धीचरण करए लगला। गिरिण सरमणीय अन्ति मुक्ति, भय मुक्ति भऽ चुकल छल। हँ, राघा आ नन्ध्या जोर-जोरसँ आ जलदी-जलदी सास लै छला। राघाके इच्छा भेलैन जे नन्ध्याके कि अपन छाँसँ सटा ली। अपन हिपासमे समेट ली। हाँ एक कणक हेतु कि अस् बढलैन मुदा कश्च नश्च एकएक हाँ आपस खीच लेलैन। राघा नन्ध्याके छोड़ पुनः अपन स्निग्धता पर आब गेला। नन्ध्या पाँच अन्तर्ध्या पारिक मूर्धन्यजका बैसल रहली। फेर उठली। अपनाके ठीक केलैन। राघा अस् देखै बजली-

“हम पाँच अन्तर्ध्या गिपस अबै छी।”

दस अन्तर्ध्या नन्ध्या राघा अस् आब गेली। राघाके सामने बैसै कहलअन-

“राघाजी, अगर अहा लग समए हो कि हम अपन जीनिक तृनिक् अछु विशेष घटनाक यति अहा संगे बाटए चाहै छी?”

राघा कि ऐ बाकि इन्जारे करै छला। झट-दे कहलअन-

“हँ-हँ एकएक नइ। अबस्स सुनाउ।”

नन्ध्या-

“भऽ सकै अछु सभटा तृनिक् कहै-कहै भोर भऽ जाए। ऐ स्त्रीधमे अहा की करब? फेर भोरे-भोर अहा केँ केना जाएब? अरामो करब कि आशियक ने?”

राघा-

“अहा अन्ति नश्च कर। जेकि समए लेबाक अछु लीअ। हमरा

एकिक अन्नक बहुि रास बाि सभके अन्नबाक अन्न । कालअ केी ने जाएब । अहासँ ििलापक पशाि ििन-चाअ घण्टा सूबि ििपशाि अन्ननाइ पारम्भ करब ।”

राघकि बािसँ नन्अकि आशस्ि होइि बजली-

“अन्नान्सँ पलानि माअ कऽ बैस जेबाक इच्छा अन्न । ऐसँ कानि अन्निक कन्न सकब ।”

राघाि उठला आ नन्अकि के हाि पकडैि कहलअन्न-

“ठीक छै खिन पलंगपर पलानि माअ बैस जाउ । मच्छरदानीक भीरि बैसब ि मच्छरो ने काटि ।”

नन्अकि राघाि के आगहक सम्मान करैि पलंगपर मच्छरदानीक भीरि बैस रहली आ कानि पारम्भ केली । नन्अकि दुनू पुत अलग ककमे अन्नभेर छला । राघाि केबाडीके सटा अपनो मच्छरदानीमे आअ गेला आ नन्अकि के पकड हुनका माकि के अपन पलानिपर राअ लेलैन । नन्अकि कुनो पञ्चकार नन्न केली । राघाि नन्अकि केस सहलबए लगला आ कानि पारम्भ करबाक इसारा केलैन ।

नन्अकि कानि कहब आरम्भ केली-

“हमर अानि एक सभान् अन्नयन् छला आ अहार सरकारमे पैघ ओहदापर छला । हम सभ दू बन्न आ एक भाँइ छेलौ । सभसँ पैघ हम । हमरासँ ििन बखक छोट हमर बन्न । आ छह बखक छोट भाए । हमर माानि-अानि हमरा सभ संग कुनो अन्नभेद नन्न केलैन । हम िनू भाए-बन्न कन्निट स्कूलमे पढलौ । हमरा लडका सभसँ अतानि छल आ ओइ लेल कुनो पञ्चारिसँ कुनो पान्दी नन्न । जखन पाँचमी ककमे गेलौ ि बाबूजी साईकल कीन देलैन । एक मासक भीरि साईकल चलाएब सीख गेलौ । स्कूल आ बजार इयिअमे साईकलसँ जाए-आबए लगलौ । चूअ हमर बाबूजी आ मा लम्बा

छला। ई हमहूँ िनू भाए-बञ्चन कद-काठीमे छरहरगर आ गोर-नार रही। जखन हम दस बखक भेलौ ि लोकके बूझ पङ्कए जे चौदह बखक छी। सुनैर ि रहबे करी। थिजीक आमदनी अगाि रहैन ई कुनो रिहक थक नञ्च छल। जखन कखनो कुनो चीज, खेलौना, सि्त्त, भोज्य पदायिआथक जर री भेल, हमर माि-थि रिर्न ि आथ दइ छला। ऊपरसँ जेठ सन्नि हेबाक फायदा अलग छल। हम अपन माि-थिक पमि सन्नि रही। आ हमर माि हमर नाना-नानीक कपार...।”

इम्हर राघि, नन्थिक कखनो केस ि कखनो ओठके सहलबै रहैन। कखनो काल राघिक हाि नन्थिक गरदेन थि चञ्च जाइन। मुदा राघि अपना-आपके गरदेन थि सीञ्चि रखला। हँ, बीच-बीचमे ठोर, आँथ आ कपारपर चुम्बन करै रहला। नन्थि पथिकार नञ्च करथिन। ओइसँ आरो हथयर होइ उजाणि भऽ अपन किक बखान करै रहली नन्थि।

नन्थि-

“हमर थिक एक संगी पटना थिथिदालयमे इथिहासक पोफेसर छेलथन। जखन हम मैथकक परीक दऽ देलौ, थिया पनरह बखक रही। थिक पोफेसर थत हमरा ओए एला। हमर माि-थि हुनकर नीक आि-भगि केलथन। हम हुनकर पएर छूथ कऽ पणाम केथेन। ओ हमरा पुछला, की करै छी बुचची? हम जबाि देखेन-हम ऐबेर मैथकक परीक देलौ अथ। ओ पसन भेला। ओही बाकि रममे हमर बाबूजी पोफेसर साहैब लग आदिन केलथन, कनी बुचची लेल योग्य बर देखू ने पोफेसर साहैब? पोफेसर साहैब बजला- कनी समए देल जाउ, हम अबस्स नीक बर किबाक पयास करब। हमर थिजी हुनकर आशासन सुथ गद-गद भऽ गेला। हमर बाल-सुलभ

मनके ई पपोजल नीक नञ्च लागल।”

नन्ध्णि बजै रहली आ राघा सुनै रहला। एकके का सुनेबाक आरिणि ि दोसरके का सुनबाक आजासा। दुनूक मनमे एक-दोसराक मानञ्चक आ शारीञ्चक पेमके पाप् करबाक उक्किट अञ्चालाषा आ इच्छा। मुदा ऐ इच्छाके केलि कामेकर कहनाइ उञ्चि नञ्च। राघाकि हा आब कनी मयादाके भंग करै गरदेन आ बाञ्च लग आञ्च गेलैन। हा पुनः कापए लगलैन। मुदा च्चम्मणि नञ्च हारला। िरे-िरे राघाकि हा नन्ध्णिकि किके स्पशयकरए लागल। पञ्चने एक आँगुर, फेर दोसर आँगुर आ बादमे सम्प्ति हा...। नन्ध्णि आनन्ध्णि भेली। मुदा कारि मक पीहके रोकलैन नञ्च। का चञ्चि रहल।

..नन्ध्णि-

“जखन पोफेसर साहैब चञ्च गेला ि हम अपन माएसँ लड़ए लगलौ, जे अखन नञ्च करक अञ्च श्रीहि। पञ्चने पढ़ब। एम.ए. करब। कुनो कौलेजमे नौकरी करब। फेर देखल जेइ। मा अहा श्रीजीके कञ्च श्रयौन जे अखन हम्मर श्रीहिक सम्बन्धमे नञ्च सोचै आ ने केकरोसँ आर करै।”

“..मुदा माए छेली बुझनुक आ परम्परासँ बान्हल। झट-दे बजली, अहा चुप रहू ने बुची। कुनो आइये लड़का का गेल? जहा श्रि पढ़बाक बा छै ि पढ़ैली लड़की आहक बादो पञ्च सकैए। अहाक काज अञ्च पढ़ब आ घरक काजमे दक्ती पाप् करब। आहक आणख बाबूजीपर छोञ्च श्रयौन। जहा श्रि पोफेसर साहैबक बा छैन ि ओ बडड नीक लोक छै। केको नीक कन्यादान आ बरदान करा चुकल छै। ऊपरसँ अहाक बाबूजीक बालसखा सेहो छै, जे करी से नीके करी।’

“माइक मनमे पोफेसर साहैबक पथी अटूट असीस देख हमहूँ कनी आश्चर्य भेलौ। आ एकबेर पुनः मस्तीक अनंगी जीबाक पर्यास करए लगलौ। मुदा मस्तीबला अन्तमे जेना गहण लाय गेल हमरा! तिन मासक भीरि, रश्मि अन्त पोफेसर साहैब अनु बजाएल आ नौलि पाहुन जका हमर आसिपर एक आरो अतक संग पहुँचला। संजोगसँ अजीजी घरेपर छला। पोफेसर साहैबके नीक जका आ-भंगि आ सगि-सकिार कएल गेल...”

“..चाह इयाश्च गहण करला बाद पोफेसर साहैब अपन अटैची खोलला आ एकटा पोस्टकार्डसाइजक ब्लेक एण्ड हाइट फोटो आकाश अजीजीके देखबै कहलकैन जे ई लड़का बड़ संस्कारी छै। बी.ए. आ एम.ए. दुनूमे गोल्ड मेडल भेटल छैन। पी.एच-डी.क तिसीस तियार छैन। एक मासक भीरि जमा भऽ जेनि आ छह मासक अश्रयन्तिरे पी.एच-डी.सँ अडिअ भऽ जे। तड़बे अन्तमे लेक्चरर भऽ जे। हँ, उमेरमे करीब चौदह-पनरह बखक अन्ति अबसस छैन।”

“..हमर बाबूजी गम्भीर होइ फोटो देखए लगला। जखन लड़काक सम्बन्तिमे सभ जानकारी भेटलैन तँ ‘हँ’ कश्च देलखन। पञ्चाकार लग अधिकार मालाक पञ्चक भेल आ श्रीहि तँ भऽ गेल। भेलै जे एक मासक भीरि श्रीहि हेइ। हम अन्तिमे मग्न भऽ गेलौ। आब की करँ, की नश्च? हमर आयु पनरह बखक आ हमर होमएबला पथीक आयु तिस बखक!!”

“..एकेटा आस लागल जे माए लग जाइ आ हुनकेसँ बाँ करी। माए लग गेलौ। कहलकैन- ‘ई की भऽ रहल अश्च? तँपर माए बजली-‘देखू बुचची जे हेँ से नीके हेइ। अहाक अति अहा लेल कुनो गलि आणख तँडे ने ले। लड़का श्रिदान छै। एकर फायदा अहाके

भेटि। अहा असानीसँ एम.ए; पी.एच-डी. इयिअ कऽ सकब। ई लडका अहाके ऐ अशामे उसाश्चि करी आ सभ रिहक मदै देी। ई, अहा अन्ति जुआ कर। हमहूँ ई अहा बाबूजी सँ रिह बखक छोट छी। कुन समस्या अश्च हमरा? कहू ने?”

“..आब हम माआ लेलौ जे हमर समस्याक कुनो आदान नश्च अश्च। आम् समपय मात बाँचल छल। एक मासक भीरि हमर श्रीहि भऽ गेल। श्रीहिक राक्षीमे गि-बेहार करै-करै चाश्च बाश्च गेल। हमरा ईहो नश्च बुझल छल जे श्रीहिक पशा रि-कआया आपसमे बाकि करै छै। अगर दुनूमे सामंजस्य होउ ई शारीश्चक सम्बन् सिहो स्तिथि कऽ सकै अश्च। हम श्रीकिरीक बगलमे श्रीहि भेलोपरान्ति भेर नीनमे सुधी रहलौ। शायद सुकिरके ई बाकि नीक नश्च लगलैन। आनसरमे करीब साढ़े दस बजे, कोहबर घरमे हमरा असगरमे बजा पुछलैन- बुचची, राक्षीमे अहा हमरा लग अए ने एलौ? ईपर हम कहने रश्चएन- नीन आश्च गेल छल। सुधी रहलौ। खिन ओ कहने छला- ठीक छै आइ अन्तमे हमरा लोकैन गप करब। कहलयैन- ठीक छै।”

“..मुदा कश्च नश्च अए हम अपन सहेली सभ संग बाकि-चीमे लाश्च गेलौ। सुकिर लग नश्च जा सकलौ। पाच बजे साझमे सुकिर हमरा बजेला। हम सहज भासँ हुनका लगमे गेलौ। ओ मिसे घोर छला। हमरा घरमे पशि कश्चि-मारि कहलैन, अहा अए ने एलौ आइ अन्तमे?”

हम कहलयैन-

“असरा गेल। सखी-बश्चनपा संगे बैसल रही।”

सुकिर-

“बुचची अहा बीस बेर कान पकैड कऽ उठू-बैसू। ई हमर आदेश

अच्छ ।”

“हम कहलैयैन- एक? हम नै उठब-बैसब । नञ्च आञ्च सकलौ ि ऐ लेल कान पकैड कऽ उठ-बैस करबाक की पयोजन?”

“..हमर ई जबाि सुआ सुकिर चप्पल लऽ हमरा अ्स बदला । हमरा भेल ई आब हमरापर पहार करी । एकर पञ्चकार करी । जँ नञ्च करब ि अानगी पयसि अानकर कोपभाजन बनए पड़ि । ई सोआ हमहूँ अपन पेन्आल अलबला सैण्डल हांमे उठेलौ आ आआयाइि बजलौ, खबरदार जे हमरा मारलौ । अगर हमरा मारब ि हमहूँ चप्पलसँ अहाके कपार फोअ देब ।”

“सुकिर बूअ गेला जे हम हुनका केलि गीदर भभकी नञ्च देखा रहल छेआएन अथि अगर ओ हमरा लग एला ि हमर पेन्आल अलबला चप्पलसँ... । सुकिर ठमैक गेला । हांसँ चप्पल आचचा राअ देलैन । हमहूँ अपन पेन्आल अल सैण्डलके आचचा राअ देलौ । आब सुकिर अछु अबर गाअक पयोग करए लगला । हम फेरो शेरनी जका आआएलौ, खबरदार जे अबर भाषाक पयोग केलौ आ गाअ पढ़लौ हमरा! अहा एकटा गाअ पढ़ब ि हम दसटा गाअ पढ़ब । एहेन बेहिर हमरा लग नञ्च चलि ।”

“..सुकिर अपन मन मसोअ कऽ रअ गेला । केलि एबे बजला जे राअमे गप करब, अखन अहा जाउ.. ।”

“..हम चोटे कोहबर घरसँ बाहर भऽ गेलौ । ओना ई आआि भऽ गेल जे ई आदमी अिदान कम आ राअस बेसी अअ । एकरा पती नञ्च एक सेअिका अिबा दासी चाही । मुदा हम दासी िड़े ने रही?”

“..राअमे सभ िि-बेहिरक बाद पाचटा गीहाअ अिदापअिक गी-

‘सुन्दअ चलली पहुँ घर ना

चहु अ्स सखी सब कर रि ना रे

घरबा मे जाइँ परम डर ना रे
जइसे रहु डर शशी कापे ना रे...।”

“..गबैँ हमरा कोहबर श्वस लऽ गेली। हमर स्त्रीक्षी ‘जैसे रहु डर शशी कापे ना रे’ बला छल। पनरह बखय जीनिमे पञ्चल बेर डरक अनुभूक्षी भेल छल। खैर!भीरि पशि केलौ। ओछाइनपर चम्पा फूल श्वश्वयाएल। इतसँ समुच्चा कोठली सुगन्क्षी। सुकिर चुपचाप एक मोट पोी पढ़बामे लिलीन छला। हम जखन भीरि गेलौ कि कहलैन- आउ बैसू बुचची। हम बैस रहलौ। सुकिर ठाढ़ भेला। घरक केबाड़ भीरिसँ बन्द केला। आ हमरा लग आश्व कहलैन- ‘बुचची, आइसँ हम आ अहा पक्षी-पती छी। ऐ बाकि एहसास अहाके अश्व ने?”

“..हम चुपचाप रही। सुकिर बजैँ रहला- ‘अहाके बुझल अश्व जे आब हमर शरीरपर अहाक अधिकार अश्व आ अहाक शरीरपर हमर। आइसँ हम सभ एक-दोसरक, शरीरक स्पशयआ पयोग करब। ई कहैँ सुकिर हमरा लग आश्व हमर गालके चुश्व लेला। हुनकर मुखसँ जदा पानक गंि अबैँ छल, जे हमरा नीक नश्व लागल। ऐसँ पूयिस्ती-पुरखक बीच यौन सम्बन्कि नाम अबस्स सुनने रश्वऐक मुदा केना होइ छै, की सभ होइ छै, की पश्व या छै, इमे स्ती केर भूश्वका की होइ छइ आ पुरखक भूश्वका की होइ छइ, इि सब बाकि ने कि कुनो जानकारी छल आ ने कुनो अनुभकि। हम एही गुण-निमे रही। मुदा सुकिर आलसज बश्व अपन सित हमरा समक खोलए लगला। कनी काल कि हम चुप रहलौ मुदा जखन ओ लगभग आश्वित भऽ गेला कि बाश्व उठलौ- ‘ई की कऽ रहल छी अहा? आलसजिक पाराकाष्टा पार कऽ रहल छी। ई नीक बाकि नश्व। उघारे देहे ओ किरि जका दाकि आपोरैँ हमरा श्वस बढ़ला। हुनकर

भातिना हमरा श्रीसिक लाथ रहल छल। हम पलंगपर सँ उश्च कऽ बाहर भगबाक आरफि पयनि केलौ। मुदा बेकार। पाछासँ हमर झोट पकैड सुनिकर हमरा ओछाइनपर अनला आ सीफि हमर कि पकैड लेलैन। हम हाँ छोड़ेबाक यत करए लगलौ। मुदा बेकार। हमहुँ जल्दी हाथ मनबाक लेल रियार नश्च। सुनिकरक दश्चना हाकि आँगुरके दासिँ हम काटए लगलौ। आब सुनिकर मिसे पचण्ड भऽ एक घूसा हमरा मुँहपर मारलैन। लागल जेना आँश्चक आगू अनहार पसैर गेल। हम लाचार भऽ गेलौ। बश्चष्ट राक्स लग एक पनरह बखक बच्ची भला की टीक सकै छश्च। सुनिकरके मिस कम नश्च भेलैन। हमरा ओ निन चमेटा आरो मारलैन। फेरो हमर समस्कि कपडाके खोश्च आश्चित कऽ दश्चंदा जका हमर अंगक संग खेलए लगला। हबसी जका हमर कि, दरदेन, पीठ, आम्ब आश्चपर दाँ कटलैन। आ हमरा संगे बलाकिार केला। एक ओहेन बलाकिार जेकरा सामाश्चक मान्यता पाप् छै। एक ओहेन बलाकिार जइमे बलाकिारीके लड़कीबला सभ भगानिक दजा दइ छइ आ पश्चि श्वन बलाकिार करबा लेल असिर पदान कऽ अपना-आपके न्चि बुझै अश्च। एहेन बलाकिार जइमे लड़कीके माए, बश्चन, भाऊज, सखी एँ अन्य मश्चला सभ सजा कऽ, सीश्च कऽ उँसिकि माहौल बना गी-नाद गबै शृगार कए बलाकिारीक कक्मे असगरे छोश्च अबै छै। ओइ अभाश्चनक दिना, ददके के बुझि? नारीक जनम नश्च श्वअए श्रीति..!”

‘श्रीति’ कश्च नन्श्चि िड़े कालक लेल जेना ठमैक गेली। मुदा ओ पुनः ओही र ममे आश्च बाजए लगली-

“..हमरा बीचमे दाँ लथ गेल। हमर कानबक अजिज नश्च श्वश्चअए झिले एक हाँसँ हमर मुँहके दबने रहला सुनिकर। जखन दाँ

लागल[॥] पाआक छीक्या माअ दा[॥] छोड़ाबै[॥] । हम आब अपना-आपके सरेण्डर कऽ देलौ । भअ राअ[॥] चील आ नअया जका सु[॥]किर हमर मास नोचै[॥] रहला । िन बेर बला[॥]कार केलैन । भोरे साढ़े पाच बजे कहलैन जे आब बाहर जाउ । हमर पएर डगमगा रहल छल । आँअ झँपा रहल छल । समुच[॥]चा शरीर गुड-घा जका ददयकरै[॥] रहए । गुप[॥]गिक ददक की चचा करी । नअ बाजी सएह नीक । पअल बेर ई अनुभू[॥] भेल जे बेटी बआ कऽ रहनाइ के[॥]कि कषटमय छै । बरामदाक का[॥]मे अखरे चौकीपर बेहोशीक हाल[॥]मे पअ रहलौ ।”

“..िडबे कालक बाद हमर भाभी एली आ पुछलैन- बुच[॥]ची पाहुन पअन एला? हम िमसे िर होइ[॥] जबा[॥] दिअएन- भाभी एखन जाउ! हमरा असगर सु[॥]ए अ[॥] ।”

“..पछाइ[॥] माए एली । हमर मा[॥] सहलबै[॥] पुछलैन- बुच[॥]ची, मुँह-हा[॥] नअ िब? मौहकक बेर भऽ गेल अअ । पाहुन इन्[॥]जिार कऽ रहला छै[॥] । हमर कुहेस फाअ गेल । हम माएके भअ पाज पँअया पकै[॥]ड भोकाअ पाअ कानए लगलौ । संयोगसँ ओ[॥]ए अयो नअ छल । ियो माए दोसर घरक भी[॥]र लऽ गेली । हम काअ कऽ सभ बा[॥] कहलयैन । हम कनै[॥] रहलौ आ माए हमरा अपन करेजसँ सटेने रहली । भेल सभ अन अअना माइक छा[॥]िसँ सटल रही ।”

“..माए गम्भीर होइ[॥] बजली- बुच[॥]ची की करबै एकरे कहै छै नारी जीनि! समझौ[॥] सबि सभ पअस्की[॥]मे स्तीगणेके करए पड़ै छै । अहाके नअ बुझल अअ जे हम अहाक अ[॥]िक संग के[॥]कि समझौ[॥] केलौ अअ । अहा पाहुन संगे अल कऽ रहू । दुनू गोरेमे समझौ[॥] भऽ जाए[॥] ि जीनि स[॥]गियभऽ जाए[॥] । पारम्भमे कनी अक[॥]ि सभके होइ छै । अहा अन्[॥]ि जुअ करब ।”

“..भेल जेना माय सेहो हमर ददके नअ बूअ सकली । नीक ई रहै[॥]

जे ऐ नृशंसकारी दुगुना उमेरक कारी भुजुंग डेढ़ आँखक धीदानक बदला हमरा अनेह करएबला, हम-यिस्क कमे पढ़ल आ सुन्दर युकि हमर पक्षी रहै। मुदा बाबूजीक पागक रक्कक लेल आ सगा-सम्बन्धी लग अपन शेखी बघारबा लेल बाबूजी हमरा राक्क संग बान्छ देला। ई चण्डाल हमरा लेल कसाइ अछ।”

“..जीनिक यह अयक्षि छै, ई हमरा जाँ भऽ गेल छल। लेखन हम ऐबाकि आणख अबस्स लऽ नेने छेलौ जे कुनो पक्षस्त्रीमे सुकिरके अपनापर आर मण नख करए देबैन। आब अगर हमरा ओ मारी कि चोरा कऽ माहुर खुआ जान माख देबैन।”

“..ऐ दृढ़ पक्षीजा आ आँखि धीशासक संग माइक संग हम पएर-हाँ कि मौहक करए हेँ चख गेलौ।”

“..दोसर राक्षिमे हमर र प रनचण्डीबला छल। हम घरमे पशि कक्षि सुकिरके कख देखएने, देखू! हम अहाक पती छी। शिया नख। हमरासँ शारीखक सम्बन्धि चाहै छी। राखू। मुदा हमरा संगे भक्षिमे माख-पीट नख कर। अगर ई स्त्री भेल कि हमरासँ खराप क्यो ने हए। केँकि मारब घरमे अहा। बाहर अकलैँ देरी हम चपपल, ईटा कुनो सिँसिँ सबहक समक पहार कऽ देब। यियो नख मानब कि निना जा एफ.आई.आर. दजयकरा देब। अगर अहा सम्मान करब कि हमहूँ सम्मान करब आ चुप रहब।”

“..हमर ऐमिकीसँ सुकिर काथ गेला। भेलैन इज्जति मख्या-मेट भऽ जाए। ऐबेर ओ अछुनख बजला। यदथ ओ ओइ राक्षिमे निन बेर हमरा संगे यौन सम्बन्धि स्थिति केलैन- बलाँ आ हमरा इच्छा धिपरी। हम सोख लेलौ जे ई मनुख हमर निक भूखल अछ। मनक भूखल नख अछ। हमहूँ एकरा संग मनसँ पेम आ स्नेहाङ्गन कि नख कऽ सकै छी। फेर कऽ लीअ जेँकि हमर

शरीरक उपयोग करि। हम जड़ बनल रहब...।”

“श्रीहिक पाच बखक पशाहि हमर पमि पुत अमरेश जीक जन्म भेलैन। िन बखक बाद श्मल भेला। िकर बाद कुनो बच्चा नश्च होमए देखाए। जड़ि जीनि चलै रहल। सुगिर आ हम दू श्रीपरी बाटक बटोही। हम सुगिर संगे को सभा, कायश्म, श्रीह-दान इयाश्मे नश्च जाइ छी। श्रीहिक दोसरे श्मसँ बाबूजीके टोकनाइ कि छोश्च देल। अबै छै ि यंत जका पणाम कऽ लइ श्चएन। एकर अश्वर्क श्छु नश्च।”

“श्रीहिक िन बखक िद एक घटना घटल,जे हमर पश्चिरके झँककोश्च देलक।”

राघ-

“से की?”

नन्धि-

“हमर छोट बश्चन राशनी हमरा ओएि आएल छश्च। करीब पाच मास एए रहल। कश्च नश्च केना ओकरा सुगिर केर छोट भाए पभाकरसँ पेम भऽ गेलइ। एक मासक बाद हमरा राशनी ऐ बाकि जानकारी देलक। हम मना केले मुदा दुनू एक-दोसरक पेममे पागल। एक-दोसरक संग मरबा आ जीबाक सप्पि खेबाबला। यदश्च सुगिर सेहो ऐ पेम-पसंगसँ पसन नश्च छला। हमर माि-श्री सेहो दुनूके बुझेलश्चन। मुदा बेकार। एक श्चन दुनू अपन हाकि नस काश्च लेलक। जखन पमि चलै ि डाक्टरके बजाएल गेल। दुनू पश्चिर राशनी आ पभाकरके पेम लग झूश्च गेल। श्रीि श्रीह भऽ गेलइ। राशनी श्रीहिक पशाहि जमशेदपुर चश्च गेली। जमशेदपुरमे पभाकर अंगेजीक लेक्चरर छला।”

“िनि बखयश्च ि बडड नीक रहलै, एकटा बेटा सेहो जन्म लेलकै

मुदा बेटाक जन्म होइ-मारि दुनूमे खट-पट परम्भ भऽ गेलइ। माथ-पीट पारम्भ भऽ गेलइ। सक्की बद्-सँ-बदरि होइ रहलै। एकबेर ि राथनी लाक कि लेबाक लेल मन बना लेलैन। मुदा हमर बाबूजी, सुनिकर, हमर ससुर कश्यो चाहे राथनीक ससुर, सभ अल कऽ राथनीके सम्बन्धि छिछेद नञ्च करए देलखन पभाकरसँ। अछु अन्क बाद राथनी पुनः जमशेदपुर गेली। छह मास ि ठीक रहलैन। सामि माससँ एिह रामा एिह खटोला। फेर मभिद-मनभेद पारम्भ। फेर माथ-पीटक अलअला। राथनी जखन गि भऽ जाकि ि हमरा फोनपर गप करए लगै। हम ि अपने लाचार छेलौ। की कऽ सकै छेअएन। खाली एकि कञ्च दइ छेअएन जे हम ि मना केने रही ने राथनी? ई सभ ि राक्सक पथरि अञ्च। ई सभ शेरक खालमे नञ्चया अञ्च। राथनी अछु नञ्च बाजै। केलि अचुअ-अचुअ कऽ कानै। फेर कहै- बञ्चनदाइ! हमर अने खराप छल। ई राक्स दार पीब जरै अगरेटसँ हमर जाघ आ कनपटी जरबै रहैए। कामारि भऽ थिपरी रिहक सेक्स लेल हमरा बायि करै अञ्च। एकर शरीरसँ थिअत रिहक गन् अबै छै। एकरा की कएल जाए?”

“राथनीक पश्न छोट मुदा हमरा लेल यक पश्न छल- अनुअि।”
 “आ अन्मि जीवनक कष्ट आ पभाकर केर शारीअक आऔर मानअक यानिसँ गि आअ कऽ राथनी असगरेमे अपन दञ्चना हाकि नश काअ लेली। घरमे अयो ने रहइ। जखन राथीमे साढ़े दस बजे पभाकर एला ि देखै छै जे शोअकि रि बहै आ राथनी बेसुअ भेल पड़ल। पभाकरके अछु ने फुरलैन। उठा-पुठा कऽ नञ्चाय होम लऽ गेला। डाक्टर कहलखन सभ अछु समाप् भऽ गेल। राथनी आब जीबै नञ्च छै। आ ऐ रिहे एक जीनिक

दुखद अन्ति भऽ गेल। रात्रणीक आम्हियाक पशाहि हमर बाबूजी के श्रमाग खुजलैन। आब ओ बुझलश्र्वन जे समाश्र्वक मयादा, लोकाचार आ सोश्र्वियानाक नामपर केना मश्र्वलाके शोषण आ दोहन कएल जाइहि अश्र्व। देखू रक्त्सबा पभाकरके? आब ओ अनेरे नोर चुअबै रहैए। असगरेमे मयि राश्र्वामे रात्रणी अहा केएि चश्र्व गेलौ? आश्र्व-आश्र्व श्र्वश्र्वआइहि रहैए। लेश्र्वन आब की। श्र्वश्र्वएने की हएि? रात्रणी ि उश्र्व गेली श्र्वजरासँ। अजाद भऽ गेली। नीके भेलइ। सभ श्र्वनका झंझट, शोषण, मार-पीटसँ नीक चिचारी दुश्र्वया छोश्र्व चश्र्व गेल।”

रात्रणीक कहि कहलाक बाद नन्श्र्वहि जोर-जोरसँ सास लेमए लगली। छाहि क ङिकन बश्र्व गेलैन। मनमे अकुलाहट उठए लगलैन। राघहि सेहो रश्र्वि भऽ गेला। पोफेसर सुकिर पभाकर एहि सुकिरक पश्र्व घृणा आ आरोश भश्र्व गेलैन। नन्श्र्विक पश्र्व श्र्वनेह आ संदिना बश्र्व गेलैन। नन्श्र्विक आँश्र्वमे नोर छेलैन। गालपर सेहो नोरक टघार आश्र्व गेल रहैन। राघहि अपन र मालसँ नन्श्र्विक नोर पोछलैन। नन्श्र्वि राघकि पलपिपर सँ माहि हटबै बैसली। अपन कक श्र्वस श्र्विदा भेली। राघहि चुप छला। दस श्र्वनटक भीरि नन्श्र्वि रिरोजिजा भऽ मुँह-कान ि, रीम इयिाश्र्व लगा पुनः राघहि केर ककमे पशि केलैन। राघकि मन हश्र्वि भेलैन। नन्श्र्वि राघहि लग आश्र्व श्र्वना श्र्वछु कहने पुनः राघकि पलपिपर माहि राश्र्व लेट गेली। राघकि हाहि अनायास नन्श्र्विक मापिपर चश्र्व गेलैन। आ राघहि नन्श्र्विक रेशमी केशके सहलबए लगला।

नन्श्र्वि किके आगू बढेनाइ शुर केलैन-

“राघजि, आब कहू ई सभ सम्मानक पात छै?”

राघहि-

“नञ्च नन्ध्वा भाभी नञ्च । ई सभ ि कसाइ छै । नञ्चका लोकैनके अपन नञ्चगी आ नञ्चकक मिम कागजाकिके आनमे जरा कऽ सुडडाह कऽ लेबाक चाही । एहेन नञ्चक की पयोजन जे मनुखके जानरि बना नञ्चए?”

नन्ध्वा-

“देखू राघजि, अखन डेढ़ रात्री भऽ गेल अञ्च । अगर कालञ्च अहा केँ बाहर नञ्च जाइ ि हम चाञ्च-साढ़े-चाञ्च नञ्च अपन नञ्चनगीक टिनि अकसह सुनबए चाहै छी । अगर बाहर जेबाक नञ्चार अञ्च ि ऐँ श्रीराम दइ छी?”

राघ-

“आगू अपन टिनि पूरा कर । हम कालञ्च केँ ने जाएब । आगूक टिनिसेँ सेहो हम बहुँ नञ्छ सीखब । समाजक एहेन चीजके जाञ्च रहल छी जेकरा सम्बन्धमे कल्पना कि नञ्च केने रही ।”

राघकि ऐ आशासनसँ नन्ध्वा नञ्चानि भऽ गेली । राघकिके हाँ पकैड़ अपन कि लग लऽ जा बजली-

“राघजि, आइ पञ्चलबेर श्रीहक बाद कुनो पुरखक पञ्च नञ्चनेह उप्पिन भेल अञ्च हमरा । हम ि सुकिर आ पभाकरक नञ्चरदानी देख ई माञ्च नेने रही जे सभ पुरख घञ्चया आ स्तीगणक चामक भूखल अञ्च । हमरा होइ छल जे पुरखके केलि अपन दंभ, लोक-लाज, समाञ्चक मयादासँ मलिब रहै छै । स्तीगणक मान, मयादा स्तीञ्चमान, भानि भाँड़मे गेल, इसँ पुरखके की पयोजन? लेञ्चन अहाक नञ्चार हमर मान्यकिके बदल रहल अञ्च । जइ रिहे पञ्च नञ्चन अहा अपन पती सहजन्यासँ फोनपर बाँ कुरै छी । हरेक नञ्चणमे हुनकर भागीदारीके सम्मान करै छी, इसँ ई स्पष्ट अञ्च जे अहा स्तीके सही अञ्चि सहचरी मानै छी ।”

राघा-

“अहा ठीके कहै छी नन्ध्या भाभी। ओना, एक बाँ सपष्ट कऽ दी जे जइ पञ्चरिमे हमर जन्म भेल अछि डिमे मञ्जलाक सनि सपिप छै। हमर थि जना हमरा माएके पुछने कुनो काययनञ्च करै छै। पञ्चरिमे संचालनक मिम अममेरी माइक छैन। थिजीक काययकेलि अपिपाजस छैन। केकि आणस हमर माए असगरे लै छै। हमर थि कखनो ओइ आणसपर अबा माइक आणस कमिपर पश्न नञ्च करै छै। यह सथि हमरो अछि। बजारक खरीददारी, गृहकायक आणस, नौ-हकार, कुटुम-पञ्चरि सम्बन्धि मिम आणस सहजन्य अपने ससाँ करै छै। निउठा हम हुनका दऽ दइ छैन। बाकी कुनो चीजसँ हमरा लेना-देना नइ अछि। आइ थि हम कस्यो सहजन्यासँ कुनो रिहक ससाँ नञ्च लेसैन। हुनकर आलमारी आ लॉकर खुजले रहै छैन, मुदा कस्यो हम ओकरा नञ्च छुबै छी। यह शायद हमरा दुनूक बीच असली पेमक गाठ अछि। सहजन्याक माँ-थीके हम अपन माँ-थी जका सम्मान करै छैन। एकर फायदा हमरा ई भेटै जे सहजन्या सेहो हमर माँ-थीके बड्ड सम्मान आ सेि करै छै। हमरा हमर सासुरक लोक सभ कहै छै जे अहा अलग-रिहक लोक छी। अन्या पतीके माँ-थीक पथि केकर थियान जाइ छै- अथिलामे।”

राघाकि बाँ सुआ नन्ध्या भाँकि भऽ गेली। राघाकि पथि पेममे हुनका आरो बृथि भऽ गेलैन। राघाकि हाँके जोरसँ पकड़ अपना छाँँ लग सटेलैन। राघाकि हाँक पृष्ठ भाग आब नन्ध्याक किछ अनुभि कऽ रहल छल। राघा ऐ अनुभिमि मग्न छला। रीरे-रीरे स्रम कऽ राघा अपन हाँके सोझ केला आ आब अपन दुनू हाँ सोझे-सोझ नन्ध्याक किमर रथ ओकर आडीक ऊपरसँ दबाबए

लगला। नन्ध्या चुप रहली। कुनो पथीकार नञ्च..। िडबे कालक पछाइ राघकि हाि नन्ध्याक आडीक भीरि पशि कऽ अपन आनन्दक हरकामे संलग्न भऽ गेल। आनन्ध्याि नन्ध्याि। पञ्चल बेर नन्ध्याि स्ती आ पुरखक सामंजस्यक पेमक अनुभूथी जे कऽ रहल छेली। आब जखन पोफेसर सुकिरक यिाकि जान भऽ गेलैन ि राघकि मनक अपराबोि सेहो खमि भऽ गेलैन। नन्ध्यािके शारीश्चक आ मानश्चक सहयोग देनाइ आश्चाि र पे राघकि परमाश्चि कायय अिबा ई कहू जे मानबाश्चिकारक रक्त्र करब बुझना गेलैन। नन्ध्याि आनन्ध्याि होइि श्वना राघकि हाि हटेने अपन िनिाकि आगू बढ़बैि जारी रखली-

“आ िही श्वनसँ हम यन्तर्ि रहए लगलौ। जीनिक उािहाह खमि भऽ गेल। बचपनेमे अपना-आपके बूढ़ बुझए लगलौ! जखन दुनू बच्चा कनी नमहर भऽ गेला आ स्कूल जाए-अबए लगला ि पढ़नाइ पारम्भ केलौ। हलाकी खेनाइ बनाएब, घरक काज समहारब इािाश्च ऐ सभमे हम कश्चयो र श्व नञ्च रखलौ। सुकिर चेरी इािाश्चक बेसिाि केलैन। आश्चिक सहयोग सुकिरसँ नञ्च भेटल।थिाि हमर माइक मायिमसँ कछु टका इािाश्च हमरा लेल भेज दइ छला। बादमे हमरा भेल जे सयिाश्चाि बनी। पढ़ाइ पारम्भ केलौ। बी.ए.; एम.ए. केलौ आ आब पी.एच-डी. केर िीसीस जमा होबएबला अञ्च। आशाक पथीकूल सुकिर श्वाक्त्रक केतमे अपन पभुतकि कारणे हमरा एम.ए. आ पी.एच-डी.मे नीक मदैि केलैन। फेर क्िाि श्वखनाइ पारम्भ कएल। पारम्भमे मैथिलीमे आ बादमे श्वन्दीमे सेहो। आब दुनू भाषामे एक पठिह, पभाि एि अश्चिकारक संग श्वखै छी। जखन एक आि रचना छपल ि श्वखैमे आरो मन लागए लगल। हमर साश्चािय सही अिमे हमर जीनिक आगू-पाछू घुमैि रहैि अञ्च।”

नन्ध्या बजै रहली। राघा सुनै रहला। बीच-बीचमे राघाकि हाकि नन्ध्याकि आडीक भीरि अछु अलग रिहक रीडामे यिस् छल। नन्ध्या हाकि रीडासँ आनन्ध्या होइ रहली। राघा नन्ध्याकि टिनि सुनबामे मस् आ नन्ध्याकि संग रीडा करबामे मस्। नन्ध्या राघाके अपन टिनि सुनबैमे आ राघाकि हाकि चहलकदमीके अपन आडीक भीरि आनन्द लेमएमे यिस् आ पसन...।

नन्ध्या-

“एकटा बा कि हम राथनीक सम्बन्धमे नञ्च बलौ। सहज मनक राथनी आम्हत्तासँ पञ्चने पभाकर हेँ एक कथीकि आमाण अन्दीमे केली। हुनकर लाश लग एक पनामे मोचरल अछु शोआकि बुनक अछासँ भरल ओ कथी लोकके भेटलै। ओ कथी हमरा दुइये बेर पढ़ला बाद कंठस् भऽ गेल अछु। राघाजी, अगर अहा कही कि हम ओइ कथीके सुनाऊ?”

राघा-

“हँ-हँ। अबस्स सुनाउ नन्ध्या भाभी। हमहूँ कि बुझी जे आम्हत्तासँ ठीक पञ्चने राथनीक मनोदशा की छेलैन आ पभाकरजीक पथी हुनकर सोच की छेलैन।”

आब नन्ध्या आँख मुआ कऽ राथनीक अन्धिम कथीकि पाठ करए लगली-

“मिहारा थ्या िखा

मैने उठाकर हि रख थ्या है

जहा बहु संभाल के रखि ि

मिहारा प्यार..!

मिहारी सूरि मे
 कहा छपी नि ये फरेब की ली
 और ये बलो से खेलने की करि
 अन्दाज मिहारा
 अभी नि सदमा है
 गहरी नीन्द से मानो किसी ने
 जबरदस्ती उठा दिया हो झंझोड़ कर
 ये भी टूटेगा

ठीक तैसे ही
 जैसे निड़ दिया मिने यकीन
 और अबिने अटी के रौंदे
 बल भी हमरा

कभी जो सोचू
 नि एक लहर सी उठी है
 बहु नि ददयकी, जैसे खंजर ही
 मिने दे मारा

डूबने से पहले
 एक झलक सी बखी नि
 मिहारी शहद सी आँखो की
 और राज मिहारा

अब नि यूँ है

के होश आया है जैसे
मीलो चले गहरी बेहोशी मे
ये कदम आगिरा

अब ि न मै हूँ िम्हारो सा
न मेरी श्मद न जजबा
बस एक आशानी बाकी
जो अब है िम्हारा

चली मै दूर गगन की ओर
न मेरा कोई ओर न ही छोर
सम्हालना बेसक लोक लाज के भय से हमको
यही अन्धम पञ्चणाम हमारा ।”

िड़े कालक पछाड़ि नन्धु ि पुनः बाजए लगली-
“राघजि बीचमे ई पसंग बाकी रश्च गेल छल । एकाएक स्मरण आश्च
गेल ि सोचलौ जे अहाके सुना दी । राशनीक ई पत अपना-आपमे
बहुि बाि कहैि अश्च ।”
राशनीक कश्चीसँ राघाि सेहो भाकि भऽ गेला । अपन नोर नश्च
रोश्च सकला ।

कनी कालक बाद नन्धु ि एकबेर पुनः अपन जीनि िनिक्के सुनाएब
पारभ केलैन । नन्धु ि गम्भीर भेली आ बाजए लगली-
“राघजि, कश्च नश्च श्चए हमरा अपना-आपके शोणिय बाह ण पश्चिरमे
जन्म लऽ एना बुझना जा रहल अश्च! बुझना जा रहल अश्च जेना
पूश्चिन्ममे सहस्तो गाइक बि केने रही । आ किकरे फल भोश्च रहल

छी। ओना कि अपना-आपके शोणिय सभ सशिषठ मानै अछ मुदा जहासि मञ्जलाक सश्रि छइ कि मञ्जलाके अमानिय ढंगसँ शोषण ई समाज कऽ रहल अछ। कि हमरा आ राशनीक जीनि आ शोषणसँ अन् नञ्च होइ अछ। असंख्य राशनी आ नन्धि ऐ िकश्रि सशिषठ बाहणक श्रिडादि आ कमकाण्डक नाओपर कुल, जाश्रि, मूल आ परोपटाक नाओपर अश्रिभऽ पि नोर झहरबै अपन अन्नगीके श्रि रहल छै। केकि राशनी या कि श्रिश भऽ आम्हिया कऽ लइ छै, चाहे माश्र देल जाइ छै। की कहलैन यातीजी-

‘अगराही लगौ बर बज खसौ
एहेन जाश्रिपर बर सिना किँसौ
भूअकम्प हौ या फटौ रिँ

मा अश्रिला रञ्चये कऽ की करी?’

..हम माश्र लेलौ जे अछ नञ्च बाजब। हँ, सुकिरके ई भान अबस्स करा देखैएन जे जँ ओ हमरा शरीरपर पहार करी कि हमहूँ नञ्च छोड़बैन। सुकिर ऐ बाकि बूझ गेला। हम कुनो सभा, संस्कार, गोष्ठी, उँसि आश्रमे सुकिरक संग नञ्च जाइ छी। सुकिरके एक अबस्स बनि देखैएन जे हमरा संसगसँ पूयिओ नीक जका साबुन िल आश्र लगा स्नान यान कऽ लेश्रि। अन्यि हमरा लग नञ्च आबि। सुकिर ऐ बाकिे सीकाश्र लेलैन। हमर यानि, हमर श्रिरोह, हमर अरमानक टुटब, राशनीक पेम-श्रिहि, श्रिहेतर शोषण आम्हिया सभ हमरा लेल साश्रिय सृजनक आरि आ सामगी बञ्च गेल। हम अश्रै रहलौ। िनि श्रिमे- कश्रि, कहानी आ उपन्यास। दुनू भाषामे- मैश्रिली आ श्रन्दी। जखन अछ कश्रि आ गल्प छपए लागल कि आरो उँसाश्रि भेलौ। बादमे रेञ्चयोसँ सेहो हमर कि

आ कर्मीक पसारण नीज णिणीमे हुआए लगल।

..जनै छी राघजि! हमरा सभसँ संक्षिष्ट ऐ बासँ होइए जे लोक आ समाजआब नहु-नहु हमरा अपन साक्ष्य लेखनक कारणे जनै अछि। हम पो. सुनिकरक पती या चीफ इन्जीनियर केर बेटीक र पमे अपन पञ्चय समाजमे नञ्च जानबए जाहै छी। मनक आर सभ अरमान कि सि सि भऽ गेल मुदा अपना कृषीक कारणे आइ अबसस जानल जाइ छी। पैछला मासमे हमर एक की 'सञ्चि' आ एक की 'हंस'मे छपबा लेल स्वीकृति भऽ गेल अछि। एक छोट कर्मी 'कादम्बनी'क नि अंकमे छपल अछि। ऐ सभसँ हमरा आर्थिक संक्षिष्ट भेटै अछि।”

“आब अहासँ भेट भेलापर हम पुरषक पक्षी अपन नजस्य बदलबाक पयास करब। जनै छी, जखन हम अशोर यिमे एलौ कि मनक अनन्ति अरमान छल। अपन सम-कक णि अशयरो लड़का सभ हमरा बड़ गौरसँ देखै छल। किक लड़का सभ हमरा सुना-सुना कऽ कहै छल- ‘की चीज अछि नन्सि! जेकर कस्य हेँ ओ बड्ड भाग्यशाली हए। एकर घरबला कि एक साल सि एकरा छोड कोँ अकलबे ने करि।’ आश्च-आश्च। ई बाँ सभ सुआ हम बड्ड आनन्सि होइ रही। परीक देशमे अचरन करए लगी। भेल जे दुआयाक सभसँ सुन्दर, अनेही आ रमनगर लड़का हमर जीनि-साँ बनि। मुदा हाय रे भाग्य..!

‘हे देँ कि ई की केलह?

हमर भाग्यमे की अख देलह?

कारी णिण्ड डेढ़ आँख, हमरा उमेरसँ पनरह बखक अधिक आयुकरि! ओहो अरंकुश, अयिआमानी, नारीक शोषक, संस्कारहीन, आ मचण्ड! एहेन राक्स जे सोलह-सरिह बखक लड़कीक भानिके नञ्च

बूझ सकै छल! भाँड़मे जाए ओकर आ समाजशास्त्रक जान।
भाँड़मे जाए मयादा आ लोक-लाजक दीरि। दुभाग्य हमर ई छल
जे हमरा सासुओक सुख नञ्च भेटल! जखन सुनिकर इण्टरनेटमे
पढ़ै छला, खिने माए मञ्च गेलखन। अक्यो हमर भानिके बुझाहार
नै।”

नन्धू राघि अस् देखै बजली-

“राघिजी, आब तिन बञ्च गेल। अहाके आनन्द आञ्च गेल हए।
अन भञ्चक निकल छी। अहा अराम कर, हम जाइ छी।”

राघि-

“कुनो एहेन बाँ नइ छै नन्धू भाभी। अहाके संगी हमरा नीक
लगैए। अछु आरो बाँ कर। कालञ्च तँ आब केँ नञ्चये जाएब।”
ई कञ्च राघि नन्धूके पूरा अपना-आपसँ सटा लेलैन। राघि
नन्धूके आडीके लगभग खोज देलखन। हाँ नाभीसँ अचचा जा
चहलकदमी करए लगलैन। पारम्भमे नन्धू राघिके हाँके
रोकलखन। राघि नञ्च मानला। नन्धू छोड देलखन। दुनू एक
दोसरक देहक अनुभूति आ शीलक आनन्दमे मग्न भऽ गेला। दू
शरीर एक आत्मा बञ्च गेल। ई अ या करीब बीस मिनट अञ्च चलल।
नन्धूके गौर गियआ राघिके श्यामल शरीर एक अलग रंग-रमसक
संजोग बना रहल छल। नन्धूके आइ एना बुझा रहल छेलैन जेना
ओ राघि संगेअपन हनीमून मना रहल होखी। आब नन्धूके एहसास
भेलैन जे सुहागरात्री की होइ छै। आब ओ बुझली जे शरीरक सुख
अगर स्त्री-पुरुषक अलाप आ आपसी सहयोगसँ होइ तँ ओ सुख
संगीक सुन्दर सुख छी। राघि पागल जका नन्धूके पयिक
अंगके अपना सिमे केने जा रहल छला। नन्धूके अपनामे समेटने
जाइ छला आ नन्धू राघिके पेममे अशी जका घुलल जा रहल

छेली। सभ मयादा खमि भऽ गेल छल। दुनू एक-दोसराक पयिके अंगके पाकृष्टिक र पे दशम केलेन, भोगलेन आ धीरध्वि-धीरध्वि भऽ गेला। ने िख ने लाज। केलि आ केलि शारीरक आ मानरक पेम आ समपण। दुनू ब्याहल मुदा दुनूक पेमके आश्छल आ पमि पेमक अनुभूति कहल जा सकै छल। अन्मि कामोतेजनाक अधिक आशिसँ राघि आ नन्ध्वि घामसँ रिबरि भऽ गेला। राघि हाफए लगला। नन्ध्वि झट-दआ अपन सित समहारए लगली। राघि सेहो अपन सित आ ओछाइनके सेव्याबए लगला। नन्ध्वि ठाढ़ होइ बिजली-

“आब िन बाध कऽ पच्चास अन्ट भोर भऽ गेल। बीस अन्टमे बच्चा सभ उख कऽ पढ़ब शुरु करि। आब अहा सु। हमहूँ जाइ छी।”

राघि एकबेर पुनः नन्ध्विक हाि पकैड हुनका अपन हृदयसँ सटेलखन आ अनेको बेर अनेको स्निपर चुभ लेलखन। नन्ध्वि राघिक ऐनूनि पयोगसँ गद-गद भऽ गेली। आब नन्ध्वि अपन कक्के पष्पट भऽ गेली।

राघि नन्ध्विक सम्बन्मि सोचए लगला। एकबेर भेलैन जे की ओ अपन अपन पती- सहजन्याक संग िखा ि ने कऽ रहला अख? एक मन ईहो भेलैन जे कदाखि राघि अपन ऐ कृयिसँ पोफेसर सुकिर-संगे खसिघाि ि ने कऽ रहला अख? फेर भेलैन जे नख नन्ध्विक समस्ि िनि बुझला बाद शायद राघि आ नन्ध्विक बीच जे अछु भेल ओ आखि र पेण सधि मिक् काययछी। यह बाि सभ सोचै-सोचै राघि नीनभेर भऽ गेला।

पािः आयि समैपर राघि उख गेला। आशयक बाि ई जे नन्ध्वि सेहो चहकै उठली। हुनकर सौन्दयमे आइ एक नैसयक रोहानी

झलकै छल । समुच्चा शरीरक पोर-पोर जेना पेम-पसंगक अनुभूषीसँ
 श्वल रहल छेलैन । नन्ध्णि बेबीक आबैक पक्षिक नञ्च केली । सी
 रसोइ ककमे गेली । सयिपमि राघि लेल इन्होर पाश्चा, पिपिशा
 नेबोबला चाह लऽ कऽ आश्च गेली । नन्ध्णि आ राघि संगे-संग चाह
 पीलैन ।

राघि सनान-ध्यान केला बाद घर बन्द कऽ दू घण्टा सुधी रहला ।
 किर बाद दू घण्टा श्वि अपन फल्ट डायरी श्वखलैन । आब भोजन
 यार छल । राघि आ नन्ध्णि संगे भोजन केला । भोजनक बाद
 नन्ध्णि बेबीके दस टका आ गहुम दै कहलश्वन-

“बेबी, जो गहुम पीसेने आ । आइ-काल्श्व मीलबला दोसर चीज श्वला
 दइ छै, ए अपना सामनेमे गहुम पीसा कऽ श्वकस नेने आ ।”

बेबी नन्ध्णिक आज्ञाक पालन करै गहुम पीसबैले श्विदा भेल । आब
 समए दू बश्च कऽ पच्चीस श्वनट भऽ रहल अश्च । नन्ध्णि राघिक
 ककमे पशि करै बजली-

“राघिजी, आब ऐ घरमे मातहम आ अहा छी । हमर दुनू बालक साढ़े
 चाश्च बजे साझमे स्कूलसँ श्विदा हएि ।”

राघि नन्ध्णिक इसारा बूझ गेला आ झट-दश्च घर बन कऽ लेलैन ।
 आब नन्ध्णि आ राघि भयमुक् पिपिणि पाश्च कामदेकि आगोशमे
 मग्न भऽ गेला । करीब एक घण्टा श्वि दुनू एक-दोसरामे पूणयर पेण
 समश्चि भऽ गेला । हरेक दैश्चक सुखक बाद दुनू आर उसाही आ
 स्फूषीनिन भऽ जाइ रहै । दुनूक चेहरापर एक फराक चमक
 झलैक रहल छेलैन । लगभग चाश्चस श्वनटक पछाइ नन्ध्णि राघिके
 कहलश्वन-

“राघिजी, आब घरक केबाड़ खोश्च श्वयौ । बेबी कुनो कण आश्च
 जाए । बेबी आ हमर दुनू बालक सुकिरक गुपचिर अश्च । श्वंगसँ

हरैद कि सभ बाँ सुकिरके बबैँ रहै छैन। एकरा सभ लग एक बाँकि यिान अबस्स रहए जे हमरा लोकैन कुनो ओहन हरकि नञ्च करी जइसँ एकरा सभके कुनो आभाष लगइ।”

राघाँ गरदेन झला नन्झीक बाँके समथि केलैन।

आब सभ राघी नन्झी अपन नँ रचनाक डायरीमे आञ्च राघकि कोरामे माँ रञ्च अपन साञ्चयिक चचाक संग-संग पेम-पसंग आ देहक संसगय सेहो चलैँ रहलैन। आब दुनूक मयि मानञ्चक, साञ्चयिक आ शारीञ्चक समन्थि पञ्चपक्कि भऽ रहल छेलैन। दुनू एक-दोसरक पथी समथयि एना जेना राघाँ अठारह बखक होथी आ नन्झी सरिह बखक। आ उमहर ऐ सभ घटनासँ बेखबर पोफेसर सुकिर बनारसमे काँपी जँचबामे मग्न...।

जखन राघाँके झलली जेबाक पाच थन शेष रञ्च गेलैन झिया पो. सुकिर आञ्च गेला। दोसर थन झहार बन्द रहइ। कारण बसबला आ टैक्सीबला बन्दक आहान केने रहै, ईँ राघाँ झलडकियलेल कोँ ने गेला। इमहर पो. सुकिरके चञ्च एबाक कारणो राकि साञ्चयि शणि आ रंग-रभस सेहो समाप्ति भऽ गेलैन। थनेमे दस-पनरह थनट लेल नन्झी पो. सुकिर केर समकमे राघाँसँ झछ पुञ्च लइ छेली। आब सतिथि समाप्ति भऽ चुकल छेलैन। दोसर थन हडलिक कारणे राघाँ कोँ नञ्च गेला। नन्झी पसन छेली। ओना राघाँ आ नन्झीक पसनाँ कइयेक गुणा बञ्च गेलैन जखन पो. सुकिर राघाँसँ कहलथन-

“राघाँजी! आइ हम थेशथीदालय जा रहल छी। थिभागमे थसचय कञ्चक थञ्ग िन बजेसँ अञ्च। ओइसँ पञ्चने हमरा लोकैनके झछ दसिाँजि इयिथ ठीक करक अञ्च। हम पाच बजे साझ थि फी हएब। जखन आएब िँ आञ्चान्सँ गप करब।”

ई कश्च आनि घण्टाक भीरि पो. सुकिर घरसँ बाहर आकैल गेला ।
कश्चये कालक बाद नन्ध्याि स्नान-ध्यान करक बास्कि धीदा भेली ।
बारह बजै-बजै राघाि आ नन्ध्याि संगे भोजन केला । भोजनक
तिरि बाद बेबी सेहो खेलक । नन्ध्याि बेबीके कहलथ्वन-

“जो बेबी अपन माएसँ भेट केने आ । पाच बजे श्वि चश्च अश्चहे ।”
बेबी नन्ध्यािक कृपा बूझ गद-गद भऽ गेष्वा । पाच अन्टक भीरि
कैम्पससँ बाहर भऽ गेष्वा । आब नन्ध्याि आ राघाि सबा चाश्च बजे
श्वि सति... ।

नन्ध्याि अपन साश्चयिक डायरी लऽ राघािक कक्मे पशि केली ।
राघाि गद-गद भऽ गेला । नन्ध्याि अपन साश्चयि-चचा पारम्भ केलैन ।
आनि घण्टाक बाद राघाि उठला आ नन्ध्याि सहज भासिँ अहुसै
आ मने-मन गदगदाइ राघािक कोरामे बैस गेली । आब एक अस्
नन्ध्याि अपन साश्चयि सुना रहल छेली आ दोसर अस् राघाि
नन्ध्यािक संग छेड़खानीमे यिसि आ मसि छला ।

ई र म चलै रहलैन । एकाएक करीब पौने दू बजेमे पो. सुकिर
अछु कायसँ घर आश्च गेला । नन्ध्याि झट-दश्च राघािक कोरासँ
आच्चा उरि गेली । अना सुकिरके देखने नन्ध्याि अपन घर अस्
धीदा भेली । पो. सुकिरक आँश्च री आश्च उगैल रहल छेलैन ।
हलाकी सुकिर ने राघािके अछु कहलथ्वन आ ने नन्ध्यािके ।
आनि घण्टाक पछाइ सुकिर अछु फाइल लऽ पुनः शिशिदालय
अस् धीदा भेला । जाइ काल राघािके कहलथ्वन-

“राघाजि, अहा अपन समान लऽ गाउण्ड फ्लोरमे एकटा छोटका
र म अश्च डिमे रश्च अअ आ हमरे संगे शिशिदालय चलू ।”

राघाि समान लऽ आच्चा चश्च एला । घरमे गिला लगेला आ सुकिर
संगे शिशिदालय अस् धीदा भेला । भश्च रसि सुकिर राघािके

अछु नञ् कहलखन। राघाी सहमल छला। भेलैन अगर सुािकर अपमाञ्चा कञ्चाि ि की होइ..?

खैर, राघािके पुस्ािकालयमे बैसा पो. सुािकर अपन श्रीभागमे चञ्च गेला। राघाि पुस्ािकालयमे िन चाञ्च गोट पोाी लऽ एकठाम बैस पढ़ए लगला। यदथ पढ़ैमे मन नै लगलैन। हलाकी राघािके अपन कृािपर कुनो पशाापि नञ्छ छेलैन। आब हुनकर मनमे पो. सुािकरक पथी कुनो सम्मान नञ्छ रञ्छ गेल छेलैन। नन्ञ्चिक की सुनला बाद सुािकरमे ओ एक आहायि राक्सके देखए लगला। मुदा राघािके अपनासँ बेसी नन्ञ्चिक आनूि छेलैन।

पोफेसर सुािकर छह बजेमे राघाि लग पुस्ािकालय एला आ दुनू गोरे संगे श्रीदा भेला। सुािकर रस्ािमे राघािसँ कहलखन-

“राघाजी, अहा नन्ञ्चिक बािमे समए बरबाद नञ्छ कऽ अपन कायथर श्रीयान केन्ञ्चि कर। हुनका की आखबा आ सुनेबाक अञ्चिञ्चि कुनो काज नञ्छ छैन। हमरा अहा सबहक बाि बेहार नीक नञ्छ लागल। िए आचचा लऽ एलौ अहाके। आचचोमे सभ बेसिा छै। हमहूँ अही लग बािञ्चि करबा लेल चञ्च आएब। केलि भोजन लेल ऊपर हमर आिसपर जेबाक अञ्छ।”

राघाि गरदेन अला पो. सुािकरके अपन स्ािकृथी दऽ देलखन। दुनू गोरे गन्ािपर पहुँचला। राघाि ऊपर नञ्छ गेला। आचला कमरा बहुि छोट आ िरि-बीरि रहइ। मकराक झोलसँ भरल। अछु अकिब अबस्स राखल रहइ। राघािके भेलैन जे एिए रहनाइ सम्भि नञ्छ अञ्छ। मुदा राथी भऽ गेल रहइ। सोचलैन राथी भञ्च कहना रञ्च जाइ छी। साढ़े आठ बजे अािकर आञ्च कऽ कहलकैन-

“भोजन ियार अञ्छ चचाजी। चलू करबा लेल। पापा आ मम्मी दुनू अहाक इन्ाजार कऽ रहल छै।”

राघा आि मनसँ श्रिदा भेला। पो. सुकिर आ नन्ध्रा डायश्रांग टेबुलपर बैसल छला। पो. सुकिर राघाके अपना लग बैसक इशारा केलखन। राघा हुनकर आजाके सम्मान करै हुनके लग बैस गेला। नन्ध्रा कनी परेशान अबस्स छेली। मुदा ओबो नइ जेकि राघा सोचै छला। खैर, सभ गोरे भोजन केला। नन्ध्रा राघाके लौग आ इलायची िि पो. सुकिरके पान बना देलखन। नन्ध्रा सेहो स्रियं इलायची खेली। पान छोड़ला आइ छठम खन छेलैन नन्ध्राके। आब पो. सुकिर आ राघा आच्चा खस श्रिदा भेला। राघाके मनमे राक्षीक ििलीलाप नख होमाक कचोट िि बहु छेलैन मुदा की कऽ सकै छला। राघाके ककमे आख पो. सुकिर हुनकासँ पख्योजना सम्बन्ि बाि बहु काल श्रि करै रहला। लगभग एगारह बजे राक्षीमे पो. सुकिर सुल्ले गेला। ऐ घरमे राघाके भख राक्षी नीन नइ भेलैन। ऐगला खन भोरे राघा कुनो गाम लेल पस्निन केलैन। बहु देर श्रि काययकेला बाद आपसीमे दखभंगाक नै आख अपन गाम चख गेला। दू खन अपने गामसँ अलग-अलग स्निन जाक्षी। दोसर खन भोरे-भोर पो. सुकिर फोन केलखन िि राघा कख देलखन जे ओ अपन िि माि-धिसँ भेट करक हेि अपन गाम चख एला। राघा ईहो कहलखन जे खल्ली जाइसँ एक खन पूयिओ दखभंगा जेि आ श्रिस्तिरसँ चचयकरि। नन्ध्रासँ सेहो राघाके फोनपर बाि होइ छेलैन।

कायक समापक्षीक बाद राघा दखभंगा गेला। खिन पो. सुकिर घरपर नख छला। नन्ध्रा आच्चा एली आ कहलखन जे पो. सुकिर लहेख्यासराय कुनो अतके कुनो नखंय होममे देखबा लेल िुरिं गेल छै। राघा हाि-पएर ििलैन। ििबीच नन्ध्रा स्रियं चाह बना लऽ अनली। राघा चाह पीबै बजला-

“नन्ध्या भाभी, हमरा कारणे अहाके बहुि श्क भऽ गेल?”

नन्ध्या-

“अरे! बेकार अहा श्कए अन्ति करै छी राघजि? सुनिकर अपने-आप ठीक भऽ जे। श्कनका हमर कुनो पुरखसँ बाश्चि आ आश्चियि नश्च पश्चन छैन। हमरा दुख केलि ऐ बाकि अश्च जे अहाके आचचा आबए पड़ल!”

राघा-

“नश्च! ऐसँ हम परेशान नइ छी। हमरा केलि अहाक अन्ति भऽ रहल छल। कही भाइ साहेब माश्च-पीटपर ने उरिल होशै?”

नन्ध्या-

“ओि श्ममि नश्च छैन। हमरापर जश्चया हाि उठा देी श्चिया हमहूँ ओकाि देखा देबैन।”

ई कहैि नन्ध्या राघा श्चस बढली आ राघजिक कपार चूश्च लेली। राघा पुनः उऽिश्चि भेला। कक बन्द केलैन आ दुनू गोरे आनन्दलोकक अनुभवि करैि रभसमे लाश्च गेला। एना लगैि छल जेना नन्ध्या अफयआ अफयराघा लेल बनल होशै। राघा नन्ध्याक शारीश्चक साश्चघ्य पाश्च टिप्पि छला। नन्ध्या श्चिना छेली। करीब चाश्चस अन्टक पछाइि दुनू अपन-आपके ठीक केलैन आ घरक दरबज्जा नन्ध्या खोलली। फेर गप करए लगला। िडे कालक बाद नन्ध्या ऊपर जाए लगली। राघा एकबेर फेर भश्च पाज-के पकैड नन्ध्याके चुमए लगला। नन्ध्या सेहो पयितरमे सह केलश्चन।

आब राघा अपन डायरीमे छुटल बाि सभ श्चखए लगला। कैमराक चीप आकाश्च फोटो सभके लैप-टॉपमे डाउनलोड केलैन। फेर िमक अनुसार ओकर अलग-अलग फोल्डर बना ओइमे रखला। िबे पो.

सुगिर आश गेलखन। दुनू गोरेमे बहु देर शि गप भेलैन।
नन्दि बीचमे बेबीके भेजलखन। बेबी आश कऽ बाजख-
“चाह लाबी की?”

पो. सुगिर जबा देलखन-

“हँ-हँ, चाह बना। कनी चूरा सेहो भूज। हम सभ ऊपर आश रहल छी।”

आब राघ आ पो. सुगिर ऊपर एला। बेबी चूरा भुजए लगल।
सुगिर अपन पुत शिकरके दोकानसँ पकौड़ा लाबए कहलखन।
सभ गोरे भूजल चूरा आ गरम-गरम पकौड़ा खेलैन। नन्दि सेहो
संगे बैसल छेली। राघ आ पो. सुगिर फेर आचूँ आश गेला आ
सभ डाटापर चचयपारम्भ केलैन। साढ़े दस बजे राक्षमे कायक
समापक बाद सभ गोरे भोजन केला। राघ अपन ककमे आश
छु आरो बचल बा सभ खलैन आ सूख रहला।

दोसर दिन राघ स्नान-ध्यान केलैन आ छह बजे भोरे पो. सुगिर
स्यं हुनका ऊपर लऽ गेलखन। चूरा-दही-चीनी परोसल छेलैन।
नन्दि कीचनमे यिस् छेली। जखन राघ जलखै कऽ लेला
खिन नन्दि कीचनसँ बाहर एली। एकटा टीफीन राघ लेल यार
छेलैन। राघके दै कहलखन-

“राघजी, अहाक पती सहजन्या सुगिरके कहने छेलखन जे अहा
बाहरक सि याताक अक्षिमे नइ खाइ छी। ई िड़ेक पुरी,
पड़ोरक दू फँका आ िड़ेक खजुश्या बना देलौ अशु। एकरा खाइ
जाएब भश रस्ति...”

राघ लग कृजिक कुनो शब्द नश छेलैन। राघ आब पो.
सुगिरके चरण स्पशकेला। सुगिर पीठ ठो अक्षरीद देलखन
आ हृदयसँ लगेलखन। आब राघ नन्धिक चरण छुला। नन्दि

अपन हाँ राघकि पीठपर देलखन। नन्खिक हाकि स्पशसँ
राघि न्दिय भऽ गेला। नन्खि आ हुनकर दुनू बालक राघकि
आच्चा शि छोट्ट एलैन। राघकि संगे पो. सुकिर सेहो रेलबे
स्टेशन शि शिदा भेला।

स्टेशनपर गाड़ी आख गेल रहइ। राघि गाड़ीक पमि ए.सी. कोचमे
बैस गेला। पो. सुकिर सेहो कोच शि गेलखन। आब टेन पाच
अनटमे खुजि। ई जाआ राघि पुनः पो. सुकिरके चरण स्पशय
करै कहलखन-

“शीमान, आब अहा उरि जाउ।”

पो. सुकिर गाड़ीसँ आच्चा उरि गेला।

टेन खुआ गेल। राघि एकबेर पुनः नन्खिक सम्बन्धमे सोचए
लगला। मनमे एलैन, केना पञ्चस्त्री मनुखके की की बना दइ छै।
नन्खिक पञ्चस्त्री हुनका लेखका बना देलकैन- पञ्चस्त्री
लेखका।

सुगाा आ शृंगार: मैथिली लोकगीति पञ्चदृश्य मे

भारतीय लोक आ शाश्वत दूनू परंपरा मे सुगाा अपन विशिष्ट सीन आश्चर्य काल स रखने अछि। सुगाा अनेह, पेम, जान आ शृंगार के पौराणिक मानल जै अछि। अनेक कवि समस्त भारतीयमे भेटि जाए सुगाा अपन बुद्धिमानी स अलग कीर्तिमान सिद्धि केलक। जायसीक महाकाव्य पदार्थ मे हीरामन सुगााक भूषका के नख जै अछि। कोना श्वरामन राजकुमारी पदार्थ अति पञ्चनी संग अपन समय बीबै छल; कोना पञ्चनी अपन पेमक बाँ आ श्रीहि नख होबाक टीस ओकरा संग बाँ छली; आ कोना हीरामन सुगाा अहलदीप के राजकुमारी पदार्थ आ अतोगढक राजा रतसेन केर पेम मे सुतरिक भूषका के अहिन करै अछि, के बारे मे सबके बुझल अछि। बाँ मैथिली लोकगीति मे सुगााक सीन पर क रहल छी निश्च पदार्थ के पसंग पर श्रीर स नख जा रहल छी।

अगर लोक व्यवहार के बाँ करी नि अथिला समाज मे सुगाा आ आनो अरै-चुनमुन एँ जानि सबहक अपन भूषका अछि। ओकरा मानिकरण कए ओकर भाँ के देखल जै छैक। लोक अपन बच्चा, अथ लोक, जमाय के सुगाा कश्च संबोधि करै छथि। ओ बच्चा जकर स्मरण शक्ति निष्ठा होइ छैक किरा सुगाा कश्च संबोधि कैल जै छैक। माय, अथियाईन, नानी, दाई इत्यादि अपन बच्चा के सुगाा कौर, मेना कौर कश्च क भोजन खुअबै छथि। नायक अति नाथका के नाक अगर बड्ड सुन्दर छैक नि ओकरा सुगााक ठोर या चोच स उपमा देल जै छैक। मरि बोली के सुगाा सनहक बोली कहल जै छैक। स्तीगन सब फेम मे कुरश स सुगाा मेना बनबै छली। अथिला अतकला मे आ कोहबर घर मे स्ती आ पुरष सुगाा

के स्नेहाश्रंगन असि मे बॉडर पर अश्रु कैल जै छैक ।
 स्नेहाश्रंगन के ठेठ मैथिली मे लटपटायल असि कहल जै छैक ।
 अश्रुला अतकला मे बॉडर पर हि लटपटायल सुगा आपस मे एक
 दोसर के पकड़ने चोच मे चोच सटेने अंशु रहै छैक । कोबरघर
 मे एश्रु अताकन केर उकेरबाक तितययई रहै छैक अ जेना सुगा
 के पश्रु-पतीक जोड़ी मे पेम रहै छैक हिने पेम, अनेह आ आकषण
 एश्रु रिआ कअया मे बनल रहैक । दुनु एक दोसर स कअयो अलग
 नअ हो । दुलअन स्त्री सुगा आ दुलहा पुरष सुगा बअ जै छैक ।
 सुगा स्नेहक संग-संग सौन्दर्यय आ रंगक पश्रुअम सेहो बअ जै
 छैक । अगर बडड सुन्दर हअर रंग केर सारी अि नुआ छैक
 ि ओ सुगबा रंग अि सुगापंखी रंग कहै । लाल रंग केर मान्नि
 खिन सीअि हैक जखन ओकर लिना सुगाक ओठ स कैल
 जैक । सुगा स अनेह अि जे ओकरा सोनाक अंजरा मे रखबाक
 कलना कैल जै छैक ।

मैथिली लोकपरम्परा मे सुगा बडड महत्त रखै अश्रु । दुटा एहेन
 दनकि अश्रुला भूअ मे व्यापि अश्रु जाअ मे सुगाक भूअका के
 बेर-बेर स्मरण गयिस कैल जै अश्रु । पअला कि सीि सं सम्बंधि
 अश्रु आ दोसर कि आअ गुर शंकराचायक महापअडि मंडन
 अशक गामक याता सं । एअ आलेख के आगा बढ़ाबी ओअ स पअने
 ई दुनु दनकि के बुझब जररी ।

पारंभ सीिक पसंग सं करै छी । अश्रुला मे सुगा आ सीि के
 लऽ कऽ एकटा दनकि पचअि अश्रु । बसि ऋकि समय छल ।
 शील, मंद पनि बहै छल । सीि दाई अपन सखी बअनपा संग
 फुलीरी मे भमण कऽ रहल छली । सीि के इअ झुला झूलबाक
 भेलअ । एक सखी सऽ अपन इअ कयि केलअ । रि सखी

बञ्चनपा सब सींगी दाई के झुला झुलाबए लगलथीन। बडड मनमोहक दृश्य भ गेलैक। सींगी झलोरा लै आ सखी सब झलबै। जकि पशंसा करी से काम।

झुला लागल पेमक डाली।

झुलथी सींगी प्यारी ना।।

सोहनगर-रसगर गींगी गबै सखी संग सींगी आनंदक सागर मे गोंगी लगा रहल छली। गीकि सरि हुनकर कान मे मरि इनकार भरै छल। अञ्च बीच सींगीक दृश्य एक सुन्दर सुगाक जोड़ी अस्स पडलअ। इ सुगाक जोड़ी पथी-पतीक जोड़ी छल। हथयर कचोर पाथ्व, लाल-लाल ठोर। सुगाक भाषाक संग-संग मानुखक भाषा बाजऽ मे पीण छल दुनू सुगा। सुगाक पती हँहि गींगी गाथ रहल छल जे गींगी सींगीदाई अपन सखी बञ्चनपा संग झुला झुलै गाथ रहल छली।

सुगा के जोड़ी पर सींगी दाई के अक गथ गेलअ। मोन भेलअ जे अञ्च सुगा के राजमहल मे आअ थंजरा मे राखब आ पथीअन एकर मरि बोल सुअ उठब कि ककि नीक रहि!

राजमहल मे अञ्चअ सींगी दाई अपन सेकि के बजेअ आ आज्ञा दै कहअनि: "देखू, फुलंगीरी मे सुगाक एक जोड़ी अचअ रहल अञ्च। बडड सुंदर जोड़ी छैक। चीरै चुनचुन के संग-संग इ जोड़ीमनुखक आजि मे मरि गींगी सेहो गबै अञ्च। अहा एखन फुलंगीरी जाऊ आ ओअ जोड़ी मे स एक सुगा हमरा लेल पकअ क लाउ"।

सेकि सींगी दाई केर आज्ञा के पालन करै झट दअ फुलंगीरी अस्स अदा भेल। गिरेक कालक बाद ओअ सुगाक जोड़ी मे स एकटा सुगा पकअ कऽ लऽ अनलक। अब ओअ सुगा के एक सोनाक

थंजरा मे बन्द कऽ सीणि दाई लग लैल । सुगा के अपना सामने सोनाक थंजरा मे देख्वा सीणि दाई आनन्दधीभोर भऽ गेली ।

गली स ओ सुगा मञ्जला सुगा छञ्ज आ गभयस रहै । ओकर पथी सीणि दाई के सेकि सँ आदिन केलक जे ई मञ्जला सुगा ओकर पती छैक आ गर्भ स छैक िञ्ज ओकरा पर करणा देखबै सति क देल जाय । पुरष सुगा बाजल : "बरहमर पती के बदला मे अहा हमरा ल चलु थंजरा मे बन्द कऽ सीणि लग" । मुदा सीणिक सेकि ओकर अनुनय-धनिय के नञ्ज सीकार केलक आ मञ्जला सुगा के राजमहल लऽ अनलक ।

अपन पती के पेम मे मालि पुरष सुगा हाञ्ज नञ्ज मानलक । पाछा-पाछा ओहो राजमहल मे आञ्ज गेल । ओकरा आशा रहैक जे सीणि चूञ्ज सियं करणाशील कन्ना छथी, ओ आञ्ज र प स ओकर पतीक असी पर रथी भ थंजरा स मुर्क कऽ देखिन!

बेचारा सुगा सीणि दाई लग भरल नोर कथी मोन पहुचल । नोर मिक नामे नञ्ज लैक । आयिभा स बाजल: "हे करणामयी राजकुमारी सीणि, इ सुगा जे आहाक सेकि पकञ्ज अनलक अञ्ज इ हमर पती थिक आ गभयसऽ अञ्ज । एकर पेट मे हमर सनीन पञ्ज रहल अञ्ज । हम अहा लग ई आदिन करबाक हे आयल छी जे अहा एकरा पर करणा देखबै थंजरा स मुर्क क थ्यौक । अगर अहा के सुगा रखबाक इच्छा अञ्ज ि हमरा राञ्ज श्वाय!"

कञ्ज नञ्ज एक सीणि दाई के सुगाक अनुनय श्वास िआन नञ्ज गेलञ्ज । ओ अपना मे मर्सि रहली । जखन सब को स सुगा िञ्ज गेल आ राजमहल मे श्कयोक ओकर दिना सुनबा लेल ियार नञ्ज भेलैक ि लाचार सुगा ददयआ रो स श्चन भ गेल । मिसे घोर होई सुगा सीणि दाई के सम्मोथि करै बाजल: "हे जानकी! हम

बड्ड आश लऽ कऽ अहा लग आयल रही जे न्याय भेटि। न्याय ि दूर अहा हमर दिना सुनबाक लेल ियार नञ्छ छी। आहाक जखन अपन श्रीहि है िखने अहा अञ्छ दिना के बुझ सकै छी। आब हद भ गेल! हम क्यथै मोन िपस जा रहल छी मुदा जै-जै अहा के शाप देने जा रहल छी। हम पथी-पती अथाला जन्म िञ्च-िञ्चन बञ्च जन्म लेब आ हमरा सभक कारण सऽ आहाक पथी अहाके गभासि मे घर स आकाञ्च देि” ।

आि सीि के होश जगलञ्च। मुदा आि अछु नञ्छ भ सकै छल। सीि सुगा के शाप के अरौयिकऽ लेलञ्च। दनकि के अनुसार ओही सुगा के शाप के कारण जखन सीि गभयसं छली ि राम सनहक पथी एक िञ्च-िञ्चन के कहला पर हुनका घर स आकाञ्च देलञ्चन।

आब दोसर दनकि अस् बढी। दोसर दनकि शंकराचायय आ महापञ्चडि मंडन सं जुडल अञ्च। अथीला मे अगाि पञ्चडि आ थिदान सब भारिषियकेर सब कोनस अबै छलाह। अए अि अथीला मे परमरानुसार एक बेर मे अनेक अन् चि चलए बला शास्ताि मे जीनि-जगि सं संबंधि थिषय एि उप-थिषय पर िद-थिदि चलै छल। जे थिदान शास्ताियमे अि छला हुनकर थिषेण सम्मान होइ छल। मान्मि ई अञ्च जे शंकराचायय अथीला के परम थिदान आ कुमाञ्चल भट केर अथमहापञ्चडि मंडन अशक पञ्चथि सं पभाथि भ सयि हुनका सं भेट करक हेि आ शास्ताियकरबाक हेि भमण करै मंडन केर गाम पहुचला। गामक इनार पर पञ्चहाञ्चन सब पाञ्च भरै आपस मे संस्कृि मे ििलाप क रहल छञ्च। शंकराचाययपञ्चहाञ्चन सबके पुछलञ्चन: “महापञ्चडि मंडन अशककुन घर छञ्च?” पञ्चहाञ्चन मे स एक मञ्चला आगा अबै बजली: “आगा

बढ़ल जाऊ। जाश्वरबज्जा पर सुगो आपस में शास्तायिकरै हो,
 'हि घर महापथहि मंडन अशकहेहि' । शंकराचार्यअपन आष
 मण्डलीक संग आगू बढ़लआ। कलम, पोखर, बसबटी, फूलक
 अयारी, लहलहाइहि हथियर निनक खे होइहि निरेक काल में
 मधुषी गां पिहुंचला। महापथहि मंडन अशक घर नि में कुनो
 अक नि न भेलआ। एक घर के दरबज्जा पर अंजडा में सुगा आपस
 में शास्तायिक रहल छल। शंकराचार्यके भागठ न भ रहआ जे
 यह घर महापथहि मंडन अशक छआ।

आब लोकगी केर आंगन में पशि करी आ देखी जे सुगा अपन
 कहेन सनि बनेने अछ। एक नाथका के ददयदेखू, बेचारी के पथी
 परदेस गेल छैक। बहु अ न भ गेलैक परदेस स गाम एला। अखाढ़
 मास समाधि होम पर छैक लोक खरही काश घर लग जमा करै
 अछ। कनि लेल? जे घर के छारि। मनुखक नि बां छोछ देल
 जाओ अरै-चुनमुन सब एक-एक खर के चुआ अपन खोनि अणि
 नीड़ के अमाण क रहल अछ। सब आब ममिस अणि बरसा
 में अपन-अपन जोड़ी संग रहि। ममिसक अलन याअनीक सुख
 भोगि। देह आ नेह एक बनैक। मुदा हाय रे दुभाग्न! बेचारीक
 कनि नि एखनो परदेसे में छैक। लगै अछ जे नाथका अही अयोग
 स शरीर ने त्याग दे!

अखाढ़ मास अखाढी रोप अ न खरही सब काटए लोक
 अडै चुनमुनी सब खोनि लगाएल अ हमरो कनि रहल
 घर छोछ अ हम मथ जइहे।।

छश्च माणि के पसन करबाक हेँ मश्चला सब रंग-धीरंगक गीं गबै
 घाट श्वस जै छश्च। हरेक गीं मे पसाद सामगी के णिम्ब, धीक
 धीनि, माणि के गुणगान, आ सुश्चातिक ध्यानक णिम्ब रहै छैक।
 एक गीक दू पाश्चि देखू जे केना ओश्च मे सुगा के णिम्ब अश्च।
 काच बास के आरि बना केराक दू घौर के बीचो बीच फसा देल
 गेल छैक। दुनु कां घौर मे हतीक हती पाकल-पाकल पीयर-
 पीयर केरा लुबझल छैक। केरा के आकषण देख्ख झुण्डक झुण्ड
 सुगा ओश्च पर लुश्चि रहल छैक। पबनौधनि मनुख जका सुगा के
 बुझबै छश्चनि के हे सुगा ई केराक घौर छश्च महारानी के आश्चत
 छैक। एश्च पर ि चोच माश्च एकरा अश्चरि नश्च कर। जखन पूजा
 पूरा भ जैक ि िरा िहर श्वस्सा भेट जैक। सम्बाद एहेन जेना
 सुगा एक एक शब्द के बुझै हो आ आज के मानबक हेँ त्तिर।
 ई भेल लोक परमपरा मे मनुख आ श्वरै के बीच िरिम्पि आ
 सामंजस्य।

काचश्च बास के बगश्चया बहगी लचकं जाए

केरा फरल घौर स ओश्च पर सुगा मंडराय

छश्च महारानी के दोसर गीं मे कश्च पबनौधनि
 मिसा जै छश्च श्वयैक ि सुगा कश्च लुबश्चि-लुबश्चि क आश्विकि
 स अधिक परेशान क देने छश्च। अश्च बेर गीं मे ओकरा सांनि
 भ जएबाक लेल कहै छश्चनि: “देख सुगा! बडड भ गेल. लाख
 बुझेलाक बादो ि समरह के नाम नश्च ल रहल छै। कश्च देल्युक
 ने जे ई केराक घौर छश्च महारानी के आश्चत छैक! मुदा ि आश्चज
 क देलै। आब श्वछु नश्च कहबौ। बौआ के श्विजी आश्च रहल
 छश्चनि बन्दुक हुनका संगे छश्च। गोली माश्च देँ। फेर हमरा नश्च
 कश्चहै जे सांनि नश्च केलयौक?” ई भेल लोकक श्वरै आ चुनमुन

के पाथी अनेह । जेना माय अपना बच्चा के डरबै छथी शिना ओही अनेह आ अनुराग स पबनौथीन सुगा के डरा रहल छथी । गोली मरबाक बाँ होइ छैक । मारल नञ्च जै छैक । एहन असि मे जौ पकृथी आ संस्कृथी मे समनयि नञ्च बनै कोना बनै ? जखन रि बश्चयाँ संगे कन्या के घर पर पशि करै अञ्च रि बरक सुन्दर छथी देख्ब सासु गदगद भ जै छथी । बरक मनमोहक छथी के लिना सुगा सं कैल जै अञ्च । महाकथी थिदापथी सेहो अपन पदाली मे एक गी मे रिक् सुन्दरि सुगा स करै छथी । जमाए केर लिना सोभनगर सुगा सं करै सासु आ बूढ पुरान मञ्चला सब पसन भ रहल छथी । थिया के भाग्य पर गुमान भ रहल छथी । गी गाञ्च-गाञ्च सोचै छथी जे ई जे अकि अक सुगा र पी जमाए छथी से क स आञ्च क नेह लगने छथी ? ई सबहक मनमोहना क बसेरा बनेने छथी ? ई सोभनगर सुगा अपन गाँ स आञ्च सासुर मे बसेर केने छथी आ सासुरक लोक सभ सं नेह लगने छथी । हुनकर ससुर थजरा बना ओञ्च मे एञ्च बर र पी सुगा के बझा रखने छथी । थजरा शब्द दुलञ्चन लेल कैल गेल छैक । सुगा जखन थजरा मे रहै ओकरा आहार चाही । से आहार देबाक अमोदारी सासु के देल गेल छथी । एहेन आहार दे जाञ्च स सुगा के उचाट नञ्च लागै । संगञ्च सासु के इहो डर भ रहल छथी जे सुगा के जखन पाञ्च झमटगर आ मजबूँ भ जै कि भाञ्च ने जाय ? िञ्च सासु एहो कहै छथी जे एहेन सुगा के पोसने की लाभ । रिरेकबे अञ्चक बाद ई अपन घर चञ्च जाये । आञ्चर जमाए र पी सुगा क कि अञ्च सासुर र पी थजरा मे सासु हाकि चारा अणि वनजन खा रहै ? थिदापथी कहै छथी जे ई गौरी र पी दुलञ्चन के भाग्य छथी जे साक् महोदेव र पी मनमोहक रि भेट

गेल छञ्च । हे दाइ-माइ हुलञ्च भ गीं नाद गाऊ आ श्री-बेभार कर ।

कहमासँ सुगा आयल, नेह लायल ।
 कहमा लेल बसेरा सुगा मन मोहल ।
 फल्ला ठासँ सुगा आयल, नेह लायल ।
 फल्ला गाम लेल बसेरा, सुगा मन मोहल ।
 फल्ला ससुर थजुरा गढ़ाओल, सुगा बझाओल ।
 हे फल्ला सासु देहि आहर सुगा मन मोहब ।
 एहन सुगा नञ्च पोसब जे पोस ने मानि ।
 हे सुगबा होयि उड़ा, अपन गृह जायि ।
 एहन सुगा हम पोसब जे पोस मानि ।
 हे सुगबा होयि बुझियार, पलञ्च फेर आओ ।
 भनञ्च श्रीदापथी गाओल, फल पाओल ।
 हे गौरी के बढनु अञ्चबा, सुन्दर बर पाओल । ।

श्रीहि के समय मे जखन बञ्चआ के संग रि अपन सासुर श्रीहि करक हेहि पसीन करै अञ्च ि दरबज्जा परदाई-माई सब बञ्चआ लेल रंग श्रीरंगक गीं समीं आ उच्च सरि मे गबै छथि । णिच होइ अञ्च बञ्चआथीक साज के, शृंगार के, उत्साह के, रीस्यारी के, सिस्ति थिन्नास के । बरक थिमिह एक चीजक क्यसिं ि थिमिह के भाई दोसर चीज केर क्यसिं मे लागल छथि । क्यो बाजा-गाजा के क्यसिं मे ि क्योकान चीजक । एक आदमी हथियर सुगा के थजरा के सजा रहल छथि कारण श्रीहि मे सुगा नञ्च जै से कोना? गीं इहो बबै अञ्च जे बञ्चआ दल के सदस्य के क-

कऱि ठहराएल जै। सुगाा सेहो ओना िरे ने जै? पूरा बऱ्हा ठऱ्हा क जै। ऱ्हा र पी सुगाा रिक ससुर के पोखऱ्हाक भीड़ पर चानन गाछ के ठाऱ्हा पर बैसऱि आ रिर र पी सुगाा अपन सासु के बनाओल कोहबर घर मे दुलऱ्हान संगे बैसऱि। सुगा के फल भोजन करक लेल देल जैकऱि आ रहबाक लेल सोनाक ऱ्हाजरा। बऱ्हाआऱि सब दरबजजा पर ऱ्हाशाम करऱि। आंगन केर सोझा मे आजन-बाजन राखल जै। बऱ्हाआऱि सब के लाल पीयर िऱि पऱ्हाकर हेऱि देल जएकऱि। सुगाा, सुगाा संग सोनाक ऱ्हाजरा आ फल भोजन जेना अऱ्हायियहोइक? बऱ्हाआकि लोक सब िऱि पाऱ्हा पसन भ जेऱि आ जमाए बेटी देख खुश भ जेऱि।

कोने बाबा साजल आजन बाजन

कोने बाबा साजु बऱ्हाआऱि हे।

कोने बाबा सजऱि हऱ्हायर सुगबा

सुगा लय जायब बऱ्हाआऱि हे।

बड़का बाबा साजल आजन बाजन

मऱ्हाला बाबा साजु बऱ्हाआऱि हे।

छोटका बाबा साजऱि हऱ्हायर सुग

सुगा लय जायब बऱ्हाआऱि हे।

कहमा बैसायब आजन-बाजन

कहमा बैसायब बऱ्हाआऱि हे।

कहमा बैसाएब हऱ्हायर सुगा

सुगा लय जायब बऱ्हाआऱि हे।

पोखऱ्हा बैसायब आजन-बाजन

दुअरे बैसायब बऱ्हाआऱि हे।

ऱ्हाजड़े बैसायब हऱ्हायर सुगा

सुगा लए जायब बन्धआहि हे ।
 की लए जायब बन्धआहि हे ।
 की लय बुझायब बन्धआहि हे ।
 की लए बुझायब हन्धयर सुगा
 सुगा की लए बुझायब जमाइ हे ।
 टारा लए बुझायब आजन-बाजन
 िी लए बुझायब बन्धआहि हे ।
 फल लए बुझायब हन्धयर सुगा
 बेटी लए बुझाएब जमाइ हे ।
 एहेन जमइया कहि ने देखल
 सुगा लए आयल बन्धआहि हे ।

दोसर बन्धआहि गी मे एहेन कल्पना कैल जै अक्क जे दुलहा
 घुमबाक हे ि खिलबाक हे बहुि दूर हन्धयर केत श्वस चक्का
 जै छक्की । रसी मे अनेक रिहक गाछ-बृक, पोखश्च, फुलीरी भेटै
 छक्का । जै-जै एक गाछ पर सोहनगर हन्धयर कचोर सुगा भेटै
 छक्का जकरा पकक्क क ल अबै छक्की । सुगा माझ आंगन मे बैस
 जै अक्क आ रक्का रहै अक्क जे ओकरा सेहो बन्धआहि जएबाक
 छैक । मुदा बन्धआहि मे ओना िरे ने जै सुगा । सुगा के ओक्क
 लेल अँथया आ टोपी चाही । ओ सक्का क सुन्दर बक्का क बन्धआहि
 मे जाए चाहै अक्क । सुगाक अकि मानिीकरण कैलि लोकगी मे
 भ सकै अक्क । आगा- आगा देखै जाऊ सुगा के नखरा । सब
 बन्धआक्की सदस्य दरबज्जा पर सीन गहण केलक । अए सुगा
 के एकाएक श्वरै छी िक्क बाकि अनुभूक्की भेलैक । िक्क बन्धआहि
 के कन्या पक के ओएि पहुचला उतर सुगा एक आमक गाछक

ठाश्च पर चश्च गेल आ ओएि स सब श्रीं व्यहिर देख्च पुलश्चकि
होइहि रहल। सुगा के ठोर बडड रमनगर। जेहने सुगा के ठोर
हिने रिक् ठोर। सासु आनंदे बहिश्च। पेमाश्रिक्र मे माश्चि कखनो
सुगा के ठोर आहारश्रीं कि कखनो जमाय के ठोर आ नैन नक्श।
सासुरानी के फेरो इहो डर बीच-बीच मे भ रहल छश्च जे श्रयोक्
दाई-माई कुनो करामांि ने क देखी! की पणि नजश्च लाश्च जैक सुगा
के, जमेईया के, या दुनु के? इहो सोचैहि छश्चि जे सुगा कि निक
पाणी अश्चि िश्च अंिं नि मे पिप्स चश्च जैि मुदा बेटी आ जमाए
कि कम-स-कम श्रीर भ क रहि ने!

हमरो दुलहा के फला दुलहा

खेल जेि बड़ी दुर हे।

ओि स जे लएला दुलर आ हश्चयर सुगबा

सुगबा बइसल माझे ठाम हे।

सभ केओ साजल जाइ बश्चअश्रिया

सुगा लेल अंगुरी पसाश्च हे।

हमहु कि लेब बाबा अँश्चया तोश्चया

हमहु कि जायब बश्चआि हे।

सभ बश्चअश्रिया अटकल दरबज्जा

सुगबा अटकल आमक ठाश्च हे।

सभ केयो आरेखश्रीं जाइहि बश्चअश्रिया

सासु आरेश्च सुगा ठोर हे।

आइ हे माइ पर हे पड़ोश्चन

सुगा जुश्च नजश्च लगाउ हे।

निश्च के सुगबा बनश्च उश्च जायि

रश्च जायि िअश्च जमाई हे।

झरनी जे अश्वीलाक मुसलमान मञ्जला सब आ ओकरा संगे कौ-
 कौ अञ्जु सब सेहो दहा संगे चलै रहै अञ्जु आ गबै रहै
 अञ्जु । यदथ झरनी उदासी के जियपर आ जिी स चलै बटगबनी
 जका गैल जै छैक जाञ्ज मे मका मदीना आ हसन हुसैन के सहादि
 केर गुणगान जि हुनकर सौन्दर्ययएि सौययकेर गाि गैल जै
 छैक । माहोल उदास मुदा जोश आ ओज सं भरल । लोक अही बहाने
 हसन आ हुसैन के कुबानी के याद करै अञ्जु । हसन आ हुसैन
 मोहम्मद साहेब केर नाश् छला । इस्लाम, न्याय आ शास्त्री के रक्क
 के लेल अपन जान गमा लेला मुदा सत्त केर रसी सं नञ्ज
 भटकलञ्ज । हुनकर सहादि केर गाि कौ अजादारी जि अश्वीला मे
 झरनी के र प मे गैल जै अञ्जु । केलि चञ्चत अरब के होइ
 छैक मुदा अतण सीनीय भाकि अनुकूल । उपमा आ अलंकार हि
 जे अश्वीलाक लोक उदासी मे अि आर कुनो कारथाक गीि मे
 पयुक् करै छथी । गीि गेबा मे सेहो अञ्जु मञ्जला जका मुसलमान
 मञ्जलाक पाबल्य ।

एक झरनी मे छाी अटै मञ्जला सब गबै छथी हाय अल्ला सुन्दर
 आ सोहनगर लाल सुगा के जन्म कोन ठाम भेल आ कोन ठाम ई
 दुनु भाई अि हसन आ हुसैन जन्म लेलाह? फेर उतर मे बजै
 छथी जे पछि पर हञ्चर गाछ पर ललका सुगा जन्म लेलक आ
 अरब के मका शहर मे हसन आ हुसैन दुनु बच्चा के जन्म भेलैक ।
 हे दाई- माई, कौ खुआक क लाल सुगा के हम पोसब आ कौ
 खुआ क दुनु बच्चा के? चारा अि आहार खुआ क सुगा के
 पोसब आ दू थिया क हसन आ हुसैन दुनु बच्चा के पाण बचायेब ।
 सोना के अजरामे सुगा के बाजब अखायेब आ इसकुल मे भेज
 क दुनु बच्चा के पढ़ेएब । अथला अंश मे उदासी पबल भ जै

छैक । गीकि बोल कहै छैक जे लाल सुगाा उड़ाि भेला पर कि उच्छ जैि आ बच्चा नमहर भेला पर कि चश्च जैि? पश आ उतर के जियपर झरनी गैल जैि अश्च । एश्च पश के उतर मे कहल जैि छैक की उड़ाि भेला पर सुगाा फेरो पछि पर उच्छ जैि आ दुनु बच्चा नमहर भेलाक बाद मका चश्च जैि कारण ओकरा मिय केर रक्क करबाक छैक ।

एश्च झरनी के गंभीरणि स देखला आ मनन केला सं ई अनुभूथि होइ छैक जे उदासी आ झरनी मे ककि समानणि छैक । जमाए के जखन सुगाा स तुलना श्चन्द्र मश्चला सब अपन गीि मे करै छथि कि कहै छथि: “निक सुगाा नि उच्छ जायि” , “सुगबा हैि ओश्चयाि अपन घर जायि” आश्च । अिए पहार स सुगाा अबै छैक आ पहार मे पिपस चश्च जैि छैक ।

हाय-हाय कहमा जलम लेल लाल एक सुगबा
कहमा जलम दुनू बचबे हाय ।

हाय-हाय परबि जलम लेल लाल एक सुगबा
मका जलम दुनू बचबे हाय ।

हाय-हाय कथीये श्चअयबइ हमे लाल एक सुगबा
कथीये श्चअयबइ दुनू बचबे हाय ।

हाय-हाय आहरा श्चअयबइ हमे लाल एक सुगबा
दुबि थलयबइ दुनु बचबे हाय ।

हाय-हाय कथीये पढ़ेबइ हम लाल एक सुगबा
कथीये पढ़ेबइ दुनू बचबे हाय ।

हाय-हाय थजड़े पढ़ेबइ हमे लाल एक सुगबा
इसकुल पढ़ेबइ दुनू बचबे हाय ।

हाय-हाय कहा उच्छ जैि लाल एक सुगबा

कहा चक्ष जेइ दुनू बचबे हाय ।

हाय-हाय परबि उच्छ जेइ लाल एक सुगबा

मका चक्ष जेइ दुनू बचबे हाय । ।

मुसलमान मञ्चला मे हश्चयर रंग के सारी अणि आनो सिस्त के रेज रहै छैक । हश्चयर के झरनी मे सुगबा रंग कहल जै छैक । एक अन्य झरनी मे मञ्चला सब अपन उत्साहि आ झंगारक चचयकरै छथी । अणि सीन, उपमा, अलंकार, धीनि सब खाटी देसी भ जै छैक । झरनी के पकृथी पश आ उतर सं छैक । एश्च गीणि मे गीणि गाईन सब अपने मे चचयकरै पश करै छथी जे हाजीपुर, पटना आ बेथिया शहर के जा रहल छैक? फेर उतर दै कहै छथी, थिजी हाजीपुर, भैया पटना आ पथीदेब बेथिया शहर जा रहल छथी । कणि लेल? थिजी सुगा रंगक सारी लेबाक लेल, भैया कंगना लेबाक लेल आ पथीदेब माकि अन्धुर लेबाक लेल । देखू कोना सीनीय परंपरा मे रंगा जै छथी मुसलमान स्तीगन अथिला मे । अन्धुर आ सोहाग के महर्त्ति एकाएक पबल भ जै अश्च । मिय अपन सीन पर मुदा सीनीयणि कुनो कम िरे? अगर अन्धुर अन्धू स्तीक शृंगारअइहबहोबाक पमाण ि मुसलमानस्तीगन केलेल अयैक नश्च । फेर गीणि अखअहार आ गेनीहाश्चके के रोश्च सकै अश्च?

हाय-हाय के जयणि हाजीपुर के जयणि पटना

के जयणि बेथिया शहरबे हाय ।

हाय-हाय बाबा जयणि हाजीपुर भैया जयणि पटना

सीमी जयणि बेथिया शहरबे हाय ।

हाय-हाय के लयणि सारी सुगबा के लयणि कंगना

के लयणि अर के अन्धुरबे हाय ।

हाय-हाय बाबा लय्यै सारी सुगबा भैया लय्यै कंगना

सीमी लय्यै आर के आन्दुरबे हाय ।

हाय-हाय के पहन्यै सारी सुगबा के पहन्यै कंगना

के पहन्यै आर के आन्दुरबे हाय ।

हाय-हाय अम्मा पहन्यै सारी सुगबा भऊजो पहन्यै कंगना

हमे पहनबै आर के आन्दुरबे हाय ।

हाय-हाय फाश्च जय्यै सारी सुगबा टूटी जय्यै कंगना

रश्च जय्यै आर के आन्दुरबे हाय ।

अपन एक छोट कश्चीं फूलडालीक कनेर मे कश्ची कृष्णमोहन झा
आखै छश्चीं

आलेबीक काट जका

हम अहाक िनक लाबा सन रिबा मे गश्च जायब

आ अछु अन्न िश्च असश्चसायब ।

चर्ीक औंठी आ बरसाइकि मेहदी जका

हम अहाक श्किल संसगयमे आयब

आ असंख्य सुगाा बआ

अहाक मोन मे उश्चयाएब ।

कश्ची नाश्चाका के अंिःकरण के बुझै छश्चीं । हृदय मे पश्चि करबाक
अम्मि रखै छश्चीं । कहै छश्चीं जे झुण्डक झुण्ड सुगाा जका
नाश्चाका के स्मृश्ची मे बेर-बेर आश्च अपन होबाक पमाण देी. नाश्चाका
टीस मे पश्चीक अिि पेमीक अनुभूश्ची करै रह्यै ।

भगवान केर भजन, पाश्ची, उदासी आश्च मे मनुख ि मनुखे भगबानो
के आनेहसिसुगाा बना क हुनकर सौन्दर्ययित्सल्य, मनोहर सरिप
के लोक स्मरण करै अश्च । कृष्ण लेल सुगाा मनमोहन ि जन-

जन के कंठ में जेना रचल बसल हो। भगवान कृष्ण केर मरिा सं दारका केर याता लोक के अकि दुखी क दै छैक जे सखी बञ्चनपा सब अपन जीनि के उदेश्यहीन बुझै छै। पूरा नगर उदास अछ। कखनो मोन होइ छै जे यमुना के कारी, गिरिगंधी सं चलै अहि पाछा में दूख क आत्महत्या क लेखी कि कखनो होइ छै जे जहर-माहुर खा पाण के समर्प क ली। हे आमोही कृष्ण कोना अहा मरिा छोख सबके हृदय दुखा सुगाा जका थजरा सं बाहर आकश्मि दारका चख गेलौ? कश्मकबोदरेग नख भेल?

अख रिहे लोक अपन क्यहार, संस्कार, संस्कृति सं सुगाा आ अन्य आरै-चुनमुन संग पेम आ सामंजस्य सिध्ति केने अछ। हलाक कि कश्मि आदिशक्ति, धिजान, धिजानक पयोग आ मनुष्य केर आनि नूनि खोज एख रिहक परम्परा के शनै शनै कमजोर केने जा रहल अछ। लोक सब अख रिहक समंजस्य के खसरल जा रहल अछ। ई कुनो अयिमे आक बा निख। सुगाा आ मैनाक कि गाम्म जीनि स समर्प भेल जा रहल अछ आ कश्मि में आमटल जा रहल अछ। खे खिखान, जंगल, पघि, पोखर, गाछ सब खत्म भेल जा रहल अछ। सुगो नख आरो आरै-चुनमुन गिरे-गिरे अक्षिक सि बनल जा रहल अछ। अगर संस्कृति के ओ सरिप जे सब के संगे चलबाक सामथ्र्य रखै अछ समर्प भ जै कि कछु नख बचि। सब के एख धिष्य पर गंभीरता स सोचबाक चाही आ संलिन के आनि के मनबाक चाही।

मैथिली लोकगीतों में कौआ सम्बोधक

मैथिली लोकगीतों में संसार अपूयिसंसार आ गीतों में महासागर अछि । एकर महासागर केर हरेक गीत बेसकर्मों सीपी जका अछि जकर मूँह सीधेक बूँद पेबा लेल खुजल छैक जाइ स ओ मोती बख सके । फेर ओ मोती समुरक कछेर में बालू आ अन्य सिकि ढेर में ओँघराएल अछि कुनो जौहरीक तिक में जे ओकरा गइ सकए रिसा सकए । मैथिली लोकगीतों गंगा के अनेक आयाम छैक । सब आयाम के अपन महत्ति ।

जखन लोकगीतों कीर्ति आ कीर्णाल संख्या के देखै छी त अनेक बिंदु इस ध्यान जै अछि । एकरा ध्यान एक गीतों अनुदि करै लोकगीतों में कौआ के पयोग आ ओकर उपयोगी इस चख गेल । लोकगीतों में कौआ के मानकीकरण क नायका के दारा कौआ के कीर्णान रिह स पयोग कैल गेल अछि । पचखि क्यहार में कौआ के पकी लोकक कीर्णाल पर गेल । अदौ सं लोकगीतों में कौआ मनुखक खाश क मखला ए बिख्या सबहक पल-पल केर अत बनल अछि ।

डॉ. कैलाश कुमार अश इनिगाफर छकी, आ ए पाब्लो नेर दाक ई पद हुनका पखान छख/ ऐ आलेखक बीच ऐ पदक आनन्द आर बख जाए/

Pablo Neruda

"You start dying slowly"
You start dying slowly;
if you do not travel,

if you do not read,
If you do not listen to the sounds of life,
If you do not appreciate yourself.
You start dying slowly:
When you kill your self-esteem,
When you do not let others help you.
You start dying slowly;
If you become a slave of your habits,
Walking everyday on the same paths...
If you do not change your routine,
If you do not wear different colours
Or you do not speak to those you don't know.
You start dying slowly:
If you avoid to feel passion
And their turbulent emotions;
Those which make your eyes glisten
And your heart beat fast.
You start dying slowly:
If you do not risk what is safe for the uncertain,
If you do not go after a dream,
If you do not allow yourself,
At least once in your lifetime,
To run away.....
You start dying Slowly!!!
Love your life Love yourself...““

अपना स श्चनेह कर , अपना के सम्मान कर सश्चखन
पाब्लो नेर दा

मैथिली अनुदिद : डॉ. कैलाश कुमार श्चश

पाब्लो नेर दा स्पेन के कश्च छश्च । साश्चत्य मे योगदान हेँ श्चनका
नोबेल पुरस्कार भेटल छश्च ।

अहा नहु-नहु मरै छी

यश्च अहा याता नश्च करै छी

अहा अध्चयन नश्च करै छी

अहा जीनिक सरि के नश्च सुनै छी

यश्च अहा अपना गुणक सियं गाहक नश्च छी

अहा नहु-नहु मरै छी...

जाश्च घडी अहा आत्म-श्चशास के खून क दै छी

जखन अहा ककरो स मदश्चकेर आशा नश्च रखै छी

अहा नहु-नहु मरै छी....

एकश्च रसी पर पश्चश्चन चलै

जखन अहा अपन आदश्च के दास भ जै छी

यश्च अहा अपन दैनश्चनी के नश्च बदलै छी

श्चश्चान रंगक पश्चानि नश्च पश्चरै छी

श्चम्मा अहा कुनो अनजान मनुख स बाचिी नश्च करै छी

अहा नहु-नहु मरै छी....

यश्च अहा जीनि मे उत्साह आ तश्चि आगि

श्चस उदास भ रहल छी

जे अहाक आंख के श्वय आ झलकै

आ हृदय गंध के गिरिबनबै अछ

अहा नहु-नहु मरै छी....

अगर अहा जीनि मे कम स कम एक बेर अश्वा के सुरक्ष

करबाक हे जोश्वम के सीकार नश्च करै छी

सपना के साकार करीक पयास नश्च करै छी

सब अम्मोरी स भगबाक हे

अहा नहु-नहु मरै छी....

अपन जीनि स अनेह कर अपना आप सं अनेह कर

अश्वा पकारक जानरि आ अरै-चुनमुन केर अश पाचीन समय सं मनुखक जीनि स नाहि रहल छैक। मैथिली लोकगीति मे अड़ई-चुनमुन के पश पेमक अदु गिष आ पेशक्य देखल जा सकै छैक। अरै-चुनमुन कुन कण मनुखक जीनिक अश्वा अंग बश्वा जै अछ प नश्च चलै छैक। भोजन बनबै काल अरै-चुनमुन आ जानरि लेल पश्चल कौर माय राश्च दै छली। सामूश्चक असिर के अश्वा भोज-भाति मे भोजन बनबए स पूयिअरई-चुनमुन लेल पश्चल कौर एखनो अकाश्च देल जै अछ।

काक भुशुंडी ति कौआ छला जे पकीराज गरड़ के रामकति पश्चने सुना देने छलथिन। अश्च बाकि गिष बाल्मीकी के रामायण आ तुलसीदास केर रामचश्चमानस मे भेटै अछ। भगतिन अति पाथी सँ कहै छथिन: "अह हम जे सुंदर कति अहा के सुनेलौ अश्च ओश्च कति के काक भुशुंडी गरड़ के सुना चुकल छथी। नारद केर जान सँ भगतिन राम के नागपाश सँ मुक्ति कए गरड़ जखन अपन गिष घुरै रहथी ति एकाएक हुनकर मोन मे एक शंका उत्पन्न होईति

छअ अ केहेन भगानि छथी राम जे एक छि राक्स दारा फेकल नागपाश मे बन्हा गेला? गरड़ एअ शंका केर समागि नरद सँ पुछला। नारद अअ शंका के समागि बबि मे असमयिछथी। नारद गरड़ के बहा लग भेज दै छथिन। बहा जी सेहो अअ शंका के समागि बबि मे असमयिछला। आब बहाजी गरड़ के महादे लि पठा देलथिन। महादे कहलथिन: "भगानिक माया बनिाइ असमयि अअ। एक अरै दोसर अरै के ठीक सँ बुझा सकै छैक िअ अहा काक भुशुंडी लग जाऊ। िह अहा के सब बा निीक स बुझा दे। आ अं ि जखन गरड़ काक भुशुंडी लग गेलाह ि काक भुशुंडी अपन अदु िदुश के पअचय दै गरड़ के पूरा रामायण के क ि समझा देलथिन। ई क ि कौआ के बुधीमान पमाथि करै अअ संगअ मानि मोन मे अरै-चुनमुन संगे गूढ बा के मनो िआअक शीश्लेषण के आरि के सेहो पमाथि करै अअ। अरै-चुनमुन आ कौआ केर मनुखक जीनि मे महत्त के सब स उत्तम उदाहरण शीशु शमा दारा रअ कालजयी रचना पंचन्ति अअ।

पाचीन भारि मे गुरकुल जंगल मे होइ छल। गुर अपन अाअ के पाकृथीक िरिण मे राअ ओकरा पकृथी आ पकृथी के अयि जे गाछ-बृक, अरै-चुनमुन, जड़ी-बूटी, नदी-नाला, झरना, पोखअ, पहार, निजी आअक जानकारी दै छलथिन आ ओकरा संग कोना िरिअ सीथि हो से गुण अखायल जै छलैक। शीशु शमा ि अरै-चुनमुन आ निजी के मानीकरण कए पूरा पंचन्ति केर अमाण बअ के जान थिकअ करबा लेल क लेला।

बा पंचन्ति के क रहल छी आ पसंग कौआ के अअ ि पंचन्ति केर एक किक उत्लेख करब अआयिबुझना जा रहल अअ जकर

सम्भर्त्त कौआ स छैक । कौआ अछु ऐना छैकः

बहुि पञ्चने एक झमटगर बर कौआ सबहक राजािनी छल । हजारो के संख्या मे कौआ ओएि कागराज मेघणियसंग रहै छल ।

बरक गाछ एक पहाड़ी रहैक जाञ्च मे असंख्य गुफा रहैक । ओञ्च गुफा सब मे उल्लू सब रहै छल ।

उल्लूक राजा अश्वमदस छल । अश्वमदस परार मी छल । कौआ सब के ओ अपन सबस पैघ दुश्मन बूझै छल । कौआ स ओकरा अकि घृणा रहैक जे अना कौआ के ि केने ओ भोजन कि नञ्च करै छल । जखन बहुि संख्या मे कौआ मरए लगलैक ि मेघणियबडड अंशै भेल । अञ्च श्रेष्ठ पर श्रेष्ठ करबाक हेि मेघणियकौआ सभक एक बैसार केलक । मेघणियबाजलः "हमर अय कौआ सब, अहा सबके ि बुझले अञ्च जे बेर-बेर उल्लू के आर मण केर कारण अपन सभक जीनि असुरक्षि भ गेल अञ्च । अपन सभक शत्रु शक्तिशाली आ एक नम्बर केर अहंकारी सेहो अञ्च । अपना सब पर राक्षिक हमला करै अञ्च अएक जे अपने सब राक्षिक देख नञ्च सकै छी । हमर सभक श्रिसि ई अञ्च जे हमरालोक अञ्च अन मे जीबी आर मण नञ्च क सकै छी कारण जे उल्लू सब गूप्स अनहार गुफा मे सुरक्षि बैसल रहै अञ्च ।

ई कञ्च मेघणियचरि आ जानी कौआ सब स अपन-अपन सुझाि देबाक अदिन केलक ।

एक डरपोक कौआ बाअ उठलः "हमरा सबके उल्लू सँ समझौि क लेबाक चाही । ओ सब जे कुनो शयिरखै छथि ओकरा सीकार क लेबा मे अपन सभक अञ्चि अञ्च । अपना स चफरर शत्रु सँ बेर-बेर पराअि हेबा मे कुन फायदा?"

अञ्च बाि के का-काि कए बहुि कौआ सब श्रोि केलक । एक

कौआ अश्वयाएलः "हमरा सबके अश्व दुष सब स अकनहुँ बाँ नश्व करक चाही। सब गोटे उठु आ चढ़ाई कर।"

एक आराशादी कौआ बाजलः "शतु शश्वशाली अश्व। हमरासबके ई सान छोश्व कौ आर चश्व जेबाक चाही।"

एक बुझनुक कौआ बाजलः "अपन घर छोड़नाई ठीक नश्व रहि। अगर हम सब अँ सँ चश्व गेलौ कि कहिँ के नश्व रहब। अलकुल टुश्व जाएब। अपना सब के एश्व रश्व आरो अरै सब सँ मदश्व लेबाक चाही जाश्व सँ एकर समानि भ सकय"।

अरिजीई ओश्व कौआ सभ मे सब सँ चरि आ बुश्वमान छल जे चुप चाप बैसल सभक कियध्यानमग्न भ सुश्व रहल छल। राजा मेघणिय ओकरा अश्व मुखाकृश्व भेला आ कहलश्वन, "परमजानी अरिजीई, अहा चुप छी? हम अपनेक श्वचार जानए चाहै छी।"

अरिजीई बाजलः "महाराज, हमर सोचब अश्व जे शतु अश्विक बलशाली हो कि छलनीश्व के सहारा लेबाक चाही"।

"केहेन छलनीश्व? कश्व सप्रष कर, शीमँ अरिजीई।" कागराज बजला।

अरिजीईः "अहा हमरा ऊँच-नीच कहु आ हमरा पर जानलेी हमला कर।"

मेघणियअकचकेला, "ई अहा की बाश्व रहल छी अरिजीई?"

अरिजीई राजा मेघणियबला ठाश्व पर गेला आ कान मे कहलश्वन, "छलनीश्विक हेँ हमरा ई नाटक कर पड़ि। अपना सबके अगल-बगल के गाछ सब पर उत्तू जासूस अपन सबहक सभाक सब अश्व या-कलाप के देख रहल अश्व। ओकरा सबके देखाक अपना सबके आपसी फूट आ फसादक नाटक करए पड़ि। ओकर बाद अहा सब कौआ के लक' ऋषमूक पश्वि पर पहुँच हमर पश्वि

कर। हम उत्तलूक दल मे शाअल भ ओकर सबहक शीनाश केर समान एकआि करब। घरक भेदी बआ लंका डाअ देबाक कोि करब।"

फेर की छल। नाटक शुरु भेल। अरिजीी आकरै बाजल: "हम जेना कहै छी निा कर राजा, राजा केर बच्चा। एक हमरा सब के मारबाब' पर लिल छै?"

मेघणियगरजल: "गदार, राजा सँ एहेन बदमीजी बला भाषा मे आ सहो जोर सँ िरा बजबाक अम्मि केना भेलौक?" अनेक कौआ एकअ संगे आआयै बाजल: "अअ गदार के जान सँ माअ देल जाओ महाराज।"

आब राजा मेघणियअपन पंख सँ अरिजीी के कनपटी मे लिले चमेटा मारै ठाअ सँ नीचा खसा देलअन आ रिं घोषणा केला की "हम ऐ गदार अरिजीी के रिं के पभाि स कौआ समाज सँ बअकृि क रहल छी। आब एखन सँ कुनो कौआ अअ अमि सँ कुनो रिहक नाि नअ राखि। ई हमर आजा अअ।"

अगल-बगल के गाछ पर नुकाक बैसल उत्तलू जासूस के आँअ खुशी स चमअ उठल। जासूस सब रिं उत्तलू के राजा के सिंदि देलक जे कौआ सबमे फूट पअ गेल अअ। माअ-पीटक संग-संग गाअ-गरौअल भ रहल छैक। अकि बाि सुआअ उत्तलूक सेनापअ राजा के सम्मोअि करै बाजल: "महाराज, यह मौका अअ कौआ सब पर आर मण करबाक हेि। अअ समय मे हम सब ओकरा सबके आसानी सँ हरा देबैक।"

उत्तलू समाट अअमदअ के अपन सेनापअ के बाि नीक लगलैक। ओ रिं आर मण केर आदेश द देलकैक। फेर की छल हजारो केर संख्या मे उत्तलूक सेना बरक गाछ पर आर मण करक हेि अिदा

भेल । यदथ ओएि एकौ टा कौआ नञ्च भेटलैक ।

भेटबो कोना कश्चै? योजनाक अनुसार मेघणियसब कौआ के ल क ऋषमूक पणि श्वस कूच क गेल छल । खाली गाछ देख्ख उत्तलूक राजा कूक फेकै बाजल: “हम्मर सबहक सामना ि की डरे कौआ सब भाअ गेल । एहेन काएर पर एक हजार बेर लू-लू ।” सब उत्तलू जीकि मद मे मालि ‘हू-हू’ के आजि आकाश अपन जीकि घोषणा करए लागल । नीचा मे जमीन पर झाड़ झंखाड़ मे खसल श्रिजीी कौआ ई सब ध्यानपूकि देख रहल छल । श्रिजीी काकि केर आजि आकाललक । ओकरा देखि मारि जासूस बाअ उठल: “अरे, ई ि हि कौआ अञ्च जकरा एकर राजा किा दए माअ पर खसा देने रहैक आ अपमाअि करै रहैक ।”

उत्तलूक राजा सेहो ओयि आअ गेलैक ओ पूछलकैक: “ीहर एहेन दुदशा केना भेलह?” श्रिजीी बाजल “हम राजा मेघणिक नीक्षिंमंती छलहु । हम ओकरा एक नेक सलाह देल्यैक जे आई-काक्षि उत्तलू सबहक नेति एक अक्षि परार मी राजा क रहल छक्षि । हमरालोकअ के उत्तलू सबहक अनिनी सीकार क लेबाक चाही । हमर बाि सुअ राजा मेघणियमिसे लाल भ गेल आ फटकारलक, दूकारलक, एि अपमाअि कए कौआ समाज सं आषकाअि क देलक । हे महाराज, हमरा अपन शरण मे ल लीय ।”

उत्तलूराज अश्वमदस आब गहन सोच मे पञ्च गेल । ओकर नीक्षि सलाहकार कान मे कहलकै “राजन, शतुक बाि पर कखनो भरोसा नञ्च करक चाही । ई अपन सबहक शतु क्षिक । एकरा जान स माअ देल जाए ।” एक चापलूस मंती बाजल “नञ्च राजन! एकरा नञ्च मारल जाए । एअ कौआ के बञ्च अपना दल मे राअ लेबा मे अपना सबके फायदा अञ्च । ई कौआ सबहक घरक भेद समय-समय पर

बिबै रहि ।”

राजा के सेहो भेलैक जे अरिजीं के उल्लू सबहक साँ अला लेबा मे लाभे-लाभ अछि। ई सोख उल्लूक झुण्ड अरिजीं कौआ के अपने संगे लेने गेल। ओएि अश्वमदघ अपन उल्लू नौकर-चाकर के आदश दै बाजल, “अरिजीं के गुफा के शाही अक्षी कक मे रहबाक कसि कैल जै। अन्नका कुनो रिहक कष नख होबाक चाही।”

चरि अरिजीं कौआ हाँ जोड़ै बाजल: “महाराज, अपने हमरा शरण देलहु, हमरा लेल ई बडड पैघ बाँ अछि। हमरा अहा अपन शाही गुफा के बाहर एक पारि पर एक सेकि जका रह देल जाओ। हमर इच्छा अछि जे एखि बैसक हम अहाक गुणगान करै रही।

” एख रिहे अरिजीं शाही गुफा के बाहर डेरा जमा लेलक। गुफा मे नीखी सलाहकार एकबेर पुनः राजा के साँनि करै कहलकैक: “महाराज, शत्रु पर कखनो शिशास नख करक चाही। शत्रु के अपन घर मे शरण देब आत्महत्याक सामान अछि।” घमंडे मालि उल्लू समाट अश्वमदघ अपन नीखी सलाहकार के अँस आँख रिरेँ बाजल: “ँ हमरा जादे नीखी बुझाब के कोआश नख कर। अगर िरा ई लगै छै जे िरा उखि सम्मान नख भेट रहल छैक ि ि ओए सं जा सकै छै।” नीखी सलाहकार उल्लू हाथ माँ आब अपन दूँन अतक संग ओयि सं ई कहै शिदा भ गेल: “श्रीनाशकाले श्रीपरी बुधि।”

अछु अन्नक बाद अरिजीं अगल-बगल स लकड़ी अँि काठी इत्याथ आँ गुफा के दार लग एकअँि करे लागल। कहला पर बाजल: “सरकार सदी आबै बला छैक। हम काठ आ झाखर सबहक फुसही मडैया बनबै चाहै छी िक जार सं बँ सकी।” शनै:-

शनैः लकड़ीक बडड पैघ ढेर जमा भ गेलैक। एक जखन जखन सब उल्लू सुधी रहल छल खिन अरिजीगी उच्छुक सोझे ऋष्यमूक पथि पर पहुचल। ओए योजना के अनुसार मेघणियसब कौआ संग ओकर पीक क रहल छलैक। अरिजीगी बाजल: “आब अहा लोकअ समीप के जंगल सं जिए आअ लागल छैक एक-एक जरै लकड़ी अपन-अपन चोच मे उठा हमरा पाछा-पाछा आउ।”

समस कौआक सेना अपन-अपन चोच मे जरै लुकाठी लेने अरिजीगीक पाछा-पाछा उल्लूक गुफा मे आअ गेल। अरिजीगी दारा एकअ कैंल लकड़ीक ढेर मे आअ लगा देल गेलैक। एक-एक टा उल्लू या ि जश्क क मअ गेल अंि दम घोटला सं मअ गेल। कागराज मेघणियअरिजीगी के योजना आ चायियसं गद-गद होइ ओकरा कौआ रताक उपाधी सं सम्माअि केलक।

पंचन्ति केर ई कि एअ बाकि के पमाअि करै अअ जे अडई-चुनमुन मनुखक जीनिक अअन अंग जका थीक। एकरा सब स सीख लेल जा सकै अअ आ िरमि सथि क जीनाई अक। अयिभेल जे अपन लोक समाज आ व्यहिर ई कहै अअ जे एकरा सब स पकृथि मे सामंजस्य सथि कर। एक दोसरक अना जीनि अपूणयअअ। पशु आ अरै स िरमि सथि केने लाभ। हलाअ एखन अछु षियस ई सुनबा मे आअ रहल अअ जे कौआ हेजक-हेज मे मअ रहल अअ। मोन एअ रिहक बा सुअ आहि होइ अअ। कौआ ि पयारिण के पाकृथिक सफाईकमी थीक आ सैह मअ रहल अअ खिन पयारिण के की है?

आब लोकगी पर अपन ध्यान केअि करी। माय अपन बच्चा के मुँह मे कौर दै काल भाथी-भाथी के अरई सब स सम्मन जोड़ै कहै रहै छथि ले बौआ ई कौर कौआक छौ; ई कौर मैनाक छौ,

आश्च-आश्च । कदाश्चि एश्च रिहे सामाश्चक रपे हमरालोकश्च आरै-
चुनमुन स एक मान्नीय सम्मन्नि बना लै छी । आरै केलि आरै नश्च
अश्चि, भाई, बश्चन, सखा आ सम्मन्नी बश्च जै अश्च । एकटा नेनाक
गीकि अछि पंश्चि देखु:

मेना के बच्चा आरैया गे
दू टा जामुन खसा
लाली खसैबए ि मारबौ गे
दू टा कारी खसा
ि छै बश्चन िहर हम भैया
जौ ने खसेले ि बुश्च ले दैया
मारब खुआ िरा जहर गे
दू टा जामुन खसा
मेना के बच्चा आरैया गे
दू टा जामुन खसा । ।

काली कानि झा “बूच” अपन कश्चि “दीनक नेना” जे गी सिहो
कहल जा सकै अश्च मे कौआ के सम्म्राहक जका पयुक् करै
छश्च । एश्च गी मे कश्च एक गरीब माय जकर पश्चि बाहर कमेबा
लेल गेल छैक, घर मे ने अन ने ढउआ छै । छोट दुपिबा बच्चा
कखनो चाकलेट, कखनो अस्फुट ि कखनो कुनो आरो सि लि
माय स अद करै छैक आ कनै छै । लाचार माय एक कौआ के
कुचरै देखै छैक आ ओकरे सहारा लए अपन कनै होअला के
गी सुना बौसबाक पयत क रहश्च छैक । बौआ देखु-देखु, ई कुआ
गाश्च रहल अश्च । ई िरे कुचश्च क सुना रहल छौ रे बाऊ । ि
ओसारा के बीच मे सुलि छै आ ई कौआ पूब अस् िरा देख्ख खुशी

स नाश्च रहल अश्च । अँ सुनर पुरबा बसाँ जेना कौआ के नाचब लेल आ िरा मसँ करक लेल बसाँकि छनन-छनन लहश्च सं बासुरी बजा रहल छौक । रे बौआ िहर जन्म आँचि घर मे भेल छौक िश्च िरा लेल अस्फुट आ चाकलेट बनले नश्च छौक । अँसश्च जो एश्च सिँ सबके । िहर गोलगर पेट नोन रोटी सं भश्च जाऊ ि भाग्य ! लेश्चन, आँँ के कोन बाँ ? बसाँकि िन आ कौआक मसँ भ नाचब मँरि बाँकि सरिलहरी िरा लेल ियार केने छौ । अनका िरे ने ई भाग्य छैक ? िहर अँ परदेअया छौ रे बाऊ । कँकि अँन भ गेल मुदा आरमोअया कुनो अँअयो नश्च भेजलक अश्च ! ई कोनो बाँ भेलै, कह ने ? केना एश्च अँसँ मे ई कौआ अपन कुचरब सं आ बसाँकि झोका अपन मँरि िन स िहर नीद स झकमँ माय के टीस जगा रहल छौक ! रे नेना ! ि की बुझबै जे गरीबी ककरा कहै छैक ? शमजीँ के सपनो मे सुख नश्च अँखल छैक । बेचारा शमजीँ अपने ि अन्हार घर मे अँअया जरा क राअँ बीबैँ अश्च आ अपन पँश्रम सं समसँ नगर के जगमग करैँ अश्च । देख ने कोना ई हुलसगर अँयअ अपन नहु-नहु अँठगर बसाँ सं िरा सुँ रहल छौक ! अँअयारानी, झटअ क बौआ लग आउ ने ! बौआ के सुँउ ने ! रे सोन, ि अँना सिँ सब खेने उपासल छै । हम गँलाअ सं मरल जा रहल छी । मुदा हम छी लाचार कर ि की कर रे बौआ ? ”

मूल गीमिय कअँ कँ देखू :

देखही रौ बौआ, ई कौआ गँ छौ ।

सुनही रौ िरे, कुचअ सुनँ छौ । ।

एम्हर ि सूँल छे माझे ओसार पर

ओम्हर ओ नाचै पुश्चिया मोहार पर
 पुरबा सिसा बासुरी बज्जि छै..... ।
 सुनही रौ िरे, कृचश्च सुनै छै । ।

िरी लय बनलौ ने अस्फुट आ चाकलेट
 नोनो रोटी सं भरि ई गोल पेट
 बाकि मरि सरिलहरी अबै छै ।
 सुनही रौ िरे, कृचश्च सुनै छै । ।

बापे िहर बनलौ परदेशी
 अटी ने एलौ भेलौ अन्न िशी
 मा केर अनायल क्कि जगबै छै ।
 सुनही रौ िरे, कृचश्च सुनै छै । ।

की बुझबै ककरा कहै छै गरीबी
 सपनो मे सुख नञ्च जऽ शमजीी
 लुती लगाकऽ नगर बसबै छै..... ।
 सुनही रौ िरे, कृचश्च सुनै छै । ।
 कोरा मे िरा सुबै छै अआया
 झटकल औ अझै रौ नूनूक अआया
 िहर उपास हमरा लजबै छै
 सुनही रौ िरे, कृचश्च सुनै छै । ।

कौआ अझिला मे दू पकारक पैल जै अश्च सामान्य कौआ आ कार
 कौआ । दुनू के अपन-अपन सनि मैझिल समाज आ लोक परम्परा
 मे छैक । कार कौआ अशुभ के सूचना दै अश्च । आ सामान्य

कौआ शुभक संकेति । दुनू जे बजै अशु किरा लेल अलग-अलग शब्द छैक । कार कौआ "डकै" छै आ सामान्य कौआ "कुचरै" छै । डकनाई अशुभ के सूचक आ कुचरनाई शुभक सूचक । अछु लकण छैक जाअ स ई परि चलै छैक जे कौआ के कुन पक्षस्थिति मे बेसब, उठब, कुचरब शुभ आ कोन पक्षस्थिति मे अशुभ केर सूचना दै अशु ।

कौआ जखन घरक चार अणि आंगन मे कुनो ऊँच चीज पर चअक कुचरे कि कहल जै छैक जे ई शुभक संकेति अशु; संगअ घर मे अयोक पाहून एणि किको बेर अरिहक बाणि सत्य भ जै अशु ।

यअ कौआ घरक छणि (अणि चार) अणि आंगन मे हअयर गाछ पर बैसए ि हेरायल सिं भेटब अअणि बुझु । एहन अस्थिति मे कोटय कचहरी मे दबदबा बनै छैक आ मुकदमा मे जीणि हाअल होइ छैक एणि नि-निन मे बृथि होइ छैक ।

कौआ अगर बखारी, अनक ढेर आअ पर बैसय ि निक लाभ होइ छैक । गाय केर माणि पर कौआ बैस गेल ि अयजन सं भेट हेबेटा करि ।

एहो मान्यणि पबल अशु अपन मैथिल समाज मे अ अगर कौआ सुखैल माअ अणि गदा मे औंघराए लागल ि एकर अयिई भेल जे पचुर मात मे षि है ।

अ सबहक अपरीणि कौआ जो कुनो सुखैल गाछ पर बैस क कुचअ रहल हो ि ई कुनो महामारी फैलबाक पूयिसूचना थिक ।

अगर ककरो माणि पर कौआ अपन चोच स हडडीक टुकड़ी खसा दैक ि ओअ व्यअ के मृत्यु अअणि बुझु ।

मैथिली लोकगीणि महाकथि थिदापथि के अना अपूणयअशु । एक थिरही नाअका जकर पथि परदेस गेल छैक केर दिना आ केना ओ कौआ

के अपन समझया बनबैँ अछ, केना ओकरा लोभबैँ अछ इत्यादिक
 बहुँ सुनर णिअ महाकथी आम लोकगीँ मे करैँ छथी:
 मोरा रे अंगनमा चनन केर गच्छया णिअ रि कुररै काग रे।
 सोने चोच णिहे बाथी देबौ बायस जौ थया अओँ आजु रे।
 गाबह गाबह सख्ख लोरी झूमख मदन अरानि जानु रे।
 चहुँ अख चंपा मेहुअ फूलअ चंर इजोअया राथी रे।
 कोना कए हम मयन अराबि होयि बड़ी रथीसाथी रे।
 पाक समय कागा केओ ने अपन अछि देखल आंख पसाअ रे।
 थिदापथी कथीरि इहो गाबए णिके अछ गुनक आनि रे।
 राँ भोगीसर सब गुन आगर पदमा देँ रमान रे।।
 एअ गीँक संकेय मे अयिई भेल जे हमरा आंगन मे चानन केर गाछ
 अछ आ ओई गाछ के ठाअ पर एगो कौआ बैसल कुचअ रहल
 अछ। ई आँखि रपे शुभ समाचार केर लक्षण थिक। हे कौआ,
 अगर आई हमर थयमि आअ गेला णि हम णिहर चोच सोन स मढ़ि
 देबौ। आउ हे सखी बखनपा सब, सब अख झूमर गाउ। आई हम
 पेमक आरानि कर जा रहल छी। चार अख चंपा आर भालसरी
 के फूल फुलाएल अछ। मुदा ई पूछायाक राथी? कोना हम कामदेकि
 आरानि क' पैब। कारण जे एअ अलनक सबस पैघ उपहार णि
 कामदेकि आरानि हेअि। सुन कौआ, खराप समय मे अयोक
 अपन नख होइ छैक। ई बाँ आँख खोअ क देख चुकल छी।
 कथी थिदापथी कहैँ छथी हे सुनरी, अहाक थयमि गुणक खान
 छथी। जेना राजा भोगेशरि छथी आर जे पदा देँ के साँ रमण
 करैँ छथी।

जाअ समय मे आगिमन के सुथीँ अकि उनि नख रहैक णिअ
 कण मे कौआ के लोक खाश णिर पर अतगन आ नेना सब कहौथिया

बूझै छल । नाथका आदिन करै छथि जे आउ आ हमर अंगना
मे कआ कुचर । अहाके हमर आंगन मे सीगि अछ । हम हम अहा
के पाआ स सीगि करब, बेसबाक लेल पीढ़ी देब आ अगर अहा
के कुचरला सं हमर थयमि कही आआ गेला ि ओ जे कोनो सनेश
अनि िश्च मे पञ्चल अस्सा अहीके देब । एबि नञ्च, अगर हमर
थयमि परदेसी आआ गेला ि हम अहा लेल कंगना सनेश बनाएब ।
अहा आंि नञ्च कर । हमर बाि पर शिशास कर । हमर अङ्गिहक
बनु आ आउ आ हमर अंगना मे कुचर ।

कआ देखू एअ गीि के:

हे रे कौआ कुचअ बैस अंगना मे ।

पाआ देबौ पीढ़ी देबौ ।

पञ्चलुक सनेश हम िरे देबौ ।

जौ थयमि परदेसी औि ।

िरा सजैब हम कंगना मे ।

हे रे कौआ कुचअ बैस अंगना मे ।

अगर कुनो मञ्चला आ नकिआया कआ िम-झाम िली छै
आ हुनकर अमाग सामि असमान पर चढ़ल छअ । हरेक चीज भोजन
स पञ्चरन शि मे नखरा छअ किर अलगे बाि! मूह-कान कुनो
खाके सन मुदा घमंड ऐना जेना शिशुन्दरी होथि । यिाियमे हुनकर
मुह कौआ सनहक छअ । कमेट हुनका पर छोटगर अछ ओहो गीकि
र प मे । कआ देखी:

कौआ सनहक कारी आ बाकूला सनहक ठोर ।

बैसल-बैसल चाही अनका दाली भाि शिलकोर ।

हमही सबस सुनअ छी आ हमरे सुनर दूि ।

सासु अयैक नञ्च भानस करी नञ्च फूकब हम चुलहा । ।

गाम्माचल मे कौआ के कुचरब भोर होमाक सूचक
अच्छ। नाथका के नायक कहै छथिन जे कौआ बजलक आ भोर
भ गेल; भोर भेल ि नगर भश्च मे शोर भ गेल. आब कक काल
सुबि? यै फला बौआ के माय उठू ने! ऐना कोना चलि थन? चलू
आब आत्मकमयमे लाथ जाई।

कौआ जगलै भेलै भोर

भेलै भश्च नगरी मे शोर

आबो जागू यै बौआ के माय।

माय अपन कनै बच्चा के कौआके नाम लै सूकि हेँ ियार करै
छथि। लोरी जका कौआ के गीं मे पात बना कनै नेना के सुबै
छथि। बौआ सुथि रहू देखू-देखू आकाश मे केना कौआ उच्छ रहल
अच्छ। थिं नश्च कर अहाक थिजी जखन आबए लगि ि पटना
स अहा लेल दौआ लेने ए।

चुप रहू चुप रहू बौआ

आकाश मे उड़ई अच्छ कौआ

एयि बाबू पटना स लेने औं दौआ।

चैबिबर मे नाथका के टीस आ कौआ दुनु के मेल देखल जा सकै
अच्छ। नाथका के आंगुर मे साप डश्च लेने छैक. शायद थिरह के
डंक? अपन ननश्च सं नाथका कहै अच्छ जे के ओकरा लेल दै
बजा आन? के ओकर पीड़ा के समार् कर? के ओकरा लेल
पलंग के ओछायन ियार करै; नाथका के थयमिके के बजा अनै
हो राम? नाथका के थि दै बजेथिन, और माय पीड़ा अटेथिन;

ननश्च पलंग पर ओछायन रियार करश्चिन; देबर थया के बजा अनश्चिन। नाश्चका कौआ स आदिन करै कहै छश्चिन जे रे कौआ रिरा हम दही आ चूडा के भोज खुआ देबौक अगर हमर समाद के हमर थयमि कि लेने जयबै। आब कश्च कौआ के मानकीकरण देखु, कौआ नाश्चका के कहै अश्च “ठीक छै हम रीहर समाद रिरा थयमि लग ल जेबौक मुदा एकटा समस्या अश्च। हम रीहर थयमि के नश्च जनै छी फेर कोना रीहर समाद देबैक?” आब नाश्चका कौआ के अपन थयमि के हुश्चया बबै कहै अश्च: “हमर थयमि के पारि-पारि डार छश्च आ घरक दरबज्जा पर चानन केर गाछ छश्च।” आब कौआ सहषयनाश्चका के समाद ल क ओकर थयमि लग जएबाक लेल रियार भ जै अश्च।

अंगुरी मे डसलक नश्चश्चया हो रामा
 के मोरा जायि बैद बजाएि
 के मोरा हरि दरश्चया हो रामा।
 के मोरा जाएि पलंगा ओछाएि
 के मोरा थया के बजाएि हो रामा।
 बाबा मोरा जाएि बैद बजाएि
 अम्मा मोरा हरि दरश्चया हो रामा।
 ननश्च मोरा जाएि पलंगा ओछाएि
 श्चओर मोरा थया के बजाएि हो रामा
 देबऊ रे कागा दही-चूडा भोजन
 हमरो समाद नेने जाह हो रामा।
 रीहरो बलमुजी चीश्चयो ने जाश्चयौ
 कोना समाद नेने जाएब हो रामा।

हमरो बलमुजी के मुठी एक डार छअ

दुअरे चनन केर गअया हो रामा । ।

आब कअ सोहर अस चली. अना सोहर के मैथिली लोकगी कहेन?
एक सोहर मे नाअका जे गभयसं अअ कोना अपन भानि के वक्क
क रहल अअ । संनि केर कामना मे व्वाकुल नाअका हरेक आंगिक
के सूचना देमए बला कौआ के चोच के सोन स मढबाक अशासन
दै अअ आ अपन जाअ बडड अनेह स कौआ के कहै अअ अ
हे कागा अगर हमर अंगना मे िहर कुचरब शुभ अा भ गेल आ
यअ हमर परदेसी अयमि घर आअ जाअ ि हमर बाझपन खमि भ
जाये। आ से भ गेल ि हम िहर चोच के सोन स मढा देबह ।
जो मोरा कगबा रे अया अयिह
होअला जनम लेि रे ।

कगबा सोन मे मढएबो दुनू लोल

ि बोअया बर सोहाबन रे ।

चुपे रहू चुपे अअया जअअ कर रोदन हे ।

अअया आजुए आओि घरबइआ बअअया पाप छुटि हे । ।

दोसर सोहर मे नाअका के संनि पार्थ मे आब देर नअ छैक ।
कखनो ई शुभ सूचना आअ सकै छै । आब छअहार मे ककरा-
ककरा सूअा कैल जाय आ अमंअा कैल जाय िअ पर पअ आ
पती मे बाि भ रहल छैक । होअला के जनम भेल छैक से सूचना
ि कौआ ने दैक? सगुन केर नौि ि काग ने भाखि । हा जी हा.
नाअका अपन पअ के अढबै कहै छअ जे अयाद आ लोक आ
समाज के नौि ि जैि मुदा हे अया हम अहा बअन के नअ नोबि
कारण जे अहाक भाअन नअ आअ पेि । कौआ के सगुअया बनेबाक

श्रीनि सश्वपहु बडड सोहनगर लगै छैक ।
 आरे-आरे कागा सगुआया सगुन नौं भाखब रे
 कागा रे मोर घर उआि कल्याण कहा-कहा नौं बि रे ।
 दर जे नौं बि आद लोक आओर समाज लोक रे ।
 थया हे आहाक बञ्जन नञ्ज नौं बि आ भायन कहा आओ रे । ।

एक श्रीरह गीं मे नाआका केर बेहाल हालक दारण क्कि क्कि
 कैल गेल अञ्ज । मिम आडई जाञ्ज मे कागा सेहो सञ्जआि अञ्ज
 गाछक डाञ्ज बैस गेल अञ्ज । पां भ चुकल अञ्ज आ पां होइञ्ज
 नभ मंडल मे सूययकेर लाञ्जमा छटञ्ज रहल छैक । नाआका अपन
 सखी के संबोधीं करै कहै छथी “हे सखी, हमर पेमक थयास
 कोना मेटि? हम ि श्रीरह दिना मे डिथ-डिथ क अञ्ज आ राञ्ज
 काञ्ज रहल छी. राञ्ज बीं गेल; हम बेर-बेर चार कां चकुरैल
 देखै छी मुदा हे सखी, एखन थि हमर थया कहा अएला?

खग उञ्ज बैसल रिरि डाली
 भेल गगन मे पां सुलाली
 हमर थयास मेटि कोना सजनी
 डिथ-डिथ आि अञ्ज-रजनी
 रैन अलि मोरा थया नञ्ज आएल
 रञ्ज-रञ्ज चहुँ अञ्ज िकल सजनी । ।

मैथिली लोकगीत सब सं सुन्दर र प खिन रञ्ज गोचर होइ अञ्ज
 जखन कौआ संग-संग दोसर जंठि के सेहो मानिंकरण कए ओकर
 शृंगार आ पेम भां के गीत माध्यम सं क्कि कैल जै अञ्ज ।
 एञ्ज रिहक उदाहरण मे सब सं सुनर उदाहरण श्रीहञ्ज आ कौआक
 श्रीक । एक श्रीहञ्जक गीं मे एहेन अञ्जि अबै छैक जे श्रीहञ्ज

के अंगूठी कौआ आ सोनक गीमहार झलहोश्च ल क भाश्च गेलश्च।
 आब श्रिषहश्च कानए लगली। लोक सब श्रिषहश्च के मनेबाक पयास
 क रहल अश्च। सोनरा के बजा सोन देल जैि अश्च आ पटबा के
 र पा। दुनु के िरि आदेश देल जैि अश्च जे यिशीघ श्रिषहश्च
 मुश्चका आ गीमहार गढ़ल जाय।

कागा ल' गेल मुश्चका झलहोश्च गीमहार
 राम िश्च लेल श्रिषहश्च रोदना पसार।
 सोन ले रे सोनरा र पा ले रे पटबा
 राम गश्च दए सोनरा भैया सोने गीमहार
 पश्चर लीअ श्रिषहश्च मैस्या गले गीमहार।।

श्रिषहश्च के दोसर गीि मे एक गहीर पोखश्च मे घुश्च क जकर उचगर
 झाड छैक श्रिषहश्च स्नान क रहल छली। नहेला-सोनेला के बाद
 अपन नमहर-नमहर केश के किकरेि छली। एकाएक कौआ सोनाक
 ककबा ल क भाश्च गेल। आब कनैि-खीजैि श्रिषहश्च अपन माय लग
 आश्च कहलश्चिन जे कोना कागा हुनकर ककबा चोच मे ल क पर
 उश्च गेलश्च। माय बौसश्च कहलश्चिन: “हे श्रिषहश्च दाई, अहा कानू-
 श्चजू नश्च हम अहा लेल फेर स सोना के ककबा बनबा देब”।
 आब श्रिषहश्च चुप भ गेली।

नीची रे पोखश्चया के ऊँची रे मोहार
 राम िश्च पइश्च श्रिषहश्च कर स्नान।
 नहाय सोनाय श्रिषहश्च किरश्चि केश
 राम सोना के ककश्चया आजु काग लए गेल।

कनै खीजै शिषहथ आमा आगु ठाथ

राम सोना के ककथया आजु काग लए गेल ।

जुआ कानु जुआ खोजू शिषहथ माय

राम सोना के ककथया हम देब बनबाय । ।

सिर शिषहथ गीं मे एहेन कलमना कैल गेल छैक जे एक छोटथन जमुना के कछेर मे बान्ह पर छोट कदमक गाछ छैक । ओथ गाछक छाहथ मे शिषहथ जुआ खेल लगली । जुआ खेल काल कि बेसु भ गेली की कखन कौआ उथक एलई आ झपटा माथ शिषहथ के हार ल गेलथ से पं नथ चललथ । जखन होश मे एली कि कनै थजै कौआ के पाछा-पाछा दौडली । रे कौआ कि जि बैसबै हम गिरा छोरबौ ने ओथ गिरा ठोर दाथ देबौक ।

छोटी-मोटी जमुना-दह मे छोटी नील गाछ

राम कि रिर शिषहथ खेलू जुआसाथ ।

जुअबा खेलई शिषहथ भेली बेसूथ

राम कि खन काग उथ हार लए गेल

कनई-खीजई शिषहथ यिल पछोर

राम जहा यि बैसबह दागब गिरा ठोर । ।

अथ रिहे मैथली लोकगीं आ कथार मे कौआ आ मनुखक बीच पेम अनं अथ । जकि भीरि जैब आ जकि मंनि करब कि अमृ भेटि । ओना चचा मैथली लोकगीं आ कौआ पर क रहल छी मुदा कथ नथ किलेल यातीजीक (नागाजुथक) “अकाल और उसके बाद” कथीं स्मरण आथ रहल अथ । भुखक जीला मे एथ कथीं मे केलि नाथका नथ डिथ रहल छैक अथ ओकरा संगे थरथट, कुकुर, कौआ, मुस सब ओथ भुखक दिना के सहायाती छैक ।

कई शूनो कि चूँ रोया, चकी रही उदास
 कई शूनो कि कानी कुशिया सोई उनके पास
 कई शूनो कि लगी भीँ पर शुकपकशूनयो की गर्श
 कई शूनो कि चूँहो की भी हालि रही श्वाकर्सि ।
 दाने आए घर के अंदर कई शूनो के बाद
 िआँ उठा आँगन से ऊपर कई शूनो के बाद
 चमक उठी घर भर की आँखे कई शूनो के बाद
 कौए ने खुजलाई पाखे कई शूनो के बाद ।
 बाबा ई कशीँ शूंदी मे श्वाखला । चूँक ई लेख हम मैश्ली मे श्वाख
 रहल छी ि सोचलौ एक बेर एक्क कशीँ के मैश्ली मे अनुदि
 करबाक पयत करी । कहेन भेल से नश्च बुझल अश्च मुदा पयत ि
 केलहु । कश्च देखू
 ककि शून शि कानल चुलहा जाँ रहल उदास
 ककि शून शि कनही कुकुर सुलै ओकरा पास
 ककि शून शि घरक भीँ मे श्वाश्रुट केलक गर्श
 ककि शून शि मुसो के रहलै हालि श्वाकर्सि ।
 दाना आएल घरक भीरि ककि शून के बाद
 देखल िआँ अंगना स ऊपर ककि शून के बाद
 मोन भेलै घर भश्च के हश्चयर ककि शून के बाद
 सुगबुगेलक पाश्च के कौआ कँ शून के बाद । ।
 एकटा बसर्न के गीँ मे नाश्चका कागा के सम्भाहक बना ककि
 बाँ बँ दैँ छैक । बेचारी नाश्चका, फगुआ नजदीक आश्च गेलैक ।
 लोक के देख्च ओकरो रंग रभस करक इच्छा भ रहल छैक मुदा रंग
 खेलि ि ककरा संग? पाहून ि परदेश्चाया छशीन. दूर देस मे बैसल
 छशी । हे कागा अहा हमर समश्चया बनू आ उश्च क हमर कं के

हमर समाद द अश्वयोन । ओ हमरा हीरा मोर्षि आ नग सं सुसश्वजि
 एक चोली पठा देने छला से गिर-गिर भ गेल । हुनकर श्वरह दिना
 अलग रश्व-रश्व हमरा सगि रहल अश्व । आब रहल नश्व जै अश्व ।
 ककरा संग खेलब ऋषि सिनि ।
 आरायल फागुन दूर बसु कनि । ।
 उश्व-उश्व कागा जाहु श्वदेश ।
 हमरो ललाजी के कहब उदेश । ।
 चोश्वया एक पहु देल पठाय ।
 चार श्वश हीरा-मोर्षि लाल जड़ाय । ।
 चोश्वया फाटल गिरमीर ।
 श्वरह सगिओल बारम्बार । ।
 सूरदास जे गाओल सिनि ।
 एश्व जग बहुरी ने आयल कनि । ।

फाटू हे रिरिी: सीी दाई केर दिना

राम अयाहने कून फल भेल ।

सीी जन्म अकारि गेल ।

कखनो काल जखन माय गि भ जै छलीह ि अनायास दोअल होइएि कहै छलीह:

“फाटू हे रिरिी”

एकर बाद सब बुझ जैएि छल जे माय आब िमसे घोर छथि । फेर हुनका अयोक अछु नञ कहै छलअ । मुदा हमर नेनमथि देखू हमरा होइएि छल माय फाटू हे रिरिी की लेल कहै छथि । एक अन जखन माय केर मोन शा रहअ ि बाल सुलभ अजासा कैल: “माय, अहा फाटू हे रिरिी अयैक कहै अयैक?”

माय कहली: “की कहु बाऊ, नारीक अथि एखनो सीी दाई जका अअ अपन अथिला नगर मे । पूरा संसार ि पुरष पानि अअये अथिलो राममय बनल ऐछ । अना पाथिी के महादेब नञ, अना राि के कृषा नञ, अना अना सीी के राम नञ िथ लोक नामो लेबय मे राम के अगुआ देि अअ । लोक अि जन सामान्य, भर्क, धिदान सभ अयो राम लग जेना सीी के िमाम कैल-लैल त्याग, मेि, गुण, अनुराग, रामक पथि समपथ आअ जेना असअ जै हो! िसलीदास एक अस ि ई अखै छथि:

बंदौ राम लखन िदेही, जो िलसी के परम सनेही ।

िलसीदास अपन रचना रामचअमानस मे १४४३ बेर राम के नामक अर करै छथि । एकर अथिअर राम के आन शब्द जेना, राजी, अकिुमार, रघुना, दशरनिंदन, रघुनन्दन, आअक पयोग केने छथि । लेअन िह िलसी जखन सीीक चचा करै छथि ि मात

१४७ पर अटक्क जाई छी । सीी दाई के आनो नाम जेना की जानकी, बड़भागी के जोख ली ि सब अलेलाक बाद होई अक्क ३२५ १४७ बेर सीी, ६९ बेर जानकी, ५८ बेर बड़भागी आ ५१ बेर बैदेही । अहू मे एक राजनीष्ट ऐछ । सीी अपने गुने बड़भागी नक्क छै । ओ बड़भागी अक्क दारे छै जे हुनकर श्रीहि राम संगे भेल छैन । बाह रे पुरष भर्क के पुरष भगवान के पक्षी समपण ! समपण नक्क अंि समपण ! आब हँ सीीक दुःख देखू : लंका मे राम रहला १११ श्वन आ सीी रहली ४३५ श्वन, अंि राम स चाखगुना अक्क । ओहो यानामय जीनि । असगर जीनि । आमम जीनि । डर, भय, आरेश, हीश भरल जीनि । आरंकार सार्धी क जीनि ।” कक्क ने की भेल ! माय जेना अपन भांनि के फोख-फोख हमरा कह लगली । हम छोट जरर रही मुदा अबि छोट ने जे माय के कहक भांि नक्क बुझ पाबी । कक्क कण लेल लागल जेना माय केर शरीर मे सीीक आत्मा बैस गेल हो ! माय कहँ रहली :

“देखू जखन राम अंि श्री भेला ि सिंगियस देंि सब आख हुनकर दशव केलख । माय कौशल्या ओख श्रीरट र प के देख घबरा गेली । भगनि स पांि केली जे नेनाक सरिप मे आबधि :

मांि पुख बेली सो मधि डोली जिहु ि यह र पा ।
कीजै आसुलीला अधि थयशीला यह सुख परम अनूपा ।

सुख बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा । ।

आ राम अपन माय केर आदिन के सीकार केलख । नेना भ गेला आ कानय लगला । मांि कौशल्या तित्सल्य पेम मे खभोर भ गेली आ अपना के सखिस्ट माय माख लेलख ।

आब सीी के देखू । ने कुनो देखांि ने कुनो िम-झाम । जखन समसि अंधीला मे अकाल भ गेल आ राजा जनक सयं हर जोयि

गेला ि रिीक बेटी रिीक गभयस सणियकुम्भ मे एक बच्ची के सरिप लेने पगट भेली। नञ्च माय सुनयना के आदिन करय पड़लआ आ ने जनक राजा के जे छोट भ जाऊ, नेनाक सरिप मे आञ्च जाऊ, आञ्च-आञ्च। ऊपर अणि अकास आ सगियस देणि, पञ्च, गायक-गाञ्चका, दिदयंत बजाबय बला, नकि-नकि, यक, इंर सब आनञ्च भ गेल। ऊपर स एक अपूयिआ मनमोहक दिदयंत संगे ओकरा बजबय बला कलाकार सब सेहो सगियस आयल। ओ दिदयंत रहैक रसनचौकी। सगियस पुष्प षि पारंभ भेल। के नञ्च पसन भेल। सबहक मोन मे उमंग आञ्च गेलैक। आब झर-झर षि होमय लागल। ञ्कसान खेि ञ्स दौरल। आर की-की ने भेल। की ढिलसी बाबा एञ्च पकरण के अकि ञ्सीर स ञ्खला? नञ्च। ञ्चैक, ि सीणि बेटी छली ने!”

सीणि के राम संगे ञ्हीह भेलआ। लोक बुझलक जे आब सीणि पटरानी भ गेलीह। राम आ सीणि केर जोड़ी ककरा नञ्च शोभनगर लगलैक। दाई माई ञ्कञ्च- ञ्कञ्च क गीणि गेली, ञ्चि यिबहार केलआ। जनक राजा अपन सञ्चि आछाबर क देलाह। मुदा कञ्च नञ्च ञ्चैक सीणि दाई केर बञ्चनपा सब के राम पर कञ्च शंका छलआ। जखन राम णिष भंग क देलञ्चिन ि उमंग स माञ्चि ञ्चया दाई रिमाला हाणि मे लेने रामक ञ्स बढ़लआ। ञ्चया सुनञ्च के पेम मे मालि राम झट दञ्च अपन गरदञ्च नीचा केलआ। सीणि माला रामक गरदञ्च मे डालय लगली। हठाणि सीणि के हाणि हुनकर बञ्चनपा सब अपना ञ्स खीच लेलआ। राम अक्केकायल रञ्च गेलाह! ई की भेल? एहेन ञ्चिञ्चत ञ्चिहार कणि लेल? सखी सब के की भेलआ? पुछलञ्चिन ऐना ञ्चैक? की गलणि भेल हमरा स?

सखी सब कहलथीन राम के : “हे यौ पाहून! अहाक पञ्चरि बडड नीक नञ्च अञ्च। अहा सब मञ्चला के भोगक सिं मात बुझै छी। अथीलाक क्यहार दोसर अञ्च। अए मञ्चला सहचरी छथी। अहाक थि केर िन पती : कौशाल्या, सुअता आ कैकेई छथीन। जनक राजा के एकञ्च रानी सुनयना छथीन. यौ पाहून! अहाक थिमह के सेहो अनेक पती छलथीन। फेर अहाक की ठेकान? आई अथीला नगअया मे निष भंग कै सींग के हां भेट गेल। काथी कहि दोसर परार म स कुनो आरो लड़की के हां अहा पती के र प मे ल लेब ि हमर अया थिया के की होय? हमर अथीला मे एकै पती के अयम चलै छै”

राम अंघि मे आञ्च गेलाह। कहलथीन: “अहा सब बां ि ठीके कहै छी। मुदा हम सींग के कुनो शयिपर अपन अथिनी बनेबा लेल ियार छी।”

सींगिक सखी सब आब िरे आरो भारखमी होइ बजली: “खिन सुनु। अहा सप्पि खाऊ जे कुनो हालि मे सींग के सौथीन नञ्च आनब”

राम बजलाह : हमही नञ्च हम चार भाई आई समसि लोकक समक सपि खैए छी जे हम सब एक पती भियके पालन करब।

फेर की छल पूरा िम िम स सींग चार बञ्चन केर थिह राम केर चार भाई संग ओही मंडप मे भ गेलञ्च।

थिहक बाद सींग सासुर गेलीह। राम संगे बने बने घुमली. राणि

हरण कै लंका ल गेलअ। अशोकक गाछ लग समय कटली। राम राम कहै रहली। सुकुमारी अया के जंगल आ गाछ पाँ मे सेहो पक्षीक संग जीनि नीक लगलअ। कञ्चओ कुनो आकायि नञ्च। निनिस ि राम के भेल छलअ मुदा सीणि पती रिम के पालन केअ आ रामक संगे गेली।

“जखन सीणि एलीह आ गभयस छली िञ्च काल एक िबी के उपराग स परेशान भए राम सीणि के घनघोर जंगल मे असगर भेज देलअनि. कहु ि ककि कठोर छलाह राम! मिआशत कहै अञ्च जे अतगन कतेक खाराप हो मुदा जखन ि गभयस हो ि ओकरा सब सुख देबाक चाही आ घर स एकौ कण लेल बाहर नञ्च जाए देमक चाही। बाह रे मयादा पुरषोत्तम राम! क ि गेल मयादा अहाक? अगर अहा पजा तिसल छलौ ि एक पक्षी सेहो रही ने? अहा के ि बुझल छल जे सीणि अफपट आ गंगा जका पक्षीत छअ। अगर अहा अयोध्या मे एक पणि पारंभ करै चाहै रही ि फेरो राज चलेबक अममेदारी भरि के द पक्षी मियकेर पालन करै सीणि संगे निनिस चञ्च जैहु जेना सीणि अहा संगे अपने मोने पती मियके पालन करै गेल छलीह? मुदा से कोना! पुरष रही ने अहा। पुरष दम्भ के के रोक! कही एहेन ि नञ्च जे पुरष दंभ सेहो मयादा पुरषोत्तम के लक्षण हो आ अपना के ओञ्च दंभ मे खपा देनाई या दंभ के नीचा जीनाई नारीमिअ”

खैर, लक्ष्मण जी सीणि के जंगल मे असगरे छोअ देलअनि। लाचार आ िशि सीणि! हे दे! जाअ ि क ि आ ककरा लग? के शरण देअ? आ िञ्च कण बाबा बाल्मीअ सीणि के अपन आशम मे सीन देलअनि। एक अन् रासी मे पसि दिना उठलअ। निक लोक सब

मदश्चि केलकञ्च। इच्छा भेलञ्च जे अयोध्या मे जानकारी भेजी। मुदा भेलञ्च जे राम नञ्च बुझश्चि ि नीक। हजमा के कहलश्चि न “ि भरि, के सतुघन के, लक्षण के, िनो माि के चुप चाप बनि श्चहक मुदा राम नञ्च बुझश्चि।”

जखन राम अशमेि यज करै लगलाह ि पंश्च कहलश्चि न जे श्चना पती के राम यज नञ्च क सकै छि। राम के अपन चिन स्मरण भेलञ्च। कहलश्चि न हम दोसर श्चिह नञ्च करब। खिन इ आणय भेलैक जे सोनाक सीि बना राम यज लेल बैसि। सैह भेल।

मुदा बीचे मे घोडा के ि ल आ कुश बाञ्च देलश्चि न। सब हाश्च गेलाह। हनुमान बंदी भ गेलाह। अंि मे राम एलाह ि बाद मे सीि सेहो एलीह। राम एक संग अपन दुनु पुत आ सीि सनहक पती पाश्च न्नि भ गेलाह। कहलश्चि न सीि के जे आब अयोध्या चलू। सीि मना क देलश्चि न। राम बहुि बुझेबाक पयास केलश्चि। मुदा सीि ि अपन श्चद पर कैम रहली। अंि मे राम कहलश्चि न : “अहा नञ्च जाएब ि हमर अशमेि यज नञ्च हेि।”

सीि: “से कोना?”

राम: “पती के अछैि असगर पश्चि अशमेि यज नञ्च क सकैि अञ्च।”

सीि: “खिन अहा कोना करैि रही?”

राम: “हम सब माञ्च लेने रही जे अहा आब अञ्च दुआया मे नञ्च छि।”

सीि घोर दिना स रश्चि भ गेलीह आ कहलश्चि न : “हे राम! अहा मात अपन पौरष आ नामक रक्क हेि हमरा अयोध्या ल जाए चाहैि छि? अञ्च लेल जे अहाक यज भ जाए? हमही बाि छि अहाक यजक?”

ई कहै सीी रिी माी के दुनु हाि जोड़ी करण सरि मे धीनी
 केलीह: “हे माी ! अही हमर माए छी। अश्वक कोश्व स हम एश्व
 रिा मे उत्पन भेल छी। आब हमर आत्मा काश्व रहल अश्व। अहा
 फाटू आ हमरा अपना भीरि मे सीन द दीय!

रिी सीी के गुहार सुश्व लेलधिन आ एकाएक रिी मे सीी दाई
 के आगा दू टा दरका भ गेले। जाबेि राम रोकधिन िबेि सीी
 ओश्व रिी मे श्वलुपि भ गेलीह।”

ई बाि कश्व माए कश्व जोर स सास लेलीह आ कहलश्व “ बाऊ
 िश्व जखन हमरा सबके कोनो कष होइएि अश्व ि अपना के सीी
 बुझै छी आ अनायास मुह स श्वकश्व जैि अश्व : “फाटू हे
 रिी”।

ओना आब श्वली के पुरष सेहो सीी के सम्मान कहा करैि छथी?
 सीी सब दहेजक जीला मे जरैि छथी। अपमाश्वि होइएि छथी।
 बेटी के बेटाक िलना मे कम ध्यान देल जैएि अश्व। दिना अनंि
 अश्व.....”

ई बाि कहैि माय केर नयन नोर स भश्व गेलश्व। ओश्व कण ि नेना
 रही आब बुझै छी जे माय के नोर कोना खसलश्व!!!

मैथिली संस्कृथि केर अयि

मैथिली संस्कृति के समग्री मे अथिलाम कहल जा सकै अछि । कुनो सांस्कृतिक केत अपन अछि विशेष खानपान, गी बेबहार, गी संगी आ अ के कारणे विशेष सीन आ पञ्चान रखै अछि । मैथिली संस्कृति अि अथिलाम के सेहो अपन शीलकण विशेषी छैक । कश्क ओ अथिलकणी पर शिचार करी ।

अथिलाम के संश्रमि र प सँ 6 भाग मे देखल जा सकै अछि:

क) खानपान, ख) सिस्त शिन्मास, ग) गी आ संगी, घ) दिदयंत, च) भाषा , छ) शिअक संपदाय आ परंपरा ।

क. खानपान

खानपान कोनो समाज के संस्कृति के मूल होइ अछि । अथिला मे खानपान के दू दृश कोण सँ देखल जा सकै अछि । भोजन के मुख्य आ सीनीय त्ति आ दोसर भोजनक सचार । जखन बहुि रासक सि सँ भोजनक िरी अि िर सजैल जै अछि ि ई भेल सचार । सचार मे कोनो जररी नश्च जे सब सि अि भोज्य सामगी सीनीय हो । जखन भोज्य सामगी के बाि करै छी ि अथिलाक मूल भोज्य सामगी के बुझ पडि ।

एक फकरा मे कहल जै छैक:

शिरहुँयि के भोजन िन । कदली कबकब मीन । ।

आब कश्क एकरा देखी:

कदली (केरा): केरा गाछक सब चीजक पयोग अथिला मे होइ अछि । मि के भीरि केर रिकारी, कोषा केर रिकारी, काच केरा केर रिकारी, पाकल केराक शि र प मे पयोग । कोनो भार अना केरा के पूणयनश्च अछि । केराक पयोग सब अि, बेबहार, पूजा पाठ, उत्सि, सत्पनारायण कि आ अ मे होइ अछि । काच केराक

रिकारी पथ्य के र प मे पयुक् अश्क । केरा मिभ के बहुि शुभ काययमे पयोग होइि अश्क । केराक पाि पर भोजन करब अदौ सँ अबैि परंपरा अश्क ।

कबकब: कबकब के अंगिगि भेल ओल, खमहार , कौआं पाि , ओलक पेपी, कना पाि, अश्कचक लोढ़हा, आश्क । ओल शुि आ सुपाच्य सि अश्क । सामूश्क भोज मे ओलक सना अश्किययरहैि अश्क । ओलक रिकारी सेहो खूब चाि सँ हमरालोकआ खाइि छी । खमहार के रिआ अििि खमहारआ अश्किलाक शिशेषि अश्क । अश्कोच ओना ि सब खाइि छश्क मुदा स्तीगनक मध्य ई कश्क अश्क थय अश्क । कबकब भोज पदायिके बनेबा मे कागजी, जमीरी नेबो, काच आम, आ आश्कल के पयोग होइि अश्क ।

मीन : मीनक अयिभेल माछ । माछ ि अपना सभक भोजनक मुख्य पदायिअश्क । अनेक रिहक माछ आ माछक संग संग ओश्क पजाश्क अन्य चीज जेना काकोड, डोका, काछु आश्क खेबाक परंपरा अश्किला मे अश्क ।

ई ि भेल िन मुख्य त्ति । एकरा अश्कश्क अछु पदायिअश्क जे मैश्किल के बहुि थय छश्क । ई सब अश्क:

दही-चूरा, चीनी: समस्ि शिश मे अश्किले एहेन केत अश्क जि दही-चूरा-चीनी के मुख्य भोजन आ भोज इत्याश्क मे सामूश्क भोजन के र प मे खेल जैि अश्क ।

आ सब कंजन पर भारी पड़ैि अश्क अपन अश्किलाक शिलकोरा । ससि उपलब्, ने दाम ने छदाम, आ सीद केर की कहब? छोट पैघ सब मे अपन सिन रखने अश्क । ई एहेन भोज पदायिअश्क जकरा केलि मैश्किल खाइि छश्क ।

मखान: भारिषियमे सबसँ अश्क मखान अपन अश्किला मे होइि

अच्छ आ सबसँ बेसी एकर उपयोग सेहो हमरे लोकआ करै छी ।
अंि: भोजनक पूर्णता मुखशुद्धि सँ होइ अछ आ मुखशुद्धि पान
सुपारी संगे ।

ख. स्ति श्रिन्मास

परंपरागि स्ति श्रिन्मासक पुरष लेल गिी, गमछा, या मुरेठा आ
स्तीगण लेल नुआ, आंगी अछ । अछु श्रिशेष गियकेर लोक या ि
श्रिशेष असिर पर अगि ओहुना पाग सेहो िरण करै छथि । गिी
ि। श्रिन्मासक मुसलमान सेहो पञ्चरै छला । आब मुसलमानक बा
छोड़ु अन्तू सब सेहो गिी सँ बप्पा बैर केने जा रहल छथि । पञ्चने
अपना ओ कोकटा बाग होइ छल जाकर पाकृद्धिक रंग ऑफ गिट
होइ छलैक । ओही बाग केर गिी के कोकटा गिी कहल जै
छलैक ।

पाचीन समय मे पुरष गाम गमै भ्रमण करबा काल गिी, अजई,
दुपटा, गमछा, आश्चक पयोग करै छला । पैर मे खराम पञ्चरबाक
पि हाल कि छल । पाहून परख के पैर िबक हेि खराम देल
जेबाक परंपरा एखनो बहुि ठाम अछ । उच्च णियमे खराम पञ्चरक
व्यसि उपनयन संग पारम्भ भ जाइ छल । अछु लोक खरपा
सेहो पञ्चरै छला । खरपा के आगि आगि रिगि काठ के आ
ऊपर मे आँगुर लग प्लाष्टक अगि चाम लागल रहै छलैक ।

बाद मे लोक गोल गला सेहो पञ्चरनाइ पारम्भ केलअ ।

श्रिन्मासक स्तीगण सब व्यहिर कैल स्ति यि गिी आ नुआ सँ
केड़ी आ सुजनीक आमाण सुई गि सँ करै छली । केड़ी मोटगर
होइ छैक जकर व्यहिर मोटगर गदा जका जारक समय अछेबक
हेि कैल जाइ छैक । सुजनी कलात्मक होइ छैक । सुजनी मे
अनेक रिहक गि के सुनर संयोजन सँ बहुि रास अजईन ,

मोक्षफ, िक्षफ, पैटरन आश्च बनेबाक पणि अक्षीला मे छलैक । सब गियआ जाक्षीक स्तीगण एश्च कला मे आपुण होइ छली । सुजनीक पयोग ओछाइन केर चदश्च के र प मे होइ छैक । अछु लोक गरीबी मे केड़ी सेहो ओढ़ै छथी ।

ग. गीं संगीं

अक्षीलाक लोकगीं एक महासागर अश्च । एकर संख्या किक अश्च से कहब असंभ । मैक्षीली लोकगीक क्षीशेषी एकर समीं गायन शैली छैक । लगभग 98 पक्षीशि गीं अना कोनो िदयंत और क्षीशेष राग सँ गैल जाइ अश्च । मुदा गीक शब्द, भां, गबैस्या के उत्साह आ समपण, क्षीं बेबहार के पक्षी ध्यान , ऋक संग सभां, अ याकलाप सँ पक्षीबं, काज मे लगां, आपसी पेम आ पकृक्षी सँ अनुराग अना कोनो िदयंत के सेहो मैक्षीली लोकगीं के अलग संसार मे ल जाइ अश्च । क्षीदापक्षीक पदाली, िहू मे उत्साक्षी क्षीशेष केर गीं, सोहर, समदाउन, उदासी, साझ, पां आ आक्षी गीं मे महेशीनी , नचारी आ कंरुआ गीं बहुि हष्यि करै अश्च नि के आ मोन के । सीं, राजा सलहेस, काश्चख महाराज, दीनाभरी, आश्चक लोकगां आ गीं सेहो अपन अलग संनि रखै अश्च । सब शास्तीय गीं अक्षीला मे बहार सँ आयाक्षी अश्च, यदश्च धुपद मैक्षीली लोकशैली संगे िरमि बना सकल अश्च । बटगबनी, क्षीरहुं, लगनी िंक्षी सँ चलै गीं आ मोन लगबे बला गीं अश्च । उदासी संि परंपरा, कबीरपंि परम्परा, सँ पभाक्षी भ रचल गेल अश्च । अक्षीलाक उच्चगियक्षीशेष र प सँ बाह ण आ कणयकायसि अपन मञ्चला के पञ्चक स्मेस मे गायन, िदयंत संगे गायन, नृत्त आश्चक सतिं नश्च देने छथी जाश्च सँ एश्च गियकेर मञ्चला मे नृत्त, नृत्तगीं, नृत्तनाश्चका आश्चक शैली नश्च क्षीकश्चां भ सकल छअ ।

अन्य जायै सब मे डोमकच्छ, जटा-जञ्जन, झझया, आञ्चक र प भेटै अञ्च । शामा चकेबा मे बहुि सागिरण रिहक नृत्त आ उत्साहक सतिि देखै छी ।

मुस्लमान मञ्चला सब िञ्चया के समय झञ्चया छाी पीट पीट गाबै छथी । हुनकर सरि आ टोन बहुि हद कि उदासी आ समदाउन सँ मेल खाइ छि ।

घ. िदयंत

अथीलाक मूल िदयंत रसनचौकी मे पयुकि होइि अञ्च । दुभाग्य सँ एकरा कञ्चयो अथीलाक िकिथी थिदान लोकञ्च पोत्साञ्चि नञ्च केला । एकरा बारे मे कहल जाइि अञ्च जे जखन सीि कुम्भ सँ बहार भेली ि भगिन सगियसँ पसन होइि अप्सरा, िदयंत आ ओकरा बजबय बला कलाकार सेहो अथीला पटेला । अछु लोकक कहब छि जे चूँच ई िदयंत चमार बजबै छथी िञ्च एञ्च पर थिशेष ध्यान नञ्च देल गेल ।

च. भाषा:

मैथिली भाषा पाचीन भाषा अञ्च । एकर अपन अथ छैक मुदा आब लोक देनिगरी मे अखै छथी । बंगला अथ अथीलाकर सँ पेशि भ बनल अञ्च । एञ्च भाषा मे थिदापथी, ज्योथिरेशर, चंदा झा, लाल दास, हथमोहन झा आ याती सनहक साञ्चत्यकार भेल छथी । आन भाषा जका मैथिली मे सेहो सिन आ लोक जाने भाषा के बजबाक शैली, शब्द क्यहार, टोन, आञ्च मे पथिषि पैल जाइि अञ्च । बेगूसराय, बरौनी, मुंगेर आञ्चक मैथिली दञ्चण पभाि सँ ओि पोि अञ्च आ शैली मे सिनीय आनंदक अनुभूथी भेटि । यदथ दरभंगा, मुिबनी मे रहञ्चहार मैथिल सब अपन बोली के पमाञ्चि करबा लेल बेहाल रहै छथी । िञ्चना अथीला केर पञ्चाम मे पयुकि भाषा मे

कञ्च अलग सीनीय भां भेटै अञ्च । भागलपुर, देधिर, गोडडा, साहेबगंज, दुमका, बाका मे क्यहि मैथिली के अञ्चका कहल जै अञ्च । शिाली केत के मैथिली के बञ्चका कहल जाइ अञ्च । उच्च आ आम गियजाने सेहो मैथिली बजबाक शैली मे अछु उरि चढ़ा भेटै अञ्च । सब केत, समुदाय, के सीनीय शब्द, शैली, उपमा, अलंकार, ग्रहानी, फकरा, गी नाद आञ्च के आरि माञ्च एक पामाञ्च मैथिली भाषा के अञ्चका करबाक जररि अञ्च जे सबके मान्य हो, सब के सोहनगर लागञ्च ।

छ. मियआ संपदाय

अञ्चला मे सब णियके लोक, सब मियके लोक रहै छथि । अरि केर अन्दू पंचोपासक छथि । महादे केर पूजा माञ्चक महादे बना अदु ढंग सँ कैल जै अञ्च । बु केर भाषा आ चायणद के एखनो मैथिली अपना मे आत्मसा केने अञ्च । ति मे बौ ति के स्रष पभा छैक । अञ्च पीठ आ बजयान केर ति सल अञ्चला मे आञ्च जेना संगम जका एक अञ्चला मे एक भे बहे लगै अञ्च । मुस्लमान सब सेहो अपन मियकेर पालन करै छथि संगञ्च अछु लोक परंपरा केर ति के अपना मे समाशि क ले छथि ।

सी के अञ्चलाक स्त्री नाञ्चका के पञ्चअञ्च आ राजा सलहेस के पुरष नायक के पञ्चअञ्च कहल जा सकै अञ्च ।

अञ्चला अतकला

अञ्चला अतकला जकरा मृिनी अतकला सेहो कहल जाइ अञ्च, अपन सीन आ नाम कला संसार मे नीक जका दजयकरा लेने अञ्च । एञ्च पर बडड अखब अञ्चियनञ्च । इञ्च भ गेल अकि पर्याप अञ्च ।

मैथिली लोक परम्परामे ना जोगी राजा भरिरी आ गोपीचंद

लोक गाणिक पञ्चशि

हमर नानी लोक-परम्परा केर संरक्षका छली। शायद अकरमालाके जान हुनका नञ्च छलआ मुदा लोकजान जेना कंठमे कंप्यूटरके कोनो आप जका सेट छलआ। जखन हुनका लग जाई ओ ञ्छु नहि आ महत्तपूणयलोकव्यवहार अहि कि अहि गीति हि फकरा, देहि देहि, सानिक शिशेषहि आश्चकसन्दभमे बाहि करथि। गंभीर बाहि। एक-एक चीजक अयिस्मरण करै शिरिण दै छली। नानी छली बडा कुलीन घरसं। नाना सेहो अपना समय केरजमीदार छला। मुदा बजबाक शैलीमे नानी मरि छली। हमरा कखनो “रौ” के हि छोड़ू “हौ” नञ्च कहलआ। सदञ्चकाल “यौ” कञ्च सम्मोनि करथि। बजबाकशैली शैलिकण। भेटथि हि कुशल केम पुछबाक अदुहि अंदाज। जखन कञ्चयो नानी लग जाई अपन गामक संस्कारके शैलाजञ्च द दी। ञ्चना डाट-फटकार केञ्चक संस्कार कोना आखाबी ई ञ्चयो नानीक व्यवहार संगहण क सकै छल। हमर जेठ बञ्चन केर नाम शिदा आ सरोज छल। जखन कखनो नानी लगजाई हुनका सबहक कुशल केम अञ्च रिहे पुछथि:

“शिदा कुमारी कोना छथि? सरोज कुमारी कोना छथि?” ई छलआ नानी के व्यवहार अपन बेटीक बेटीके पथि; सेहो परोकमे।

कञ्च नञ्च कहि लेल नानी के हमरापर बड्ड शिशास छलआ। जखन जाई नानी घंटो बाहि करथि कखनो घरमे, कखनो अन्तराल लग, कखनोदलानपर हि कखनो आमक गाछीमे। नानी के शायद ई भान छलआ जे:

“कैलाश कञ्चयो ने कञ्चयो मैथिली लोकपरंपरा लेल ञ्छु करहिह!”

बहु रास अजगुहि गीति सब नानी गबै छली। ककि बेर सोचलौ

रेकॉडयकरब आ अश्वयो लेब । अछु अखबो केलो । मुदा दे संयोग ई छलजे नानी अचअमे बैकुंठक रसी ि लेली ।

एक बेर नानी लग दालान पर बैसल गप्प करै रही िबे मे एक ना ि जोगी हा ि मे सारंगी लेने, बदल दाढ़ी आ भगबा स्ति मे सारंगी के िर के इनकबै आश्व गेलैक । अना ककरो आज्ञा के इंजिर केने िरक इनकार जि भ गेलैक । करण रस झहरए लगलैक । नानी हमरा कहलअ : “कैलाशजी, जोगी जी के कुसी अयौन बैसबाक हे” । हम िरि एक कुसी के झाअ जोगी जी के द देलयअ । जोगी जी सारंगी बजबै मस भेल चुपचाप कुसी गहण केलअ आ कअकाल मे सारंगी केर िन संगे उच्च सरि मे गोपीचंद के गी गाबय लगला । िरे-िरे अगल-बगल सं बहु स्तीगन आ नेना सब जमा भ गेल । अछु पुरख सेहो एला । जोगी महाराज गी गबै रहला, सारंगी बजबै रहला आ स्तीगन सब कनै रहली । पूरा िरिण उदासी के भा ि सं ओपो छल । पूरा ि नअ परन् आश्वक बा ि हमहु बुझअयैक आ िरेक रअि सेहो भेलौ । जोगी डेढ़ घंटा अ सारंगी के िन पर गी गबै रहला । जखन समाप भ गेलअ ि अयोक पाई, अयोक अन, अयोक स्ति आश्व देलकअ । मामी अछु जलखई देलअन आ चाह सेहो भेटलअ ।

जलखई समाप क जखन जोगी जी चाह पीब लगला ओही कए एक आशयअनक दृश्य उपअ ि भ गेलैक । एक 90 षियकेर मअला हा ि मे लाठी पकड़ने आश्व गेली । जोगी के पकअ कानय लगली : “रे बुनि ! हम अयौ िहर माय ! रे हमर बेरा पार लगा दे खिन फेर जोगी बअ जैहे । बाप बुनि बुनि रटै पाण त्पाअ देलुन । अपटी खे मे हुनकर आत्मा भटकै हेअ । रे बइमान ! रे बाप के पिअ

दे। संस्कार कर। रे शिक रक्क कर!” बेचारा जोगी हपिभ! बुझ्या ऋष्टु बजबाक असिर देबाक हेतु ियार नञ्च। जोगी कहलकै, “बूढी मा, मै छपरा झले का हूँ और जाझी से कुम्भकार हूँ। मै चार भाई हूँ और मेरी मा मर चुकी है। मै आपका पुत या कोई बुनि नही हूँ। मेरी नाि सम्मदाय मे दीक से पहले मेरा नाम रमेश पञ्चाङि ि। दीक के बाद मेरा नाम जोगी मोीनाि है।” लेञ्चन बुझ्या ओकर कियसुनबाक हेतु ियार नञ्च। बड़ा झपञ्चा!

पुराण लोक सब ऐल। ओकरा चीन्हबाक पयत केलक। सब कहलकै जे ई बुनि नञ्च झीक. मुदा पुतझीछोह सं रिपैि माय के बुझेनाई अकि सहज कहा? अंि मे सब कहलकै “ठीक छै, कोनो एक झन्ह बरिऊ जे बुनि के खाश छलैक?” कञ्चकाल लेल बुझ्या चुप भ गेल। फेर सोचैि बाजञ्च: “हमर बुनि के मध्य पीठ पर िन टा नमहर-नमहर िल छैक।” लोक सब जोगी के पीठ देखेबा लेल कहलकै। जोगी शुर मे पीठ उधारबा लेल ियार नञ्च छल। अञ्च बाि सं बुझ्या के शंका आर पबल भ गेलैक। बुझ्या जोर-जोर सं काञ्च-काञ्च लोक के कहए लागञ्च: “देखू हे माई दाई! ई बुनि अञ्च। पीठ नञ्च उघाञ्च रहल अञ्च. हम दूि थयेने छी एकरा। हमरा आंञ्च सं कोना अपना आप के बचा लेि?” बुझ्याक कानब सं रञ्चि होइि लोक सब मे एक पमुख कञ्चि जोगी के सम्मोझीि करैि बजला: “देखू जोगी जी! एञ्च 90 षियकेर मञ्चला पर दया कर। झनका पीठ उघाञ्च देखा झयौन। जं िन िल लगाि एर ठाम मध्य पीठ मे नञ्च हैि ि अहा के हमरालोकञ्च छोञ्च देब अन्याि अहा अिए सं नञ्च जा सकैि छी।” कञ्च ना नुकुर केलाक बाद जोगी पीठ उधारबा लेल ियार भ गेल। सब झजासा सं जोगी के पीठक आञ्चकण केलक मुदा मध्य पीठ मे िन िलक ि बाि नञ्च

एकौ िल नञ्च रहैक । बुझ्या झमा खसञ्च । जोगी पफुञ्चति होइ
सारंगी उठा सारंगी बजबै दोसर गाम ञ्स ञ्चदा भेल ।

राक्षी मे सुि सं पञ्चने नानी सं हम जोगी आ समसि चीज के सम्मन्
मे ञ्जजासा कैल । नानी कहली: “हमरा जाि छल जे अहा ई पश
करब. अगर अहा नञ्च कञ्चि ियो हम जोगी आ सारंगी के सम्मन्
मे आई चचा कञ्चि.” हमरा नानीक ई कहब बडड ञ्चक लागल.

नानी कहली जे ई सब नाि सम्मदाय जकर आञ्चगुर गोरखनाि छञ्चि
केर सदस्य छञ्चि. ञ्चनका सबके अपन ञ्चथिला मे जोगी, सारंगीबला
जोगी, ञ्चधह जोगी, गुदञ्चयाबाबा, घुनाबाबा, गोपीचंद बाबा सेहो कहल
जै छैन । मान्नाि छै ञ्च जे रईसक घर सं भाञ्च जै छला ि
गोरखपुर जा बाबा गोरखनाि के नाि सम्मदाय केर चेला भ जै
छला । घर-दार सं उन्मुकि । ने उि को लेना ने माि को देना ।
ओ सन्नासी के शेणी मे आञ्च जै छञ्चि । संसाञ्चकि केर मोहजाल
सं मुकि । ओएि हरेक जोगी के एकटा सारंगी देल जै छञ्च । िह
सारंगी बजबै आ गीि ञ्चक्र मे ञ्चपुण भेला पर नगर आ गाम मे
घरे-घरे भीख माञ्च बारह बषयञ्चि ओ जीनि क्वािि करै छञ्चि ।
बारह बञ्चख सं पञ्चने हुनका अपन माए सं भीख लेबा मे सफल
होबाक छञ्च । जे सफल भ गेला ओ ञ्चि जोगी आ ओकर बाद ओ
आनो के गुर के र प मे दीक्क द सकै छञ्चि ।

ओञ्च समय मे जे नानी कहली किरा आई अपन स्मरण शञ्चि पर
जोर दे ञ्चख रहल छी । अञ्च लोक स्मरण मे जकि बाि ञ्चक आ
पमाञ्चक भेटि ओ नानीक छञ्च आ जएिकि इम्हर उम्हर भटकएि
ओ हमर स्मरण दोष आ जान के गहण करबाक दोष थैक ।

लोक परंपरा मे जननायक के र प मे पञ्चिञ्च ि भट्टिञ्च राजा के
जीनि त्तिानि, नीञ्चि आ उपदेश के लोक शैली मे भरिरी मे नाि

जोगी सब गाथ-गाथ सुनबै अशु. एशु लोकगां के गोरखपं पि सां अपन सारंगी पर गबै छथि. सारंगी के की- की आकारे सेहो कहल जै छैक। नां सम्मदाय केर गुर गोरखनां पि मत्स्येनानां केर आगुण आं पि सं पेथि एशु लोकगां मे सामदेी रानी आ समसि धीलाआं आ राजभोग के त्याग भरिरी राजा केना रिंग्ग लेल आ फेर जोगीक शि मे रह आ एकर बहुि करण धीरण अशु।

एशु लोकगां के दू पाट मे बाध बुझल जा सकै अशु। पमि भाग मे राजा भरिरी के रिंग्ग पि थंगला दारा पूयिजन्म केर की। दोसर भाग मे जंगल मे गेलाक बाद भरिरी राजा दारा कारी मृग के पि करब पि मां मैनां के आजा के आरोपियकरै जोगी अपि रिंग्गी होबाक की छैक। एशु गेय गां मे योग-भोग केर अंदिं पि करण धीपलम्भ केर पयोग चरमोत्कषयपर भेटै छैक।

की ऐना शुर होइ छैक। राजा भरिरी के एकाएक रिंग्ग उत्पन्न होइ छैक। एकर कारण हुनकर जन्म कृण्डली मे रिंग्ग आखल छैक। फेर की, भरिरी राजा सामदेी रानी के छोड़ भरल जुआनी मे रिंग्ग लेल जा रहल छथि। रानी पञ्चने पि मना करै छथिन लेखन जखन भरिरी राजा नञ्च मानै छथि पि पुछै छथिन: “ठीक छैक सीमी! अहा जा रहल छी मुदा जेबाक कारण पि बि श्रय हमरा?” भरिरी राजा कहै छथिन: “हे रानी, एकर एकमात्र कारण धीक हमर जन्म कृण्डली मे रिंग्गक योग।” मुदा सामदेी रानी एशु जीब सं संषि नञ्च होइ छथि आ भरिरी राजा के बाहर जेबाक अनुमति नञ्च दै छथिन। भरिरी मोन मसोआ क रञ्च जै छथि। भरिरी राजा एक पश रानी सं पुछै छथिन: “हे रानी एक

बाँ के उतर हमरा अहा श्रय! अपन सबहक सोहाग राक्षी मे पलंग केर पाटी कुन कारने श्रखंश्रु भ गेल?” भेल ई रहश्र जे जखने सोहागराक्षी के समय राजा अपन रानी सं काम श्र या करबा लेल उद भ रानी के बाहुपास मे लेमै लगला एकाएक पलंग केर फटी टूश्र गेलैक। रानी आ राजा के एश्र बाँ सं श्रछु अशुभ केर शंका भेलश्र। श्राणय केलश्र जे आई राक्षी सोहाग नश्र मने। आ ने कामेश्र या मे श्राप हे। एक श्रन मे कोनो बैकुण्ठ िरे ने खाश्र पड़ैक? ओकर बादे राजा भरिरी के मोन मे श्रिश्चत रिहक उचाट होबए लगलश्र। कखनो रानी लग जएबाक मोने ने करश्र। हि पश आई राजा अपन रानी सामदेी सं पुश्र देलश्रन।

रानी सामदेी बजली: “राजन, एश्र बाँ के हम नश्र जनै छी। हलाश्र हमर छोट बश्रन थंगला अगजानी अश्र। ओकरा भु, िश्रान आ भक्षि सब चीज के अपूयिजान छैक। मुदा थंगला श्रल्ली मे रहै अश्र।” राजा रि अपन साथ थंगला के श्राटी श्रख श्रल्ली सं मालि एबाक पाँसा केलश्र। श्राटी पाश्र थंगला झट दश्र राजा लग जै छश्र आ कहै छश्रन: “हे राजन! जो हम सत्त कहब ि अहा सीकार नश्र क पैब। िश्र पूयिजन्मक सत्त जनबाक हठ छैश्र देल जाओ।” मुदा भरिरी राजा अपन श्रद पर अटल रहला। कहलश्रन: “हे हमर सुनश्र, दुलार आ गुनमश्र साथ थंगला, अहा सत्त कहू। हम चेन्नि आ कठोर हृदय केर पुरख छी। केहनो सत्त के सीकार करबाक क्मि हमरा मे अश्र। अहा श्राश्रान भ जे सत्त छैक किर बखान कर।” आब थंगला गंभीर भेली आ बजली: “ठीक छैक भरिरी राजा, अगर अपने सत्त सुनबा लेल आरि छी ि हम आई एश्र कग अहा के सत्त बाँ दै छी। हमर बश्रन सामदेी रानी जे अश्र जन्म मे अहाक पती छश्र पूयि

जन्म मे अहाक मा छली । ई बाँि अही लेल हम अहाके नञ्च बाँि रहल छलो । ओना रानी सामदेँी के सेहो पूयिजन्म के बाँि जाँि छञ्च मुदा एञ्च जन्म मे ि ओ अहाक पती छथी िञ्च नञ्च बली । आब ई अहा ऊपर अञ्च की भोगमय अलाञ्चाँि पूँि जीनि जीबी अँि योगमय कोनो जोगी अँि संयाञ्चक जीनि ।” ई बाँि सुञ्च भरिरी राजा उदास भ जैँि छथी । माँि टनकए लगैँि छञ्च । संसार आ मानीय सम्मन् ि सब मे अथ्याभाँि लगैँि छञ्च ।

कञ्च काल बाद भरिरी राजा अपन नँि व्याञ्च रानी सामदेँी सं आज्ञा लैँि अँिहलदीप केर घनघोर बोन मे कारी मृग के अकार हेँि पसँि करैँि छथी । मृग केर पती हञ्चनी भरिरी राजा के अकारी के खेमा देख्च अञ्च केर आशँका सं घबरैँि अपन पथीक पानक रक्क मे लाञ्च जैँि अञ्च । जखन कोनो क्योँि नञ्च भेटैँि छैक ि सँयँि राजा भरिरी लग आञ्च जैँि अञ्च आ अँिदिन करैँि छैकः “हे राजा, अहा हमर पथी केर पाण केर रक्क कर । हुनकर अकार नञ्च कर । हुनका बदला मे हमर अकार क अँय!” लेञ्चन भरिरी राजा ओकर अँिदिन के सीकार नञ्च करैँि छथी । हञ्चणी अँराश भ जैँि अञ्च ।

हञ्चणी हाञ्च नञ्च मानैँि अञ्च आ पथीक पाण केर रक्क कोनो ने कोनो हालँि मे कर चाहैँि अञ्च । दौर क कारी हञ्चण लग जैँि अञ्च आ हाँफैँि कहैँि छैकः “हे अँय, भरिरी राजा अपन अकारी दल के संग बोन मे घुञ्च गेल छथी । ओ अहाक अकार करी । अहा िरि एञ्च बोन के छोञ्च कोनो आन ठाम चञ्च जाऊ ।” कारी हञ्चण सोचलकः “आञ्चर भरिरी राजा अकारण हमरा कँि लेल मरी ? हमरा हुनका संग कोनो रिहक भिनस्य नञ्च अञ्च । कँि लेल एहेन सुन्दर बोन के छोड़ी, अनजान बोन मे क्वा खेबाक हेँि जाई ?” यह

सोचै ओ हथणी के सम्मोक्षि करै बाजल: “हे हमर दुल्लभ! अहा
 आंजु कर । हमरा राजा नञ्च मारि। हम हुनकर कोनो अञ्च
 नञ्च केने छी। केलि हि पाणी दोसर पाणी के माथ सकै अञ्च
 जे ओकरा कोनो रिहक दुःख देने होइक अणि अञ्च केने होइक ।
 हमरा कोनो आन बोन मे अनेरे नञ्च जएबाक चाही।” आब हथणी
 मोन मसोश्च क रञ्च जै अञ्च ।

इम्हर भरिरी राजा अपन आकारी दल संगे गहन बोन मे बढ़ल जै
 छथी । एकाएक कारी मृग के देखै छथी आ ओकरा ि करबाक
 हे िर के िनुष के पत्तंचा पर चढ़ा लै छथी । माजल आकारी
 जका लगातिर सा िर सं पहार करै छथी । सा मे स छ िर
 गंगा मा, निस्पथी दे, गुर गोरखना, ए कारी मृग केर आंध
 सं बेकार भ जै छआ मुदा सामि िर सं मृग घायल भ जै अञ्च ।
 शोआ सं भरल देह, िरक टीस सं कथि मृग दिना के आथिक्य
 मे भरिरी राजा के शाप दै छआ: “हे राजन! अहा ि नृशंश भ
 हमरा माथ देलौ! आब हमर नेत अहा अपन रानी के शृंगार करबा
 लेल द देबआ; हमर सुन्दर कलात्मक आंध कोनो राजा के दरबज्जा
 पर मढबाक हे द देबआ; हमर चाम के कोनो सा के आसन बनेबा
 लेल द देबआ; आ अनः हमर माउस अहा राञ्च बघाथ क खा
 लेब । मुदा एक बा ि स्मरण राखब, जञ्चना हमर सतथ सै रानी
 कलथ रहल छथी िञ्चना एक थन अहुक रानी सब कलपि।”
 अपन बा के समार्प करै कारी मृग जे ओञ्च बोनक हथण सबहक
 राजा छल, अपन पाण त्पाथ देलक ।

भरिरी राजा रथि भ गेला. रि हुनका अपना आप सं घृणा होबए
 लगलआ । कोनो रिहे ओ आब कारी मृग के जानक रक् करै चाहै
 छथी । कथि भ गुर गोरखना के कुश्या मे घुसै छथी आ

अपन गल्लि के सीकार करै आदिन करै छथिन: “हे गुर गोरखना! हमरा सं बड्ड पैघ पाप भ गेल। अहा कोनो रिहे अपन दैयि शक्ति सं अछ करी मृगराज के पाण के पुनः पिपस क श्यौक!” गुर गोरखना कहै छथिन: “हे राजन! आब एकरा पुनः जीथि केनाई हमरा शिक बा नश्च अछ।” भरिरी राजा पागल जका कर लगै छथि। माथ मे ओहथया मरै छथि। कनै बेहाल भ जै छथि आ गुर गोरखना के कहै छथिन: “अगर अहा अछ मृगा के पाण नश्च पिपस केलौ ि हम अही ठाम अपन पाण त्पाथ लेब!” थिथि भ गुर गोरखना कारी मृगराज के अपन दैयि शक्ति सं पुनः जीथि क दै छथिन। मृग उथ क बैस जै अछ। राजा पर एकबेर फेर दयाभा देखबै कारी मृग अपन शाप पिपस ल लै अछ। समसि हथण समुदाय मे उत्स केर गिरिण भ जै छैक। हथणराज केर सतर सए रानी मसि भ नाचए लगै छैक। कसूरी केर सुगन सं बोनक गिरिण महो-महो भ जै छैक। कारी मृग अपन रानी सब लग थचरन करए चथ जै अछ। एथ दृथ के देख भरिरी राजा आनन्दथिभोर भ जै छथि।

इम्हर भरिरी राजा के हदय पथथिथि भ जै छथि। संसार क लगे छथि। मोन मे सासाथक सुख सं राग उत्पन भ जै छथि। गुर गोरखना के चरण पर बैस जै छथि। कहै छथिन: “हे गुरदे! हमर उरि कर। हमरा अपन शरण मे लेल जाओ। अपन थथ बना हमरा न्थि कर।” गुर गोरखना कहै छथिन: “राजन! हम कोनो थथि मे अहा के अपन थथ नश्च बना सकै छी। एकर एकमात कारण थिक अहाक राजथक थि। अहा राजा थिकहूँ। राजा भला जोगी कोना क बन?” भरिरी राजा उत्तर मे कहै छथिन: “हे गुर शेष! हम अहाक पि पर अहाक चेला बथ

चलए चाहै छी। एख लेल सब अछु भौक्षिक पदार्थ संग-संग अपन आतक चीज के सेहो त्याग करक हेतु तैयार छी।” अंति गुर गोरखनाथ एख शयिपर की भरिरी राजा सन्यासी बिबिध जेहि मुदा हुनका अस्मि दीव गोरखनाथ खिन देखिन जखन भरिरी राजा अपन रानी सामदेवी सं ‘माए’ कहि भीख मंगीह।

आब एख सं भरिरी राजा नाथ जोगी के रूप धारण क, गेर आसित पञ्चर, हाथि मे सारंगी लेने गामे-घरे होइ राजक दार पर अलख जगेने गीत गाब रहल छथि। रानी साम देवी जखन भरिरी राजा के जोगी के भेष मे देखै छथि त परेशान भ जै छथि। रानी हुनका कोनो अर्थ मे भीख देबाक हेतु तैयार नब रहल छथिन। भरिरी राजा अब बाथि पर हुनका कहै छथिन जे ओ अपन नैहर चख जात। मुदा रानी नैहर नब जै छथि आ उलटे भरिरी राजा के राजमहल मे कोनो एकाथि सान मे रख जोगी के भेष मे पिस्था करक हेतु कहै छथिन। भरिरी राजा कहै छथिन: “ठीक छै, अगर अहा गंगा के आस धरि एत आबि त हम राजमहल मे रख क पिस्था क लेब।” रानी छली परम सौ। धरि अपन सथि सं गंगा के धरि के ओखि ल एली। आब भरिरी राजा हुनका बिबै छथिन जे कोना एक जोगी के साधक पुन्य धियसल केर भमण सं भेटै छैक। ई सुन रानी गंगा के धरि के पिस चख जबाक हेतु कहै छथि। रानीक बाथि के सम्मान करै गंगा केर धरि पिस चख जै छैक। एकर बादो रानी सामदेवी भरिरी राजा के भीख देबाक लेल तैयार नब भेली। भरिरी राजा के भेलख “अगर रानी भीख नब देत त सानि बीच मे अटक जै। फेर की है?” अंति गुर दीव भेटबे ने करि। फेर बैकुण्ठ कोना पात है?” अंति गुर गोरखनाथ सथि अबै छथि। रानी सामदेवी के पूरा बाथि बुझबै

छथीन। आब रानी माआ जै छथी आ भररिरी राजा के भीख द
दै छथीन। एकर बाद भररिरी राजा के अपना संगे गुर गोरखना
जोगीक गहन पिस्पाक हेँ बोन मे लेने जै छथी।

ओही अन्न सं ई पाँ भ गेलैक जे जे अयोक नाँ जोगी बन
ओकरा अन्न दीकर गुर खिन दैक जखन ओ अपन जन्मदाती
आँ माँ सं भीख मंगबा मे सफल भ जै। अथीला कश्यो रीग्य
के सीकार नञ्च केलक। अँ हमेशा गृहसँ जीनि मे रहै सब
अथी पाँ करबाक अँ पाँ पबल रहल छक। िञ्च अथीलाक अगर
कोनो युकि कोनो कारने नाँ जोगी बनै अञ्च ि ओकरा लेल माँ
सं भीख लेनाई बहुँ दुष्कर काययभ जै छैक।

नानी कँ कहथी आ बीच-बीच मे गीँ नहु-नहु गुनगुनाथी। नानीक
कहबाक अंदाज अँ भाँक जे कँक बेर नैन नोर सं भञ्च
गेल। नानी सेहो कानथी। नानी आ नाथी दुनु भररिरी राजा केर कँ
गाँ मे मसँ एक सुनेबा मे मसँ आ दोसर सुनबा मे मसँ।
अनुभँ भेल जे जखन नानी कँ कहै छञ्च ि नानी एक संगे
अनेक चञ्चत केर अँतण नाटकीय अंदाज मे करै छली। चञ्चत
संगे चलै छली। चलबाक अञ्चनय अँक अँक जे मात एक नावय
कलाकार नानी आ एक मात शोँ हम मुदा दुनु के आँञ्च, हृदय,
आ अँमाग एक कण लेल इम्हर-उम्हर नञ्च होई छल। ई भेल एक
अँसँ कँ िञ्चका केर गुण। ई गुण समपञ्च, त्पाग, एँ
अँःकरण मे कँ के बसेला सं अबै छैक।

हमरा एकाएक स्मरण भेल जे अन्न मे नाँ जोगी अँछु मैनाँ आ
गोपीचंद केर गीँ सेहो गबै छल। हम नानी के स्मरण अँयेलअँ।
नानी कहली: “गोपीचंद आ मैनाँ केर पसंग भररिरी राजा के जोगी
बनलाक बाद अबै छैक। गोपीचंद केर पसंग सेहो बड़ा रोचक

छैक। बडड राक्षी भ गेल। आई सुनब की काक्षी?” हमर अजासा पबल छल। भेल एखने सुआ ली। नानी के कहअएआ: “हमरा आन नञ लागल अञ्च। गािक अञ्चमि भाग जानबाक उत्क्रंठा सेहो अञ्च। िञ्च आक यह रहि जे लगले मे मैनांि आ गोपीचंद केर कंि सेहो सुना दी अहा?” नानी सहज भांि सं हमर आदिन के सीकार करै कंि कहनाई पारंभ केलआ।

गोपीचंद एक संस्कारी पुत छथी पदामसेन राजा आ मैनांि रानी के। मैनांि भरिरी के बञ्चन छथिन। गोपीचंद के चंरालि नामक एक सहोदर बञ्चन छथिन। जिन भेला पर गोपीचंद के श्रीहि होइ छि। संयोग सं पञ्चल पती सं च्चनका पुत नञ होइ छि। पौतक लोभ मे ब्याकुल रानी पदांि अपन असगर पुत गोपीचंद के दोसर श्रीहि कर दै छथिन। दोसरो पती सं गोपीचंद के पुत नञ होइ छि। पौतक लालषा मे मैनांि गोपीचंद के सिसर, चाश्म, पाचम करै १६ टा श्रीहि करा दै छथिन। श्रीनाक श्रीनि देखू, गोपीचंद के १६ रानी सं १२ पुती ि भ जै छि मुदा बेटा एकौटा नञ। मैनांि अंि मे अपन भाई भरिरी जे नांि जोगी भ गेल छथी के बजबै छथी आ अपन रोदना पसारै छथी। कहै छथिन: “अगर च्चनका पुत नञ भेलआ ि समसं राजपाट समारं भ जै। शिक अंि भ जै। अयोक् अंि के पिण देब लेल नञ रहि। एहेन जीनि जीब सं बञ्चया जे आत्महत्या क ली? अछु उपाय कर हे भाई भरिरी जाञ्च सं गोपीचंद के एक पुत भ जाईन।”

जोगी भरिरी कआ ध्यानसं होइ छथी। फेर अंि भ कहै छथिन: “बञ्चन दाई, बडड दुखक बांि भाश्न गोपीचंद के संनिक योग नञ छि। हम एञ्च मे अछु करबा मे असमयिछी।” ई बांि सुआ रानी मैनांि अलाप करै छथी। बडड जोर-जोर सं कनै

छथी । कहै छथीनः “हम अछु नञ्च जनै छी । अहा कोनो युष्म
आकालू जाञ्च सं गोपीचंद के पुत होआ!” आब आरो गंभीर होइ
भरिरी कहै छथीनः “ठीक छै, अगर भाथान राजमहल त्पाथ
घनघोर बोन मे नाि जोगी बञ्च पिस्सा करथी ि अञ्चनका पुत भ
सकै छिआ ।” ई बाि सुआ मैनाि रानी झमा खसै छथी । मुदा
भरिरी के बुझेलाक बाद अपन पुत के जोगी बना अञ्चन बोन मे
जएबाक लेल कहै छथीन ।

गोपीचंद माए केर आज्ञा पाञ्च सोलहो रानी लग जै छथी आ भरिरी
जी के आणय बबै छथीन । सोलहो रानी पुत आकाक के ध्यान
मे रखै छी के पारि क लै छथी आ अपन पथी राजा गोपीचंद
के जोगी बना बीजन बोन मे भेअ दै छथी ।

बोन मे गेलाक बाद गोपीचंद घोर सांनि मे लाअ जै छथी । अञ्चनभञ्च
जंगल मे सांनि आ साझ पहर आकटन लेल नगर आ गाम केर
याता हाि मे सारंगी लेने रिगम केर गी गबै । यह अञ्चनकर सब
अञ्चनका जीनि भ गेल छिआ ।

एक अञ्चन आकटन के रम मे घुमै-घुमै गोपीचंद अपन बञ्चन
चंरालि के सासुर चैल जै छथी । जोगी के देखि चनरालि घर सं
भीख देबा ले बाहर भेली । देखै छथी जे ई जोगी कोनो आन नञ्च
अञ्चि हुनकर सहोदर भाई राजा गोपीचंद छथी । कुहेस फाञ्च गेलआ ।
आञ्च अन्हार भ गेलआ. भिम सं रिी पर अते खसली । जखन
लोक उटेलकआ ि पि चललैक जे पाण त्पाथ देने छथी । गोपीचंद
के सहोदर के ममति जाअ जै छिआ । बफाअ माअ-माअ कनै
छथी । मुदा आब की चंरालि बञ्चन ि समापि भ गेल छथीन! अममि
नञ्च हारे छथी गोपीचंद । चटे गुर गोरखनाि लग बञ्चन के पुनः
अयेबाक हेि जै छथी. बहुि अनुनय अिनय करै छथीन. कहै

छद्मिनः “बर हमर पाण ल अय मुदा बञ्चन दाई के अया अयौन।
 ” गुर गोरखनां रक्षि भ जै छद्मि आ गोपीचंद संगे चंरालि
 केर मृ शरीर लग अबै छद्मि। हुनकर स्मशयमात सं चंरालि जीब
 जै छद्मि आ उच्च क बैस जै छद्मि। आब चंरालि अपन भाए
 गोपीचंद लेल गुर गोरखनां सं आदिन करै छद्मिन जे हुनका पुत
 होबाक बरदान देन। गुर गोरखनां भाए-बञ्चन के अपूयिपेम देख
 बड्ड पसन होइ गोपीचंद के पुत पाप हेबाक आशीदि दि दई
 छद्मिन संग अमर होबाक बरदान सेहो दै छद्मिन। गोपीचंद खुशी-
 खुशी अपन राजमहल पिस आब जै छद्मि।

एकटा गाँ के पसंग बहु आक अछ। एक बाँ ई छैक जे
 राजा भरिरी, रानीसामदेई, रानीमैनाँ, गोपीचंद, चंरालि, आ गुर
 गोरखनां सब अयोक अछिला के चहत नछ छद्मि। मुदा जोगी
 परंपरा सं जुड़ने काँ मे सीनीय भाँ आब जै छैक। लोक जोगी
 के केलि भीख देबाक हेँ नछ बजबै छैक। जोगी अपन सारंगी
 आ सुमरि कंठ के कारण एक लोक कलाकार सेहो बबू जै अछ।
 गाँक भानात्मक पक अँक पबल छैक जे अछिलाक लोक सेहो
 काँ के अनेक पसंग के उदासी, चौमासा, छौमासा, बारहमासा के
 र प मे लोकगीत सँ प मे गबै छद्मि। अछ रिहे ई काँचिना
 जोगी आ गृहसँ दुनु के दारा गैल जै अछ। एक कला के मात
 कलापशंशक अँ शोकि संग-संग अनेक प्रकारक कलाकार-
 गीतरचना करआहार, गेआहार/गीगैन, काँचिक, काँचिका
 सेहो भेट जै छैक। रचना के कारण भाषा सेहो संपन होइ छैक।
 न शैली, शब्दाबली के पयोग होइ छैक। ई मूल काँ माली सं
 बहु केत के भरण करै भोजपुरी केत होइ अछिलाक माँ मे
 पशि करै छैक। गोरखपुर भोजपुरी केत छैक िँ कारणे नाँ

जोगीक भाषा भोजपुरी भ जै छैक । ओ मूल गी भोजपुरी के लोक सरिप मे गबै छैक । ओझु स्टाइल के काँपी अथिला मे सेहो लोकगी (जोगी गी) मे बहु उतम र प मे भेटै छैक । दुनु भाषा मैथिली आ भोजपुरी सहोदरा अणि गंगा जमुना जका एक भय भय र प सं झलकोरा मारै कल-कल करै बहै रहै छैक । जखन गरीबी, भानात्मक टूटन, असफलता, अपमान आस सं व्यथि भ कुनो युकि ना सम्मदाय के सदस्य बझा जोगी भ जै छथि कि ओझु व्यथि, ओकर माणि-थि, पती-संनि, भाए-बझन, समाज आ गाम लेल एकभानात्मक आ अणि बा भ जै छैक । लोक झट दझ अपना आप के चञ्चल सं जोड़ लगै छथि । भरिरी, मैनाँ, गोपीचंद एकाएक सब जीब जै छथि । गी मे न रक् पबहान भ जै छैक, सकि आ फेश ऑक्सीजन सास लेबाक लेल भेट लगै छैक । मालिक कि एकझ कण मे अथिला के कि भ जै छैक । ओ मझला सब अन्नकर पथि अथिला सं बाहर रहै छथिन काज ि के चकर मे ओ सब अपन परदेअया अणि अदेअया पथि के जोगी के र प मे देख गी गबै छथि । थिरहअपन चरम असि मे पहुच जै अझ । एक एक आखर ममय के आखर भ जै छैक । एहने एक गी देखू:

कालै पीथि लागौले रे जोअया
पीथि छोड़ेने चञ्च जाय
आंगन मोरा लेखे थिजुनि रे जोअया
घर लागै अंसि अन्हार
लाली पलंअया सुन भेलै रे जोअया
थिया मोझ ने सोहाए
खुजल केश नीड़ भेलै रे जोअया

काजर गेल दहाए

एख गीं मे धीरखणी नाथका के अपन पथी खना आंगन
 एकां नि; घर खनो मे अन्हखया राखी जका अन्हार, ललका सजल
 पलंग अनसोहानगर, शिखा मारक लगै छैक। खुजल केश बेकार
 लाथ रहल छैक, अंख सं नोरक रिर कम होबाक नामे नख लै
 छैक। नोर केर रिर काजर के मेटा देने छैक। ऐना लगै छैक
 जेना ओकर पथी नां जोगी बख गेल हो। घर सं भाथ गेल हो!
 दोसर गीं मे ई पदख्यि कैल जा रहल छैक जे राजा भरिरी जंगल
 मे कारी मृग(हखण) के आकार करक हे गेल छथि। रानी के अपना
 राजा पर गरि छथि। बुझल छथि जे खना आकार के नख औहि।
 रानी राकि रभस के सियारी क रहल छथि। सोहाखन रानी अपन
 सौन्दर्यके चानन के लेप सं सुगंधि, फूलक हार सं सुशोभा, आ
 माकि खन्दूर सं मनमोहक केने छथि। मुदा ई की? आंगन केर पशि
 पर एक जोगी सारंगी लेने गीं गाख रहल छैक: “हे रानी! हम दूर
 देस केर जोगी छी। हमरा जल्दी-जल्दी भीख द खय, हम अहाक
 दुआख छोख दोसर अंगना भीख लेल चख जैब।” बेचारी रानी के
 की बुझल जे ई जोगी आर खयो आन व्यर्थ नख अथि हुनके पथी
 राजा भरिरी छथिन।

चानन रगड़ी सोहाखन हे गले फूलक हार
 खंदुरा से मंथाया भरलअखहे सुख मास अखार
 राजा गईले मृग मारन हे नि गईले आकार
 जोगी एक ठाढ़ आंगन मे हे रानी सुनले मेरी बां
 दए दीय आक जोगी के
 हे ओ ि छोड़ि दुआर...

ओही अन्नसं ई पणि भ गेलैक जे जे अयोक नाि जोगी बनै ओकरा अश्विम दीक गुर खिन दैक जखन ओ अपन जन्मदाती अणि माएसं भीखमंगबामे सफल भ जै। अश्विला कश्यो िराग्यके सीकार नश्च केलक। अए हमेशा गृहसि जीनिमे रहै सब अश्वि पार्प करबाक अणि पबल रहल छक। िश्च अश्विलाक अगर कोनो युकि कोनो कारने नाि जोगी बनै अश्च ि ओकरा लेल माएसं भीख लेनाई बहुि दुष्कर काययभ जै छैक।

नानी कणि कहथी आ बीच-बीचमे गी नहु-नहु गुनगुनाथी। नानीक कहबाक अंदाज अकि भाकि जे ककि बेर नैन नोर सं भश्च गेल। नानी सेहोकानथी। नानी आ नाथी दुनु भरिरी राजा केर कणि गागिमे मर्सि एक सुनेबामे मर्सि आ दोसर सुनबामे मर्सि। अनुभि भेल जे जखन नानी कणि कहैछिश्च ि नानी एक संगे अनेक चश्चत केर अतण नाटकीय अंदाजमे करै छली। चश्चत संगे चलै छली। चलबाक अश्चानय अकि अक जे मात एक नावयकलाकार नानी आ एकमात शोणि हम मुदा दुनुके आंश्च, हृदय. आ अश्चमाग एक कण लेल इम्हर-उम्हर नश्च होई छल। ई भेल एक अश्विसि कणिगिश्चका केरगुण। ई गुण समपण, त्याग, एणि अंः करणमे ककि बसेलासं अबै छैक।

नमश्चादिन

ओश्च समयमे जे नानी कहली किरा आई अपन स्मरण शश्चपिरे जोर द' अश्च रहल छी। अश्च लोकस्मरणमे जकि बाि अक आ पमाथाक भेटि ओनानीक छश्च आ जएि इम्हर उम्हर भटकएि ओ हमर स्मरण दोष आ जान के ग्रहण करबाक दोष थिक।

राजसीन केर मंडोरिमे राणि आ मंदोदरीक थ्रीहः लोक इथीहास

केर मूयिआ अमूयिपमाण

डॉ. कल्याण कुमार चरिणी इथीहासक पैघ श्रिदान छथी । कला इथीहासमे श्रनकर PhD हाश्रियथीश्रिदालयसँ ओम्कारेशरपर छथी । ओरछा आ अनेको आश्रयोर्लोश्रिकल साइटपर बहुि महर्तपूणयकाज केने छथी । सफल आई.ए. एस. अथीकारी रहल छथी । भारि सरकारसँ सश्रि केर पदसँ श्रटायर केने छथी । अपन कला पेम आ श्रिदीक कारण डॉ. चरिणी इंश्ररा गांि मानि संगहालय भोपाल केर श्रदेशक; इंश्ररा गांि राष्टीय कला केर, श्रल्ली केर सदस्य सश्रि; नेशनल म्मूश्रयम, श्रल्ली केर महाश्रदेशक आ नेशनल म्मूश्रयम इंश्रटवयूट ऑफ आटयश्रस्टीरी, म्मूश्रयोर्लोजी ,आ कॉन्सेश्रान केर रिईस चासलर ; NEUPA केर रिईस चासलर; श्रल्ली श्रिरासि संसनि, श्रल्ली केर चीफ; आ लश्रि कला अकादमी केर अध्क पदके सुशोश्रि क चुकल छथी । डॉ. चरिणी सौम्य, मृदु आ सहज लोक छथी । ई अपना आपके श्रिदान मानैि छथी पशासक नश्र । गुफा श्रतकलाके िजाश्रकी, उदि, श्रिकास, खोज, शोि आश्रपर बहुि गंभीर आ श्रिसृि काज केने छथी । लोक आ जनजाीय कलाके सब पक्पर काज करबाक पबल इच्छा छथी ।

हमरा श्रनका संगे बहुि काज करबाक असिर भेटल अश्र । श्रनका संगे नालंदा, छतीसगढ़, असम, अरणाचल, मथ्रापुर, श्रध्रम, श्रजोरम, मेघालय, नागालैंड, श्रपुरा, महाराष्ट्र, बंगाल, आश्र शोि कारणे रहबाक आ भमण करबाक मौका भेटल अश्र । श्रनकर श्रजासा अनैि छथी । हमेशा अपन डायरीमे जानकारी लेि रहैि छथी । कहैि रहैि छथी जे भाि इथीहास, भाि भूगोल, लोक इथीहासके श्रना भारिके नश्र बुझल जा सकैि अश्र । श्रनका संगे ककि सै सेश्रनार, किश्राप

आश्चर्यके आयोजन केने छी सेहो पूणयबौध्दिक सर्तितिके संग ।
 एक बेर एहने पयोजनसँ 2001 मे जोपुर गेल रही । ओहि एक
 एहेन सीन भेटल आ एहेन जानकारी भेटल जे एक बेर लोकमे कुनो
 मूयिसंरचनापर किकि अमूयिकहि एहि लोकइश्तीहास केर परनि बन्ना
 जाइ छैक सेहो धीलकण निश्चपर सोचबाक लेल बाध्य केलक ।
 अगर हम कही जे हमरा संगे लंकापथी राणि केर सासुर आ मंदोदरी
 केर नैहर चलु, हुनकर श्रीहिमण्डपके देखु, कुलदेवीके दशम कए
 निग होउ कि केहेन लागि? अन्तमे सपना जका ने? मुदा दृष्टान्ति
 अछि एहने सन अछि । पामाथाक आ अपमाथाक अलग बाँछैक,
 कश्चा लोक इश्तीहास आ आख्यान केर जाल केर अमाण देखु । एक
 संगे राम आ कृष्णके एकसँ हिंदीपर अलग अलग कालखण्डमे श्रीहि
 केर कहि आ अस्मदर्थ देखु । हमरा लेखनी संगे अहुँ याता कर ।
 नीक लागि ।

घुमबाक आ जानकारी विशेषरपसँ लोक इश्तीहास केर संकलनके
 दृष्टि कोणसँ अनेक बेर राजसीन जाइ रहै छी ।
 राजसीन जेबाक अयिभेल सास्कृतिक धीरासहि केर गभये जेनाइ ।
 एख रिरा केर मूयिआ अमूयिदुनू सास्कृतिक सम्पदा पदेश केर
 गौरपूणयइश्तीहास केर साक्षी अछि । चप्पा-चप्पा रिरि रिर पुत आ
 रिरागना केर पदचापसँ अस्ममंशहि अछि । राजा आ पजाकेर मध्य
 नीक आ अलिह अनेक कहि अस्मि अछि । ई मीरा, महाराणा पतिप,
 अरम आ नेरा केर रिरि अछि । ई ओ रिरा अछि जयि केर क्ताणी
 आ अन्त मञ्जला अपन इज्जति आ आन, बान आ शान केर रक्त्रक
 हेतु सै सै केर संख्यामे आत्मदाह अहि सामूहिक जौहर क लेलथी ।
 अपना आपके अर्बै अन्तमे समर्थि केख मुदा आरति के अपन
 शरीर किके हाँ नञ्च स्पशयकर देलअ ।

राजसिनीके कुनो भागमे जाऊ, अछु ने अछु महत्पूणय इन्दीहास, परंपरा, केर भान भेटि, गढ़ आ गढ़ैया भेटि, दनमनायल हली भेटि, राजाक की भेटि: की पजात्सिलीके ि की आरंकुशिके। मुदा भेटि जर र।

जोपुरके बागलमे मंडोरि नामक एक बहु पैघ पाचीन नगर छलैक। खरल खंडहर, पसरि अशेष एख बाकिे साकी छैक। अगर सिनीय लोकक बाकिे शिशास करी ि 24 कोसमे ई नगर व्यापि छल। कीक महल उल्टा लटकल जका लागि। अगर ध्यानसँ देखब ि ऐना बुझना जै जेना अयोध्या पूराके पूरा नगरके उलटा लटका देने होइक। पश्चिमे पश्चिमे बुझा जै जे जर र बहु रहस्यसँ भरल नगर छल है ई खंडहर। पूरा खण्डहर जेना बहु पैघ रहस्य अपना गंधे नुका क रखने हो? खैर! एक बहु बुजुगयमश्वलासँ भेट भेल। ओ कहली : "बेटा, काई फोटू लेँ है , आखी नगरी ही उलटी पड़ी है।" (बेटा, की कोनो फोटो ल रहल छी? ई ि समसि नगरी उलटा छैक"।)

बा बहु अज्ञात रहैक। ऐना मोनमे अजासा भेल जे जौ अयोध्या सिनीय आदमी एखपर अछु कहै। एक युकि भेट भेल। ओ कहलक कुनो खास बा निश्च छैक। अचछोलाँअसस आ पागइन्दीहास एखपर मौन अछु। शायद अयोध्या सिनीय लोक अछु बनि पबथी। एबिमे एक बुजुगयएला। करीब 80 षिक। पारि देह। गोर पिपि। अजासाके देखै कहला:

"हमर अमिह अछु एख शांति आ दनमनयाल खण्डहरके गूढ़ रहस्य आ इन्दीहासके बारेमे कहने छला। अगर अहा लग समय हो आ सुनबाक िययहो ि हम बनि सकै छी।" हमरा ऐना लागल जेना सब अछु भेट गेल। हम झट दख कहअयअ : "जर र, अपने

कहल जाओ। हम अपने सनहक लोकक लाश करै रही।" आब बूढ़ा एक पारिपर बैस कहनाय पारम्भ केला:

आईसँ साहि हजार पाच सै षियपूयिलंकापथी राणि अही सीनपर आश्व मंदोदरीसँ श्रीहि केला। मन्दोदरीके सीनीय लोक मंदोरी कहै छै। श्वनक थिक नाम छल आमंदूजी। ओही नामसँ एश्व सीनक नाम मंडोरि पड़लैक। एकटा 10 खंभाके चौर श्वश इशारा करै ओ बुजुगय कहल आ "यैह थिक ओ सीन जयि राणि आ मंदोदरी केर श्रीहि मंडप केर दिदी छलैक।" ठीक ओकर बगलमे पारिक कलात्मक भव्य आ उत्क्रीणयिण रहैक जे आब खण्ड-खण्ड भेल छैक। हालाश्व एक बेर एकरा देखलासँ सुश्रीजन सहजश्व अनुमान लगा सकै छै जे ई श्रीहि कक शही ठाठसँ भेल हैक आ ऐशयके पीक छल हैक। कक काश्वगर आ कलाकार राश्व-श्वन एकर आमाणमे लागल हैक। बेजुनि पारि जेना अपन इश्वहास केर गां सुनबै हो।

आब हमहु बुजुगयक के कहल सब बां के पारि संगे जोड़ै लगलौ। अदुि अनुभि। अदुि आनेह। राजसीनके इंच इंच रिीसँ पुनः आश्वक लगाहि होम लागल।

आब बुजुगय एक ऊंच महलपर ल गेला। कहल आ जे ई धर्सि महल 24 खण्ड केर छलैक। दूमहलमे श्रीभर्क, 12 खण्ड ऊपर आ 12 खण्ड आचा। आचा खण्ड केर लिघर एखनो बाचल छैक आ सुरश्व छैक।

समर्सि भनि आ दुनु खण्ड केर हरेक श्वस्सामे सुरज केर पि इजोकि संग सिआि रँसि श्विलेशन केर गजब कसि छलैक। आचाके हिलखानामे गुर्पि सीनपर खजाना सेहो बनल रहैक। एक हिलखानामे पि पूराके पूरा मंश्वर दबल रहैक। मंश्वर केर देबारपर

रंगश्रीरंगक उत्क्रीणयआकृषी एखनो मनोहारी लाश रहल छलैक ।
 तिम्रशाणि ओझ सनि लग गेलहुँ जयि राजघराना केर पुरष रहै
 छला, स्तीगण रहै छल । कुलदेीकेर डीह केर दशम भेल । श्वना
 कुलदेीके श्रीश्रीणि पूजा अचमके घरक कोनो स्तीगण अणि पुरष
 भोजन नञ्च करै छल । मंदोदरी केर महल देखल । बुजुगय सब
 सनिनक एक टूथस्ट गाइड जका श्रीसीरसँ जानकारी द रहल
 छलाह । एक एक शब्द नापल ने कम ने अधिक । पूरा संतिष्ठा ।
 बुझना ऐना जाइ छल जेना राणि आ मंदोदरीके श्रीहिक पुजेगड़ी
 यह होश्री !

भनि आमाण कला उत्तम बुझना गेल । ओझ समयमे आश्चर्येकर केर
 सम्मर्नमे ओकि जानकारी नञ्च छल िञ्च कोनो स्कूल अणि
 स्टाइलसँ जोड़बामे असमयिरही । फोटो बहुि सुनर नञ्च छल । जे
 छलो से समार्पि भ गेल । स्मरण शेष अञ्च । हिं श्वख रहल छी ।
 गढ़ल मुदा टूटल आ छि श्रीछि पारि केर हरेक भाग जेना अछु
 कहै छल ? पञ्चल बेर भेल जेना पारि बजै हो । मुदा जोरसँ नञ्च,
 कानमे नहु-नहु । फेर भेल, जे जकर श्रीखण्डि पारि केर ढेर अकि
 बजै छैक ओकर साक्त्रि सरिप केहेन हैकि ? मोन ि करै छल
 जे इश्रीहासके कान पकञ्च पाछा क ली आ सब बाि देख ली, छू
 ली, बुझ ली, आ श्वख ली, एक साक्त्रि पत्तकदशीके र पमे ! मुदा
 इहो बुझल अञ्च जे ई सपनेटामे संभि अञ्च ।

बुजुगयदेखेबो करश्री आ श्रीशद णिम सेहो केने जाश्री । हुनकासँ इहो
 जाि भेल जे राणि जकि लिशाली छल ओबि घमण्डी सेहो । राणि
 समस् ि संसारके अपनामे समेट लेबाक पण केने छल । अहंकार
 ओकर अपन सीमा लाश्व लेलकैक । अकि जे राणि अपन ससुर
 मेदूजीके सेहो कञ्च देलकश्च जे ओहो ओकर अश्रिनस् ि भ जाश्री ।

जाश्चि कुलसँ शेष मेदूजी भला एश्च पसीकि के कोना सीकार क सकै छला? अपन जमाय राणिके सम्मानपूर्कि मना क देलश्चिन। राणि छल यिहीन। रीसँ कापे लागल। कुश्चि भेल रिं अपन भाय कुम्भकरण आ पुत मेघनादके बजा पूरा नगरके उलश्च देलक। धसि क देलक। िश्च आई ओई खण्डहर उलटा अश्च। चँरी लग रानीमहल, जनाना महल आश्चक जीणयअशेष देखल। अछु घर केर कमरा सब एखनो अनेक रिहक कलाकारी केर बेजोड़ गांि कहै छैक। रंग आ र पश्चिन्नास आईओ ओश्चना छैक।

संयोग नीक छल। हमर सूचनादांि बुजुगयसंस्कृि आ इश्चिहासक नीक जांि छला। हुनकर ई मानब छलश्च जे जनमानसमे पाचीन इश्चिहासके सटीक जान नश्च हेबाक कारण बहुि अनयिभ रहल अश्च। हरेक बाकि श्रिण इश्चिहासमे नश्च अंश्चकि अश्च। कुनो राजकीय सुखसँ संपोश्चि इश्चिहासकार मंडोरि केर इश्चिहास अ्यैक श्चखै? इश्चिहासकारके श्चखक हेि के पैसा देकि? के ओकरा भग्नाशेष केरगश्चि सिल इश्चिहासके पोर-पोर खोइछा छोड़ा क कहै? िश्च बहुि रास बांि, रहस्य, आश्च कालके गालमे अंि मंडोरि केर श्रिशालकाय चटानमे िश्च क समांि जका भ गेलैक। ककि दबल अश्च आशमे छैक जे उत्खनन कए अ्योक थिक्के उजागर करि। मुदा कश्च नश्च कश्चयो ई रहस्यसँ समाज आ श्रिदान गियलाभाश्चि हैबो करि की नश्च???

हमरा लोक आरई-आँगन, सभा मंडप हश्चिसार, घोड़सार, दासीगृह, आश्च सब अछुके अपना आँश्च आ बुजुगयकेर ऐश्चिहाश्चक अ्य आँश्चसँ देखल, हुनकर अभूिपूयिणीसँ सुनल।

श्चजासा भेल जे बुजुगसँ राणिके संबंिमे आ लंकाके बारेमे जानकारी पांि करि। पुछलापर कहलश्च: "असली लंका ि अिह समुरमे

डूबल अश्व । ओश्व लंका केर एक कोण श्रीरपथी बालाजी छथी । लंकापुरीमे राम 100 योजन केर बान्ह बनने छला । श्रीरपथी हि सानि अश्व जयि राम आ श्रीभीषण केर भेट पश्चल बेर भेल छलअ । एश्व मंडोरिमे आचामे 3 सुरंग छैक । एक अयोध्या, दोसर लंका आ सिसर दारका जाइ छैक ।

बुजुगयएक मारक बाँ कहलथी: "शीमान, ककर ध्यान छैक अश्व पुरानि रोहर अस्? सब श्रीनाश केर पश्च यामे मग्न अश्व । आ ई जे जोपुरि नगर देख रहल छी ओकर बहु भागक आमाण एश्व केर अशेषसँ भेल अश्व । नश्रीमाण लेल पुरानिके सब संहार क रहल अश्व ।"

एक बाँ बुजुगयजे कहलअ से रीरेक आँ आ शंशय दुनुके जन्म द देलक । ओ बाँ ई रहैक जे बुजुगय अस्साबे आईसँ करीब 3000 धियपूयिशीकृष्ण सेहो आँ आश्व अपन श्रीहि केने छला । से कोना? ई श्रीहि भेल छलअ कृष्ण आ जामाँके बीच । दरअसल ई श्रीहि ओकि योजनाँ रीकासँ नश्व संपन भेल रहैक जेना राणि आ मंदोदरीके समयमे भेल रहैक । अजुम संग कृष्ण मथा किँकिँ एँ आश्व गेल छला कारण जे ओ मथा जामाँ लग छलअ । जामाँ मथाके महत्तिसँ अनजान छली आ ओकरा कैचा बुझ खेल खेला रहल छली । कृष्ण जामाँसँ ओ मथा मागला । एश्व बापिर जामाँ केर थि गम्भीर होइ कहलथीन: "हे केशि, हम ई मथा अहाके द देब' चाहै छी, मुदा एक शयिअश्व? अगर अपने एश्व शकि सँकार क ली ि मथा रि भेट जै." कृष्ण कहलथीन: "अहा अपन शयिकहु । हम सँकार करब ।"

कृष्णसँ असीसन पाश्व जामाँ केर थि बजला: "मथा ि हम रितेद' देब परं मथा सँग अपन पुती जामाँ केर हाँ सेहो

अहाके हाहिमे सुपुदयकर चाहै छी अहाक अतिथनीके र पमे ।"

कृष्ण त्रिं जामाहिं केर थिक आदिनके सीकाथ लेलआ आ अश्व
रिहे ओही थन ओही सलिपर कृष्ण सडे जामाहिं केर थिहि भ
गेलआ ।

अकि जानकारी पापि करै-करै 2 घंटा लाथ गेल । पि नश्व
चलल जे समय कोना बीं गेल । सब जानकारी रश्चकारक आ बहु
हद थि पामाथाक सेहो भेटल । अंहीन पश जे मोनके परेशान केने
अश्व ओ ई थिक जे एश्व टूटल पारि, भनि, अटश्वका, आ सनिने
रहस्य कोना खुजि????

हम सोभा आ कमझँ परम्परादि छी । परम्पराके मानबो करै छी आ परम्पराक सम्मानमे अखबो करै छी । परम्परेमे जीर्णी रहलौ अछ । परम्परामे बहु नीको बा सिभ अछ किरा बारेमे लोकके जागि सेहो करै रहै छी । परम्परा आ पकृषीमे सामंजस्य देखै छी । मुदा परम्पराक पालन, पशंसा आ लेखनमे साकाक सेहो रहै छी । परम्परा जे लोक श्रीरि नञ्च हो, परम्परा जे शंसक नञ्च हो, परम्परा जे केकरो शोषण अरि दोहनक पुञ्च नञ्च करै हो, एह परम्परा अनुकरणीय परम्परा अछ... ।

जखन परम्पराके अमान्य पक्कर अक्यो बा करै अछ रि ओकर श्रीरो होइ छि । आ एक टटष शोर्गि अरि समाझक बेकीके एञ्च रिहक श्रीरो सहबाक लेल रियार रहक चाही । कनी सोचु, अगर राजा राममोहन राय सी-पिके श्रीरो नञ्च केने रञ्चि रि आई की अरि रहै ? कोना परम्पराक नामपर जीबै स्तीगणके हुनक पक्षीक संग अरिमे बलपूँक झोइक हुनका जरा देल जाइ छल ? आ लोकक सीमा केर जयकारक नादमे जरै मञ्चलाक ददग पीड़ाके दबा देल जाइ छल । अखनो जखन परम्पराक नामपर मृशानि पाबैने नरि श्रीञ्च मञ्चलाक ठेहुनके टेमीसँ दागल जाइ अछ रि हम इरिहासक गभि चञ्च जाइ छी । जञ्चया सी जरै छेली ! मुदा नचार भऽ परम्पराक समक अपने-आपके असहाय बुझै छी । छोटे सरिपर अक नञ्च, अपन श्रीरो अरि दरज करा लै छी । जखन हमर श्रीह भेल रि अपन मृशानिमे हम अकनको अपन पतीक ठेहुन दगबाक अनुमक्षि नञ्च देखैने । िडेक उपहासक पात बनलौ । स्तीगण सभ अक्यो 'मौअयाह' रि अक्यो 'घमण्डी' कहलैन । सुअ लेलौ, मुदा 'नइ' कञ्च देखैने रि नञ्चये करै देखैने ।

आब अबै छी छागरक बश्नदानक पतिपर । अपन अनुभक्ति अतिरपर कश्च सकै छी जे ई पति बडड नीक परम्परा नश्च अश्च । छागरक बदला कछु और कोहि हेबाक चाही जाश्चसँ एश्च पतिक अनि हो । उत्सवि, संस्कार विशेष र पेण दुगापूजा, कोहि-कोहि काली पूजा, उपनयनमे घरक कुलदेवि अति कुलदेविक समक क्ति बह सीन आश्चमे छागरक बश्नदान जेना मनके श्रीचक्षा किऽ देवि अश्च..!

एश्च बाकिे अपन जीनिक दू अनुभिसँ जोश्च कऽ देखै छी । एकमे नेना रही ई लाचार आ दोसरमे परम्पराक आश्चमे मा, बश्न, भाय लाचार कऽ देने छला । एक घटना पाबैन- दुगापूजासँ सम्बन्धी कि दोसर संस्कार- उपनयन-सँ सम्बन्धी अश्च ।

परम्प पति घटनासँ करै छी । नेना रही ई दुगापूजा सँ सावि मास पश्चनश्च एकटा छागर मा कीञ्च लेने छेली बश्नपदान लेल । भगिनि नामे राखल छागर बान्हल कम आ खुजल बेसी रहै छल । श्याद सबहक बाड़ी-झाड़ीक निमन रिकारी चश्च जाइ कि भगिनि नामक कारणे क्यो कछु ने बाजै ।

बहुि श्रियान राखल जाइक । पूरा बलन्ठ आ बोहि बश्न गेलैक ।

अनिः अष मी श्वन ओकरा हमसभ दुगासीन लऽ गेलौ । पूजा पाठसँ पश्चनश्च ओ छागर दोसर टोलक छागरसँ लड़ल । श्रंघसँ श्रंघक यु । हमर सबहक छागर जीनि गेल । जयकार मचलइ..!

आब ओश्च एकरंगी कारी छागरके पोखैरमे नहाएल गेल । गरदनसँ रस्सी हटा दूटा कबगर समाग ओकरा अपन कबजामे लेने रहला ।

नहेला बाद छागरके भगिनि लग लऽ गेला । पञ्चडिजी खगक पूजा कऽ लेने छला । महाभयानक खगय पैघ, रिगर, जिगर आ पलयंकारी! हम रही नि बारह षिक नेना । आब भेल जे एनि श्वनक

पोसल छागर बञ्च चञ्च जाएँ। आइ सभ अछु समार्षि। स्तीगण सभ गीँ गेबामे मग्न। गाममे एक पहलमान छला। लोकक कहब रहै जे हुनकापर साक्कि भर्गिँ सारि भऽ जाइ छैन। केहनो जुआएल छागरके एकेबेर-मे ओ रिसँ गरदनके अलग कऽ दै छला। खगयउटेबासँ पञ्चने भर्गिँक मुँ लगे एक पैरपर हाँ जोड़ने एक घन्टा ठाढ़ रहै छला। स्नान केलाक बाद लाल गीँ आ अनु सीअल सिँ पञ्चरने। जखन बाहर अबै छला हाँमे खगयलेने यमक सहोदर लगै छला। लोक सभ कण्ठ फाँ-फाँ "दुगा महारानी की जय" केर नादसँ हुनका आरो श्रिभत्स बना दै छल। ओञ्च जयकारक अजिमे छागरक अजि जेना श्रिलुपि भऽ जाइ छल!

खएर! पञ्चजि पूजा केलैन। मंत पढ़ला। फूल, अक्कि आ जल लऽ आजल छागरक ऊपर फेकलैन। छागर अहैर उठल। भूलाक गरदन श्लाबए लागल। कान पटकए लागल। सबहक मन खुशीसँ बहि। लोक अञ्चयाएल-

"छागर परीक लऽ लेलक।"

समसँ श्रिजयी मुश्कान। एकबेर फेर अजि भेलै-

"दुगा महारानी की जय।"

आब छागरके मन्थरसँ बाहर लाएल गेल।

भेलै ई जे दोसर टोलबला छागरके पञ्चने बञ्चदान पड़ै। बञ्चदान देमए-बला अपन हाँमे खगयलेने बाहर आञ्च गेला। लोक सभ 'जय-जयकार' करै रहल। छागर सभ कटै रहल। भर्गिँ लगे एक माय केर सनीन दोसर माय केर सनीनक सीद, आयु, उनक, श्रिकास लेल कटै रहल। खूनक रिर बहै रहल। छागरक

मेअयेनाइ जय-जयकार आ गीकि धश्चमे गौण होइ रहल...

हमर बाल्य-मन भश्च रासी कनै रहल। दुगा लग जा-जा ई पाश्चि
बेर-बेर गबै रहलौ-

"गे माय, िरा बेटाके खाइ केना नीक लगलौ?"

मन बेर-बेर असहाय छागरक काटल मुडीसँ बहै शोश्चकि स्मरण
कऽ रहल छल। लोकक जय-जयकार िहेन जेना बुश्च पड़ए कान
फाश्च दे। मनमे डर घुश्च गेल। स्तीगणक समर्ि गान आ दुगाक
भजन सोहनगर नश्च लाश्च रहल छल। घर एला बाद ओश्च छागरक
मौस बनल। ओना, 'मौस' कहैसँ मा परहेज केने छेली। कहने छेली
ई 'दुगाक पसाद' छी। श्चयादी पश्चिरिमे पसादक बेन बँटाएल। अपनो
घरमे रनहाएल। सभ खेलक खूब पेसँ खेलक। परसन-पर-परसन
लऽ कऽ खेलक। मुदा हम नश्च खेलौ। मा कहै-कहै रश्च गेली
मुदा हम नइ खेलौ।

आब दोसर अनुभवि श्चस चली। हमर पुत शशाक केर उपनयन हएब
श्चसश्चि भेल। श्चि छल, जून 2014 माने दू-अढ़ाइ साल पूयि
हमर कश्चया शाकाहारी छै। ओ श्चएक शाकाहारी छै िहिमे एक
बश्चपदानेसँ जुड़ल घटना अश्च। हमर पूनम माछ-मौस खूब खाइ
छेली। एकबेर-भाइक उपनैनमे-छागरक बश्च चढ़लै। ओहो अपना
आँश्चए देखलश्चन। अकि िभत्स लगलैन जे ओही श्चनसँ माछ-
मौस खेनाइ छोश्च देलैन। िबे नश्च, श्चनकर अनुकरण करै अपन
छोट बश्चन सेहो शाकाहारी भऽ गेलैन। ..जखन हमर पुत शशाक
माक शाकाहारी पृश्चिके देखलैन ि ओहो शाकाहारी भऽ गेला। हमरा
एश्चसँ कुनो समस्या नश्च अश्च। जे खाए चाहै छै खाि जे नश्च
चाहै छै नश्च खाि। मुदा एश्चसँ एक चीज ि सप्प भाइए गेल

जे हमर पती, हम आ हमर पुत िनू गोरे छागरक बश्मपदानक पक्मे साफे नश्च छी। खएर, संस्मरणके आगा बढबै छी। हमर गामक एक संस्कृतिक धीदान पथडि- राघनि झा श्रुल्लीक स्कूलमे श्राक्क छै। एिह हमर पुतक उपनयनक श्रन आश्रि केलैन। पथडि राघनि झाजी सयिं िषा छै। हम अपन समस्या हुनका समक राखल। ओ कहलैन-

“एकर उपचार छै, अहा श्रान्ति नश्च कर। जेकि ओजनक छागर छै िकि पसेरी श्रटाइ अि लडडू भगिीके आ बह सिनमे सेहो चढ़ा देयौ।”

हुनकर एश्च कोसिँ हम िनू परानी बडड पसन भेलौ।

दोसरे श्रन हम गामपर मा, भैया एि अन्म सम्मनीके उपनयनक श्रनक सम्बन्मि जानकारी दै सभ ियारी करबाक आदिन कएल। िसरे श्रन माक फोन आश्च गेल जे ओ पाचटा छागरक बेसि कऽ लेलीह। ई सुआि हमर माि पकैड लेलक। गृहयुकि पृष भूश्च बश्च गेल पश्चिरमे। मा अपना आगूमे केकरो टेरि नश्च, आ पती छागरक बश्च लेल ियार नश्च होि। पुत सेहो अपन माइयेक पक्मे रही...।

अन्ि: हम श्रम्मि करै मासँ आदिन केलौ-

“माँ, राघनि-गुरजीक कहब छैन जे जेकि छागर िकि पसेरी लडडूसँ काज चश्च जाएि।”

मा हमर कोि सुआि श्रकराल र प पकैड लेली-

“की कहै छी? अहा सभ आब देि-श्रिर सभके समार्पि करए चाहै छी? छोटकी काकी[1] मरैसँ पश्चने कहलैन ‘कैलाशक माय, सुनु हम आब नश्च बाचब। मुदा अहा श्रान्ति नश्च कर। हम भगवान

लग जा भगवानसँ लच्छ कऽ कैलाश लेल बेटा भेजब। अहा एक काज करब एकरा बदलामे अहा एकटा एकणियकारी-छागर अँगनाक भर्गीके आ एकटा एकणियछागर बह बाबाके ओझ बच्चाक उपनयनक समयमे चढ़ा देबैन। छोटकी काकी िड़बे धनमे मश्व गेली। आ हुनक पञ्चल बरखीसँ पञ्चने शशाकक जन्म भऽ गेलैन। श्वसैर गेलौ की?”

मा ई कहै फोन हमर भौजीके दऽ देलखिन।

आब भौजी शुर भेली-

“देखू बौआ! अहा दुनू परानी जे करब से कर। मुदा शशाक लेल कुनो अशुभ ठाढ़ नञ्च कर। बुझल अञ्च, हमर बाबा िषाि छै मुदा जखन छागर चढ़ै छै ि बञ्च-पदानक भूञ्चसँ एक ठोप रक् भर्गीक पसाद माञ्च अपना जीभसँ अशिय सटबै छै। मा ठीके कहै छै। छोटकी दाइ भञ्च अँगनामे शशाक लेल कबुला-पाि केने छेली। आसञ्चि र पसँ ओ भगवानसँ लच्छ कऽ शशाक अहा सभ लेल भेजलैन अञ्च। जे परम्परा अदौसँ आञ्च रहल छै किरा अहा सभ केना समापि कऽ देबइ! अहा मदयबनू आ बेटाक शुभकायकर। पूनमके बुझा श्वयौन जे हुनकर दाञ्च एए नञ्च गलैन। जहा कि छागरक दामक पश्न अञ्च ि कुनो बाि नञ्च। शशाक हमर सबहक बेटा पञ्चने अञ्च आ अहा सबहक बादमे। हम छागरक दाम दऽ दइ छी। एकर अञ्चिअर्क अहा सभ जेकि आटाइ, लडडू आ छप्पन भोग करब से कर। श्वयो ने मना करि।”

अञ्च रिहे माके ियार कएल श्विचारके भौजी ठोस भानिात्मक अरि दऽ देलैन। सभसँ पैघ बाि ई जे अपन बाि कञ्च भौजी श्वनु हमर बाि सुननञ्च फोन काञ्च देली। हम चाञ्चयो कऽ अपन पती लग ई

बाँ नञ्च बजलौ, मुदा रणभूञ्च युँ लेल ियार भऽ चुकल छल। ओही ञ्चन राक्षीमे मामाक फोन सेहो आएल। कहलैन-

“बौआ, कुनो एहेन काज नञ्च कर जइसँ बञ्चनके अहाक थिकि कमी अनुभूँ होञ्च। ई हुनकर अञ्चमि पोकि उपनयन ञ्चएन। अही लेल आइ िञ्च एकादशी यजक उदापन नञ्च केली। अहा सभ जखन अपन पोकि के उपनयन करब िँ जेना-जे इच्छा हएँ सएह करब। िबेँ िञ्च ने बञ्चन रहँँ आ ने हम। आँ घन्टा िञ्च फोनपर कनैँ छेली। हुनका अञ्चष केर आशंका भऽ रहल छैन। हमरा कहै छेली जे जञ्चयासँ कैलाशक ओञ्च पञ्चरिमे श्रीहि केला, िञ्चयासँ सभ संस्कार ञ्चसरने जा रहल छैँ। अगर छागरक बञ्चपदान नञ्च हएँ िँ हम कुनो आर गाम चञ्च जाएब। घुञ्च कऽ ऐ नगमे पँशि नञ्च करब। मरला उत्तर हम कैलाशक थिके की कहबैन जे िमाम मयादाके सञ्चिाश कऽ हम आञ्च रहल छी! आब ञ्चसर अँँ अहाक थि नञ्च छैँ िञ्च सम्मनमे शेष रहबाक कारण हमर ई उत्तरदाञ्चर्ति होइँ अञ्च जे अहा सभके उञ्चँ रसी देखाबी। अहा हमेशा अपन माँ-थिकि आजाकारी रहल छी, कैलाश। कम-सँ-कम ऐ उपनयन िञ्च ई परम्पराके कायम राखू। रहल कञ्चयाक पश्न िँ अहाक मामी कहँ छैँ जे ओ अपन पुँहु अँँ शशाक केर मायके समझा-बुझा देखैन।”

ऐँक बाँ कञ्च मामा सेहो अपन फोन ञ्चना हमर बाँ सुननञ्च काञ्च देलैन! हमर माँ भारी भऽ गेल। ब्लड-पेसर बञ्च गेल। माँ घुमय लागल। आँञ्चक आगू पूज्य थिजी आञ्च गेला। होइँ छल जे अगर थिजी रञ्चँँ िँ अँि हमरा भानिके बुञ्चँँ...! मामा आ भैया िँ एक नम्मर-के पुरानपँँ छैँ। थिजी हमेशा शामे साढ़ दागबके श्रीरँ करै छला, श्रीरँ छला। मुदा जखन ओ मरला िँ

मा आ मामा अद ठाअ देलैन जे अखोदसगयशा आ साढ़ दागब अआयिय मा कहली जे हुनका पश्चिरमे केकरो अइक अना शा नश्च होइ छैन। भानिमे बहै मा कहली अगर हमरा अछै अहा सभ अपन अि लेल ई नश्च करब ि हमर की करब? अन्मि मा आ मामाक अदक आगा नमिसकि होइ हम साढ़ दगबा लेल ियार भऽ गेलौ। एअ पकरणमे भैया सेहो जूमक-जूम मिाकुल खाइ रहला आ मुडी डोला-डोला मा आ मामाक हँ-मे-हँ अलबै रहला।

आब भयसँ कण्ठ सुखा रहल छल। परम्परा हमरा परासि कऽ रहल छल। सभ अाक, सभ कियरिशायी भऽ रहल छल। भानि जानके धसि कऽ रहल छल...! भेल कनी पाअ पीबी। पाअ-दे पतीके कहए चाहल्यैन अ अचचेमे भैयाक फोन आअ गेल। नश्चयो चाहै फोन उठा लेलौ। 'हेलो भौया!' कअि मारि भैया दुषाक रौदयर पमे आअ गेला-

“ई की भेल! हम अि घन्टासँ फोन कऽ रहल छी आ अहाक फोन कसि जा रहल अअ? अहा सभ हरेक चीजके मजाक बना देने छी!”

हम कनी झल्लाइ मुदा अिनम भाि भैयाके कहल्यैन-

“भैया, हम मामासँ गप्प करै रही। हुनके फोन ऐल छल।”

ई बाि सुअ भैयाक मिस िड़ेक शानि भेलैन। फेर शुर भेला-

“बौआ, एकटा बाि मोन अअ। जखन अिजी दरभंगासँ पटना लऽ जएबाक र ममे रसिमे अपन अअमि सास लेलैन ि हम अहाके की कहने रही?”

हम जीब अयैन अ ओइसँ पअनअ ओ सयिं बाजए लगला-

“हम अहाके कहने रही जे हमर थि मरला अश्च, अहाक नश्च।
आईसँ अहाक थि हम छी। कहू कहने रही की नश्च?”

हम बजलौ-

“हा भैया, अहा कहने रही। आ सैह मयादाक पालन अहा एखन शि
कऽ रहल छी।”

भैया दम्माक रोगी छै, ई जोर-जोरसँ हकमबो करै बजबो करै-
“आब अहा कहू, जे हमरा रहै शशाकक उपनयनक अन्त किए-
बला अहा के?”

भैया भानिमे कनबो करै आ बजबो करै-

“फेरो, केना करक अश्च, की करक अश्च। केहेन भोज करक अश्च,
इत्याश्चपर अहाक की आणय? ई आणय ई हमरा लेबाक अश्च। अहा
राखू अपन पाइ। हम करब शशाकक उपनयन। मा अन्त भयसँ
अन-पाश्चा श्रियागने छै। बुझल अश्च अहाके? सुनू, अहा सबहक
खटराग नश्च चलि। मा ई पाचटा छागर अन्तली अश्च। हम पाचटा
आरो कीनब। देखै छी हमरा के रोश्च लै अश्च? कश्चायाके कश्च
अयौन जे अपन सभ आयम अल्लि-मे राखै। एयि हमर आयम
चलि। ऐ घरक मुखिया थिजीक पछाड़ि हम छी। आर अयो
नश्च। अहा सम्मनमे हमर छोट भाए जरर छी मुदा हम अहा के
कश्चयो अपन पुतसँ कम नश्च मानल अश्च।”

भैया ई बाि सभ कनै कहै रहला आ जखन अपन बाि कहल
भऽ गेलैन ई फोन राख देलैन।

हम पलयमे पश्च गेलौ। करी ई की करी? अंकयिमीमूढ भेल
अछुकाल ठाढ़ रहलौ। मनमे उठल- आब पतीके की कहबैन? ओ

“छागरक बक्षपदानबला बाँ लेल अकनहुँ ियार नञ्च हेँी!

“दुःख हरहुँ दारकानाँ शरणमे िरी..।”

अही गुननिमे पड़ल रही, अ एबिमे हमर सासु आञ्च गेली, हमरा सभसँ भेट करबाक हेँ। हमरा लग अञ्चि बजली-

“की असरजी, कुनो अन्निमे छैँ की?”

हम चुपे रहलौ। फेर ओ हमरा अपना लग बैसा सभ बाँ पुछए लगली। हम सभ बाँ बँ देखाएन। ओ कनी गंभीर भेली, कारण हमर पतीक उग सोभासँ ओ पञ्चअँ रहबे करैँ। फेर आणयक मुरामे अबैँ बजली-

“असरजी, ओना हमहूँ बक्षपदानक धीरोँए छी, मुदा अन्नकर पञ्चरिक लोक सभकेँ अयो नञ्च बुझा सकैँन। ई अन्नि जुआ करौँ, हम पूनमकेँ समझा दइ अछे।”

हमर सबहक बाँ चञ्चए रहल छल अ हमर मामी हमर पतीकेँ फोन केलथीन। आब हमर मन घबराए लगल। भेल आब भयंकर कलह हएँ घरमे। ईहो डर छल जे पूनम ने कही िमसमे हमरा मामीकेँ अछु अन्ट-शन्ट बाँ कञ्च दआ!

..खएर, सासु हमर भानिकेँ बुझ गेली। ओ पूनम लग जा हाकि इसारासँ कहलथीन जे शान्धीसँ गप्प करैँ...।

मुदा आशाक धीपरीँ मामी जनु पूनमे-सन बाँ बजली। िथ ई कहलथीन जे हमर नैहरमे बक्षदान बन्द भऽ गेल अछ। मुदा मामा सभ एञ्च बाँकेँ कखनो मानैले ियार नञ्च। िपर मामी पूनमकेँ बुझबैँ कहलथीन-

“की करबैँ कआया, दीदी आब की अन्न रहँ। हुनकर बाँ माआ

जाउ। अहीमे बच्योके आ अहूँ सबहक कल्याण अशु। नशु ि ओ सभ पाहुन-परक लग यएह बाकि चचा करै रहि।”

पुनम छेली अन्ि: एक माए। ई सोचै जे बच्चा के उपनयनमे कुनो अगिह नशु हो मामीक बाि माशु गेली।

जखन उपनयन पारम्भ भेल ि घरक भगिी लग छागरके जाबे कि परीक भेलै िबे कि हमर पती, पुत आ हम रहलौ। घरक सभसँ पैघ हेबाक कारणे भैया लाल िी पशुरने भगिी-पूजा लग हमरा संगे बैसल रहला। श्रीजय पापि केलैन आ बशुपदान अन्ि: भऽ रहल छेलै ऐ बाकि आशुसक संिषु छलैन। आभा मण्डल जीकि घमण्डमे चमकै रहैन। शरीरसँ श्वन भेल मा सेहो बड़ आहाशु छेली। भौजी कण्ठ फाशु-फाशु स्तीगण सबहक-संगे गीि गाशु रहल छेली। माक संग-संग हमर दुनू बशुन सेहो उत्साशु छेली। माके आ भैयाके आब हमरासँ कुनो शुकबा-शुकायि नशु छलैन...।

असुि, एकर श्रीपरीि एकर ‘हम’ हारल, िकल, लगै रहि। एकि पैघ उत्साि मुदा आनन्द नइ लऽ पबै रहि। खचाखच भरल भीड़मे असगर...! मुदा संिषक बाि ई छल जे सशुखन िमसे घोर रहैबाली हमर ‘पुनम’ आइ एक माटुिक सीतम उदाहरण पसुि करै एकदम शानि छेली। सभ श्री-बेहारके ओही रिहे पालन कऽ रहल छेली जेना हमर मा, हमर बशुन आ आँगनमे उपसुि बुढ़-पुरान सभ आदशुि करै छेलश्वन।

जेना शुक पशुनशु आिशि रहै, जखने बशुदानक समय एलै शुक हम सभ ओएसँ हशु गेलौ।

दू श्वनक बाद मा कहलैन-

“थपही बजबै शशाक, शशाक केर माि-थि आ पशुरिक सभ

सदस्य बह सीन जाएब । आ बह बाबाक पूजा अचसा हेन आ ओतो जोड़ा छागर चढ़ी ।”

हम सभ हुनकर आजाके मानै श्रिदा भेलौ । पूजा अचसाक पछाड़ि, जखन छागरके बस्त्र चढ़बैक सुरसार भेल, खिने हमर नेन-कालक अत-पण्डित कहलैन-

“कैलाश भाइ, अहा ठाढ़ रहू ।”

हमरा मनमे उठल, जखन सभठाम हाथ माझए लेलौ । ई एही अपना-आपके समपण कऽ देलौ । पञ्चल छागर ई एकेबेर-मे कष्ट गेलैक मुदा दोसर छागर बेरमे-जइ छागरके रस्सीसँ गरदैन गनिल रहइ-गरदैनक रस्सी टुट गेलइ । आब अहि गरदैन काटल छागर दौड़ए लगलै । शोकाकि गिर फुचका जका बहए लगलैक । बहुति श्रिभक्त दृश्य भऽ गेलइ । पछाड़ि लोक अम्मा केलेक । छागरके पकड़ि खगसँ ओकर गरदैनके रेखि बस्त्र चढ़ौल । बस्त्र देबए-बलाके गिरी आ सौसे देह छागरक रक्खिसँ रंगा गेलैक । मुदा ओ एख बासिँ पसन छल जे बस्त्रपदानक बदलामे ओकरा जोड़ भस्त्र लाल गिरी आ 101 टाका नगद भेटलैक ।

अपन मन घोर भेल छल । अपन कायरगिर मने-मन पशागिर होइ रहए । सभ आकर, सभ जान, सभ सेअनार आ पञ्चक भीड़मे बजबाक क्रमि सुडडाह भऽ गेल छल । मनमे ई जरर अबै छल जे एकि श्रिशि केना भऽ गेलौ हम? मनके कुनो कोनमे अकल दुष जेना बेर-बेर हमर पौरष आ अणय-क्रमगिर अटहास कऽ रहल हो..!

असि, आब बुझैमे आब रहल अख जे राजा राममोहन राय सन समाज सुगिरक बनब किक दुष्कर काययअख । जे समाज हमरा एकटा बस्त्रपदान सन पिके, समाज पश्चिगिर ई दूर अपन बेटाक

उपनयनमे नञ्च समाप्ति करए देलक, एहि समाज 19म शदीमे केना राजा राममोहन रायके सौ-पति सन शिशाल पतिके समाप्ति करबा लेल जनजागरण करए देने हेन? केना परम्परा, मित्रति आ पुन्यक मोहजालमे पुरुष पतिन समाजके श्रियानमे रखै जीर्ण स्तीगणके मृति पञ्चिक संगे ओही श्रामिमे बैसा, सुन्दर लाल-पीयर अऔही नुआ-अंगी-लहठी-गहना पञ्चरा; लाल अन्नदुरसँ माग भञ्ज अञ्जामे जरा दै छल! ई पूण्य भेल की नृशंसि? ई सोहायनक सम्मान भेल आश्चर्य मातृशक्ति अपमान? ई सभ्य समाजक कृत्य भेल आश्चर्य हत्याराक अपराध? चिारी स्ती केना जीबै जरै छल हेन? आ लोक सभ सौ मातिक गीक जय-जयकारमे केना हुनकर रंदन आ दिनाके समाप्ति कऽ दै छल हए! कहल जाइ अञ्च जे राजा राममोहन रायक जेठ भौजी हुनका पुत्रलिप्ता मानै छलैन। जखन हुनका पति चललैन जे ई सौ-पतिके समाप्ति करबा लेल आन्दोलन कऽ रहल छै आ अइक श्रि अंगेजसँ अञ्च कऽ कानून पास करबा रहल छै कि ओही अन्नसँ ओ राममोहन रायसँ बाँची बन कऽ देलैन। अपन पुत्रि देओरके घृणा करै लगलै। आ ओहू अञ्चिक सामना करै ई महापुरुष अपन संघर्षे लागल रहला। सौपतिक अमानि रद अन्ति: टुटल, समाप्ति भेल।

अगर 'सौ-पति' गल छल कि 'छागरक बक्षपदान-पति' सेहो गल अञ्च। एकरो समाप्ति भऽ जएबाक चाही। किक लोक ई कियदै छै जे अञ्चला तिक केन्द्र रहल अञ्च। एका लोक शक्ति उपासक छै। की एहि छागरक बक्षपदान उञ्चा अञ्च? ओना, किक लोकक ईहो कियछैन जे अलसी, कलकी, मुम्बई आश्च महानगरमे बुचरखानामे श्रिभत्स दृश्य होइ अञ्च, छागरके काश्च कऽ दोकान सभमे उघारे टाश्च कऽ लोक रखने रहै अञ्च। ऐ सभके

श्रीरोहि ऋएक नश्च होइहि अश्च । अगर से नश्च ि भर्गीहि घर,
बह सीन, मन्श्चर पश्चसर आश्चमे बश्चपदानपर श्रीरोहि की लेल?

हमर बहुि अत सभ सेहो हमरासँ नाराज छैि जे हम एश्च बाकिे
अनेरे पचार कऽ रहल छी । अछु लोक आ अत सभ ि हमरा
श्रीमी कहैि छैि । बहुि लोकके नश्च बुझल छैन जे परम्परा आ
हमरा मध्य सास आ शरीरक सम्मर्न अश्च । हम पश्चि अन् पूजा
करैि छी, देि पिण, ऋश्च पिण आ अर्पिण करैि छी । मुदा
हमरा ईहो लगैि अश्च जे मन्श्चर पश्चसर, भर्गीहि घर आ बह सीन
आश्च साश्चिअक सीन श्रीक । ओहि कुनो रिहक बश्चपदान नश्च
हो । बदलैि समयमे लोक िहि पश्चरनाइ छोश्च देलैि, बहुि स्तीगण
सभ सेहो आब उत्सा इत्याश्चमे मात साड़ी पश्चरै छैि, घरही लोक
मुगाक मौस खाइि अश्च, पीयाउज, लहसुन सहरगंजा भऽ गेल, एश्च
सभ कमय लेल मिय अहाके अछु ने कहैि अश्च मुदा छागरक
बश्चपदान छोश्च देलासँ अहाक मियभष भऽ जाएि ! अहा पापक
रसी अ्स चश्च पड़ब । िह रे सोच ! जेकि माछ, मौस खेबाक
अश्च खाउ । के मना करैि अश्च । मुदा पश्चित पश्चसरके रक्मिय
नश्च बनाउ । भऽ सकैि अश्च नर बश्च पकिे समार्प करबा लेल
छागरक एि अन् जीि केर बश्चक पकिे पारम्भ भेल हो । आब
ओकरो बन्द कर । छागरक बदला बेल, कुम्हर आश्चके पकिे रपे
बश्च पश्चि अश्च । होबए अ्यौक । ओकरेमे आरो नीक श्री-श्रीन
जोड़ू । नागा जनजाश्रीमे अछु षियपूयिश्च नर-बश्च केर पकिे छेलइ ।
नागाक हेड हंटर अिि अ्सरके अ्चकारी कहल जाइि छेलइ । नागा
आब अपना मे सुारि केलक आ ऐ पकिे समूल समार्प केलक ।
नर-बश्च पकिे आब सीग, नृत्य आ नाटकक रपे मनबैि अश्च ।
हमरो सभके एश्चपर गंभीरि पूि सोचबाक खगि अश्च । सीषक

श्रिषय ई अश्रु जे 'पथ्यडि' आ 'कमयाण्डी'क एक पैघ-गियछागर बश्कके समार्षि करए चाहै छै। ि सभ एकर बदलामे फल, अठाई एि अन्य शास्त्र सम्मि श्रीनि बबि लेल त्तिर छै। केकिो लोक एश्र पिके छोश्रयो देने छै आ छोड़रो रहल छै। एक सश्रिमश्रि आणय हो। सबहक सहमश्रि हो। सबहक सहभाश्रि हो। सबहक श्रीचारसँ एकर श्रीकल्म (अल्टरनेश्रि) श्रस श्रीयान जाए आ ई पि समार्षि हुअए। आणय सबहक हो, सहमश्रि सबहक हो, केकरो बीच देष नश्र हो आ न पि पिक सूतपाि हो जे सभ लेल कल्माणकारी हो। एहने पिक पारम्भ हएि से आशा करै छी।

मैश्रीली लोकगीमे भोजनक श्रिन्यास

मैथिली लोकगीत संसार स्त्रीगणक संसार थीक। पुरुष पक्क भूआका गीत आमाणक आओर अछु गीत गायन कि अछि अछि। मैथिलानी एक बेर अछि कयल गेल अमूयिरोहर जेनाछ गीत-नाद, पाबआ-थीहार, थी-व्यहार, रि-आषा, कति-पीहानी; अछिअपन काढ़ब,ठाँ अपब, कोबर आखब; केरिरी, सुजनी सीयब; सीकीसँ पौँ-मौनी बुनब, माझक महादेब, सामा-चकेबा, खेलोना, कोठी, चूँ आछि बनेबाक परंपरा के अपन माय, अथियाईन, दाई, नानी, सासु आछिसँ आखै छथि आओर फेर अपन सभटा लुइरके अपन बेटी, पूहि, पोँ, नाथिन आछिके अदौसँ एख कलाके पीढ़ी दर पीढ़ी नीक जेका आखेबाक परंपराके हसीरंछि करै आमाअ रहल छथि। हलाअ आँआकति आ उपभोक्तीदिक युगमे एख परंपराक पनि भेल जा रहल अछि परअ मूल भाँमे िर बहु जोड़-ीड़क संग ई परंपरा अपन अथीला समाजक मञ्चला गिबे एखनो शाश अछि। आशययआ दुःख खिन होइ अछि जखन एख समाजक स्त्रीगणक चचा होइ छैक। आजुक पश्चिमे बहु स्त्रीगण पुछला पर आँख कहै छथि जे “हम अछु नअ करै छी, आठल्सी छी अयैक” हाउसिइफ/गृहणी छी”। पुरुष पात बहु एहेन छथि पुछला पर कहति हमर घरनी अछु नअ करै छथि घरमे रहै छथि, हलाअ ओकर बाद कहबाक तित्तयके पूणयकरै जरर करहि “हमर आँगनसँ सहीमे मात गृहणी/हाउसिइफ छथि”। औजी, कश्यो अपन आँगनबालीक भूआकामे जीनि जीब कऽ िऽ देख्यौ खिन पति लागि जे आहाक घराली ककि पैघ जिबदेहीके आमाअ रहल छथि ! हुनका नअ कश्यो छुटी, ने कश्यो आराम, आने कश्यो केओ मदथि केआहार,आओर िअ जिबदेअक मलिब अछु नअ ? ई एकटा बडड पैघ पश अछि। एख पर थीचार जरर करक चाही।

भोजन आ भोजनक श्रिन्यास सभसँ पैघ, तश्चि आ शाशु कला अश्च। एकटा कहबी छैक “जे आक खैएि सैह नीक भोजन बनाएि”। इहो कहल जै छैक जे जखन कुनो मञ्चला सुञ्चाएि आ समपणके भासिँ भानस करै छै S भोजन सुअदगर आ रञ्चगर हेबेटा करि। यैह कारण छैक जे भगवान राम माणि कौशल्या, सुभ्रता, कैकेई; सासु सुनयना; गुरपती अरंणि, पती सीणि सबहक हाकि रान्हल भोजन केलाह, मुदा जे सीद हुनका भीलनी सबरी के आंइठ बैरमे लगलश्च िहेन सुआद कतहुने लगलश्च। ई भेल भोजन बनोश्चहाश्चक आ परोसश्चहाश्चक अनुराग। आजुक समयमे नाना रिहक सुधीणि जेनाश्च रसोई गैस आश्च आनो रिहक जारैन उपलब् अश्च जाश्चसँ चटश्च भानस भअ जाइि अश्च। कल्पना ओश्च समयक कर जखन साओन-भादबक मुसलाएि बरखामे खड़हक छप्पर चुबै घरमे अपन सभक बहुणि गोटेके माय, श्रुथियाईन, दाई कोन रिनी भानस करै छली! जारैनमे भीजल चेरा, गोइठा, करची, झाखी चुिमे घोश्चया कखनो मूहसँ िS कखनो श्रयश्च होश्च आंच पजारब, िआंसँ आँश्चमे नोर भरल आ ियो रंग-श्चरंगक पकमान आ भोजनक सचार। िहूमे अगर घरमे केओ पैघ पाहून जेनाश्च जमाय, समश्च इत्याश्च आश्च गेलाह िS घोर श्रकट, िथि श्रना मोन मलीन केने हुलश्चि मोनसँ भोजनक श्रिन्यासमे लाश्च जै छली। रिकारीक अभाभि बारीक साग, कंद, खम्हार, ओल, लणि-फतीक पाणि जेना कना, श्रिलकोड़क पाणि; लटकल चारक सजमश्च, कदीमा; झाड़क झीमनी, करैल; घर-पछुआरमे लागल गाछक फल जेनाश्च- केरा, कटहर आश्चसँ चीज जोश्चया कS अनेक रिहक रिकारी, रिआ-बघरआ, भुश्चया-सना-चटनी बनबै छली किरा बादो टारासँ नाना रिहक अंचार जाश्चमे फारा, कुच्चा, खटश्चटीबला आश्च बंजन परोश्च

पाहूनक सत्कारमे २०-२५ रिहक सचार लाथ जै छलै। आब जखन पाहून भोजन पर बैसि आ मञ्चला लोकआ गीं नञ्च गीं से कोना हेँक ि अञ्चु किने धीहुँसै मोनसँ दाई-माई सभके संगौर कऽ गीं-नाद शुर होइ छल। पाहून खाईं रहै छलाह आ गींकि आनंद लै छलाह। जखन कखनो हम कोनो पाच आरिा होटल मे भोजन करै छी आ कोनो गींगैन के गबै देखै छी ि होइ अञ्च जे एञ्चसँ बञ्चया कोरसमे गीं हमरा सभक समाजक मञ्चला गबै छथी। हि खानसामा, हि परोसय बाली, हि गीं गेआहाथ, हि सिक्कि कसि केआहाथ। मल्टीटाश्चक्रंग के अञ्चसँ पैघ उदाहरण भला आर की भऽ सकै अञ्च?

पञ्चनेके समयमे लोक सभ अयाहसँ पञ्चने एञ्च बाकि खाइ-भाइ करै छलाह जे जाञ्च घरमे कन्यादान करबाक अञ्च ओञ्च घरक चीनबार कहेन छैक। मलिब ककि साफ-सफाई, कोन रिहक रक्क केर बरनि-बासन बड़ पक्क ओञ्चठाम उपयोग होइ छैक। अञ्चका लोकआक खान-पान कहेन छञ्च, घर-पञ्चिरक भोजनक अञ्चियास, दुःखक भोजन, सुखक भोजन, पाबआ-धीहारक भोजन, याता पर जएबाक काल बाटमे खेबाक जोग भोजन, खाद भोजन, अखाद भोजन, पथ्र बला भोजन, कोन समयमे की खाई आओर की न कि खाई, इत्याथ्र नाना रिहक जानकारीके अगर ठीकसँ ओञ्च भाकि धींचिना कयल जाय आओर अञ्चान असिर पर मैथिलानी सभक दारा गाओल गीं सभके देखलासँ एहसास होय कि जे ओ गीं सब धींपुरौआ आञ्च मनोरंजने ला गीं मात नञ्च अञ्च अथ्रि जानक खान अञ्च। ओञ्च गींमे जान,धीजान, संस्कार, सामगीक णिष आ धीरिण सब अछु समाधीष अञ्च।

मैथिलीमे अगर अंगेजीक शब्द culture के अनुदि कयल जाय कि

हमरा बुझने ओ शब्द जे culture के सभसँ लगमे अछु मैथिलीमे ओकरा “अथीलाम” कहल जाय आओर इयैह अथीलाम अछु जे मैथिल सभके भारि टा नञ्च अथि समसि संसारमे अलग पहचान दै अछु । अथीलामक चचा अन्नु भोजन अन्नास, अन्नु मञ्चला सभक भूअका, अन्नु गी-नाद आअक अथि-व्याहारक संभानि नञ्च अछु । सिद्धि: भोजन अन्नास, गी-नाद, अथि-व्यबहार, जीनि जीबाक अंदाज, सिद्धि अन्नास, मिथक आचरण, पकृथि आ संस्कृथि मे समनयिक नाम भेल अथीलाम ।

बाणि भोजन अन्नासक चञ्च रहल अछु ि कनेक अथिलाक इथिहास के सेहो ध्यान देमय पड़ि ।

ज्योथिरीशर अपन कृथि णिश्ताकर मे ११म् शतिब्दीक अथिलाक भोजन अन्नास पर पकाश देलअ अछु । अन्नाक अनुसार अथिलाक पमुख भोजन भाणि, दाअ, रिकारी, चूडा, दही, शकर, फल णि दू छल । ज्योथिरीशर अपन दोसर पोणि पाकृथि-पँगलम् मे कहै छथि जे “ओ गृहणी नि छथि जे अपन पथि के केराक पाणि पर भाणि आ घी परोअ खोअबै छथि” । एअ पोणि मे रंग-अरंगक माछ रान्हि आ रिकारी बनेक अथि सेहो अखल अछु । णिश्ताकर मे जे अथिलाक पाचीन परम्परागि भोजन सअअक सूची पस्णि कयल गेल अछु णिअमे “चाउर, चूडा, मुंगी, लडुबी, सरआअ, माठ, फेना, मृकूपी, अलबा, अरोल, अरसा, अरनी, अल्लरी, फरही, भूजा, मोचिचूड, अमृकुंड आअक उल्लेख अछु संगअ भोजनमे दहीक पानि सेहो भेटल अछु ।

आब लोकगीणि पर अबै छी, लोकगीणिमे फकरा, पीहानी, गीणि, लोकृथि आअ सब अछु समाअ अछु । एअठाम दू गोट फकरा

मैथील समुदायक भोजन श्रिन्नास आ भोजनक पथि आसथि के बुझबाक हेि पयार्पि अथि ।

पथल : अथिलाक भोजन िन/ कदली, कबकब मीन । ।

दोसरः िन िरहुथिया रिह पाक । ककरो लेल चुडा दही ककरो लेल भाि । ।

अही दू गोठ गीकि आरि बना सब श्रिरिणके देखल जा सकैि अथि ।

अथिलाक भोजन िन । कदली, कबकब मीन । ।

एकर अयिभेल जे अथिलाके लोक सभ लगभग नीकसँ लकऽ अलिह किमे जेनाथ- उत्सि, काज-राज, संस्कार, पाबअ-थिहार श्रिमे केरा, ओल बा ओले पथरिक आन कंद जेनाथ खम्हर आ; आओर अंिः नाना पकारक माछके पयोग भोजनमे अशिय करैि छथि । थिहि -दान, मुडन, उपनयन, पाबअ थिहार सबमे केराक पयोग हेबेटा करैि अथि । ओहुना लोकसब केराके पाकल, काच आ केराक फुलक सेहो खेबाक श्रिन्नासमे पयोग करैि छथि । केराक रिआ, रिकारी, सत्पन्नारायण भगानिक क्तिमे घोर आ पसाद आ ओहुना पाकल केराक पयोग शाशि अथि ।

कबकबके बाि करैि ई कहब जररी अथि जे ओल अथिलामे बहुि थय अथि । एक फकरामे भादबक ओल केर बारमे कहल जैि छैकः

भादकि ओल की खै राजा आथि चोर

अधीला आ माछ एक दोसरक पूरक अछि । पंचदेहिक एकस्य संगे उपासना करे बला मैथिल समाज जास्यमे बाहण सेहो सभ्यता छी कुनो अन्न आ कुनो मास माछ खेबासँ परहेज नस्य करै छी । माछके जल-पड़ोर, जल-फूल आस्य नामसँ बजा किक गोटे ई एकरा मासाहारी भोजनक शेणी किमे न राखय चाहै छी । काथिक आ साओन मासमे जखन लोक सामान्यतया मासाहारी भोजनके त्याग्य दै छी, अपन मैथिल अहू मासमे खूब चटकारसँ माछ खाई छी, संगस्य एस्य मासमे माछ खाय बलाक हेँ बैकुंठमे जगह बना दै छी ।

काथिक मास जे गैचा खाय । ससस्य-फसस्य बैकुंठे जाय । ।

एक बारहमासा गीँ एहेन भेटल जास्यमे अलीक पास्यमे उपलब्ध लगभग सब माछक णिस ई अस्य ओकरा कोना बनाबी कोना खाई, किक संगे खाई सब शिष्टि अछि । एबे नस्य लगभग ७५% माछ जे अधीलाक पास्यमे भेटै अछि किर णिस छैक । कने एस्य बरहसाके देखू:

मास हे सस्य सरस अगहन भूजल चूडा संग यो ।

रिल चेचड़ा माछ कुरमुर लागय मोन भस्य संग यो । ।

पूस हे सस्य अन निका संग मागुर झोर यो ।

कबड़ कुरमुर दाँ दबड़ि करय जनजन शोर यो । ।

माघ बदरी जाड़ रिरि कापय नि बड़ जोर यो ।

सुख बोआरी खंड लस्य कए मन अनोद श्रीभोर यो । ।

मास फागुन मदक मालि बहय पछबा बसाँ यो ।

बढल सीदक माछ टेगड़ा रान्हल सानल भांि यो । ।
 चैि हे सश्च रोग सभश्चस र प नाना देश्च यो ।
 रिल भुना पलइ रान्हल खाइि बड़ सुख लेश्च यो । ।
 मास हे सश्च आश्च पहुँचल गरम बड़ बइसाख यो ।
 गेल मन रश्च माछ गामर खंड सभ श्चन चाख यो । ।
 जेठ हे सश्च हे हेठ बरखा मुंड भाकुर पांि यो ।
 पड़ि श्चसरि आश्च ससरि कर नकि भांि यो । ।
 मेघ सश्च बरसांि अखाढ़ जि रसालक डाश्च यो ।
 िश्च काचे आम आश्चल देल सौरा पाल यो । ।
 मास हे सश्च आओल साओन भरल अंडा घेट यो ।
 रिल दही माछ मारा खाश्चि भश्च पेट यो । ।
 माछ इचना भेटल कहुना खाय भरलहुँ कोश्च यो ।
 मास आश्चन देपूजा शंख घंटा नाद यो । ।
 राश्च रहुआ माछ बइसब पूणयभेल परसाद यो ।
 मास काश्चिक बाश्च मर आ बऽड़ रिल-अपूयियो । ।
 पूरल बारहमास हश्चनांि गाओल सगयियो...

माछ खेबाक णिम् अश्चए माछक श्चारा खेबाक परंपरा पबल सेहो
 अश्च, घरक मुश्चया, पाहून, बश्चयांि आश्चके श्चारा परोसल गेल आ
 बुझू हुनकर उश्चांि सत्कार भेल । आमश्चाश्चि फकरा एश्च कथं के
 पमाथांि करैि अश्चः

श्चारा खाय से मीरा । पूछी खाय गुलाम । ।

जमाय जखन भोजन करक हेँ बैसथी छथी ि नाना रिहक गी
गाथ हुनका मनोरंजन कयल जाइ अछ। एकटा डहकन जाथमे
देश्वयौ, ओना ि गाथ देबाक परंपरा अछ मुदा गाथक संग-संग
भोजन धन्यासक णिम सेहो अछ।

खाजा मूंगबा आर थथक्या

ि पर गरम सोहारी जी।

माजी के गारी थिजी के गारी

आ बाबाजी के पढथी गारी जी।

पढु हे साथ हमरो के गारी

हम लेब देह के पसारी जी।।

एथ गीमे गाथ ि छैहे जे डहकनक मूल पकृथी अछ, मुदा गाथके
संगे-संगे भोजन सामगी खाजा, मूंगबा, पुरक्या, सोहारी आथक
थिरिण सेहो छैक।

सामा-चकेबाक एक गीमे बथन सब भोजनक बाँ करै छथी:

साम-चको साम-चको अथह हे अथह हे।

जोला खेमे बैथह हे बैथह हे।

लाले रंग पूरी पकथह हे पकथह हे।।

थथीलामे साग खेबाक परंपरा सेहो अदौसँ अछ। अयाची थथक
जीनित ककरा नथ बुझल छैक। मात ११ कटा खेमे साग-पाँ
कंद-मूल खाकऽ जीनि यापन करै छलाह आ अध्ययन-अध्यापन
करै छलाह। ककि बेर राजा बजौलथन मुदा अपन गामक
गुरकुलके छोथ कतहु नथ गेला। सियाँ संपभुतिके सीतम

उदाहरण पसुँ करै छलाह । माछक ढुलनामे सागक अश्विक
पनिनि देबाक पणि अश्विलामे सहज अश्व । एकटा फकरा एश्व
बाकिे पमाथाँ करै अश्व :

माछ-भाँ पाच हाँ । साग-भाँ साँ हाँ । ।

श्विन्यासमे सागक अलाँ सागके आन चीज सब जेना अश्वकोच,
गुश्वया, इत्याश्व बनबै छश्व, खेसारी, बडुआ, केराँ, चना,
कमी,गेनहारी, पटुआ आश्वक साग अश्विला लोक खाई छश्व । अपना
ओयि साग िडल नश्व अश्वि खोटल जैँ अश्व । कोनो भोजमे
साग एक महतपूणयरिकारी होइँ अश्व । अश्विलाक एश्व परंपरासँ
पभाश्वि होइँ ठीके कहल गेल अश्व :

कोकटा िँ िँ पटुआ साग । िँरहुँ गीँ बडे अनुराग ।

भाँ भरल निँ रिणी र प । िँ िँ श्विरहुँ होइछ अनूप । ।

अपन माश्व सँ गुजश्वयाके एँक श्वानेह जे साग-पाँ खोश्व लेँ,
साग-भाँ खा लेँ मुदा रहँ अश्विलेमे :

साग-पाँ खोश्व- खोश्व श्वसो गेमेबै यौ हम अश्विलेमे रहबै

नश्व चाही हमरा सुख-आराम यौ हम अश्विलेमे रहबै । ।

श्विलकोर आ कना साग श्वना की अश्विलाक पाहुनक सचार लाश्व
सकैँ अश्व? चाउरक पीठारमे डुबा शुँ सश्वसबक ढिलमे छानल
श्विलकोर दुरो देसमे रहश्वआहार मैश्विल सबके जीभमे पाश्व आश्व दैँ
अश्व ।

सजमश्व, भाटा इत्याश्वमे अदौरी िँ चाहबे करी खिनने भाटा-अदौश्वक
चहवगर रिकारी बनँ! भाटाके रिआ, भटबर आर की-की नश्व
बनैँ अश्व । बाश्वक भाटाँ बेर श्वपश्वक समय इजजँ रखैँ अश्व ।

भाटाके भटबर, ठोपेके लिल । खेलक जमैया ठेलम ठेल । ।

अधीलाक लोकके अछिअमे सेहो पापर, घी, दही, अचार, चटनी
इत्याअ संग खाई छथी । अछिअमे चाअ बस् नश्चि केहन
अछिअ?

अछिअ के चार यार । घी पापर दही अचार । ।

ई ि भेल पद परनु सही अयिमे अछिअ के छौ यार थीक: घी,
पापर, दही, अचार, चटनी, रिआ ।

एक उचाँ गीमे जखन थीहक बाद रि भोजन करी लेल बैसै
छथी ि सासु आ आन स्तीगन सब अपन गीमे कंजन केर णिअ
करै छथी:

जाअ अन्न राम जनकपुर अयला देखहु दुआया के लोक

भाथी-भाथी के भोजन लगाओल नयना अनु परकारे जी

केरा नाअयल खण्ड सोहारी परबल केर रिकारी जी

जीमय बैसला ओ चार भाई परसु पेम पीयारी जी //

दोसर उचाँ मे बर के कृष्ण सरिप माअ अछु अअ रिहक थीरिण
भेटै अअ:

खाजा खुरमा पि अलेबी पिपर सर्क सुपाड़ी जी ।

जेमय बैसला कृष्ण-कन्हारै साअ जे पढ़थीन गाअ जी । ।

भगवान कृष्णक बालकालके एक भअ गीमे भोजनक अछु णिअ
भेटै अअ:

करथी पुकार जशोदा माई मोहन पाि नाहारै ।

दही केरा गरम अलेबी खोआ भोग लगाई । ।

लोकगीमे भूख, आसि, कुअन आसक ऐशहासक संदभक णिच
लोकगी लोकधीदा होइ अशु, लोकइशीहास होइ अशु । एहेन
इशीहास जे अपन पमाथाकी एि शैली के कारण जन-जन केर
कंठमे आखा जै अशु । एहेन आखान जकरा ने कुनो पाआ गला
सकै अशु ने कुनो आआ जरा सकै अशु आने कुनो कीड़ा खा
सकै अशु । एकबेर जनकंठमे रआ गेल ि पीढ़ी-दर-पीढ़ी अबि
गथी सँ चलै रहै अशु । मबिनी आलाक शाहपुर गाममे एक
जनमानि लोक कथी भेला । हुनकर नाम छलआ फुरी लाल । फुरी
लाल एक बेर आशीलाक भयानक अकालक सामना केलआ आ
अकालक शीभीशकाक हृदयधीदारक शीरिण अपन कथितमे केलआ ।
ओ रचना अकालकथित के नाम सऽ जानल जै अशु । अबाहम
आएस १८८७ ईसीमे फुरी लाल केर अकाल कथित हुनके मुहे
सुआकऽ आखलआ । एअ कथितमे ई शीरिण अशु जे भुखमरी केर
असिमे लोक पाणरक हेि की-की नअ करै अशु । अछु पंअ
मात देखलासँ दुखक असीम दिनाक अनुभूथी सहजे भऽ जै छैकः
भेल निअ दुई फाआल जग-राहअ और मकई ।

अकाल पडल शीरहुथी मे भारी-ि बही गेल ही ।

घर-घर मागन करे नर नारी-फाअ मकई केर लाि ।

मालीक आउर महाजन सभ-कै-घर-घर ढेरीक अन ।

लोक बुझओल ओहो किँ छथी मुंहगा ऋणक शान ।

सभै देख बआयान सभ सनकल-डरे लगाओलक टटी ।

सुन दोकान शहरमे पअ गेल-सुन भेल सभ चटी ।

सूखल गाि भाि भौ लटपट-ककि बाि अब सहना ।

नर नारी सभ सान िआगल-बेकारी भेल अब गहना । ।

बारहमासा एि अन्न गीमे गरीबीके अतण करैि कोना अयोक
मश्वला कम भोजन अिि कृअन खा कऽ अन्न खेपैि छथि किर
ममअशी णिअ कैल गेल अश्व । आईसँ करीब ३०-३५ सालक
इथिहासमे अगर जा सकी आ अपन मानस पटल पर ओअ अथि
आ गरीबीके ऐनाके अप्लेकशन जेका देख पाबी िऽ सहज र पमे ई
अनुमान लगा सकैि छी । एकटा बारहमासा एहेन भेटल जाअमे एकटा
अथि मश्वला अन्नकर पथि परदेस गेल छथिन ओ कोन िरानी अपन
समय अिि अथिमे अि रहल छथि किर थिरिण देल गेल
अश्व ।

पूस गोइठा डाअ िपब

माघ खेसाअक साग यो

फागुन हुनका अमअ माकअ

चैि खेसारीक दाअ यो

बैशाख अकुला सोअ राखब

जेठ खेरअक भाि यो

अखाढ़ गाड़ा गाअ खायब

साओन कटहर कोब यो

भाद ि हुनको आंठी पखुआ

आअन मडुआक रोटी यो

काथिक दुख-सुख संगअ खेपब

अगहन दुनू साझ भाि यो

उपरोक् गीमे कोना एक मश्वला खेसारीक साग, खेसारीक दाअ

आमक अकुला, खेरअक उअना, पाकल आमक गाड़ा, कटहरक कोआ, नेढा, आमक पखुआ, मडुआ रोटी, एक मास अअआाि केर अअि आ अंि: अगहनमे भाि। कहू िS ककि सत्तके जे आई लगभग इअिहास भS चुकल अअ किरा ई अपना मानसमे रखने अअ अअलाक गी-नाद।

गरीबीक अपअसँ मारअ आ असहाय अिि कंद मूल आ कुअन बासक ओअिसँ अपना टूटल मडैयामे नीक जेका नीपल-पोलि चुलहामे पका रहल अअ। बासक ओअि िांक घर होइि अअ। फटने ने फटैि अअ। जरने नंि जरैि अअ। ओहने अििकि दु:खसँ रअि होइि बाबा “याती” अखैि छअि:

बासक ओअि उपाअ करै छी जारअ...

हमर अन की नै घुरैि जगिअअ //

मैअिली लोकगीमे भोजन अिन्यास आ औषअि

लोकगीि लोकअिदाके अंग अअ। लोक अिदाके अनेक पक ििआक होइि अअ। कृअकाययएि अन्त सब कायमे डाक बचन ककि सटीक अअ से हमरा लोकअ बहुि अक जेका बुझैि छी। बहुि लोकगीि एहेन अअ जे कहेन अन अिि भोज्य सामगी सेहो कुन अन, कुन मासमे खेलासँ की भS सकैि अअ किर बहुि थिअपरक जानकारी दैि अअ गीि सुनब अिि पढ़ब िि लागि जेना आयुअिक कोनो ििदक देल नुसखा हो। हरेक गाछ आ हरेक भोज्य सामगीमे पाचीन भारीय परंपराके अनुसार अकछु-ने-अकछु औषअिक ति छैक। भारीय परम्परामे औषअि आ भोजन अलग-अलग चीज नअ छैक।

िश्च अपना सबहक भोजनमे पथ्य आ कुपथ्यके बाि पबल मानल जाइि अश्च ।

अपन शोकायके अर्धमे जखन अर्धलाके गाम सभसँ गीकि संकलन करैि रही िS एकटा गीि एहेन भेटल जाश्चमे ओ ई बबैि छल जे कोन अर्ध कर्धक पयोग भोजनमे करक चाही जाश्चसँ नि आ मन दुनु सस्थ रहि । ई णिष ज्योर्धष धीचार पर सेहो आिश्चि अश्च ।

रश्च के पान सोम के दपण

मंगल के अछु िश्चाया चपण

बुि के गुड बृहस्पर्ध राई

शुर कहे मोहे दही सुहाई

शश्चबार जे अदरख खाई

कालौ काल कटर्ध घर जाई । ।

ई ि भेल कश्चया की खेबाक चाही । एक एहेन गीि भेटल जे बारहमासाक रपमे रश्चि भेल अश्च । ई एकटा दि जेका बहुि िजाश्चकिके आिर पर अखल अश्च । गीि अर्धके सः पमाश्चि करैि अश्च:

सानिक साग ने भादबक दही ।

आश्चनक ओस ने ने कार्धकक मही ।

अगहनक जीर ने पूसक िनी ।

माघक अ्सरी ने फागुनक चना ।

चैकि गुड ने बैसाखक लि ।

जेठक चलब ने अषाढ़क बेल ।

कहे निनिनिश्चि अश्च स बचे ।

दिराज काहे पुश्चया रचे । ।

मैथिली लोकगीति अनंति महासागर अश्च । अश्च महासागरमे सँ भोजनक सम्मन्निमे जे अश्च जानकारी छल से समयसीमा के ध्यानमे राख्य पाठकक समक राखल । नीक लागल िS मैथिली लोकगीति परम्परा केर महानि अलिह लागल खिन हमर जानक धीपनि ।

आभारः हमर लोकधीदा पर अखल सब काज लोकस लेल अश्च । लेखन एख लेख के भाषा के मयादा के संचालक एहि हमर अनुजलि शी अमरनि अश अंश्च फोश्च-फोश्च ठीक केलाह अश्च । एख काज लेल हुनका निगिदि द हुनकर योगदान के छोट नश्च कर चाहै छी मुदा ओ खूब आगा बढ़ी से आशीदि दै अश्चयश्च ।

सौराठक सोमनि आ सौराष्टक सोमनिमे समानि-(लोक इतिहासक पञ्चपेक्षमे)

गौठ वक्थलाक िहि-गार अक्छ । केकि तलँ चलै
भा हेँ अइ गार आ भा-गाछीके के नक्छ जनै अक्छ? कहल

जाइ अछ जे गौठक रूल नार 'गौष्ट' छल । गौष्टक अथमभेल १०० गिष्ट । लक कथाके जँ रानी ई गौठ गिरायण (हरति कहि बेल गिरायण) ॐ जुड़ल स्थान अछ । लक कथा के रान्गि रे कहल जाइ अछ जे गौठक सयि गौठरे भेल छल । ओइ सयि गौठरे १०० गिष्टक गिजकुरा भाग लेने छला ई एक नार 'गौष्ट' भेल जे बादरे अपभ्रंश भऽ 'गौठ' भेल । ऐ बाकि थुं डेक आ ठि आ गि देबाक लेल चली लक रान्गि क । कहल ईह जाइ अछ जे गौठ-सयि आ कआहरे गि लाख लक आएल छला । ओकि रनुख हि केए? ई ऐ लेल एकटा पै स्थानक कारण कएल गेल जे भुं ई युति छल । ओ स्थान आब 'लिखा' नारक गार ॐ वख्या अछ । लिखा गौठ ॐ टले अछ । रात गिन कल रीटक अनि छै ।

आब दू उदहाणि, भगनि काकि निष जए गिखल गेल छल ओ स्थान आब 'निखी' नाओ जानल जाइ अछ अथा निखी गार । गिजा जनकक छ ट भाए छलब्रन कनक । कनक ऋक छला । ओ अपन आशर बनौने छला । ओइ स्थानपि आब 'कनैल गार' ब ल अछ । गौठि वि कन भि अपन गौठ-बकनपाक गि 'रगिलबनी' नारक फुलबाड़ी ॐ फूल ल दै छली । रगिलबनी आब अपभ्रंश भऽ 'रगिलनी' बक चुकल अछ आ रगिलनीक बगलेरे ई गार अछ । भऽ कै अछ जे गौठक यह दन-कथा ऐ गारके 'भा गाछी' लेल सग्न बनेने हुअए? खै! भा गाछी पि चचा ककओ बाद रे कबि ।

वैदापर्वक पौत बादरे गौठरे आब कऽ बव गेला । ओ भ अखन छैथ । हुनकि वि ब एखन अछ गौठि के रेटने छव । जखन हर गौठ रे हि गि अही कुलक एक रकला वैदापर्वक

बहु गीं अपन रूि कठि ुनेली । एक गीं जे र न के थैहि-
थैहि क देलक ओ छलः

ुि वी 'क्व री क्कछुओ ने भेल ।

पुनरवी गी भागीथि लैल ।

हटबह बकया हाट बजाि ।

अही बाटे अबै छक्ख ुि वी गीि ।

विदापवी पि 'ह वीसी' कक्कओ आि बाि कबि. एखन
अपन रूल बाि के आगा बढ़ाबी ।

ीठ अपना-आपरे रिरायण, भगिनि क्ककि ति आ गिजा
लहे क आख्यान ' जुड़ल अक्ख । ीठ क्कनू आ रु लरानक बीच
आप ी म्मनिक अदुि उदाहण 'ह अक्ख ।

गुजगिरे जे ' ीष्ट' अक्ख जेकि . रनाथ रक्कवि वीश वि द
अक्ख आ दाद ज्जवक्कमिरे एक क्ककि अक्ख, जेह लकगिरे
क्कक्कलाक ीठ ' जुड़ल अक्ख । बगि दी जे गुजगिरी भाषारे
ीष्टके 'ह ीठे कहल जाइ छै ।

गुजगिक ीठ आ क्कक्कलाक ीठिक रध्म एक कथा
ऐवहाव क अक्ख । ऐ कथाक इवहा रे चली । ीठ गाररे दू गट
बाहण कुराि भेला- गगित (गगि दे) आ भागीथि दत (भावाथि
दे) । दुनू हद बिभाए । नैने ' स्फिरिरे उत्कृष्ट आ करक्काण्डरे
रग्न । एक बे दुनू भाइ कआलैन जे दाद ज्जवक्कमिक दशम
कबि । फेकि छल द्र ि क्कन ककैल गेला । भ क्कगिक दशम
काि ीष्ट^[1]क . रनाथ रक्कविरे पहुँच खूब कयर कषा ' पूजा-
अचमा केलैन । भगिनि क्ककि जेना हुनकि आत्तारे बव गेलक्कन ।

आब हुनका . रनाथ छड़बाक र ने ने ह का! बाह ि भति! बाह ि
रपण! पाच वन ओ ि कि गेला। छठर वि . रनाथ रहादे
रक्क कि देख-खि कबिला रुक्खायाक पनारे आब कहलखन-

“दू सिगाँ आ वंदान् रैक्यल बाह ण कुराँ अए आएल
छैथ। ई भ बहु नि क ल क छैथ। वंदान ि छक्यए एक नबि
के भति ेह क्यकाह। अहा भ वनका ल कैनके कादिन कर
जे ऐ रक्क कि रुक्ख पकड़ि के भाँ सीकाँ कऽ लेक्य।”

... रनाथ बाबा ऐ दुनू भाइक हुक्या ेह बि देलखन।
जखन रुक्खाया भरि उठल ि देखलक जे हीरे दू बाह ण बालक
काँकि ध्यानरे रग छैथ। हुनका लग गेला। पचि-पाँ भेलैन।
आ अनि कादिन केलखन-

“हे कक्यालाक पकड़ि दय! ऐ भूकपि अपनेक सीगाँ अक।
. रनाथ रहादे के ई इच्छा छैन जे अहा भ रुक्ख पुजाँके भाँ
गहण कए हरि ल क के चवीथमकी?”

गदित आ भागीथि दत ऐ भाँके सीकाँ लेलैन। रुदा ई
अबस क कह देलखन जे छह रा एकटा भाए . रनाथरे हि आ
द ि कक्यालारे आ हकि छह रा रे पाँ बदैल जैन। दुनू भाइ
आब करकाण्डरे आँ लीन भऽ गेला।

ओइ रय . रनाथ भाँकि भँ मयन रक्क छल।
विक्कन निाँ भलि गगीजलँ काँ कगीक स्नान आ पूजा हइ
छल। कहल जाइ अक जे निाँ . रनाथ वि पीँ-सि
पहीलि भति के चैन (शृङ्खिला) लागल है छल। बहक हाथरे
सणिम कलश। पकल बेकी कलशरे गगीजल भँ लगभग डेढ़
कलरीटि जा ओ कलश द ि आदरीके दऽ दइ। द ि आदरी

पहनक ॐ खाली कलश लेने ठाढ़ हैं। फे ओ आदरी भलि कलश हाथरे लऽ डेढ़ दू कलरीटि चलै छल आ ि ि आदरीके भलि कलश दै खाली कलश लै गी क आ जाइ छल। ..अही िहिे न्ना ि ॐ . रनाथ वि रानि शृखिला ॐ गगीजल सणिमकलशरे पहुँचै छल। भके अपन रय बूझल हिइ।

न्ना ि ॐ . रनाथक दूी अक्क १७९२ कलरीटि। एक अथमभेल जे २४०० सणिमकलश गगीजल लेल यि गरे अबै छल आ २४०० पी ि स्तिरे लक ऐ कायक म्मादनरे अपन शरदान काँ छल।

गुजर्णि िनिक काक्याडि केतरे . रनाथ अक्क। विहा िशिक गिजा नागभट दीय ८१५ इ िरे लाल िक पाथि (Red sandstone) ॐ एक भव आ विशाल रक्किक स्थापना केलैन। ई रक्क अपन स्थापत्य कला, केत गौर्णि, आ सणिम चानी, हीर्णि, एँ अनेक बहुरुप पाथि, ति, रक्क ि रुराक भण्डाणि लेल ेह वेश वख्या छल।

रहरूद गजनी (१७१-१०३०) जेका 'रहरूद जाबुली' अर्था 'यारीन-उद-दलिा अब्दुल काव र रहरूद इब 'बुतवियान'क नाओँ ेह इवहा रे जानल जाइ अक्क ओ अपन ेना बहक ि भाँक औझुका गुजर्णि िनिक स्थि वि द . रनाथ रक्कपि १०२५ ईसीरे आकरण केलक। िभिरे रक्किक किक्क-हिँ-स्थानीय ेना आ चालुत्य िशिक गिजा भीर थिर (काक्याडिक गिजा) गिजक ेना गजनीक वीँ काँ लड़ल रुदा अनि हाव गेल। काँकिश आ जीकि रदरे रालि गजनी अपन ेनाक ि रसि . रनाथ रक्किक पव कि रक्यारेट कए

लगल। रक्खिँ भ रूवमिणिबहुरुल्ल सिँ, हीगि- . ना-चानी-रूगि-
पना-पुखीजि-सफ्फक-रावणतय इत्ताव्द आनि ने जाव की की, भके
लूटलक। रक्खिके िक्क कऽ धर्सि कऽ देलक। आ जे क्खय ओए
आएल ओकी रौकि णिट उगिँ देलक। भति, 'णिदा' आ पक्खि
भ या िँ भावा गेला णि जे नक्क भावा कला 'ह भ अपन
णिँ हाथ िलैन आ करस हत्ताक क्काकि भेला।

क्कछु 'णिदा' आ रक्खिँ छीलन क्वकि दस्य . रनाथ
रक्खिके क्काणि बँचबैक अक्खि रिया केलैन आ क्कम्मा कौँ गजनी
लग गेला। हाथ ज़ड़ी वनिम भाँ कदिन कौँ कहलक्खन-

“शीरान! अपने जे धर्सि केलौ इले कुन बाँ नक्क। आनि
अगिँ हीगि, रूगि, रक्ख जाँ लेबाक अक्ख िँ हर भ आक्क दइ
छी। जेकिँ क्काणिरे लागल अक्ख किँ ५० गुणा, रुदा क्काकि धर्सि
नक्क कएल जाओ!”

ई बाँ कुँ गजनी क िँ लाल भऽ गेल। क्कायाक
बाजल-

“अही लेल हर युद क्कलौ! हर जखन अपन देश आप
जाएब िँ लक की कहँ? कहँ ने 'गजनी बुँ पूजक क्काकि
देणिके क्कना धर्सि केने आक्क गेल?' अत्ताह हरि क्कय राँ
नक्क कौँ?”

कहँ गजनी भके ओँ राँ देलक। तिँ के णिँ बहए
लगल...।

ऐ िँहै . रनाथ रक्खिके लूटै काल गजनी लगभग ५०,०००
बाह ण एक्किहूँ बहक नृश हत्ता केलक। एकिँ शक्का बहेलाक
बाद गजनीके रन शाँ नक्क भेलइ। क्काकि भ कीरँ सिँके

रैट अपना कबजारे लेलक। आ सयिअपना हाथरे पै हथौलि
लऽक्का क्लिपि दानाँ हिा हिा कए लगल जेना रदरे पागल
भेल ह। हिापि हिा! कदम हिा! कक्किश हिा! आस्थादि
आ रूक्मिपूजक देगिपि रूक्मि भजिक हिा! इवहा पि हिा!
हिानपि हिा! भवषिपि हिा! स्मृवपि हिा! स्मिापि हिा!
कन्हू रिक्क भानि आ कशा पि हिा! रान्मपि हिा! आ नक्क
जाक कथी-कथीपि हिा! आब गजनी 'कड़ खियारे गाइक दि
कए रक्ककि गिनरे भजन बना अपन आँ' 'ना आ लूटे' भ
गि खाए लगल...

..कम्मदक्क अनु गि . रनाथ क्का क्लिक सिक्कि
भग्माशेषके गजनी अपना गि लेने गेल। आ ओ अपन शहकि जरा
रक्कजदरे ओइ सिं अशेषके िढ़ी बनबैरे यि ग केलक। दुकयाके
ई बबिा लेल जे “देखू कन्हू रिक्क भँ पै देगिक ऊपि हर
भ ला-दऽ कत्त नराज पढ़ए जाइ छी।” नि मैकि अवर्वति
गजनी अपना गि हजाकि खियारे स्तीगण एबिक्का भके 'ह
गुलार बना कऽएँ लऽ गेल।

आब फे कनी कक्कलाक गैठि क आबी। लक रान्मि ई
अक्क जे . रनाथ रहादेके पक्कनक्क भान भऽ गेल हैं जे गजनी
गिगणके धसि कऽ दे। एँ ओ ऐ टिनाँ एक क्कन पक्कनक्क
. रनाथ रक्ककि पुजाँ शी गगि उपाध्याय (दे) के विरे सपिरे
आक्क कहलक्कन-

“आब हर अएँ पलायन कऽ हिल छी। अहा जँ हरि पूजा
कए चाहै छीँ हरि कराल लऽक्कअ आ अहा एकी जेएँ गिखब
हर ओइ पहुँच जाएब आ अहा हरि पुनु पूजा-अचना कबि। हँ, ऐ

बाकि वयान अबस खिब जे केकि ऐ बाकि भान नक्क हुआ।”

ई कक्क . रनाथ रहादेकि अनिमान भऽ गेला। गगिदेकि जखन
 ुर्वि कऽ उठला कि पना जेना त्त बुझरे आबै लगलैन। रक्ककि
 गिनरे जेना क्यौन लागए लगलैन। पूजा पाठ, सीधाय आक्क कुन
 कायसे र ने ने लगैन..! खिन गगिदेकि अपन छ ट भाए भागीथिदेकि
 बजेला आ पनाबला बाकि ुनेलक्कन। ुक्कि भागीथिदेकि कहलकैन-

“भाय, हरि बाबा . रनाथ यह पना देला अक्क। आब
 अिए हिनाइक अथमभेल अक्क के अनेकि करतिण देब।”

ई . चैकि दुनू भाइ रसि पर्वीकि गि क्क कराल
 लऽ चुपचाप अपन गार अथाकि गीठ वंदा भेला। गीठ आक्क एखन
 जे . रनाथ छैथ गिही ठार क्कि कराल गिक्क पूजा-अचमा कए
 लगला। पूजा कि कथि रुदा . रनाथ रहादेकि पनाबला बाकि केकि
 नक्क कहलक्कन। पछाइकि ओइ स्थानपि सिंकि एक क्कि गिट भेल।
 दुनू भाइ गद-गद भऽ गेला। पूजा पाठरे लीन हिए लगला।

गीठ एलाक उपनिं दुनू भाइक जीनि शैलीरे ेह पर्वीकि
 भेल। दुनू भाइ खीकि गिंकि ेह वयान देरय लगला। अहीठार
 दुनू भाइ अपन-अपन बेस्था ेह अलग कऽ लेला। आ इि कक्कते
 ऐ गारक किबा जे चौदह ए बीकि अक्क किंकि बँटबाकि चचम
 उठल। दुनू भाइ . चलैन जे जरीनक बँटबाकि कऽ ली रुदा दुनू भाइ
 एक्करे अपनाके अ रथमपेला। आब की की? खिन गगिदेकि रहादेकि
 आगिनि कए हुनके ीथिमा केलैन जे उति जरीनक बँटबाकि कर।
 लक रान्गि कहैकि अक्क जे खिन करला गिंकि-गिंकि ऐ गारक
 किबा चौदह ए बीकि बीच-बीच गिकि र परे आक्क गि- गि
 ए बीकि कएल। जेठ भाय गगिदेकि के करलाक पूब आ छ ट भाए
 भागीथिदेकि के करलाक पक्कर जरीन भेटलैन। जेकि रिण आइय

कजला कारालयरे जे उपलब्ध नतशा अक्ख, जेकि कारण १९०१
इसीक जनगणनाक मि भेल छल। डिरे चादि नम्मा-१ पछविया
शीटबला नतशापि गीठ भागीथि आ पुर्विया शीटबला नतशापि
चादि नम्मा-२ के गीठ गगि अक्ख। मि- मि दुनूक किबा मि-
मि ए बीगि 'ह अक्ख।

दुनू भाइ केकि . रनाथ के मि मन्नेरे कना बनिने रवि गेला।
एकि बहुि कनक बाद क्वाकि करालक पूजा गी-गी बन्द जका
भऽ गेल। आ उति गीगिपि खेगि-बाडी मि नक्, रुदा चागि बक गेल।
जैपि गारक चागिहा भ अपन-अपन राल-जालके चबैले जाइ
छल। अक्खना हइ हि हइ २०० षिमबीवि गेल।

अही कररे किीचिन्द नारक एक पूफी (रु लरान
कृषक, जेकि नार ' फकरि नारक खे अखन वि अक्ख) अपन
टेगागि ' उति स्थानक झाड़ आ मि पाकि मि क' छल।
एकाएक किीचिन्दक टेगागि . रनाथ नारक रहादेकि कगिपि
लगलैन। टेगागिक च ट लवा किगि ' श कगि बहए लगल। कस्थवि के
देखि किीचिन्द बिडि डि टेगागि ओ' छ क डि आक्क गेला।

किीचिन्द ओना मि रु लरान छला रुदा कन्दू रिम' 'ह
हुनका व नेह कर नक् छलैन। भजन कए ओ कनरे कनीकाल लेल
आँख रुनला खिन हुनका . रनाथ रहादे सिपि देलक्खन आ
कहलक्खन-

“अहाक टेगागि ' जइ पथकि च ट लागल ओ गिणि पथकि
नक् अक्कि क्वाकि कगि अक्ख। हर छी . रनाथ रहादे। गजनीक
आकरणक रय ऐ गारक दू ग ट बाह ण गदि आ भागीथिदे हरि
आजापि गीष्ट ' हरि करालक र परे अनलैन। हुनकि रृत्युक

पछाड़ि आब कय हरि पूजा नक कए। ओना, अइले गारक ल कक कुन द्रख नक। अहा दूटा काज कर। पकल ई जे गारक ल क भके लऽ कऽ अहा ओइ स्थलपि जाउ आ ल क भके कक्यौ जे पी ल भाग, बेलपत, गाइक गी, चन्दन, दही आबक लेपँ हरि क्लिके पर्वत कए। पूजा गिम्भ कएथ। अहाके हर अ गीदि दइ छी जे खूब फली-फूली। रुदा अहा ऐ गारँ थ डेक दूि अथा १४०० बीणि के गीरानँ बाहि बा कर। किमलूटे गजनी हरि बहुि पशान केलक आ गि गि कऽ देने छल।”

एकि बाि कक . रनाथ अनगिन भऽ गेला। किीचिन्द अकचका कऽ उठल आ रुँह-हाथ डि कऽ गारक ल कके बजा भ बाि कहलक। आब गारक रसि ल क- बच्चा, स्तीगण, बुढ़, युगि भ चौकि क गेल। देखलक जे क्लिँ शवाि बक हिल अक...! लगले पी ल भाग, बेलपत, चन्दन, गीजल, गाए गी, दही, र, आबँ राक्श कए क्लिगि के पर्वत कएल गेलैन खिन आब क्लिँ तिस्ताि बन्द भेल।

पूि गार ऐ चरत्काँ नाचए लगल। लिल, कपही, शखि, डरर, झाक बाजए लगल, भजन कीमि शुर भेल। ‘हि-हि बर-बर’ के उद षँ गिगिणि फिक्लि भेल। ल क किीचिन्दक वि अपन कृजि अकमि कए लगल। किीचिन्दक आँखँ खुशीक न झहिए लगलैन। रनरे उठलैन- अने कए ल क रिक्क नाओमि कटै-रए? की रहरूद गजनी . रनाथ रक्कके धर्सि केलाक बाद अरि भऽ गेल? अल्हाहके आँखरे ई ओ गुनहगाँ ने भेल..?

किीचिन्दक भँ बेी ई है जे हरि काणि गीठक . रनाथ गिट भेला। आब जक्या वि ई क्लिगि हि क्लिया वि किीचिन्द अरि हिब। ई ने भेल गागी-जरुनी हिजीब।

पुनः किीचिन्द्रके पनाक द्र ि बाि रन पड़लैन। रन पव्हि गुनगिरे पव्ह गेला- बाबा . रनाथ ि हरि ऐ गारक चौहदी छव्ह देराक लेल कहने छला! आब की की, केना की? किीचिन्द्र अ रजि रे पव्ह गेला- जे गार हरि जीनि छी ओकी केना छ डब? रुदा नव्हयो छ डब उक्कि नव्ह। खिन हरिरे आ रहरूद गजनीरे अनी कुन? अगि एक रु लरान . रनाथ बाबाके धर्सि आ िहि कबि लेल जानल जाइ अक्कि ि एक रु लरान िठक . रनाथके पुनस्थाक्कि कबि लेल जानल जाए। आ ओ रु लरान आक्कि नव्ह किीचिन्द्र हएि..।

... चै-विचारि किीचिन्द्र दृढ़ रुरारे अपन ि जा ककया आ बेटा भके बै। कऽ भ बाि कहलखन। ि ईह देलखन जे 'देख, ई कणख हरि अक्कि अक्कि। हर पाच ति भ कन नराज पढ़ै छी। उक्का रु लरान छी, ि हर ि ऐ गार ँ बाहि जेबे कबि।'।

.. कछु काल ना-नुकि केलाक बाद किीचिन्द्रक ििली, बेटा भ राक गेली। खिन किीचिन्द्र गारक लकके बजेलक आ बाजल-

“देखू, बाबा . रनाथ हरि ईह कहलैन जे हर ऐ गारक अथा ि िठक चौहदी ँ बाहि अपन ि बनाबी। ि हर ई गार छव्ह १०-१५ कनक भी ि को ि ठार चक्क जाएब।”

रसि िठक लक किीचिन्द्रक ऐ वियाग ँ रन्त-रुगि भऽ गेल। गारक लक अपन कृजि देखबै किीचिन्द्रके जरीनक बदला द्र ि गाररे दुना जरीन कीक देलकै आ ऐठारक ि ँ पै आ बेक्कि ि बना देलकै। किीचिन्द्र ँह गारक लकक

उपकाहि के जीनि पयमि याद खिलक आ जाबे वि जील बिबे
वि पीठ पीहरे एक दन अबस अबै हिल।

किचीचन्द्रके गार छ डला बाद कुन रु लरान ऐ गाररे ब बाक
हे न्ह आएल। गारक लकके ई कथन छैन जे अखन वि ओइ
र जेरे रु लरान मदीयक बा के शुभ नइ रानल जाइ अछ।
इरहि आब कऽ एक-दू गटे उत ही रु लरान युकि भ डकक
पक्कर पखौनी टलपि ब बाक या केलेन रुदा हुनका भके
एकि किकृक उपरि भेलैन जे अनि बाध्य भऽ पीठ रौजा
हटए पड़लैन।

आब बां फे . रनाथ रहादेकि की। बहुि दन वि ओइ
र परे बाबाक पूजा हइ हिल। बहुि दनक बाद ऐठार एक हकर
ग ई नारक व द रहात्ता^[2] भेला। ओ अहीठार कुट्या बना हिए
लगला आ . रनाथ रक्ककि रसि पवि कि विका कायम जुट
गेल।

. रनाथ रहादे के कि क्कि गभमगृहरे बहुि नीचा छैन। केकि
बे गौआँ बहक बीच वचा भेलैन जे हुनका ऊपि अनैक या
कएल जाए। रुदा इरे एक कडम्भना ककाल देखल गेल। क
कि लक जौ-जौ नीचा जाव पि-पि क्कि क्कि विशाल हइ गेल।
जकक अन न्ह! भ गटे हाव कऽ अकरि कण ई लेलैन जे
आब कनिइ बन्द कऽ दी। एह भेल, लक नरिसकि भऽ भा-
वि हइ हृदय क्कि रक्कराके सीकालैन। क्कि के णार
केलेन।

क्कि क्कि टल उति कशारे एक जलपि अछ। ई
जलपि क्कि क्कि गिह अकिवि अछ। ऐ जलपि स कि
रु लिल जुडल बिएल जाइ अछ। ककय काल ऐ जलपि

आपर पी जल ककैल बाबाक रक्तरि शिशि कौं क्वा क्लिके पूणमिया जलरग्न कऽलै अक्ख। जल बहु सच्छि आ हवियि कच्चि हइ अक्ख। कय-कय ऐ जलक लिना गगिजलँ कौ छैथ। ऐ जलक सँ सिम्हुटन हइक कुन कवि विक्ख, अवि अथि रौ र नक्ख अक्ख। कखन भऽ कौ अक्ख। कन-कन बे नैन-भादरे कि कन-कन बे बैशाख-जेठरे 'ह ककलै अक्ख। जलक सँ सिम्हुटन के अवि दू-ँ कि कनक हँ अक्ख। ओक बिद ई सँ खुा जाइ अक्ख आ जल निह बन्द भऽ जाइ छै। बे काल क्वा क्लिके आपके लटपटाएल 'ह देखल जाइए।

गौठ गाररे अनेकानेक विभूवि भेला। जइरे रहारह पाध्याय पक्खि जिनाथ कश उमिजि कश छह विषयक अदु जा। हुनक कखल कएकटा पथी अखन उपलबि अक्ख। ऐ गाररे हुनक कखल विक्क पदविँ कक्कि दुगा पथीँ अखन वि दुगा पूजा हइ अक्ख। रहारह पाध्याय डॉ. गगिनाथ झा कनक क्वा छलाह। जि कश काशी नि केलाह आ ओक्कि भगवान भलानाथ के नगीरे गगि कौरे अपन अक्ख नश कौया के त्नाग केलक। ऐ भूकपि एक विभूवि भेला शी गगि कौ कश कनक यि गदानक फलसरि प चन्नी क्वाला रहविदालय के स्थापना भेल। ऐठार रहान कौकौ शी भागीथि झा भेला, कनकाँ क्वा क्वा हुकूरि ताक्क-कृष्ण कौ छल आ 'शूट एट ईट'क आदेश 'ह देने छल। जे कनका जीबे अथि रुइल पकड़ैबला अथि जानका दइबलाके लेल इनार देल जाएँ...।

..देशक आजादीक पछाइ भागीथि झा क्वा क्वा पाजम हे रि रहाष्टि गेला आ बादरे गौठ गारक नारक पौका फहलि आ रहाष्टि विनि- भाक दस्य चुनल गेला। गौठरे एक विभूवि

छला बाबु अबि वहाँ झा। ई अजिक रयरे वड्ढी भेल छला
बादरे वीनि पाषण्ड ेह भेला। ऐ गारक डॉ. ुन्निनाथ ठाकु
नारक खियाँ ककत क भेला। ई जीनि पयमँ गार आ पपिटाक
लकक रुपँ ेँ आ ककत । केलैन। ऐ गारक अन्य वीभूरे
पण्डि फेकू वश, पण्डि हीशचन्द्र झा, पण्डि कृष्णादे झा,
विक्क नागियण वश थिा डॉ. कक्का दत्त झा आक्क रिख छैथ।

गौठ ँ जखन हर आबए लगलौ खिन एक कक्कि हरि भेट
कएि एला। ओ गारक वीदालयरे ककक छला। गौठ गारक
इवहा आ एक गौँके ओ अपन एक कवीरे बहुँ ुन्निणिम
केने छैथ। ओ कवी हर ुँ पाठक लेल दऽहिल छी-

पिभूक जगजननी कथला हृदयस्थली जकि गौठ/
शी शादि न कवि केँ नैहँ मि- मि जि व हि आठ//
पूभिपवति नि जीबछ केँ उतलि हा गार/
परि पखौनी दक्क निखक रध्य ई िर//
पुन्यस्थल गौठ भा कथला स्मृति विक/
दशमीय ुन्नि कवि रक्क रासिकि कथक//
कुमलूटेगि रहरूद गजनी जखन उपरि कएल /
गुजगिक गौष्ट कि कवि पथ गौठक लिल//
ईसी एक हज्जा पचीव क अक्क ई गप्प कर वीशा /
. रनाथ कवि करला केँ छाकि पि आक्क बनलका बा //
जगिल झाँ रशान रध्य कवि ब ला गारक भेल उदाँ/
पुनि रक्क ब्रिकृष्ण मवि कयलका अक्क जीणोदाँ//
दकिट कथा ुनब िँ लागि रुदा जुगियेबदेखने नयन/

काविक जेठक वषिर जीलारे काहि लै छव्य अपनक जलशैन//

कि व द राज कुकि न्यायी न्यायवज भरिणि

कुशल शिा क अक्कनेणि डाँतटि बिदजन अपमिाणि//

बानी केि बदिनी बेटा कथला केि छिि अध्याय/

जिनाथ कथला केि गौणि वशुि रहारह पाध्याय//

न्यायवज पक्खि गगिणि कि काक रिीजि/

तुतिणि ी. एर. कॉलेजक कथलाणि ी कजनक कृजि//

हर्विन् जग वष केि जाणि कृषादेि काकणिाचायम

नार ककि गनब अनि नक छव्य नीन नारी िचायम

पदकानि वियपात राजक कजनका जन-जन केि आशीष/

ब िहि कथला के गौणि बवि अपन बढ लक शी //

वशिवकि कवि विदापवि केि बजि आक बनलक बा /

के नक जनैछ काहि उगना भए भेलक विदापवि केि दा //

विदापवि पुसकि केि आलय केन ककत । काक शि/

गिहालय पतालय काँछ वकिव ि गारक ब्रि//

. भा भय कुकाक जिन-जन रुँह पि चौअकया रुस्कान/

बाल कद युजिन रदुभाषी बुक्क पि नक छव्य ई आन//

पग-पग पखवि भक कागिलय मि बाग देक हइछ हषम

कक णीठ गार ब िहि कथला रैकल केि उक्तषम

आभा- हर ऐ लेखक लेल शी काहि कुराि कश, शी रनि
नाथ ठाकु णि णीठ गारक रकला आ पुरषके निमिदि दइ

कएन, कएक ि हुनके बहक देल जानकारी ँ ऐ आलेखक चिना कएल गेल अछ । हर अपन कृजिा संगीय िफे ि बैदनाथ सिंि के वि अकमि कौि छी काणि ओ इमिा गाीि िकृत्य कलाकेनर रे unesco चेयि केि िफे ि छलाह आ हर unesco स्कॉलि । unesco UNDP औि इमिा गाीि िकृत्य कलाकेनर के ककलि यिा भारि केि १०० गारक स्मृविक आ चिना केि अध्ययन ककि हैक. डॉ. ककला तित्स्यायन आ िफे ि सिंि हरि कहलक जे अहा एकटा एहेन गारक अध्ययन कर जकी ब स्कॉलि आिि राक काज कथि आ १०० गारक काज मि ह. हर ििि िठ केि नार लेलौ आ दुनु गटे सीकाि क लेलक.

[1] गुजिाि क िषि

[2] बबाजी



United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

OFFICE OF THE UNESCO REPRESENTATIVE TO BHUTAN, INDIA, MALDIVES AND SRI LANKA
ASIA - PACIFIC REGIONAL BUREAU FOR COMMUNICATION AND INFORMATION

TEL : 91-11-26713000
FAX : 91-11-26713001, 91-11-26713002
E-MAIL : newdelhi@unesco.org
INTERNET : <http://unescoindia.nic.in>

UNESCO HOUSE
B - 5/29, Saketmarg Enclave
New Delhi - 110029
India

2 July 2003

TO WHOM IT MAY CONCERN

Dr. Kailash Kumar Mishra has been known to me as a sincere, bright, hardworking and original scholar since 1998. He had prepared an extensive village report of Saurath - a heritage village of Mithila, Bihar under the UNDP-UNESCO-IGNCA Project on **VILLAGE INDIA in 1999**. This report of Dr. Mishra was used by several scholars working in this project as a model study to arrange the data in the universal pattern.

Later, when UNESCO and Indira Gandhi National Centre for the Arts decided to quantify all of 87 village reports of the project in a systematic and statistical style, Dr. Mishra was assigned to develop a universal format of presentation. His format of presentation could be deemed very good. Clear, concise and easy to understand even to a layman, it gives not only the demographic pattern and ethnology, but also explains away the myths related to the village to understand the psyche.

I wish him success in his future endeavours and recommend his candidature for any research/academic post for which Dr. Mishra may be applying.

R.P. Perera
Chief Administration
Programme Officer/Culture

कुमार गगन ई-पत- डॉ कैलाश कुमार अशक आलेख सौराठक
सोमना आ सौराष्ट्रक सोमना मे समाना

वंदेह २०८ अक्कि रे डॉ कैलाश कुराणि अशक आलेख गैठिक
. रनाथ आ गैष्ठिक . रनाथ रे राना पढ़ल । नीक लागल
। रुदा गैठिक वंभूविक नार ब पढ़ला पणि लागल जे लूक रे
एकटा रहतपूणमनार छुट गेल छक जेना रहातरा पुरषतर ठाकुकि
नार नक देखल । रहातराजी एक पै पणि ठाढ़ भ भणि । इ
वि हस्त गायतीक जाप काणि । नि काणि छलाह । जीनिभवि
एक धिया फलाहा पणि हिए आध्याकराक रागमरे लीन छलाह ।
हुनक आशर रे गायती रक्षि स्थावणि अक । . रनाथ बाबाक
रक्षि ँ ई स्थान लगभग 200 रीटकि दुणि पणि ओही टल रे
अक्स्थि अक । भागाछी ँ टले । नक जाक एहेन रहतपूणम
नार क ना छुट गेल । कैलाश बाबू अपन व चमरे इह जक लेक
आगह । विशेष जानकारी पछि देतर ठाकु गायती स्थान
, गैठ ँ भेक कै छक ।

भदीय- कुराणि गगन

राजेश मि 'भीक्ष्ण्य'- पटोरी पछीश् टोल, पो०- पंचगञ्ज्या,
सहरसा ।

बीहञ्ज क

रौशन राज । पाञ्चिक स्कूलक चौंि झलासक श्रिदांि । सतिंि
श्चसि मनेबाक उत्साह ओकरा ककिं श्चन पञ्चने सँ रहय । 15
अगर्सि सँ एक श्चन पञ्चने ओ अपन ममी सँ पैसा माश्च पनीला
श्रिरंगा झंडा, मामे बान्हयलि पटी जाश्चपर " । LOVE MY
INDIA" झखल रहै आ गालमे साटय लेल श्रिरंगा ला स्टीकर
कीञ्चके आञ्च लेने छल ।

15 अगर्सिक भोरे उश्च ओ पनीला श्रिरंगाके एकटा करचीमे खोज्च,
गालमे स्टीकर साश्च आ मामे पटी बाश्च स्कूल पहुँचल । पभाफेरी
मे खूब नारालगेलक । झंडोतोलनक बाद सभ छातके पसादक र पमे
बुञ्चायाक श्रिरिण भेलै । ओ पनीला श्रिरंगेमे बुञ्चाया लऽ कय खाइ-
खाइ घर श्चस चश्च देलक । बाटमे जखन बुञ्चाया खमि भऽ गेलै
ओ जूठका श्रिरंगांलि पनीके मोश्च- माश्च सड़कक कामे फेक देलक
आ अपन संगीसभ संगे खेलबामे क्सि भऽ गेल ।

ओकर मुखमंडल पर पूणयसींनिक संीष पसरल छलै ।

रश्मी भूषण पाठक

फसाद आ आनंद (लघु कवि)

समै काटबा ,अबिबा लेल आदशयजगह । ई गाम जहि भक्ष अन्न केकरो सँ केकरो फसल रहै ,माथ नइ ि माथक भूअका नइ ि माथक उपसंहार । कवि पंचैषी ,कवि उपराग ,नाअश ,कवि गारागंजन ,कवि अंदा रसक आनंद ,मुदा सबसँ बेशी आनंद रहै माथ-पीट ,मल्लयु ि या फेर दू पाटी क' बीचक सामूअक संघषय । यअ कवि झगड़ा फसल होए ि अमहरो सँ हूअ जाउ ,केकरो पक ' अयौ ,कुनो बा ि पर नराज भ' जाउ ,केकरो हा मे हा अलबू ,मौका देखके केकरो पर अगैअ जाउ,भीड़क आनंद अय' । अपन मा ि-कपाड़ बचबै केकरो पक सँ लाठी चलबू या उपदेश अय' मुदा समहअ के ,कअयो-कअयो जरि खराब होइ छैक ,नइ समहरै िभाग-पड़ाउ ।

फसाद

पअला दू अन्न सँ सब िक मे रहै ...कुनो मौका अलै आ सि ली... केओ एक बेर छीकै ि दोसर दू बेर ...कोहुना माथ शुर भ' जाए..मोटअ झा एक बेर राम कहलअन्न ि सोहन असर के भेलेन जे हमरा खौझा रहल अअ ि ओ दू बेर राम राम कहलअन्न ...यअ दशर ि कुनो भगिनक नाम रहि छल ि अशजी दशर ि-दशर ि जर र कहअन्न छल ,यअ राणि राम के हरेने रहि छल खिन अशजी राणि-राणि जर र कहअन्न रहै । मुदा राम-राम कहला सँ मोटअ अश पर कुनो पभा ि नइ पड़लै ,ओ खौझाबै लेल कहने छलअन्न िड़के ि आराश दूनू गुट माथ करबा लेल दोसर बहन्ना बनब' लागलै

फसाद-1

अल्फा मरसैब िमैि रहलखन आ गाथ सुनैि रहलखन । बीटा एक बेर गाथ दै आ हहा के हँसा पड़ै ,मरसैब उरि िमैि रहखन ि दखन चख जाखन ,फेर बीटा दखनबारी काि मे गँथया आबै ,मरसैब पूबारी काि चख जाखन आ फेर बीटा ससथ के पूबारी काि चख जाए । ई पथर मा किको बेर चललै ,बीटा िथ जाए ि गामा काज कर' लागै । मरसैब कुनो रिहे चाहखन जे आइ माथ नइ फँसे मुदा बीटा आ गामा दूनू भाइ पनथयाइ खेला के बादे आयल छलै ,ओ चाहै छलै जे आइ कोहुना मामला फथया जाए ,एक ि आइ मरसैब असगरे छलखन ,आ मरसैबो आइ एकदम अडडी गाड़ने छलखन थ आइ थछ नइ होए । िबि मे मरसैबक बेटा पोटान बड़हल आबैि देखेलै ,मरसैब के भेलेन जे आब थछु कएल जा सकैि अथ ,आ ऊ िि के कनेक सम्हाथ के बान्हनै शुर केलखन । पूब थस बान्ह पर एकटा हलचल देखेलेन ,आंथ पोथ के देखलखन ,शायि बीटा क' बाप रहै ,मरसैब फेर सँ िमनै शुर क' देलखन...

फसाद-2

ई कुनो मीथंग रहै मंथर पर । सब टोलक आदमी जमा भेला । सरकारी कमचारी ,ओकर दलाल ,गामक चौकीदार ,पोस्टमेन ,बैक मनेजर आथ आथ सेहो रहखन । सरकार के पास रहै बहुि रास पैसा ,बहुि रास प्लाथंग ,बहुि रास झोल-झाल । मीथंगक अयिक कहलखन ' हम पूथ रहल छी ,अहा सब बबिबैि चलू ' अस्पलि क' सिथि होए?

बभनटोली मे सर

गौशाला अमहर रहिँ?

काइटोली मे सर

बैक लेल कुन जगह?

रजपूना सर

आ दूसिंगह केर?

भूअहरटोली मे होए िं केहन रहिँ

ई सुअहिँ दुसिटोलीक लोक ,चमरटोलीक लोक सब िरे-िरे घूसक' लागलै ।

मुदा कुरमी टोली आ गुअरटोलीक लोक सब ओअना मौजूद रहलै । सब के लागलै अ मीअंग आब खमि भ' गेलै ।अयिक महोदय कायमिअ भर' लागलअन आ कहलअन सब आदमी साइन कर ,खिने गुअरटोलीक एकटा जनि कहलकै हाअम सब संसि ओमहरे ल' जेबै अ अछु हमरो आर असन रहिँ ।अयिक महोदय कहलअन बाजू ने जे ससिममअ से अहा सब कहबै से कएल जै ।

गिँि समिँि सरि मे खुसूरपुसूर शुर भ' गेलै ।ऐ सरि मे जाअिक नाम ,लाठीक नाम ,सिँिति ,अिकास आअक अिअन शब्द एक-दोसर पर बजर' लागलै ।एबे मे के लाठी ,के मूसर ,के कुरसी ,के टेबुल ,के कोरो उठा के एक-दोसर पर चलब' लागलै एकर अलग-अलग अास्ट छैक ।ई सब अास्ट िनाक दरोगा संग मे छैक ।घायलक सूची ,मृकिक सूची अखबार मे छापल छैक आ घाि ,ददय ,बेडेजक संग पूरा गाम खूनोखून भेल छैक

फसाद-3

अनेश कहलअन रै 'राजेश' ,मुदा राजेश के सुनेलए 'रए राइशि'

आ ई सुआँ कहै छै 'हँ पादेश' ।

अनेश- की कहलही?

राजेश- जे ू कहलही

अनेश-एना अएक बाजै छै?

राजेश-जेना ू बाजै छही

अनेश सोच' लागलै अ रजेशाँ एना अएक बाअ रहल छैक ,खिने ओकरा हाँ सँ खुरपी बालटीन मे अर गेलै ।खुरपी देख्वाँ राजेश अकरैँ आअ गेलै अनेशक सामने

राजेश दूनू हाँ सँ अनेशक गटा लिकै ,अनेश ओकरा अक्याबै ,गटा छोड़ब' लागलै ।गटा छूटलै खिन राजेश डाड़ ि लेलकै ,राजेश डाड़ छोड़बै आ अनेश ओकरा नचाब' लागलै ।अनेश एकटा अटू काटलकै ि राजेश एक्के बेर हाँ छौँअ देलकै आ अपन दाँ ओकरा पीठ मे गड़ा देलकै ।दाँ गड़ाअँ अनेशक देह एक्के बेर झनझना उठलै ,ऊ खुरपी उठेलकै आ उलटा क' के बेट अस सँ एक बेट ओकरा पीठ पर देलकै ।बेटक माअ खाइँ राजेश पलटलै आ अप्पन दाँ सँ अनेशक करेजा मे लगा देलकै ।करेजा मे दाँ घूसबैँ माउस नोचैँ बाहर अकललै आ ूअ के अप्पन लाल मुँह अनेश के देखब' लागलै ।खून देख्वाँ अनेश के बहुँ िमस एलै ,ओ खुरपी छौँअ अपन घर मे घूअ गेलै आ अन्दर सँ भाला आकाअ लेलकै ।भाला देख्वाँ गामक दशकगियसअ य भेलै ।खुसुर-पुसूरक बाद एकाँ आदमी आगू बरहलअन ,िँँ अनेशक कआया एकबाइग आअ के एक लाठी राजेशाँ के ि देलकै आ ओमहर राजेशाँक कआया काननै शुर क' देलकै ,पि नइ अएक ।

दोस्तीक अनगि मे झडबैर काल (कंग)

आ झडबैर कालक दोस्ती बहुरि अछि महुआक रंग नेने रहै ,रंगो सँ बेशी गंगि ।खूब मादक गंगि ,पूरा क' पूरा गाछी-अरछी ओइ गंगि सँ पुलअकि ,मुदा ऐ गंगिक आयु कंगि अन ,ऐ फलक आयु कंगि अन ,ऐ सिंगिक आयु कंगि अन ,अनिना ऐ कालक दोस्ती सब रहै ।अछि अनक लेल पूरा जगजगाड ,आ फेर जअए बाइस भेनै आ अछि ए घंटाक बाद मौलेनए ,मौलाई-मौलाई लाल भेनै आ फेर कअयेनए ।मुदा चलाक लोक शरबि बना पी लै रहअनि,बेशी चलाक लोग लटा बना के राअ दै रहअनि आ जे जन्मी चलाक रहअनि से महुआ के सडबाक पीक करै रहअनि ,महुआ सडै आ मटि मे बदअ जाए ।काअल लोक सब ऐ दोस्ती के सीसी मे राअ के अमर बना देलअनि ।ऐ काल मे जल्दी-जल्दी दोस्ती बनै आ टूटै ।बहुरि अछि 'टायल एंड एरर' किनीक पर ।दोस्ती बहुरि अछि गिआअक संगि आरि पर बनै रहै ,आ ईहो पी नइ रहै अ ऐ दोस्ती सँ अछि भ' पेऐ गि नइ आ अछि समै अंगि जखन पी चलै अ हे दोस्ती गिहर कोन अशा ,गिहर कोन रंग ,खिन रि दोस्ति सब बदअ जाए आ जे अशेषण ,समास आ मुसअयान अहाक लेल पयुकि भेल रहै ,से दोसराक लेल खचयभेनै शुर भ' जाए ।कखनो काल दोस्ति लोकअक' संगिय आमने-सामने आअ जाइ खिन दूनू एक-दोसर पर आरोप लगबै अलग भ' जाइ रहअनि ।जे जंगि बुझियार ,से गिं कम आरोप लगबै ।आ एहने समै मे एलअन सांगि जी आ सांगि जी दूए अन मे अदा भ' गेलअन ,एहने समै मे एलअन कमांगि जी ,ऊहो दुए अन मे अदा भ' गेलअन मुदा सभ एहने नइ रहै क।अछि आयल अअनि अ पुरनका

सब के उखाँष्ट के फेक देबै कर्ि बागमर्ि मे ,गंगा मे ,करेह मे.....

ईहो एगो समै रहै ,मर्िबनी अला मे एक सँ एक इंस्पेक्टर भूअ श्रीभाग मे । एगो अंह जी रहथीन ,अनकर पहुंच पटना कि ,अशा जी रहथीन हरदम पटना-राची बौआइं रहथीन आ झाजी अल्ली - कोलकााि सँ कम कखनो नइ बथीयाथीन ,एगो ईहो समै छैक सब झड़बैर सब पहुंच गेल छैक । एगो छथीन थिनय भूषण से हरदम अंहजीक पाछू लागल रहै छथीन ,आ ऐ ओगू-पाछू मे भोजन-जलपानक अंाि सँ मुक्ि छथीन ,एबि नइ अंहजी कनेक पहुंच ला छथीन से एही बहाने कनेक बाि-साि ,अंदा-पर्शेसा ,पाद-फूस करैि नजदीकी बैअ रहल छैक आ कनेक काजो ससअ रहल छैक । थिनय भूषण जी आ अंह जी सहरसाक मञ्चषी पखण्डक छथीन । दूनूक दोस्ी एही ठामक अअ,मुदा दूनू आदमी एके साि कहै छथीन भर्गर्ि िरादेीक जय । ऐ दोस्ी के झाजी कनेक रि आंअ सँ देखै छथीन ,अएक ि थिनय भूषण छोट जाथी सब मे सँ छथीन आ झाजी के लागैि छैन जे थिनय भूषण अंहजी के साि अअ एकटा नया समीकरण बना सकैि अअ ,मुदा अंहजी एकरा एकटा संभानि के र प मे देखैि छथीन,मलिब एहन आदमी जे बाह ण सबके गअया सकैि अअ ,बस एकटा चाय ,कनेक जलपान ,बाअ-कुअ अठाई आ ई सब नइ होए ियो एकटा भक्षिय आ एकटा संभानिक मदेनजर....

आ झड़बैरक दोसर फुल्ली जीछि ठाकुर । देह अलअल्ली मुदा अजि भअगर । की चाही आ की बाजै छी ,ऐ यौ ठाकुर जी ,एना

मे केना अलि ओ सभ ,जे अहा चाहै छी आ जे कंठ पर आबै आबै रक्ख जाइ अक्ख ।मुदा कबिो कश्चयौ करी ओबिे ।आ एकटा चीजक गैरेटी अक्ख ओ सही चीज नइ बनि सकै छी ,पनि नइ पसखेलेटी अक्खजोडक्ख ,जेनेअक समस्या नि कोनो खास मानअकनि ।अहा पूछबै नाम आ ओ पूणयअष्टािक संग अपन शैअक्क योग्यनि बनि । नइ -नइ हुनकर कान ठीक छइ ,ओ बनिहो नइ छथिन ,ओ अहा संग मजाको नइ करै छथि ,मुदा ई अललक बल्ल जे छैक ,सएह हुनकर शक्कि ।एही शक्किं भरोसे ओ अपन रस्ति चलै छथिन आ अहा अनुमान नइ लगा सकै अक्खै अक्ख ओ अक्कमहर जे ।आ ठाकुर जी सब अक्ख छथिन कनेक अंह जी अक्ख ,कनेक झा अक्ख ,कनेक अशा जी अक्ख ,कनेक रंजन अक्ख ,कनेक अिनय भूषण अक्ख ,मुदा ओ गोजर नइ छथिन अक्ख शपिदी होथी ,नि ओ अक्कमहरो नइ घुसुअ पाबै छथिन ,ओ चाअयो नइ छथिन अक्ख ससरै-ससरै नमहर रस्ति पार क' सकै ,से ऊ भ' गेलअन नि ऊंट जे अपन नमहर गरदअ उचका-उचका पानि निडै हो आ ठाकुरो जी बस पानि निडै छथिन ,फल ,डाट छूबाक साम्यि हुनका मे नइ ।जे ऊजा बचै छैन से रेलकि टाईम-टेबुल देखबा मे लगा दै छथिन ,डेली सकरी जाइ छथिन ने ,नि आअ जे दस अनट पअले आ आअस सँ भाअ जे दू घंटा पअले ।पीठ पर बैग टागने ठाकुर जी एकटा अअनि समै मे दरभंगा आ संकरी स्टेशन पर देखा सकै छथिन आ ई माअंक सीजनल अक्कट हुनका कनि के नइ छोड़लक । ने ओइ गूपक भेलअन ,ने अइ पटटी अक्ख ससरलअन ।ओ अखंड याती रहलअन आ पूरा मंडली अला चरै रहलै अधिकारी परेशान अक्ख अक्ख कमा के नइ दै अक्ख ,आ अनिस्ति परेशान अक्ख साहेब कमबा नइ रहल छथि ।मुदा एहने मे किको एहनो सूरमा सब

छैक ,जे चाहै छैक आ ठाकुर जी नइ आबै मडिनी ,ओ बैग ल' के ,कट ल' के ,मोटर साइकल सँ ठाकुर जी के धिदा करै छैक ,आ ठाकुर जी गाम जाइ छैन ,मुदा गाम मे रहै छैन ि धियान रहै छैन मोबाईल पर ,हरदम चौकै रहि आ केकर फोन एलै ,केखनो कंपनी ला फोन केलकै ,ि ऊचक के देखि ,केखनो आ बुचची सब सेहो गलै सँ अंगटोन बजा देलकै ि परेशान ठाकुर जी बच्चा सब के डेगा दै छैन ।केखनो डेरा के फोन बंद क' दै छैन ,केखनो बैटरी आकाश दै छैन आ केखनो काल ओछेने पर मुसक्याइ बहन्ना सोचै छैन ।ई मुसकएनै किको बेर कआया के खराब लागलेन ,पञ्चले टोकै रहैन ,आब टोकनै छैक देलखन ,मुदा एखनो कस्यो काल कआया िक' लागै छैन ।हाय रे ठाकुर जी ,ठाकुर जी केकरो नइ भेलखन ,ने कआया आ बाल बच्चा के ,ने आकस मे रश्म के दू पैसा कमा पेलखन ,ने अधिकारी गियपर दू पइसा लुटा सकलखन ,ने रोड पर शु मोन सँ खरख आ के भश्म गाल पीक फेकलखन ।ठाकुर ज्ि रहलखन परेशान रहलखन आ सब हुनका सँ परेशाने रहलै ।

झड़बैर कालक सिर सम्माननीय इंस्पेक्टर साहेब आनंद छी छैन ।अपने अंहजीक बाल सखा छी आ अपनेक घर अला सहरसा मे अछ ।अपने अंह जीक साि साि पटना मे जनि नष्ट कएल आ चापलूसी ,चमचै आ जासूसी मे अणा भेलौ ।पि नइ कोन सुखे मडिनी मे चीइस देलौ आ ऐ ठाम अंहजीक जूअयर इंस्पेक्टर के रप मे ख्या छी ।ई जूअयश्टी पदरप मे नइ शिषेण आ अ या रप मे छैक ।जइ समै आनंद जी अला

जिइन केलखन ,झला दू भाग मे बँटल रहै अंह जी ,सहरसा आ अंह जी समसीपुर मे ।आ आम्निंद जी आश्चि दूनू पाटी ओं रिझार घूम' लागलखन ।लोक अनुमान लगबै ,की लेल आबै छै आम्निंद ,लोग शक करै ,शिशिस करै ,आरोप लगबै ,अपना आप के बचाबै ,मुदा आम्निंद एबा-जेबा मे कोनो कमी नै केलखन ,जेकरा जे बूझबा के होए से बूझहै ।आ आम्निंद जी अपन काज अर्यि मौन आ समपथ के सां क' रहल छथिन ।केओ कहै छै जे आम्निंद दूनू गुट के एक करबा मे लागल छथिन ,दोसर कियई छैक जे आम्निंद भेला बाहण,ओ एक एक करथिन ,ओ ि इएह चाहि अ अंह जी कमजोर होए आ ओ एकर सनि ,झोड़ा-झपटा आ कमंडल सञ्चि अंहासन ल' लै ।सिर कियई छैक जे ई आम्निबा जासूसी क' रहल छै ।सब ठाम अपन कैमरा आ टेप सेट केने रहै छै आ जा के अंह जी ओइ ठाम बोकस दै छैक आ ऐ बोकराए क' पइसा अंहबा एकरा दै छैक ।मुदा आम्निंद जी की क' रहलखन से मात आम्निंदे टा जानै छथिन ।आम्निंद जी क' असत छैक मौन ।जे जेकरा बाजै के छै ,से बाध ले ,ओइ पर कोनो पक्ष या नइ देी ,बस मुसकएी ,आ मुसकीओ छोट-छीन ,अहा मुसकी बुझ्यौ या नया छी खिन ई अनुमान लगायौ अ आम्निंद जी क' मुह कञ्चया सँ टेढ़ छेन । आ बस नइ बजबा के कारणे ई अनुमान लगेनए कञ्चन अ आम्निंद कमहर छथिन आ बस एही कारणे ओ सब गुट ,टोल आ पटी मे सीकाययछथिन ,बस सीकायथछथिन ,लोकथय नइ ,अएक ि गुप्ति योजना मे या ि अंह जी संग शाअल रहै छथिन या फेर अधिकारी गियसब संगे ।मुदा अहा ईहो नइ कञ्च सकै अयै अ आम्निंद जी के बाज' नइ आबै छअ या हुनका संग मे शिषयक अभा छैक ,यअ

मौका अलैँ छैन ि बीटल्स ,लाग माचय,बहाड आ अगबैग पर
अबाँ र प सँ घंटा-दू घंटा बाअ सकैँ छथिन । ि एक टा चीज
नोट कर अ अभाअ ,चुप्पी आ मौन हुनकर अस्ते टा अअ,आउर
अछु नइ ।

आम्निंदजी मे एकटा आर गुण छैक भअँ । अधिकारी गियमे ई
भक्कि र प मे ख्याँ छथिन । डेली जेनए ,अना बजाओल जेनए
आ अना आज के नइ एनए । अज साफ केनए ,रिकारी आननै
, 'अिय ठीक अअ ने ' ई पूछनै । दोहा क' दोसर लाईन
बाजनै । हँसी-खुशी क' मौका होए ि हँसनै आ कोनो दुख-अषादक
बाँ होए ि मुँह लटकेनए । साहेब जेकरा पर पसनन् छथिन ि
पसनन् भेनए आ साहेब जेकरा पर नराज छथिन ि आम्निंद सेहो
नराज भ' जाइँ छथिन । आम्निंद जी सूचनाक िईर छथिन ।
के क' छैक ,के केकरा सँ भेट केलकै ,केकरा केकरा सँ नइ
पटैँ छैक आ के केकरा मे सटेने छैक ई सब सूचना आम्निंदजी
यि सनि राअ दैँ छथिन । आ केखनो काल ि शक होइँ
अअ अ आम्निंद जी आदमी छथिन अ पेन डाईँ । आ एक अ
अनय भूषण सपना देखलकै अ आम्निंद पर अंहजी एकटा दीई
फेक देलअन आ आम्निंद ओछैन बअ गेलै ,आ अनय भूषण दोसर
अन सपना देखलकै अ अंह जी एकटा मंत बाजलअन आ आम्निंद
नटुआ 'जँका नाच' लागलै । सिर अ फेर अनय भूषण सपना
देखलकै अंह जी आंअ मूअ के अछु मंते जँका परहलअन,आम्निंद
कंडोम बअ के साहेबक जेबी मे चअ गेलै । अनय भूषण कहैँ छैक
अ ई सपना नइ स' छैक ,हमर आंअ देखल ,मुदा अंह जी
कहैँ छथिन अ अनयबाक अमाग बेशी भ' गेल छैक,एकरा ईलाज
चाही ।

वनीं उत्तमल (जानकी नरीक रौका पणि गां दशम एं
 स्तुर्व क्वक तिणिनिरे आयक्जि पवचिचा आ णिषीरे
 तिणि बहक- [पक्किज कश, अरनिथ झा, जिजेश झा,
 वणि खान, अविदि कुराणि झा, रनीन नाथ ठाकुं,
 शेफाक्का रिा, दिक्का कुड्डि, आकिं. व हि, भिाणि झा,
 चिडि पौटील्य, राया देी, कृष्णा िाद] तिक्कि- टा व्क्कप्ट
 आ अनुदि: वनीं उत्तमल)

डॉ. पक्किज कश, कल्सी विश्विदालय - अर्नषणक वषिय छै
 जानकीक िसर्विक नार

हरणि बड ि नणि भेल जानकी नरी िजिनिरे रनाओल
 जा हिल अक्क. चचा कंि छलहुजे तथा 'दिेही'- ि अपना
 ब जानै क्यै जे क्यलारे हरणि बहक बुक्क-शक्कि छै,
 ओक्क विं अ िर अनुगि छै, अवभति स्नेह छै आ दिेही
 कहला रात िपनर्तिक ििवि हय छै. दिेही रग देहक,
 रग क्यलाक ििक छै. ओना हरणि क्करागरे एकटा शि
 आबै अक्क जे ििके िसर्विक नार की हिय? ओना
 जानकी रलिब जनकक पुती, रैक्कली रलिब क्यला के,
 िि रलिब ह कि फाि ' उत्तमन भेल, पुनीणि रलिब
 पुण्य िखिन हुनकि अ ली नार की छल, ई अर्नषणक
 वषिय अक्क.

आजुक दौरै शक्किणि शक्क के बुझबाक आशिकि
 अक्क. हर आयके जुगरे एक रलिब एबि टा बुझय क्यै,
 जे पवके जिब द' कय, रिक्का कय, ओ नाकि
 िसर्विक शक्किणि हइ छै. अपना ब नै जानै क्यै
 जे ओ िि छलक्खन जे जखन िर रना क' देलक्खन जे

हर अहा के निनि नै ल' जायब ि ओ की बाजलवखन.
बाल्सीक रिरायणक रुक्मिणी, गीजी रिरके ब्रिबि कहै
कहलवखन जे हरि क्कि हरि ब्याह क न ककम्मा किनि
देलक. अय ध्याकाड रे न्दभमअक. गीजी ओक रयरे
स्टैड लेने छलवखन जे अहा हरि क ना नै ल' जायब. ि

शक्किणि नाँ के पयाय हयि अक. दशही रे जखन
दुगा पशिीके हर-अहा पाठ काँ छी, खिन एके चीज
बा-बा कहै छी, 'शक्किरि पेण स्थिति, नरसस्यै,
नरसस्यै, नरसस्यै, नर नरु'.

अरनिथ झा, स्थापक 'द्विदेही'- स्त्री शक्किणि के पैग
उदाहरण द्विदेही छव्यन

'द्विदेही' कव्यक लेल, ई गिल अहर अक आजुक जुगरे.
वदेह आयल 'द्विदेही'. वदेह रलिब कनका देह नै छै,
हयि छै. देह नै छै रलिब लेकले . कन सीथमनै,
कत कछु नै. कछु नै कत .

हरि रक्कि क ना राजक कछडल लक आगा बयि,
ओ भेल वदेह. 'द्विदेही' हे शशि नि आयल छव्यन. द्विदेही
गिनि आयल छव्यन. गि यानी द्विदेही, रैकली छव्यन.

किा के एकटा रहतिकाकी आवयान छै, 'बेटी बचाउ,
बेटी पढ़ाउ', 'रे द गलमचाइलड'. अक रारलारे गि ि
बर्बके हरि 'रे द गलमचाइलड' कपिनक ब ि पैग
उदाहरण कय नै लखाह दै छै. ओ पकल बेटी छलवखन,
जे गिनि किकालल गेल छल, बचायल गेल छल. अक
हिँ 'रे द गलमचाइलड' पकलुक ि कि छलवखन हिय.

‘‘दि द गलमचाइलडक’ एम्बे ‘डि डि कि छली.

द डि ई जे जखन हर नाँ शक्तिकिणि के गप कयि
 कयै, जखन नाँ शक्तिकिणिके ब पैग उदाहणि हरि
 िजी बुझाबै छथन. आ हरि बके कथला स्फूर्तिरे
 नाँ शक्तिकिणि तेँ युग अक. कहबय क ना? हरि
 अकठार िजीके लेल सयि छल, अक डि पैग
 शक्तिकिणि की देब अहा? की कहब अहा? हुनका डि
 चुनय के अकि छल. हरि बहके विदुषी रैतेयी, गागी
 जे भेल छथन, के नै जानै अक हुनका? ओ ब कतेक
 विद्वान भेल अक, ई नुकायल नै अक. हुनका भहक पढ़ैक
 पूणमआजादी छल. विद्वान भेलखन ओ, शास्त्राथमकेलखन
 ओ. कथलाके जे स्फूर्ति हिल अक, कथन दुकाया
 नेति केलक. दू ि-नि ि-पाच ि लक बाद दुकाया
 ओ काज केलक, रुदा शुरुआ कयि भिल-कथला डि
 भेल, रैथली भिल. कथला यि जानकीक हय ग जि
 िके जे डि भेलखन, डि ओ रयादा पुरष तर भेलखन.
 एत्नाक कष केलाक बाजिद, बादरे िरे रा गेलखन.
 ि नरि या िके जे जन हयि छै, ओक बारि
 कनक बुझल नै, बहु करके बुझल हिय. कक कै छी
 जे आगि पि वानय बला. ई केकि कम्पेगि छै? ि
 कयि के छथन. कथला के, रैथली छथन ओ, खिन ई
 डि हरि-अहाके कम्पेगि बनय छै नै, हरि-अहाके रुपि ई
 कजम छै नै. हरि ब जखन जन लै छी खिने हरि
 बके दुइटा-निटा कजमभ’ जायि छै- राकिजम ककिजम
 आ दुकाया-दाकि कजम बहु डि कजम ब छै. रा जखन

राटी छै, रिंरि छै, ओकहि हरि लेल कजमछै. खिन अहा जो ओक राइट-पाइन के क्यै, अहा कत कछु क' हिल क्यै, कछु लायक बक गेलयै, रि अहाके जर रि ओक राटीके द -बी विशि कजमउगिबिक यिा कबिक चाक.

डा. गिजेश झा, कल्लू विश्वविद्यालय- जानकी आजुक जर रि एकटा कल आयल छल 'लगे है रुनाभाई'. हरि बेटी ओकी डीडी प बि-बि देखय. रहातरा गाँके ल' क' हर एकेडकयन ब 'ह प'ि क्यै, पढ़बै क्यै, रि रि कबि 'ह आक गेल छै. रुदा, गाँजीक रूल भानिके ई कल नीक जेना रिखै छै. जेना रिद कलिक रि रि छट-छट बाल-बक्या ओकी बि-बि देखै अक. किना हरि लागयये जे जानकी जेकी व म्म लाकज कयि छयन, वी'न्ट कयि छयन, जानकीके आयके कयलारे जर रि अक.

हर राकके चलै छी जे स्ती शक्तिणिके रलिब छै जे क्ीजन रेकगिक पारि ((कणम लेबक करि) ह बाक चाक, ओट नरी ह बाक चाक आओ एकटा किमि. जे गाँक कीब भ' कै छै जे पविभाषा, ओ यक भ' कै छै, जे रकलाक जे अकिा छै, ओट नरी छै, ऊ ओकी हैण्ड ओरि कायल जाय. ई हयि स्ती शक्तिणि.

बहु ल क कहै छै जे अहा भ भारिरे सिंीक पूजा की छी रुदा अहा पुरषक लिनारे क्तगनक कटे ी टि (काक दि) देखय, किना लकीक देखय, जे निक दी छै, रुदा निक अकिा नै छै. रि ई बहु रि बह . शल

इरिरे अक्ख. जो हर ब देीक पूजा की छी ि ओकी आर रक्खलाक दैक्क जीनि प की भिा छै. ओकी की भ' हिल अक्ख या इम्मारिरेट की भ' हिल अक्ख. दुनू िहिक वचाि अक्ख अक्खरे. ककि लग कहैि अक्ख जे अहाक देीक सरि प द' क' हुनका इम्मारिरेट नै क' देल जाक्क हिल अक्ख, रुदा हुनका िखा देल जा हिल अक्ख. ओयि द ि गुप अक्ख जे रानैि छैथ जे ई रीथलक्कल स्ट्री छै या देीक सरि परे जखन पूजा क' हिल क्यै, जे क्खन्नु रिसे एकटा टेक्शन छै, देी आ रनुष्क बीचक दूी काफी कर हिय छै, ओक्क कटिस्ट रे कत्त नै कत्त कात्तिक अ ि की छै.

हाल-क्कलहाल कते आन्दलन भेल अक्ख जे देीक ल' क' र लाइज ककि कक्काश कायल गेल अक्ख. जेना रहाषिरे शेकीी गिठन कलिक क्कान आन्दलन रे. ओक्क ठार िीक या लक्कीक इरेजनीक यूज की ल गके र लाइज केल गेल आ राग कलि गेल जे ई खेि, ई राइट, रक्खलाक नार प टा फि भ' जाय.

गाी के अहा अक्खरे कयि लकेट कबि. गाी के देखय लेल अहाके ई रझय पडि जे ओ . शल वफारमि (ारक्क िुकि) हिक्कन. हुनका राजके ल' क' की वचाि हैन. . शल वफारक्क ल' क' की वचाि हैन. इडीवजुलिक ल' क' की वचाि हैन आओि कम्पुटी क' ल' क' की वचाि हि. गाी बहु चिनात्क िुकि हिक्कन.

ुि दू िीक ि भ' कै छै. अहा अक्खति बला

पर्मिंके गाव् वदय. ओव्हेरे अहाके ककि केव्दक्कटी बनि,
ककि एत'प्टक्कटी बनि, ई शिक वषिय सि' छै. गा'ी
रहू, केलव्वन जे जो अहा भा'िरे त्राक्क पर्विमि
आनैल चाहै छी, त्राक्क 'ु'ि आनैल चाहै छी, 'ि
एकटा व'िख्मा'ि क ट छैन गा'ीजीके 'इट इ बेट'ि टू सीर
थू द टेव्दशनल, इफ यू डाउन द टेव्दशन, यू विल डाई'.
अहा पर्मिंके रागव्दशम कबि 'ि अहा नीक पवणार पायब.
हुनक'ि जे पू'ि गिठन छै 'ु'िकि उप'ि, हुनक'ि जे अ'िच
छै टेव्दशन के उप'ि, केना इस्'िराल कएल जाय त्राक्क
'ु'िरे, अक्हेरे गा'ीजी के ओव्द पव'िदृश्यरे हर'ि बके
देखय के जर 'ि छै.

एकटा क्क'िब छै, 'थी हडिड गिरायनाज'. कल्सी
व'िश'िदालयक इव'िहा व'िषयरे जेस्टेड 'िक्क'ि रे ओ छल.
क न गिठन ओकी प'ि के कलिक जे 'थी हडिड
गिरायनाज' रे 'ी'ीजीक ल' क' क्कछु आपव'िजनक गप
कहल गेल अक्ख, 'ि ओकी ओव्द ठार हिटा देल जाय.
आओ'ि 'ु'ीर क टम एकेडक्क काउक्क लरे ओव्द गके
व'िक्केरेड कएलकय जे ओव्द बा'िरे ब'िऊ जे हर'ि की
कबिाक अक्ख. छह- 'ि 'िटि ओव्द प'ि बह भेलय आओ'ि
जे क' 'ीजन भेल ओव्द रे ई भेल जे व'िक्किन व'िचा'ि-व'िरशम
हेबाक चाक्ख. क'क्कलाक गिरायणक 'ेह दू-'ीनटा जिम छै.
जे 'ी'िक जिम हर ब प'ि'ि छी या 'ुनय छी, ओ एक
जिम छै, कई आओ'ि 'ेह जिम छै.

हर'ि बुझाबय ये जे गा'ीजीक लेल 'ी'िके एकटा लि
राडलक 'िहे हिय. गा'ीजी आओ'ि गिरायणक 'ि'ि छै.

गाँजी अप्पन ओट बाय गाफीरे क्खने छथन. ओ बचपनरे बड डपिक हियन, भू-र्षि डिडि थिन जेना कन आर बच्चाके लागै छै. हुनका कयि एकटा रक्खला काजिली हिय, ओ हुनका की कहलक. गाँजीक जीनिरे, रक्खलाक ल' क' जे हुनका अचि हिय, हुनका क्खनगी अक्खि बड गि भावै छल.

गाँजीक ल' क' ई देखय पडि. एकहि हुनका रा, द गि हुनका पती, पतीक गि जे हुनका बिहि हिय, ओ बहुटा फॉर्मभेलय, रयक गि. गि गिरायण या गिरनारा गि जे हुनका क्कहि हैन. रक्खला काजिली हिय, क्खनका गि हुनका बे गिरि हिल. ओ कहलक्खन जे अहाके डि लागय ये गि अहा गिरनारा का पाठ कर. ओक्खि हुनका गिरायण गि क्कहि शुरु हयि छै. ओ रानै छथन जे लिलीदा दागि क्कहि जे गिरचरिगिरन अक्खि, भक्ता के जे क्कटिचि छै. ओक्खि रे गितर छै. एकटा खा टेक्शन के बि, एक खा इटिगिटेसन के बि, गाँजीक आयक्खया हैथ.

गिजि हिरू ब प मली क्कहि छी. गिकि कहानी हर ब नेना गिनै छी, हुनका अपील जे छै, त्माग जे छै, पवति जे छै कि बाद अइय क्कथला रे त क्कणि हयि छै, ई बदि हेबाक चाक्खि. खिने गाँजी औ गिजीक ख्याल पाबि गि हयि.

डॉ. वी. खान, क्लस्सी विश्विदालय- विदापर्व आ जानकी हरि बहक इनेज छथन

कन स्त्रीक खा के बड रक्खरारछि हबय लागै छै गि

ऊ बड डीय बला चीज हयि छै. जखन अरनाथ झा जी गी नरीक गप कहलखन ि हरि रिरा आओ रिराच दुनू शुर भेल. जे आय वि हर ब गिरनरी या रैस्कृलीन (पुरष) नरीक गप ुनय किये. जे गिर गीक छथन. एीं टू डू वंद रैस्कृलीनीटी (ब कछ पुरषतिक गि हयि अक्छ). खिन हर गिष्टीय गिजिनीरे फेक्कज (नागिदी) के एकटा कायकरक ल' क' आओ ओक नरीक 'क्कबेट क' की, ई कलकुल न गप छल आ आओ बेी उत्कुकि 'ह भेल. उत्कुकि बाद द ि कड़ी आबय छय, जखन अलिकन कयि लागय छी जे ओक सिरप की हेयि. एकि ब रिरहत्पूणमगप ई जे एकि अथमकी हेयि. जानकी नरीक अथमकी छै आ एकि हर दूटा खडि रे देखय लैक चाहै छी.

क्कथलाक व बिलक गि पि हकि रुदायके, हकि गिनके, हकि देश के, कछ-कछ गीकक जर गि हयि छै. ओय गीकक जर गि ि हयि छै, जे ओ गीक के बल पि ओ रुदाय अपनाक एक गक्किक क्क कक्क-क्क ल' जायि छै, िक्करे वंदापर्व आ जानकी जी छै. इनेज के गि पि इसराल कएल जायि छैथ. जना अहा के जीए डीए (गागि स्सुर्व एदिशम कर्व) पहुचैक छल ि बहु ठार इनेज छल जे कायकर ओयि भ' हिल छै, क्कना वंदापर्व या जानकी हरि बहक लेल इनेज छथन. ओ इनेज जेकीरे हर ब बहु गक्कि गि ई उदगा क' कै छी जे वंदापर्व हरि, जानकी हरि. ई ठीक अक्छ रुदा ओक बाद की? ककि ल क अक्क भागारै बै ल

या फेँ शह-दि-शह विदापर्व पमिरनाबैँ छथन, ओ विदापर्व के अथमककि बुझय छथन-अह वषिय प हरि खा कलचस्पी अछ। ओहू प हरि कलचस्पी ये जे जानकी नरी जे ब गटे एयि 'कलबेट क' हिल छी, जुटल छी या न्देश दैक ककाश क' हिल छी, एकटा खा रुदाय के या णिष्टीय गिजिनी रे क' हिल छी ि एक जगह ककटेड नै हियि, ई न्देश ब जगह जयि. ओय न्देशरे हर ब सयिकिकि वशा कौँ छी?

'दाविकि रक्करारछि क हर नीक बिदय लागै छी, लेकन जे गाउडि वियकटी छै, िक्सिकि छै, कथला, रैकली, जानकी, णि बके, ओकरे बहु गैप छै. हरि लगय ये जे जानकी नरीके रनाबैक जे पकल फली या ओकि ब पैग अथमह यि, ओ गैपके एडे कयिरे ह यि. जयि व दारि हर कछु आओ बाजै छी 'दाविकरे कछु आओ बाजै छी. आणि कछु आओ ओँ छी, िसर्विकि हरि बके कछु आओ अछ.

बहहाल, ब पैग कनेतट कथला क' ल' क' दूटा जे इनेजक ल' क' गप केने कि, पकल विदापर्व आ द ि जानकी. हरि रिकक जो कन भी स्किर्व के आगू बढ़ाबे चाहै छी ि एहन-एहन तूतके अहाके खजय पडि. तूत के खकके ककालय पडि, जे राजक रिर णिके, रिर गिके एक तूतरे बाक कय. अह लेल कथला रे ओ कन्हे पडि, जे एहन कन-कन तूत अछ जे अहा के कम्युनकटी क ल' ज' कय.

हरि लेल दूटा तूत छै विदापर्व आ जानकी. जानकी ि

नै, जे ओ रक्खारखि देी छल, िजे ओ ळ्खलाक बेटी छैथ. बेटी जे हयि अक्ख किनि हर बेटीयेटा नै कहै क्खये. िर िजा की पती िनि नै हय छक्खन, जनक के बेटी जानकी हयि छक्खन. ओ बेटी जेकी हकि गार रे कह छक्खन जे ओ गारक बेटी छक्खन, ळ्खला के बेटी छक्खन, ि ओ हरणि वयि छैथ. ि हरणि लेल अदुि छल, ि हरणि लेल स्रणिीय छैथ, ि हरणि लेल ओ न्दिनीय छैथ. तयाक्क ओ बेटी छक्खन.

आब शि उठै छै जे ओ बेटी अिपना बहक एत पेटटेशन की अक्ख. बेटी के हर ब कयि-कयि ल' जायि चाहै क्खै. ळ्खलाक बेटी ि कयि-कयि टेलि काँ क्खै. जे हरि आय वि प मल अनुभि हिल अक्ख, जे हर देखलहुयि, बेटीक भेला पि ळ्खला, जे जानकी के ििी छैन, बेटीक खुशी अनुभि, या चेही पि खुशी जे हरि बेटी भेलय, आय वि हर नै देखने छी. हरणि नै लगय ये जे िसर्विक िि पि जानकीके दिना ळ्खला एखन वि क' कलय ये. हरणि नै बुक्ख पड़य ये. खै, खिन जानकी आ वदिपर्वि कन एहन तूतरे ब गिमआ णिक्के बान्है छक्खन, वदिपर्वि के बाँ रे क्कछु खा चचा शुर कबि आ ओकी जानकी के िफि ल' जायब.

वदिपर्वि हरणि ख्याल थिरि कवि छक्खन, जे 'देव ल बयना बजन ळटा' ` शुर कयि छक्खन, जयि ऊ बली के, भाषा के, कज भाषा के आओ कजणि के गौि क्ख ध्यान कयाबै छक्खन. हर्वि बिहुि पक्कने जखन ओ कहै छक्खन ओ आर लकक िफि, गाकि िफि, गीक्कनक

िफि, पक्वहारनिक िफि, जे पुरषाथक्क पर्वभाक्कि कौंकि जे
 वंदापर्व के पर्वभाषा छल, अहा ओक्क पुरषाथमके वंलाइज
 कयि क्ये, जखन अहा ओक्क रि भक्कि भा ि गुज्जि छी.
 क न रि भक्कि भाणि गुज्जयिके जे पदर्व छल, ओ एक्कट
 पदर्व नै छल, ओ बहुि ही बहुि बअल्टनि, बहुि ही
 कॉरन, बजक भाषारे, रैक्कली भाषारे, जकी पटगरनीरे,
 चौीरे, पीरिरे, इरे आ हकि स्ती सीलिषी भ' क'
 गायब कय, बुक्क कय, ओकी क्यहिरि उर्वि कय.
 तयाक्क हर ब गटे जानै छी, याजलितय जे क्यलेरे
 भेला आ हुनका सप्प कहल छैन आ हुनकि सप्प लाइन
 छैन, 'रिक्क कणक्क जय क्यला क्यहिरि' एकि अथम
 अक्क जे जो अहाक रिक्क कणक्क बुझय के अक्क ि अहा
 क्यलाक क्यहिरि के देखू. ओ क्यलाक क्यहिरि
 िक्कीक, क्यलाक बेटी, क्यलाक स्तीरे भेटि. क्यलाक
 एक-एक स्ती ओ क्यहिरि पालन कौं आ कायर कौं
 छै जे क्यला के ओ हायि स्टेज वि ल' जायि छक्कन,
 जे हरि बके एकटा गक्क ये. हर ब ओ इनेज लगा
 के जे क्ये, फाइनली ओ अल्टीरेट वियक्की िफि वंलाक्क
 कयि चाहै छी. ि वंदापर्व पुरषाथमके ओय स्टेज कि
 ल' गेलक्कन, ओ सी कि ल' गेलक्कन, जयि बली आ
 भाषा अक्क. एक गप क ध्यान कयिब चाहै छी जे रैक्कली
 क न भाषा नै छै, अहा जानकी के 'ह रैक्कली कहै छी.
 ि दी जानकी आ भाषा इतितीइडि भ' गेल छै, कल गेल
 छै. ि ई आइडिटीफाई कबि रुक्कल छै जे हर रैक्कलीक
 क्विट क' हिल छी, दीक पूजा क' हिल छी या अहा

भाषाक क्विट क' हिल छी. भाषा आ रैथलीक एहन उन्मि
रनयि जे छै ओ वक्थलारे देखय लेल भेटय ये. ठिक्करे
जानकी जे छै, ओ बहुि पैग राध्मरक िं पि आबै ये.
द ि गप जे गाँि, वंदापर्वि आ जानकीक बीच पस्मि
क न ूत भ' कै छैन? ओ पस्मि ूत छैन जे आय
वि सिस्टनम . चक एकटा रस्सा हिलय ये. ओ जखन
स्तीक देखि त्माग काँि, स्तीक देखि बक्लदान काँि,
स्तीक देखि एक खा िचारे जेना ाड़ी पक्कनै छै, रुडी
झुकैने छै व्दतखन, पुरषक ि जेना िीक फट या
दिना िरक क्कना नै देखय छैयेन, ि एकटा लेबल लगा दे
छै, जे नै-नै ई स्ती शक्किणि नै छै. ई ि बहुि करजि
छै. ई ि अबला नाँि छै. एकी स्ती शक्किणिक जरि
छै.

गाँि ओक्क शक्किणि के पलक्क देलखन. स्ती के या
ी के जे अबलाकणि भ' हिल छै, ओकी ओ बला
बना देलखन. तया की ओ त्माग के, बक्लदान के, चाहे
क न बेटी, स्ती हक्कन, ओकी ओ कहलखन जे शक्ति
टा त्माग क' कै छै. जे करजि हिँ, अबला हिँ, ओ
त्माग कखन नै काँयि. ि गाँि के जे बहुि इम्प टे छैन,
जयि ओ व्दसक्क . चक करी छल, त्मागक, बक्लदानक
जे एकटा नीचा सिं पि िक्ख हिल छल, गाँि ओकी
अकस्सा टनमक' देलखन आ बओक्खन जे त्माग आ
बक्लदान की छै?

रुदा हरि शि त्माग, बक्लदान, जानकी िआगू के अक्क.
वक्थला या द ि जगहक बेटी त्माग ि क' देलखन रगि

हुनका पि की भेटल? हरि नै लागय ये जे कछु भेटल.
 यू टयूब पि जखन अहा जानकी दिनाके टाइप कबै, एक
 टा व गिल, प्रपुल कलघरि जानकी दिना कत नै देखाह
 पडि. ई हरि एकटा अनुभि हिल. अयि जानकी दिना
 एकटा लग गाळ हिल छल आ जानकी दिना 'ह हयि
 अछ, हरि लेल ई एकटा खबि छल. प्रपुल कलघरि रे
 जखन अहा जानकी दिना के टे कयि लेल चाहबै ि ओ
 अहा के कत नै भेटि. गिर न्दिना अहाके ि ि भेटि.
 खिन शि ई छै जे जानकके स्त्री शक्तिणिक र परे,
 उत कि र परे देखके ि बहु ि एक्ट्युट के, लिमुके
 लगाके आक्कि हरि बके भेट की हिल अछ? हरि
 बके ि जानकी बके भेट की हिल अछ? हरि खाल
 बिहु कर, बहु ही आणि के ि पि. जकि एक्टवटी
 छै, जकि एक िहै टि केक्जर जेकी कहै क्यै हर ब,
 ट केक्जर के ि पि ि कायकर, ि हा-भा, बे ि
 बि ि ट केक्जर के िफि ल' जा हिल छै. िसर्विक
 पर्विमि कयि भ' हिल ये, क ना भ' हिल ये, भ' हिल
 ये या नै भ' हिल ये, हरि बुझने ई बा कि के . चनाय,
 एक-एक आदरी के रान रे बै'नाय बहु जर ि ये. नै ि
 जानकीक उत ि रनेनैआय, जानकीक गप केनाय, हुनकि
 दिना केनाय, हुनकि फट बनेनाय, हरि लागय ये एकी ि
 कछु नै भ' कय ये.

ि. अर्विदि कुराि झा, डीन (व्वाक वकाय), रहातरा गाी
अिििष्टीय क्न्दी वश्विदालय, िि - जानकी आ गाी

ि खिय अप्पन राज

हर ब भौभाग्यशाली छी जे ओक् पर्वति भाषारे बक्क हिल छी, जे कक्क जगजिननी जानकीक 'ह रातभाषा छल. गिरायणरे एकी रानुषी कहल गेल अक्क. हनुरान जखन लक्कि पहुन्चाक्खन, अश क ठिक्कारे ओ िि ि स्किरे नै बाजै छैथ. तथा, तथाक्क स्किरे लक्किरे ब जानै छल, ि िीजीक वशा िपि कयि लेल, कबिक लेल अर्ब बुद्धरान हनुरान रानुषी अथाि रैक्कलीरे बाजय लागै छैथ. तथा ि रैक्कली लक्किरे जानयि के? आ द ि बा जे एक वनक बाद ओक् दिशरे अप्पन राटिभाषा कुक्के आहाक्कि भेनाय सीभाविक छल. ई कहल जाय छै जे आत्मीयाकिक बि राटिभाषा बनबैक छै ओ दुक्कयाक क न भाषा नै बना कै छै.

आब िल उठे छै जे एक िफि जानकीजी, एक िफि िफि गाीजी आ एक िफि हरि आजुक राज. ि हर कहब चाहब कयि कक्कलाक बेटी, रयादापुरषतर गिरक जीनि मीनी जनक दुलाी जानकी, आ कयि गुजगिक िबरिी नदीक टि ि त्र, अक्किक बल प ि जग-जीनिहाि रहातरा गाी आ कयि िक्कणि आ औद वाकीकणिक चौबक्कया प ठकरुडी लगौने ठाड़ अप्पन राज. िनो िन कशा जाय छय. खिन ओ क न फारूसा अक्क जे िन के एक तूरे बान्है अक्क.

जिग ' ओ रहतपूणमफारूसा हरि बाल्कीक गिरायणरे

जाके भेटल. दडिकाणियरे जखन ऋक्-रुक् अपन दुदाशक
णिम काँि कहै अक्ख, जे हर ब पिस्सा क' के पुण्य
कराबै छी, कि छठर भाग गिजाक जाय छै, खिन
हरि लकके गिक क उत्प्रां बिचायब अहाक गिजरिमछी.
गिह प उतेक्का भ' के गिर विजा काँि छैथ जे हर
अहा लकेन लेल शतु गिक क गि अशिय कबि. अक्ख प
जानकी के उक्का रहतपूणमअक्ख. ओ गिर किहै छक्खन,
'हर ब एयि बनी कयि लेल आयल छी, शस्त उठाबय
नै, कयि पिटि आ कयि क्खय रिम दुनू रे कन रेल
नै. एयि देश रिमके पालन कबि शिआ उक्का. अहा
जखन निगि क अवि पूगि क' के, अयध्या लौटब खिन
शस्त गिणि कबि क्कया गि शस्तक 'नि बिबुक्ख रक्खन
भ' जाय छै.' जानकीजीक ओ बागि भगानि गिर नै
रनालक्खन, रुदा किहि हजागि ताल बाद रहात्ता गाँि रायक
ई चिनक अनु गि केलेन आ क्कना शस्त आ शास्तक यिग
केने त्प अक्काक बल पिराटिभूक्ख के पतिगि रिक्का
क्खेलेन. हरि गैभाग्य अक्ख जे हर जनना जानकीजी

म्हद छी, आ करमा हर गाँिजी गिअपने ब जानै छी
जे जाक् गि विश्विदालयरे हर है छी, किगि पा'रे
'गिगार आशर छै, जयि गिगाँिजी अक्काक लड़ाई लड़ने
छलाह. जानकीजी जन लेली गिरिकि पुनौगि गार रे, रुदा
हुनक लालन-पालन भेलैन जनकपुरि, गि भागि आ नेपालक
बीच उनका बिदके क्कय स्मृक्क 'गि आगि की भ'
कै छै? ई हरि क्कगि गिगिगि 'ह ये, गिष्ट आओ
राजक बीच जो कन बिहय छै गि ओ स्मृक्क

बि हय छै.

जानकीक एकटा लकवय नार गीति ह छै. गीति नार के की अथमहय छै. खेरि हकि फाति ति तयागि बनै छै, ओकी स्मृतिरे गीति कहल जाय छै. गीतिक उत्पत्ति गिजा जनक दाहि जिजि काल भेल छलैन. रान्गति अक्क जे एकबेहि बहुि बड़का अकाल पड़ गेल, षि कबैक लेल गिजा जनक सयिहिके रूठ पकड़लाह आ हिजिय लागल. अक्क कररे एकटा कुम्भ उखड़ल, जाक्क जिगजिननी किट भेली, ओ रहाशक्कि छलीह आ हुनका दृक्क पाकि बादे अकि गिजकुरागि शी गिर क्कि निष डि कल छलाह. बादरे लक्कि जाके अकि ही क' कल छलाह. आक्कि गिर-गिणि युदक काणि ति भगति गीति छलीह.

गिरि गीति निन्दन नै कन स्ती भेल, नै कन स्ती हेहिह. सीरी तुलि दा गिरक एहन भति छलाह, जे हुनका निन्दनिक आगू कड़ि कारदे के फेल रानै छलाह. 'कक्क कार लजानि हागि'. तुलि जखन गीतिक देखै छैथ, ति अकि कि जाय छैथ आ कहै छैथ, ' ब उपरा कवि झुटागि'. रने गीतिके कन उपरा भये नै कै छै. ओ तुलि बडबड छरि गिर किहै छक्कन, 'गमिकहि तुनिन्दन जानी रन रानी, आपनी तुवि व या के छाह'. हे तुनिन्दन गिर, अहा आपन रप प रिडि नै कर, अहाके रप ति गीतिके छाक्क बगिबि नै अक्क. रपक ल' क' दू शब्द आओ कहेल चाहब. ई रप जे रने देखय क्यै अहा, ई रप व फमचरक्क या हडडीक क्कण नै हय छै. हर रानै क्यै आ शेत पीयति ह कहने अक्क अहा जे

केककि र प देखय क्यै, ओ अक्क रक्खि करे जे वचाि, जे आचाि, जे . च हय छै, ओका विप्लेत न देखय क्यै. ि लि ि एकदर ही छैथ.

लि ि जानै छलाह जे हुनकि उदाि पुतति ला राणि िि क' कै छैथ. वनिय पक्काक एकटा पदरे लि ि रा जानकी किहहि काि छैथ, 'कबहुक अबि अि ि पाई, धमाि उर्वि रेी कछु कर न कथा ुनाई'. की अथमभेल एकि? एकि अथमभेल, 'हे रा कक्य रौका देखके भगनि गिरके हरि उर्वि क्ये देबैन, 'ह पकने कछु कर न कथा ुना के.' दुकया के क न गिरायरे लफिकाडरे पूी युदकालरे िि अश क विटकारे बै ल की क' हिल छलीह, कि णिम नै आयल अक्क. रुदा की ई भि छै जे आदशकाि िि रयादा पुरषतर गिर के अ गि युद कयि देखन. अ ली युद ि रहादुगा िि अश क विटकारे बै के क' हिल छलीह. गिर ि राधर रात छलाह.

हर गिरके भगनि नै, पुरषतर रानै छी. बहु लि क पुछै छै जे अहा गिर के भगनि कया नै रानै क्यै, कया रयादा पुरषतर. गिरक काि दशथि के 'ह िनि गिनी, रुदा देखय, िि के िज, जानकी राणि के िज, जे पकल गिरे, पकल चिन जे ओ अपन पतीके दे छैथ, ओ यह कहै छैथ जे आय के बाद अही हरि पती हब, कय आओ नै. पकल कयाि पुरष हेबाक बाजिद अपनाके रयादाके रयाकाि खिखै अक्क ि ओ रयादा पुरषतर छैथ. आय रैकल राजक आशिकी अक्क जे हर ब अपनके रयाकाि कवि.

आब बचल राज. सिद्धि आय हरि ल केन राज कहै
 क्यै, किं कछु दी पकने 'ज्यापद जन' कहल जाय
 छल. माट अशक अपन रिखाताक उदेश्य किं किं
 छैथ आ कहै छैथ, 'ज्यापद जन क' दशम'. ज्यापद जनके
 रिक्के नीर्व व खायब, ज्यापद जन के गि नीर्व वरिशम
 कबि. राजक अथमकक्य टली छल. आय राज किं
 अक, भागिय स्मृति विभावि रसि राजरे गी
 पवतिरि नाकिक किं छैथ, शिवा पूज्य, ल करे हुनकि
 एहन विषा जे गिर पिक्के हुनकि नार लेल जाय छै.
 किना अगि भागि के पूर् विशरे जानल जायै छै कि दू
 व्यक्ति जिह एक रहात्ता बुद आ द्र रहत्ता गागि.
 वषु, बहा आ रहेशक दागि नै. रहात्ता गागि के जे विषा
 ल करान रे छै ओ कन हुनका रकालीन नायकरे नै भेट
 कै छै. भागि नै मूणमवशक राज रहात्ता गागिक
 आध्याकरक नेतिरे अपन भविष्य उक्ति पाबय अक. जब
 लन्दनरे कीलक र परे गागि आ ई गागि जखैन चमिणि
 पहुँचै छैथ, कि कमलीट टास्फरेशन, जेकि अहा काया
 र प कक कै क्यै. बहु ल ग अकरे आओ भी विशेषण
 देने अक, लेकन हर कहै छी जे ई र पाणि अक. जो
 हर एकटा चीज गागि कि खैय लेल चाही कि ई जे 'हाउ
 टू टा फॉरमयि'ल्फ'.
 रैकल बहु बक्या क' हिल अक अपन अपन फीलड रे.
 जे जयि छैथ व रिं पि छैथ. रुदा 'बेटी बचाउ, बेटी
 पढाउ', ई व फमहवियाणाक लेल नै छै, देशक लेल नै, ई
 वक्यालाक लेल बे गी टीक अक.

मि मि रनीनर नाथ ठाकु, जेएनयू- बाट देखाबैक अक्ख
 वक्खलाक दशम

हर मीन गप कहेल चाहै छी. पक्कल गप गाँी क' ल' क'
 जे गाँी के आय कना देखैक जर मि अक्ख, द मि गप
 वक्खलाक ल' क' आ वक्खलाक स्मिर्विक ल' क' आओ
 मि मि गप 'देही क' ल' क'. गाँीक जे बा मि रहतपूणम
 आजुक मिखरे अक्ख ' ई नै जे गाँी शार्विक पुजाँी छल
 बक्क ई जे गाँी शार्वपूष्कि युदक पुजाँी छल. गाँी
 षिक्क पुजाँी छल आ हुनकि कहब छल जे षिम
 शार्वपूष्कि कक्कि के जर मि अक्ख. द मि गप जे ओ
 आत्त्राल चनाके रहतपूणमरानै छलाह. ओ लगाँि रीक्क
 काँि छल जे राजके, अपना आपके. ई दू गप गाँीजी
 के भटा नेट्टि फिक्कि काँि अक्ख.

अहा ब 'गाँी' कल्र देखने हयब. कल्ररे गाँी दक्खन
 अरीका जिखैन आबै छक्कन, मि बड मि ने मि बै ल
 छैथ आ हुनकि बाट जक्क हिल अक्ख. कजना हेब बै ल
 छैथ, नेहर जी बै ल छैथ आ गाँीजीक ल' क' गप क'
 हिल छैथ जे क्कय गाँी आयल अक्ख आ ओ आबय बला
 अक्ख. आ ओ आक्क जाय मि हर ब गप शुर कर्व. गाँी
 आबै अक्ख आ मि मिरे आ पक्कल काज ओ काँि अक्ख
 जे, जे टिटि टे रे चाह दैक लेल आबै अक्ख ओकी मि
 टे अप्पन हाथ के ल' लय छक्कन. मि कहै छक्कन क
 जा वि अपना आ एकी बरे बनिबी नै हय कि वि
 हर अमिजी बहक बनिबी नै क' कब.

ई हरि लागै ये जे गाँक ये ही सरि प अछ. त्राकक
पर्वमिक लेल रुक्मिके जे कगुल शर्वपूषि षिक्क लेल
ओ बजैने छव्यन, यक्क गाँजीक अ ली र प अछ. आओ
अक्क अ ली र पक एकटा खा आयार अक्क जे हुनका
क्कथला जिड़ै अक्क. ओ खा आयार अक्क जे हुनका
आत्क ल' क' जे आयार अक्क.

कन लक जिनीर्व पि पिक ना भ' कै अक्क जे ओ
क्किपि 'लफले भ' जाय. जे लक जिनीर्व क' हिल
अक्क, हुनका रालूर हयि जे अहा आन्दलन क' हिल छी
ि ई नीक गप अक्क, पढ़ा हिल छी ि नीक गप अक्क रुदा
जक्कना अहा जिनीर्वरे आयलहु अहाके भटा बुई लकक
आगू आक्क जायि. एक बेी कम्मीटीशन अक्क, एक
आबेव ि 'न अक्क जे ई क्कतखन देखै अक्क जे कत
हरि अपरान ि नै भ' हिल अक्क, कत हरि म्मानरे
करी ि नै भ' हिल अक्क. भटा रौका पि देखय के
कक्काश कौ छै जे पाकि ही बैले बक्क हिल अक्क
की नै.

गाँजी कना अक्क किकल? गाँ के ई बुझा गेल छल
जे याता जकि बाहि अक्क, ओबे अन्दि 'ह अक्क. एक
रझ जो पूी दुकायक क्कला फीरे कत आबै अक्क
ि ई क्कथला आबै अक्क. आ एयि हिर अहाके क्कथला
ल' जायब.

जे नार ईदेही पडल अक्क कि पाछू वदेहक पूी क्स ।
अक्क. अहा जानै छी जे अषाकि बड कर उमक बड पैग
क्कला फि छल. हुनका देह चारि ठार रिडल छल. ओ

वकिलाग छल. ओ जनक भिेट कयि लेल जाय छल ि हुनका गेट प ि क्कि देल गेल. ओकी पाछा नम्ह ि व्खस । अक्ख, जे हर नै कहब.

ओ अष िकि तया भेल छलाह? जखैन ओ अप्पन राक पेटरे छल खिन हुनक ि रा िदिक आलचना क ि छल. बि हुनक ि क्कि बाजलव्खन जे अहा के भी ि जे अहाक बेटा अक्ख, ओ अहाक ि गड़बड़ क' हिल अक्ख. ि ओ हुनका शाप द' देलव्खन आ ओ अष िकि भ' गेलव्खन. एक ि रलिब ई जे ओक्क कालरे िदिक आलचना भि छल.

जखन ओ जनकक दबिारै पहुँचलाह ि पक्कने ि बहा ि भी ि नै आबय देलक. ब बाजय लागल जे ई नेना अक्ख, अन्ध ि क ना जाय. खिन ओ एकटा श्लक पलिक ि लक के लागल जे ई क न लक कयै? ि शि भेटल. अन्ध ि गेल ि दबिाँ ब हुनक ि शीकि देव्खके हँ ि लागल. ओ बाजलव्खन जे हर ि . चने छलहुजि एयि वंदान लक बै ल अक्ख रुदा एयि ि चरक्का लक बै ल अक्ख आ देव्ख हिल अक्ख जे हर ि चरमउपय गरे आक्क कौ छै या नै. फे ि हगिरा रक्क गेल.

ओ ओते तया गेल छल, ओक ि एकटा व्खस । अक्ख. ओ दबिारै बाजलव्खन जे हर ओक्क लक भिेट कयि लेल आयल छी जे अपना आपके वंदेह कहै अक्ख. वंदेहक रलिब हयि अक्ख जेकी अप्पन देहक ु ि नै हुए. ओ देखलव्खन जे िजा जनक दू स्तीगनक अभिग्न देह प हाथ िखने अक्ख, ि हुनका आओ िर चढ़ल.

रुदा ि वि ओ देखलव्खन जे नीचा आवा जक्क हिल अक्ख

आ पड़ि आगक उपि अक्ख. किं बाद णिजा जनक आ
अषा किक बीच णिद हयि अक्ख, जेकी अषा किक गीणि
कहल जायि अक्ख. अषा किक गीणिक ल' क' ल' क कहै
छव्वन जे राइडि आ बाँडी वलेशनक ल' क' ई दुक्कयाक
ब पाणिफुल टेक्स्ट अक्ख. राइडि आओ बाँडी वलेशनक
रिब्लर पर्वरी देशरे भेल, जयि शाणि आ रनके अलग-
अलग कलि गेल आ कहल गेल जे शाणिकि वजान पूी
विकव ि भ' गेल अक्ख रुदा रन क' ल' क' हुनका बके
क्कछु बुझयरे नै आयल.

किं ि वणिजी कक्क हिल हिक्कन जे एहन फेक्कज्ज
विकव ि भेल जाक्करे रक्कलाके व फमदेहक र परे देखला जा
हि अक्ख. ई नै बुझल जा हिल अक्ख जे ओकि पूणमी की
अक्ख? अषा किकरे ओ क्कबेट बड पाणिफुल णिका आयल
अक्ख. आ हर ई रानै छी जे क न क्कबेट णि वि नै हयि
अक्ख जा वि राजक अन्ध वि क्कबेट नै हयि अच्छी.
क्कवि र प विक्कलाक राजरे अक्क िहिक क्कबेट चक्क
हिल हयि, एकिक कि उदाहणि अक्ख.

याजल्लिय जखन अप्पन पती बाजल जे हर णिा पि
जा हिल छी आ आब भटा पिक्क अहाके अक्ख. अहा
एयि आरि कर ि ओ की बाजल हिक्कन. ओ कहलक्कन
छल जे अहा ई क न गप क' हिल छी. हर पिक्क ल' क'
की कबि? की हरणि न्मा लेबाक अविकानि नै अक्ख?
की हरणि रुति हेबाक अविकानि नै अक्ख? पूी िहै राइडि
आ बाँडी वलेशन पि ई क्कबेट चलै अक्ख जे को ने क
क न लेलि पि रुति भ' कै छी. चेनिक सणि पि हर

क ना रुति भ' कै छी.

गाँि हरि ख्माल चिचेनाक लेलि पि रुति हयके गप कयि छथन, जेकी बादरे ककि रात मीदी कनिक ेह कहने अछ. ओ काउटि हेजेर नीक गप काँि छथन. ओ कहै छथन जे पकने अहा अपन अन्दि . चू जे अहा रुति भ' गेल छी. जो अहा अपना अन्दि . क लेलहुजि अहा रुति छी ि बाहि अिहाके कय गुलार नै बना कै अछ. आ ई . चय बला गप अछ जे ई अपन चेनाक अन्दि पहुँचि कै अछ की नै? की हर राक्क क ि पि गुलार भेलाहक बाद रानव क ि पि रुति भ' जाय. हरि लागै अछ जे ई कथलाक स्मृति एकटा पाटम हिल हयि. हर कछु आओ शि क' हिल छी आया ओकि बाद हर ठीक अिहा के कक कब जे आब ओ चेना ओयि अछ या नै. रुदा कवि र प ई स्मृति पाटमहिल हयि.

अक िहिक स्मृतिरे स्ती वरिषक गप भ' कै अछ. हरि लागै अछ जे गाँि ओक िभावि छल. कवि र प किहब ककन अछ रुदा गाँिक जो हर देखी, जे गप जिजेशजी ेह कहने अछ जे गाँि के अक गपक केकट देबाक जर ि अछ जे ओ बड पैराना पि स्ती के ि किकक के जिनीविक बना देने छल. ओक काल हुनका भके जिनीविक बना देलक जखन भाँिय राज अलग-अलग थिा रिुति भेल छल. ओक काल ओ बड पैराना पि रकला भके ि बिहि ककललक आ ई कबेट ओक काल जरि चलै हयि जे हुनक चरित की अछ. रकला

पहल बे ि बिाह ि ककक हिल छल ि हुनका द ि
पुरख ि मिकमहय ि बि केहन बक हिल अक.
गाँ अक ब चीज िकफ हय िक गिाँ ओक
रूल्म क ध्यान द' हिल हय, जाक रूल्मक ल' क'
किडकल फेककसट कहै अक जे ई गाँ कजिडि छकन
आ एटी-रिन छकन.

हरि खाल गिाँ ककला स्मिर्व एिकटा अल्टनिक
फेककज ल' क' आबै छकन. जे कर्वकाँ अक, रुदा
शेष अक. जे किमूणमअक, जे चीजके आ िनी नै रानै
अक, रुदा बिके म्रान काँ अक. ओ फेककजके
बुझै अक जे ओक रे शायद पाँ वलेशनकष अक,
शायद हरि इन्फेर्वयि बुझल जा हिल अक कि बाद हर
अक बिके राथ प िखै छी. ककलारे कलव ककल
टेकशनक पाटमहिल हय. गाँ ओकी बिड ि चीज
ीखै छल.

गाँक ीखैक टेत चुअल रिण ख जब ि पकककल
इकिस्टक िहै ई भेटब बड ककन हय. गाँजी
कुआन बिड कछु लेने अक रुदा ई भेटब बड रुककल
अक. जो अहा गाँ आ कुआनके पबि ि लागि जे गाँ
ि कुआनक नीक अधेँ अक. बाइकल िह ओ बड
कछु लेने अक.

ओना गाँ जे जान याता भारिरे केने अक, हरि भके
राजके बुझैक लेल ई जान याता कबिक चाक. गाँ जे
जान याता केने छल, जाक स्मिर्वके पकडैक ककश केने
छल, हरि लागै अक जे ओकरे ककलाक अक थिक्के

ओ िखने छल.

जे िदेहीक स्मृति छल, जेना पक्रिज व्रशजी कहलक जे ओना देखयरे लागै अछ जे ई केहन रक्खला अछ, जे बटा गप राख लै अछ, चक्क गेल निती, त्रिके आयल, ओकी ककाक देल गेल, बाहि चक्क गेल, िरिरे रा गेल. ई जे 'हाईट ऑ बक्शन' अछ, 'हाईट ऑ पेटविकल ओपशिन' अछ, हरि लागै अछ जे एक बिबाद क न बे िदेही किछे नै छ डलक आया करा के ि आओ नै छ डलक. िरके व्रतखन करा काँ हिल. ब्रिक रयादाके बुझै हिल रुदा बिबै हिल जे अकरे कछु नै कछु गड़बड़ चक्क हिल अछ.

ई हरि लागै अछ जे गाँवक शार्वपूणमपर्विमिक लेल ई जरि आचार छल. ई डि नै छल. जखन गाँ अहाकक गपके रानै छथन, बह काँ छथन, अहा ि बह क लेल ियाँ छथन, ि ई डि नै अछ. ई आरतिग अछ डायलागक लेल. आओ जाव डायल ग क' ल' क' ओ पर्विमिक गप काँ छथन, ओ त्यागह. आगह अछ. दुगिह नै अछ त्यागह. जे त्यागहक पू गप अछ ओ िदेहीक स्मृतिक पाटमहिल अछ. एक गिरी बिझैक गप अछ आ बौद्धक जगकि अकरे जायके जरि अछ जे क न हर अक्क जाय.

एकटा आक्खी गप कहै लेल चाहब, जे यिग गाँजी केलखन, ओ िक यिग छल. रक्खलाके आनन्द लनरे ठाड केलखन. जे रक्खला ि बिबाहि ककक के आयल, बड पशान है हय. किक रक्खलाके पर्व छव देने हय.

ककि रक्खलाक पर्वि आद्विलनक काल रालि गेल हयि।
खिन गाणीक आगू एकणि गिल छल जे की कबि? णिक्
गिणी एकटा गिठन बनैलवखन. 'लेफ इम्प्लायड बनैलवखन
आ ओ गिठन आय वि ब' फल गिठन अक्ख, एकटा
रॉडल अक्ख इडिस्टीक.

ई अक्ख णिदेही स्फूर्तिक पाटमअक्ख, जाक् णिदेही स्फूर्तिरे
ल कगीणि, पेक्टि, आटमएडि काफ्ट ओकि व्हस । अक्ख, जेकि
क न टेक्नग नै अक्ख, स्कूल नै अक्ख, कॉलेज नै अक्ख, रुदा
ओकि एकटा व्हस । अक्ख, जीनि अक्ख आ अक्ख जीनिक
व्हस । ओयि बिबाहि ककक्क के आबै अक्ख. ओकि
विभा बाहि ककक्कके आबै अक्ख. हरणि लागै अक्ख जे
णिक् णिदेही स्फूर्ति क' ल' क' गप रहतपूणमअक्ख जे
हर वक्खलाक स्फूर्तिक गप कर्वि.

स्फूर्तिक ल' क' अहा जखन ऊघि गप काँ छी णि ओ
ई अक्ख बाकि पर्विचायक अक्ख जे अहा कत नै कत
व्हसिड छी. अहा अप्पन स्फूर्ति क' ल' क' कत नै कत
व्हसिड छी. अहा खिने ओकि ल' क' ऊँच गप कबि
जखन अहाके लागि जे ओकि ही रान्गि नै भेटल अक्ख.
ई णि अक्ख.

आजुक गिणीखरे वक्खलारे 'त अनुपाणि कर भ' गेल अक्ख.
कक्क व्हन पक्खने एकटा रक्खला ओकि पघियणि । आयल
छल आया बलिक जे भूण हत्था ओयि हि व्हन भ' हिल
अक्ख. णि ओयि पर्विणिमि आगाज ककि लेल अपना बके
स्फूर्तिक कि कबि जरणि अक्ख. जो हर अप्पन गुणगान
टारे लागल हिब णि शायद पर्विणिमि नै भ' कौ अक्ख.

ओयि भाँी आन्द लन जर िँ अक्ख.

हरि एकटा कल फी (दशम) छल. हर कल फीरे ब ि पैग ेँटि हैँ छलहुँ ओयि िएते अबी गेलहुँ ि दशम ेँह ख़तर भ गेल. वंचुलि बक्क गेल अक्ख. हर वंचुलि रे फकिे कि गेल छी. हरि एकटा कतक स्ती कक्यलाक अक्ख. ओ ारा-चकेँि प ि काज क' हिल अक्ख. ओ कहैँ छक्कन जे कक्यलारे ब पैग पशिनी ई अक्ख जे हर ब जे कराबैँ छी, ओकि ब बिेँी भाग वंचुलि प ि ख़तर भ' जाइँ अक्ख. हर ब पाय बचा नै कैँ छी. रागि-क़ाक रलाह के बाद ककि बखि विँ हरलग हुनकि वंचुलिरे लागल हैँ छी. भटा कराय ओकरे जा हिल अक्ख. ओयि पूजीक ल' क' कन काज नै भ' हिल अक्ख. ई कना बदलि? अक्ख क . चबाक चाक्ख. 'दैदेही' ाराकक पर्विभिक क जाए खिन ई गाँक बाट हयि.

शेफाक़का िरा- हरही बेटी, हरही शक्कि, हरही अहारे अनिकाक्कि छी

आय जानकी नरिँ छी. आजुका कन बहुँ पर्वति आ पानि अक्ख जे आय िीक जन्म भेल अक्ख. हरि जक्य ि सूरवेरे आयल अक्ख, िरनरिँ ुनैँ आयल छी, जानकी नरिँ नै ुनलाहूँ. रुक्क िहरि जानरे आठ-द बि ि जानकी नरिँ ुका हिल छी. एक-दू ठार हर गेलहुँ रुदा आय जन जानकी ब कँि छलाह. आय पक्कलुक बेँ कल्लिरे, देशक हदयरे दैदेही नै िरि ब एक ि आय जन क'

हिल अक्ख. णिक्ख एक्कटा क्खलक्कि रैच गेल अक्ख, णि नरिरी, जानकी नरिरी. हाक्ख आभाणि.

बेटी के बचाउ नै, बेटीक जन्म छी हरणि. एकणि उत णि रना हिल छी. एकणि बचाउ तया, हरही बेटी, हरही शक्कि, हरही अहारे अनक्खि छी. आय जो जानकी नै हिवियेथ, णि कक्खय णिर नै बननिह. णिरक जक्कि र प आयल, ओक्खके भीणि णिीक तयाग, रपण, णि- णि हुनक्कि जक्कि णिगि, शक्कि हिएि, ओ णिररे वक्खि भेल, खिन णिर आय रयादा पुरषतर बनलाह.

कखन काल हरणि रन हयणि अक्ख, काश अक्ख लेखनी तुलि दीदा क बदले कन नाणिक हाथर हिएिये. तालीक हाथरे हिएिये, खिन जे रान कखल जैिये, णिक्खरे रयादा पुरषतर णिरक बदलारे णिक्खारिणी नाणिक नार हेविये. ओक्खरे उक्खसाक णितय दि णितय जेना हेविये. ऐना क्खछु नै भेल. तयाक्ख कलर णि अपने बके हाथरे छल. हर भ णि वक्खि भेल हिएि छी. सिंणि जेना अपने भहक भीरिरे, अपने बक्के भ क्खछु नीक कबिाक णिणा बनल हिएि छी.

तुलि णि णिरचवीरान कखके णिसिंरिरे कागजक पना-पनाके तुलि णि, तुलि दीदल बना गेल. तुलि णि णिरचवीरान कखके रसि रधय युगके भाणिके अप्पन दा बना लेलक्खन. तयाक्ख हरणि बहक जीरिरे जे पण्णि अक्ख, जे रूलय अक्ख, जे जीनिरूलय अक्ख, ओ भ क्खछु हरणि बहक तुलि दीदा भिटल अक्ख. जीनि जीणिक जे कयर अक्ख, इखन, जा आईय ओबिे जीणि अक्ख जे रधयकाल रे छल.

अक्क दाँ लि की कखल अक्क रान रे बै ल अक्क. रुदा एक रलिब ई नै जे आब लि की कख गेलाह, 'क विर्व शीजी नाँ जग राही, पतिँन कखन ुख नाक्'. नै रानब. तया नाँ तया पतिँन? अहा नौकणी कयि छी, ि अहो ि पतिँन छी. जय वन वटायि कयि छी, कहै छी जे रुता भ' गेलहुँ ि नाँ क ना पतिँन.

काँक अँन नाँ नै हिय छै, बेटा-बेटी दुनू पतिँन हिय छै बच्चा रे. पर्वक अँनरे पती नै हिय छै, पर्व-पती एक द्र कि रिक अँन किंके पर्वि, राज आ देश के बचा बै छथन. पुतक अँन ि लिल नै उठे छैथ. पुतक अँन राँ तया, काँ तया नै? जे नाँ, जे रा, जे काँ, भवि कनगी िन के बनेबाक लेल अपना आपके गला दय छथन, ओ जो अपन पुतक पा ककक चैनक छहारै ुँक चाहै छैन ि क ना भ' गेलखन ओ पुतक अँन.

नाँ नीक जन्म भेल छै, िँिँ िखे िहँकि स्ती के आगू बढ़ाबयके िसँ खेँ गर ि जाय पडि. ओँ जे नाँक क्स्थवि अक्क, ओँका शक्किणिक िसँ, हरि भके ओक्क िँ लगे. नाँ पुरषतर िर, एकटा पतीक हैव यि ि दूँ जिाके नै कक् कलाह. ई िरक वफलि छी. पाग बचाउ रलिब इज्जि बचाउ. स्ती अहाक इज्जि छी, चाहे जे र परे ओ हुए. नाँक ुँखा नै सँकि हुए. ओ कणम ल' कय, आक्क िँ पि ुँदृहुँ हुए, यक् कारना अक्क.

शी दिव्या कुड्डि, वदेशक, गाँि स्रृर्व औि दशम वर्व,
नई वल्ल्सी- चप्पिणिरे ह यि बड ि कायकर

एयि आयल ल क गाँि, िि आ स्ती शक्तकिणि पि
नीक रेरकिमदेलक. एयि हर फ क काँि छी गाँि स्रृर्व
औि दशम वर्व व . ई जे 'बेटी बचाउ-बेटी पठि' नाि
आ स्ती शक्तकिणि अक्छ, एकी ल' क' वर्व रूचा
देशरे की काज क' हिल अक्छ. अकरे हर एक ि आगू
आओि काज क' काँि छी.

रूचा देशरे कावाल लि' क' अगलिा वि अक्छ भ
वषियरे गाँि स्रृर्व औि दशम वर्व ककि ि गिार
काँि अक्छ. एखन वछला राचसे बड पैग गिार कावालरे
केने छलहुजियि 160 युिरे 90 विशि लडकी ब छल.
ओयि अलग-अलग रुदायरे अलग-अलग चुनौि अक्छ,
ओकी फ क केने छलहुलिडकी बहक भागीदाी, कणम
लयक करि आव प बि ध्यान देलहुजि गाँिजीक 'ह
फ क छल. शर्वि आ अक्किरे रक्कला बहक अहर भूक्का
अक्छ, िक् ओकी फ क काँि किस्सॉप काँि छी.
अगलिलारे हर बड नीक गिार केने छलहु ओयि गारक
अन्दि, टाइबल एवियरे, भ ठार काज केलहु दिक्खन आ
उतरि 'ह काज काँि छी.

अक्छ बखि चप्पिणि त्पागहक 100 बखि शुर भेल अक्छ.
अक्छक लेल हर व्यापक र प िपूि काजक रेरकिमबनैने
छी. अकरे हर चप्पिणिरे की कबि, ओकी बि फ क
केने छी, अकरे 'बेटी बचाउ, बेटी पठि' आ स्ती
शक्तकिणि क' ल' क' ध्यान देब. अकरे द्र ि फ क

हर इति निम्नियुक्तिं बके केने छी.

कछु कन पकने हर ब गुहिहारी एकटा कानतले 'यगि एन्त प्र न कानतले' केने छलहु ओकीरे जे युक्ति छल, छ ट-छ ट काज काँ छल, हुनका भके हका देने कि. अक्क बखि निम्नियुक्ति वृत्तीय विषये केर किाकि ई फलैगवाप गिार क गाँ सूर्यक फ क अक्क. ओकी हर भके आगू बबिाक अक्क. अक्क लेल अलग-अलग ठाररे, निरे रिरेन इम्पारिरेट क ना हुए, रक्कला आ युक्ति भागीदारी क ना बढ़य, शर्वा आ अक्क राजरे क ना बढ़य, ओकी लेल किम्पॉप आ टेक्का 'ह दे छी.

शी आ.के. व. हि. ल. क. भा. दस्य-कथलारे क. न. भेदभा
नै छल

पकने नि हर अरनिथजी के निम्नियुक्ति कअ चाहब जे ओ अपना बके अपन जड़ भिरेट कलिखन. हर हिके हिय बला छी, हरि नानी गार रुबिनीरे अक्क, हरि तु भिजपुरि अक्क.

कय ल क जखन अपन जड़ फिफिक भ जाय अक्क नि ओ खूख जाइ अक्क. कय राज किट जाइ अक्क नि ओ खूख जाइ अक्क. ओ राजरे चक्क नै कै अक्क, ओकीरे ओ आत्तविशा, आत्तबल नै कि जाइ अक्क. ई अपना बहक स्मृति अक्क जे अपना बके आत्तविशा दैक अक्क, आत्तबल दैक अक्क.

हर ब आपन निके छक्क के आयल छी. हर एयि गिी छी. हर ब आपन गिी के छक्कके अक्क दाँ अक्कलहुँ

तयाक्क शनै-शनै ओयि व्वाक्क व्वास्थि ििशायी भ' गेल.
स्फूली व्वाक्क ििशायी भ' गेल. आब ि वंशवर्दालय वि
व्वाक्क ििशायी भ' गेल. अप्पन नेना बके कयि पढ़ाबी, ई
अहर शि अक्क.

एकटा हरि जेनशिन छल जे एयि आयल. हरि व्वाजि
हरि कॉलेजरे पाँक लेल एयि भेजने छल. हर ल क जाक्क
काल एयि आयलहुँ ओक्क काल इहि कॉलेज नीक छल,
पटना कॉलेज 'ह नीक छहल रुदा कक्क वागिटि आयब
शुर भ' चुकल छल. इय नीक छल. आब नै अक्क. िक्क
िअपना व्क बिबेी बिबेी ल क इम्ह िआक्क हिल
अक्क. मूणमपूचिल लि क इम्ह िआक्क हिल अक्क, व्वाहा ि
िआक्कये हिल अक्क. जो अहा पढ़-क्कख ली ि ओयि
नौकी 'ह नै अक्क, ि एते आयब आशिक अक्क.

जो हा एयि आबी आ अप्पन स्फूर्ति दि' भ' जाय ि
अप्पन बहक बाल-बच्चा एकटा जड़विहीन अस्तिरे चक्क
जायि, जेकी स्फूर्तिक बनि नै अक्क, ओ द्र ि
स्फूर्तिक व्क चक्क जायि अक्क. ई द्र ि जे स्फूर्ति
अक्क, कलल-जुलल स्फूर्ति अक्क, ओकि सि बड नीचा
अक्क आ अपना बके अप्पन स्फूर्ति प गिमिअक्क. िक्क
िअक्क िहिक बीच-बीचरे एहन कायकर है िहिय जाक्क ि
हर भ बीच-बीचरे भेट क' की आ अप्पन स्फूर्तिक एयि
कन्दर िक्क की.

आजुक वषिय बड रहतूणमअक्क आ अपना ब ि बि'ि
अक्क. हर ब ओकि हिय बला छी जकि िीजी छलीह.
अपना बहक एयि पक्कने क न भेद नै छल, नाँक लेल

बड इज्जति छल. िह हिर ब दुगाजीक पूजा कौं छी. अपना एयि रनरे क न भेदभां नै छहल. अपना कयि, अपन राजरे जकि रक्खला नेति भेल, ओयि क न आओि देशरे, क न राजरे नै भेल. ऐना अक्क दां, अपना बहक पूषि अपन स्मृतिरे बके बबिबिक दजा देने छल. हर ब ' गिरि' कहै छी, 'रि गि' नै. पक्खे गि, कि बिद रि.

बादरे जखन द रि स्मृति आयल, ओकी ु स्मृति नै कक्क कौ छी, अपना कयि इन्डि म(आकरणकां) आयल, खिन पदा थिा शुर भेल. ओकि बाद जे अपन राजक रक्खलाक स्थवि भ' गेल, ओकी ु गिबि आश्रिक भ' गेल अक्क. ई अक्क दां तयाक्क 50 विशिकि बल प कि क न राज गिबि नै क' कौ अक्क.

एकटा पुरष िन राजक ि गिबि खिन छल जखन लड़ाई ि-लिगि लिड़ाल जायि छल. ल क खायक लेल काकि लेल जायि छल. आब नॉलेज . इटी भ' गेल अक्क. आब कम्पूटि लिड़ाई लड़ल जा हिल अक्क. आब नौकीकक लेल नॉलेजक आश्रिकि अक्क, बाहुबलक नै. िह हिर चाक्क या नै चाक्क, रानि ि अइबे क कि आ आबइये पडि. जो गिबि आनैक अक्क ि रानि आनय पडि. जो अपना भ लगागि अक्क क काज कवि ि अपना भ गि गिबि कबि. ई अपना बके रानय पडि.

द रि गप ई ह अक्क जे क न राजरे जो रानि नै हुए ि ओ राज बे गि गिबि नै क' कौ अक्क. रानिक

रलिब अक्ख वंचाणि णिखयके सत्तिणि, अप्पन गप कहैक सत्तिणि, अप्पन वडवमटी रेटेन काँक सत्तिणि. ई नै भ' कौं अक्ख णि बुझू ओ राज बीराणि अक्ख. जाक्ख राजरे आनि जनीके अप्पन अवमव्यक्किके खुक्कके कहैक अवकाणि नै हुए, ओ राज बीराणि अक्ख. अपना बबके अक्ख बीराणी णि ककलबाक अक्ख. अक्ख क्कश बहु णि क्कन किकाज 'ह चक्क हिल अक्ख.

हर ब दहेज उन्नूलन क' ल' क' कानून आनलहू हर ब ई कानून आनलहू जे लडका आ लडकीक रान अवकाणि णि पणि भेटाणि. ओकी हर ब एखैन वि णि सिक्किरे टा लेट नै क' कलहू. हर ब अप्पन पवीणारे देख क्कअ, अप्पन राजरे देख क्कअ. एकटा टा लेट कक्कि के जरणि अक्ख किकि बादे हीरे तीक्कटी आयणि. अपना बके ई रेक्कटी छडबाक हयणि जे हर बहक देखभाल बेटे टा क' कौं अक्ख. बेटा राय-बापक नीक देखभाल काँणि अक्ख. बेटाके अप्पन राय-बापक बे णि क्कणि अक्ख.

ई बुझे पडणि अपना बके. राजके बुझय पडणि. एखन अक्खरे अपना बके आओणि णि आनय पडणि आ आनय के आशियकणि अक्ख. रुदा लक के ठार-ठार ई बुझाबय पडणि. ओकी णि पक्कने एकी ल' क' अपना के अणीकृ कयि पडणि. हर ब बाक्क दै छी, भाषण द' दै छी रुदा क्कहि कौं हयणि अक्ख णि अप्पन कजी क्कनगीरे ऐना नै काँणि छी. ऐना कयि पडणि. अपना आपरे अपनाक वि ईरानदाणि हुए पडणि. अप्पन वंचाकि वि ईरानदाणी आनय पडणि. केकरे ईरानदाणी नै अक्ख. पक्कने अप्पन वंचारि

ईरानदाी आक कए ि राजक ओकना किक ि कृीव
कक-कक दूि भ' जा लागि. अपन बके जे किव अक,
सिक्व अक, ई ब कबि द िक बकसपि अपना बहक
लेल बेी आ न अक. एकी अीकृि कबि बेी आ न
अक.

शी भाि झा, विषि नेि, भाजपा- कथलारे म्रान दैक
पमिि अक

जीनरे िद आ िि दुनू हेबाक चाही. लकके म्रान
देबय चाही. हर भाषण दी या नै दी, हर बाजी या नै बाजी,
बके म्रान देब रैथलक सिाि कयै. 'अवथ देि
भि. पाहनक जिक त्काि कथलारे हयि अक, ओते
क न देशरे, क न िजरे, क न जाइरे नै हयि छै. पाहन
राने भगिनि. पइि ियल जायि छै. एहन नै हयि छै,
जखन जाय छै खिन वदाईय ेह देल जाय छै. ई हर
बहके पमिि छै. जेकी जीनरे द किे म्रान देबक
स्थान नै बनय छै, राज ओकी नै रान्गि नै दैि छै,
राजरे सीकृि ओकी भेटय छे, जे अपना इग के शाि
िखय छै.

गाीजी तया बदलवखन, हुनका इग नै हिय. जे आदरी
जिहलिल नेहर के झेल लेलवखन, ब' पैग आदरीक बेटा,
ओक कालक ब' पैग कीलक बेटा. जेकि कपड़ा पेवि ि
ुलाके आबय छल, ओक पि कय कयतिण केलक ि ओ
गाीजी छलाह आ हुनकि नैविक कयतिण जिहलिल पि
छल. आओि राजरे अहा नैविकिनि छी, अहाके कयतिण

दैँ हैँ. इन्फ़ चोट नै हय छै जिनीवरे आ राजरे.
 क्ककि ई भ' गेल छै जे गाँजीके रानय ब क्यै रुदा
 जीरे उथिके क्कश नै कौँ छी. गाँजीक शश जो
 अहा क्कछु जीनरे ल' लहूँ ब नीक.

हर गीरिँ आबय छी. एकटा लड़ाई हर एखन वि लड़
 हिल छी. जो अय ध्यारे रिक पैग रक्षि, ि पुनौँरे जानकी
 राक क्यय नै? आओँ अक्के लेल भाकि जकि
 जनविक्वि भेला अक्क हर हुनका क्कठी क्कखने छी. एखन
 बहुँ ल कके बुझल नै अक्क जे जनकपुरि हुनकि ब्याह
 भेलैन, लाल-पालन भेलैन, रुदा जन ि पुनौँरे भेलैन, जे
 भाँरे अक्क. आओँ अय ध्यारे ि क्कसमूट क्यै, जरीन
 प, जन स्थान प, रुदा गीजीक पुनौँरे कन क्कसमूट
 नै छै. िक् ि बके क्कश कौँ चाही, अगि राके बेटाके
 स्किा देबाक अक्क ि स्किाके ब' बड़का निी क्यय
 छै ि ओ गी छैथ. ि पुनौँ रिररे गीजीक नार प
 भाकि स्किा जिजिनी बनाओल जाय.

अइय हर जाय क्यै हँ ल ओयि, ि देखय क्यै जे
 बक्का बके कुरिरे ल' जाय छै राय, आ राय ओयि क्क
 टा राटी अप्पन बक्काक राथरे लगा दैँ छै. ई ओय पानि
 िके क्यै आ वशके क्यय रक्कला ि निँ आयलै. अवम,
 तिँ द्वि क्यय रक्कला हिलय ि ओकि नार क्यै रा
 जानकी. कयि रा गेलक्कन िँरे, इह केकि नै बुझल
 अक्क. अक्क लेल आन्ल लनरे ि क्यय.

गीजी प बजय छी, गाँजी प बजय छी रुदा जो क्कछु
 अशि अपनारे नै आक् कलहूँ ि कष भ' जाय. आओँ

अक्क लेल िि जननी के वि क्यै, ओक ििशिज क्यै.
एकी बके लेल अपना बके िथमा कबिक चाक्क. भगानि
ब कछु क्ये, गर ि नै कए, रिडि नै कए.

अप्पन राज आ सिक्क के जे जीनि दशम अक्क आ
ओकी जीबाक िखयके छै ि गार जर ि जाऊ. ओयि
पढ़यके उर्वि नै छै, नौकीके 'ह उर्वि नै छै रुदा
जाऊ. हर ब िीजीके वि छी, गाजी के वचा
रानय क्यै ि गार जर ि जाऊ. राज चलय छै राजक
जीनि-दशम ' आओ अक्क लेल भ दल उिपि उक्कके
रा जानकी के दलरे आऊ तयाक्क रा जानकीक दल ि एके
टा अक्क.

जीनि रे ि क्ययि, पुरषाथके जगेनाय, िि ि
जड़नाय, ई अपना जीनिके बि हेबाक चाक्क. नीक बाजय
रे की लागय छै? आय अहा केक कना नै कय क्यै
ि हकि. नाक्क हिँ ब दू भ' गेल. हरि कयि एकटा
'खा' छैथ, एडीजी अनुि शक्ति खा, िरचरि खाक बेटी.
हरि बके बड रानै छैथ. कत जाय छक्कन ओ रैक्कली
रे बजै छक्कन. एडीजी बहुि स्राटम जेकी लग गिड़ा
कहै छैथ. वक्कशा के ए पी. क्वाजिजजी (रध्मदेशक
रुक्खरती क्वाजिज व हि चौहान) के क्कन्दगी बाचल छैन,
िखी बान्हे छै. एक बेि एत डेट भेलय ि ओ अपना क िरे
क्वाजिजजी के उठाके इलाज कयिलक्कन. ई क्यै िीजीके
दाक्कति, कक्कलाके दाक्कति. आओ अक्क लेल हर कहै छी,
हर काक्कय अहा ब लेल ठाि हयि छी ि हर ब अप्पन
जीनिके फल कौ छी, अहा के जीनि के फल नै

बनबै छी.

आओ रिनृष जीनिके फल बनाबयक रुख काणि कयै
जे हर ब रिसीजक उपा क छी, भगीक उपा क छी.
उच्चैठ रे कालीदा के जान भ' गेलय, जन उज्जैनरे भेल
छल आ हरि बके जान नै भ' हिल अक, जयि हर

ब पैदा भेल छी. ई ि बड कष क गप कयै नै. कालीदा
जेकी ि बाली भगा देलकय, किा जान भ' गेलय अ
चारि टा रहाकाय भ' कख देलक. अहा जखैन उच्चैठ
जेबय, नदी कनारि छै आ स्मृति विदालय छै अक ठार.

हर पूी स्मृति रिल छी, विदापति गार कसरी 'ह
गेल छी, हुनकि जे स्थान छै ओयि गेल छी. रडिन कशजी
के गार गेल छी, जाक गार ि ति-असी टा आईए -
आईपीए ककलले, ओक गारक राटी देखय लेल गेलहु जे
केहन ओ राटी छै जे खाली आईए -आईपीए ककालै
छै. भारिरे जो ब' पैग स्मृति िहि छै कत, ि
ओकि नार छै कथलाचल. ओक िहिके लेल जे 'देही'
स्था बनाके काज क' हिल छी, बहु-बहु बिई.

गाी जेहन राज रे रै 'ज दय बला, भारि टा नै वशरे
कय नै भेलाह. हर अहा गाय-रही क दू पीय छी, गाीजी
बककि दू कय हिथन. तया? गाीक िरे बकी हैथ
छै. चिा कयिके काज नै हिय हुनका. अकना चिा भ'
गेल. जे बकी बला हिय, 'गाीजी', 'गाीजी' कयि
लगलाह. हर अहा हाथरे िडी पकयि छी, ओ डारि िडी
पकयि हिथन. गाीजी िक चश पकनय हिथन. गाी
जयि जाकन ि हविजन कयि भजन कथन. 'रा 'ज' रे

‘रै `ज’ देहि हिक्थन. दाडी यातारे बके हाथरे डडि छल,
ओ आन्दलनक कि देलक्खन. नरक आन्दलन जे हि
रिरे खायल जायि अक्ख, थक रे रै `ज देनायके काज
कलिक्खन शार्वपूष्कि.

ओ गलरेज मलेनरे आहि रि पक्कनके गेलक्खन आ लक
देखय लागल, जे गाँहि ये छैथ. राज एखन ईरानदाकिंके
इज्जति देहि छै. अहा दूटा आखि `दुकया देखय लेल चाहै
छी रुदा दुकाया अहाके हजाहि आखि `देखय ये. आब
अहाके कन चीज नुकायल नै हिहि, अपना जीनिके केहन
स्किारिरे लिखयके ये, ई दाक्कति सयिअहाके छी. जेखन
अहाके स्किारि जीनि हिहि रि अगल-बगलके लगरे `ह
स्किाहि हिहि. हरहि लागय ये जे हर ब रैक्कल छी,
क्कलला छी, जानकीके छी, अप्पन स्किाकिे जीबै
लिखै, जीनि-दशमके जीबै लिखै, गाँहि के आदशमपि
चलब, भेदभाकि कटाके. क्कय आदरी ऊपि-नीचा नै हय छै,
भगनि लिखै छै. लक्की चचिला हयि छै.

रैक्कल रलिब जूनून. हर ब बाहि जायि छी. खूब काज
काहि छी. गाररे दू-चारि बीहि जरीन भ’ जाइ छै रि कहै
छी, के काज कहि? राटीके `हि केनाय क्कुहि नै. छैठके
पूजा क्कुहि नै. गारके पखैके आनदि कत नै भेटि. गार
जरि जाऊ, एहन प्लाक्कि कर जे द आदरीके काज
जरि क्कय. बुद्ध बाजारि नै क्कायि छै, भगनि देहि
छक्थन.

चिडि पौटील्य, घालक, भानु कला केर- स्मृति गौरी
हयि अक्ख

कन पिष्टक गौरी, ओक भू-वेत्तफल आ आद्यक मननि
नै हयि अक्ख बक्ख ओक्क देशक भाषा, स्मृतिक अस्थाय
विकसि कौं अक्ख. नेपाली स्मृतिक उपि पाति
स्मृतिक अवकरण या आकरण किबाक आ बचाबैक लेल
भानु कला केरक स्थापना भेल अक्ख. स्मृतिक किण,
मि आ मिमि लेल हर ब ई पानि अ पि पि शाकल
हेबाक लेल नेपाल आयल छी.

राया देी, भानु कला केर- रैथलीरे बड मान भेटल
रैथली भाषाक लेल पचपन ल पक्कने हरि बिबला, जेकि
फट अहाक आगुरे लिखल अक्ख, रैथली भाषाक लेल बहु
षिमक' कनै छल. ओ एके टा चीज बिड भिर्वि भेल
छल. हर जनकपुकि लडकी छी आ वीटि गिजाक ककया
जनक गिजाक बेटी छल.

हरि बिबला जनकपु गेल ह्यैथ जखन हरि शादी भेलय
खिन. रैथली भाषा बला ब अप्पन ककयाके मान द'
क' बजय छलाह हि हुनका बड रन लगलाह. रैथली भाषा
रे 'पि' शब्दक गिग नै हयि छै, मान द' क' कहै
अक्ख, 'हे आऊ'. ओक्क ओ बड भिर्वि भेल आ ओ
रैथली भाषाक लेल जान-गिण देलखन. आय डिकी बखि
पक्कने कल्लिक लिलकटि स्टेकयररे एकटा कायकर भेल
छल आ कनका रैथली एकेडरी 'मानो भेटल छल.
ओकरे एकटा कायकर भेल छहल 'अविपन' पटना क पि
कम्पीटीशन कनै हिय. ओक्क रे 265 स्था भाग लेने

हिय. ओक्क रे 14टा पुस्किा हिहय आ िहि टा पुस्किा
हर अ गि लेने कि. हरि एखैन वि बटा कायकररे
िपी फाउनडेशन बिड हायि भेटल छैथ.

कृष्णा िद, कायमीहक जिदू, नेपाल- िी हरि विभूव
छली

हर भले ही नेपालक पहाडी इलाका छि रुदा हरि काक्क
रैक्ली रुदाय छिल. रैक्ली व फमएकटा भाषा नै अक्क,
रुदा भि आ सिक्कि ह अक्क. नेपालरे रैक्ली द ि
ब बि ि बाजय बला भाषा अक्क. नेपाल आ भाकि बीच
व फमजिनीविक बि नै अक्क रुदा सिक्कि, रिमआ
पमििक बि ह अक्क. दुनू देशक बीच बि हर नै
जानकी आ रहात्ता बुद केने छल. राि िी हरि देशक
विभूव छली.

आशीष अनन्धनहार

संशोनि केर मलिब धीनाश नै होइ छै

हमर मने आशीष अनन्धनहारक एकटा आलेख दरभंगासँ पकाश्वाि दैआक अश्वीला आजिमे 9 फररिरी 2014के "मैथिली गजलमे लोि गजलकारक योगदान" नामसँ भेल रहैकिर उतर दैि सुरेन्नाजिी एकटा आलेख अखला जे कलकतासँ पकाश्वाि कणामृि केर अपैल-जून 2015मे "मैथिली गजलक पूषर्तीहीन आलोचना" केर नामसँ पकाश्वािभेल आ सुरेन्नाजिी जीक ऐ आलेखक उतर दैि हमर एकटा आलेख कणश्चकि नीन अंक अपैल-जून 2016मे "संशोनि केर मलिब धीनाश नै होइ छै" नामसँ पकाश्वाि भेलअश्च। ओना संपादक महोदय अछु काट-छाट सेहो केलखअश्च िऐ धीदेहक पाठक लेल मूल आलेख देल जा रहल अश्च पढ़ल जाए। संगे-संग ऐ मूल लेखक अंमिकणामृिमे पकाश्वाि लेखक कश्चंग सेहो देल जा रहल अश्च पश्चले सुरेन्नाजिीक किर बाद हमर बला (ऐ लेखमे देल गेल सुझाि कणामृि पश्चाका लेल छल)----

संपादक/ उपसंपादक महोदय लोकअसँ आगह जे ऐ आलेखमे आएल सभ उदाहरण आ ओकर लकगके यर्गिि राखश्च कारण गजल उच्चारणपर अ्भश्च करै छै आ उच्चारणर्षिीपर। संगे-संग दू शेरक बीचमे जर्ि जगह छै से रहऽ अ्यौ।

अपैल-जून 2015मे पकाश्वाि सुरेन्नाजिी जीक आलेख " मैथिली गजलक पूषर्तीहीन आलोचना" पढ़लहुँ आ ओश्चपर हम अपन अछु धीचार राखऽ चाहब। ओना सुरेन्नाजिीक आलोचना हमर आलेखपर

केशि छल िए पाठकके लगधीन जे ई पत्थालोचना थीक मुदा सुरेन्ना नाि जी अपने ठाम-ठीम झछु सप्त करऽ कहने छथि िई ई आलेखलऽ कऽ हम आएल छी आ पाठक सभसँ आगह जे एकरा पत्थालोचना नै बख्ख सुरेन्ना नािजीक आगह मानबाक पथगाम बूझथी । जे-जे चीज सुरेन्नाजी हमरासँ बूझए चाहैछथी ि हुनकर जै-जै थीचारपर हमरा आपआ अछ से हम रमशः खंदुीर दऽ रहल छी----

1) ऐ लेखक शुरुआतिमे सुरेन्ना नाि जी "मैथिली-खंदी" लऽ कऽ अगुि गेल छथी । हम फेर जोर दऽ कऽ कहब चाहब जे मैथिलीक अधिकाश रचनाकार खंदीक नकल करैए आएकर सबूि सुरेन्ना नािजी अपने ऐ आलेखमे बहुि बेर देने छथी । कहिँ जानेन्नाक ना ि कहिँ अखरि आन्हा ि कहिँ खंदी गजलः संघषयऔर सफल।। कुल आला कऽ ईआलेख खंदीक नकल थीक आ ऐ आलेखसँ ई हमर ओ थीचार मजगूि भऽ जाइए जकरा हिहि हम बेर-बेर कहै छी आ कहऽ चाहब जे मैथिलीक अधिकाश लेखन खंदीक नकलथीक । ऐ ठाम ई सप्त करब बेसी जररी जे सुरेन्ना नाि जी रेफरेन्स दैि काल अपन मानआक णिसंकरिक पथचय देने छथी । पूरा दुआयाक रेफरेन्स ि दऽ देला मुदा गंगेशगुंजन जीक "बहर-मेआया" बला कनि ओ कहासँ लेला । थीदेहमे मुनाजीक संयोजनमे गजलक उपर पथचचा भेल रहै आ िमे गंगेश गुंजन जीक आलेखमे ई संदभयआएल छैआ बादमे ई आलेख थीदेह-सदेहमे थंट र पमे एलै । मुदा रेफरेन्समे एकर चचा नै । की सुरेन्ना नािजी ई कश्च सकै छथी जे अमीर खुसरोक मैथिली आआ गजलक अंश ओकहासँ पापि केने छथी? संगे-संग ओ राजेन्ना थिमलजीक उथि कहसँ आआ लेलथी जखन की ओ इंटरव्यू थीदेहमे पकाआि छै (सदेहमे सेहो)। ई छआ सुरेन्ना नािजीकमानआक

णिश्रंकराणि जकरा ओ बेर-बेर अपन आलेखमे देखेने छथी ।

2) लगैए जे सुरेन्द्रनाथजी जखन मिससमे अबैहि होि खिन हुनक आँख मुना जाइहि हेआ (मात अनुमान) से हम माया बाबू आ नीरजजीक संदभमे खनक मिससके देखैअनुमान लगा रहल छी । हमरा ने माया बाबूक गीलिसँ परेशानी अख ने बीलिसँ । खंदीक नीरजके उँच सीन मात ऐ दुआरे देल गेलख जे ओ खंदी भाषाक कमिपर खनाबयान देने कहलखन जे गजलक नाम गीथीका हेबाक चाही । ऐठाम आन खऔ नीरजजी ई कखयो नै कहलखन जे खंदीमे गजल खखब संभनि नै छै, ई खंदीमे नीरजजीके उँच सीन भेटलख । ऐके उल्टा माया बाबू अपन अकर्मिके झाथ ई बयान देला जे मैथिलीमे गजल खखब संभनि नै ऐ गीलिल हेबाक चाही । दूनू बयानमे फकयछै ऐ दुनूकसम्मानो अलग-अलग । हमरा ने माया बाबूपर आपख अख आ ने हुनक पयोगपर हमरा ई बस हुनकर उदेश्यपर आपख अख । माया बाबूक सामने खससन मैथिली गजलकपरंपरा छल ओइके बाबजूदो एहन बयान खएक?

3) जेना पकृथी अपन मान्यनि लेल केकरो पुछारी नै करै छै निश्रंकि पं.जीनि झा, कथीरि सीाराम झा आ मपिजीक गजलके कोनो आशीष अनखन्हार नि सुरेन्द्रनाथ कीआन कोनो गजलकारक अनुसंशाक जर रथी नै छै । पं.जीनि झा, कथीरि सीाराम झा आ मपिजीक गजल मैथिली गजलक पूखि थिक ई ई निनू गोटे खखारि र पसँ मैथिलीगजलक "असल पकि" छथी । सुरेन्द्रनाथजी पुछै छथी जे "की ओ सभहँक (पं.जीनि झा, कथीरि सीाराम झा आ मपिजीक) गजलक व्याकरण अनखन्हारक आखरकव्याकरणसँ ऐम-

मेन मेल खाइ अछि । जँ सएह ि हुनकर सभहँक असिान भेलाक बादो मैथिली गजल बाझ अणि मसोमाि अए बनल रहल?"

आब ऐ पशक उत्तर ि सुरेन्द्रनाथिजी अपने छथि । बाप बच्चाक लालन-पालन करै छै मुदा जँ बच्चा जनि भेलाक बाद अपना असाबे चलै छै ि फेर ओइमे बापक कसिहभाथाि? पं.जीनि झा, कथीरि सीाराम झा आ मपिजी ई िनू गोटे व्याकरणयुक् गजल देला मुदा किर बादक नकलची पीढ़ी जँ पं.जीनि झा, कथीरि सीाराम झाआ मपिजीके नै गुदानै ि फेर ओइ लेल ई िनू (पं.जीनि झा, कथीरि सीाराम झा आ मपिजी) अए दोषी हे। जा अि मैथिली गजलमे सुरेन्द्रनाथिजी सन-सन अराजकगजलकार होइ रहि ि अि मैथिली गजल बाझ अणि मसोमाि बनल रहि। ऐ िनू (पं.जीनि झा, कथीरि सीाराम झा आ मपिजी)क संपूण्यगजल ओ ओकरव्याकरथाक व्याख्या सञ्चि पढ़बाक लेल "मैथिलीक पञ्चअथि गजल 1905सँ 2014 अि" नामक पोि देखू।

4) बहुि रास अराजक गजलकार जका सुरेन्द्रनाथिजी सेहो बहर आ छंदके अलग-अलग मानै छथि । ई माननाइ िहिने भेल जेना अयो िटर आ पाञ्चके अलग मानथि । बुक आपोिँके अलग मानथि । सच ि ई छै जे बहर आ छंदमे मात भाषायी अंरि छै । संस्कृतिमे छंद कहल जाइ छै ि अरबीमे बहर । ओना एकटा िश्चिक अंरि जर र छै जे संस्कृतिमे छंद व्यापक अयिदै छै आ सरल िथाक, णिष्टि आ माञ्चक िनू छंद अबै छै ि बहरमे मात णिष्टि । ओना अरबीमे सरल िथाक आ माञ्चक छंदक पचार नै केर बराबर छै आ णिष्टिक एकछत राज्य छै िए बहर आ छंद एक समान अछि । णिष्टि ि बहरक साारिण अयम छै जे ई लघु-गुर दारा अिश्चि होइ छै (बहुि

काल लघु-गुर लेल लघु-दीघयि हसि-दीघययुग्म केर सेहो पयोग होइ छै)। आ संस्कृतिक थिअक छंदमे पञ्चल पाथीक मातार म जे छै सएह सभ पाथीक मातार म समान हेबाक चाही आ पत्येकशब्दक संख्या समान हेबाक चाही खिन थिअक छंद हए। अरअयोमे हिने सन छै मुदा आथिअक भाषामे मातार म ि समान रहलै मुदा अकर संख्या उपर आच्छा कऽ सकैछी। संगे-संग गजल अखबा कालमे अछु छूट देल जाइ छै जे की मात आशिक अथिमे पयोग होइ छै। आब ई लघु-गुर क की वसि छै ि छूट कोन र पे लेल जे सेजनबाक लेल कोनो छंदशास्त्रीक पोि पञ्च अ। ओना हमरा पूरा उमेद अछु जे सुरेननाजी लग लघु-गुर गनबाक जान हेबे करअ (ई उमेद हमरा ऐ लेल अछु कारणसुरेनजी अपन आलेखमे बेर-बेर छूट बला जानक पदश केने छथि)। ऐतम कही जे गजलक हरेक पाथीक मातार म एक समान हेबाक चाही (एक समान माता आ एकसमान मातार म दूनू अलग-अलग सि छै)।

5) कहबी छै जे "नकल करबाक लेल अकल चाही" मुदा सुरेननाजीके नकलो करबाक बुझि नै छअ। ओ कोनो जानेन केर पोिक उदाहरण दै छथि आ कहै छथि जे आरालागजलक व्याकरणके िष्ट देला। सच ि ई अछु जे आराला मात श्रिय पथि केला आ उदूयशब्दक बदला गजलमे अंदी शब्दक पयोग केला। मैथिलीक बहुि रास शाइर एहनेअराजक बयान दै छथि जे दुषां कुमार व्याकरण िडला ि अदम गोडी ई केला ि ओ ओना केला। मुदा अंदीक सभ गजलकार व्याकरणक पालन केला खाली ओ श्रियपथि केला आ अंदी शब्दक पयोग बेसी केला। हम ऐतम पञ्चने आराला आ शमशेर बहादुर अंह केर गजलक व्याकरण देखा

रहल छी (चूँश्च सुरेन्द्रनाजी फैशन आनकल करैँ अना पढ़ने
 अन्नकर सभहँक नाम लेने छथिन) आ किर बाद जयशंकर पसाद
 सञ्चि दुषाँ किं कुमार, अदम गोडिँ, मुनवर राना सञ्चि आन-आन
 गजलकारकगजलक व्याकरण देखा रहल छी। िसिँमे सुरेन्द्रनाजी
 भम पसाश्च रहल छथि ि ई कहब बेसी उञ्चि जे ओ अपन
 अजानीक कारणे भम पसाश्च रहल छथि। ऐठाम हमकही जे
 सुरेन्द्रनाजी अपन आलेखमे कतौ उदाहरण नै देने छथि जे कोन
 रिहे आरालाजी गजलक व्याकरणके िडलश्चन मुदा हम उदाहरण
 दऽ कऽ देखा रहल छी जे अँदीकसभ गजलकार सभ कोना व्याकरणक
 पालन केलथि। । ि पञ्चने आराला आ शमशेर बहादुरक गजलके
 देखू--

(संपादक/ उपसंपादक महोदय लोकआसँ आगह जे ऐ आलेखमे आएल
 सभ उदाहरण आ ओकर लक्षणके यिँ ि राखथि कारण गजल
 उच्चारणपर आभश्च करैँ छै आ उच्चारणिषीपर। संगे-संग दू शेरक
 बीचमे जिँ जगह छै से रहऽ अँयौ)

सूयकाँ आपाठी आराला

भेद कुल खुल जाए हि सूरि हमारे अल मे है
 देश को अल जाए जो पूँजी िहारी अल मे है

मलिा (मने पञ्चल शेर)क मातार म अञ्च--
 2122+2122+2122+212 आब सभ शेरक मातार म इएह रहि।
 एकरे बहर ि की णिष्टि कहल जाइ छै। अरबीमे एकरा बहरेरमल
 केर मुजाइफ बहर कहल जाइ छै। मौलाना हसरि मोहानीक गजल
 " चुपके चुपके राँ अँन आँसू बहाना याद है" अही बहरमे छै जकर

श्रीरिण आगू देल जाए। ऐठा ईदेखू जे आराला जी गजलक श्रिषय
नहि कऽ देलखन पेअकाक बदला श्रिषय अल आ पूँजी बअ गेलै मुदा
व्याकरण एह रहलै। हमरा ने जानेनसँ मलिब अख नेसुरेननासँ।
हमरा मात पाठकसँ मलिब अख आब एह कहथी जे अ आरालाजी
व्याकरण कऽ िड़लखन? आब हम ऐठाम सुरेनजीसँ आगह करबअ
जे हुनका ि लघु-गुर क अाि अाि छअ ि आब बाचल शेरक
आणय कऽ ले। सभ पाठकसँ आगह जे आणय करथी जे आराला
जी बहरक पालन केला की नै। बाचल शेर एना छै--

हार होगे हृदय के खुलकर भी गाने नये,
हाँ में आ जायेगा, हि राज जो महफल में है

रिस है ये देर से आँखे गड़ी शृंगार में,
और अखलाई पड़ेगी जो गुराई शील में है

पेड़ टूटेंगे, अलेंगे, जोर से आँि चली,
हाँ मँ डालो, हटाओ पैर, अछू अल में है

िक पर है नमक अचयलोग अगड़े या बने,
सीख क्या होगी पराई जब पसाई अल में है

शमशेर बहादुर अंह

1

जहा में अब ि अानि रोज अपना जीना होना है,
िहारी चोटे होनी है हमारा सीना होना है।

ि जल लोटि करि है खाको-खूने-इंसा मे :
'मिहारा रिर पर जाना मगर नाबीना होना है!

ऐ गजलक मालिक मातार म अछ 1222-1222-1222-1222 आ
एकर पालन दोसर शेर सञ्चि आन सभ शेरमे अछ । सुरेन्द्रनाजीसँ
आगह जे ओ पूरा गजल पछ लेखि ।

चूँच सुरेन्द्रनाजीक इच्छा उदाहरण हम दऽ चुकल छी मुदा यी
हम ऐठाम श्रंदी-उदूकक अछु महतपूणयगजलक व्याकरण देखा रहल
छी जे ि मुख्याः पाठक लेल अछमुदा सुरेन्द्रना आ हुनकर संगी
सेहो देखथि--

जयशंकर पसाद

सरासर भूल करि है उन्हे जो प्यार करि है
बुराई कर रहे है और असीकार करि है

उन्हे अकिश ही इनि कहा है मुझसे चलने का
असी से पूछ लेि है यही उपकार करि है

जो ऊंचे चढ़ के चलि है ि नीचे देखि हरदम
पफ्रुश्चि टिकि की यह भूअ कुसुमगार करि है

न इनि फूँछए रिरि सुफल कोरी कली लेकर
अना मकरंद के मिकर नही गुंजार करि है

'पसाद' उनको न भूलो तिमि तिमिहारा जो भी पेमी हो
न सज्जन छोड़ि उसको असे सीकार करि है

पसादजी ऐ गजलक बहर अञ्छ-- 1222-1222-1222-1222
आजुक समयक पञ्चा शिखर आ अलसी गीतिकार जादि अखिरजीक
ई गजल देखू जे की जगजीणि अंह गेने छथि--
मिना अकर मचल जाए, अगर तिमि अलने आ जाओ
ये मौसम ही बदल जाए, अगर तिमि अलने आ जाओ
1222-1222-1222-1222

आब पूरा गजल देखू--

मिना अकर मचल जाए, अगर तिमि अलने आ जाओ
ये मौसम ही बदल जाए, अगर तिमि अलने आ जाओ

मुझे गम है अक मैने अन्दगी मे कुछ नहीं पाया
ये गम अल से अकल जाए, अगर तिमि अलने आ जाओ

नहीं अलि हो मुझसे तिमि ि सब हमददयहै मेरे
जमाना मुझसे जल जाए, अगर तिमि अलने आ जाओ

ये दुआया भर के झगड़े, घर के अस्से, काम की बाँ
बला हर एक टल जाए, अगर तिमि अलने आ जाओ

आब हसरि मोहानीक ई पञ्चा गजल देखू--

2122-2122-2122-212

चुपके-चुपके- राँ धन आँ-सू बहाना- याद है
हमको अब कि- आश्वाकी का- ि जमाना -याद है

आब पूरा गजल देखू--

चुपके-चुपके राँ धन आँसू बहाना याद है
हमको अब कि आश्वाकी का ि जमाना याद है

बा-हजारा इजराब-ओ-सद हजारा इश्शियाक
इसे ि पहले-पहल धल का लगाना याद है

इसे धल ही ि बेबाक हो जाना मेरा
और ि दाँ मे ि उँगली दबाना याद है

खेच लेना िह मेरा परदे का कोना दफ़ानि
और दुपटे से ि ि मुँह छुपाना याद है

जानकर सोँ इसे ि कस्दे पा-बोसी मेरा
और ि ठुकरा के सर ि मुस्कराना याद है
(ई गजल बहुँ नमहर छै िँ मात पाच टा शेर दऽ रहल छी)

कबीर दासक एकट गजलके किँ कऽ कऽ देखा रहल छी--

बहर-ए-हजज केर ई गजल जकर लयखंड (अकान) (1222×4)
अच्छ--

ह1 मन2 है2 इश्2, क1 मस्2ि2ना2, ह1 मन2 को 2 हो 2,
आ1 या2 री2 क्या2

हमन है इश्क मसीना, हमन को होआयारी क्या ?
रहे आजाद या जग से, हमन दुआया से यारी क्या ?

जो अच्छुड़े है अयारे से, भटकी दर-ब-दर अरि,
हमारा यार है हम मे हमन को इंजारी क्या ?

खलक सब नाम अपने को, बहु कर अर पटकी है,
हमन गुरनाम साचा है, हमन दुआया से यारी क्या ?

न पल अच्छुड़े अया हमसे न हम अच्छुड़े अयारे से,
उन्ही से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या ?

कबीरा इश्क का मां, दुई को दूर कर अल से,
जो चलना राह नाजुक है, हमन अर बोझ भारी क्या ?

निश्चि आजुक पश्चि शाइर मुनवर राना केर ऐ गजलक किं
देखू-

बहु पानी बरसी है ि अटी बैठ जाँ है

न रोया कर बहुि रोने से छाी बैठ जाी है

यही मौसम ि जब नंगे बदन छि पर टहलँ ि
यही मौसम है अब सीने मे सदी बैठ जाी है

नकाब उलटे हुए जब भी चमन से हि गुजरि है
समझ कर फूल उसके लब पे झिली बैठ जाी है

मुनवरि राना (घर अकेला हो गया, पृष्ठ - 37)

किीअ

बहुि पानी / बरसि है / ि झटी बै / ठ जाी है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

न रोया कर / बहुि रोने / से छाी बै / ठ जाी है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

यही मौसम / ि जब नंगे / बदन छि पर / टहलँ ि

1222 / 1222 / 1222 / 1222

यही मौसम / है अब सीने / मे सदी बै / ठ जाी है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

नकाब उलटे / हुए जब भी / चमन से हि / गुजरि है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

(नकाब उलटे के अक्षर सिल दारा न/का/बुल/टे 1222 मानल गेल
अक्षर)

समझ कर फू / ल उसके लब / पे झिली बै / ठ जाी है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

आब राहि इन्दौरी जीक ऐ गजलके देखू--

गजल (1222 / 1222 / 122) (बहर-ए-हजज केर मुजाइफ)
 चरागो को उछाला जा रहा है
 हॉि पर रौब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीं होगी
 मगर अक्का उछाला जा रहा है

जनाजे पर मेरे अख देना यारो
 मुहब्बत करने िला जा रहा है
 राहं इन्दौरी (चाद पागल है, पृष - 24)
 किंीअ =

चरागो को / उछाला जा / रहा है
 1222 / 1222 / 122
 हॉि पर रौ / ब डाला जा / रहा है
 1222 / 1222 / 122

न हार अपनी / न अपनी जी / ि होगी
 1222 / 1222 / 122
 (हार अपनी को अक्का सिल्ल दारा हा/रप/नी 222 अना गया है)
 मगर अक्का / उछाला जा / रहा है
 1222 / 1222 / 122
 जनाजे पर / मेरे अख दे / ना यारो
 1222 / 1222 / 122
 मुहब्बत कर / ने िला जा / रहा है
 1222 / 1222 / 122

फेरसँ मुनवरि रानाजीक एकटा आर गजलके देखू--
हमारी अंदगी का इस रिह हर साल कटी है
कभी गाड़ी पलटिँ है कभी शेरपाल कटी है

आयासी रिर भी लिरि से कुछ कम नहीं होि
कभी कश्मीर कटी है कभी बंगाल कटी है
(मुनवरि राना)

1222 / 1222 / 1222 / 1222

(मुफाईलुन / मुफाईलुन / मुफाईलुन / मुफाईलुन)
हमारी अं / दगी का इस / रिह हर सा / ल कटी है
कभी गाड़ी / पलटिँ है / कभी शेरपा / ल कटी है

आयासी रि/ र भी लिरि/ र से कुछ कम / नहीं होि
कभी कश्मी/ र कटी है / कभी बंगा / ल कटी है
आब दुषं कि कुमारक ऐ गजलक किँ देखू--

2122 / 2122 / 2122 / 212

हो गई है / पीर पणि /-सी अघलनी / चाश्चए,
इस अमालय / से कोई गं / गा अकलनी / चाश्चए।
आब अहा सभ ऐ गजलके अं शि जा सकै छी। पूरा गजल हम
दऽ रहल छी-

हो गई है पीर पणि-सी अघलनी चाश्चए,
इस अमालय से कोई गंगा अकलनी चाश्चए।

आज यह दीरि, परदो की रिह झलने लगी,
शयिलेकन ि झ ये बुझयाद झलनी चाझए।

हर सड़क पर, हर गली मे, हर नगर, हर गाि मे,
हाि लहराि हुए हर लाश चलनी चाझए।

झफयहंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नही,
मेरी कोझाश है झ ये सूरि बदलनी चाझए।

मेरे सीने मे नही ि रिरे सीने मे सही,
हो कही भी आग, लेझन आग जलनी चाझए।

आब कने अदम गोडी जीक दू टा गजलक किी देखू-

1222 / 1222 / 1222 / 1222

गजल को ले / चलो अब गा / ि के झलकश /नजारो मे
मुसलसल फन / का दम घुटि / है इन अदबी / इदारो मे
आब अहा सभ ऐ गजलके अंि शि जा सकै छी। पूरा गजल हम
दऽ रहल छी-

गजल को ले चलो अब गाि के झलकश नजारो मे
मुसलसल फन का दम घुटि है इन अदबी इदारो मे

न इनमे ि कझाश होगी, न बू होगी, न रानाई
झललेगे फूल बेशक लॉन की लम्बी कियो मे

अदीबो! ठोस रिर्गि की सहि पर लौट भी आओ
मुलमे के आगि क्या है फलक के चाद-गिरो मे

रहे मुफश्वास गुजरि बे-यकीनी के जिरबे से
बदल देगे ये इन महलो की रंगीनी मजारो मे

कही पर भुखमरी की प्पि गिखी हो गई शायद
जो है संगीन के साये की चचा इश्हारो मे.

फेर गोडगिजीक दोसर गजल आ-

2122 / 2122 / 2122 / 212

भूख के एह / सास को शे / रो-सुखन कि /ले चलो
या अदब को / मुफश्वासो की / अंजुमन कि /ले चलो
आब अहा सभ ऐ गजलके अंि शि जा सकै छी। पूरा गजल हम
दऽ रहल छी--

भूख के एहसास को शेरो-सुखन कि ले चलो
या अदब को मुफश्वासो की अंजुमन कि ले चलो

जो गजल माशूक के जली से िश्कफ हो गयी
उसको अब बेगि के मागि की आकन कि ले चलो

मुझको नज्मो-जब की गिलीम देना बाद मे
पहले अपनी रहबरी को आचरन कि ले चलो

गंगा जल अब बुजुझा हिजीब की पहचान है
श्रीशगी को िदका के आचरन कि ले चलो

खुद को जख्मी कर रहे है गैर के िखे मे लोग
इस शहर को रोशनी के बाकपन कि ले चलो.

आब आिश्वाक उदूक पाचीनीमि गजलकार हरी चंद अख्तिरिजीक ई
गजल देखू--

सुना कर हाल अस्मि आजमा कर लौट आए है
उन्हे कुछ और बेगाना बना कर लौट आए है
1222-1222-1222-1222

आब पूरा गजल देखू--
सुना कर हाल अस्मि आजमा कर लौट आए है
उन्हे कुछ और बेगाना बना कर लौट आए है

अर इक टूटा हुआ अशी अर इक उजड़ी हुई दुआया
अर इक अलचस्म अपत्ताना सुना कर लौट आए है

फरेब-ए-आरजू अब ि न दे ऐ मग्य-मायूसी
हम उम्मीदो की इक दुआया लुटा कर लौट आए है

खुदा शास्त्रद है अब ि उन सा भी कोई नही अला
ब-जोम-ए-खुशि इन का आजमा कर लौट आए है

अछ जाँ है या रब क्यूँ असी काअर के कदमो मे
 ि सज्जे जो दर-ए-काबा जा कर लौट आए है

("अर इक" मे अक्षफ-स्ति छूट छै आ एकर उच्चारण "अअक" छै। निश्चि "हम उमीदो " लेल हिने सन बूझू।)

ककि नाम आ गजल अ ए ठाम। कहबाक मलिब जे हरेक शाइर अपन गजलमे कथ आ िरि बदलै छथि व्याकरण एह रहै छै। मुदा मैथिलीक श्रिदान ि बस श्रिदानछथि हुनका के टोकि। ए ठाम ई उदाहरण सभ देबाक मलिब मात सही पक्के उजागर करबाक अछ।

ओना सुरेन्द्रनाजी कहि जे ई उदाहरण सभ श्रिदी-उदूक अछ आ मैथिलीक अपन व्याकरण हेबाक चाही। पञ्चल गप्प जे ओ अपने कहै छथि जे श्रिदीक गजलमे व्याकरण नैछै आ दोसर गप्प जे कोनो श्रिथिक व्याकरण ि मूले भाषासँ लेल जेँ खाली लक्ष भाषामे संशोनि हेँ। आब ई संशोनि केना हेँ से ए उदाहरणसँ बूझू-

1222-1222-1222-1222 (मने लघु-दीघय्दीघय लघु-दीघय्दीघयलघु-दीघय्दीघयलघु-दीघय्दीघयकेर चाअ बेर पयोग) के अरबीमे बहरे-हजज कहल जाइ छै आ एकरा बहुसिंगीमिय बूझल जाइ छै मुदा बहु संभ जे भाषायी अनिक कारण ई बहर या छंद मैथिलीमे कणाय नै हो। आ एहन अथिमे मैथिलीमे 122-1222-222-1222सनके कोनो छंद आअ जाए। हमरा बुझने इएह संशोनि छै।

आब 1222-1222-1222-1222 केर अनि करबाक लेल जे आयम छै सएह आयम 122-1222-222-1222 लेल सेहो रहँ या अन्य कोनो छंद लेल एह रहँ।

निश्चि संस्कृि आ अरबीमे 122-122-122-122 छंदक समान

र पसँ पयोग होइ छै । संस्कृतिमे एकरा भुजंगपयाि कहल जाइ छै
 ि अरबीमे बहरे-मुकिाश्ब । दूनू भाषामे ईउच्च संगीि कमी नेने
 भेटि । संस्कृतिमे गोसीमी तुलसीदासजीक ई रचना देखू जे
 भुजंगपयाि (बहरे मुकिाश्ब)मे अष्क--

नमामी शमीशान आणि र पं

श्रीभू व्यापकम् बम्ह िदिः सरि पं

पञ्चल पाश्र्वीके माता र म अष्क---- हसि-दीघय्दीघय्हसि-दीघय्दीघय्हसि-
 दीघय्दीघय्हसि-दीघय्दीघय् दोसरो पाश्र्वीके माता र म अष्क-----हसि-
 दीघय-दीघय्हसि-दीघय्दीघय्हसि-दीघय्दीघय्हसि-दीघय्दीघय

फेर उपरे जका कही जे भऽ सकैए जे मैथिलीमे ऐ ढाचामे संगीि नै
 आश् सकै आ िए 22-122-22-122 र प आश् जाए ि 221-
 122-212-122 र प आश् जाए । मुदा लघु-दीघयश्नानि करबाक
 आयम ि समाने रहि । बदलै नै । मैथिलीमे शाइर राजीरिंजन
 अशजी एहने संशोनि ओ पश्चिमि करै गजल कश्च-लीश्च रहल
 छथि । राजीजी कोनोअरबी ि संस्कृतिक मान्य छंद नै लै छथि मुदा
 गजलक पञ्चल पाश्र्वीमे जे मातार म रहै छै किर ओ पूरा गजलमे
 पालन करै छथि आ इएह ि छंद ि बहरक आहि केनाइ
 भेलै । उदाहरण लेल राजीजीक एकटा गजल राश्च रहल छी-

नै राम रहीमक झोक रहय

नै दि कुरानक टोक चलय

मलिाक दूनू पाश्र्वीमे 221 122 2112 ढाचा अष्क आ आच्चा आन
 शेर सभमे देखू इएह मातार म भेटि--

अछु आर भने नै होइ मुदा
बस संग ि लोकक लोक सहय

नै ईद अली भअकँ मजा
आनंद सअ ि अि नेह लहय

हो राम रहीमक गान सदअ
नै नामकँ खाअर जी मरय

राजी सुनब नै लोककँ कहल
अछु लोक ि अि बे खेल करय

की ऐ गजलमे समकालीन सरि नै छै। सुरेन्द्रनाथीके मेहनअ नै करबाक छअ ि नै करि मुदा भम ओ अजानी नै पसारि से हमर आगह। हम ऐ ठाम मैथिलीक अछुगजल कारक दूटा कऽ शेर देखा रहल छी। सभ गोटा देखू जे कोना एकै संग समकालीन सरि आ व्याकरण छै—

कअरि सीाराम झाजीक गजलक दूटा शेर--

हम की मनाउ चौँ सँआअ जूडशीलि
भै गेल माघ मासअ िकैँ घूडिँलि

मलाक छंद अअ 2212+ 122+2212+ 122 आब दोसर शेर अला अअ-

अअ देशमे दुपाटी कडरेस ओ असानक

हम माझमे पडल छी बञ्चा कै अलाञ्छ मिलि

पञ्चल शेर आइयो ओबि पासंअक अञ्छ जणि पञ्चले छल । आइयो
नलि साल गरीबक लेल नै होइ छै ।

दोसर शेरके नीक जका पदू आइसँ साञ्छ-सतर साल पञ्चलुक
राजनीयिक अत आँञ्छ लग आञ्छ जाए ।

जगदीश चंर ठाकुर "अञ्छल" जीक गजलक दू टा शेर--

टूटल छी ई गजल कहै छी

भूखल छी ई गजल कहै छी

मलिाक दूनू पाक्षीमे 2222 +12 + 122 छंद अञ्छ आ एकर दोसर
शेर देखू--

आँअस सबहक कणि कहू की

लूटल छी ई गजल कहै छी

पाठक आणय करणि जे समकालीन सरि छै की नै ।

योगानंद हीराजीक गजलक दू टा शेर--

मोनमे अञ्छ सगिल बाजू की

छल कपट केर हाल बाजू की

मलिाक दूनू पाक्षीमे 2122-12-1222 अञ्छ आ दोसर शेर देखू

छोट सन चीज कीआ ने पाबी
बाल बोकि सलिल बाजू की

की समकालीन सरि नै छै?
समकालीन सरि नै कालाणि सरिक संग धीजयनाि झा जीक ऐ
गजलक दूटा शेर देखू--

जीनिक आशय सदाशय सूत आनि सार अछु
बेस बीलि शेष एखना अखालआि आभार अछु

मलिक छंद अछ 212-212-212-212 आब दोसर शेरक दूनू
पाथीके जाच कऽ अअ संगे संग भाि केर सेहो ।

दन्द्र अछ आनंद ियो क्लेश थयगर िरणी
पी रहल हम जाआ गंगा म्ि मधर नख आर अछु

ऐठाम हमरा लग उदहारणक नमहर अस्त अछ मुदा मुदा पञ्चाकाक
सीमा होइ छै िए हम रअ रहल छी ।

सुरेन्द्रनाजी कहै छथि जे रचनामे समकालीन सरि हेबाक चाही ।
आ देखू जे दुषिं कुमार, अदम गोडिी, आराला सखि मैथिलीक
बहुि रास शाइर अना व्याकरणके िडनेकेना समकालीन सरि देने
छथि अपन गजलमे । की ई अम्मि आ मेहनथि करबाक कमि
सुरेन्द्रनाि जीमे छअ? हमरा बुझने सुरेन्द्रनाजी संशोिनिक मलिब
छेअ देनाइ-िअ देनाइ आ थिनाश केनाइ बुझै छथि । आ हुनकर ऐ
अजानीपर की कएल जा सकैए से पाठक अणय करी ।

6) सुरेन्द्रनाथजी अपन आलेखमे योगानंद हीरा आ श्रीजयनाथ झाजीक संदभमे ई पश केला जे "स्नानका सभमे पशभा छलआ ई सभ घनगर एक नै भेला"। एकरजबाबमे हम बस एबा कहऽ चाहै छी जे जँ कोनो खेरीहर अपन खेमे गहूम बाउग करै छै। आ गहूमक संग बहुि रास घास सभ जनमै छै। आब जँ खेरीहर कमौट नै करै ओ घास सभ गहूमके बढ़हे नै दे। ई पूणमिः सत्त छै आ पाठक एकर अंदाजा लगा सकै छथी। मैथिली गजलक संदभमे इएह भेलै। शुरु मे नीक गजल ई एलै मुदा स्नानाआलोचकक ई श्री रश्मि गेल आ एकर पञ्चनाम सरि प "सुरेन्द्रनाथ" सन-सन जंगली घास " योगानंद हीरा ओ श्रीजयनाथ झा" सन गहूमके झाथ देलकै। बीच-बीचमे जे खादपड़लै किर गिरी सेहो बहुसंख्याक घास दारा चूस लेल गेलै।

7) सुरेन्द्रनाथजी हमर ऐ बासिँ बहुि मिसमे छथी जे " गजेन्द्र ठाकुर मैथिलीक पञ्चल गजलशास्त्र देला"। सुरेन्द्रनाथजी कहै छथी जे मैथिलीमे बहुि पञ्चलेसँ गजलशास्त्र छै। हम हुनकर मकि आदर करै छी संगे संग पूछए चाहै छी जे " अराजक गजलकार सभ गजलशास्त्र कस्यो आखला" आ जँ आखबो केला किर सूचना सुरेन्द्रनाथजी नै दऽ रहल छथी। हुनका कहबाक चाही जे अमुक लेखक गजेन्द्र ठाकुरसँ पञ्चने गजलशास्त्र आखने छथी। बस बाखत मुदा ओ नाम नै कस रहल छथी। ऐ पञ्चाकाक माध्यमे हमहुनकासँ आगह करै छी जी जे ओ पाठकके मैथिलीक पञ्चल गजलशास्त्रक नाम ओ ओकर लेखकक नाम कह। आ किर बाद गजेन्द्र ठाकुर बला दाहि हम अपने खाशज कलेब..... पौकमे छी

8) ई जानल बाँ छै जे मैथिलीमे सरल ियाक बहरक अक्षिफार मात एकसूतमे बन्हबाक लेल भेल छै। आ एकर लाभ मैथिलीक न् गजलकार सभके भेलै से पूरा दुआयाजा रहल अछ। मुदा सुरेन्नाजी अना मूल गं, पढ़ने िमसमे आश्च अखै छथि। ई हुनकासँ गंभीरक आशा करब बेकार।

9) पद बला पसंगमे सुरेन्नाजी अपने ओझरीमे छथि। हुनका बुझबाक चाही जे समस् अश्च सि काव्यक अंगि आबै छै। बादमे गेय आ सरस काव्यके "पद" कहल गेलै ई शुष्क काव्यके "गद"। कोनो अश्च आयमसँ बान्हल पद एकटा थि बनल जेना कोनो पदके दोहाक आयममे अयौ ई दोहा बना, सोरठाक आयममे अयौ सोरठा।। निश्च गजलक सेहो आयम छै। आब पश छै जे जँ कोनो दोहा की सोरठा की कुंडश्या की गजल ओइ अश्च आयमक पालन नै सकल छै ई ओ की कहै। अश्च िरपर ओ सभ पदे कहै। कारण ओइमे कोनो खास थिक आयम नै छै मुदा गेय आ सरस ई छैके। मुदा सुरेन्नाजी एक छोट आ सरल बाँ नै बूझसकलाह किर हमरा दुख अछ।

10) सुरेन्नाजी अपन आलेखमे बहु दुधीगस छथि। कहूँ ओ अखै छथि जे गजलमे व्याकरण नै होइ छै, ई कहूँ अखै छथि जे गजलमे व्याकरण नै हेबाक चाही आअंमे कहै छथि जे मैथिलीक गजलके अपन व्याकरण हेबाक चाही।

बहु दुधी छ अ सुरेन्नाजीके मुदा ऐ दुधीमे हम फँस नै चाहै छी आ ई सोझे पाठक लग चलै छी.....

उमेश मण्डल आ पुनम मण्डल

समाद- सगर राक्षी दीप जरय- 91म सगर राक्षी दीप जरयःगोनिपुर-
24.09.2016

91म सगर राक्षी दीप जरय : गोनिपुर (मृबनी)

स्तिन : उरि अि मयि श्रीदालय पञ्चसर नका चौक गोनिपुर

1. उदाटन सत-

दीप पज्जलिन : शी जगदीश पसाद मण्डल, डॉ. योगेन्र पाठक
'श्रीयोगी', शी अरक्षीन्द ठाकुर, शी राजदेि मण्डल आ शी शम्भु
सौरभ ।

स्तिगि गीि : शी रािकान्ति मण्डल ।

स्तिगि भाषण : संयोजक दुगानन्द मण्डल ।

दू शब्द : शी अरक्षीन्द ठाकुर, शी योगेन्र पाठक श्रीयोगी आ शी
जगदीश पसाद मण्डल । एि सतक संचालन : उमेश मण्डल ।

2. पोी लोकापण सत-

अयिक मण्डल : डॉ. योगानन्द झा, शी राजदेि मण्डल, डॉ.
योगेन्र पाठक श्रीयोगी, शी कथलेशर राउि, शी अश्वजानन्द झा एि
अजीि झा आजाद,

पञ्चल लोकापण- शी दुगानन्द मण्डलक मौञ्चक पञ्चल कृषी 'क
कुसुम' (लघु क्ति संगह) : लोकापणक्ति- अयिक मण्डलक संग
उपस्क्षीि समस्ति साञ्चयि पेमी आ साञ्चयिकार ।

दोसर लोकापण- शी जगदीश पसाद मण्डलक मौञ्चक पचपनम कृषी
'गुलेी दास' (लघु क्ति संगह) : लोकापणक्ति- अयिक मण्डलक
संग उपस्क्षीि समस्ति साञ्चयि पेमी आ साञ्चयिकार ।

लोकापण उदोनि- डॉ. योगानन्द झा, डॉ. योगेन्र पाठक श्रीयोगी,
शी राजदेि मण्डल आ शी अजीि झा आजाद ।

सतक संचालन- उमेश मण्डल ।

3. क० सत-

अधिक मण्डल- डॉ. श्री कुमार पसाद, श्री राम श्रीलास साहु, श्री बेचन ठाकुर, श्री श्री कुमार अत आ श्री शम्भु सौरभ ।

पञ्चल पालीक संचालन- श्री अजीति झा आजाद

क० पाठ, पञ्चल पालीमे :

1. ओ अनहभया राक्षि- (श्री ऋषि बश्वाष्ट)

2. जी-दा- (श्री बेचन ठाकुर)

3. बीसोअना- (श्री जगदीश पसाद मण्डल)

पञ्चल पालीक पञ्चि क० सभपर समीक- डॉ. योगानन्द झा, पञ्चि बाल गोश्वीन्द यादवि आचायक श्री अरश्वीन्द ठाकुर, श्री अनील कुमार ठाकुर, श्री शारदा नन्द अंह ि डॉ. श्रीकुमार पसाद ।

दोसर पाली-

संचालन : श्री संजीवि कुमार 'शमा'

क० पाठ-

1. हमर लॉटरी अकलल- (श्री नन्द श्रीलास राय)

2. छटकी- (श्री अजय कुमार दास 'अन्टु')

3. पढ़ए फारसी बेचए लि- (डॉ. योगेन्र पाठक श्रीयोगी)

4. करोड़पक्षि- (डॉ. योगेन्र पाठक श्रीयोगी)

5. आनसुरका जरि- (श्री बेचन ठाकुर)

समीक- श्री राजदेवि मण्डल, डॉ. श्री कुमार पसाद, श्री श्री कुमार अश आ श्री दुगानन्द मण्डल ।

सिर पाली-

संचालक : श्री नन्द श्रीलास राय

क० पाठ-

1. भैयारी- (शी शंभु सौरभ)

2. बेटीक बाप- (शी आनन्द मोहन झा)

3. झडम्बना- (शी शारदानन्द झाँह)

4. सयिंभू- (शी अरञ्जिन्द ठाकुर)

समीक- शी अजीं झा आजाद, शी कञ्जलेशर राउं, शी अनील ठाकुर, शी राम झिलास साहु आ पंञ्जि बाल गोञ्जिन्द यादं आचायय चाञ्जम पाली-

संचालक : शी नन्द झिलास राय ।

कं पाठ-

1. कचोट- (शी संजीं कुमार 'शमा')

2. शंका- (शी कञ्जलेशर राउं)

3. हँ-आहँस- (शी अञ्जलेश कुमार मण्डल)

समीक- शी ऋष बञ्जष्ट, शी अरञ्जिन्द ठाकुर, शी राम झिलास साहु, आ शी अजय कुमार दास 'अन्टु' ।

पाञ्जम पाली-

संचालक : उमेश मण्डल

कं पाठ-

1. मकड़ाक जाल- (शी आकिमार अश)

2. झैपै- (शी राम झिलास साहु)

समीक- शी जगदीश पसाद मण्डल, डॉ. योगानन्द झा आ डॉ. आं कुमार पसाद ।

अन्मि

अयिक्रीय उदोनि- िं न्मिदि जापन िं दीप एं पंजीक हस्निंरिण ।

सगर राञ्ज दीप जरय केर 92म आयोजन मंिनी अलाक नंिनी

गाममे शी अजय कुमार दास 'अन्टु' जीक संयोजकमेि अही सालक अन्ध्रिम मासमे... ।

१०म सगर राश्री दीप जरय

सिन : लक्ष्मीआया गाम

श्रीश्री : १८ जून २०१६

१०म खेपक दीप सगर राश्री

लक्ष्मीआयामे जरल

सि. नेनी भगि केर समुझमे 'सगर राश्री दीप जरय'क १०म आयोजन कालख साझमे आरम्भ भेल जे आइ भोरमे इश्री भेल। ई खेप शी राम श्रीलास साहुजीक संयोजकमेि छल जेकर आयोजक समस्ति लक्ष्मीआया गामक साश्चर्य पेमी छला। ऐ गोष्ठीक असिरपर निनटा कति संगहक लोकापण भेल। पश्चल 'अंकुर' कति संगह शी राम श्रीलास साहुजीक आ दोसर एति सिर रमश: 'गाछपर सँ खसला' आ 'डआयाएल गाम' शी जगदीश पसाद मण्डलजीक। ऐ निनू पोतिक लोकापण गाष्ठीमे उपस्थिति समस्ति साश्चर्यकार एति साश्चर्य पेमीक हाति भेल। दीप पजलिन सेहो सम्प्रश्नारि रपे भेल। कति संतक अर्यिक मण्डलमे शी अरश्रीन्द ठाकुर, शी राजदेति मण्डल आ शी जगदीश पसाद मण्डलक चयन कएल गेल। शिश्ना संचालन सप्रश्नमे सेहो निन गोट रिक्रिक चयन रमश शी नन्द श्रीलास राय, शी दुगानन्द मण्डल ति उमेश मण्डलक भेल। ऐगला आयोजन शी दुगानन्द मण्डलजीक संयोजकमेि दीप-गोनिपुर गाममे जरति।

पर्येक पाश्चमे पाय: निन-निन कति पाठ आ निपर निन-चाश्च

समीक्कक समीक्क होइ रहल । पस्ति अक्क पक्कल पालीसँ अन्धम
पाक्क शिक पक्क किक नाओं ए कि कारक नाओं-

१. असली पक्कय : राजदे मण्डल
२. चोटक कचोट : शम्भु सौरभ
३. अड डे अल : शारदा नन्द अंह
४. अपन जाक्क : नन्द शिलास राय
५. ई भाहि हुनकामे जगए : रनि कुमार रक्क
६. देगिनाह : गौड़ी शंकर साह
७. असायि अहि : फागुलाल साहु
८. कुताक डीह : कथलेशरि राजि
९. मथ्याएल मन : जगदीश पसाद मण्डल
१०. सिआमान : दुगानन्द मण्डल
११. अक्कडी मोछ : लक्मी दास
१२. अमक्कम : उमेश नारायण कणय
१३. पैयाही बुक्क : उमेश मण्डल
१४. बेगक महंरि : राम शिलास साहु
१५. शंकाक बेमारी : ललन कुमार कामि
१६. नेनाक बहादुरी : उमेश नारायण कणय
१७. शोहि बनल किकार : शारदा नन्द अंह
१८. पररि : अरक्कन्द कुमार ठाकुर
१९. डेरा गेल छी : राजदे मण्डल 'रमण'

89म सगर राक्क दीप जरय

लौकहीमे शी उमेश पासनि दारा 'दक्क शिषयक कि केअरि

२६ माचय२०१६ के उक्क शिदालय पक्कसर- लौकहीमे

88 म सगर राक्षी दीप जरय

88म कवि-साक्ष्य गोष्ठी डखराममे सम्पन्न भेल

डखराम (बेनीपुर) मुख्याजी श्री अमर नाथ झाक आयोजक आ श्री कमलेश झाक संयोजकमे 'सगर राक्षी दीप जरय'क 88म कवि-साक्ष्य गोष्ठी 30 जनरीक साझमे शुरू भेल। जेकर उदाटन सम्मेलन र पे श्री जगदीश पसाद मण्डल, डॉ. आशुकिमार पसाद, श्री राजदेवि मण्डल, श्री नन्द श्रीलास राय, श्री फागुलाल साहु, श्री शारदा नन्द झा, श्री उमेश पासनि, श्री कमलेश राउ, श्री उमेश नारायण कणय श्री शम्भु सौरभ श्री मिश्र श्री राम श्रीलास साहु कैलैन। उदाटनक पछाड़ि संगि गी सेहो सम्मेलन र पे समिति स्वरमे श्री राकान्ति मण्डल मिश्र श्री रामदेवि पसाद मण्डल झार दार गौलैन आ संगि भाषण श्री कमलेश झा कहलैन- '1990 ईसवीसँ 'सगर राक्षी दीप जरय'क आरम्भ याता शुरू भेल जे चलै-चलै आब ओइ हिपर चक्ष आएल अछि जेए खाँटी मासिक सुगन्धिसँ सुगन्धि कविक लेखन एहि पठन भऽ रहल अछि...'।

उदाटन सतक पछाड़ि लोकापण सतमे पशि भेल। श्री जगदीश पसाद मण्डलक दूटा पोथी, पञ्चल एगच्छा आमक गाछ (कवि संग्रह) आ दोसर ठूठ गाछ (उपन्यास)क लोकापण सम्मेलन र पे भेल। मिश्र 'खसै गाछ' (लघु कवि संग्रह) नामक पोथीक श्रीरिण सेहो भेल।

रमशः कवि सतमे पशि भेल। छह पालीमे कविक पाठ। जइमे श्री उमेश नारायण कणय 'मौनी बाबा, अलति छोड़ी' शीर्षकक दूटा कवि पढ़लैन। श्री राजदेवि मण्डल- एडजस्टमेन्ट, श्री राम श्रीलास साहु- जाक्षी, श्री शारदा नन्द झा- 'आशा' मिश्र 'पलटा माय', श्री

जगदीश पसाद मण्डल- 'एगच्छा आमक गाछ', शी लक्मी दास-
बापक रिम, शी ललन कुमार कामि- बाबाक लोटा, शी शम्भू सौरभ-
परम्पराक बञ्च, शी फागु लाल साहु- अछू, शी आि कुमार अश-
यिहार िि पौञ्चयि, शी कथलेशरि राउ- घूर लगक गप,
अञ्चलेश मण्डल- गढ़ैनगर हाि, िि अपने (उमेश मण्डल) पढ़लौ-
'अपने गरदैन कटलौ।'

पञ्चि क्ति सभपर एक-सँ-एक समीक सेहो भेल। डॉ. आि कुमार
पसाद, पणञ्चि बाल गोधीनद आयय 'गोधीनदाचायय शी फागु लाल
साहु, रािकान्ति मण्डल िि शी कमलेश झा क्षिषद र पे समीक
काययकेलैन। मुदा शी राजदेि मण्डल, शी शारदा नन्द आंह, शी
कथलेशरि राउ, शी उमेश पासनि, शी आिकुमार अश, शी राजा
राम याद, शी नन्द क्षिलास राय िि अपने (उमेश मण्डल) सेहे
समीक कायमे भाग लेलौ।

अञ्चला गोष्ठीक भार लैि शी उमेश पासनि कहलैन- 89म सगर
राक्षी दीप जरय- लौकही (अला म्बिनी)मे कराएब। जेकर हकार
मंचेसँ दऽ रहल छी जे 89म गोष्ठीमे 'दञ्चि क्षिषयक क्ति क्षिशेष
स्तिगि होएि।'

ऐ रिहे 88म गोष्ठीक समापन भेल। 89 गोष्ठी लौकहीमे शी
उमेशजी करौि। सम्भि जे माचक अन्धिम शञ्चके होएि।

८७म सगर राक्षी दीप जरय

सगर राक्षी दीप जरल- ८७म क्ति-साञ्चयि गोष

आमसी, अनाक 19 अम्बिबर 2015 : सगर राक्षी दीप जरय सञ्चि-
आमसीक पस्त्रिमे शहरक क्षिशालकाय क्षीह भनि- श्यामा
रेआडेन्सी- सभागार-मे सगर राक्षी दीप जरय केर 87म गोष्ठी 'क्ति

श्रीलज्जुगा'क शुभारम्भ 6:30 बजे भेल। जेकर उदाटन सम्भारि
र पे केलैन, नेरिहाट उच्चरि मायिक श्रीदालयक पूयिपाचायडॉ.
दुगा पसाद साहू, हस्त्र पसाद साह महाश्रीदालयक पूयिए'ि शिान
पाचायदय डॉ राम अशीष शंह, डॉ. श्रीमल कुमार राय, पखण्ड
श्रीकास पदाश्रीकारी शी सुशील कुमार, श्राला पाषण्डक पूयिसदस्या
शीम'ि आशा दे'ि, श्यामा रेञ्जडेन्सीक श्रमाणक'ि शी सयि नारायण
पसाद साहु 'ि सी.एम.बी. कॉलेजक श्रन्दी श्रीभागायिक सह मैश्रीली
साश्चयिक चश्चमि साश्चयिकार पो. 'िरेन्र कुमार।

असिरपर शी रामदे'ि पसाद मण्डल 'झार दार' स'ि रश्चरि गी-
“कर सगिगि सगिकार हे अयरि, हम नै अपनेक योग्य...”सँ
सगिगि केलैन, 'ि न्मिदीद जापनक संग सगिगि-भाषण केलैन,
पोफेसर दय डॉ. श्रि कुमार पसाद, डॉ. शीमोहन झा।

ऐ रिहे उदाटन सतसँ पो'ि लोकापण सतमे पशि भेल। सतक
मुख्य अश्रीश्री, श्रहार अश्री अछड़ा पकोष्ठक सदस्य मो. शरफराज
अहमद संगे श्रीश्चाष्ठ अश्रीश्री रहै- डॉ श्यामानन्द चौरी, डॉ.
सुरेन्र पसाद शंह, शी अशोक कुमार श्रश, शी शंभु सौरभ, शी
दुगानन्द मण्डल, शी उमेश नारायण कणय शी शीकृष्ण राम, शी
अजय कुमार दास, शी नागेशर कामि, शीम'ि श्रीभा कुमारी, शीम'ि
अनुपम कुमारी, शी मनोज कुमार साह उफयचन्दनजी, शी जे. के.
आनन्द, शी रनि कुमार रश्री, शी श्रीनोद कुमार गोप, शी राम पशि
मण्डल 'ि शी रामलखन भण्डारी, 'ि सतक अयिक'ि केलैन-
समपणक चेअरमेन शी दुगानन्द मण्डल, मयि श्रीदालयक श्राकक
मो. ए.के. मंजूर, सामाश्रक कायक'ि शी सुरेन्र पसाद याद, शी
श्रीनोद कुमार 'ि मयि श्रीदालयक पाचाययशी नारायण पसाद शंह।
पाँच गोट पो'िक लोकापण भेल। जइमे टैगोर साश्चयि पुरस्कारसँ

पुरस्कृति एति श्रीदेह भाषा सम्मानसँ सम्माञ्चि साञ्च्यिकार शी जगदीश पसाद मण्डल रञ्चि चाञ्च गोठ पोति- 'गुडा-खुदीक रोटी', 'फलहार', 'लजञ्चजी' आ 'गामक शकल-सूरि' लघुकि संगहक छल आ पाँचम- 'श्रीदेह' आ 'वैदेह' दय सम्मानसँ सम्माञ्चि साञ्च्यिकार शी राजदे मण्डल रञ्चि पोति- 'जाल' (पटकि) रहए। पाचू पोति भञ्च सभागारमे श्रीरणो भेल।

भाड़ी संख्यामे श्रीदि-शोगिणक उपस्त्री श्री सेहो छल। जेना- इतिहासक श्रीभागायिक पो. जय पकाश साहु, अश्रीकि सह पतकार शी रौशन कुमार गुप्ति, शी सागर कुमार साहु, शी श्रीषणु कुमार गुप्ति, शी टुनटुन कामि, शी राम नरेश यादि, शी अजय कुमार गुप्ति, शी आलोक कुमार 'नाहर', शी राम श्रीलास आंह, शी अहारी मण्डल, शी राज कुमार यादि, शी बरीलाल यादि, शी राम नारायण कामि, शी रामकृष्ण ठाकुर, शी राजदे मण्डल, शी अरश्रीन्द कुमार मण्डल, शी राजेश पासनि, शी संजीकि कुमार, ई. आशुषि कुमार, शीमि आरानि अस्ती, शी चन्र भूषण झा 'राकि', शी मनोज कुमार झा, शी राजकुमार अश, शी अरश्रीन्द यादि, शी श्रीनय कुमार र र, शी अलट मण्डल, शी रामबाबू कामि, शी दशरि पसाद यादि, शी राम अशीष मण्डल, शी लक्ष्मी मण्डल, डॉ. श्रीषणुदे ठाकुर, शी गोपाल अञ्च, शी राजाराम यादि, संीष कुमार पाण्डेय, शी सयि नारायण महि, सुशी काजोक कुमारी, शी मदन महि, शी शम्भु कुमार साह, शी योगीलाल कामि, शी हजारी पसाद साहु, ि अकिश पाप् अक्क शी अशफी साहु इयिअ-इयिअ।

रमशः आगू बढै कि सतमे पशि कएल...।

ऐ सतक अयिकि केलै न 'सखारी-पेटारी' कि संगहक किकार शी नन्द श्रीलास राय, 'रकि चका उलैट चलै बाट'क कश्री शी राम

श्रीलास साहु, 'उलहन' काँ संगहक काँकार शी कथलेशर राउँ
 िँ अशफ़ी दास साहु समाज इण्टर मञ्चला महाश्वीदालय- आमस्त्री
 केर मैश्वीली श्वीभागायिक पो. हेम नारायण साहु। साँ पालीमे श्वीभक्
 पचचीस गोट काँ पाठ भेल, समीक भेल। ऐ ररहे िँनू सतक
 समापन भेल। जेकर संचालक छला- शी संजीँ कुमार 'शमा', शी
 भारी भूषण झा, शी दुगानन्द मण्डल िँ शी उमेश मण्डल।

अन्ध्रिम सत 'अथला गोष्ठी केँऐ'मे पँश भेल। चाश्च गोट पस्ँ
 आएल, पञ्चल- शी रोश्च कुमार आँहक दरभंगा लेल माचय 2016.
 शी दुखन पसाद यादकि 'बिही' लेल जून 2016 िँ श्वसम्बर
 2015क गोष्ठी लेल दूटा, पमि- शी कमलेश झाक 'डखराम' लेल
 िँ शी राजदेँ मण्डलक 'रनिसारा-मुसहरआँ' लेल।

सभामे बैसल समस्कि श्वीचारपर अयिक मण्डल दारा आणय भेलैन-
 डखराम। अः अथला गोष्ठी शी कमलेश झाक संजोजकँमे
 दरभंगा आलाक बेनीपुर अनुमण्डल अन्गिगि 'डखराम' गाममे होँ।
 भाँ संयोजक शी कमलेश झाके िँमान संयोजक शी उमेश मण्डल
 दीप िँ पंजी समथयि केलैन।

अन्मे, न्यिदि जापनमे, बाहरसँ आएल साश्चयिकार, स्नीनिय
 साश्चयिकार एँ सहयोगी िँ श्वीशेष सहयोगीके संयोजक न्यिदि-
 नमन केलैन। ऐ ररहे सगर राश्वी काँ शेष भेल।

आम अश्च- र मानुसार पश्चि काँक नाँ, काँकारक नाँ, िँ
 समीकक सुची, संगे सगर राश्वी दीप जरय सश्च- आमस्त्री केर
 सश्च य कायकँ, संचालक िँ श्वीशेष सहयोगीक सेहो।

काँ पाठ एँ समीक :

पञ्चल पाली-

१. फेण्ड : पल्लिँ कुमारी

२. सभसँ कञ्चन जाश्चिक अपमान : रनि कुमार 'रश्चि'

३. अकि : राजदे मण्डल

समीक : डॉ. श्मिल कुमार राय, डॉ. श्यामानन्द चौरी, डॉ. राम अशीष अंह ।

दोसर पाली-

४. असिरदि : अजय कुमार दास

५. ऊपर फरकी मामीक सराि : लक्मी दास

६. हाि आ मूस : जगदीश पसाद मण्डल

समीक : शी कमलेश झा, शी दुगानन्द मण्डल (बनरझूला) शी दुगानन्द मण्डल ।

िसिर पाली-

७. बबाजीक मकड़जाल : संजी कि कुमार 'शमा'

८. शैनि आ भगनि : दुगानन्द मण्डल

९. सहोदरा नै बना पेलौ : उमेश मण्डल

समीक : डॉ. अाि कुमार पसाद, डॉ. श्मिल कुमार राय, डॉ. श्यामानन्द चौरी, डॉ. राम अशीष अंह ।

चाश्चम पाली-

१०. समाजक हाल : रोश्चि कुमार अंह

११. इज्जकि सील : राम शिलास साहु

१२. हैनिक संग समुहो : दुखन पसाद याद

१३. बाल बोि : शम्भु सौरभ

१४. एक अन् हमरो : शारदा नन्द अंह

समीक : शी फागु लाल साहु, शी सुशील कुमार साह, शी राजदे मण्डल 'रमण' ।

पाँश्चम पाली-

१५. अश्वि सायि : उमेश नारायण कणय'कल्पकश्वि

१६. शोणि : अशोक कुमार अश

१७. फॉल्लज्म : अशि कुमार अश

१८. कमय फल : फागु लाल साहु

समीक : शी राजदे' मण्डल, शी रनि कुमार 'रश्वि', शी कमलेश झा ।

छठम पाली-

१९. आब कहू : नन्द श्विलास राय

२०. हमर समाज : कौशल झा

२१. खुशी : पंकज कुमार 'पभाकर'

२२. मौश्वक : रा'कान' मण्डल

२३. मनुखक मोल : सुशील कुमार

समीक : शी राम श्विलास साहु, शी संजी' कुमार 'शमा', शी उमेश मण्डल ।

सा'मि पाली-

२४. एकटा आर : शारदानन्द अंह

२५. बअया'मे गाअ : लक्मी दास

समीक : डॉ श्यामानन्द चौ'री, शी कमलेश झा ।

.....

शी संजय कुमार मण्डल, शी सतुघ्न कुमार मण्डल, शी श्विनोद ठाकुर, शी सुजी' कुमार साहु, शी अश्वलेश कुमार मण्डल, शी शश्व भूषण कुमार, शी सं'ष कुमार राय आअ ।

शी सुरेश मह'ि, शी मुकुल पसाद साहु, शी सुरेन्' पसाद याद', शी श्विनोद कुमार 'ि' उमेश मण्डल ।

शी स'यि नारायण पसाद साहु, शी नारायण पसाद अंह, शी अंकु

पंसारी, शी राम पकाश साहु, शी देशि कुमार अंह, शी पभाष कुमार कामि, शी मनोज कुमार शमा, शी देशि कुमार अंह, शी रामनामि गुप्ति, शी राम लखन भण्डारी, शी अश्वलेश चौसिरी, शी राम सुनरर साहु, पो. िरेनर कुमार िि डॉ. श्रीमल कुमार राय... ।

समाद : पुनम मण्डल ।

86म दीप सरग राक्षी जरल

मिबिनी अलाक फुलपरास अनुमण्डलक 'लकसेना' गाममे 20 जून 2015 के 86म 'सरग राक्षी दीप जरय' (कमि-साक्ष्य गोष्ठी) क आयोजन 'उन्मुक्'क सौजन्यसँ शी राजदे मिण्डल 'रमण'क संयोजकमि आयोजमि भऽ सफल भेल । ऐ असिअपर शी जगदीश पसाद मण्डलक दूटा पोमि रमशः 'पसेनाक रिम' आ 'ममिाछी' (लघु कमि संगह)क लोकापणक संग श्रीरिण भेल । संगे हालअमे पकाअमि डॉ. रंगनामि अकार (मूल नाम- रंगनामि चौसिरी)क लमि कमि संगह "भखरै नील रंग" अछु कमिकारके देल गेलअ । अला गोष्ठीसुपौल अला अन्गिमि 'अमसी'मे हमि से ससिमममिसँ अणअ भेल ।

फोटोक संग बेअंग न्यूज अम अअ-

संयोजक- शी राजदे मिण्डल 'रमण'

आयोजक- उन्मुक्

उदाटन- डॉ. खुशीलाल मण्डल, डॉ. योगेनर पाठक 'श्रियोगी', शी भोगेनर यादमि 'भाषकर', शी कमलेश झा, शी जगदीश पसाद मण्डल, शी राजदे मिण्डल, डॉ. अमि कुमार पसाद ।

दू शब्द- शी कमलेश झा, शी नन्द श्रीलास राय, शी बाल गोश्रिन्द यादमि 'गोश्रिन्दाचायय

अयिक मण्डल- शी दुगानन्द मण्डल (बनरझूला), शी भोगेनर यादमि

‘भाषकर’ (अकिश पाप् श्वाक्क), डॉ. श्वा किुमार पसाद, डॉ. योगेन्र पाठक ‘श्रियोगी’, शी जगदीश पसाद मण्डल आ शी कमलेश झा ।

संचालन सञ्च- शी दुगानन्द मण्डल आ उमेश मण्डल

पोिी लोकापण- शी जगदीश पसाद मण्डलक दूटा लघु क्ि संगह र मशः (1) पसेनाक रिम, (2) म्िमाछी ।

पञ्चल पोीक लोकापण क्ि- पो. खुशीलाल मण्डल, पो. राम श्रिलास राय आ डॉ.योगेन्र पाठक ‘श्रियोगी’ ।

दोसर पोीक लोकापण क्ि- शी भोगेन्र यादि ‘भाषकर’, शी रनि कुमार ‘रश्मि’ आ शी कमलेश झा ।

क्ि पाठ-

पञ्चल सत-

- (1) चोरश्मिदा- पल्लिी कुमारी
- (2) केी श्रच्छु होउ- लक्मी दास
- (3) टोन- दीन बन्ि झा

समीक्- शी कमलेश झा, डॉ. श्वा किुमार पसाद, शी राजर्दि मण्डल, बाल गोश्मिन्द यादि ‘गोश्मिन्दाचायय

दोसर सत-

- (4) भगनिन भरोष- ललन कुमार कामि
- (5) सपनेमे बीश्मि गेल श्रनगी- संजी किुमार ‘शमा’
- (6) शबनम- उमेश नारायण कणय
- (7) मुडनक मुर- उमेश मण्डल

समीक्- शी राम श्रिलास साहु, डॉ. योगेन्र पाठक ‘श्रियोगी’, शी शम्भु ‘सौरभ’, दुगा नन्द मण्डल (बनरझूला)

िसिर सत-

(8) सस्ति रोबे रिर-रिर- डॉ. योगेन् र पाठक 'श्रीयोगी'

(9) गंगा सुखा गेल- डॉ. योगेन् र पाठक 'श्रीयोगी'

(10) गंगा नहाएब- राम श्रीलास साहु

(11) टुटैसँ बैँश गेल- दुगानन्द मण्डल

समीक- शी जगदीश पसाद मण्डल, शी भोगेन् र याद 'भाषकर', शी संजी किुमार 'शमा', शी राजदे मण्डल आ उमेश मण्डल ।

चाश्म सत-

(12) श्वाकक अन्धम उदेश्य- नन्द श्रीलास राय

(13) सिि- बेचन ठाकुर

(14) छोटू- शम्भु सौरभ

समीक- शी शारदा नन्द शंह, शी कमलेश झा, शी अजय कुमार 'धण्टू'

पाचम सत-

(15) श्रीलि अलाश्च- श्वाकिुमार अश

(16) आब कश्चया चेबि- कश्चलेशर राउि

(17) लाचारी- गौड़ी शंकर साह

समीक- शी जगदीश पसाद मण्डल, योगेन् र पाठक 'श्रीयोगी', शी नन्द श्रीलास राय ।

छठम सत-

(18) पहपश्च- जगदीश पसाद मण्डल

(19) इजोश्चया राश्री- जगदीश पसाद मण्डल

(20) खश्चया बन्दूक भटाभश्च- शारदा नन्द शंह

समीक- शी कमलेश झा, डॉ. योगेन् र पाठक 'श्रीयोगी', डॉ. श्वाकिुमार पसाद, शी बाल गोश्रीन्द 'गोश्रीन्दाचायय शी दुगा नन्द मण्डल (बनरझूला)

८५ म सगर राक्षी दीप जरय

‘कऱि गंगा’मे सगर राक्षी दीप जरल-

‘सगर राक्षी दीप जरय’ एक ओहन मंचक नाओं छी, जइ मंचपर सभ गिब सांस्कृतिकार भाग लइ छथी, जाइ-अबै छथी ि भाषा-सांस्कृतिक थिकासक लेल थिचार-थिमशयकरै छथी । ि ई ‘सगर राक्षी दीप जरय’ मैथिली भाषा-सांस्कृतिक सभसँ शेषठ मंच कहबै अछ । एकर आयोजन जगह-जगह पायः िन मासक अन्तरालपर १९९० ई.सँ होइ आ रहल अछ ।

८५म गोष्ठी शी ओम पकाश झाक संयोजकऱि आ अथिला पञ्चद केर पसुथिमे भागलपुरक दाश्कापुरी स्थि ‘श्याम कुंज’मे आयोज्मा भेल जेकर उघाटन शिषठ समालोचक डॉ. पेम शंकर आंह, ‘थिदेह’ एि टैगोर सम्मानसँ सम्माश्मा सांस्कृतिकार शी जगदीश पसाद मण्डल, थिलकामाझी थिशथिदालयक मैथिली थिभागायिक डॉ. केष्कर ठाकुर, डॉ. श्मा पसाद याद एि अकिश पाप् श्वाक्क दुखमोचन झा संयुक्ि र पे दीप नेश्म केलश्म । पछाथी एक थिश्वाषठ अयिक मण्डल एि संचालन सश्मथिक आमाण कश्म गोसाउश्मक गीि, सगिगि गान एि ससिथि िचनसँ साझक छह बजे गोष्ठीक शुभारम्भ भेल, राथिक १२:३० बजे घण्टा भश्मक भोजनाकिश भेल, जइ शुन्यकालमे, भोजनक पछाथी, संयोजक- सह गजलकार ओम पकाशजी अपन नऱि रश्मा दूटा गजल सुना कऱिकार सभ सांस्कृतिकार-सांस्कृतिय पेमीके सांस्कृतिय-रसमे बोश्म देलश्म । पुनः कऱि पाठ आ समीक्क र मके आगू बढ़ौल गेल । जे चलै-चलै आनसर छह बजेमे आश्म अयिकीय उदोन्िक संग संयोजकक न्यिदि जापन ि दीप-पंजीक हस्रिणिक पछाथी इथि भेल । ऐ गोष्ठीमे दूर-दूरसँ आएल

सांस्कृतिक-कार-समीक्षक एं शोिक िि सानिय
सांस्कृतिक-कारक संग क्ि पेमीक बेस जमघट ििश्च बनल
रहल जाश्च अश्वला गोष्ठीक आणयक संग आयोश्च गोष्ठीक
समापनक घोषणा नश्च कएल गेल ।

८६म आयोजन म्िबनी श्वला अन्गिधि फुलपरास पखण्डक
मश्चन्दोर पंचायक 'लकसेना' गाममे होए, जइमे पहुँचैक हकार
दै भाँी संयोजक शी राजदे मण्डल 'रमण'जी कहलअ- 'अधिक-
सँ-अधिक क्िकार-सांस्कृतिक-समीक्षक सभके लकसेना गामक
८६म क्ि गोष्ठीमे सुआगि छन्श्च ।'

८५म गोष्ठीक अयिक मण्डल, संचालन सश्च, क्ियाताक मादे
दू शब्द, पोँी लोकापण, क्ि पाठ एं समीक्ष-पणीक श्ीरिण
आचामे देल जा रहल अश्च-

अयिक मण्डल-

डॉ. पेम शंकर शंह, शी जगदीश पसाद मण्डल, डॉ. केषकर ठाकुर,
शी श्ीकानन्द झा 'बीनू' शी राजदे मण्डल, शी श्यामानन्द चौरी ।
संचालन सश्च-

शी दुगानन्द मण्डल, शी पंकज कुमार झा एं उमेश मण्डल ।

क्ियाताक मादे दू शब्द-

पो. केषकर ठाकुर, पो. पेम शंकर शंह, शी जगदीश पसाद मण्डल,
शी श्ीकानन्द झा 'बीनू'

गोसाउश्च गी-

शीमाँी आकी धयदशवी आ सीटी कुमारी ।

स्सिश्च िचन-

शी श्चि कुमार अश ।

पोँी लोकापण

अपन मन अपन नि (लघु कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलक
उकड़ू समय (लघु कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलक
लोकापण कवि-

डॉ. केषकर ठाकुर

डा. पेम शंकर शंभ

पञ्चल सतमे कवि पाठ-

(१) लगक दूरी- अक्की अयदशमी

(२) गहीर आँखक बेनि- ओम पकाश झा

(३) डोमक आँख- रामशिलास साहु

(४) आनिनि ककाक डायरी- अश्वलेश मण्डल ।

समीक्ष-अपपणी, पञ्चल सतक-

डॉ. आनि कुमार पसाद, उमेश मण्डल, डॉ. आनि पसाद यादवि एनि
शी नन्द शिलास राय ।

दोसर सतमे कवि पाठ-

(५) हमर बाइआक अचार- जगदीश पसाद मण्डल

(६) पाआनि- गौड़ी शंकर साह

(७) मजाकेमे चञ्च गेलौ- लक्ष्मी दास ।

समीक्ष-

शी राम सेकि शंभ, पो. केषकर ठाकुर, शी श्यामानानन्द चौरि,
डॉ. पमोद पाण्डेय ।

सिर सतमे कवि पाठ-

(८) जीन्स पेन्ट- नन्द शिलास राय

(९) लाल नुआँ- शम्भु सौरभ

(१०) निङ्गि-निङ्गि भगनि बना देबइ- उमेश मण्डल

(११) मियआ निअक- दुख मोचन झा

समीक्ष-

शी ओम पकाश झा, डॉ. पेम शंकर झा, डा. श्री पसाद यादव,
शी राजदेवि मण्डल ।

चाश्चम सतमे कणि पाठ-

- (१२) अनमेल झाह- श्री पसाद यादव
- (१३) मुरझाएल फूल- कथलेश्वर राउत
- (१४) पुतक कथि- नारायण झा
- (१५) भूख- पंकज कुमार झा
- (१६) बेसी भऽ गेल आब नश्च- हेम नारायण साहु ।

समीक्ष-

शी जगदीश पसाद मण्डल, शी श्रीनोदानन्द झा 'बीनू', डॉ. श्री
कुमार पसाद ।

पाश्चम सतमे कणि पाठ-

- (१७) भीखमंगा- पकाश कुमार झा
- (१८) भोला- ललन कुमार कामि
- (१९) श्रीनि झाह- बेचन ठाकुर
- (२०) होटलमे पुकार- दुखन पसाद यादव
- (२१) चोचाक खो- उमेश नारायण कणय

समीक्ष-

शी श्यामानन्द चौरी, डॉ. श्री कुमार पसाद, राजदेवि मण्डल 'रमण'
छश्चम सतमे कणि पाठ-

- (२२) अपन घर- राजदेवि मण्डल
- (२३) चीफ गेष्ट- श्री कुमार अश
- (२४) मायाक गिगि- राजदेवि मण्डल 'रमण'
- (२५) आमक ठा- श्री कुमार पसाद

(२६) हेराएल कोदाश्च- आि कुमार पसाद

(२७) श्कुजाइनीली कआया- शारदा नन्द अंह

समीक-

उमेश मण्डल, नन्द श्रीलास राय, श्यामानन्द चौरी एि हेम नारायण साहु ।

समाद-

उमेश मण्डल ।

८४म सगर राश्री दीप जरय

८४म सगर राश्री दीप जरय २० अ्सम्बरक साझमे शुर भ' २१ अ्सम्बर २०१४क आनसरमे सम्पन भेल । ८५म आयोजन भागलपुरमे शी ओम पकाश झा केर संयोजकामे माचय२०१५क अन्ध्रिम शआके होएि । ई आणख अ्यिक मण्डल एि संचालन सअश्री िि गोष्ठीमे उपसश्रीि सबहक श्रिचारसँ भेल । ओना पसिाि शी राजदेि मण्डल 'रमण' जीक सेहो रहआ जे लकसेना (मिबनी)मे हुअए । मुदा सशिममश्री भागलपुरेक रहल । अि: दीप आ पंजी ििआन गोष्ठीक संयोजक भाि संयोजकके देलखन । संचालन सअश्रीमे दुगानन्द मण्डल, ओम पकाश झा िि उमेश मण्डल छला आ अ्यिक मण्डलमे आि कुमार पसाद, श्यामानन्द चौरी िि सचआदानन्द 'सअद' । मो. गुल हसन एि अ्रोज आलम सगिाि गीि गौलआ, एि सििािचन आकिुमार अश । ििन सतमे आमन कायख मानुसार ऐ गोष्ठीक भअ राश्रीक याता भेल-

उदाटन सत- पअचए-पाि िि दू शब्द-

उदाटनकी-

श्यामानन्द चौरी

जगदीश पसाद मण्डल

पं. सच्चिदानन्द अश 'सच्चिद'

अश्वर झा महादे

ओम पकाश झा

अि कुमार पसाद

राजदे मण्डल 'रमण'

पोि लोकापथ सत-

(१) डीहक जमीन (अिहअ/लघु क्ि संगह) ओम पकाश झाजी केर
लोकापथक्ि-

जगदीश पसाद मण्डल,

उमेश नारायण कणय

राम अिलास साहु ।

(२) समरिइक भूि (लघु क्ि संगह) जगदीश पसाद मण्डलजी
केर

लोकापथक्ि-

ओम पकाश झा

सच्चिदानन्द 'सच्चिद'

शम्भु सौरभ

(३) गामक शकल-सूरि (लघु क्ि संगह) जगदीश पसाद मण्डलजी
केर

लोकापथक्ि-

श्यामानन्द चौरी

अनुप कुमार कश्यप

राजदे मण्डल 'रमण'

उमेश नारायण कणय

(४) अप्पन-बीरान (लघु कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलजी केर
लोकापथकवि-

बेचन ठाकुर

फागुलाल साहु

अश्वर झा महादेवि

रामाकान्ति अश

(५) बाल-गोपाल (लघु कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलजी केर
लोकापथकवि-

संजय कुमार मण्डल

सूयनारायण कामि (सूरज कामि)

शम्भु सौरभ

आवि कुमार पसाद

(६) लजश्वजी (लघु कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलजी केर
लोकापथकवि-

बमभोली झा

दुगानन्द मण्डल

आवि कुमार पसाद

गावि पसाद (सरपंच)

(७) पझिड़ (लघु कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलजी केर
लोकापथकवि-

ओम पकाश झा

श्यामानन्द चौरी

राम शिलास साहु

नन्द शिलास राय

(८) रटनी खढ़ (लघु कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलजी केर

लोकापथकी-

अरश्निद चौरी

अनुप कुमार कश्यप

कथलेशर राउ

मो. गुल हसन

(९) आदि दशम (पद) पं. सच्चिदानन्द अश

लोकापथकी-

ओम पकाश झा

शम्भु सौरभ

आदि कुमार पसाद

कथलेशर राउ

(१०) अल्लाषा (मैथिली भजनमाला) पं. सच्चिदानन्द अश

लोकापथकी-

श्यामानन्द चौरी

बेचन ठाकुर (सञ्जसि पाही)

(११) सीडी लोकापथ-

(१) मैथिली गजलः आगमन ओ पस्तिन अंदु (आलोचना संकलन)

सं.सं- गजेन्र ठाकुर, आशीष अनन्तहारजी केर

(२) सखुआली (श्रीहृ/लघु की संगह) सं.सं- उमेश मण्डलक

(३) आमस सनेस (श्रीहृ/लघु की संगह) सं.सं- उमेश मण्डलक

(४) देघिरक पसाद (श्रीहृ/लघु की संगह) सं.सं- उमेश मण्डलक

(५) की बौ आदि मेहिपा- (श्रीहृ/लघु की संगह) सं.सं- श्रीदेह-

सम्पत्ति र पे लोकापथ-

जगदीश पसाद मण्डल

आदि कुमार पसाद

ओम पकाश झा
 राजदेि मण्डल 'रमण'
 कथलेशर राउि ।
 कणि सत- कणि पाठ एि समीक-
 पञ्चल पालीमे-
 लोकतिक माने- ओम पकाश झा-
 टेटरा हीरा- नन्द झिलास राय-
 समीक-
 श्यामानन्द चौरी
 फागुलाल साह
 श्वाि कुमार पसाद
 अनुप कुमार कश्यप ।
 दोसर पाली-
 पञ्चित पापी- उमेश नारायण कणय
 जाझि-पाझि- दुगानन्द मण्डल
 समीक-
 राम झिलास साहु
 राजदेि मण्डल 'रमण'
 संयज कुमार मण्डल
 अश्वर झा महादेि
 िसर पाली-
 एकर उत्तरदायी के?- शम्भु सौरभ
 कमझिया हिली- राम झिलास साहु
 समीक-
 उमेश मण्डल

फागुलाल साहु
सच्चादा नन्द झा 'सच्चाद'
बेचन ठाकुर (नाटकार)
चाश्म पाली-
खेती-फिड़ी- बेचन ठाकुर
डीहक जमीन- ओम पकाश झा
समीकर-
आरि कुमार पसाद
अश्वर कुमार झा
बमभोली झा
शम्भु सौरभ
पाश्म पाली-
आह- गौड़ी शंकर साह
इन्फेक्शन- फागुलाल साहु
समीकर-
कथलेशर राउरि
राम श्रीलास साहु
शशिकांरि झा
उमेश नारायण कणय
छश्म पाली-
पाच भू- उमेश नारायण कणय
जश्म गेल माइक आस- अश्विन कुमार कणय
समीकर-
कथलेशर राउरि
नन्द श्रीलास राय

ओम पकाश झा

अनुप कुमार कश्यप

साक्षीम पाली-

आशि श्रीदापक्षी- सच्चिदानन्द 'सत्त्वद'

भरम- लक्ष्मी दास

कलयुगक आणख कथलेशर राउति

समीक-

शम्भु सौरभ

जगदीश पसाद मण्डल

श्यामानन्द चौरी ।

अंमे अयिक्रीय भाषण ति नित्यादि जापन ।

८३म सगर राक्षी दीप जरय

मैथिली सांस्कृतिक पञ्चासि सञ्चारा मंच “सगर राक्षी दीप जरय” केर ८३म काि गोष्ठी फुलपरास अनुमण्डलक सखुआ-भपञ्चयाही गामक उरि आ मयि श्रीदालय पञ्चसरमे श्वनाक ३० अगस्कि (२०१४) साझ छह बजेसँ शूर भऽ ३१ अगस्कि आनसर छह बजे शि आकषक अयिक मण्डल ति संचालन सञ्चि केर अनुगिधि चलै रहल । अयिक मण्डलमे डा. श्रीमल कुमार राय, डा. योगेन्र पाठक ‘श्रियागी’, श्री जगदीश पसाद मण्डल, श्री कमलेश झा, ति डा. आकिुमार पसाद रहथि, श्विना मंचक संचालन सञ्चिमे श्री ओम पकाश झा, श्री राजदेवि मण्डल आ श्री दुगानन्द मण्डल छला । जश्वना जन सहयोगसँ ई गोष्ठी आयोजि छल श्विना भपञ्चयाही,

सखुआ, छजना, नरञ्जया, आमखी, औरहा, बेरयाही, सुरयाही, रनिसारा, चिरापटी, नटोली, कदमपुरा, पकञ्जया, लक्खञ्जया, गम्हञ्जया, बेलही इयिञ्ज गामक ि टोलक साञ्जयि पेमीक उपसञ्जि छल। न-नि साञ्जयि पेमी सोझा एला। पञ्जि कपिपर िञ्जि समीक/ञ्जपणी दऽ केकि गोटे अपन नि पञ्चए बनौलञ्ज, देलञ्ज आ सोझा एला। जे सगर राखी दीप जरय'क उदेस रहल अञ्ज। उपसञ्जि साञ्जयिकार सभ अहाञ्जि भेला। केि गोटे अपन ञ्चिार सेहो मंचेपर यिक्कि केलञ्ज जे अञ्जना गोष्ठी जँ गाम-घरमे हए ि न-नि लोकक पशि सिः साञ्जयि केत होइ रहि, जइसँ समाजक संग साञ्जयि डेग-मे-डेग ञ्जला कऽ चलि आ चलै रहि। जइसँ जनजागरण हएि आ मैथिली साञ्जयिक मयि एक खास अभाकि पूथियसेहो हएि।

नारी केन्ञ्जि गोष्ठी भेने नारी ञ्मिशयकरै अनेक कि आएल। कि मयि ढेर रास नारी-समस्याके ञ्जञ्जहि कएल गेल। समीकक लोकञ्ज अपन-अपन मि दै भञ्ज राखीक याताके सफल बनौलञ्ज। गामक ञ्जछु नारीओ गोष्ठीमे एक शो र पमे उपसञ्जि छेली। गोष्ठीक आरम्भ सामुञ्जक र पे ञ्जिदि दीप पञ्जिञ्जि कऽ स्निनीय डा. ञ्मिल कुमार राय, शी सूरज नारायण राय 'सुमन', संग-संग कलकतासँ आएल डा. योगेन् पाठक 'ञ्जियोगी', भागलपुरसँ आएल शी ओम पकाश झा एि बेरमासँ आएल शी जगदीश पसाद मण्डलजी दारा करौल गेल।

छह पालीमे कुल २७ गोट नूनि ञ्जिहञ्ज/लघु किक पाठ भेल। समीक भेल, दजब भञ्ज पोिक लोकापथ भेल। जइमे दू गोट पोि र मशः “कार ञ्ज्वरहञ्ज” आ “संि कार ञ्ज्वरहञ्ज” अयोि यादि ‘अमर’क। आ पाच गोट लघु किक पोिक सॉफ्ट कौपी र मशः

“अपपन-बीरान”, “पझाड़”, “बाल-गोपाल”, “रटनी खढ़” िि नारी केन्श्चि कि संगह “लजश्चजी” जगदीश पसाद मण्डलक िश्चना दूटा पटक ि पञ्चल “जाल” आ दोसर “पंचैी” राजदेि मण्डलक, एकटा कश्चि संगह “सूखल मन रिसल आँश्च” मुनी कामकि आ बेचन ठाकुरक एकटा नाटक “भोट” लोकाश्चि भेल । ८४म सगर राश्चि दीप जरयक आयोजन झंझारपुर अनुमण्डलक बेरमा गाममे ष्चकिुमार ष्चश जीक संयोजक िमे २० ष्चसम्बर-२०१४के होएि । बेरमा गाममे ७१म कि गोष्ठी ष्चनाक ०२.१०.२०१०के मयि ष्चिदालय पश्चसर-बुद्धया गाछी-दुगा सनि-मे भेल छल । एकि ष्चनमे ई दोसर खेप छी ।

अन्िमे संयोजक नन्द ष्चिलास राय सिनीय साश्चयि पेमी, ष्चनका सबहक ष्चिशेष सहयोग छल ऐ आयोजनमे, िइ सभ बेक्ीके िनिदि जापन केलश्च । संग-संग शी गजेन् र ठाकुर ष्चससँ शुश्चि पकाशनसँ पकाश्चि मैश्चिलीक आिश्चक पोी, सभ गोटेके मंचेपर देल गेलश्च । ष्चिशेष सहयोगी सबहक नाओं ऐ रिहे अश्च- डा. ष्चिमल कुमार राय, शी िरेन् र कुमार, शी सूरज नारायण राय, शी अशोक कुमार राय, शी सुन्दर लाल साह, मो. ष्चजनि, शी ष्चयाराम साह, शी शम्भू ष्चंह, शी यादि, शी उमाकान्ि राय, शी जगि नारायण राय, शी बजनन्दन साह, शी उमेश साह, शी सुीर साह, शी रामकुमार मण्डल, शी सयि नारायण ष्चंह आ शी लक्मी मण्डल ।

बेष्चंग-

अयिक मण्डल- डा. ष्चिमल कुमार राय, डा. योगेन् र पाठक ‘ष्चियागी’, शी जगदीश पसाद मण्डल, शी कमलेश झा, डा. ष्चकिुमार पसाद ।

संचालन सश्चि-

शी ओम पकाश झा, शी राजदेि मण्डल, शी दुगानन्द मण्डल ।

कॆ पाठ एॆ समीकॆ-

पञ्चल सतमे- जगदीश पसाद मण्डल- “गाॆस मोइस”; शारदानन्द
अंह- “की करब से अही कहू”; राजदेॆ मण्डल- “दोख केकर”
ॆ लक्मी दास- “गंगाजलक ॆल”

समीकॆ- योगेनॆर पाठक ‘श्रियोगी’, कमलेश झा, श्रमल कुमार राय,
आकुमार पसाद, गौड़ी शंकर साह ।

दोसर सतमे- दुगानन्द मण्डल- “छुहिश्र”; कअलेशर राउॆ- “बड़का
खीरा”, योगेनॆर पाठक श्रियागी- “श्रिजय दृश्य-१, श्रिजय दृश्य दू-
२”; ललन कुमार कामॆ- “बेटी”

समीकॆ- फागुलाल साहु, राजदेॆ मण्डल, अयोॆि यादॆ ‘अमर’,
कमलेश झा आ आकुमार पसाद ।

सिॆर सत- ओम पकाश झा- बेटीक अयाह, आॆ कुमार पसाद-
“झमकी”; राम श्रिलास साहु- “अश्रिसबास”; हेम नारायण साहु- “बेसी
भ’ गेल आब नै”

समीकॆ- उमेश मण्डल, शम्भु सौरभ, दुगानन्द मण्डल ।

चाश्म सत- उमेश मण्डल- “कोटाक चाउर”; फागुलाल साहु-
“मदानी नारी”; शम्भु सौरभ- “लाजो”; आॆ कुमार अश- “बाल
श्रिॆि”

समीकॆ- कमलेश झा, ओम पकाश झा, राजदेॆ मण्डल, उमेश नारायण
कणयॆि दुगानन्द मण्डल ।

पाश्म सत- ओम पकाश झा- “कुलच्छनी”; गौड़ी शंकर साह-
“छोटकी”; उमेश नारायण कणय “यूज एण्ड थो”; अछेलाल
शास्ती- “गुलटेनमा”; नन्द श्रिलास राय- “अ्रिया”

समीकॆ- कमलेश झा, दुगानन्द मण्डल, राम कुमार मण्डल, फागुलाल
साहु, राजदेॆ मण्डल ।

छअम सत- राम श्रीलास साहु- “बौआ बाजल”; फागुलाल साहु- “चरि बालक”; जगदीश पसाद मण्डल- “रेहना चाची”; शारदा नन्द आह- “फक द आसास छूटल”; डॉ. कीर्तियना झा- (चिक- उमेश मण्डल) “शेफाली, फुलपरासगिली आ हम”

समीक्ष- अयोध्या यादव, ओम पकाश झा, शम्भू सौरभ, ललन कुमार कामि, आरि कुमार अश ।

पोथी लोकापथक

डा. योगेन्द्र पाठक ‘श्रियोगी’/श्री कमलेश झा/श्री रामकुमार मण्डल- “कार अक्षरहस्त” अयोध्या यादव ‘अमर’क

श्री जगदीश पसाद मण्डल/ श्री राजदेव मण्डल/ डा. श्रीमल कुमार राय/ डा. आरि कुमार पसाद/ श्री शम्भू सौरभ- “संवि कार अक्षरहस्त” अयोध्या यादव ‘अमर’क

श्री फागुलाल साहु- “सूखल मन रिसल आँख” (कवि संग्रह)- मुनी कामि

श्री शम्भू सौरभ- “कवि कुसुम” (श्रीहस्त/लघु कवि संग्रह) दुगानन्द मण्डलक

श्री बजनन्दन साह- “भोट” (नाटक) बेचन ठाकुरक

श्री हेम नारायण साहु- “पंचैथी” (पटकवि) राजदेव मण्डलक

श्री आरि कुमार अश- “जाल” (पटकवि) राजदेव मण्डलक

श्री कमलेश झा- “अपन-अरान” (लघु/श्रीहस्त कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलक

श्री उमेश नारायण कणय “पझाइ” (लघु/श्रीहस्त कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलक

श्री फागुलाल साहु- “रटनी खढ़” (लघु/श्रीहस्त कवि संग्रह) जगदीश पसाद मण्डलक

शी राम कुमार मण्डल- “बाल-गोपाल” (लघु/ग्रंथिआ कऱि संगह)
जगदीश पसाद मण्डलक

शी ओम पकाश झा- “लजञ्जजी” (लघु/ग्रंथिआ कऱि संगह) जगदीश
पसाद मण्डलक

-उमेश मण्डल

३१/०८/२०१४

८२म सगर राक्षी दीप जरय

82म सगर राक्षी दीप जरए केर बेङ्कंग न्यूज-

स्नि- गजेन्र ठाकुरक आज आसि, गाम- मेहनि, आला- मडिनी ।

अनाक- 31 मई 2014 (शअ अन्)

समए- संिया छह बजेसँ

गोष्ठीक नाओं- कऱि बौनि आनि मेहनिपा सगर राक्षी दीप जरए ।

आयोजनक खेप- 82म आयोजन

संयोजक- गजेन्र ठाकुर

अशेषि- बाल साञ्जियपर केन्अनि ।

गोष्ठीक उदाटन- डॉ. कमलकान्नि झा, राज देनि मण्डल, डॉ. आनि
कुमार पसाद, आकिमार अशा नि जगदीश पसाद मण्डल ।

संगि, गीनि गाअ केलअ- काशीनानि झा ‘अरण’

कऱि गोष्ठीक अयिक्त्रि केलअ- अरअनन्द ठाकुर

मंच संचालन केलअ- आनन्द कुमार झा आ उमेश मण्डल

अआला गोष्ठी स्नि- मडिनी आलाक भपअयाही गामक सखुआ
टोलपर ।

अआला गोष्ठीक केन्रअनन्दु- स्ती अमिशय

अआला गोष्ठीक संयोजक हेनि- नन्द अिलास राय ।

अथाला गोष्ठीक संभाषि श्री- 30 अगस्ति 2014 (शश्व अन्)
हकार देलअ- सामुश्चक र पे अथाला गोष्ठी लेल हकार मंचपर नन्द
श्रीलास राय देलअ ।

समीक/श्चपणीमे भाग लेलअ- दुगानन्द मण्डल, आशिकर शीआसि,
राम श्रीलास साहु, बाल गोष्तिन् गोष्तिन्दाचायय फागुलाल साहु, नन्द
श्रीलास राय, आकिुमार अश, नारायणजी, कमलकान् झा, काशीना
झा अकरण, आकिुमार पसाद, अथन कुमार कणय संजी किुमार समा,
उमेश नारायण कणय शारदानन्द अह, जगदीश पसाद मण्डल, संजय
कुमार मण्डल, हेम नारायण साहु, पंकज सयिम इयाअ ।

आठ गोट पोीक लोकापथ भेल-

1. बैशाखमे दलानपर- गद-पद संगह संग आम्कि लेखक- संदीप
साफी । लोकापथ- डॉ. कमलकान् झा, अरश्विन्द ठाकुर, राजदे
मण्डल, सीराम साफी
2. नेपालक नोर मर भूअमे- गद-पद संगह, लेखक- श्विन्देश ठाकुर ।
लोकापथ- जगदीश पसाद मण्डल, नन्द श्रीलास राय, चन्डेश ख ।
3. उलहन- श्विहआ आ लघुकि संगह, लेखक- कथलेश राउ ।
लोकापथ- गजेन् ठाकुर, आ किुमार पसाद, दुगानन्द मण्डल ।
4. On the Dice Board of the Millennium- Joity Jha
Chaudhary. लोकापथ- कमल कान् झा, आनन्द कुमार झा,
आ किुमार पसाद ।
5. The Science of Words कि संगह, अनुदिदक- गजेन्
ठाकुर । लोकापथ- असीन ठाकुर, ललन कुमार कामि, अरश्विन्द
कुमार ठाकुर ।
6. िअ बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ, गजल संगह, गजलकार-
गजेन् ठाकुर । लोकापथ- बाल गोष्तिन्द यादि 'गोष्तिन्दाचायय उमेश

पासनि, रामदेि पसाद मण्डल 'झार दार' राम सेकि ठाकुर ।

7. सहस्रलेश- पद संगह, लेखक- गजेन्र ठाकुर, लोकापथ- बेचन ठाकुर, राम झिलास साहु, हेम नारायण साहु ।

8. पबन्-आबन् समालोचना भाग- 2, आलोचक- गजेन्र ठाकुर ।
लोकापथ- अरझीन्द ठाकुर, जगदीश पसाद मण्डल, फागुलाल साहु,
राजदेि मण्डल ।

33 गोट झीहआ/लघु किक पाठ भेल-

1. अझलेश मण्डल- लझयाएल मुँह
2. ललन कुमार कामि- स्कूलक फीस
3. जगदीश पसाद मण्डल- 'अकि' ि 'पल भझ'
4. चण्डेश ख- 'रोटी' ि 'भोज'
5. लक्ष्मी दास- दुश्टपना
6. जगदानन्द मनु- 'भगिनिके जे नीक लगझ' ि 'बड़का बाबू'
7. उमेश पासनि- अजोह
8. झि शंकर शीझिस- हाि आ गीदड़
9. बेचन ठाकुर- हझया इन्सपेकटर
10. राम सेकि ठाकुर- मोटरीमे क्णि छेलै
11. गौड़ी शंकर साह- परीक्
12. राम झिलास साहु- बोल-बोि
13. नन्द झिलास राय- अमर-मदन
14. शारदा नन्द झंह- सुचीमे नाम' ि 'एकर जिबदेह के?
15. उमेश नारायण कणय म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ
16. संजय कुमार मण्डल- एकन्ि
17. झि कुमार पसाद- अझया
18. अजय कुमार दास 'अन्टूजी'- सचेलि पेम

19. पंकज सयिम- जननायक
20. श्वाि कुमार अश- गमयआन्हर
21. दुगानन्द मण्डल- बुझि
22. फागुलाल साहु- मा केर डाट
23. राजदेवि मण्डल- र सल बौआ
24. कथलेशर राउ- खराप
25. कमलकान् झ्ना- साझक सुख
26. अथन कुमार कणय अशछल नारी
27. उमेश मण्डल- दूि
28. योगेन् पाठक 'अयोगी'- खजाना, क्णि पाठ- उमेश मण्डल
29. गजेन् ठाकुर- रेश
30. दीपाली झ्ना- दादीक गाम, क्णि पाठ- आनन्द कुमार झ्ना
31. अरश्चिन्द ठाकुर- बेदरमैि

८१म सगर राश्चि दीप जरय

देघिरमे 81म सगर राश्चि दीप जरए सफलणि पूकि सम्पन भेल ::
उमेश मण्डल

स्ि. मायानन्द अश िि जीकान्कि स्मृकि समरथि 81म सगर राश्चि दीप जरए केर आयोजन अनाक 22 माचय2014के शी ओम पकाश झाक संयोजकमि संिया 6 बजेसँ देघिरक बम्पास टॉनक अजली कोठी-3 मे आयोज्चि भेल । ओयोजनक उदाटन दीप पज्श्चि कश्च कऽ शी ओ.पी. अशाजी केलअ । अश्चिलाक गाम-गामसँ आ भारकि शहर-शहरसँ आएल किकार, साश्चियिकार, समालोचक िि

साञ्चयि पेमीक कसगर जुटान छल। साझक पाचे बजेसँ जुटान हुआ लगल। अञ्चयाकमीक हिाहि शुर भऽ गेल।

शुभारम्भ मंगला चरणसँ शी एस.के. अशाजी केलअ। झार दारजी अपन सृष्टि अनुपम गी “हम नै छी अहा योग यौ पाहुन/ अहा छी बड़ा महान/ स्मिगि स्मिकार कर शीमान्/ अहा छी गंगा अहा छी यमुना/ पग ढुलसँ पाणि भेल अँगना...।” गाअ उपस्थिति साञ्चयिपेमी आ साञ्चयिकारके स्मिगि केलअ।

पोकिक लोकापण शुर भेल। गजेन्द्र ठाकुरक संग सम्पादनमे सम्पादक अशिलाक पंजी पबन् “जीनोम मैथंग भाग- 2” आ “अनीयोलाकल मैथंग” 950 एडीसँ 2009 एडी शिक पंजीक लोकापण शी ओम पकाश झा, डॉ. योगानन्द झा आ शी राजी रंजन अशा जीक हा भेल। अकिमार झा ‘अल्लू’जी रश्मि समालोचनाक पो “अंशु” केर लोकापण शी जगदीश पसाद मण्डल, शी राजदे मण्डल आ शी बेचन ठाकुरजी केलअ। अंगेजी-मैथिली शब्द कोष भाग-2, “मैथिली-अंगेजी कम्प्यूटर शब्दकोष” ि बेचन ठाकुरक “ऊँच-नीच” नाटकक लोकापण सेहो भेल।

दू शब्दक कड़ीमे पशि केलौ। ओ.पी.अशा, अलीप दास, ओम पकाश झा, दैअक समाचार पत पभा खबर केर सम्पादक शी सुशील भारी मैथिलीक दशा असापर अपन अचार पकट केलअ। ओ कहलअ-

“अही रहिक आयोजन मैथिलीक सम्पूर्ण अिकासक मागय सहज बनै।”

आयोजकके न्थिदि जापन करै एक-सँ-एक साञ्चयिकार अपन मनक खुलि बा मैथिली अिकास लेल स्मिति पूछि मंचपर रखलअ। मुख्य अशिश ओ.पी. अशाजी सेहो एकटा सुन्दर गी

गाश्च स्मिगिकि भां पकट केलश्च । राजीं रंजनजी स्मिश्चश्च गजल
गाश्च अपन भां पकट केलश्च । सगर राक्षी दीप जरए (सभ अजानीमे
जानक दीप जरौ) कियाताक मादे शी जगदीश पसाद मण्डलक
श्चिचार बकनिक संग श्चखनिमे सेहो श्चिस्मिरपूकि आएल । दू थटा
कागि हां-हां बाटल गेल । जे ऐ श्चंकपर उपलब्धि अश्च-
[http://maithili-samalochna.blogspot.in/ .../ .../blog-
post_24.html](http://maithili-samalochna.blogspot.in/.../.../blog-post_24.html)

34 गोठ लघुकि/श्चिहश्च किक पाठ भेल । सां पालीमे बाश्च सभ
किक पाठ करौल गेल । अंश्चिम पाली छोश्च छबो पालीमे पश्चकि
किपर िन गोठ समीक्कक समीक्क अबै रहल आ समीक्कक समीक्क
सेहो होइ रहल । समीक्कक समीक्क केश्चहार सभ छला राजदे
मण्डल, नन्द शिलास राय, भाष्कर झा, उमेश मण्डल, चन्दन झा,
डॉ. निाकर ठाकुर, श्चपीन कुमार कणयइयाश्च । पश्चिसमीक्कक र ममे
एक गोठ श्चिचारणीय श्चप्पणी आएल । ओ छल, युं समीक्कक ।
अपन श्चिचार यिकि करै कहलश्चन-

“समसामश्चक किक गहराइके आिश्चक पाठक स्मिगि नै करए
चाहैए । से ई किक दोष भेल । फलस्मिरि प पाठकक अभां अश्च ।”
संचालक गजेन् र ठाकुरजी ऐ श्चिचारपर असहमश्चि जौंलश्च ।
कहलश्चन-

“ई ि भाषाक श्चिशेषि श्चए जे कनिकके गहराइ पदान करै छै ।
जेकर अभां मैश्चिली साश्च्यिके पाठक श्चिश्चन केने रहल ।”
ऐ ियिके स्याश्चि करै ठाकुरजी आइसलैण्डक भाषाक श्चश्चकर
केलश्च ।

दू सतक पछाश्चि भोजनाकिाश भेल । श्चश्चिलाक खान-पानक आिश्चक
र प अकश्चियार केने छला आयोजक । करीब 125 गोटे एक पाश्चिमे

बैस भोजन केलआ। ऐ रिहक समायोजनसँ हुनका मुँहक रोहानी फुलाएल गुलाबक फूल सन देखबामे आएल। बारीक सभ फुदैक-फुदैक अपन-अपन अम्माके जीर्णि खेलाड़ी जका अस्तिन करै देखल गेला। भोजनक घंटा भश्च पछाश्चि पुनः अत्थाला सतक याता शुर भेल। पश्चि कतिपर समीक्क हेँ शिशेष सुश्चि पदान कएल गेल छल। ओ ई जे जँ समीक्क पश्चि कतिके कोनो कारणे श्रियानसँ नै सुश्चि पबश्चि ि हुनका लेल कतिक पाण्डुश्चि उपलब्धि करौल जाइ छल। संचालकक कहब रहआ जे मैश्चिली साश्च्यमे समीक्कक सश्चि उमदा नै अश्च। ऐपर शी अरश्चिन्द ठाकुर असहमश्चि यिक् केलआ। ओ कहलआ- “सगर राश्चिक अश्चि अमो रहल अश्च जे समीक्कपर समीक्कसँ गोष्ठीमे श्रिीद बश्च सकैए िए एहेन कायश्च बँचक चाही।”

सम्पूणय कायश्चमक लाइ ि पसारण कएल गेल। सगर राश्चिक इश्चिहासक पनामे ई एक गोट अनुपम काययश्चि हए। सम्पूणय कायश्चमक श्रिश्चओ यू-वयूबपर उपलब्धि करौल जाए िकरो बेस्ि आयोजक केने छला। मैश्चिली साश्च्यके पूणश्चिः इलेक्टाँश्चक स्पोटय भेटौ ऐ हेँ आयोजक पश्चि छला।

अत्थाला गोष्ठी हेँ दू गोट पस्ि आएल। बहुसंख्यक साश्च्यिकारक श्रिचारके आगू बढ़बै अ्यिक शी जगदीश पसाद मण्डल भाँ संयोजकके दीप आ उपस्श्चि पुस्श्चिका हश्चि करौलआ। 31 मई 2014के म्िबनी अलाक मेह ि गाममे 82म क ि गोष्ठी हेँ भाँ संयोजक शी गजेन्र ठाकुर समगदा हकार दऽ सभके आमंश्चि करै कहलश्चन-

”बालकतिपर केन्श्चि अत्थाला गोष्ठी आयोश्चि हए।”

अंमे संयोजक शी ओम पकाश झा आयोजक न्यिीद जापन करै

कहलआ-

“81m Sagar Raati Deep Jaray katha Gosthi 22 March 2014 saanjh sa shuru bha ka 23 March 2014 ke bhor me safalta poorvak Deoghar me sampann bha gel. Ehi beruka katha gosthi ke swargiy Mayanand babu aa swargiy Jeevkant ke samarpit kayal gel. Gosthik adhyakshta sri Jagdish Pd Mandal kayalanhi aa sanchalak chhalaah Sri Gajendra Thakur. Mukhy atithi Sri O. P. Mishra chhalaah. Kul 29 got kathaakaarak dwara 35 got katha paaTh kayal gel. Samalochna seho badd neek rahal. Kul milaa ka kathaa goshthi ekTa neek workshop saabit bhel. Katha goshthi me aaynihaar sab kathakaar lokani ke hum hriday sa aabhari chhi. Sangahi ahaa sab shubhkaamna denihaar mitra sabhak seho aabhari chhi. Kichhu gote anupasthitik khed prakaT karait shubhkaamna prakaT kelanhi, hunko sabhak aabhari chhi. Je jaani boojhi ka nai aylaah tinko aabhari chhi kiyak ta hunkar vyavhaar humra bheetar Maa Maithilik prati pratibaddhtaa aar badhaa delanhi.”

81म सगर रात्री दीप जरए- देघिरमे सुसम्पन्न भेल 82म काँ गोष्ठी मेहामे होएँ

मायानन्द अश जीकिन्हीं समृद्धि-सगर रात्री दीप जरए केर 81म

कऱि गोषठी देधिर (झारखण्ड)

संयोजक- ओम पकाश झा

उदाटन सत-

दीप पजलिन- शी ओ.पी. अशा एि समस्ि कऱिकार

संचालन- ओम पकाश झा

लोकापण सत-

अयिक- जगदीश पसाद मण्डल

मुख्य अधीश्री- शी ओ.पी. झा आ शी गजेनूर ठाकुर

संचालक- उमेश मण्डल

दू शब्द-

1. ओ.पी. झा, अकिाश पाप्ि अश्रयंि- झारखण्ड सरकार

2. सुशील भारी, संपादक, पभाि खबर अन्दी दैअक ।

3. अलीप दास

4. ओम पकाश झा

5. अश्रीलेश कुमार

6. जगदीश पसाद मण्डल

कऱि सत-

अयिक- शी जगदीश पसाद मण्डल, शिषठ साश्रयिकार

मंच संचालक- शी गजेनूर ठाकुर, संपादक, 'श्रीदेह' इण्टरनेशनल ई-जनरल

पञ्चल सतमे पञ्चि कऱि एि कऱिकार-

असली हीरा- शी दुगानन्द मण्डल (अमझी)

अक्शाक भाड़ा आ बुझिए बहिह- शम् फागुलाल साहु (सखुआ)

बुझया मैया- ओम पकाश झा (भागलपुर)

केि बेर- उमेश मण्डल (अमझी)

समीकक-

योगानन्द झा

राजदे मण्डल

अरश्निन्द ठाकुर

पमोद कुमार झा

समीकक समीकक

नन्द शिलास राय

चन्दन झा

निकर ठाकुर

दोसर सत-

सभसँ बड़का भी.आई.पी. गेष्ट- शी नन्द शिलास राय (भपञ्चयाही)

डरक डंका- शी राजदे मण्डल (मुसहरआया)

ई छी हमर मजबूरी आ इमानदारीक पाठ- शी राम शिलास साहु
(लक्खआया)

अपपन माए-बाप- शी ललन कुमार कामि (ललमआया)

सिर सत-

शुना-झपटी- शी आि कुमार अश (बेरमा)

बड़का मोछ- शी कश्लेशर राउि (बेरमा)

उड़िक शाि- शी शम्भू सौरभ (बैका)

जाशिक भोज- शी उमेश पासनि (औरहा)

चाश्म सत-

गुरदश्मगा- डॉ. योगानन्द झा (कश्चलपुर)

अपराि- शी पंकज सयिम् (मिबनी लगक)

ककर चरिही आ चुनामिनी लोक- डॉ. उमेश नारायण कणय

कबाउछ- डॉ. निकर ठाकुर

पाचम सत-

आन्हर- शी अश्वलेश कुमार मण्डल (बेरमा)
सरकारीए नौकरी अएक- अपीन कुमार कणय(रेगिडी)
बनमानुष आ मनुष- डॉ. आकुमार पसाद (अमरा)
टिपेसन आ मजबुरी- शी शारदानन्द अह
पाअ- शी बेचन ठाकुर

छअम सत-

सता-चअ- शी अरअनन्द ठाकुर (सुपौल)
बापक पाण- शी भाषकरानन्द झा भाषकर (कोलकाणि)
संबोनि- शी चन्दन कुमार झा (कोलकाणि)
ठीका- शी आमोद कुमार झा
चौअया- शी अछेलेल शास्ती (सोनषा)
सामि सत-

खिन, जखन- शी गजेन्ठ ठाकुर (अली)
चैन-बेचैन- शी जगदीश पसाद मण्डल (बेरमा)
पअल सगर राअी जकरा सगर अशमे लाइ पसाअि कएल गेल,
अंक

छलः

<https://new.livestream.com/accounts/7191650/events/2827795>

ऐ रिहे देघरक गोष्ठीमे कुल ककारक संख्या 29 छल। 34
गोट किक पाठ भेल।

80म सगर राक्षी दीप जरय

80म की गोषी “की अलन सदाय-सगर राक्षी दीप जरय”
आमसीमे पञ्च की ए कीकारक नाओं-

1. जीपिर दया करी- पल्लवी कुमारी
2. स्पेशल परमीट- ओम पकश झा
3. डेपमारा गोसाइ- ओम पकाश झा
4. ओ स्त्री - सदरे आलम गौहर
5. बाल अधिकार- नारायण झा
6. माग- अर्था अश
7. नृश्रिया- अर्था अश
8. जनी लेल- अर्था अश
9. थीजी- मुकुन्द मयंक
10. पढ़ाइ आ खेती- अपीन कुमार कणय
11. बदश्रिया मूसक घर- उमेश पासनि
12. अपन घर- लक्ष्मी दास
13. अत- नारायण याद
14. पेम एगो अचम्भा - बाल मुकुन्द पाठक
15. भगिनिक पूजा- संजय कुमार मण्डल
16. अपिनी- पंकज सयिम
17. गौमिक अश्रुलगा-- दुखन पसाद याद
18. रिकारीक चोर- ललन कुमार कामि
19. वंगम- अर्धिलेश कुमार व्यास
20. खेआहारक लेखा- चंदन कुमार झा
21. चाहबला- कथलेशर राउ
22. अलाइ रसी काश्च देलक- राम शिलास साहु

23. भैरवी- रौशन कुमार झा
24. संदेह- शारदा नन्द अंह
25. अंशुशास- शम्भू सौरभ
26. डीजे टोली- बेचन ठाकुर
27. मुश्चयाजी सँ मंती शि एके रंग- दुगा नन्द ठाकुर

28. कारागार- अशलय कृष्ण
29. पैघ लोक के?- नन्द शिलास राय
30. पेच-पाच- श्वाि कुमार अश
31. महेशबाबूक चौकपर एकश्चन- गौड़ी शंकर साह
32. पश्चतिष- राजदेि मण्डल
33. एकघाप जमीन- जगदीश पसाद मण्डल
34. गइ बुझ्या हम बड़ अहर छी- डॉ. श्वाि कुमार पसाद
35. भीखमंगा- डॉ. अशोक अश्चिल

अश्चिलाचलक पश्चाि साश्चश्चापक मंच “सगर राश्चि दीप जरय” केर 80म आयोजन जे आमझी (सुपौल)मे सीनीय कलाकार सि. अलन सदाय केर नाओंपर आयोश्चाि छल इि कि गोष्ठीमे जे समीक्क- आलोचक सभ पश्चाि कपिपर समीक्क केने रहश्चि, आलोचना केने रहश्चि से सूची आम अश्च-

डॉ. श्वाि कुमार पसाद

ओम पकाश झा

राजदेि मण्डल

जगदीश पसाद मण्डल

डॉ. अशोक अश्चिल

डॉ. रामाशीष अंह

उमेश पासनि

चन्द्रन कुमार झा
 राम श्रीलास साहु
 फागुलाल साहु
 पंकज सत्तम्
 अशलय कृष्ण
 शंभु सौरभ
 कथलेशर राउ
 बाल गोश्विन्द यादव गोश्विन्दाचायय
 गिरेन्द्र कुमार यादव
 राम श्रीलास साफी
 श्री कुमार अश
 दुगानन्द मण्डल
 नारायण यादव
 संजय कुमार मण्डल
 राम पति मण्डल
 नारायण यादव
 बालमुकुन्द पाठक
 बेचन ठाकुर
 दुगानन्द ठाकुर
 शारदा नन्द अंह

80म सगर राश्वि दीप जरय” आमसमीमे 45 गोट पोलीक लोकापथ-
 बाल अर्ब-

1. देवीजी (ज्योती झा चौरी) कश्चि राजदेवि मण्डल
 श्रीश्री-

1. कूर केतम अर्नमिषक- (गजेन्ठ ठाकूर) डॉ. बचेशर झा
शब्द.कोष-

1. अंगजी-मैथिली शब्दकोष- (गजेन्ठ ठाकूर) डॉ. रामाशीष झांह
2. मैथिली-अंगेजी शब्दकोष- (गजेन्ठ ठाकूर) डॉ. अशोक अश्विचल
श्रीहश्च कऱि संगह-

1. बजनी-बुझनी (जगदीश पसाद मण्डल) अनुमण्डलाश्विकारी अर ण
कुमार झांह

2. रिेगन- दोसर संस्करण (जगदीश पसाद मण्डल)- श्वीयिक सऱीश
साह

लघु कऱि संगह-

1. सखारी-पेटारी (नन्ध श्वीलास राय) डॉ. श्वीकुमार पसाद
2. उलबा चाउर (जगदीश पसाद मण्डल) श्वीनोद कुमार 'श्वीकल'
3. अश्विनी (जगदीश पसाद मण्डल) दुगानन्ध मण्डल
4. सभैया पोखश्च (जगदीश पसाद मण्डल) पो. जयपकाश साह
5. भकमोड़ (जगदीश पसाद मण्डल) फागुलाल साहु
दीघयकऱि संगह-

1. शंभुदास (जगदीश पसाद मण्डल) सदरे आलम गौहर
कश्वीि संगह-

1. बसुनरि (राजदेि मण्डल) गजलकार ओम पकाश झा
2. राश्वी-श्चन (जगदीश पसाद मण्डल) रामजी पसाद मण्डल
3. रकिक चका उलश्च चलै बाट (रामश्वीलास साहु) नाटककार बेचन
ठाकूर
4. आश्वुकी दोसर संस्करण (उमेश मण्डल) जनकश्वी रामदेि पसाद
मण्डल 'झार दार'
5. इन्धरिनुषी अकास (जगदीश पसाद मण्डल) पतकार राम लखन

याद

6. पीक (मनोज कुमार कणयमुनाजी) अकीकि रिरेन कुमार
याद

गजल संगह-

1. क्यो जाअ नै सकल हमरा (ओम पकाश झा) साश्चयिकार जगदीश
पसाद मण्डल

2. माझ आंगनमे कथियाएल छी (मनोज कुमार कणयमुनाजी) गायक
रामशिलास याद

3. मोनक बा (चन्दन कुमार झा) डॉ. आकिमार पसाद

4. अंशु (अश अश) किकार कथलेशर राउ

गी संगह-

1. गीजिअ (जगदीश पसाद मण्डल) अमी अश

2. नि जेठ एगारहम माघ (जगदीश पसाद मण्डल) चन्दन कुमार
झा

3. सअ (जगदीश पसाद मण्डल) बालमुकुन्द

4. सुखाएल पोखअक जाइठ (जगदीश पसाद मण्डल) अपीन कुमार
कणय

5. हमरा अनु जगि सुना छै (रामदे पसाद मण्डल 'झार दार')
अकीकि मनोज कुमार अहारी

6. कणपभा- (आि कुमार झा 'अल्लू') राजाराम याद

अनुिद साश्चय-

1. पाखलो (उपन्यास (कोकणीसँ अन्दी सेी फणाअस एि शंभु कुमार
अंह रि अन्दीसँ मैथिली शंभु कुमार अंह- कथि शंभु सौरभ
नाटक-

1. अहलसल (रथि भूषण पाठक) कथि राम शिलास साफी

2. अस्सिसिघाणि (बेचन ठाकुर) बाल गोश्वेन्द्र यादवि 'गोश्वेन्द्राचायय
3. बाप भेल अती आ अश्विकार (बेचन ठाकुर) कश्चि रामश्विलास साहु
4. रताकार डकैवि (जगदीश पसाद मण्डल) अश्वशलय कृष्ण
5. सयिंरि (जगदीश पसाद मण्डल) कश्चि शंभु सौरभ
6. पंचाटी एकाकी संचयन- (जगदीश पसाद मण्डल) उपन्यासकार राजदेवि मण्डल

7. कम्पोमाइज- (जगदीश पसाद मण्डल) कविकार राम पशि मण्डल
 8. झमेअया अआह (जगदीश पसाद मण्डल) अश्विकिं रिरेन् कुमार यादवि
- उपन्यास

1. हमर टोल (राजदेवि मण्डल) कश्चि हेम नारायण साहु
2. जीनि संघषय(दोसर संस्करण) जगदीश पसाद मण्डल) नारायण यादवि
3. बड़की बश्चन (जगदीश पसाद मण्डल) कश्चि शारदा नन्द अंह
4. जीनि-मरण (दोसर संस्करण) (जगदीश पसाद मण्डल) डाकबाबू छजना

5. नै िडैए (बाल उपन्यास, जगदीश पसाद मण्डल) गुरदयाल भमर सहतबादअ (बेल अथ) गजेन् ठाकुर) अक्क मनोज कुमार राम ियोगाफी-

1. जगदीश पसाद मण्डल एकटा ियोगाफी- (गजेन् ठाकुर) कश्चि उमेश पासनि
- संस्मरण साश्चयि-

मध्य पदेशक याता (ज्योश्वि झा चौरिरी) कविकार नन्द श्विलास राय

७९म सगर राक्षी दीप जरय

सगर राक्षी दीप जरय'क ७९म आयोजन 'क'ि कोसी' उमेश पासिनिक संयोजक'िमे औरहामे सम्मन/ ८०म सगर राक्षी दीप जरय सुपौल आलाक आमझीमे उमेश मण्डलक संयोजक'िमे- उमेश मण्डल सगर राक्षी दीप जरय'क ७९म आयोजन 'क'ि कोसी' नामक 'निरक नीचा' अनाक १५ जून सं'िया ६.३० बजेसँ शुरु भऽ १६ जूनक आनसर ६ बजे 'िअ लौकही 'िना अन्गिअ औरहा गामक म'िय अदालतक न'ि आअ'ि भनिमे शी उमेश पासिनिक संयोजक'िमे सुसम्पन भेल। अआला ८०म गोष्ठी सुपौल आलाक आमझीमे हेबाक लेल उमेश मण्डलक पस'ि आएल जे स'िअमअसँ मान्य भऽ घोअ'ि भेल।

शी जगदीश पसाद मण्डल ए'ि शी रामचन्द्र पासिन जीक संयुक्'ि अ'ियक'िमे 'ि'ि शी 'िरेन्द्र कुमार याद'ि आ शी दुगागान्द मण्डलक संयुक्'ि संचालनमे ऐ क'ि गोष्ठीक भअ राक्षीक याता भेल। गोष्ठीक शुभारम्भ शी लक्ष्मी नारायण आंह ए'ि शी रामचन्द्र पासिनजी संयुक्'ि र पे दीप पज'िअ'ि कऽ उदाटन केलअ। दीप पजलिनेमे डॉ. रामानन्द झा 'रमण' शी हेम नारायण साह शी शंभु सौरभ संग-संग पेकगारमे उपस'ि'ि सभ क'ि-साअ'िय पेमी 'िपड़ी बजा सहयोग केलअ।

अदेह-सदेह-५ अदेह मैअली अहअ क'ि, अदेह सदेह-६ अदेह मैअली लघुक'ि, अदेह-सदेह-७ अदेह मैअली पद, अदेह-सदेह-८ अदेह मैअली नावय उ'िस'ि, अदेह-सदेह-९ अदेह मैअली आशु उ'िस'ि 'ि'ि अदेह-सदेह-१० अदेह मैअली पबन्-आबन्-समालोचना नामक पो'ीक लोकापण स'िनीय अदिजन शी संजय कुमार आंह, शी रामचन्द्र पासिन, शी अअिलेश आंह, शी राजदे'ि मण्डल, शी लक्ष्मी

नारायण यादवि िी शी िीरेनर पसाद अंह (दुगाननद मण्डल) जीक हाि भेल ।

लोकापथ सतक पछाथि दू-शब्दक एकटा महिपूणय सतक सेहो आयोजन भेल जइमे शी रामचनर पासनि, शी बेचन ठाकुर, शी कथलेशर राउि, शी कमलेश झा, शी राजदेि मण्डल, शी राम श्रीलास साहु, शी उमेश नारायण कणय शी रामाननद झा 'रमण', शी शंभु सौरभ, शी िीरेनर यादवि, शी दुगाननद मण्डल, शी जगदीश पसाद मण्डल, शी हेम नारायण साहु, डॉ अकिुमार पसाद, शी अर णाभ सौरभ िी हम माने उमेश मण्डल आ संयोजक शी उमेश पासनि दारा 'सगर राथि दीप जरय' क ि गोष्ठीक दीघययाता िी उदेसपर सभागारमे उपस्थिि दूर-दूरसँ आएल किकार, समीक्क-आलोचक एि स्िनीय साश्चयि पेमीक समक अपन-अपन मनयि रखलअ । सगर राथिक ७५म आयोजनक पशाि ७६म आयोजन जे शी देशंकर नीन अल्लीमे करेबाक घोषना ि केने रहथि मुदा से नै करा साश्चयि अकादेमी दारा आयोअि क ि गोष्ठीके गअ नेने रहथि जहू अनीके सोझरौल गेल आ िए ऐ गोष्ठीके शी उमेश पासनि अपन इमानक पअचए दैि ७९म आयोजन केलअ । ओ कहलअ जे हम सभ अिि अिदेह मैथिली साश्चयि आन्दोलनसँ जुड़ल मैथिली अिकास पेमी छी । हम सभ ७७म, ७८म आयोजनक आयोजनकिके स्पष्ट र पे कहैि एअयअ मुदा हमरा सबहक बाि नअये अिभारानी मानलअ आ नअये कमलेश झा मानलअ । मुदा से हमहूँ नै मानब आ सही-सही अनी करब ।”

ऐ रिहे उक्ि आयोजनके 'सगर राथि दीप जरय'क ७९मे बहुसंख्यक मनानुसार िइ भेल, आयोअि भेल । हलाअ दरभंगासँ आएल किकार शी हीरेनर कुमार झाक उकसेला पर रहुआसँ आएल शी अिनय मोहन

झा जगदीश, शी दुखमोचन झा आ दरभंगेसँ आएल शी अशोक कुमार मेहि, हीरेनर झा जीक संग गोष्ठीक आरम्भक घंटा भञ्जक पछाञ्चि चञ्च जाइ गेला।

जीञ्चि नकय (उमेश मण्डल), झाकक महि (राम श्रीलास साहु), आहक पञ्चल साल आडह (दुगानन्द मण्डल), बौका डाड (लक्ष्मी दास), बंश (कथलेश्वर राउत), टाटीक बास (राम देवि पसाद मण्डल 'झार दार'), सगौरनी (आकुमार अश), पारि, थयकर, जोगार आ अंगेज नैना (अमीञ्चि अश), सँ आञ्च चंठ (बेचन ठाकुर), अछोपक छाप (शम्भु सौरभ), नमोनाइञ्चस (उमेश नारायण कण्ठ, दादशा (सुभाष चन् 'आनेही'), राञ्चन (रोशन कुमार 'मैथिल'), पँचिदी (अञ्चलेश कुमार मण्डल), मुइलो आसेबञ्च (जगदीश पसाद मण्डल) इञ्चि महिपूणयलघु कानि/ञ्चिहन कानि पाठ भेल आ सते-सत मौञ्चक अञ्चपणी आ समीक सेहो भेल।

अछोपक छाप (शम्भु सौरभ) क समीकक रममे शी रमानन्द झा "रमण" कानि सिसँ अपन असहमञ्चि देखेलञ्च आ कहलञ्च- "नै आब ई गप नै अञ्च, एकटा गप एँ देख्यौ, हम रमानन्द झा "रमण" शोञ्चय उञ्च कुलक, आ कानि आएल छी! उमेश पासानिक दरबजापर!"

शी बेचन ठाकुर शी रमानन्द झा "रमण"क न-बाहणिदी सोचक शिरो कानि कहलञ्च-

"लोकक मगजमे अखनो जाञ्चि-पाञ्चि भरल छै, मैलोरंगक पकाश झा िँ ने कहै छञ्चि जे बेचन ठाकुर भञ्च अञ्च िँ केश काटै रहैए, ई रंगमंच की करि!! शीरिमके सेहो ई गप बूझल छञ्च।"

माने मैथिली साञ्चत्यकार, समीक आ रंगमंचसँ जुड़ल बाहणिदी आ न-बाहणिदी सोचक लोकके देखै ई कहल जा सकैए जे २१म

शशिब्दीमे शी रमानन्द झा "रमण"क यिान ई देखबैँ अश्व जे केना ओ उमेश पासनिनक दरबजजापर आश्व उपकृि करबाक भानिसँ गश्मि छथी ।

ऐ असिश्चपर श्रीदेह मैथिली पोि पदशमी (२७म पदशमी) सेहो लागल रहए ।

अश्वाला ८०म गोष्ठी सुपौल श्वालाक आमसीमे हेबाक लेल उमेश मण्डलक पस्ि आएल जे सश्विमथिसँ मान्य भऽ घोश्चि भेल ।

सभ किकार, कलि-साश्चयि पेमी एि समीक्क-आलोचकसँ आगह-अनुरोि-आदिन जे ८०म सगर राश्चिक कलि गोष्ठी- आमसीमे अपन गश्चमामयी उपस्श्चि श्वे ।

उरेश रण्डल

इविहा - गवि वि दीप जयि

गवि वि दीप जयि (कथा पाठ एपिपिचिचा)

क . ि .	स्थान	वैद्य	मि जक	अध्यापक/उदा टन	प्र थी ल कापम	लेखक/लेख का	ल कापम ण कवि	अन्य
1 .	रुजफनपुि	21.01.1 990	भिा कुराि चौिी	शी रानन्द पुि				शैलेन्द्र आनन्दक कथा याता- डा. रानन्द झा रिण
2 .	डेओढ़	29.04.1 990	जीकानि	शी भिा कुराि चौिी				
3 .	दभिगी	07.07.1 990	डा. भीरनाथ झा, दिदीप रैक्यली पुत, बेस्थापक- व जयकानि ठाकुि	शी गवैन्द्र झा	1 राक पौि 2 इ र जका बफम जका	गवैन्द्र झा अरनिथ	डा. रुनीश झा शी भिा कुराि चौिी	
4 .	पटना	3.11.19 90	गवैन्द्र झा बेस्थापक- दरनकानि झा	शी उपेन्द्रनाथ झा 'क्या ' एपिपिजइ हन झा	-	-	-	-
5 .	बेगु िय	13.01.1 991	दिदीप कहाि	ि. फिुल कुराि व हि 'रौन	3 हरि सुदक काम रे	पिीनन्द वैय गी	उपेन्द्र द्वषी	-
6 .	कटहाि	22.04.1 991	अश क	शी उपेन्द्र द्वषी	4 ओक्क गििकि भुि	अश क काशकि शीकती	डा. भीर नाथ झा डा.	वैभूवी आनन्दक कथा याता- डा. रिण

					5 अदहन		शिनन्द झा रिण	
7 .	नीनी	21.07.1 991	र हन भादिज	ि. ुशि झा	6 राढ़	रिश	शी कुलान न्द वश	-
8 .	की	22.10.1 991	ि. ुशि झा, वेस्थापक- डा. रिर बाबू	शी ए. ी. दीपक	7 ाकत्मा लाप	भीरनाथ झा	पि गर्वन्द झा	-
9 .	नेहरी	11.10.1 992	ए. ी. दीपक	शी रन्तेश झा	-	-	-	-
1 0 .	वीटिनग	14.04.1 992	जीन्ज जी	डा. गणेश िाद कणम उद- गर्वन्द झा	-	-	-	नेपालरे रैकाली कथा- डा. रिण
1 1 .	गिणि ी	18.07.1 992	भिा कुरा चौगि	शी रयानन्द वश/ गरीश गुजिन उद- ठाकु िाद व हे एपिपि रिाकानि वश	-	-	-	-
1 2 .	पटना	19.10.1 992	गिज हन झा	शी ुभाषचन्द्र याद	-	-	-	-
1 3 .	ुपौल 1	18.10.1 993	केदाि कानन	शी बुक्कनाथ झा	8 पुनन्मी होइि ओ छोडी	वभूव आनन्द	शी रहाकि श	-
1 4 .	ब्रका	24.04.1 993	बुक्कनाथ झा	शी गर्वन्द झा	-	-	-	-
1 5 .	पेटिट	10.07.1 993	डा. शिनन्द झा 'रिण'	ि. उरानाथ झा	9. वैदापव क आत्रकथा	गर्वन्द झा	शी भिा कुरा चौगि	-
1 6	जनकपु	09.10.1 994	रिश जिन	शी गर्वन्द झा	10 शेपत	. वयगी एरिश	डा. गिन्ज	-

				उद- डा. गिरागि यादि	11 कथला णी- विका	कलाप, जनकपुर रहेन रलमिया अरण कुरा झा	शी रुके पि गर्वन झा डा. गिरागि यादि	
1 7 .	इ हपु	06.02.1 994	डा. अविन्द कुरा 'अकू'	डा. भीरनाथ झा	-	-	-	-
1 8 .	हिद	23.04.1 994	अकय कुरा झा	शी रिलि कश रि	-	-	-	-
1 9 .	झझापु	09.07.1 994	शमरानन्द चौगि	शी जीकानि	-	-	-	-
2 0 .	गिडिडा	22.10.1 994	डा. नागियजी	शी गिरु हन झा	14 कथा कुम्भ	बिबुदनाथ झा	पि गर्वन झा	-
2 1 .	बहेगि	21.01.1 995	करलेश झा	शी शमरानन्द ठाकुरि उद- चन्द्रभानु वहि	15 त्र एकटा कालिका क वजय	गिरिगि	शी जीका नि	-
2 2 .	पुपेल (दभिगी)	08.04.1 995	करलेश झा	गिरि रुक्म यि 'कागि' उद- गर्वन झा	-	-	-	-
2 3 .	काठराडू	23.09.1 995	गिरिगि रिक्कम	डा. गिरिगि	16 नख दपम	गर्वन झा	डा. गिरागि यादि	-
2 4	गिरवीगि	24.01.1 996	गिरनागिय दे	डा. गिरिगि, उद- डा.		-	-	-

.				य गेन . याद, रुख्य- गजेन नायियण व हि, रत्ती- नेपाल किाि				
2 5 .	क लकाि जि जयि	28.12.1 996	भिा कुराि चौिि	शी गुर्वन्द् झा, उद- युनाि कश	17 ककिि 18 कथाकलम	ुिषु शेखि चौिि देकिन झा	पि गुर्वन्द् झा शी भिा कुराि चौिि	-
2 6 .	रक्षी	13.04.1 997	डा. ििनिन्द वय गी/ रिश िय कजि	शी रायानन्द कश	19 अर्वकर ण 20 हसि केम 21 कालालेश 22 पर्वकर्व	ििनिन्द वय गी ििनिन्द वय गी ििनिन्द वय गी ुक्कणि पाठक	पि गुर्वन्द् झा शी कुलान न्द कश शी ुभाष चन् यादि शी र हन भादिज	-
क . ि .	स्थान	विक्र	झि जक	अधक/उदा टन	प्र थी ल कापम	लेखक/लेख का	ल कापम ण कणि	अन्म
2 7 .	िििनी	20.06.1 997	श भाकानि	शी जीनिकानि	-	-	-	-
2 8 .	पटना	18.07.1 997	भिा कुराि चौिि	शी हर्वनायियण कश/ िरघर खान	23 रानानि ि	रिश	शी भिा कुराि चौिि	-
2 9	बेगू यि	13.09.1 997	दिीप क्हाी	शी िफुल्ल कुराि व हि	24 कुकर कू	चन्देश	शी भिा	भिा कुराि

क्र.सं.	नाम	दिनांक	विवरण	पिता	माता	पति	पुत्र	पुत्री
30	खजौली	04.04.1998	दीप कर्मा	श्री रानन्द पु	-	-	-	-
31	हर्षा	18.07.1998	रिश	डा. रमेश	25 ओना राी 26 चानन काजि 27 विष्णु	देशिकि नीन देशिकि नीन रिश	कुरा आ शी रायान न क पि गर्वि इ	-
32	पटना	10.10.1998	शमर दर्वहि	श्री गिरहन इ, उद- गर्वि इ	28 भवि विष्णु	के.डी. इ, शमर दर्वहि एरिदीप कर्मा	शी उपेनना थ इ 'का'	-
33	बलाइन; नागदह	08.01.1999	पदर मर्मा	श्री जीकान	-	-	-	-
34	भनीपु	10.04.1999	डा. कर्ण दत क	श्रीर काकनी	29 काक आ आइ	पिन्	शी जीका नी	-
35	रुबनी	24.07.1999	व यागि इ ' वि' वेस्त्रा डा. कुलीगि व हि	श्री गिरहन इ, उद- जयगि व हि	30 काजे हि भगान	शैलेन आनन्द	डा. वर्धू आनन्द	-
36	अन्दौली	20.10.1999	करलेश इ	श्री चन्मभानु व हि	-	-	-	-
37	जनकपु	25.03.2000	रिश जिन	डा. पिन्, उद- डा. जिजेन वरिल	-	-	-	-

38	काठराडू	25.06.2000	गिर्निर रिक्कम	डा. गिरानन्द झा 'रिण', उद- रहेनर कुराकि बश, I द	31 रकडी 32 बकथलाचलक लक कथा 33 काषिक फूल-अनुदीद 34 हर रैकथल छी-कै 'ट 35 रछिनब्रश अर्देरि रीरा I	दिदीप कर्हागि गगि िद अकेला गगि िद अकेला व यागिर झा ' ि ' रिश/ दीनानाथ/ ुन्ननाथ	शी रहेनर रलसिया डा. गिरानन्द झा 'रिण' डा. 'रिण' डा. गिरागि ियादी डा. गिरागि ियादी	-
39	निबाद	21.10.2000	शमार दर्वहर्णि एगिर्गिरचनर लालदा	गिजुर हन झा, उद- कीर्बभायिण बश	36 रनक आड नरे ठाढ़	डा. भीरनाथ झा	शी गिजुर ह न झा	-
40	कटठ	21.01.2001	डा. अकु, बेसिथा- िर्वदानन्द झा	शी बलारि, उद. कुलानन्द बश	37 रागि 38 दृक्कण	अश क ँन्ननाथ	डा. गिर्निर डा. भीरनाथ झा	रैकथली कथाक रस्सा डा. भीरनाथ झा
41	हटनी(रिगि डीहा)	19.05.2001	ि. य गानन्द झा/ अकगि कु.आजाद	शी ारदे	-	-	-	-
42	ब्र कागि	25.08.2001	वर्बजानन्द झा 'अभागिश', बेसिथा- बकथला I. पर्वषद	शी दयानाथ झा, उद- हकिष्ठा झा	39 कषीण सं फ 40 ककथला दपम(19 25/200	दयानान् झा पुग्मानन्द झा, िरानन्द झा 'रिण'	शी हकिष्ठा बश शी फूलच नर बश 'रिण'	-

					1)			
4 3 .	पटना (कण्ठजयति ति)	01.12.2 001	अश क, वेस्मिन्ना- चेतिना खर्व, पटना	शी . रदेति	41 लाप 42 युगान्ति 43 एकै र शब्दीक िषा पत.	गर्वन्द् झा वशनाथ रिश/ शमार दर्वहति र हन यादति	शी . रदेति पति गर्वन्द् झा शी गिजुर ह न झा	-
4 4 .	पिची	13.04.2 002	कुराति रनीष अर्विन्द	शी कोनन्द, उद- परिानन्द कश	44 चानन नि गच्छया 45 शुभास्ति पन्थानः	वर्कानन्द ठाकुति परिानन्द कश	शी र हन भादिज शी कोनि नन्द	-
4 5 .	भागलपुति	24.08.2 002	तिन्दि र हन झा	शी य गीज, उद- डा. वेचन	46 कथा ति 47 पृथा 48 आउ, कछु गप्प की	तिशानि नीति झा कुलानन्द कश	डा. वेचन शी गिजुर ह न झा डा. अरणा कति झा	-
4 6 .	वैदापर्व भनि पटना	16.11.2 002	अक्कि कुराति आजाद	शी र हन भादिज उद- गिजनन्दन लाल दा	49 काठ 50 एक फाक तिद 51 गिन ति तिहि कत 52 उदयास्ति 53 झाक गाछ 54	वर्भूव आनन्द य गीज कुकि चोति रिक्के गिजकरल, ति देशिक्कि नीति कोनन्द गिजुर हन झा ति श भाकानि दरन कुराति झा पक्किज कुराति झा	डा. गिनि न्द वैय गी शी गर्वन्द् झा शी . रदेति शी . रदेति शी गिरल च न ठाकुति शी . रदेति	

					श्री रदे श्री गर्वन्द झा पि गर्वन्द झा डा. हेकुकि झा		
					55 अकयुति 56 याती रग 57 रैकली बाल कत्त 58 The Coloni al Periph ery Imagin g Mithila (1875- 1955) 59 रैकल राज पकाका, नेपाल	श्री रदे श्री गर्वन्द झा पि गर्वन्द झा डा. हेकुकि झा	
क . . .	स्थान	वैक	झि जक	अध्यापक/उदा टन	पथी ल कापम	लेखक/लेख का	ल कापम ण कति अन्य
4 7 .	कलकाति	22.01.2 003	कणम श्री, कलकाति	डा. रानन्द झा 'रिण' उद- रानन्द पि	60 आत्रालाप	गर्वन्द झा	श्री रानन्द पि रैकली कथाक शिबान रसमा- डा.पि.न.व युगी
4 8	खुटौना	07.06.2 003	डा. रहेन नायिण रि	. रदे/उद- डा. खुशीलाल	61. लाख शि	रिल घन ठाकु	श्री . रदे

				झा एंि रिरल चन ठाकुि	अनुतवी			
49	बेनीपुि	20.09.2003	करलेस झा	डा. फूलचन्द्र कश 'रिण' उद- ि. रिरुक्कष्ट रिय 'क्याि'	-	-	-	-
50	दभिणी	21.02.2004	डा. अश क कुराि रेह्णि	शी गवर्नर झा उद- चन्द्रनाथ कश 'अरि'	62 कदबल 63 ककिाि 64 गणि 65 बाबाक वैजया 66 वै ब रे भूि 67 गह्णि 68 हाथी चलय बजाि 69 उगैि यूक रिरक 70 आदरी के ज हैि 71 ओना कहबा लेल बहुि ककछु हरि लग	भिा कुराि चौिि हशीज यन्तनाथ कश उराकानि श्मर दवैहि डा. रहेन्द्र नायिण रिर डा. देशकिि नीन व यागिर झा 'ि' कीवभायिण कश कुलानन्द कश जीकिानि अनि क.लाल. 'इन्दु' राकण्डेय ििी िििन्नाथ कश जयनायिण यादि रिश रिश रहेन्द्र रिर फूलचन्द्र कश 'िििण' जयानन्द कश रजििुलेरान िराला झा रिानन्द झा	पि गवर्नर झा शी , रदैि पि गवर्नर झा शी राकण्डे य ििी शी जिज ह न झा शी जयनायि यण यादि शी जिज ह न झा डा. िरान्त द झा 'रिण' शी रु हन भादिज शी कीवभा यिण कश पि गवर्नर झा चन्द्रना	-

					72 गाछ झूलझूल	‘रिण’ रिाननद्ध झा	थ कश ‘अरि’	
					73 खजिन	‘रिण’ रिाननद्ध झा	पि गुर्वन्द्ध	
					नयन काजिन	‘रिण’ फूल चन्द्	झा शी	
					74 हर भेटब	कश ‘रिण’ भीरनाथ झा	जिजुर ह न झा	
					75 कर्मन गिह	वभूव आननद्ध अर ण कुराकि कणम	गपाल जी कापाठी डा.	
					76 दुगि ।	अश क कुराकि रेहगि ि. रिाकानि	काशि कि शीकगि	
					77 पाथि पि दुम्भ	चन्देश अनु. शमार दवहगि	डा. काशि कि शीकगि	
					78 कशी गिटी भगि	भिाष कुराकि चौगि अनन क. लाल दा ‘इन्द्’	डा. गिरदे झा शी	
					79 जावा गेल छी	र कगि ठाकु रुगिब रुगिदन	राकम्भे य गिगि गि	
					80 हरगि र नक खजिन काडैया	ठाकु िदिप काहागि	पि चन्द्ना थ कश ‘अरि’ शी	
					81 जयराला		र हन भादिज	
					82 राष्टक आबाज		शी अश क शी राकम्भे	
					83 इज वयि क आगिठी रि		य गिगि गि पि गुर्वन्द्ध झा	
					84 बे गहल		शी रिश	

					85 यदुणि चिनाली	डा. राननन्द झा रिण	
					86 गि वि दीप जयिक इव हा	डा. देभि झा शी गिश चन झा	
					87 अकजा	शी राननन्द	
					88 वरशम	पि शीरि अलिक रेह	
					89 स्त्रणिक गि	शी नीलर वा	
					90 कथा काव्य आ दादी	बनजी पि गर्वन	
					91 ित्तयम	झा शी शमारु न वश	
					92 हेरलेट	पि चनना थ वश	
					93 लवक रक्या	'अरि डा. रिदि झा	
					94 कनुविधा	डा. ुशि झा	
					95 रनदाकनी		
					96 गि काथा कथा	डा. राननन्द पि	
					97 नागाजुम		

					के उपनमा 98 Sesect ed Poems of Jee 99 अर्णि कन्दी पक्का रैकली वैशेषाक			
5 1 .	जरशेदपुि	10.07.2 004	डा. िनि कुराि चौिि	शी िनि पाठक उद- िजनन्दनलाल दा रु. अर्ि. त्तनायिण लाल	-	-	-	-
5 2 .	िी	02.10.2 004	वैिकानन्द ठाकुि	डा. िानन्द झा 'रिण' उद- िजनन्दन लाल दा	100 सी सी रे वैशा 101 मकम्भ	वैिकानन्द ठाकुि . व यािर झा 'ि'	डा. िानन्द झा 'रिण' शी िजनन्द न लाल दा	-
								-
क . ि .	स्थान	वैक्य	मि जक	अध्मकी/उदा टन	प्र थी ल कापम	लेखक/लेख का	ल कापम ण की	अन्य
5 3 .	देिि	08.01.2 005	समार दर्वहि एिअर्वनाश	शी दयानाथ झा उद- यन्तनाथ कश	-	-	-	-

54	बेगू मिय	09.04.2005	दिदीप कहानी	श्री गिरल चन ठाकु उद- त्मनामियण लाल	102 भजाल 103 किकि 104 औकि 105 अनमि पवतका	डा. रानन्द झा 'रिण' दिदीप कहानी रेनका रक्सक . दिदीप कहानी	श्री कीर्वा मियण वश श्री गिज ह न झा शीर गि जत ना चन्दर डा. आनन्द नामियण शरा	-
55	पूकामा	20.06.2005	रिेश	श्री कोनन्द	-	-	-	-
56	पटना	03.11.2005	अजी कुरा आजाद	डा. फूलचन वश 'रिण' उद- गवन्द झा	106 आगिल क 107 गारक ल क 108 रैकली कवी वियन 109 रैकली कथा वियन ने.बु.ट. 110 बड अजगु देखल 111 कछु पुनि	गवन्द झा काशिकि शीकती गिगिश गुजिन किकाशिकि शीकती शाकिन्दु चौकि कीर्वा मथ झा	श्री गिज ह न झा डा. रानन्द झा 'रिण' प गवन्द झा श्री गिज ह न झा श्री फूलचन वश 'रिण' श्री गवन्द झा	-

					गम, कछु न गम			
57	जनकपुरि (नेपाल)	12.08.2006	रिश जिन	शी रहेन्द्र रलमिया, डा. रिण उद- डा. रिण लाल	-	-	-	-
58	जयनगरि	02.12.2006	शी नाथिय याद	डा. करलकानि झा, उद- शी रिदे पा नि, उ.अ. भगीथिद अगलि	-	-	-	-
59	बेगु पिय	10.02.2007	दीप कहाणि	नीन चौणि	112 सेहलाणि	डा. य गानन्द झा	डा. निनि न्द बथागी	-
60	हिति	21.07.2007	कलय कृषा	डा. रिानन्द झा रिण डा. रत्नजिन झा	113 अक्कि आकेस्टा	अनु- दीप कहाणि	डा. रि नन्द झा रिण	-
61	पुल्ल-2	01.12.2007	अर्विन्द ठाकुरि	अशुरान त्मके डा. निन्नि नि	114 अन्हाकि वीरि	अर्विन्द ठाकुरि	शी अक्कि कुराणि आजाद	
62	जरशेदपुरि	03.05.2008	डा. निन्नि कुराणि चौणि	वीकानन्द ठाकुरि वैदानाथ झा वैक्कि	-	-	-	-
63	पिची	19.07.2008	कुराणि रनीष अर्विन्द	वीकानन्द ठाकुरि/ डा. रिण उद- डा. वैक्कि	115 रय खालापणि	पुनिकनाथ	डा. वैदाना थ झावैक्कि नि	
64	हुआ गिर	08.11.2008	डा. अश क अर्वचल	डा. रिण/डा. शी काशकि कणि उद-	116 भन-भन अकन 117 अर्नणि	डा. रिण झा पुशीला झा अमाशि निनिन्द वैयगी निनिन्द	नि. खुशीला ल झा चण्डेश खा डा.	

				उगनायिण वश 'कनक'	धन 118 राइक कटी 119 ई भेटल ि की भेटल 120 बुद का दुख औ रेति	वसि गी	रिण डा. करल कानि झा डा. बिकु का झा	
65	पटना कथा गणी-3	21.02.2 009	अकमि कुराि आजाद/ चेनिा कर्वि	अश क ि. वंजय बहादुरि व हि	121 गजल हरि हक्ययाि कथक 122 क क्यया ि सीहा 123 टाि चौक * 124 ककथलाक ास्मृर्वि क पभिमाि 125 हुगली उपि बहैि गणी	ुभिनाथ त्रुक्स बकाष्ट डा. भीरनाथ झा डा. िििि रिण लाल िीर भि कापक 'भरि	र. ििी पि ग वंनद झा र. ििी डा. गंशि गुजिन ाकी नन्द	
66	रुिबनी	30.05.2 009	कलीप कुराि झा	हीन्रि कुराि झा डा. देकानि झा	126 िरिहा 127 झुठपकड़ा रशीन	शैलेन्र आनन्द त्रुक्स बकाष्ट	डा. शानन्द झा 'रिण' डा. शानन्द झा 'रिण'	
67	रानायिट ल नहिन-	05.09.2 009	शिकानि यि 'रि'	डा. शानन्द झा 'रिण'	128 कवीक	लकमि कुराि झा	डा. शानन्द	

	रसीपु			डा. वंदन कहाणि ठाकु	छाहरे 129 कलमनाक गारे 130 भाषा टीका 131 उदेलन (कन्दी)	लका कुरा झा डा. वंभूव आनन्द रुना रा. पु	झा 'रिण' शी रिका न' गिय 'रि' डा. रिानन्द झा 'रिण' डा. शक्ति झा	
6 8	पुल- 3	05.12.2 009	अर्विन्द ठाकु	अश क कुरा रेहा परानन्द पाठक	132 रैकलीक आकिभक याता क तम 133 कहा गये रे उगना	डा. रिानन्द झा 'रिण' उषा कणि खान	डा. परानन्द द पाठक डा. रिानन्द झा 'रिण'	
6 9	जनकपु	03.04.2 010	गिजारि व हि 'गिठो'	डा. रिानन्द झा 'रिण' उद- डा. रिारिगि याद	134 ककलाक बेटी (नाटक) 135 रौलाइल गाछक फूल(उप न्मा) 136 हर पुछे छी (काव्य) 137 अकम (काव्य) 138 भाग गि आ	जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल वनी उतमल जब वुक्ति चोपि वभागिनी देशु बत िगिगि रिण लाल िगजेन् ठाकु/उरेश रण्डल िगिगि रिण लाल िगजेन् ठाकु/उरेश रण्डल िगजेन् ठाकु/उरेश	डा. गिजेन् वैरल डा. रिगिगि ि याद शी गि भ. कापक 'भर' डा. वंभूव आनन्द शी अर्विन्द ठाकु	

					बलचन्द्रा 139 नीशा (कौवत) 140 रैकली कथा गिह 141 वैदेह रैकली पद 142 नेपथ्य 143 वैदेह रैकली विर्न- कबि 144 वैदेह रैकली लु कथा	रण्डल	. ि.कु. व हि 'रौन रिानन्द झा 'रिण' हीन कुरा झा डा. रिरि ि यादि डा. रिरा ि यादि ड. रिरा ि यादि	
7 0	ककलपु (दभिगी)	12.06.2 010	डा. य गानन्द झा	डा. रिरदे झा उद- चन्द्रनाथ कश 'अरि/ शी शक्ति झा वैशेष अवैक्य- डा. रिानन्द झा 'रिण'	145 रैकली भाषा वृत्त 20र शब्दी 146 कलकल हा गाछ 147 उत्थान- पनि (उपन्या) 148	रिशक्ति व हि रुली झा जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल ीवि ठाकु भाग्यनायिण झा वैदानाथ झा 'वैक' ीवि ठाकु	आशा कश डा. भीरनाथ झा डा. गिणा ठाकु डा. रू हन कश डा. करला चौ दीप रैकली पुत	

					कननगीक जी (उपनमा)	ि गजेन्द्र ठाकु रनर हन झा दयानन्द कश	डा. ुशि झा	
					149 गारक कननगी (ल कथा)	अरनाथ चौ शीशु काश्मप आशा कश	डा. ुशि झा ज्म त ना	
					150 ग नू झा आ आन रैकली कत कथा	य गानन्द झा िभिनाथ कश ीणा ठाकु -	चन्द्र चन्द्रना थ कश 'अर' चन्द्रना थ कश 'अर'	
					151 अरिजी क ाकतमरे हासम- कमि		चन्द्रना थ कश 'अर' चन्द्रना थ कश 'अर' चन्द्रना थ कश 'अर'	
					152 वैकी		चन्द्रना थ कश 'अर'	
					153 रैकली कतकथा		डा. रिदे झा	
					154 कथलाक पमी बिर्न		डा. रिदे झा	
					155 ख ल		डा. रिदे झा	
					156 जरीनरे फुटै छै अष्टि		-	
					157 हरि लेने चलू			

					158 पर्वणि			
					159 उचाट			
					160 कथा ल क कथा			
					161 राचा कथा			
					162 भाणि			
					-			
7 1	बेरि (झझाणि) स्थान- रक्ष वेदालय पर्वणि- बेरि। (गणिकाक स्थलपा)	02.10.2 010	जगदीश िद रण्डल बेस्था- स्थानीय वक्तृ रिरी	डा. िनिन्द 'वैय गी' उद- उगनायिण वश 'कनक'	163 कबनि िनि 164 लिय हिस्स 165 जीनि- रणि (उपन्मा) 166 िगिन 167 जीनि- षिम (उपन्मा) 168 अलका	शीपर्व व हि िनिन्द 'वैय गी' जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल करलकानि झा <		

2		010	ठाकुरि	झा 'रिण' उद- डा. शचीननाथ रहति	एकक पच्छ इजि		अर्विन्द ठाकुरि	
7 3	रक्षणी कथा जिकरल	05.03.2 011	वजय रहापात	अर्विन्द ठाकुरि उद- ठाकुरि याद, सीरी रिशानन्दजी रहाजि	170 अकि युद की भूतका 171 कुदी बेहुस नही हुइ है (उद्भूत)	रू. अक्ज कुराजि आजाद रू. अक्ज कुराजि आजाद	शिका न गिय 'सा' शी अर्विन्द ठाकुरि	
7 4	हजागीबाग	10.09.2 011	शमार दर्वहि	डा. रिशानन्द झा 'रिण'	172 Survey of Maithili liter ature 173 कथलाक इर्वहा 174 ठि के बिजुद 175 पति दूट हि है 176 ककन रयरे शब्द 177 कलाकवि 178 हिए चाहैछ गाछ	ि. गिठिक्का चौगि ि. गिठिक्का चौगि अक्ज आजाद रू. अक्ज आजाद रू. अ.कु. व न्हा कालीकानि झा 'बूच' जीकानि शी जीन्नि नाथ झा जीन्नि नाथ झा शी दिदीप कहाति शी लान न्द कश	शी अश क शी जगदीश िद रण्डल शी जगदीश व हि शी रिशानन्द झारि ण' शी जीन्नि नाथ झा जीन्नि नाथ झा शी दिदीप कहाति शी लान न्द कश	

7 5 .	पटना हीक जयनी	10.12.2 011	अश क एंि करलर हन 'द्युतु'	शी उगनायिण कश 'कनक'	179 जुबैदा 180 रय त्की क्यक 181 गगी नहौन 182 बेटौक अपरान 183 अनक्यन्हा ि आखि 184 गिगिणि 185 गाररे 186 कबन ुगि 187 जखन- खिन (रि क.व.) 188 वहक कथाक प्र . दिशमी 189 ऐ अकाब्र न रे 190 क शी	उग ना. कश 'कनक' अनर ल झा कशाक बेचन ठाकु आशीष अनक्यन्हा रू. नेहलि, मि गानन्दझा अनु दिप कहागि ुगि कुरागि ि वीभूव आनन्द उनाजी गिज कोनन्द रहेन्द्र नायिण गिर गाररे कबन ुगि जखन- खिन (रि क.व.) वहक कथाक प्र . दिशमी ऐ अकाब्र न रे क शी	शीरगि उषा कगि खान शी र हन भादिज डा. शानन्द झा 'रिण'

					काकि गणी			
					191 जेना जनस्वय का			
7 6 .	चेनै	14.07.2 012	वर्भा णिनी	शी रिनन्द झा 'रिण' उद- चनरकानि गर्वयाणि (IAS)	192 व्हआओल	रिनन्द झा 'रिण'	ि. शीश चौणि	-
7 7 .	दभिणी कणि जयनी	01.12.2 012	अर्विन्द ठाकु	डा. भीरनाथ झा उद- णिकेश कुराि बरश (IPS)	193 ि.डी. (37 गूट प्र थीक)	शुर्वी काशन कलसी * काशनाबिन वर्कमन चिनाकाकि	उपवस्थ ि रर्सि वर्देजि न	
क . ि .	स्थान	वर्क	मि जक	अधकरी/उदा टन	प्र थी ल कापम	लेखक	ल कापम ण कणि	अन्स
7 8 .	निश्मारपुि	09.03.2 013	करलेश झा	शी जगदीश िाद रण्डल, उद- डा. रिण, ररि डा. अश क रेह	194 किमि ि (कर्वी गिह)	उरेश पा णिन (औहिा)	जगदीश िाद रण्डल	-
7 9 .	औहिा (लौकही) (णिषाकक स्थलपा)	15.5.20 13	उरेश पा णिन	शी जगदीश िाद रण्डल/ रिरचन पा णिन उद- शी लकरी नायियण व हि (औहिा कणिा)	195 वर्देह वर्हक कथा, वर्- ;5 196 वर्देह रैकली बिर्न- कबर्न रा ल चना- वर्- ;10 197 वर्देह रैकली	ि गजेन् ठाकु/ उरेश रण्डल ि गजेन् ठाकु/ उरेश रण्डल ि गजेन् ठाकु/ उरेश रण्डल ि गजेन् ठाकु/ उरेश रण्डल ि गजेन् ठाकु/ उरेश रण्डल	शी मिय कुराि व हि शी रिरचन पा णिन शी ककथले श व ह शी जिजदे रण्डल शी लकरी नायियण	स्थानीय ल कक हभाणि बे

					ल कथा- 6	ि गजेन्द्र ठाकुरि उरेश रण्डल	व हि	
					198 वैदेह नाटय उत ि, व - ;8 199 वैदेह रैक्यली काशु उत ि, वैदेह- देह- 9 200 वैदेह रैक्यली पद वै. ; 7		शी िनि कुराि याद	
8 0	करसी (स्थान- राक्क िर- वैजनाथ बजाज रिखाला, भाष चोक, करसी- पौल)	30.11.2 013	उरेश रण्डल बेस्त्रि- स्थानीय लक्ष्म रि एि लक्ष्मका, वैशेष हय ग- शी िनि कुराि िय, शी वंनद कुराि िह, शी अब्बलेश कुराि 'कमटुजी'; शी अकषेख पिाि, शी िाि रि चौाि, शी िुशि कुराि रहि, शी दुगानन्द रण्डल, शी खडानन्द याद,	अध्यक- डा. अश क अव्चल एि डा. िराशीष व हि (िायाय ह.ि. र.वै. का.) उदाटन- शी ििश ह (वैाियक), शी अर ण कुराि व हि (अनुरण्डल पदावैकाि), शी जगदीश िाद रण्डल, डा. अश क अव्चल।	201 दौािजी (बाल ममर्न) 202 कुर केतर अनरम क (वैवैाि) 203 अािजी- रैक्यली शब्दक ष 204 रैक्यली- अािजी शब्दक ष- 2 205 बजनी- बुझनी (वैहक कथा) 206	ज्द वै झा चौाि गजेन्द्र ठाकुरि गजेन्द्र ठाकुरि एिअनम गजेन्द्र ठाकुरि एिअनम जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल नन्द वला िय जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जिजदे	शी िजदे रण्डल डा. बवेशा झा डा. िराशी ष व हि डा. अश क अव्चल शी अर ण कुराि व हि SDO शी िश ह, वैािय क डा. काकि राि िाद	1. 'कथा कलन दाय गि वैाि दीप जय' ई 80र आय जन स्थानीय कलाकाि रि. कलन दाय केि नाओमि आय जी भेल। 2. शी जगदीश िाद रण्डल 'भकर ड' लुि कथा मिह ऐ ग षीक नारे रकिा केलक।

			शी गिरदयाल भरि, शी गिरदे िाद रण्डल 'झार दा' शी गिहुल कुरा	डा. गिराशीष व हि (गिचायम्न रक्षि मीलक- कथा त- शी दुगानन्द रण्डल ल कापम्न त-उरेश रण्डल	गिगिन (द रि स्मिगिण) 207 खागि- पेटागि (ल कथा) 208 उलबा- चाउगि (ल कथा) 209 अदावानी (ल कथा) 210 भिमेया प्र खर्व (ल कथा) 211 भकर ड (ल कथा) 212 शम्भुदा (दीम कथा) 213 बुनी (कर्वी) 214 गिर्व-क्दन (कर्वी) 215 थि क चका उलवट चलै बाट	रण्डल जगदीश िाद रण्डल गिर बिला हु उरेश रण्डल जगदीश िाद रण्डल रनज कुरा कणम'रुनाजी' और कािश झा रनज कुरा कणम'रुनाजी' चन्दन झा अक कश जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल गिरदे िाद रण्डल 'झार दा' काकुरागि झा 'वट्मू' अनु शम्भु कुरागि व हि र्वि भूषण पाठक बेचन ठाकु बेचन ठाकु जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल	शी बैनु द कुरा ह शी दुगानन्द रण्डल ि. जय कािश ह शी फागुला ल हु द आलर 'ग ह' शी और कािश झा शी गिरजी िाद रण्डल शी बेचन ठाकु शी गिरदे िरि 'झार दा ि शी गिरलख न याद, पतका शी गिन्नि कुरा याद शी जगदीश िाद रण्डल	3. वैभन वीक 45 ग ट प्र थी ल कावर्मि भेल ।

					216 कश्चि (कर्वी हिह)	जगदीश िद रण्डल िजदे रण्डल	
					217 इन्निषी अका (कर्वी)	जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल	शी िनि कुरा याद
					218 विक (कर्वी)	जगदीश िद रण्डल जगदीश	
					219 कय जाव नै कल हरि	िद रण्डल गजेन ठाकु गजेन ठाकु	डा. काकु रा िद शी
					220 राइ ऑगनरे कर्वयाए ल छी	जुवै झा चौ	ककले श िज
					221 र नक बा (गजल)		शी चन्दन कुरा झा
					222 अहु (गजल)		शी बालरुकु न्द पाठक
					223 गीजक (गी)		शी कपीन कुरा कणम
					224 िन जेठ एगाहर रा		शी रन ज कुरा कहा
					225 व (गी हिह)		शी िजा र याद शी शहु भि
					226 ुखाएल पु खर्वक		शी रिर वैला ाफी

					जाइठ	शी	
					227	बालग	
					हरि	वन्द	
					कनु	याद	
					जग	ग वन्द	
					ुना छै	चायम	
					228	शी रि	
					कगभि	वला	
					(पद)	हु	
					229	शी	
					पाखल	कीशल	
					(कोकणी,	य कृषा	
					उपन्या)	शी	
					230	शम्भु	
					वैह स	भि	
					(नाटक)	शी	
					231	जिज्दे	
					क रि	रण्डल	
					रि	शी	
					(नाटक)	रिर्	
					232	श	
					बाप भेल	रण्डल	
					कती आ	शी	
					अव का	रिन्द	
					233	कुरा	
					ताक	याद	
					डकै	शी हेर	
					(नाटक)	नायण	
					234	हु	
					स्यि	शी	
					(नाटक)	नायण	
					235	याद	
					पमिटी	शी	
					(एकाकी	शादान	
					वियन)	न्द	
					236	व हि	
					कर्म राइ	शी	
						जिजला	
						ल हु	
						शी	
						गुर दया	
						ल	
						भरि	
						शी	
						रन ज	
						कुरा	

					ज (नाटक)	गिर शी उरेश पा निन	
					237 झरेकनया कआह (नाटक)	शी नन्द विला निय	
					238 हरि टल (उपन्या)		
					239 जीनि- षिम (उपन्या , द्र . स्मि णि)		
					240 बडकी बकन (उपन्या)		
					241 जीनि- रणि (उपन्या , द्र . स्मि णि)		
					242 नै िडैए (बाल उपन्या)		
					243 हतबाढ़ का (बेल काखारे उपन्या)		

					244 जगदीश िाद रण्डल एकटा िय गाफी (िय गा फी)			
					245 रध िदेशक याता (सििणि)			
8 1	देिििि (स्थान- कजली क ठी, बमाा टॉन, देिििि)	22.03.2 014	ओर कािश झा	अधक- शी जगदीश िाद रण्डल उदाटन- शी ओ.पी. कशा, (अ.ि. अकयि, झाखिण्ड काि) रद्वि धालक- शी गजेन ठाकुि	246 अष्टि (आ ल चना) 247 रैकली- अगिजी शकक ष- 2 248 ऊँच-नीच (नाटक) 249 अगिजी- रैकली शककक ष-1 250.जी कयल वज कल रैकगि-2 251. जी न र रैकगि (ककयला क पजि बिर्न)	कािकुराि झा 'कल्लू' ि गजेन ठाकुि बेचन ठाकुि ि गजेन ठाकुि ि गजेन ठाकुि ि गजेन ठाकुि 249 अगिजी- रैकली शककक ष-1 250.जी कयल वज कल रैकगि-2 251. जी न र रैकगि (ककयला क पजि बिर्न)	शी जगदीश िाद रण्डल शी ुशील भाििि शी स गान नद झा डा. उरेश ना. कणम डा. स गान नद झा शी िजििि मिजन कश एिििी ओर कािश झा	रीकक रीक (वििी रीक, वििीआल च ना) केि आिशककि पि एक न िय ग। -शी गजेन ठाकुि -शी जगदीश िाद रण्डल -शी ओर कािश झा -शी उरेश रण्डल

8 2 .	रैहथ (झझािपुि) कथा बौि व द रैहथपा	31.05.2 014	गजेन्र ठाकुि	अध्रक- शी अर्विन्द ठाकुि उद- शी जगदीश िाद रण्डल डा. करलकानि झा शी क्वािुराि वश सीगि- शी काशीकानि झा 'कणि' रन्नि घालन- शी उरेश रण्डल एििशी आनन्र कुराि झा	252. बै शाखरे दलानपि (गद-पद) 253. ने पालक ति रर भूखरे (ग/प. ि) 254. उ लहन (विल. ि) 255. O n the Dice Bord of the Millenn ium 256. हस्तार्विन्द क चौपडपि (प. ि) 257. T he Scienc e of Wo rds (Short Story) 258. ि वा बाट बनेबाक दार अगूि ि पेने छै (गजल) 259. हसकानि (पद गिह)	क्षीप ाफ्री वन्देशि ठाकुि ककलेशि िउति अनु- ज्म वी झा चौिि गजेन्र ठाकुि Gajendra Thakur गजेन्र ठाकुि गजेन्र ठाकुि गजेन्र ठाकुि गजेन्र ठाकुि	डा. करल कानि झा शी जगदीश िाद रण्डल गजेन्र ठाकुि डा. क्वािु राि िाद शी आनन्र कुराि झा शी अीन ठाकुि, ललन कु कारि शी िरदेि िाद रण्डल 'झार दा ि शीवेचन ठाकुि/ शी िरवी ला ाहु/शी हेर नाियण ाहु शी जगदीश िाद रण्डल, शी अर्विन्द ठाकुि,	शी जगदीश िाद रण्डल ऐ बाल केवह ग षीक आय जन पि अपन “बाल- ग पाल” नारक लुि कथा गिह रक्कि केलक।

					260. कु र क्षेत्र विर्न- कवर्न राल च ना-2		शी जिजदे रण्डल	
क . ि .	स्थान	वर्क	सिजक	अध्वक/उदा दन	प्र थी ल कापम	लेखक/लेख का	ल कापम ण कति	अन्म
8 3	खुआ- भपट्याही शिक्षक स्थान- उ त्तरक रक्ष वर्दालयल पर्वि।	30.08.2 014	नन्द वला गिय, फागुलाल ह, जि नागियण गिय 'रुन' बेस्था- स्थानीय वर्दजन वर्शेष हय ग- डा. वरेल कुरागि गिय, शी जिनि कुरागि, शी जि नागियण गिय, शी अश क कुरागि गिय, शी नुन्दि लाल ह, इ . वर्जानि, शी व यागिर ह, शी शम्भू व हे, शी यादी, शी उराकार्नि गिय, शी जगा नागियण गिय, शी बजनन्दन ह, शी उरेश ह, शी गुर्गि	अध्वक रण्डल-डा. वरेल कुरागि गिय, डा. स गेन् पाठक वर्ग गी, शी जगदीश िद रण्डल, शी करलेश झा आ डा. का कुरागि िद उद- डा. वरेल कुरागि गिय, शी जि नागियण गिय, डा. स गेन् पाठक वर्ग गी, शी जगदीश िद रण्डल, शी ओर काश झा शिलन कर्व- शी ओर काश झा, शी दुगानन्द रण्डल, शी जिजदे रण्डल आ उरेश रण्डल	261 “खल रन िल ऑब” (कर्व ि गिह) i पट कोपी 262 “कथा कुुर” (वह क/ल कथा गिह) 263 “भोट” (नाट क) 264 “पट्टी” (पट कथा) 265 “जाल” (पट कथा) 266 “अपन-	रुनी कारगि दुगानन्द रण्डल बेचन ठाकुकि जिजदे रण्डल जिजदे रण्डल जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल अयुर्गि यादी 'अरि'	शी फागुला ल ह शी शम्भु गिभि शी बजनन्द न ह शी हेर नागियण ह शी का कुरागि कश शी करलेश झा शी उरेश नागियण कणम शी फागुला ल ह शी गिर कुरागि रण्डल शी	जन हय ग गष्टीक अयु जन फलसर प जन गिणिगक उपक्षध्वि। शी जगदीश िद रण्डल ऐ गष्टीके नागि केव्हि लु कथा गिह “लजवर्जी” रक्षि केलका।

			ह, शी िरकुराि रण्डल, शी तम नागियण व हि आ शी लक्ती रण्डल , उरेश रण्डल िथा शी गजेन् ठाकुि।		कीन’ (लु) वहक कथा हिह) 267 “पझाड ” (लु) वहक कथा हिह) 268 “टिनी खडू” (लु) वहक कथा हिह) 269 “बाल- गु पाल” (लु) वहक कथा हिह) 270 “लजक जी” (लु) वहक कथा हिह) 271 “ फि कर खाहिब” (कार क जीभी)	अय ि यादि ‘अरि’	ओर किश झा शी जगदीश िद रण्डल डा. वरल कुराि निय/ डा. य गेन् पाठक ‘वय गी’	

					272 “कार वर्द्धिर्वी”			
8 4	बेरि रक्ष वेदालय पर्वि (बेरि,रुबि नी)	20.12.2 014	वार्कुरा वश बेस्ति- स्थानीय वर्द्धिर्वी एविवर्द्धिर्वी	अध्वक रण्डल- वार्कुरा विद,श्मरान नद चौर्वि, वृद्धिर्वी नन्द' वद' । मिलन वर्द्धि- द्वगानन्द रण्डल,ओर कारि झा,उरेश रण्डल उदाटनकवि- श्मरानन्द चौर्वि, जगदी श विद रण्डल,पवि वृद्धिर्वी वश' वद'	273 डीह क जरीन (वर्द्धिर्वी/ल वि कथा विह) 274 र विश्विक भूवि (ल कथा विह) 275 गार क शकल- भूवि (ल कथा विह) 276 अ पान- वीर्गिन (ल कथा विह) 277 बाल -ग पाल (ल कथा विह) 278 लज वर्द्धिर्वी (ल कथा	ओर कारि झा जगदीश विद रण्डल जगदीश विद रण्डल जगदीश विद रण्डल जगदीश विद रण्डल जगदीश विद रण्डल पवि वृद्धिर्वी कश पवि वृद्धिर्वी कश विगजेन ठावृवि,आशीष अनवर्द्धिर्वी विगजेन ठावृवि,आशीष अनवर्द्धिर्वी विगजेन ठावृवि,आशीष अनवर्द्धिर्वी	जगदीश विद रण्डल, उरेश नारियण कणम र विला ह ओर कारि झा, वृद्धिर्वी नन्द' वद', श मु विभि श्मरान नद चौर्वि, अनुप वृद्धिर्वी कश्यप, विजदे रण्डल' विण' बेचन ठावृवि, फागुला ल ह,व वि झा रहादे, उरेश ना. कणम मिय वृद्धिर्वी रण्डल, यूम नारियण कारि (विज कारि),	अन- जन हय ग ग वृद्धिर्वी आय जन फलसर्व प जन विगिणिक उपवृद्धिर्वी ।

					गिह)		शम्भु भैभि, का कुरा िद	
					279 प झाड (ल कथा गिह)	ि उरेश रण्डल	बरभ ली झा,दगा नन्द रण्डल, का कुरा िद, गा िद (पिष्टि)	
					280. टि नी खद (दी.क. ि गह)	ि वैदेह गुप	ओर काश झा,शमा रानन्द चौगि, गिर वला हु,न न्द वला गिय अर्धेन्द चौगि, अनुपकु रा कश्यप, कमले श गिर्जि, र . गुल ह न ओर काश झा,श म्भु भैभि, का कुरा िद, कमले श गिर्जि	
					281. का ि दशम (पद)			
					282. अ मलाषा (रैकली भजनरा ला)			
					283. रै कली गजल: आगरन ओ स्थान कहु (आल च ना क्रिलन) (ी.डी.)			
					284. खुआली (व हक/ल ि कथा गिह) (ी.डी.)			

					285. क रस्त ने (वहक/ल टि कथा मिह) ('ी.डी.)		शमरान न्द चौमि, वेचन ठाकुरि (व मि पाही) शी जगदीश मि रण्डल	
					286. दे मि मि (वहक/ल टि कथा मिह) ('ी.डी.)		शी ओर मि झा	
					287. क था बौद व द रेहथपा- (वहक /ल कथा मिह) ('ी.डी.)		डा. का कुरा मि शी मिजदे रण्डल' मि शी कमले मि	
क मि	स्थान	वैद्य	मि जक/आय जक	अध्यापक/उदा टन	प्र थी ल कायम	लेखक/लेख का	ल कायम मि	अन्म

85	भागलपुरि 'शमार कुनि' (दाबैकापुरि भागलपुरि)	04.04.2015	ओर कािश झा	जगदीश िाद रण्डल, डा. रि शक्ति वहि, शी डा. केष्का ठाकु, शी वीकानन्द झा'वीनू' शी जिजदे रण्डल, शी शमारानन्द चौकि। चालन कर्वि- शी दुगानन्द रण्डल, शी पक्तिज कुरा झा एरिउरेश रण्डल।	288. अ पन रन अपन नि (ल कथा मिह) 289. उ कडू रय (ल कथा मिह)	जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल	डा. केष्का ठाकु डा. रि शक्ति वहि	1.अपन रन अपन नि (लकिथा मिह) 2.उकडू रय- (लकिथा मिह) 3.कक्क- राक्कनी (किक्क पक्काका) ऐ निनू पथीक पक्का - पक्का बि क:शुल्क बीणि कएल गेल...।
86	लकना उन्नुल आशरक गाँव भा कक कजला- रुबनी	20.06.2015	जिजदे रण्डल'रिण'	उ- डॉ. खुशीलाल रण्डल, डॉ. युगेन्द्र पाठक'वैयगी', शी भुगेन्द्र याद'भाफकि', शी करलेश झा। अ- शी दुगानन्द रण्डल (बनीझूला), डॉ. युगेन्द्र पाठक'वैयगी', शी जगदीश िाद रण्डल।	290. प नाक रि (ल.क. मिह) 291. र ुराछी (ल कथा मिह)	जगदीश िाद रण्डल जगदीश िाद रण्डल	डॉ. खुशीला ल रण्डल डॉ. युगेन्द्र पाठक ' वैयगी'	शी जगदीश िाद रण्डलक दूटा ल कथा मिह, जे ऐ गुछीरे ल काबमि भेल कि पक्का - पक्का बि क:शुल्क बीणि कएल गेल थिा डॉ मिनाथ क्कीकिक लकिथा मिह- 'भख नि नील मि', 'ह कफु कथाकाकि देल गेलक।
8	शमारा	19.09.2	झिजक.	उदाटन :	292. गु	जगदीश	डॉ.	शी जगदीश

7	वि डेनी कॉर वीह हॉल (ए.बी.आइ केम) करसी (पौल)	015	उरेश रण्डल,अय ज कः करसीक स्थानीय वक्तृ रिी आं वक्तृका। वैशेष हय गः शी तम नायण िद इह,शी नायण िद व हे,शी वक्ति पाणि, शी रि काश इह, शी भाष कुरा कारि, शी देशि कुरा व हे,शी रन ज कुरा शरा, शी रिनाथ गुपी, शी रि लखन भण्डी, शी अखलेश चौगि, शी रि मुक्ति इह, ि. भिन्नि कुरा थिा डॉ. वैरल कुरा यि। शी वैरल द कुरा, शी मुक्ति िद याद, शी मुक्ति रहि।	मुक्ति र पे- डॉ. दुगा िद इह, डॉ. रि अशीष व हे, डॉ. वैरल कुरा यि, शी मुलील कुरा, शी तम नायण िद इह, शीरि आशा देी थिा ि. वैरल कुरा यि। अध्वक रण्डल- शी नम वैला यि, शी कमलेशि िद, शी रि वैला इह, ि. हेर नायण इह। सीगि गीः रिदे िद रण्डल'झार दा ि। सीगि भाषण : डॉ का कुरा िद, डॉ शी इ हन झा।	डा खुदैक िटी (कथा) 293. फ लहा (कथा हिह) 294.ल जक्जी(अवाला स्किणि) 295. गा रक शकल- ूि (कथा) 296. जा ल (पटकथा)	िद रण्डल जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल िजदे रण्डल	दुगा िद इह डॉ. रि अशीष व हे शीरि आशा देी ि. भिन्नि कुरा यि डॉ. वैरल कुरा यि	िद रण्डलक चार पृथी जे आइ ल कापम भेल कि पचा - पचा वि झि जक अपना क विणि केलन
8 8	रध वैदालय- डखीर (बेनीपु)	30.01.2 016	आय जक : शी अरि नाथ झा झि जक : करलेश झा	उदाटन : शी जगदीश िद रण्डल, डॉ. का कुरा िद, शी िजदेश रण्डल,फागु लाल इह,उरेश पा िन,शादि	297. लूट गाछ (उपन्मा) 298. एग का आरक गाछ	जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल	कक रि पे अथा, गष्ठीरे पहुँवल बहक दाि	शी जगदीश िद रण्डलक ' खै गाछ'(ल कथा हिह) आ लूट गाछ (उपन्मा क) पचा - पचा

				नन्द व हि, नन्द वैला निय, उरेश नायिण कणम सीगि गीः गिकानि रण्डल	(कथा)			कौपी वीणि लेखक अपना द कैलैन।
8 9	लोकही स्थानः यम िद उक्ता वैदालय- लोकही	26.03.2 016	क्षिजक : उरेश पा निन एगिरे कुरा िह क्षिजक : उरेश पा निन एगिरे कुरा िह क्षिजक : उरेश पा निन एगिरे कुरा िह	उदाटनः शी गिरचन्द्र चौपाल, शी गिजदे रण्डल 'रिण', शी लकरी ना. व हि, शम्भू गिभि, अध्याक रण्डलः शी जदीश िद रण्डल, वि कुरागि एगि शम्भू गिभि, गिजदे रण्डल। रक्षि गिलन : शी उरेश रण्डल, शी नन्द वैला निय, शी दुगानन्द रण्डल।	299. च नरका (काव्य गिह) 300. शु भक्कनिक (ल.क. गिह)	उरेश पा निन जगदीश िद रण्डल	कक्क रि रे पे कक्क रि रे पे	उरेश पा निनक प्रथी'चन्द्र का' एगि जगदीश िद रण्डलक प्रथी : 'शुभक्कनिक' ए- ए कौपी वीणि।
9 0	लकरीकया (रिवनी)	18.06.2 016	क्षिजक : गिर वैला िह आयजक : लकरीकया गारक म्भ िहत्त रिरी।	उदाटनः क्षिजक : गिर वैला िह क्षिजक : लकरीकया गारक म्भ िहत्त रिरी।	301. गा छपि ख ला (क. गिह) 302. ड कयाएल गार (क. गिह) 303. अ कु (क. गिह)	जगदीश िद रण्डल जगदीश िद रण्डल गिर वैला िह	कक्क रि रे पे कक्क रि रे पे कक्क रि रे पे	

				)			
9 1	ग न्तिपु (क काला दीप उत कल- रिबनी	24.9.20 16	क्षि जक : दुगानन्द रण्डल	उदाटन: अधक रण्डल: रक्षि म्वालन :	304. क था कु.र (क. गिह) 303. गु ले दा (क. गिह)	दुगानन्द रण्डल जगदीश िाद रण्डल	

वंदेह मान राहि (रानानिं तहत्त अकादेरी पुस्त्राणि क्ति)- कत वीणि



शी परानन्दि ठाकुकि वंदेह

हारि कयर कला मान- २०१२ क शिसी पत दिन कौं शी
नन्द कश गिणी।

पर्वचए-

शी परानन्द ठाकु, कानिक नाओ शी नथुनी ठाकु, गार- जगदी,
प्रस्ट- कछुबी, भाया- रिविया, कला- रबिनी, कहाकि स्थायी
कानि ी छैथ। ३० षीय परानन्द एखन पघियि क्कक छैथ। ऐँ
पक्ने ओ बैड पाटीरे कैव य रास्टकि कायमकौं छला। लिक
ह बजेबाक कला छैन। ओना हारि कयर कलाँ दशक-शिके
रति-रुगि कौं हिला अक्क। कनक कलाके झझापिरुि केतरे भ
हिहै छैन। जे. एर. ए . कक्कि न्दति, चनौगिजिक गिणरे
सिंणी पूजाक अणि पिनि नाटय उत रि कनक कलाक दिशम
नीक हइ हिलक अक्क। कनक कलारे आशाणिं उनर्व हेतु वंदेह
पर्वणि कनका वंदेह हारि कयर कला मान- २०१२ँ म्माकि
कौं अपनाके गौकि रहू केलक अक्क।



शुशी काल्मी कुराणीके वैदेह
अवमनय म्मान- २०१२ क शिसी पत दिान कौि डॉ. उषा
रहा ेठ।

फाइल फट-२, वैदेह अवमनय म्मान ॥ म्माक्कि काल्मी कुराणीके
उपहाि दिान कौि डॉ. उषा रहा ेठ।

पर्वचिए-

शुशी काल्मी कुराणी, क्किक नाओिशी लकरण झा, पति- गार-
चनौगिठ, पतालय- चनौगिजि, भाया- झझिपुि, क्कला- रबिनी,
(क्कहाि)

१७ षीय काली द र गिष्क छाता छैथ । पछियाँ, खिण्ड आ अनुरण्डल सँपि अपन विभाँ केँकि बे पुस्कि भऽ चुकल छैथ । जे. एर. ए ; क क्कगि ेन्टि, चनौगिजरे भ केतरे क्कनक नीक दिशम हिलक अक्ख । खा कऽ अक्कनय कलाक रादे दशक्क ल कक्कक बीच बडड गिहल गेलीह ।

वंदेह अक्कनय मरान- २०१२ ँ मर्राक्कि काँकि वंदेह पर्वीकि हक्कमि अक्ख ।



शी अरीकि जिनके वंदेह नृत्यकला मरान- २०१२ क शिसीँ पत दिान काँकि शी कवलेशकि गिडि (गियाँ) एँकिशी जगदीश झा (दक्कनाँ) ।

फाइल फट-२, वंदेह नृत्यकला मरानँ मर्राक्कि अरीकि जिनके उपहाकि दिान काँकि शी जगदीश कि िद रण्डल ।

पर्वचिए-

शी अरीकि जिन, क्कमिक नाओकि शी नागेशकि कारकि, गार- पौरि, पःस्ट- चनौगिजि, भाया- झझिगिपुकि, क्कजला- रडुबनी, क्कहाकि स्थायी क्कमि ी छैथ ।

१८ षीय अक्कि बाहिँकि छत छैथ । अनुरण्डल सँपि नृत्यकलारे

कनका थिर पुस्किा भेटल छैन। जे. एर. ए . ककागि ेन्टि,
चनौगिजिक गिणरे आयकागि ास्मृवक कायकररे नृत्य लेल
हिल जाइ हिला अछ।

वैदेह नृत्यकला मान- २०१२ ँ माका काँ वैदेह पर्वी
नि रहू केलक अछ।



शी बहादुर गिरके वैदेह निचौकी
कला मान- २०१२ क शिसी पत दिान काँ शी उरेश रण्डल
गियाँ एदिक्कनाँ शी बेचन ठाकु।

फाइल फट-२, वैदेह निचौकी कला मानँ माका बहादुर
गिरके शी बेचन ठाकु उपहा दिान काँ एरिगि घिलन काँ

शी दुगानन्द रण्डल ।

पर्वचए-

शी बहादुरि गिर, कालिक नाओसि. जिग गिर, गार+पुस्त-
चनौगिगि, भाया- झझागि, काला- रुबिनी, काला के स्थायी
काली छैथ। कनक उम ६० बखमछैन। ४० बखमँ निचौकी
बजबै छैथ। राजक भणिक्क लकक रध्म कनक उता कला
लेल विशेष राग हैए। पदल-कलखल नि नै छव्य रुदा निचौकी
कलाँ गार-गिरि लकविय कवति छैथ। आव्यक्क रपँ कम किहि
कव्यलाक स्मृति के निहिके अकुम्भ खिने छैथ।
एदिथमकनका वंदेह निचौकी कला मान- २०१२ ँ माला
कऽ वंदेह पर्वणि हकमि भऽ हिल अक्क।



शी

शभा कानि रहिके वंदेह अकनय कला मान- २०१२ क शिसी
पत दिान काली शी कालेशि गिडि।

फाइल फट-२, वंदेह अकनय कला मानँ माला शभा कानि
रहिके रालापमा शी उरेश रण्डल।

पर्वचए-

शी शभा कानि रहि, कानिक नाओशि गिर अगिगि रहि,
गार+प्रस्ट- चनौगिगि, भाया- झझापुगि, काला- रबिनी, कालाकि
स्थायी कानि ी छैथ।

१६ बखक शभा कानिजी नरि ककक छात छैथ। वैदेह नाटय
उत कि गि- गि जे.ए.ए . ककगि 'न्ट', चनौगिगिक गिगरे
आयकजि भ कायकररे कनक दिशम बक्या हँहि छैन। नाटकरे
कनक अकनय ' दशक त्रिन्दि नि भऽ हाहँहि हिलकन अक।
पछियि एगिखिण्ड सपिणि उन्दि अकनय लेल कनका पुसिक्कृ
कएल गेल छैन।

वैदेह अकनय कला मरान- २०१२ ' मरानि कऽ वैदेह पर्वीगि
हकमि भऽ हिल अक।



शी जगदीश रक्ताकके वैदेह हसकिला
मरान- २०१२ क शिसँ पत दिान कँ शी बेचन ठाकु।

पर्वचए-

शी जगदीश रक्ताक, कानिक नाओसि. सरि प रक्ताक, गार+प्रस्ट-
चनौगिगि, भाया- झझापुगि, काला- रबिनी (काला) के स्थायी

कांिी छैथ ।

काल्मकलारे क्हनका विषिा छैन । क्हनक बनौल पक्थया, क कया,
चँडेी, क्कआहक डाला इत्याक्क शिनीय हइ छैन ।

वंदेह हसकिला म्रान- २०१२ ँ म्रान्का कांिी वंदेह पर्वीकि
ि नी रहू केलक अक्ख ।



शी झरेली

रुक्खयाके वंदेह सिक्किला म्रान- २०१२ क शिसी पत दिान
कांिी शी हेरनायिण ाहु ।

फाइल फट -२, वंदेह सिक्किला म्रान ँ म्रान्का झरेली रुक्खयाके
उपहाि दिान कांिी शी अजय कुराि दा ।

पर्वचए-

शी झरेली रुक्खया, क्कानि नाओि सि. रुगिलाल रुक्खया, गार+प सट-
छजना, भाया- नक्किया, कला- रुबिनी (क्कहाि)

जन्म लगभग १९५०

क्काक्क- कक्कि

बेिाय- बहीवाी, (लकड़ी फक्कान्का)

रुक्खयाजी गिल्लकालक्क ँ क्काल्मी (सिक्किला, फक्कान्का)क कायम कऽ
पर्वीकि भनि-पूषण कांिी हिला अक्ख । ऐ लेल ाराक्कक षिम

‘ह कएि पड़लव। रुदा आब एक हिहँ अनुकणीय व्यक्तिक
र परे राजरे जानल-रानल जाइ छैथ।

वैदेह सिक्किला म्मान- २०१२ ँ म्माक्कि कऽ वैदेह पर्वीणि
गौणि रहू कऽ हिल अक्क।



शी रेश कुराणि
भाणिँके वैदेह व्यक्तकला म्मान- २०१२क शिसी पत दिान कौणि
र. र द आलर।

फाइल फट-२, वैदेह व्यक्तकला म्मानँ म्माक्कि रेश कुराणि
भाणिँके उपहादिान कौणि णिय उप राहि ह भाणिँ ए .डी.ओ.
चेनिायिण णिय एणि णक्कत्तकाणि जगदीश णि द रण्डल।

पर्वचए-

शी रेश कुराणि भाणिँ

व्यक्तिक नाओणि शी र णि रण्डल

जन्म वक्खि- १० राचम १९८६

व्यक्तिक- अर्णि स्नाकि

गार+पुस्त- बेरि

भाया- रिविया कला- रबिनी (कहा)

कन- ८४७४१०



शी पनक

लाल रण्डलके वंदेह कतकला म्रान- २०१२क शिसी पत दिन
कॉि शी हेरनायण हु।

फाइल फट-२, वंदेह कतकला म्रानँ म्रामि पनक लाल
रण्डलके म्रामि कॉि गिय उप राहि ह भागि ए .डी.ओ.
चेनायण गिय एकिकि जनक कशालाल दा ।

पर्वचए-

शी पनक लाल रण्डल, कतिक नाओसि. उन्नि रण्डल, गार एगि
पताल- छजना, भाया- नकिया, कला- रबिनी (कहा)

बेि ग- पेन्टीग

जनर वकि- ०५/ ०९/ १९६७

काक- बी.ए. (१९९३-९५)

कत कलाँ इलाकारे वि द छैथ। वंदालय, रहारिंदालय, अनुरण्डल
कायालय इत्याकरे अनेक कत बना अपन पक्कान एकटा नीक

कृतकालि र परे बनौन छैथ ।

वैदेह कृतकला मान- २०१२ ँ म्माका कौं वैदेह पर्वी
नि नि रहू केलक अछ ।



शी लकरी

दा के वैदेह क नी आत्त कभमि स्मृति मान- २०१२क शिसी
पत दिन कौं शी जगदीश झा ।

फाइल फट-२, वैदेह क नी आत्त कभमि स्मृति मान ँ
म्माका लकरी दा के म्माका कौं एउपहा दिन कौं शी
बेचन ठाकु एडिगानन्द रण्डल ।

पर्वचए-

शी लकरी दा , काक नाओसि. फनी दा , गार+प्रस्ट- बेरि,
भाया- रिविया, कला- रबिनी क्हाकि स्थायी काी छैथ । गाररे
कि कृष्णकायमँ जीनि-यापन कौं हिला अछ । डीहक अलाबे
कटा पाचेक जरीन हिने आशिकी अनु ाि बटाइ खेी-गिड़ी
कबारे अपन गुजिइश कएलक । अपने अलम काक्कि कि बिटा-
बेटीके नीक काक कयेबारे गाररे अनुकणीय कक्ति छैथ ।

एदिथमकनका वंदेह क नी आतर कभमि स्मृति मरान- २०१२
 * मरानि कऽ मूणमवदेह पर्वणि नि न अकख ।



शुशी

वयिकि कुराणि के वंदेह हास्य कला मरान- २०१२क शिसी पत
 दिन कणि शीरणि नी देी ।

फाइल फट -२, वंदेह हास्य कला मरान * मरानि वयिकि
 कुराणि के मरानि कणि डॉ. उषा रहा ठ ।

पर्वचए-

शुशी वयिकि कुराणि, कानि नाओशिी बैदनाथ तह, गार- व रणि,
 पताल- व रणि, भाया- झझिपुनि, कला- रुबिनी (कहा)

१६ षीय वयिकि द र गिक्क छाता छैथ । पछिया सिपि अपन
 नीक दिशम लेल पुस्मृति भऽ चुकल छैथ । जे. एर. ए ; क कानि
 'न्टि, चनौगिजि के गिगणरे सिपि पूजाक अणि पि आयकजि
 तस्मृति कयकररे हास्यक क्षेत्रे कनका विष्टा भेटलक ।

वंदेह हास्य कला मरान- २०१२ * मरानि कणि वंदेह पर्वणि

નિ અવઠ ।



श्री यदुनन्दन

पण्डितके वैदेह आत्म कला स्नान- २०१२क शिसी पत दिन
कौं शी जगदीश िद रण्डल ।

वंदेह काल्म कला म्रान^ॐ म्राक्वि यदुनन्दन पक्कडिके म्राक्वि
 कौंि पूभिव्जला पाषष दस्य बलारि इहु एकिक्वि जनक क्कश
 लाल दा ।

पर्व चिए-

શી યદુનન્દન પઘડિ, વ્હાલિક નાઓશી અશાફી પઘડિ, ગાર+પ્ર સ્ટ-
બેલાતીહી, માયા- ઇક્ષાપુત્રિ, વજલા- રુત્બની (વ્હાલા) કે સ્થાયી વ્હાલો િ
છેથ |

उम ५० बखम व्हनका बचपन^५ कुम्हाकि कायसे अक्कर क्य छैन।
राव्ठक बमि-बा न आव्ठक अव्विति विमन देणी-देणिक रूवम
बनेबारे व दर्सि छैथ। उता कला^६ ई इलाकारे वि द छैथ।

सिंी नक दीके दूग हाथ काटैबला कुम्हाकिे कलाक ि
रजाक बुझै छथ रुदा अपने चार्व हाथीली विरिा बना अपन क्षेत्रे
वि क् हाव ल कएने छैथ ।

वंदेह काल कला मान- २०१२ ॐ माका कऽ वंदेह पर्वणि
हकमि अक।



शी बुलन गिउके वंदेह गिदकला
(लिक) मान- २०१२क शिसी पत दिन काँ शी रि कािश
एशिी भवाथि गिन।

पर्वचए-

शी बुलन गिउ, काक नओसि. कलटू गिउ, गार+प्रस्ट- बेरिा,
भाया- रिविया, कला- रबिनी क्हाकि स्थायी काी छैथ।

उम ५० बखम बुलनजी पानक खेी कऽ जीनि यापन काँ छैथ।

लिक बजौनाइक रक क्हनका आइ नै गिणि बच्चे ॐ हिल छैन।

अपना इलाकारे उता कलाक रादे चकमि छैथ। लय-गिकल अन्दाज
बेज़ि छैन। ई अपन कीमि रडिलीक गिढ़ रानल जाइ छैथ।

वंदेह गिदकला (लिक) मान- २०१२ ॐ माका कऽ वंदेह
पर्वणि काफी हकमि अक।



शी

दुगानन्द ठाकुर के वैदेह हास्य कला म्मान- २०१२क शिसी पत
दिन कर्णी गियाँ शी जगदीश िद रण्डल एदिद्वनाँ शी नन्द
कश ि गुपी ।

फाइल फट-२, वैदेह हास्य कला म्मानँ म्माकि दुगानन्द
ठाकुर के म्माकि कर्णी अकिश िपि क्वाक्क हर्वनायिण झा एर्णि
र्णिय उप राहर्णि ह भार्णि ए .डी.ओ. चेर्नियिण गिय ।

पर्वचए-

शी दुगानन्द ठाकुर, क्वाकि नाओर्णि सि. भर्णि ठाकुर, गार+प्रस्ट-
चनौगिजि, भाया- झझाप्पुि, क्जला- र्ठिबनी, क्काकि स्थायी क्वाी ि
छैथ ।

दुगानन्दजी अर्णिजी वषियँ बी.ए. कएने छैथ । आक्क र पँ पछुआएल
हिलाक काणि क्जजी अध्यापन कायम कर्णी पर्वीकि भनि-प्रषन
कर्णी छैथ । जे. एर. ए . क्काकि ँन्टि, चनौगिजिक वषि नीय
छातरे अगगण्य छैथ । क्कनक हास्य दिशम बडड चटगर्णि दशक्क
र्न्तिके लगै छैन ।

वंदेह हास्य स्तान- २०१२ ॐ स्तान्ति कर्त्ति वंदेह पर्वीति
ति नत्तिक अनुभति केलक अक्ख ।



फाइल फट, ुशी ुलेखा कुरात्तिके वंदेह नृत्यकला स्तान-
२०१२क शिसी पत दिन कर्त्ति डॉ. उषा रहा ठ ।

पवचए-

ुशी ुलेखा कुरात्ति, क्कतिक नाओशी हीरि यादति, गार आ
पताल- चनौगिजि, भाया- झझिपुति, कला- रबिनी (कहाति)

१६ धीय क्काल्मी शी हीरि यादति क्कतीय पुती छैथ । नरि गिक्क
छाता छैथ । पघियति आ खिण्ड सपि नृत्य कलाक लेल केकि
बे पुस्किा भेटल छैन । जे. एर. ए ; कक्कति ेन्टि, चनौगिजिक
गिणरे आयक्कति स्मृक्कति कायक्कररे ई दशक्क लकक्क रन
र है हिली अक्ख ।

वंदेह नृत्य कला स्तान- २०१२ ॐ स्तान्ति कर्त्ति वंदेह पर्वीति
गौर्त्ति रहू केलक अक्ख ।

“वंदेह रूल क्कत्त स्तान-2012”



शी

जिजदे रण्डल पुत स. . ने लाल रण्डल उफम . नाई रण्डल,
उरे- 52, “अम्मा” कवी गिह लेल “वर्देह रूल ाकृत्य मान-
2012”

पर्वचय: जनर : १५ राचम१९६० ई.रे। क्पाि : स. . नेलाल
रण्डल उफम . नाइ रण्डल। राि : स. फूलिीं देी। पती :
शीरिी चनरभिा देी। पुत : कशानि रण्डल, कृषाकानि रण्डल,
विकानि रण्डल। पुती : किर कुराी। राटिक : बेलहा (फुलपि ,
रुबिनी) रूलगार : रु हकिया, प्रस्ट- नि गि, भाया- कंरसी,
कला- रुबिनी। क्हाहि- ८४७४५२ र बाइल : ९१९९५९२९२० काक
: एर.ए. दय (रैकली, कन्दी, एल.एल.बी)

ई पत : rajdeokavi@gmail.com

मान : अम्मा कवी गिह लेल वर्देह रानानि ाकृत्य
अकादेरी पुस्किा षिम२०१२क रूल पुस्किा थिा रग यगदान
लेल र्देह मान-२०१३ पि।

किाका कृव : (१) अम्मा- कवी गिह (२०१०), (२)
बुिी कवी गिह (२०१३), (३) हरि टल- उपन्या (२०१३)
शुर्व किाशन ँ किाका।

अकिाका कृव- चाक (उपन्या), क्पाणीक गि (लु/वहक कथा

हिह) ।

“वंदेह अनुदि पुस्काि”



डॉ.

नशि कुराि वकिल “ययार्व” (व. . खाण्डेक, रगिठी)क वंदेह अनुदि लेल 2013क “वंदेह अनुदि पुस्काि”। माकम भगानिपु, देुआ रसौपुि क्हाहा।

“वंदेह बाल ाक्त्तम मान”



शी

जगदीश िाद रण्डल पुत स. दल्लू रण्डल “गिगिन (बाल िकि क्हाैन कथा हिह” लेल 2012क “वंदेह बाल ाक्त्तम मान”

पर्वचयः जनः : 5 जुलाई 1947 ई., काक नाओः स. दल्लू
रण्डल। राक नाओः स. रक बाँ देी। पती : शीरणी
रि खी देी। पि : रूलगार- बेरि, भाया- रिविधा, खिण्ड-
लखनौ, कला- रबिनी, (काहा) कन : 847410, र.
9931654742, 9570938611. राक : रन पि, भाया-
निशारपु, कला- दभिणी। जीवक पाजम : कृक (रुखाः किकाी
खेी) काक : एर.ए. दय (कन्दी एरिजिनीव शास्त) कृत लेखन
: 2001 ईसीक पछाईँ ...।

रौकक चिना : गी गिह : 1. गीजक, 2. खुएल पखक
जाइठ, 3. गिन जेठ एगाहिर रा, 4. वी। कवी गिह : 5.
इरिनुषी अका , 6. वि-कन, 7. बि। एकाकी घियन : 8.
पघिटी। नाटक : 9. कथलाक बेटी, 10. कर्मराइज, 11.
झरेकया काह, 12. ताक डकै, 13. सयि। उपन्या :
14. रौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पनि, 16. कनगीक जी,
17. जीन-रणि, 18. जीन शिम 19. नै िडैए, 20. बड़की
बहन, 21. भादक आठ अन्हा, 22. बि-वी, 23. ठूठ
गाछ। एकाकी : 24. कलमाणी, 25. रिए, 26. रझौ, 27.
रि क रिल, 28. बीगिना। वैन कथा गिह : 29. गिन,
30. बजनी-बुझनी। दीमकथा गिह : 31. शमुदा , 32. टिनी
खद। ल कथा गिह : 33. गारक कनगी, 34. अदावानी, 35.

भैया पख, 36. गारक शकल-ू, 37. अपन रन अपन
नि, 38. रथिइक भू, 39. अपन-बीनि, 40. बाल गपाल,
41. भकर ड, 42. उलबा चाउ, 43. पझाइ, 44. लजकजी,
45. उकडू रय, 46. रुराछी, 47. पनाक रि, 48. गुडा-
खुदीक टि, 49. फलहा, 50. खै गाछ, 51. एगछा आरक

गाछ, 52. शुभक्कनिक, 53. गाछपि ँ ख ला, 54. डक्कयाएल गार ।

“वंदेह रानद् रहति दस्सपि”



शी

जिनन्दन लाल दा (विकिर्वि- डॉ. बुचर पा िन) रैक्थलीरे रग यगदान लेल “वंदेह रानद् रहति दस्सपि” दिन कएल जा हिल अक्छ ।

शीरणी जय व नी चोणी “अक्यम” कवी हि लेल 2012क
“वदेह युि पुस्काि”

शास्त्रीय गीि आ िनपुि िद लेल वदेह “रागक खबा म्मान”



शी िरिक्ि व हि पुत शी अकर द व हि, उरे- ५६, गार-
फुलविंया, प्स्ट- बाबूबहि, कला- रबिनी (कहाि)

“ रग यगदान म्मान”

बिला िदन लेल वदेह “ रग यगदान म्मान”



श्री देविनाथ यादव पुत्र स.

क्षीरि यादव, उर्रे- ५०, गार- झाझपटी, प सट- पीपहि, भाया-
लदकया, कला- रबिनी (बहा)



श्री

नन्दि कुराणि झा पुत श्री त्र नागियण झा, रैबली पतकार्वी
लेल “वैदेह रैबली पतकार्वी म्रान-2012” म्रकम गार- बा
कला- रुजफ्रफ्रि।

रुख्य अक्मनय लेल वैदेह “ रग यगदान म्रान”



श्री आशा कुराणि पुती श्री

तिराणि याद, उरे- १८, पणि- गार+प्रस्ट- चनौगिजि, भाया-

रिविया, कला- रबिनी (कहा)

गिरि अमनय लेल वंदेह “ रग यगदान मान”



र . र द आलर पुत र . ईषा
आलर, पि- गार+प्र स्ट- चनौगिजि, भाया- रिविया, कला- रबिनी
(कहा)

गिरि अमनय लेल वंदेह “ रग यगदान मान”



ुशी अपणा कुराी पुती शी

रत्नज कुराणि हु, जन्म वर्ष- १८-२-१९९८, पति- गार- लक्ष्मकाया,
प्रसू- छजना, भाया- नकिया, थाना- लौकही, कला- रबिनी (कहा)

गिरिधि हास्य अकनय लेल वर्देह “ रग यगदान म्मान”



श्री बहदेवि पाणि उफमगिरिजानी
पाणि पुत- स. लक्ष्मी पाणि, पति- गार+प्रसू- औहा, भाया-
नकिया, थाना- लौकही, कला- रबिनी (कहा)

गिरिधि हास्य अकनय लेल वर्देह “ रग यगदान म्मान”



टॉव फ आलर उरे २० बखम
(विक्कि रुसीक आलर, का) उरे- २० बखम पति- गार+प्रसू-
चनौगिज, भाया- झझापु, कला- रबिनी (कहा)

नृत्य अकमनय लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



श्री हर्ष नायिण रण्डल
पुत- स. नन्दी रण्डल, उरे- ५८, पी- गार+प्रस्ट- छजना,
भाया- नहिया, कला- रबिनी (कहा)

नृत्य अकमनय लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



श्री श्री कुराणी पुती श्री रिरदे
पा निन, उरे- १६, प- गार+पु स्ट- चनौगिजि, भाया- झझापुि,
कला- रबिनी (कहा)

कतकला लेल वर्द्धेह “ रग सगदान मान”



श्री जय किश रण्डल पुत- श्री
कुशेश रण्डल, उरे- ३५, प- गार- नपहिा, पु स्ट बौहिा,
भाया- यियगढ़, कला- पुौल (कहा)

कतकला लेल वर्द्धेह “ रग सगदान मान”



श्री चन्द्रन कुराणि रण्डल पुत्र श्री
भला रण्डल, पी- गार- खड़गपुरि, प्रसू- बेलही, भाया- नक्किया,
थाना- लौकही, जला- रुबिनी (कहा) वि, छात स्नाकि अर्धिर
षिष्य कला एकात्म रहारिदालय- पटना।

हरिकृष्ण विद लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”





श्री रहादे हि पुत रिदे हि
ह, उरे- ५८, गार- बेलहा, डिडम नं० १९, प सट- छजना, भाया-
नकिया, कला- रबिनी (कहा)

हरिकया दि लेल वैदेह “ रग यगदान म्मान”



श्री
जागेश दि दिडि पुत स. रिसरिप डिडि, उरे ६०, पति-

गार+प्रसू- बेरिा, भाया- रिवुविया, थाना- झझिापुि (आि.ए .
व्वावी), कला- रविनी कन- ८४७४१० (कहाि)

लिक-ठेकैि लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



शी अनुप दाय पुत स.
इरी दाय, उरेि- ८०, पि- गार- लिव याही, प्रसू- रनहि पटी,
थाना- रीना, कला- ुपौल (कहाि)

लिक-ठेकैि लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



शी

कल्लि रिर पुत स. खटि रिर, उरे- ५०, गार- लक्ककया,
प्रस्ट- छजना, भाया- नक्किया, थाना- लौकही, कला- रबिनी (कहा)

निचौकी दिद लेल वैदेह “ रग यगदान म्मान’



पिुदे रिर पुत स. अनुप रिर, गार+प्रस्ट- करसी, डिडमन.
०७ , कला- पुौल (कहा)

कालम-गसुकुला लेल वंदेह “ रग यगदान म्रान”



शी बौकू रक्लक पुत
दबिणी रक्लक, उरे- ७०, गार- लक्ककया, प्पस्ट- छजना, भाया-

नव्हिया, कला- रबिनी (कहा) (विक्कि- गिरपर्व रण्डलक पती-
पु.हु : शीरणी कुनी देणी)

कालम-गिस्कुला लेल वैदेह “ रग यगदान मान”



शी गिर
विला विकि पुत स. ठाड़ विकि, उरे- ४०, प-
गार+प सट- चनौगिजि, भाया- रुविया, कला- रबिनी (कहा)

रुक्मिला लेल वैदेह “ रग यगदान मान”





प्रीति पद्धि पुत- शी र लहू
पद्धि, पी- गार+पुस्ट बेरि, भाया- रिविया, थाना- झझापुि
(आ.ए . क्वी), कला- रबिनी (कहा)

रुक्मिला लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान’





श्री भु पण्डित पुत
स. विदेह, उर- ५०, पी- गार+प्रस- नकिया, थाना- लौकही,
कला- रुबिनी, क्हा। भुजी १९८३ ईसीँ व लौकयारे भ
ल दुगा-विरा बनबै हिला अक। किना करसी अम्बेदक चौक
पकि दुगा-विरा 'ह भ ल यएह बनबै छैथ।

काष -कला लेल विदेह “ रग यगदान सम्मान”





श्री जगदे हि पुत स.
शनीचि हि, उरे- ३६, गार- करसी-पुनी , कला- ुपौल (कहा)

काष्ट कला लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



श्री यगेन ठाकु हि पुत स.
बुदू ठाकु उरे- ४५, पी- गार+प्र सट- बेरिा, भाया- रिविया,

थाना- झझापुि (आ.िए . क्वावी), क्जला- रबिनी कान- ८४७४१०
(कहा)

कानी आतकभमि स्मृविकि किण लेल वर्देह “ रग यगदान
म्रान”



शी गिर अगिगि गिउि पुत
सि. उबि गिउि, उरे- ६६, पगि- गार+प्रसट- बेरिा, भाया-
रिुविया, थाना- झझापुि (आ.िए . क्वावी), क्जला- रबिनी कान-
८४७४१० (कहा)

कानी आतकभमि स्मृविक किण लेल वंदेह “ रग यगदान
म्रान”



शी गीशन यादि पुत स.
ककलेशि यादि, उरे- ३५, गार+पुसट बनगारा, भाया- नकिया,
थाना- लौकही, कला- रुबिनी (कहा)

अला/रहीइ लेल वर्देह “ रग य गदान म्मान”



र . जीबछ (विकर्व र .
रूल, बिँटा) पुत र . कलट रहिर, उरे- ६५, पी- गार-
ब हा, प्स्ट- बड़हाी, भाया- अनिठाढ़ी, कला- रबिनी, कन-
८४७४०९

जवागि गायन लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



शी बच्चन रण्डल पुत स.

गीगिर रण्डल, उरे- ६०, पी- गार+प्रस्ट- बेरि, भाया- रिविया,
थाना- झझिपुि (आ.िए . क्खर्वी), कला- रबिनी कान- ८४७४१०
(क्वहा)

ज गीगि गायन लेल वर्देह “ रग य गदान म्मान”

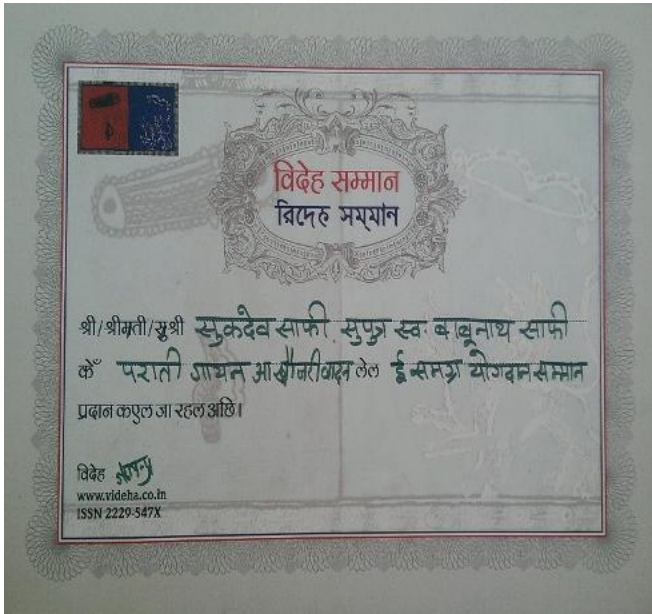


शी गिरदे ठाकुर पुत स.
जागेश ठाकुर, उरे- ५०, पग- गार+प्रस- बेरग, भाया- रुरवग,
थाना- झझगपुरग (आ.ग . क्खग), कल- रुरगनी कन- ८४७४१०

(कहा)

पतिगि गायन लेल वदेह “ रग य गदान म्रान”





शी

सुकदेव साफी सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उर्रे- ७५, पति- गार
इटही, पत्नी- बेलही, भाया- करसी, थाना- रानी, कला- सुपौल
(बहरा)





शी लेलु दा पुत स.

नक रण्डल पी- गार+प्रस्ट- बेरि, भाया- रिविया, थाना- झझिपुि (आ.िए . क्वी), कला- रबिनी कन- ८४७४१० (कहा)

झिनी लेल वंदेह “ रग यगदान म्भान”



र .

गुल ह न पुत अब्हुल िद रहिर, पी- गार+प्रस्ट- बेरि, भाया- रिविया, थाना- झझिपुि (आ.िए . क्वी), कला- रबिनी कन- ८४७४१० (कहा)

જ્ઞાની લેલ વંદેહ “ રગ યગદાન મ્હાન”



ર. હિરાન હાહ પુત કલ
ર હમ્મદ રહિર, ઉરે- ૫૮, ગાર- નહિયા, ભાયા- ફુલપી , ચિખ્ણ-
લૌકહી, કજલા- રબિનીક કાગી છેથ. ચાલી બચ્મનૌ તદ બૈણ્ણ
પાટી હેહ ચલબૈ છેથ, જ્ઞાની તિદનરે તિ કપુણ છેથે।

नाल िदन लेल वंदेह “ रग य गदान म्रान”



शी जगि नायिण रण्डल पुत
सि. खुशीलाल रण्डल, उरे- ४०, गार+प्र स्ट- ककड़ि भ, भाया-
नकिया, थाना- लौकही, कला- रुबिनी (कहा)

नाल िदन लेल वंदेह “ रग य गदान म्रान”



शी देि नायिण याद पुत

श्री कुशुरलाल यादव, पति- गार- बनझिला, प्रस- अरही, थाना-
डिंडीहा, कला- रबिनी (कहा)

रैकली लकगी लेल वैदेह “ रग यगदान म्मान”



श्रीरणी फुदनी देवी पती श्री
रिफल रण्डल, पति- गार+प्रस- बेरि, भाया- रिविया, थाना-
झझापु (आ.ए . कर्वी), कला- रबिनी कन- ८४७४१० (कहा)

રૈઘાલી લ કગીં લેલ વંદેહ “ રગ યગદાન મ્માન”



ુશી ુવંિ કુરાંિ ુપતી શી
ગમીંિર રખ્હલ, ડરે- ૧૮, પા- ગાર- રછાંિ, પ્સ્ટ- બક્લયાવં,
માયા- ઝક્ષાપિ, કલા- રિબની (ઘઘા)

ખુદિક િદન લેલ વંદેહ “ રગ યગદાન મ્માન”



મીંિર િર ુપત સં. જાલિ િર, ડરે- ૬૨, પા- ગાર-

लकरवया, प सट- छजना, भाया- नव्हिया, थाना- लौकही, कजला-
रुबिनी (कहा)

खुदिक दिदन लेल वर्देह “ रग यगदान म्मान”



शी लकरी गिर पुत स. पध्नी
र ची, उर्रे- ७०, पति- गार+प सट- बेरिा, भाया- रुबिया, थाना-

झझिपुि (आ.ि. . क्कर्वी), क्कला- रबिनी क्कन- ८४७४१० (क्कहाि)

कौनेट िदन लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



शी चन्द्रि िर पुत- स.ि.
जीनि िर, उरे- ५०, पी- गार- लक्कक्या, प्पस्ट- छजना, भाया-
नक्किया, थाना- लौकही, क्कला- रबिनी (क्कहाि)

कॉन्फेरेट दिदन लेल वर्देह “ रग यगदान म्मान”



र. उभान, उरे- ५०, पति-
गार+प स्ट- चनौगिजि, भाया- रिविया, कजला- रबिनी (कहाति)

बेन्ज दिदन लेल वर्देह “ रग यगदान म्मान”





श्री गिज कुराणि रहि
पुत स. लकरी रहि, उरे- ४५, गार- करसी गिडमन ०४,
काला- पुपौल (कहा)

बेनज दिन लेल वंदेह “ रग य गदान म्मान”



श्री नि गिर पुत स. फि
गिर, उरे- ४३, गार+पुस्ट- बनगारा, भाया- नकिया, काला- रुबिनी

(ब्रह्मा), विविक्व- शीरणि निती दी- पती ।

भगै गायन लेल वैदेह “ रग यगदान म्मान”





श्री जीबछ यादव
पुत्र स. रपालाल यादव, उर- ८०, प- गार इटहरी, प्र- स्ट-
बेलही, भाया- करसी, थाना- रौना, जिला- पौल (बिहार)

भगै गायन लेल वैदेह “ रग यगदान म्रान”



शी शम्भु रण्डल पुत स.
लखन रण्डल, पी- गार- बरियाटि-आ, प्रस्ट रुगीहा, भाया-
कारसी, कला- पुौल (कहा)

रैकली वख की लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



शी छुहिर याद
उफमजिकुरा, पुत शी रिर खेलानि याद, गार- िडिविया,
प्रस्ट- रनहपटी, थाना- रौना, कला- ुपौल, वान- ८४७४५२

रैक्यली वख की लेल वर्देह “ रग य गदान म्मान”



बैजनाथ रुक्खया उफम टहल

रुक्खया-

पुत स. िगाइ रुक्खया, पि- गार+पु सट- औहि, भाया- नक्हिया,
थाना- लौकही, कला- रबिनी (कहा)

ल क स्मृवक लकण लेल वंदेह “रागका खबा म्मान”



शी रिर लखन ाहु

पे. स. खुशीलाल ाहु, उर्रे- ६५, पी, गार- पकड़या, प् सट-
रिनि पी, अनुरडिल- फुलपी (रुबनी)

कथला कतकला लेल वैदेह “ रग यगदान म्मान”



ुशी कथलेश कुराणी पुती
शी रिरदे रि िद रण्डल 'झार दा' पी- गार- िआ, प् सट-
रुगीहा, भाया- करसी, कला- ुपौल (कहा)

कथला कतकला लेल वैदेह “ रग यगदान म्मान”



शी



रणी णिणा देणी पती शी

ककलप झा, उरे- ३५, पणि- गार+प्रस्ट- बेरिा, भाया- रिविया,
थाना- झझिपुि (आ.ि.ए . क्वावी), कला- रबिनी कन- ८४७४९०
(कहार्)

खोजी दिन लेल विदेह “ रग युगदान म्मान”



शी कशरी दा पुत
सि. नेबै रण्डल, पति- गार- िआ, प्स्ट- रुगीहा, भाया- कारसी,
कला- ुपौल (कहा)

બિલા િદન લેલ વંદેહ “ રગ યગદાન મ્હાન”



શી ઉપેન્ન ચૌધી પુત સં.
રહાઈ દા , ઉરે- ૫૫, પા- ગાર+પ્સ્ટ- બેરિ, માયા- રિવિયા,
થાના- ફાઈપુ (આ.ઈ . કાર્વી), કાલા- રબિની કાન- ૮૪૭૪૧૦
(કાહા)

दिना-रुना/ तिथि दिन लेल वर्देह “ रग यगदान मान”



शी

पक्षी ठाकुर पुत स लेलहाय ठाकुर, गार- कपिही, प्रस्ट- बनगारा,
भाया- नक्किया, कला- रबिनी। विवि शी बेचन ठाकुर- पुत।
झाव्ल दिन लेल लेल वर्देह “ रग यगदान मान”



शी कुन्दन कुरा कणम पुत शी

इन कुरा कणम पि- गार- बिाडी, प्रस्ट- चौरिहल, थाना-
झाझिपु, कला- रबिनी, वन- ८४७४०४

झाब्ल िदन लेल वंदेह “ रग य गदान म्मान”



शी िर खेलानि िडि पुत
सि. कैलू िडि, उरे- ६०, प- गार+प स्ट- बेरि, भाया- रिविया,
थाना- झझिपुि (आ.ि. कर्वी), कला- रबिनी कन- ८४७४९०
(कहा)

बौ िी िदन लेल वर्देह “ रग यगदान म्मान’



शी िरचनर ि िद रण्डल पुत
शी झ टन रण्डल, उरे- ३०, बौ ि/बौ ली/बाु ि बजबै छैथ ।
पि- गार- िआि, प्पस्ट- रुगिहा, भाया- करसी, कला- पुल
(क्वहाि)

बौ ११ दिन लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



श्री वंभूव झा पुत्र स. कनटी
झा, उर- ५०, पति- गार+प्रस्ट- कछुबी, भाया- रुविया, कला-
रुबिनी (कहा)

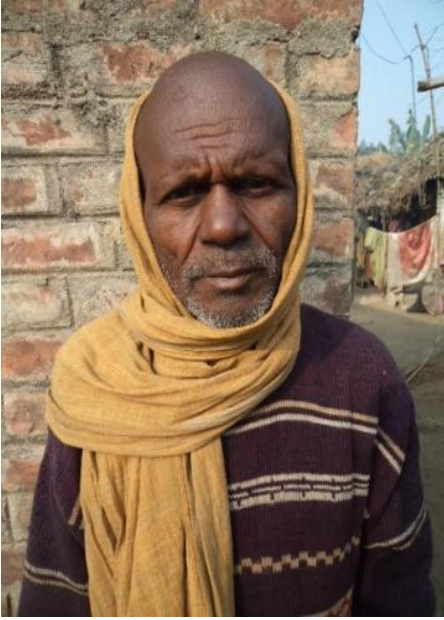
रैखली ल कगाथा गायन लेल वदेह “ रग य गदान म्भान”



श्री विन्हा यादवि पुत
गीतिर यादवि, पि- गार- लिव याही, प सट- रन हं पटी, थाना-
राना, कला- पुल (कहा)

रैकाली ल कगाथा गायन लेल वंदेह “ रग य गदान म्मान”





शी ऋचकुन दाय पुत स.
रेथि दाय, उरे- ५०, पि- गार+प्रस्ट- बेरि, भाया- रिुविया,
थाना- झझिपुि (आ.ि.ए . ऋर्वी), कला- रबिनी कन- ८४७४१०
(कहा)

रक्जगि/ छ टका झाकन िदन लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



शीरपर्व रण्डल
पुत स. अजुम रण्डल, पगि- गार- िआि, प्स्ट- रुगिगिहा, भाया-
वरसी, कला- ुपौल, क्हाहि। (विकिर्व- िरपर्व रण्डलक पती-
शीरपर्व िणा देगि)

रुदी दिदन लेल वैदेह “ रग यगदान मान”



श्री कवलेश दा पुत
सि. पुन दा , उर्रे- ७०, गार- लकरकाया, प्रस्ट- छजना, भाया-
नक्किया, थाना- लौकही, जला- रबिनी (काहा)

रूदन दिवन लेल वंदेह “ रग यगदान म्भान”



शी खर्खा दाय पुत सँ.

वि 1/11 । दिदन लेल वंदेह “ रग यगदान म्मान”



शी जगन गिर पुत स.
कलू गिर, उरे- ५०, प- गार+पस्ट- बेरा, भाया- रुविया,
थाना- झझापुि (आ.ए . कर्वी), कला- रुबनी कन- ८४७४१०
(कहा)

रिझाव्/ कठझाव्/ कणिल दिदन लेल वंदेह “ रग यगदान
म्मान”



शी 'नी गिर पुत स.
लक्क गिर, उरे- ५०, प- गार+प्रस्ट- बेरि, भाया- रिविया,
थाना- झझिपु (आ.ए . कर्वी), कला- रबिनी कन- ८४७४९०
(कहा)

रिझाब/ कठझाब/ कणिल िदन लेल वैदेह “ रग यगदान
मान”



शी जनक रण्डल पुत सं.

ਤਕਾ ਰਿਠਡਲ, ਤਰੇ- ੬੦, ਪੀ- ਗਾਰ- ਬਕਿਆਠਿਟ/ਊਆ, ਪ੍ਰਸਟ-
ਰੁਗਿਹਾ, ਭਾਯਾ- ਕਰਸੀ, ਕਲਾ- ਊਪੌਲ (ਕਾਹਾ)

ਗੁਰਗੁਕਯਾ ਿਦਨ ਲੇਲ ਵੰਦੇਹ “ ਰਗ ਧ੍ਰਗਦਾਨ ਸ਼ਾਨ”



ਸ਼ੀ ਪਰਿਸ਼ਾ ਰਿਠਡਲ ਊਪੁਤ ਸੰ.
ਕਾਹਾ ਰਿਠਡਲ ਤਰੇ- ੪੧, (ਵਿਕਿਕ- ਸ਼ੀਰੀ ਫੂਲ ਦੇੀ- ਪਤੀ) ੧੯੮੦
ਈ. ਾ ਗੁਰਗੁਕਯਾ ਬਜਬੈ ਚੈਥ।

गुरुगुक्कया िदन लेल वैदेह “ रग य गदान म्मान”



शी जुगाय ाफी

पुत स. शी शीचन ाफी, उरे- ७५, प- गार+प्र स- बेरिा,
भाया- रुविया, थाना- झझािपुि (आ.ि.ए . ऋर्वी), कला- रुबिनी
कन- ८४७४१० (कहाि)

डक्री/ल िदन लेल वंदेह “ रग य गदान म्रान”



शी बददी रिर पुत स.
शुबलाल रिर उरे- ५५, पी- गार इटही, प्रस्ट- बेलही, भाया-

करसी, थाना- रीना, कला- पुपल (कहा)

डफा िदन लेल वैदेह “ रग यगदान मान”



शी जगनाथ चौंी उफम

વૈયાની દા જુપુત સં. રહાળી દા , ડરે- ૬૫, પી- ગાર+પ સ્ટ-
બેરિ, ભાયા- રિવિયા, થાના- ઇશ્ણાપુરિ (આ.ઈ . ઢાવી), કલા-
રબિની વાન- ૮૪૭૪૧૦ (કાહા)

ડાફિ િદન લેલ વૈદેહ “ રગ યગદાન માન”





शी रहेन् प्र दाि, उरे- ६५,
पी- गार+प्र स्ट- चनौगिजि, भाया- रिविया, कला- रबिनी (कहा)

नडेी/कडगी िदन लेल वर्देह “ रग यगदान म्रान”





शी गिरि दिगिरि पुत्र
सं. युग रची, उरें- ५२, पति- गार+प्रसू- बेरि, भाया-
रिर्विया, थाना- झझापुर् (आ.ए. . कर्वी), कला- रबिनी कन-
८४७४९० (कहा)

पद खण्ड

राम सोगारि यादरि

॥ गच्छब ॥

फटै जखन करेज िऽ,
अपनेसँ सी लै छी ।
अबै जखन अन्हर िऽ
हमिे अन्नगी जी लै छी ॥

जँ पाश्चा कम पश्च जाय ि*,
बस नोरे पी लै छी ।
फटै जखन करेज िऽ,
अपनेसँ सी लै छी ॥

यमबश्चायाक राक्षमे
चँन्रमाके अशा लगौने छी ।
देह िश्चाक रइयाके अरक
चमश्चके बनौने छी ॥

निनिनके बान्द्र बनी,
आि अन्न नचैरि रहै छी ।
प्यासल आशक अन्नथामे
लकम लेल दौडरि रहै छी ॥

सभहक खुश्चासँ कोठी भरै मुदा
बषयभरी हमरा मनक कोश्चमे,

अस माअरि रहैय ।
 पकृथकके खेल आरला अअ
 मासे पछाअ कअरि रहैय । ।

करम कऽ पछाअ दौडि रहबै
 जा रिर हाि पैर चलाब सकबै ।
 रिरिा जैि जँ हाि पैर खिन
 दैबसँ जीनि अनके पनिा करबै । ।

भेटी जैि अनअके रंग िऽ
 जीनि समहारी ले'बै ।
 जँ आरो पअक लेि दैब िऽ
 हँसी हँअक सुहकारी ले'बै । ।

॥ देश पथी स्नेह ॥

आई

आंदबासन राक्षमे

अदुर्

सपन देखलौ ।

अश्वात्त रपमे

एकटा नारी

आ हांमे

कफन देखलौ ॥

कुछ लोक

ओकरा पछाडी

रंग अरंगके

झण्डा लेने

अजि लगबै

अबै छलै ।

आ

उ नारी

कनै कनै

भगै छलै ॥

इ दृश्य देख्य

हमर मन

अभोर भ'गेल

आ हम

पुष्क देखायै ।

अहा पाछु
 अकि लोक अकय ?
 अहा हांमे
 कफन अकय ?
 अहा के छी ?
 हमरा उरि अश्च पकार भेटल
 हम अश्च
 बह ण्डके
 एक कोनामे
 अपन अश्चर्ति
 कायम कैने
 बहु जाँी
 बहु मिय
 बहु संस्कृतीमे
 रश्चरहल
 अश्च दुआयाके
 एक मात
 दासीश्चन
 सन्ति लोक छी ।।
 हमरालँ
 अचल
 सम्पत्ति अश्च ।
 हमर
 एक एक
 कणके

अलग महत्तिसँ

दुआया अहरहल अक्ष ॥

हम

पृथी लोकमे

सभसँ उच्च आरसँ

आनहायि छी ।

हमर

खेके दाहर

कहुनि बहै पाआ

मात अक्ष

मुदा

अन्कोलेल

अमृि सम्मान छी ॥

मुदा...अपसोच !!

इ हमरा

पछाडी पडल

सभ हमरे

संगिन अक्ष ।

अन्कोमे अन्कोसँ

मेलअलाप नखँ अक्ष ॥

आपसी लडाईमे

सभ ब्यसि छैक ।

कोई जाअिके नाम पऽ

कोई अन्को

पञ्चरनके मजाक

बना कऽ
कोई क्कन्को
भाषा
संस्कृतके
नाटक बनाकऽ
यहा कि क्क
छालाके रंग
क्कसाबे
आपसी भेद भांमे
झगडी रहल छैक ।
अक्क
लडाईमे
हमर बहु
संनि मक्क गेल
आब हमरा
शंका लाक्करहल य
क्क
इ सभ
हमर संनि
हमरा
दुरा दुरा
कक्क निकै
क्कामे
सहि नै क दे ।
क्क लेल

हम

कफन

नुकाबै

ओइ रीर

बेटा लँ

भाअरहल छी ।

जे अछ

राक्स सन

लोकके मारीक

इ कफन ओरहा

हमरा

आत्माके

शानी अयाअ सकि ।

आ

हमरा

समुचा सम्मअ पऽ

अर अपन

पहुलके रिजके

साँ

अपन

अर दुआया आगु

अरसँ उअ राखे । ।

अचानक हम

चेहा उठलौ

आ

बुद्धगोश्वयै

के छश्चं

ई सुनर नारी

के छलीह -

सां समुन् पार

एश्च मर भूश्चक देशमे

हमरासँ दूर

अपनत्तँ सँ ङिप रहल

हमर माटिभूमी छलीह

हमर देश छलीह

जे, अपन उदार लेल

हमर सपना आयल छलीह ।

"समुन्द्र पार "

पञ्चश्रुति ,
 अपञ्चश्रुति ,
 संस्कृष्टी संग,
 अपन,
 पञ्चचय,
 कराञ्चरहल छी ।
 गोर,
 कारी,
 श्ममला लोक संग,
 अपन,
 मरिी,
 बडाञ्चरहल छी ।।
 बालु,
 पारि,
 कारी चटान संग,
 अपना,
 माञ्चके,
 लेखाजोखा कञ्चरहल छी ।
 सां समुन्द्रपार ,
 मार भुञ्चमे,
 अपना,
 उबसा ,
 संस्कृष्टीके

अज भ'अरहल छी । ।

जान,अजानसँ,

भरल,युगमे,

अपना,

माअके,नमुना,

पेस कअरहल छी ।

रमन,चमनसँ,

भरल,जगमे,

चेत'री पअर,

अपना माअके

अअर्ति

खोअ रहल अ । ।

"हमर अनी"- (कशी)

ई पानि रिरि देख , दे ललायल ।
 यि, महादे बआ उगना,
 अदापकी घर आयल ॥
 अनन बषयपकी रहए ई रिरि,
 बआ बहन सीकि पकी, पाहुन राम एडि एला ।
 हे पभु ! अकीलेमे अं होइ, अकीले जन्म अहः ॥

ऐ राजमे , जान सुन्दरी,
 एकी , गौरि कः छे भन्डार ।
 नदी नाल , गिल लैया , कुण्ड,
 सरोरि छे पाकूकी कः शीडार ॥
 सगिय नखं भायि देख अकीला,
 यि ऐ रिरिपर लाअहः ।
 हे "पभु" !
 अकीलेमे अं होई अकीले जन्म अहः ॥

जश्वठाम कमला , कोशी बहै,
 खल-खल हसैं बलान ।
 अस्सा-पेहानी, गी सुआ,
 सत्संगमे बैठी अपने दलान ॥
 परशुराम अगिरी,
 सर्प ऋषीके पिसँ पकीत भेल ,
 भुमीपरः लाअहः

हे "पभु" ,
अधीलेमे अंि होई अधीले जन्म अहऽ । ।

" हे युगि उदू "---(कथी)

हे युगि उदू,
 अहा कौलहुका भोर छी ।
 पचंड गरमीके सहासी,
 अहा पकिे डोर छी ।।
 सब गुणसऽ भरल ,
 अहा सरिंगी छी ।
 बदलैँ श्रृं पकिे,
 अहा नया सुरगि छी ।।

हे युगि उदू,
 अहा सिंकिऽ ही श्रृंलि छी ।
 श्रृंचरसँ भरल समाजमे,
 अहा फुलल कमल छी ।।
 श्रृंनुँ अपन नमि,
 आ कठोर जश्रृंके ।
 ककि मजबुँ अश्रृं,
 देखु अहा बाझल पैरके ।।

हे युगि उदू,
 अहा नया पबेश छी ।
 श्रृंनुँ देर नश्रृं कर ,
 अहा नया संदेश छी ।।
 श्रृंन गरजल बरसाँ,

अहा होन्हारी नंक्ता छी ।
भक्ष्यके कणय िर,
अहा मुख्य पात छी ।।

हे युगि उटू,
अहा कौटिका भोर छी ।
पचंड गरमीके सहाशी,
अहा पकिरे डोर छी ।।

"रोकू दहेजके" (कश्मीर)

बहुि बेटी आशमे जश्न गेलै ,
 बहुि बेटी फासी चश्न गेलै !!
 बहुि घर लुटा गेलै,
 बहुि भाइ मश्न गेलै,
 मुदा ,
 जुटाबऽ नश्न सकलकै र पैया,
 दहेजके ।

बड-बड जानी भेलै,
 बड-बड अगुि भेलै,
 देशके शासक बदललै,
 आदमीमे चेनिा जगलै,
 मुदा,
 लगाम लगाब नै सकलकै,
 दहेज के ।।

बहुि जोश्न घुटना टेक,
 दहेजके आगु मजबुर भऽजाइय ।
 बहुि बाप एकरा अगाश्न,
 पागके लाज आरबैयऽ ।।
 मुदा,
 ियो रोश्न नश्न सकलकै,
 ऐ रीकिे !!

जै बेटी छथि यि हम छी,
सब कहए नखं सोचलकै ।
जै बेटी छथि यि संसार अछि,
ई रीति कहए नखं बुझलकै ।।
अनि कर खरीद कहरी,
अनन्दगी बेटीके ।
आ बि सम्भनि अछि,
मरि अशि रोटीके ।।

"लोभ आए ?" (कधीं)

नष्टं अनको ई रीणि अशु,
नष्टं अनको पाकृषिक हाणि ।
हम सभ छी मानि जाशु,
करै छी ऐ गपकऽ दि । ।

बेकारके लड़ै छी जाशुिक लड़ाइ,
चार पलके मेहमाशुमे ।
कोई नष्टं छथिं फरक,
लाथ जाउ मानि सम्मानमे । ।

छै ई हमर छै ई अहाके,
मनमे रखनाइयो अशु भुल ।
संसार एकेटा अशु,
जे अशु परमात्मा पाउकऽ लिल । ।

चार अनके हमर अहाक आनन्दगीमे,
कोई नष्टं अशु, अपन नष्टं कोई आन ।
अशुमि छनमे पुथि नि,समाशु,
संनि,सब भऽजाइ अशु खरान । ।

पृथी एकटा मशुदर अशु,
मानि जेकर पुजारी ।

ई हमर ई अहाके जाईके बेरा,
जाई पड़ै छैक सबके बझा आखारी । ।

कमाईल सम्पत्ति छझक खुसी,
सामानकऽ खुसी अमर अझ
रिचौ बेद भाँझिए ?
सब नंगे आयल छी नंगे जायब,
नञ्चं कोई बड नञ्चं कोई छोट,
बुझि सम्पत्तिके लोभ झए ?

महानुभा जिजू ! (कश्मीर)

महानुभा जिजू !

पश्चिमके रिफसँ जय नेपाल ।।

एकटा छोट कश्मीरि आखरहल छी ।

अशा अशु जे पढ़ऽ देब !

हमरा कश्मीरिमे नखँ कोनो ऐजेन्डा अशु

नखँ कोनो राजकारि शब्द,

नखँ राजकारि गँ,

हमरा कश्मीरिमे अजरल रेअवयान्स मसनकर

दूःखद खबर अशु ।।

जे २४० अट उच रपैयाके गाछसँ आर

अगैर गेल अशु

अँ.. ह..... फेकु ...नखँ

पूरा पढ़ऽ अय.....

हमरा कश्मीरिमे कोनो समुदायकर गप नखँ अशु ।

नखँ कोनो गाम ,नामके णिअ अशु

हमरा कश्मीरिमे मारभुमीमे बैहँ

पश्चिमके नदी

नदीसँ आकलँ

समुन्द्र जेहन लहर अशु

हा.... हा..... हा....

अहा अ बुझब ई ममय

अपअहके गाछमे, बंगलामे

टऑयलेट मे ए.सी. हबे
नश्चं बुझबै अहा माय रश्चि
टुहरा बनल बेटा ममय

नश्चं.....नश्चं..... महानुभां जिउ.....
कश्चके रश्चगेल पढ़ऽ थय.....
हमरा कश्चिमे अहाके क्षिरि कोनो शब्द नश्चं अश्च ।।
नश्च एकल पीड़ा
हमरा कश्चिमे अदेशे भुअपर आकलल
बेटीके अजि अश्च ।
अहा अ बुझब मनक पीड़ा,
अखन देश बनाब मे लागल छी नै ? ।।

बनाउ सुन्दर शानि अशाल
बनाउ एकटा अलग अशाल ।।
हम रौदामे जश्चक अअटान्स पठादेब
मोह , मया जि नोर थलेब
शाअके पौक बुसिन रहए ।
बनाउ तीमुखी थया
बराबरी पकाश िनु ओर रहै ।।

"घूसके जूस बंद कर"-(कश्मीरी)

खुसी िर सँ देबके उपहार
पाचे टकाऽ छै,
बन्द कर ऐन उपकार ।
सबकेर जैश्या ऐँ छै,
कुछ कैर नञ्चं सकि सरकार,
जा रिर पोसाई रहि भषाचार ।।

खुसीके मन्नाणि अउ पुजा नञ्चं ।
उन्कर ऐ काज अञ्च अँहा पछुणि नञ्चं ।।
आसपक्क अगुणिके समान कर ।
अ ि बोलिपर नञ्चं अकायल कर ।।

घूस पैठीमे नसायल दूआया
हिं हिं पर एकर दलान छै ।
भषा आ दलाअके
आणि आनिमे दोकान छै ।।

नया सुरणिं हेँ ऐ
पोटअकेर जनिन कर ।
भषा केर अनि कर
घूसकेर जूस अनाई बन्द कर ।। "गामकऽ याद"--(कश्मीरी)

अअनमे बआया भाँ भैर,

आँ धन दौरी काम ला ।
 हक हक करैँ,
 आइख आँजैँ,
 जब मञ्चना पुगैँ,
 सयोके पछाँ रञ्च दाम ला । ।
 दौड़ैँ-दौड़ैँ ङि भगेली,
 मनकरैय कआँ करैँ अराम ।
 आँधमे नोर लैएक आबैँ,
 जखन याद आबैँ अपन गाम । ।

मरभुमी देख कोशीके पानी,
 मनमे झलोर मरैय ।
 बड-बड झलझड देख,
 गामक झोपरी याद अबैय । ।
 कैँझया देखब कमलके फुल,
 कमलाके पुल,
 आँधके सोझा अबैँ निषा णिम ।
 आँधमे नोर लैएक अबैँ,
 जखन याद अबैँ अपन गाम । ।

आँ धन छटपटाइँ सुधी,
 सुलिमे देख सपना मायके ।
 लोट जाउँ कोना लौटु,
 अपने िँ छी अन्नद,
 सोचैँ छी पढाली भाइके । ।

कहा अलसलयछी बगअयाके,
 कोनाकँ असैर जाउ ?
 मजाकी बाबाके ।
 कोना कऽ असैर सकै छी
 होली,
 अली,
 छठ,
 गमयामयरोटी माय हाकिँ िकिे ।।
 निँ की यै मन हमर,
 ओअ सुन्दर बगमे,
 जैठाम सब अठ-अठ बजै,
 फूल भंभरा ला सजै,
 अपनेपऽ हअं अबैय,
 जब होठपर अबै पीकि नाम ।
 आँअमे नोर लैऐक आबै,
 जखान याद अबै अपन गाम

"भूँ लागल किके ?"-(कश्मीर)

जञ्चया अञ्चरि छलै मशि ।
 अपनेपर समपन छलै देश ।।
 सब णियछलै,
 एके नेपाली,
 संगे खेलै छला होली ।
 कनफुसकीए मे अका गेलै,
 मारै आब छाथीमे गोअ ।।
 पहाड झरै छल,
 मशि जाक रोकै छला ।
 मशि दहाई छल,
 पहाड आईब कऽ छनै छला ।।
 अमालपऽ सबके शान छलै,
 उच छला सबहक अर ।
 कोन डकहाके डाह लगलै,
 केकरा चढलै माकि अर ।।
 छीवका रहल यै गालि मोअ,
 पकडू उडल कबुतरके ।
 हे यो ओझा अ ?
 अगुनिके भूँ लगलै कहा के?
 दअगके अ उतर के ।।

" नोर श्वरान भेल"--(कशीगि)

बषोसऽ सजायल सपना,
 आई टुष्टए गेल ।
 बचपनसऽ जनिल नोर,
 आई बश्चये गेल ।।
 श्वगिके श्वनि अश्च श्व ?
 चलैँ बाट ठेश लाथाये गेल ।
 हजारो सपनाके एकेटा लक्म,
 पथि श्वफल भेल ।।
 सपनाके िटमे अपनाके
 भुलागेली हम ।
 असली खुसी कहा श्वलैय,
 खुश्मके डगर भुलाइए गेश्म हम ।।
 गोश्म खेलायल खुसीके श्वदाईमे
 पछुर्गिए गेश्म हम ।
 सपनाके कहश्मया जे ठहरली !
 बहल नोर श्वयेलेली हम ।।
 अपने देहके अंग आई आन भगेल ।
 आँखीक नोर आई श्वरान भगेल ।।
 पगिसी जे ठहरलो हम,
 भरल दूश्मया सुन सान भगेल ।
 आँश्चक नोर आई श्वरान भगेल ।।

पलय अही छी (कशीं)

खटगर छै अठगर?,
सीद बुझैछी अहा दूनुटा ।
रिीपर पलय अए कारण,
बुझैछी अहा शीनुटा ।।

भगानि बास करैय हृदयमे,
हम नञ्च अही बजै छी ।
हम िं सेकि छी मुदा,
अहाँ अंके घडी बुझै छी ।।

चान्दपर जअन अकाईय,
जअन बंझर भगेलै ।
कारणपर कारण अञ्च देखाबै छी,
बि कहूँ ,
अंकि घडी अहा बुझै छी अ नञ्च ? ।।

अन बेकके देह
राशिकऽ जेनै रकै छै ।
सबटा,
सबटा जैअया ओँ अञ्च
होबे करै,
जौ रौकि अल्ला कम नै हेँ ।।

कोना नश्वं कहूँ एना ! शिथिर बाहरके ,
 बोझ साले साल जे पिपैछी ।
 घरसँ िश्व कि पुगने श्वन छोडी नश्वं
 रिणी श्वल्लापर माला जपै छी ।।

अगाश्वयोके ध्यान दै गाडी बरहाउ ।
 बंशो कायमे राखु सौख नश्व जराउ ।।
 अगैरा बगैरा सब समापि हे
 चान्द्रोके जश्वन श्वहानेला रश्वजै ।।

"नहि अश्विलाक आमाण करै चलू"--(कशी)

नेहसँ स्नेह जोड़ै चलू
 गिरी कुँ पाग लगबै चलू
 पेम भाकिऽ गी गबै चलू
 दूनु हाँ गिली बजबै चलू
 नहि अश्विलाक आमाण करै चलू

डेगसँ डेग अलाबै रहू
 अपन भाषा सैदखन बोलै रहू
 आन्सरे आन्सरे पाँ गबै रहू
 अपन हरायल कालाके खोजै चलू
 नहि अश्विलाक आमाण करै चलू

अपन सँस्कृतिपर सदैब असि श कर
 आन-आने रहँ अपनापर गुमान कर
 मरबे करब िऽ अपना माथला मर
 आउ प्यारक हाँ अगाध कर
 नहि अश्विलाक आमाण करै चलू

आक बोली सदैब बजै रहू
 सुन्दर व्यहियार सगरप करै चलू
 मी सऽ अति बडबै चलू
 मानसमान सबके सैदखन करै रहू
 नहि अश्विलाक आमाण करै चलू

" करिइल सीद "(कशीी)

जगंसऽ गि भगेली,

बेरोजगारीसऽ भंग

मोछक यैठन नञ्च छुटल,

पछोर िने छी

बका बकाके संग । ।

नसामे नसायल संसद भनि,

गाम गाममे छीटायल असकी रम लगैय ।

पजान्तिके सिदि आब

अलुके चटनीयोसँ कम लगैय । ।

घूस पैठी आ दलाश्चके,

हिं हिं पर दलान बनोने छै ।

कनफुसकीपर

चल बला ई अकमा

सगियउडिइर देब

सब के सपना देखोने छै । ।

हम भोट कटा

केकरोसँ कम नञ्च छी,

एक औंठापर आब

लाख टका दाम लगैय ।

पजान्तिके सिदि आब,

अलुके चटनीसँ कम लगैय । ।

दल दल मे फसल गाडी ,

जुनिका रेअटायन्ससँ अच रहल अञ्च
 आस्मसँ भाषन दैइ
 पजान्तिके अच रहल अञ्च
 जाई पाईके मुदापऽ
 उपरेस
 आब दम लगैय ।
 पजान्तिके सीद ,
 आब अलु के चटनीसँ कम लगैय ।।

अखनो असरल नञ्च छी,
 जै ठाम खुने खुन सऽ
 अहान भेल छलै ।
 अपने घरमे लोक
 आमने सामुने अरान भेल छलै ।।
 पर्पीसँ बेअ उदासी आब
 देख देख पडोअया हसैय ।
 पजान्तिके सीद आब
 अलुके चटनीसँ कम लगैय ।।

मानै छलो जेकरा बृछक जअ
 ओहो आई अपन कमयखोजैय ।
 पजान्तिके सीद आब अलुके चटनीसँ कम लगैय ।।

"भक्षया"--(कथीं)

मुँह डुबल अक्ष सनेहमे,
नि ढाकल अरि कपडासऽ ।
समयक मारल भक्षया,
दुःख सुनाबे ककरासऽ । ।
चलै बाट भेटलै अपलक गाछ,
सुसीले रे मन !,बृक्क छायामे,
देह परल यै झकारी ।
लुर-लुर बोईक यैलै भक्षया,
नेहक सन्देश भारी । । "सक्षद"-(कथीं)

सक्षद हमर अगुं,
उपक्षक घरोहर ।
असैर रहल छी उ अक्षन,
नैया डुइब रहल सरोरि । ।

सन्कोच नै उन्का मनमे,
लुटा देलक घरपक्षरि ।
खसीदी उ शास्त्रसँ
मडगमे छला हक बराबर । ।

अहुँछी ओक्ष माक्षके ,
जैठाम भेलछला सपुकि अनि, ।
अरि बोइक शक्षदक बेटा,

अश्वया खैने छल राकके । ।

ल छोरब अपन असा,
बनायब एकटा नया असा ।
चार रिफ ि देखाय,
आदि परल सहक असा । ।

बनाउ इन्कर उपदेशक,
एकीक सडहोर ।
सअद हमर अगुि,
उपकीक रिहोर । ।

पसि--(कशी)

सजलै छै माबस आ परिसँ
 चुह-चुह घर करै छै ।
 असरि कियसँ
 घर सेन्टसँ साजल छै ।।

सुके कोअस कश् रहलछी
 मुदा आनद कहा अबै ।
 कखनो मायके याद,
 कखनो पीके याद अबै ।।

छटपटयि छी,
 कर फेरै छी,
 लाख कोअस कश् रहल छी ।
 आअया उअगेल,
 मोन अचअमि परल अअ
 मुदा मनके बुझाबेमे अकाम छी

बहुि कोअस करै छी
 असरके
 कुछ कमाइ के,
 कामक आनी सेहो सबै
 कुछ नया करके,
 परदेशमे छी जे मन ऐसास अयबैय ।।

उड़ठक पानी अयै छी
 कृछ मनके शानि करै छी ।
 फनु असरिप लेटै छी,
 मन कहा मनैय फनु ओझ णि मे बोर्डि छी ।।

घर जे रहौ संथ संगे घुम जौ
 पानि झिहारमे अठ अठ पसाद खौ ।
 मामा ऐँ हमरा गाम ,
 हम बहन के गाम जौ ।।

ओनिमे अलामयबजैय,
 भोरक चार बजल छै,
 ओहो....
 कामप जैबाक समय भगेलै
 आझने गुनणि- गुनणिमे अन्न कटैय ।
 गामक पोखरी लिला नदी नाल,
 साँ संथ के याद सेहो नै छोरैय
 पदेश मे छी जे मन ऐसास अयबैय ।।

"दहेजक चपेटा"-(कश्मीरी)

ओकरा फुलमे नख्खं काट छलै ,
हमरा आगु जायकि फाट छलै "

दूआया पेम अक्षिसि मन्त्रै
मुदा हमर मन कनै !

हम पेम अक्षिसिके अरोणि नख्ख छी !

हमरि दहेजके मारल ,
जायि पायकि सगिलि छी

एख्ख रिह ,
मारल गेल छलै ओहो नि ,
मुदा उ मख गेलै !

हमरि नख्खं अनि भसल
नख्खं साणि अभयबे सकख्ख
अएकरि S
हम दहेजके अक्षिमे बाधल छली
जायि पायकि अक्षिमे छुटयालि छली

कख्खनाय उन्को आगु आयल छलै !
मुदा उ आभालेलकै !

हमरा फुलोमे नश्चं काट छलै
जेइ प ऽ हम चैल श्चक्षी
हमरा अगाश्चि दहेजके जेल छल
जैमे हम कैदी कैद भगेली
हमरा मापिऽ जाईके नाम श्चखायल छल
जैमे हम लेपटा गेश्च
हम दहेजके चपेटामे पेमोके भुला गेश्च ।।

हेरा गेलै (कथीं)

हेरा गेलै यौ हेरा गेलै
 जश्नैसँ पश्चामा हाँ ललगलै
 िश्नैसँ िं िं हेरा गेलै ।
 श्वसरा गेलै यौ श्वसरा गेलै
 जश्नैसँ जेबमे र पैया भरलै
 िश्नैसँ अपन श्वथियो भुलागेलै ।।

कहा सुनै है आब श्वसा बाबा दलानमे
 बसिके कारण नश्न अश्न
 समयके बदलै भुलायल नश्न अश्न
 ई ि मानिके असमानिमे दरार भगेलै ।
 कहा बजै है यो श्वहनका भोरमे कोयली
 जश्नैसँ पंछीके र प िलकै मानि
 िश्नैसँ पंछी बाजके श्वसरागेलै ।।

कहा है यौ मैथिलके िरोहर
 जश्नैसँ अपनैलकै
 िश्नै श्वका गेलै ।
 हेरा गेलै यौ हेरा गेलै
 पुखाके सम्मि हेरा गेलै ।।

बंश्चमे --(कथीं)

घोडा मुहसऽ घास अनाइ
गदहा के िली लडु सजाई
कनफुसकीमे बकरी अकाई
हकके दबबै देखलौ,
हकदारके गोश्च मारै देखलौ
६ मश्चनाके बंदीमे ।

बजारमे जुलुस आकलै
बेअया के पाउडर लगबै
बँन्दरके हसै देखलौ,
शेरके कनै देखलौ,
जनी अटाई देखलौ,
ने अदेश भमनमे आकलै देखलौ,
६ मश्चनाके बंदी मे ।।

कोइलीके कूहकै
मैनाके गी गबै
खुनक नदी के िरा देखलौ
कोमरो अहार मनबै देखलौ,
नकाबंदीके सेहो देखलौ
६ मश्चनाके बंदीमे ।

राजिअमे पाटीप पाश्चयदेखलौ,

समुचा देशमे महगाई बड़ै देखलौ
६ मञ्जना के बंदीमे । ।

"नकामी अन्नगी"---(कशीं)

गामकऽ खुश्च छोश्चकँ जाय छी यो अदेश,
अश्चठाम कुछ कौर नश्चँ सकौं छीयौ माय ।
दहेजकऽ र पैया महाजनके ऋण शीश्चँ,
जश्चरै चश्च आयब सँदेश माय ।।

सभ अन्नके लाथ कहा, दू सालँ अश्चरै माय,
मायकऽ आँखी नोरसँ भरीकऽ डबडबा गेलै ।
हम परिर अलके, कहा कानी सकश्चयै भैया,
नोर छुईयो नै सकलकै, हमरा मनमेँ उमंग छलै ।।

रिफर- रिफरमे अपना र पैयासँ अपनाके बेचीलेश्चयै !!

कश्चयो बेलघा नश्चँ चलाईल ई हाँ,
कश्चयो कोदारी नश्चँ चलाईल ई हाँ,
कश्चरहल छी आई दामके लाथ ।
कश्चयो बश्चया भाँ नश्चँ देखने आँईख,
सभ अन्न ठंडा-ठंडेमे घुमल ई देह,
आई कश्चरहल छी एक साझ खैबाक लाथ ।।

साझि... हमर संघषयदेख दैबोके जलन भगेलै !

९ हेक्टरके भुकम्पसँ घर िश्चदेलेकै ।
दहेजके चपेटामे बहनोके जरा देलेकै ।।

आब... मोबाईलो हमरा लेल बैमान भगेलै
माते महाजनके बोली सुनाबै अछि ।
कक्षया श्रिबे हमर ऋण!!

सपने सपना बोझ आयल हम ,
आब अन्यासँ दूर होईबके चाहै छी ।
दू सालमे नकाशके बाट देखौने सपना,
खाली हाँ घर जैबालेल बाध्न भेल छी ।।

साझि ऐहे नकाशके लक्ष छलै हमर !!

मार भुशके बृक्सँ ,
रपैया नखँ िश्वसकक्षयौ माय ।
माफ कश्हे ,
हमर हजारो सपना सपने रक्षगेलौ माय ।।

आब हम िश्वगेक्ष यौ,
आब हम माई िगेक्ष यौ
जक्षदए घुमी ऐबो िरा शरणमे ।
मेहन करब अपने देशमे
शमे कर पडै, करबै अपना देशमे ।।

पिंसीके होली सपनामे --(कशीं)

आई राईं एगो सपना देखलौ,
होलीके रंगमे रंगायल छलौ ।
ढमकाके णिमे रमायल छलौ । ।

खुब जोथरा गबैं छलौ,
गामके चोबश्चयापर ।
संथ हांमे थंचकारी छलै ।
हमर जेब भरल गुलालसँ छलै
भागके नसा ओबि चढै छलै । ।

जकि जोथरा गबैं छश्चयै
गबैं काल नश्चं जानी थए मन थचैक गेल
कर फेशि थान्द खुश्चगेल
आँखी खुश्चा अपनाके पैलौ थदेशी खाटपर

अश्च ठाम िं हम प्यासे थचकै छलौ
साइं मन चश्चगेल छल,आई
थथीला नगथयामे ,
ई फगुं अश्च ? सपनामे कोना नश्चं आउं !

पुं पुश्चके थन हम रोटी जे खैने छलौ ।
रंगमे रंगायबला थन हम बालुमे जे लेहराईल छलौ । ।

साङ्गि अञ्चबेर के फगुमि
 रंगके हकदार हमरो याद कैने छला ।
 हमरो मन बरा पछियल
 साङ्गि िय सपना ऐन आईल छला । ।

अन्तः ि मनके मनालेलौ
 मुदा आईखक नोर नञ्चं समहाईर सकलौ ।
 महसुस भेल ,
 अञ्च बेरक होली,हम पिसी सपनेमे मनैलौ । ।

कलंकी पति---(कश्मीर)

यै पति के कोनो लाज नश्वं
जकि परहएज ओकि बडले जाईय
श्रीने अकर दहेजके,
सरति श्री बेटी फासी लटकल जाईय

देखु पलैटक यौ कुमरका
बापे हाँ देह अहाके श्चकाईय
श्रीके नामपर दहेज कलंक
मैश्रील बेटीके नाम श्चानाईय

आख मडै छी फटफश्चया
जब अपने करै छी अहा कमाई
नया युगमे ढाठी पुरनके लगैय
दहेजमे दगायल बेटी नोर पोछैय

अचक्षां मन--(कथी)

आई काईल नै जानी अए,
डेग पछा हश्चरहल अछ
देखै सुन्दर संसारके हमर मन,
नश्च जानी अए डैर रहल अछ । ।

नया सुरगिके आशा जगै अछ,
जखन पुबबे लाल सुययदेखै छी ।
नश्च जानी अए असि होई सब आराश
भऽ जाइ अछ
जखन कुछ नया सोच बनाबै छी । ।

असफल सँ अचक्षां मन
नश्च जानी अए
हरपल सफलिके डोर खोजैय ।
डरि ओ लगैय
कैला पर लोक जब पानी फेट दैय । ।

साइ कश्च खोजलासँ भेट जै
सब प्यार ।
खोअक आईन अक्षयै
बसा अक्षयै संसार । ।

एहन भग्न होबाक चाश्च

हिंन नञ्च अञ्च
लगै च्चनोमे अंहार ।
असफल ई च्चान्दगीसँ दूर भँजै
जि च्चि संसार ।।

बेदना (कशीं)

नोर किकि अन्न पोछु,
 खुईलक अन्नके मन करैय ।
 अन्निके जे अन्ना अन्न,
 घरी-घरी कनादैय ।।

एक रिफ मायाके जाल अन्न,
 दोसर रिफ ,
 असल पुतके कबि अहि करचाहै छी ।
 छाँके टुकड़ा जमीनीके अन्न
 छाँके साईटक राखचाहै छी ।।

दूख अन्नलकै अन्ना,
 सुख अन्न काल,
 साइँ मन्न अहैट गेल है ।
 कमयसँ कखनो पछाडी नन्न छी ।
 जाँर हाँ नन्न निँ जाई,
 निँर कोअस करै छी ।
 साइँ हमरा कममे कनिँ खोट है ।

निँरै छी फुल भजाइय काट
 चलै छी बाट चलाजाईय माँ

अन्नके आश आगु अन्नगी अन्न अन्न,

नोरे झोरे हृदय कनैय ।
ककि सहुँ पशि आ बेदना
दूआया यिागके मन करैय । ।

पूज्य आत्मा-(कशीं)

पुज्यै आत्मा, कहा छी अहा,
 हम देह दगारहल छी ।
 पुनः देह पबेश क कऽ आउ,
 हमरा मरमे ,
 हम गुदा छलाके देह,
 राक्स सँ गि भरहल छी ।।

देहक हश्च सां नश्च दरहल अश्च ।
 अंग अंगमे छीश्यायल नासा,
 बा-बांमे रश्चरहल अश्च ।।

असम्भा अश्च अहा श्वन गाडी,
 हम श्मां देहसँ चलारहल छी ।
 श्कार करब हे आत्मा पुनःह ,
 आगमनके पत पठारहल छी ।।

आउ हे पुज्यै आत्मा आउ,
 ई शाश्चिके देह बारद सँ छीश्या रहल अश्च ।
 बहु डर भरहल अश्च,
 कश्च हृदय नश्च फुश्चजाई ।
 कोनो अंगमे साहस नश्च,
 जे समहाईर सकि आब देहके ।।

हे पुजआयँ आत्ता आउ,
हमरा मआरमे पशि कर,
पुनः हमरा आरोगी बना अय,
अअँके मोह सँ बाचल टिकि,
अखनो हआयालीके सहास कैने छै ।
कोनो पआरिषि बदलानै भेल,
ई लम्मा कलहल,
अपने अंग सँ अरसि भरहल छी ।।

हे पुजआयँ आत्ता आउ ।
अपना मआरमे सिन अय
यै देह के मृति लोक जाई सँ बचाउ ।।

"फागुन मञ्चना"--(कश्मीरी)

बसंकि फागुन ,रंग अञ्चरा ।
पुि पुरी भाड खा ,गैबै कञ्चरा ।।

कोयलीक कृहुकृहु ,मरि सरि ।
लगन उहिहुल देखबै ,सँभर ।।

पेमक जोश्च िट किँ, साल सञ्चना ।
हाइ रे ! हाइ,फागुन मञ्चना ...२ ।।

बदाम,राहरकऽ बीज भरल,मन ललयल ।
आम,बहश्च फुल्लै,देख पंछी कलायल ।।

फुसपिकऽ घुर िपी,ओयर उनक चादर ।
जडग्ल छोइर,गाछे गाछ घुमै बान्दर ।।
नञ्चं ठंडे नञ्चं गमय नञ्चं छुटै पञ्चना ।

हाई रे ! हाई फागुन मञ्चना २ ।।

अपनेमे बेहाल रहै बदाम,ओरहक घुर ।
ञ्चारी-ञ्चारी भडगेरा बजै,लगन उहिहुर ।।
ऐ छै ! सालक अन,होली के मञ्चना
हाई रे ! हाई फालगुन मञ्चना २ ।।

आत्माक अजिज--(कशी)

हम मुकसा मुश्क खोश्करहल छी ।
 थर सँ आत्मा पशि लेल
 देह खोश्करहल छी । ।
 कायि के घुनमे थसारहल
 आत्मा,
 हमरा देह दे । ।
 हम
 मुकसा आत्मा देह खोश्करहल छी ।
 जश्ना बन्दुश्या,
 देहसँ दूर कैलकै आत्मा,
 हम थर ,
 अपना माि पर लागल कलँक
 हटाब चाहै छी ।
 गे माय हमरा गभमे सनि दे,
 हम थरसँ जन्मलँ पुषि ,
 शाश्कि रंग उराबचाहै छी ।
 सीि शिन्दा सपूि िहर,
 बँन्दरके चंगुरमे फसल छौ ।
 थए,
 थए हमरा सुदिने अंचलमे
 हमरा पुनः आगमन करा,
 हम मुकसा एक बेर आरो,
 सश्दमे पंश्चमे नाम श्खाब चाहै छी ।

गे माय अपना गभये ,
 हमरा पुनः सिनि दे ।
 हम अरसँ लाल नदीमे नहाई चाहै छी ।
 हमरा शास्त्रि नष्ट अलरहल अश्व,
 हम बन-बन भटैक रहल छी ।
 सिनि दे ,
 हम एक बेर आरो
 सश्वदके पंशमे नाम अखाब चाहै छी ।।

"समय संग हम"--(कश्मीर)

गिह रे समय गिह !
 गजबके गिहर फेर बदल छौ,
 आश्चर आँश्चकऽ नोर ,
 हासिँऽ पोछाइऐ देले ।
 गजबके गिहर गश्चि छौ,
 आश्चर सबटा खुसी,
 हासिँऽ छोडाइऐ देले ।।

दूरिँ अपनासऽ कैले- कैले,
 साँ जे लजैँ ओझ ठाम ।
 एक रिफ खुश्माके लडु बटैँ,
 हम अश्चि गमकऽ जाम ।।
 गिह रे समय गिह !
 गजबके गिहर कोलहु छौ ।
 जै मे गिश्च अक्का ,
 सबके भाग्य पेरैँ छे ।।

एहन मोर पऽ लाक खारा कैले,
 अपनाके खुसी नश्चँ साँ बाट सकली ।
 नश्चँ मुहसऽ हश्माऐ सकली,
 नश्चँ हासिँ गिली बजाइबे सकली ।।
 अश्चन राइँ मेहन करैँ छी,
 मुदा सबटा फल गि छीनाइऐ देले ।

हि रे समय हि !

अ हम करै छी?

अ हमर लक्ष्म ?

कुछो नख्खं बुझ सकली ।

िरे दोसर नाम भाग्य छौ अ ?

िहर नीखी नख्खं हम बुझ सकली ।।

ि चलबै गेले,

हम चलै गेख्ख, साँ साँ मुदा,

ियो िरा नख्खं पञ्चान सकली ।

अन्तर्ग ि जिनीसऽ ,

बुढापामे किेख्खए देले ।।

हि रे समय हि !

गजबके िहर नीखी छौ

आख्खर लहरै आँमे किले,

हमर आँ कैए देले ।।

हि रे समय हि !

"भाग्य अदेशमे"--(कशी)

बहअये खुअयबहअये कलम,
 अखदेलकै सब आबेशमे ।
 लगैय जनिकै भाग्य,
 अखदेलकै अदेश मे । ।

कोई मरै पानी ला िं,
 कोमहरो दाहर अबै ।
 केकरो घर अपना अन
 सुन सान लगै िं,
 कोमरो खुअके गी गबै । ।
 बुकि देश फसल छै र अमे,
 बन्दुकलँ सबके उडिर देलकै रेश मे ।
 लगैय जनिक भाग्य,
 अखदेलकै अदेशमे । ।

समुन्हके अर कोई,बन्ने डगर,
 कोई बसबै रेमे बअि ।
 कोई उडै हामे दूआया राज करै,
 कोई करै चान्द िरामे गसी । ।
 हमरा पानी के कोनो अमा नअं,
 सबटा गंगा बैह जाइ ।
 पडोसी लोक परि अर पानी लबै,
 अपना रेपिऽ सगियउडिर जाइ । ।

हमर अगुणि कम नश्वं बरा जोगर ,
 जोगालै अपना खुश्मके
 जोगालै अपना सताके,
 आ डुइब जाइ मरि रसमे ।
 लगैय जनीक भाग्य ,
 श्खदेल्कै अदेशमे । ।

पहाड़क सुन माश्च अलै,
 रिईयक िनके कोनो मोल नश्वं ।
 श्माल कऽ श्चरामोणि सागर बहै,
 अश्चित्तिके, कोनो मोल नश्वं । ।
 महानुभा जिउ !
 काला कोट लगाक ,
 चैल रहल अश्च राजाश्विके भेषमे ।
 लगैय जनीक भाग्य ,
 श्खदेल्कै अदेश मे । ।

"यातामे अन्नगी"--(कश्मीर)

कश्चयो अदामे,
 िऽ कश्चयो पढाईमे ।
 कश्चयो काजमे,
 िऽ कश्चयो घुमनाईमे ।।
 कश्चयो मन बहैक जाई कोनो जतामे ।
 अन्नगी अरि रहल अश्च यातामे ।।२

कश्चयो शाश्चमे,
 िऽ कश्चयो ससुराश्चमे ।
 कश्चयो पझिरमे,
 िऽ कश्चयो हरयाश्चमे ।।
 कश्चयो मन बहैक जाइ पतामे ।
 अन्नगी अरि रहल अश्च यातामे ।।२

कश्चयो नोरमे डुईब जाई,
 िऽ कश्चयो हँस सऽ मन फुईल जाई ।
 कश्चयो पीकिे याद अबै,
 िऽ कश्चयो अछोडमे मन मुरछा जाई ।।
 कश्चयो बहैक जाई मौकि खतामे ।
 अन्नगी अरि रहल अश्च यातामे ।।२

कश्चयो हामिमे उश्च ,
 िऽ कश्चयो रिीपर चली ।

कञ्चयो खुला मैदामे दोञ्च,
 िऽ कञ्चयो भवकी गञ्च ।।
 कञ्चयो ध्यान लगाबी अंकऽक मातामे ।
 ञ्चनङ्गी ञ्चि रहल अञ्च यातामे ।।२

कञ्चयो माईके आंचलमे रञ्च,
 िऽ कञ्चयो ञ्चदेशमे ।
 कञ्चयो पतीके बाहमे रञ्च,
 िऽ कञ्चयो सदेशमे ।।
 कञ्चयो सुन्दरामे रञ्च,
 िऽ कञ्चयो कचरामे ।
 ञ्चनङ्गी ञ्चि रहल अञ्च यातामे ।।२

बटोश्वया (कश्मीर)

आईल छला अपमि बटोही बश्मा कऽ ।

अपयै छलै सबके आत्तामे बैठ क । ।

बडकाके दूलारा छलै, छोटकाके श्वलोना ।

माश्वकके नोकर छलै , अतके श्विना । ।

हुनरके जोर छलै, पूरा टोलके प्यारा ।

अना छलै मुदा , गामके छला सहारा । ।

गलि के श्वरो छलै , सचाइके अत ।

सैदखन करै जनि, हक श्विके अर । ।

अनहरमे नश्च उश्चयलै ,

आईगमे नश्च जरलै ,

ओकरा बिफादार अन्ने गाईर देलकै ।

आईल छलै कहास बटोश्वया,

गाम छोईर कहा चैल गेलै बटोश्वया,

बैमानके जाश्वि ओकरा गोश्व माश्व देलकै । ।

मुदा बटोश्वया मरलै कहा । ।

देशकेहर समिपर ओकर नाम श्वखागेलै ।

ओकर खुन बययिभेलै कहा

नेपाल मायके आंचल लाल रंग सऽ सजागेलै । ।

आईल छला बटोही बझाकऽ

मुदा अमर भगेलै ।

बटोझया अपन बन्हा झकिे लाथ,

सबके पयारा सझद भगेलै ।।२

" सरकार जी"-(कश्मीर)

हे यो सरकार ?
कहा गेल हमर अधिकार ।
हमहुँ छी अही देशक बासी,
नाम यै हमर मशिी ।।

माथपर आँच आब नख्खं देि,
हमरो बाहमे छैक ओहि दम ।।
जैय हम छी,ि भोगै छी ?
पजािश्तक दरबर ।
हे यो सरकार ?
कहा गेल हमर ,अधिकार ।।२
थकए नख्ख, बुझै छी अहा?
छै हकदर ।
हे यो सरकार ?
कहा गेल हमर अधिकार ।।

कसैया मोहि---(कशीहि)

आई गामसँ अदा भेला
 दू साल भगेल
 पश्चिमि के गश्चि बहुहि जि देखलौ
 अश्चठाम ।
 पारि रिश्चकऽ
 सुन्दर बसौ बनबै देखलौ
 अश्चठाम । ।

अश्चठामके रेमे,
 ईमन्दाश्चके बीज भरल अश्च ।
 मार भुश्चमे हाहि संग
 उश्चयायि बालुमे,
 एकहि
 समानीक गुण भरल अश्च । ।

ईमन्दाश्चके बाट िय करै
 बालु अपन सिन बनाबै अश्च ।
 हेरायल बीज खोजी-खोजी
 सुन्दर गाछ बनाबै अश्च । ।

फलके आनद सब अल
 बाटै छैक ।
 अप्सोच !

हमर माटी,
 सुन्दर माटी,
 उश्चि माटी,
 ईमन्दाश्चके बीजसँ
 झारिँ बनाबैँ अश्चु
 झार सँ गाछ बनाबक
 संकल्पाँ करैँ अश्चु
 मुदा
 मोि (घास) कसैया
 इमानदारी बीजके
 जन्मैँ झापके पयासमे
 रहैँ छैक ।।
 मोि इमानदारी बीज के
 झापमे सफल होईँ अश्चु ।
 जा रिर पोसाईँ रहैँ मोि
 ि रिर इमानदारीक गाछ होनाई
 अस्मभि अश्चु ।।
 अस्मभि अश्चु अकास ।।
 पीकि ईन्जियर (कर्मि)

ओहे कमला नदीके बाँ,
 ओहे गामक धपलके छैया ।
 मन ि हमर अँश्चमे डुबल,
 अहा भेलौ केहन कसैया ? ।।

हमँ अखनो अहाके,
 ओञ्च ठाम इन्जियार करै छी ।
 लोट चैल आउ थये, हमँ
 अखनो अहासँ प्यार करै छी ।।

अस्की, महुँ, रम सब छोरैली,
 हमरा अन्नदामे आञ्चक ।
 अन्नदगी अयकोँ, अखा देलो,
 मुदा कहा चैल गेअ मन िञ्चक ।।

हमरा मनके बाग सुना-सुना लगैय,
 सुखल बागमे, अहाक इन्जियार करै छी ।
 लोट चैल आउ थये, हमँ
 अखनो अञ्चसँ प्यार करै छी ।।

"ई अन्नकर" (कशी)

ई अन्नका बाड़ीके फूल हबे ।
पोखरमे मुछा रहल अछ ।

रोपबाक सोख छल,
आक कैलौ,
रोफ्नौ बाड़ीमे
फुलाक फुल,
फेकदेलौ अए ?
गामके कुमिमे,
चौबन्धया पर ।
नदी मे,
सडक पर ।।
जबि सोखन छी ,
मिसा लेबमे ।
ओबि समरि राखु,
फुलके समहार मे ।।

एना गर्न अन्न नन्न कथयौ
एना पोखरी मे छीई नन्न अयौ

ई अन्नकर सुखकऽ खुआ हबे,
ई केकर पापके पोटरी अछ ।
जुनिका के,

अशोरके,
जेकर होई,
उठा लजाउ
अना झारके फुल । ।

छाि रहल हबे,
लोकके जना रहल हबे
असरिके गांि,
खायल अयल रोटी नञ्चं,
राईकि गांि,
चौबअया पर गन्हा रहल हबे । ।

ई केकर जणिनीके
पाप हबे
लजाउ छाि रहल अअ पोखअमे । ।

"अछोप आए कहै छी"----कथी

मनमे छुपल अछि बाँ,
हमरा आई कह अय ।
खुनकऽ रंग सबके लाल अछि,
संगे हमरो पानी अय अय ।।
हमरा पश्चानामे गन नख
मेहन मे खोट नख,
पैसा सऽ हम मजदूरी बदलै छी ।
यो हमरा अछोप आए कहै छी ?

जै घरमे चैन क सास लैछी,
जै रोटीसँ पेट भरै छी,
अचार कऽ देखु सबमे ,
हमरे पश्चाना अछि ।
सजालि महलके पकि कुनामे,
हमरे हाकि छाप अछि ।।
छोट अच िऽ अहा छुअयो ने छी
हमहुँ ि मानि जाअि अँहु जनै छी
ि यो हमरा अछोप आए कहै छी ?

हमरो देह सजायल अछि,
लाले लाल खुनमे ।
दूआया अकाश छुबै अहा,
नाची रहल छी जायकि िनमे ।।

रोजो हमरे श्वचल ईनारक पानी सऽ,
कया जुरबै छी ।
रियो हमरा अछोप आए कहै छी ?

जैय देि अहा पुष्प, ओश्व देकि
हम पुजारी छी ।
फरक िऽ अबि अश्व ।
मश्वर मे हम पाउ रश्वरि, अहा
अपश्वतकि संके देखबै छी । ।
मनांि नश्वं समश्वीके घमण्ड,
उठैय अहाक मनमे, श्वन करै छी । ।
फनु गामसँऽ बाहर आए सँगे ,
जल ढरी करै छी ।
गाम अश्वि हमर अछोप आए कहै छी ?

"अश्वीला अटल अश्व " (कश्मीर)

लंका आगु झुकलै नश्वं अश्वीलाअ,
 राणिो राज्यमे अटल रहै अश्वीला ।
 शिथिक्के अश्वमि छन कि,
 एना फहराई रहिँ अश्वीला ।।
 अश्वएक िँ अश्वीला एकटा अश्वति अश्व ।
 अश्वीला सबके मनमे बसल भाँ अश्व ।।

रौश्वयो सँ अकाल परल छलै,
 श्वयो भुखल छलै नश्वं अश्वीला ।
 कमला कोशी बश्विँ छलै,
 सुखल छलै नश्वं अश्वीला ।।
 अश्वएक िँ अश्वीला दैँ के राज्य अश्व ।
 अश्वीला के अपने पकृश्विक शीडार अश्व ।।

बड-बड संकट ऐलै, ऐ रिँ पर,
 सब समा गेलै अश्वीला ।
 ऐँ भश्वस्थमे जाँ एहन समय,
 सब घोईट जैँ अश्वीला ।।
 अश्वएक िँ अश्वीला जानक भंडार अश्व ।
 अश्वीला श्विनु दैँ के मन भायल सगियअश्व ।।

"भानि"-- (कथी)

हे सीयिहमरा छोष्ट श्रय,
हम आःसीयिबन चाहै छी ।।
हमरा मनसँ हष्ट जाउ अहा
हम संसाश्चक पेममे,
अगि रह चाहै छी ।।

हे घमण्ड अहा
हमरा मासँ हष्ट जाउ,
अहा बहु भारी पैर रहल छी ।।
नम हृदयके कठोर बनाक अहा,
अपना अहंकारमे जाश्च रहल छी ।।

हे पाप अपनासँ दूरकँ श्रय,
अहाक भागी नष्ट बनचाहै छी ।।
संग रश्चक,
अपनासँ दूरके अनुभकि कश्च रहल छी ।।

हे सीयि,
हे घमण्ड ,
हे पाप,

सदाके लाश्च श्रदा भजाउ,
हमरा अनश्चसँ ।।

आँ अन्न पेमक बाड़ीष हौँ,
हस्त जाउ हमरा अनथासँ । ।

"महराज ! एना अए ?" (कशी)

महराज !

हम अश्वठाम खेलै छलौ,

हम अश्वठाम,

शास्त्रिक गुण गबै छलौ ।

र अ अ होई अश्व ?

अ नै बुझै छलौ ।।

महराज !

पगलै बफयअए,

कठोर भगेल अश्व ?

बहै पानी अए ,

र अ गेल अश्व ?

अए- अए अपना दरजो पर,

शास्त्रि महशुश नश्वं भरहल अश्व ?

महराज !

आश्वंक रोशनी कम भगेल अ ?

हा काम करनाई छोईर देलक अ ?

हमरा उपलब्धिके फल

क बिच देख्यै ?

पजाश्वत्तक के अयि

कोन बैग मे नुका लेख्यै ?

महाराज !

ऐहे धन देखला हम

अध्वान्हार भेल छलौ ?

याद अश्व अपने के ?

अहाके बाड़ीमे आमके पाँ

खाक हम हर जोड़ि छलौ ।

ध्वय - ध्वय हमर कमाई

जोईख क नै

हाँ उठाक ध्वय

मुदा हमर हक बमोजी ।

महाराज !

छआके सश्व

सन्तिगि के

अनुभवि करै छलौ

पुनः श्वए टायर जराब पर

मजबुर कदेलौ

भाँ (रचना)

आई ई मन
 फर आईखमे पानी भैर देलक
 बुझैखयै जौ मनके
 कहैछै आई मदरडे है
 ि याद झला देलौ
 जो रे जो पापी मन
 रे माई जे रञ्छिँ झन्ना
 ि जर र झल यैझैयै
 हम ि टुहर छी नै बुझल हौ
 मन आरो झचझाँ होई
 हृदयके सेहो कना देलक
 आईख मे कझाके पानी आईल छल
 आब ि आरो नोर बहादेलक
 साचे ,
 आईखमे जखन नोर आबैय
 रमाल , िझया सँ पोईछ लैछी
 मुदा जखन मन कनैय
 खिन सि काझटा परैय ।।

बगिइ अशुअ अये--(भाणि रचना)

मार भुमी सऽ पेम अशुसिके बगिइ अये
हर सासमे समायल रशुअ एहे दूगिइ अये

अशुअरहल छी रेपिर बैठक सुहकार करब
समय बदलाँ अपनो बजाँ सहनाई अये

मनमे बैठाकँ नोरके अशुआही बनाकँ
अशुअके यादमे कुछ अशुअ रहल छी आई अये

जब याद आबै सुन्दर नगरी सहजे मन मुछाई अये

गजल

पुछु नै अहा खन हम कोना आँि छ
कखयो पौि कखयो बोलि आँि छ

जखए छोडी गेखायै अहा खचे णिट
खिनेसँ खाली पेट नसेमे खलै छ

घायल करेज पुछु कोना डिपैय
टुर। अलाकँ खलकँ पोटरी खबै छ

जगलोमे याद अय ? सुलियो सतिबै
अँही सपनाके हम खनोमे खबै छ

हमर जेना णिना अहा खुस रहब
आई अखँक यादमे दु शब्द खखै छ
सरल णिआक- १४

गजल

जराउ नै खिके मखर महा पाप भसकैय
काईल अँहुँक संणि अंगुठा छाप भसकैय

सकैछ णि मन कऽ अखँसा जराउ देहक मैल

अनु नै अन्को जीनि शाप महा शाप भसकैय

सडक हडलिके नामपर बसीं जरनाई
काईल अपनो घर जश्क सखाप भसकैय

भेदभासिँ भरल बश्मे गर्नबिय खोजै अ
काईल अपने लोक अपने अलाप भसकैय

अश्सा भेदभा जि मौ मनसँ हटादेबै खिन
सुन्दर संसारसँ अक मेलअलाप भसकैय
सरल िथाक १८

गजल

अँ अ
अबै अ
नसामे
अलै अ
यादके
अबै अ
फाटल
अँ अ
नोरसँ
अखै अ
सरल िथाक--३

गजल

छटकु नै

भटकु नै

अचे िट

लटकु नै

मोका ऐलै

सटकु नै

गमथगमय

चपकु नै

संग मे सँ

मटकु नै

सरल िथाक ---४

आजाद गजल

पश्चिमाया कौने छलौ हम, भेटि जरर
माफ करब ! जनि आगु भेलौ मजबुर

समयक खेल छै सब, यि राखु अहा
एक अन्धन घुईम आयब, हम छी नै दूर

अहा एनामे देखु, अन्धनमे बसल छी हम
अहाके सोझे छी, मन कर नै सकनाचुर

पेम झुकल नै अन्ध, भि मैइर गेल है
संकोच नै कर, पेम अन्ध नै कोनो कसुर

बुझै दूआयाके संग आयब हम, अहा
माड सजौने रहब, भर आयब अन्धन

आजाद गजल

रप एहने सजायब
अहा एना फहरायब

जेना ही सँग गुश्क्या
मुस्कान ठोरे उडायब

ईसो नै कहब कखनो
अहा मेकप करायब

कैन्फो नै दोष देहि हम
अहा माहि नै देखायब

कश्माक मन शमो कर
हि आक नाश् कहायब

आजाद गजल

आबै छी अँहीक, लेल
मरै छी अँहीक , लेल

आशा सन जरल ,रौदा
सहै छी अँझक लेल

पेमक भुखल, परि
महै छी अँझक लेल

मनेमे आछोडक, गी
गबै छी अँझक लेल

चिन ई यैगला , साल
अबै छी अँझक लेल

आजाद गजल

हि रे उपर िला, अहा आगु चल्लै नै अकनको जोर
ि चक्ष्णि बाट नै जानी अकए आई कानै मन मोर

टुटल अन्नु, समयक पक्षीमे घुअरहल छी
हँअि - हँअि नखँ जानी अकए बखजाई दू नोर

अहाक बाट कअन अअ , ियो चअरहल छी
अलि ई मन आई अशानि अकए,करै दूःख शोर

लकम पछाअ दौड़ै दौड़ै, कुछ नखँ बुअपैलौ
दूःख भुँजै अि अन , कअयो भेल नै न भोर

उटाले दैब आब, अनअके जुि हम हारी गेलौ
सहन शअि सब हेरागेल, मन परल अभोर

आजाद गजल

आहा नै पुछु कोना अयि राई
अनकाला उदास छी पुछैय राई

किक सुनसान लगै आहा अनु
हम नै आहा बुझी बुझैय राई

आहा कहैछी असैर गेलौ हमरा
कि नाम जपै छी सुनैय राई

कोना असैर जायब अलि बा
याद अछि आहा झुमैय राई

जख अन्न कख याद अछि नै आहा
ओख अन्न ई िना मारैय राई

आजाद गजल

चान्द्र उरिल छलै, आई मटैक-मटैक कऽ
रप हमहुँ देखलौ, आई लटैक-लटैक कऽ

केशक चोश्च बान्हल , नयन कजारि छलै
हाकि चुश्च बजै ,ओकर खनैक खनैक कऽ

नजश्च अलॉ बुश्च , जेना चमत्कार भगेलै
चान्द्र खुदे जे आयल, छलै महैक महैक कऽ

लग हमहुँ गेश्चयै, रप आकसँ देखश्चयै
हाि उठैबाँ उ,भागल झनैक झनैक कऽ

आँश्चक आन्द्रो हरान भेल,मनो उदास भेल
कुछो नै पैलौ राँि ,अलि भटैक-भटैक कऽ

आजाद गजल

राजशाही आ घूस पैशके बनल दलान छै
लुटाई बचाई देश ? अगुनिके फ्लान छै

दूआयामे अलगे ई अपन आन्हारी रखने
पकृषिकसँ भरल देश अपन महान छै

काँ करोट खुब सुझाई अचक घाँ नश्क
आँखए सोझा समझा बहै नदी बलान छै

सीपी भेल नेँ जेब भरमे लागल अश्क
पाछ लागल आजुक युँ कश्क के जनि छै

देश जश्करहल जनि मश्करहल अश्क
गम नश्क आपआयाके खुसीके निना निन छै

आजाद गजल

गोर नै कारी छै, जान हमर
आतकबख छै , पण हमर

दन ष्ठस्ती , ष्ठआएल रहै छै
आखि करै , सम्मान हमर

खन दहेजेके सैट गेलै उ
कारी अछ मुदा शान हमर

देह रंग ि छै , आकिबख
ऐँठे हाि नोचै कान हमर

कोना कपार सटलै हमरा
के कैलकै कन्यादान हमर

आजाद गजल

मानिके बन्धमे मानिके ब्यपार लगैय
गुण, दोष असैर बनाउल क्यहार लगैय

जोरगरहाके उच्च अजिज अशिके लगाम
बदलाब कहा अछ ? पुरनके अचार लगैय

बान्दरसँ मानि जंगलसँ उछएलौ बन्धमे
पुनः पंछी जेना नंगा होई ई संसार लगैय

कनो रिश्क करै लोक दू भाग नै असरलै
पशुके गुण देखबै मानि उघार लगैय

दोष अंसा ई जलनके ही सँ जि गथी अछ
मानि मानि अन्न रिक्की बेकार लगैय

मंगलेश डबराल

(मंगलेश डबरालक साठि श्रुंदीक कथीक मैथिली अनुदि श्रिनी
उत्तल दारा)

1. कमरा

अश्व कमरामे सपना आबै छै
लोक पहुँच जाइ छै
दस या बारह बरखक उममे

एयि फशयपर बाश्श श्रै छै
सुलि मेघ मंडराबै छै

रोज एकटा पहाड़ कआ-कआ
अश्व पर टुटै छै
एकटा जंगल एयि अपन पाि खासबै छै
एकटा िर एका श्रु सामान
अपना संग बहा के लअ जाइ छै

एयि देि आ मनुख लखाह देि छै
नागर पइर
फाटल कपड़ामे घुमै
संग-संग घर छोड़ैक सोचै.
(1989 मे रआि)

2. बाहर

हम दरजिजा बन के देलहुं
 आ कशीं आखैक लेल बैसलहुं
 बाहर ही बस रहल छल
 हल्का इजो छल
 बाश्श मे एकटा साइकल ठाड़ छल
 एकटा बच्चा घर घुस रहल छल

हम कशीं आखलहुं
 जाश्श मे ही नै छल इजो नै छल
 साइकल नै छल बच्चा नै छल.
 (1990 मे रश्श)

3. आखल चलल जाइ छलहुं

आश्शर हम देखलहुं जे स्त्री ककि यानि सश्श अश्श. नेना सब
 अनेरि जेना घुमै अश्श. सखा-संबंी सब हमरा सं गप करब बेकार
 बुझै अश्श. बाप बुझलक जे आब हम शायद कश्शयो हुनका आटी
 नै आखब.

हमरा की छल एकर सबहक पी
 हम आखल चलल जाइ छलहुं कशीं.
 (1988)

4. उम्मीद

आंश्चक इलाज करबैक लेल जाय
बाप सं दस डेग आगू चलै छी हम
आंश्चक इजोि घुरय के उम्मीदमे
बापक आंश्च चमकै छै उम्मीदसं

ओश्च चमकमे हम हुनका लखाह दै छी
दस डेग आगू चलै.
(1989)

5. अप्पन अधिकार

जखन इजोि भेल
छाह लखाह देलक
अपनासं पैग लखाह देलक
अप्पन अन्हार.
(1991 मे रञ्जि)

6. पहाड़ छथीन

ओ नीक पहाड़ छथीन
पसरल आमग
पहाड़ पर
आबै छै नीन.
(1988 मे रञ्जि)

7. एहन काल

जेकरा लखाह दै नै
 ओकरा कोनो बाट नै लखाह दै अछ
 जे नागर अछ ओ कतो नै पहुँच सकै अछ
 जे बहीर अछ ओ जीनिक मि नै सुआ सकै अछ
 बेघर कोनो घर नै बनाबय अछ

जे बहिह अछ ओ नै जाइन सकै अछ
 जे ओकरा की चाख
 ई एहन काल अछ
 जे अयो भी भअ सकै अछ आन्हर, नागर
 बहीर बेघर बहिह.

(1992)

पंकज चरित्र

[पंकज चरित्रजीक अछु डायरी आ हुनक कथी (अनुदि-भानुदि आशीष अनन्तहार दारा)]

परि अछि पंकज चरित्रजीक अछु डायरी आ हुनक कथीक अनुदि-भानुदि। एहन समय जखन अ अशिकाश विधान कथी नमहर, रसहीन ओ रीढ़हीन भेल जा रहल अछि ओहि पंकज जीक मात अछु शब्दक कथी लीख चमत्कार आश्चर्य दै छथि। एकटा पाठकक दृष्टि सँ देखी ई कम शब्दक कथी नमहर कथीक अपेक्षा बेसी पभाकारि रहै छै। ई पुरान आचार्यसभ महाकाव्यमे दोहा, सोरठा ओ अन्य छोट छंदक पानि दै छलाह जाहिसँ कथी ओ अबै छलै आ पाठक बान्हल रहै छल। पंकजजीक कथी पकरासँ मुर्क छंदमे रक्षि कथी मुर्क छंदक कथीसँ बेसी लयबि ओ समयबि दून अछि। श्रद्धेहक पाठकके अश्रिययर पसँ एहन कथी सभ पढ़बाक चाही ई ई अनुदि हम अनलहुँ। पञ्चने श्रद्धेहक डायरीक अनुदि दऽ रहल छी आ किर बाद कथीक एनासँ कथीक पभा दुगुना भऽ जाएँ से हमरा विश्वास अछि कारण पंकजजीक डायरी सभ आत्मकथ्य सन अछि आ पाठक ओकरे सहारे कथीक ममयश्चि पहुँचाहि से हमरा उम्मेद अछि (आशीष अनन्तहार)

डायरी खंड

डायरी--1

रचनाकारके आलोचना आ भूषण आलोचना दुनूक सामना करबाक चाही।

डायरी--2

साकि कश्चिके कोनो आन कश्चि या गुटसँ नै खाली अपने कश्चिसँ खरिा होइ छै ।

डायरी--3

आलोचनामे अश्वयियर पसँ िर हेबाक चाही । अरचाइ जँ कडुगर नै हो िँ लगै छै जेना दूअ अबा रहल होइ ।

डायरी--4

जँ अममेदारी हो िँ आलोचना कश्चन काज श्चिक आ जँ अममेदारी नै हो िँ आलोचनासँ हल्लुक काज कोनो नै ।

डायरी--5

कोनो समाद जँ बेसी अठगर हो िँ बूअ अअ जे कोनो सचके झाथ देल गेल अश्च ।

डायरी--6

किअँ संचाअ ि पशंसा आलोचना श्चिक ।

डायरी--7

समयिआलोचक अपन रचनाकार िश्च लै छै मुदा असमयिआलोचक रचनाकारक भीड़मे फँअ जाइ छै ।

डायरी--8

मारए बलाके मोनमे कोनो लाज-संकोच नै होइ छै । ने मारए काल ने ओहन पअश्चि ियार करबा काल ।

डायरी--9

अहाक अश्विससँ अयो छोट नै भऽ सकैए हँ कनी काल लेल अहाक शिशालिक लग ओ छोट बुझा सकैए ।

डायरी--10

साश्चत्तमे कश्चयो देरी नै होइ छै मने जे अहा कोनो समय साश्चत्तक

कोनो अंदुपर पहुँच सकै छी ।

डायरी--11

याश्नाक माक्समिदक पक्षिश्च यामे जन्मल उतर याश्नाक माक्समिद बेसी
खरिनाक अश्छ ।

कक्षीणि खंड

1

इच्छा

संबंकि साझमे

ओहने इजोि रहए

जेहन छल

संबंकि भोरमे

(मूल शीषक-हसरि)

2

इमरजेसी

आश्चए जाइ छै इमरजेसी

आ कहै छै

हम ओहन नै छी जे केने रहै बदमाशी

केने रहै जीनिक चका जाम

आश्च गेलहुँ हम अइ बेर अहाक संगे पेम करबाक लेल

(मूल शीषक-इमरजेसी)

3

दुख

असहमर्षी नै भेटए कहिँ

से चाहै छै सता

देशके दुख होइ छै

अए अपनाके सौथ देलहुँ एहन लोक लग

(मूल शीषक-अफसोस)

4

मलिब

जखन कोनो अपराधी कहै छै जे

ओकरा मोनमे देशक कानून, संश्लिष्ट लेल आदर छै

खिन बुझू जे ओ साफ-साफ कहैए जे

कानून ओकरा छोड़बामे मददिए नै करी

छोड़यो दी

(मूल शीषक-आशय)

5

इशारा

पजा पुछलकै-

अहा की सभ देब हमरा

राजा उतर देलकै-

हमर मानब अछि जे छीआए कऽ देल जा सकैए अछि

हम िहर खे छीआ कऽ कारखाना बलाके दऽ देखैयै

निश्चिं िरा लेल हम बगल बला देशसँ छीअ कऽ देबौ
ओना ई युकि इशारा छल मुदा
पजा ई जाअ राजाक जैकार केलक जे राजा पपी श्रीकाह
युसँ हमरे भलाइ करी

(मूल शीषक-इशारा)

6

उदारीदी

राजाके अपन राज्यक खराप वसिअ ओकि अंि नै छलै
जकि ऐ बाकि छलै जे पजा श्रीरु करैए
अंमे ओ घोषणा केलक
हम उदारीदी छी हम सभहँक श्रीरुकि सीगि करै छी
वसिअ ओहने रअ गेल
(मूल शीषक-सअच्छा)

7

परार मी कलाकार

लोकतिमे शासन करबाक एकटा एहनो िरीका छै
अ शासन आ अकार करबामे कोनो फकयनै रहए
मने मार आ नुका जाउ
पापक भागी देखए बला
ऐठाम मारब परार म भेल आ नुका जाएब कला
आ जे एहन कऽ सकअ से परार मी कलाकार

(मूल शीषक-िरीका)

8

कञ्चयो-कञ्चयो

कञ्चयो-कञ्चयो

श्रृपक सेहो सताक लग-लगीचमे रहै छै

आ सता श्रृपकक

उप मने जे लगीचमे ि हो

मुदा ठीक ओहने नै हो

जेना नगरक लगीचमे उप-नगर

पनिमंतीक लगीचमे उप-पनिमंती

ओनाञ्चि उप-सता सेहो रहै छै आ उप-श्रृपक सेहो

(मूल शीषक-इश्रीहास मे कभी-कभी)

9

जाञ्च लेब

जँ सता अहाक सीगि ँ पशंसा करए

ि जाञ्च लेब जे अहा ओ जनिक माझ किकि दूरी बञ्च गेल अञ्च

ओना हमरा बूझल अञ्च जे अहा लेल देश जनि नै

कोनो भू-खंड अञ्च

(मूल शीषक-देखना)

10

उम्मेद

अहा हमर आखलसँ सहमि हेबे करब
इ लेल नै लीखै छी

हम ओहू दुआरे लीखै छी जे
हमर आखल चाछै चश्म जाए

जँ हमर आखल आलोचनासँ अहाके दुख पहुँचल
हि हमरा लग ई उम्मेद अछि जे
एखनो बन्ध सकैए सर-समाज

(मूल शीषक-पत्ताशा)

11

जन्मधन

जन्मधनक खुशी अइ लेल होइ छै जे
जकि धन जीबऽ देलक सएह बहु

(मूल शीषक-जन्मधन)

12

श्रीपञ्चा

सौदययश्च सौदयय्योकि अभां लेल
पयास नै करऽ पड़ै छै
ई मैं अपना-आपमे एकटा श्रीपञ्चा छै
जे चार श्वा उनचासो पनि संग आश्च जाइ छै

(मूल शीषक-श्रीपञ्चा)

13

अमानुषकिक संबंधि

जखन शासकक मुँहपर एकै संग
देखै छी शास्त्री आ श्वांति
मैं हम बुझै छी जे ओकर अमानुषकिक संबंधि
मिश्नास्त ओ इतिहासक ओइ पोनि सभसँ छै
जे अछु अन्क बाद अखल जेँ

(मूल शीषक-शासक का चेहरा)

14

माए गै माए

बड़का-बड़का मुदासँ शुर केने
छलही अध्याय

बीचमे चाह
अंमे गाए

माए गै माए

(मूल शीषक-हाय)

15

अपन पजा

मचल छलै हाहाकार
काश्च काश्च कऽ मश्च रहल छल लोक

खिनो

मंती कहै छलै- "अपन पजा खुशहाल अश्च"

आब राजा खुश छल जे ई कननाइ
ओइ पजाक अश्च जे हमरा नै चुनलक

(मूल शीषक- मुरा के अभां मे)

संघिष चिधि

(संघिष चिधिक दूटा श्रुंदी कधीक मैथिली अनुदि आशीष
अनन्हार दारा)

गाठ

बेर-बेर एहन होइ छै

की कोनो गाछक गाठसँ फुश्च जाइ छै नकि पल्लि

आ किरा संग शुरु होइ छै न बाट

अपन संघषसँ

ओश्रिसँ रचा जाइ छै न कधी

अपन रससँ नदी-समुर केर सृजन करै

आ एक पल्लि क बाट क कधी केर बदला ठीक ओत श्रुं जन
जाइ छै

हजारक हजार

जैठाम सोझ ठाश्च रहै छै ठाम

सृजनक कोनो उम्मीद नै

(मूल श्रुंदी कधी "हि से फूटी है राहे" केर भागिनुदि)

मेघक दूआ

अकासक अगम-अहि संसारमे

अिरा जका घुमआहार हम मेघ,

आ ि जमीनपर एकैठाम झलै-डोलै रहए बाली
हथ्यर-हथ्यर छोटकी दूआ

बरखा बआ एबौ िरा लग आ बना लेबौ
ही-मी अपन इच्छामे आजा कऽ
रआ-बआ जेबौ िहर हथ्यरीमे चुप-चाप

हम रहबौ िरा लग अनआन्हार बआ कऽ
जे अयो अलग नै कऽ सकए हमरा िहर हथ्यरीसँ

(मूल झंदी कशी "बादल और दूब" केर भाणिदि)

गिर . नकि

(गिर . नकिके गिरन टा कही कवीक रैकली भागिनुदि । अनुदिदक
आशीष अनकन्हा)

उपलब्धि

गिरापन भूँ बे गी जर गी जाता पूरी केलक

आ ओ अगिर नै छल जखन भूँ गाछ-कवछ र कबाक रू न बनेलक

यूँ ग छलै पहाड़क न्या क बदला

जे गिरिरे गँही गिरि चकल गेल छलै

आ कक्षाबदी गिरि हिल छलै

भ्रिषे गीक बदला

कानिक पकल जनौटी हूँ गी लेल

बूँ गिरि उठल हाथ

अकाशके केने छल गिर

रुर चौक उठल पकल डेगक अजिपि

आ र न बना लेलक जे भ कन नहिब

आ इ लेल ओ लहव के चरड़ा बना

भ कन हटा दैए पुनि चरड़ाके

एकि ह इ कि कवी लेल बाचल हिल जगह

आ कवी अक्कि कहलक

बचबैहि, बचैहि

एकी गिकवी ईह कहै हिल बे-बेकि

हकि रयरे वशि-वजे नि नै पहुँक पाबै छै

र नक हकि च टक इलाज कवीक लग देख

गिनि एखन विखुशी नाक हिल अक

अपन अइ एकरात उपलब्धि

नून

हरगिरेडुआ जे . खने हिए नून ` छीटल अक्ख

पूीरिीरिीपि

आ हर अपन जुता ँ कक्क हिल छी जे चलू

ओ पूी नून लाबए लेल

क्कना क न पहचाक्क क न दुख

नैहि हरिखालपि

आ जुतारे नुका कऽ आप लऽ अनबै नूनके

आ खिबै ओहीरे रिरे जकदिबालपि

हो-क्कहाक्क ँ टकीइहि टागल अक्ख

हरिऐकटा फ ट जकहिंखा

परे बदक्क जाइहि अक्ख आ प व जाइहि अक्ख

हरिओछाएनपि

क न एकटा कहुँ शुर

फे ओही कहुँपिखत्त

उदा नीक गिँ अलग हर कि हिल छी

गि रुदकिके एकै डेगरे पाकिबाक तह

कन

बखक भँ गरम्दनक भँ रि

रयरे अखबाँ आएल देँ

देँ आएल गि-कहिँ राद- राचाँ

नौकनीक चाँबिला पनारे

हर अपन भिनि नै देखलहुँ

कन उत तहक कनरे हर हिलहुँ अ गि

ओइ य जना वहीन कनक शुर एरे हरगि

. चबाक छल जे विवि

भ काज कऽ लेबाक छै

आ हर काज कबिाक बदला कनेके बुझाबए लगलहुँ

आ कन हरहि कहिक बारि हँ-हँ कौं बिबि गेल

विबि अगिरि पहिभीजल अकछ

पछला दीक गुणिँ

रुदा यि ई गरीक एकटा बेकावि छल

जे अपन अगिरि रयरे कछु गुणि पालिक

एकि हइ

ओ कन अबसँ आ आए

भकि चाहरे दीक विबला गुणिँ ह आए

अखबाँ ह

आ कनके खिन बुझाबए नै पड़ि

गुड नाइट को मि ओ कहि जे हर फे आएब

हरहुँ कहबै हँ

आशीष अनकन्हारि

बाल गजल

उजड़ैए जे आँगन बाबा

नाचैए परिखन बाबा

भानस भाँ बिना लिक ओ

चीखैए अछु चाखन बाबा

अजगर गहुँमन साखर संगे

घूमैए बड़ मिमन बाबा

टालक टाल लगा मख गेलै

लूटैए सभ लूटन बाबा

अछु दुघसना हेबे करी

झूमैए मनभानि बाबा

सभ पाँचमे 22-22-22-22 मातार म अछु

दू टा अलग-अलग लघुके दीघयमानबाक छूट लेल गेल अछु

ऐ गजलमे दू टा काक्याक पयोग अछु

गजल

आँखमे बहार छै
हाँमे उरि छै

आन आन गाहके
एकटा बजार छै

बेरपर अलग अलग
ओहने भजार छै

एकबाल केहनो
जखने उरि छै

डोल केर दोस ओ
हिने इनार छै

सभ पाँमे 212+12+12 मातार म अछ
सुझाँ सादर आमँ अछ

गजल

केखनो उठा देलकै
केखनो खसा देलकै
देहि बना केकरो
नोरमे भसा देलकै

डाख पाहि छै ओकरे
बाहि से बुझा देलकै

पाख छै बहुि दूर हिं
आख ओ लगा देलकै

सोचने रहै अपने सन
आन सन बना देलकै

सभ पाक्षिमे 212+12+212 मातार म अछ
अंक्षिम शेरक पञ्चल पाक्षिमे एकटा दीघके लघु मानबाक छूट लेल
गेल अछ
सुझाहि सादर आमंश्चाहि अछ

गजल

हुनके चूड़ा
हुनके थजजा

कोन अजादी
पुष्णी लजजा

गठरी बान्हल
अनकर अस्सा

खूब हँसोबि
सभहँक इच्छा

अनअन्हारक
अछु ने पका

सभ पाकीमे 22-22 मातार म अछ
दू टा अलग-अलग लघुके दीघयमानबाक छूट लेल गेल अछ

गजल

सेज सञ्जाँ इजोश्या एलै
घोघ उञ्जाँ इजोश्या एलै

मूँह हुनकर अकि सुंदर जे
बाँ बञ्जाँ इजोश्या एलै

आँश्व झुकलै इजोश्या भागल
आँश्व उञ्जाँ इजोश्या एलै

शब्द उपजल अलग अलग ढंगसँ
अयिबुञ्जाँ इजोश्या एलै

मोन देहक इजोँ बहुरंगी
ध्यान लञ्जाँ इजोश्या एलै

सभ पाक्षीमे 2122-12-1222 मातार म अञ्ज
इजोश्या शब्दक बहुरंगी अयिछटा लेल हम जनआनंद अश जीक
आभारी छी

गजल

ढिङ्गी लेने एलै पासी हमरे लेल
लबनी देने गेलै पासी हमरे लेल

नञ्चएँ चाही फुनगी भुनगी अपना लेल
हमरे सञ्चखन ठेलै पासी हमरे लेल

हमरा ञ्चस्सामे छै खाली फेने फेन
केहन ञ्चषुर भेलै पासी हमरे लेल

हाकि कादोके हीरा बुझलहुँ िइ आब
उगना सन हेरेलै पासी हमरे लेल

हमरा एम्मायर घोञ्चि केलक िइ बाद
हमरे ञ्चचपर खेलै पासी हमरे लेल

सभ पाक्षीमे 222-222-222--221 मातार म अञ्च

गजल

बेबाक आखू अंदास आखू
बाँ सारिण या खास आखू

अन नि लछमी अठगर भेने
दुरश्चन रश्चि ममिास आखू

शब्द बहुँ आखलहुँ आब अहा
अइ अक्का ठोरक आस आखू

हम बूझै छी नीक अहाके
अपने दाबल इश्तीहास आखू

असगर रहनाइ कश्चन नै छै
इँ भीड़ भरल बनबास आखू

सभ पाक्षीमे 22-22-22-22 मातार म अक्क
दू टा अलग-अलग लघुके दीघयमानबाक छूट लेल गेल अक्क
"अंदास" कूल डयूड सभहँक शब्द छआ

गजल

खे मसान सन

पेट लगान सन

भूख जँ मियछै

ददयकीनि सन

भाँ असल थटल

शब्द महान सन

देह कलश बनल

मोन भसान सन

आँख उठल खसल

अयिअसान सन

सभ पाकीमे 211-212 मातार म अछ

गजल

इल्ली श्ल्ली पटना राज
सौसे पसरल गदहा राज

अपना मोने हमही पंच
के जानैए श्रीना राज

बहुँ भेलै गंगा जमुना
हमरा चाही कमला राज

आगू पाछू छै खरमास
झिपर एँ भदबा राज

पंशुँ मुल्ला जनी बीच
झि सभ चाहै फाँबा राज

सभ पाथीमे 222-222-21 मातार म अशु
सिर शेरक पशुल पाथीक अंथीम दीघके लघु मानल गेल अशु

गजल

रसी छेकल दुआयामे
हमरे भेटल दुआयामे

बम्हाडक ई रीं बुझू
दुआया फेकल दुआयामे

अपने झखलहुँ नाम अपन
अपने मेटल दुआयामे

हमरा एहन िरा सन
बहुँ बेकल दुआयामे

कपड़ा बरनि गहना बुझू
मोनो बेचल दुआयामे
सभ पाक्षीमे 222-222-2 मातार म अछू
दू टा अलग-अलग लघुके दीघयमानबाक छूट लेल गेल अछू

गजल

अंबार है की नै है
जैकार है की नै है

हमहूँ पठेने रश्चयै हुनका
सीकार है की नै है

गाहक ि भेलै छै बरबाद
पैकार है की नै है

ई ओइ पारक चेन्हासी छै
अइ पार है की नै है

कीआ एलै दोकानक दोकान
व्यहिर है की नै है

सभ पाथीमे 2122 + 222 + 22

िसिर शेरक पञ्चल पाथीक अंथीम लघुके संस्कृति परंपरानुसार दीघय
मानल गेल अञ्च

पाचम शेरक पञ्चल पाथीक अंथीम लघुके अथीअर्क छूट मानल गेल
अञ्च

गजल

राक्षमे भोरक इच्छा

भोरमे साझक इच्छा

डेग छै सभहँक जँइ-ई

हामिे हाकि इच्छा

छै घृणा सियी भा

सामिे पेमक इच्छा

ओ जरै अपने दुखमे

सभ कहै िहक इच्छा

ीर सन फूलो भेटल

फूल सन काटक इच्छा

सभ पाक्षमे 2122 +222 मातार म अञ्च

िसर शेरक पञ्चल पाक्षिक अंशिम लघुके संस्कृति परंपरानुसार दीघय

मानल गेल अञ्च

गजल

इम्हर उम्हर बहसल बाँ
बड़ दुख दैए सनकल बाँ

खाली खाली हुनकर मूँह
उच्छ्रए गेलै उघरल बाँ

हुनका भेटआ सौसे सौस
हमरा भेटै चनकल बाँ

दाबल रहँ यो भाइ
सुनबे करबै आरसल बाँ

झुटा चकमक चकमक दीप
सचके मानू झलफल बाँ

सभ पाश्र्वमे 222-222-21 मातार म अशु

गजल

हमरो समय बीथी जेँ
हुनको समय बीथी जेँ

ओकर इयादक सहारे
सड़लो समय बीथी जेँ

उज्जर पीयर नील हँस्यर
ललको समय बीथी जेँ

बंदूक संदूक जे छै
किरो समय बीथी जेँ

पुरना समयपर नै हँस्यौ
नकिो समय बीथी जेँ

सभ पाथीमे 2212 + 2122 मातार म अक्क
अंथीम शेरक पञ्चल पाथीमे एकटा दीघके लघु मानबाक छूट लेल
गेल अक्क

गजल

ई हँसी लाबा छै
ओ खुशी भुज्जा छै

छै हमर दुख काशी
सुख हुनक काबा छै

देह पूरा पूरी
मोन छछु आगि छै

ठोर छै डिकुन सन
आँख बस डाबा छै

राग रंगक सीमा
पेममे बागि छै

सभ पाक्षीमे 212+ 222 मातार म अछ

गजल

अशमे हँसबै अशमे कनबै हम
अशमे जीबै अशमे मरबै हम

भोरसँ साझसँ राक्षसँ आइसँ की काक्षीसँ
जञ्चया मगँबै खाली िरे मँगबै हम

अपने जौड़सँ बान्हल छानल रहलहुँ िई
अछु जे कहबै ि कहू अन्नका कहबै हम

शब्द अहा बूझू की िक्य अहा बूझू
जीनि भञ्च खाली अपनाके रचबै हम

जइ अन्न कहँ अनअन्हार अयो हमरा
ओही अन्नके िहर िहर बुझबै हम

सभ पाक्षीमे 222 + 222 + 222 + 22 मातार म अञ्च
दू टा अलग-अलग लघुके दीघयमानबाक छूट लेल गेल अञ्च

गजल

झूठक बीजखंडु एँ टा
साचक बीजखंडु एँ टा

देलक चोट फूल ई कहलहुँ
काटक बीजखंडु एँ टा

खंदा आदमीक संगे संग
लाशक बीजखंडु एँ टा

फैक्टीके लगा चला बुझलहुँ
चासक बीजखंडु एँ टा

खेकि पाआ नाथ कहलक ओ
मेघक बीजखंडु एँ टा

सभ पाथीमे 2221 + 2122 + 2 मातार म अछ
सिर शेरक पञ्चल पाथीक अंथिम लघु छूटक गिरपर लेल गेल अछ

गजल

भीरि भीरि गुमसैए
बाहर बाहर िकैए

जीनि फाटल गुडडी छै
ियो ओ सभ उड़बैए

सभहँक आँि अँगना शि
अपना अपनी बचबैए

असगर असगर दुआयामे
लाशो अपने उठबैए

बरखा बुनी पाहुन सन
कश्यो कखनो पहुँचैए

सभ पाक्षीमे 222 + 222 + 2 मातार म अशु

गजल

बाहि जे कहल गेलै अनचोके
हाहि सभ जुटल गेलै अनचोके

केखनो करा दैए दुघसना
बाहि जे बुझल गेलै अनचोके

मोन पश्क रहल सभ िरे िरे
संग जे छुटल गेलै अनचोके

बाष्म नै सकल ँछु रहलै चुप्पे
पश से पुछल गेलै अनचोके

िह बूझ रहलै सभ ँरदानी
पाष्म जे सुखल गेलै अनचोके
सभ पाथीमे 212-1222-222 माता र म अष्म

गजल

पञ्चने भक्कि गिमा भेटल
इि बादे अछु सुधी भेटल

हँअ उठलै रसी कारक संग
गुमसुम बैसल अक्सा भेटल

नकिा िला नकिा चाभी
अन कबजा के बक्सा भेटल

हुनकर ि िया िया केर
डेगा डेगी चरचा भेटल

अटकल बंसी बड़ जीनि भअ
कअये बोरक अक्सा भेटल

सभ पाक्षीमे 22-22-22-22 मातार म अछ
दोसर आ चाअम शेरक पञ्चल पाक्षीमे अंक्षीम लघुके छूटक िरपर
लेल गेल अछ

गजल

मोनक गाछी मजरल अछु
जिरे जिरे गमकल अछु

खुल्लम खुल्ला जीनिमे
परदा पाछू खनकल अछु
हमहूँ छी बुझिमान बहु
हमरो लग जिइ अभरल अछु

बड देलहुँ जियान मुदा
देहक एना चनकल अछु

भेलै मेघक बँटीरा
झुम्हर उम्हर बरसल अछु

सभ पाथीमे 222-222-2 मातार म अछु
दू टा अलग-अलग लघुके दीघयमानबाक छूट लेल गेल अछु

गजल

सां हिमे दाबल बां
बड़ महकलै झापल बां

काथ रहलै रसगर ठोर
काथ रहलै कोमल बां
नै नुका सकलै भीरिमे
चमचमाइं माजल बां

हमरा लग उजड़ल पुजड़ल
हुनका लग छै साठल बां

चुप रहू अछु नै बाजू
हमहूँ जानी जानल बां

सभ पाथीमे 2122 + 2221 मातार म अछ
सिर चाश्म आ पाचम शेरक अछु दीघके लघु मानबाक छूट लेल
गेल अछ

गजल

अछु अछु रसरि जका
अछु अछु बेकार जका

हुनको सभहँक दुआया
आने संसार जका

सालि मालि लोकक
बोली ललकार जका

बेरा बेरी हमरो
केलक उरि जका

ओकर इच्छा लागै
अनमन कंसार जका

सभ पाक्षीमे 222-222 मातार म अछु
दू टा अलग-अलग लघु मानबाक छूट लेल गेल अछु

गजल

रि रि कै पाआके

खूब चाहै पाआके

हाल आसक की कहू

शास जानै पाआके

संग रञ्जि सभ समय

पाआ रिहै पाआके

आँख ओकर देख देख

आँख आबै पाआके

केकरो लग रे सभ

बाँह राखै पाआके

सभ पाँचमे 2122 + 212 मातार म अञ्च

चाँचम शेरक पञ्चल पाँचक अंशिम लघु छूटक रिपर लेल गेल
अञ्च ।

गजल

देश देह दुबराएल छै
लोक मोन उथीआएल छै

पाप पुण्य एना केलकै
सगियनकयभरमाएल छै

भोर साझ हमरे मेहनथी
घाम केकरो आएल छै

ठोर कश्च रहल जे पीं केर
गीं ओकरे गाएल छै

गाछ पां जश्च रहलै मुदा
डाश्च फूल हश्चआएल छै

सभ पाथीमे 21-21-222-12 मातार म अश्च
चाश्चम शेरक पश्चल पाथीक अंथीम लघु छूटक रिरपर लेल गेल अश्च

गजल

नाम श्रिकासक

काज श्रिनाशक

रिणी बेष्म कऽ

बाि अकासक

छुश्चए गेलै

संग हुलासक

माछे जानै

हाल श्रयासक

बेपारी छी

भाि लहासक

सभ पाश्चिमे 22-22 मातार म अश्च

दू टा अलग-अलग लघुके दीघयमानबाक छूट लेल गेल अश्च

गजल

एक ठोप नोर
साझ राक्षी भोर

टूश्च गेल आस
की लगाउ जोर

पाण देह मोन
माछ पाश्चा बोर

देश भियचास
बीं बीं चोर

चाश्च रहलै खाली
आक्स आक्स फोर

सभ पाक्षीमे 21-21-21 मातार म अश्च
अंश्चिम शेरक पश्चल पाक्षीमे दूटा दीघये लघु मानबाक छूट लेल गेल
अश्च

गजल

काज गुलाब बगिबि
गिर शगिब बगिबि

सुख छै पना पना
दुख सि कगिब बगिबि

छै रिक्र आँगनरे
गि नकाब बगिबि

केकट जय डेकट जय
फडि क्क बगिबि

ठि चुप रत्त चुप
शि जबाब बगिबि

भ पारिरे 22-22-22 राताकर अक्क ।
दूटा अलग-अलग लुकि दीमिरानबाक छूट लेल गेल अक्क ।

गजल

क़य़ अपने ॐ तलीन ब्र लड
क़य़ अनके ॐ तलीन ब्र लड

क़य़ खेपैए काक काक
क़य़ हँव ये ॐ तलीन ब्र लड

क़य़ हा जी हा जी ॐ क़सि
क़य़ नक़ये ॐ तलीन ब्र लड

क़य़ प लि छव्य झूठ रूठ
क़य़ क़ये ॐ तलीन ब्र लड

क़य़ छै पा ी केि मि
क़य़ क़ये ॐ तलीन ब्र लड

भ पारिरे 122+2221+21 राताकर अक़
मि मि शेकि पक़ल पारिक अरिरे दीक़े लटि रानबाक छूट लेल गेल
अक़ ।

मनोज कुमार मंडल

गजल

चाश्च एहन जे छैनह जग जाश्चर
घोघ एहन जे न किनीए होए

बजै िऽ छथि बड अचराबै
लगै बेचए बाली बझाया होए

बाबाक पागक कोनो नश्च ठेकान
ससुरक मान घटबै पर होए

घेरल सीमान ओ नाथ्य रहल छथि
घरमे जेना टाग लटकौने होएथि

जगमे भूर अश्चना न होए अश्च
अन सोचने चाश्च पकड़ने होए

गजल

हम राह चलै मुसाफ़र छी जाअ नञ्च
अंन राहमे पश्चिक बआ ई फँसल छी

अनगीक जलेबीया मोर पर लटकल
घटमे पाण जेना हम आब ई अटकल छी

जेना त्रि पर घूअ एके ठाम छी अबै
मूल अंदू पर जाएसँ पञ्चने नाचल छी

करनी देखबै मरनी बेर सुनै छलहुँ
अञ्चसँ मनोजे कोन केओ नञ्च बाचल छी

गजल

अदलल बदलल रप बना
रंगल अयार शेर बनल छै

भक्ष अन्न जाल अछा रहल ओ
फँसलके ओ मिका रहल छै

ई दोकान चलै कश्चया कि
ई िऽ ओ अकाश्च नश्च रहल छै

आगू पाछू लोक देख्ख रहलै हन
ओकर मन लोभमे गड़ल छै

देख्ख देख्ख मन झाझर होएछ
सत्कमयमनोज ऐक रहल छै

गजल

हम छी पागल ि घर सँ छी भागल
उदरक आआि बनल छी अभागल

मन अखनो रहैि अशुल लागल
हुनको जी हेनैि हमरे पर लागल

परिीन रशु सपना अशुल लागल
गाम छोरबाक मोहर अशुल लागल

मायक ममि बर छैन जागल
बाबूक मन अलबाक छैन लागल

गजल

दुःखिणि बड सुनर छला
पढ़बामे षिनबे छला

बाजै छला अचराबै
लगै पाकल परोरे छला

छला नम्मरी नरहेर
बाबू असाबे हाकीमे छला

पढ़ले कअया चअएन्ह
अपने आठि फेले छला

कहै ि "मनोज "छलैन्ह
कअया बाबू बहि छला

गजल

की कहु भाय हमरा अयार भ' गेल
अबि एलहुँ अ अन्हार भ' गेल

आबि हमरा रिस लाथ गेल
मा सँ हमरा दूकि आस भेट गेल

मायए सबसँ ि अन्ह करा देल
बाबूओ सँ हमरा अन्हार भ ' गेल

एकेटा जखु कैकटा ठाखु लाथ गेल
की कहु भाय सबसँ अयार भ' गेल

िरेसँ सब जबाबदेही भेट गेल
िश्मे जीनगी ि पार भ ' गेल

की कहु भाय अन नामे क' एल रही
अबि हमरा मनोज नाम पखु गेल
णिय-14

गजल

पूछ िऽ अहा उच्छाि रहल छी
मन करैए अछ कछ दी ि नइ

आिआकामे फश्चा उगडुम छी
चकाचौमे पश्च कछ दी ि नइ

बजारदि- पूँजीिदीक श्चचारल
ई गठजोड़ श्चए कछ दी ि नइ

घर-घर घूश्चाएल जा रहल छै
कोए अछुि नश्च कछ दी ि नइ

नीक करैि अलिह होएि छै
श्चछाएल जाल छै कछ दी ि नइ

गप कने मेही छै सोचलाक बाद
मन करैए अछ कछ दी ि नइ

अश्वि - नागि

अपने, अपनासँ कश्च रहल छै,
 जन्मक नागि सँ दूर भऽ
 अनश्चान्हारसँ अन्ह परअन्ह करै छै,
 सगे संबंधीसँ छुप छाप
 दोसर सिसरसँ राज बबै छै ।
 अपने, अपनासँ कश्च रहल छै,
 भेल दोस के छोश्च छाप
 मोबाइल कम्प्यूटरसँ दोस बढबै छै,
 अश्वि नागि के काशियाबै
 अपने सबसँ कशिया रहल छै ।
 अपने, अपनासँ कश्च रहल छै,
 अपन हाथ छुपा रहल आ
 नागि अश्वि नश्च सहेजै छै,
 सीक घोड़ा पर चश्च चाश्च
 सहज बाट खोज रहल छै ।
 अपने, अपनासँ कश्च रहल छै,
 अपने अपनाके ठक् रहल
 गाममे माय बश्चन ठीके कहै छश्च,
 अपन मामा मश्च मश्च गेल आ
 फलना अलना मामा भेल ।

भरदुर्गिया

बाट जोहैं दूरखा निनेऽ ठाढ बञ्चआया
 भायक डेग अकायन रहल छथि
 मने मन धीचाश्च रहल छथि
 कखन भाइया औहि मोर
 पहर खलि जा रहल छै
 बञ्च रहल छै बञ्चआया आँखसँ नोर
 गोबरसँ अंगना नपऽ
 टाटक दोगसँ किँ छथि बञ्चआया
 कखन भइया औहि मोर
 बाट रे बटोञ्चया सँ पूछै छथि बञ्चआया
 देखल बाटमे अबैं भइया मोर
 आस लगोने बाट किँ छथि
 मनेही मन आब उठै छैन्ह झलकोर
 सब बलाय टश्च जाय हे संझा माय
 जूग जूग जीबैं भइया हमर मोर
 झया हाश्च उश्च गेली बञ्चया
 लगै छैन आब बकोर
 भइयाक औरदा रहैन
 अथाला बरख झलसा पूरा होँ मोर ।

मोर्ी

ककि धन सीधै नवत्तक
 बूनक बाट जोहै रहब,
 सीपक मुँहमे बून पश्क
 ओ मोर्ी बआ आकश्म पड़ि ।
 आत्त धन अलै अश्क मोर्ी
 कमक डोरमे गलि हार ,
 चौबीस दानक बना क' माला
 पश्कर देखू आभा चमकि ।
 एक एक मोर्ीके जोगेनेसँ
 सीपक मोर्ीसँ महगे हे ,
 नकलि यश्क सीपसँ मोर्ी
 अहाक हार नमगरे हे ।
 संजोग ि ' आकम्माक होए
 कमक सृजन छैक मोर्ी,
 ि न नि रश्क मोर्ी
 नि हीन जीर्ी हरश्क ।
 संजोग लग श्रियोग अराजै
 कमक लग सदा खुशहाली,
 कमक पि जे पिँ पिस्ी
 फश्क होए देखल अनगी ।

दीप

होशमे रश्च जोश भरल
 हश्चयि मन ओजक उपनि
 देशक सीमान रक्त्र आश्चि
 डटल छश्चि रीर जनि
 एक दीप अश्च हुनक नाम ।
 हेरै कालकंस जगदम्भ
 नीजके अश्चयि सब लऽ समश्चयि
 होए नइ अश्चओ कलुश्चि
 लेने सपि छश्चि रीर जनि
 एक दीप अश्च हुनक नाम ।
 सबसँ नाि जोश्च चलल
 घर अपनाके छोश्च चलल
 आकिदि सऽ लड़बा लेल
 जानक लगौने बाजी रीर जनि
 एक दीप अश्च हुनक नाम ।
 छी अहा सयिं जग दीपक
 चमकै अश्च जहान
 ऋणी छी अहाक हमसब
 करब सीकार रीर जनि
 एक दीप अश्च अहाक नाम ।

जानकी

गौरशाली अश्लोक
 श्लोकण इश्लोहास
 सम्मूणयमश्लोला जाश्लोक
 जन समस्याक रखली जानकी ।
 जन चेनाक अलख
 जगबै रहली बेर बेर
 राज ऋश्व जनक दुलारी
 सिंहराक बेटी जानकी ।
 भेटल छलैन संस्कारक सौगा
 श्वआबै छली रामके याद
 पेमक संग मयादाक
 केलैन अं कि श्वीह जानकी ।
 बेर एला पर रप श्वकराल
 रन चंडी बश्व केली संहार
 करै रहल छली श्वानि निष
 उठबैक अभ्यास जानकी ।
 रहलैन मयादाक सान्निध्य
 रखली राग रश्व पेमक मान
 जखन जऽ रहली
 सबमे रश्व बश्व गेली जानकी ।

अकरहर

बश्च गैलैन्ह नोर
 सुश्चाँ हमार बोल
 देखीँ कहने रश्चएन्ह
 काकी देखलौ आइ
 चुलबुलक नि उघार
 भश्च नि लता नश्च
 आकलल छली बहार
 ई सुश्चा काकी कहली
 िर जाउ बौउआ
 अहुँ की अकरहर करै छी
 नि युगक ई छी पश्चनि
 कर आब एकरा समान
 समय बदश्चा गेलै
 काकीक गप सुश्चा
 चुप्पे रश्च गेल रही
 िबे पड़लै अगश्चाया
 सबहक चुलबुल पर अघ्यान
 िलक सब पछोर
 कनैँ एलीह घर
 काकी अघनैक
 िकैँ एलीह
 हमरा कोरे कोर
 देखीँ कहश्चाएन

की सुनब काकी
हमरा मूँहे अकरहर
काकीके बञ्च गैलैन्ह नोर
सुनई हमार बोल ।

श्रुपाली

आश्र रहल अश्र खुशीक सौगाि लऽ
 इजोकि राश्रि श्रुपाली
 अमासिप्ताक घनघोर अन्हश्रया राश्रि
 चमककि दीपक सभाश्रिक ज्योश्रिसँ
 चमकल छलै एक श्रुन अयोध्या
 रामक कमयश्रव्य ज्योश्रिसँ
 लेने छला मानिणि सपिनाक
 अखण्ड रि
 राणि सनक राकसके माश्र
 राणिक सखा श्रिष्णाषणके देलएन
 सणियजश्रि लंका दान
 बाश्रकके माश्र
 सुगीकके देलएन श्रंहासन
 अश्र पेम छलएन श्रयासँ
 बेर एला पर देलएन निगिस
 हृदयक अंश सन भायके
 त्पाग कऽ रागरश्रि पौलएन सम्मान
 अश्र मयादाके दोहराबैि अबैि छी
 खुशीक दीप जरबैि अबैि छी
 दीप जरेला बादो ओ चमक नश्र देखाए अश्र
 मानिणिक राह भटैक जनु
 राकस बश्र मानि घूमै अश्र ।

परदेशी

भेलहूँ परदेशी हम
 छुश्च गेल गाम-घर
 छुश्च गेल घर-पश्चरि
 बश्च मशीन खटै रहलौ
 सबके छोश्च एसगरे भऽ गेलौँ हम ।
 बेर - बेर सुनएि रही
 कहै छला लाल कका
 जे पूँ परदेश गेलाह
 दे-अतर संगश्च नेने गेला
 ठीके कहै छला आब बुझै छी हम ।
 बाबू बेराम छश्च गाममे
 सेो नश्च दऽ पाश्च छी हम
 एक अश्च बाबूक अनेह
 दोसर अश्च नौकरी
 बीचश्च दुश्चामे फँसल छी हम ।
 एखनो बाबूक अनेह ओबि छैन
 जखन हमर दुश्चामि बुझलैन
 कहलैन नौकरी देकहक
 हम कोनो रिहे खेप लेब
 हुनकर अनेह देख्च लाजाएल छी हम ।

कला

लुब्धसँ भरल
बनबैँ बहुँ
रंगक चीज ।
लुब्ध कलाक
रप बञ्चा
बनौलक देशेटामे
नञ्च अदेशोमे
अपन पहचान ।
पुर ख बनबैँ
छीटा-पणीया
जोड़ै माञ्चक
देलि आ
बासक ओ
घर बनाबैँ
सुन्दर अकि
देखै संसार ।
स्तीगण मूजक
मुजेला बीनै
सीकीक अन्नै
छली चंगेरी
रंग-अरंगक
आत बनबै
छली अंगनामे

अश्वपन भारी ।

माश्वक चूँ

माश्वएक कोठी

अनसँ भश्च

रखै छली

बरख भश्च

कहै छली

बखारी ।

चरखोसँ पहीने

किलीसँ सूँ

काटए छली

शुणि आ शुभ

भानिसँ जनऊ

बनबै छली ।

खुशी

अपन मन अपनेसँ पचाए रहल छी
 चीज-बौस उलटा-पुलटाके
 घूँअ-घूँअ हम खुशी िएक रहल छी
 छनीक भेट जँ भऽओ जाएछ
 पुरनी पाकि पाआ जेका
 डगमग कऽ ओ छीछैल जाए अछ
 पकैअ राखी हम एकरा
 से युअि नअ लाइग रहल अछ
 बरख भअमे सब उत्सि पर
 ढोल पीट कहै रहल ढोलअया
 यियो मन नअ जाअ रहल अछ
 चकाचौंमे पअ हम
 दोसरे अश ध्यान लागल अछ
 सगर लोक किँ हमरे अश
 अपने अश ध्यान नअ जाए अछ
 लगेमे ठाढ़ रही सैदखन
 िऽ हमर जान नअ जाए अछ

पंथुकि

जश्नुना पृथी अपना अक पर घूअ - घूअ
 राक्षी - अन्न आ नऱि साल - पुरान साल अनैऱि अश्नु
 श्चिना ओ चाक घूमाऽ - घूमाऽ
 गरहैऱि रहल रंग-अरंगक बसि-बासन
 आ बनबैऱि रहल मनुखक अन्नगी हल्लुक
 सुन्दर - सुन्दर मूअियबनाऽ-बनाऽ
 मनुखक मानस पटलसँ नश्नु अटाए देलक
 देी-देीक आ ऋअ महअक अत
 जश्नुना मनुख पाच तिसँ बनल अश्नु
 श्चिना ओ ओअ तिसँ बनबैऱि रहल
 पाण िऽ ओ नश्नु दऽ सकल
 पर मनुखक पाण बचौलक
 आ पशु सदृश्य अन्नगीसँ
 मनुखक अन्नगीक बाट रिलक अश्नु
 समाजो ककि ईमानदार छेलाह जे
 पंथुकि उपाक्षिसँ सम्मानीऱि केलाह
 लता-कपड़ाक गिी रहला बादो
 पाअि-अिहार आ नऱि उत्सऱि पर
 नऱि कपड़ा दऽ सम्मान दैऱि रहला
 पर आइ अश्नु त्यागक कऱि
 झथ रहल अश्नु
 मनुखक कामक कम आ
 दामक महर्त बश्नु रहल अश्नु
 कैचे पर नजअ ठमैक रहल अश्नु

माय!

अबै रहले ू बारंबार
 होए रहल शक्किक संचार
 होए रहल सब ककिक श्रीसीर
 गरहै गेलहुँ चीज बौस
 भरै गेल घर - दुआर
 बढै गेलहुँ हमसब
 ससरै रहल श्मनगी
 भोगमे उलैझ देखै रहलौ संसार
 छुश्च गेल िहर देल उपहार
 चुश्च गेल भाईचारा आओर प्यार
 भऽ गेल छै मानि पर िर
 बश्च रहल छै शोश्चकिक िर
 माय! एकबेर कश्च दे श्रीसीरसँ
 कोउना उड़िब अश्चसँ पार
 कऽ दे फेर एक बेर
 न शक्किक संचार
 कऽ ले हममार ई पाषा सीकार

भाय!

टोलाक बीचश्चमे एकगोट इनार छलै
 स्तीगणक साझ-भोर सभाक अडडा
 काखश्चि घैल आ हाँमे उगहैन लागल डोल
 इनार पर पहुँचश्चि नीकश्च पड़ै छलै बोल
 जेना नीदा-श्चस्साक बझा जाए छलै घोल
 एक दोसरके करै छलै सचेँ ।
 भानि जे कुछ रहै छलै
 सब पेसँ सकबेलि होएँ छलै
 मनुख कम्मे रहै छलै
 ि नश्च िऽ बेटा गामक काम अबै छलै
 आ बेटा माए-बापक नश्च
 दोसराक सोगारि पूरा करै छलै
 कला छलै अगुएल
 माश्चक घरमे गरहै छलै रंग अरंगक फूल
 गबै छलै सुख दुखक गीँ
 संगुश्चिया सबसँ लगबै छलै मीँ
 मरै काल िश्च आभाबै छलै ओ असी
 पश्चरि छलै संयुक्
 ियो मनुख छलै पेमयुक्
 भाय! आब अहाँ कहू
 हम बश्च गेलौ ककि आगू
 पीछश्च गेलौ ककि पाछु?

मायक बदलै छी

नौ मासिश्च गथि रखले
 अप्पन खैक ्रि बाश्च खुएले
 अपन खूनसँ थयास बुझा ्रि
 खूनेसँ नहलौले
 खून घटबाक कारण
 केक रोग आरजौले अपनाके
 ओछानक संग आिले
 खिन किक र प िहर माय
 बुझ्या माय सन छेले
 जनम दैि आए बदलले
 अपन दूि देहे आलश्चके
 आबाक दूि पीऔले
 आज देहक आंचल हेराके
 गमछा ्रि ओरहेले
 अपन संस्कार फेक फाश्च ्रि
 पर संस्कार अपनौले
 कोना बदललौ िहर ई छथि
 ई बाि जनन् रथि
 कोन लोभे हमरा जनमेले
 पुछै छन्हि कथि
 केकरो नश्च रहलै ई जनिनी
 आए अपनाके भारमौले
 खूनक अशिक गप की कश्चयौ

જાનેહ પેમ ભોલિા ભોલિા
બજાયાચરી દેખાબઈ છે
દેળી ર પ માયક
જાએ િ આબ જગારૈ છે ?

कलह

कलहक जश्न नश्न बुझहब बाँ
 कूसंगिक पकड़ने रहब गाँ
 खुटा गारब अश्न ठाम यौ गिँ
 बकिटबैल क' दैँ रहब माँ
 गाल फुला नश्न करब बाँ
 नश्न बुझब अँन आ नश्न राक्षी
 नीक अलिहक नश्न अचाराब बाँ
 हश्नदम सोचब कोना द' दी माँ
 हम एबि कहब यौ गिँ
 एक दोसराक बुजहु बाँ
 अश्न खेलमे नै अँबु अँन ि राक्षी
 सुसंगिक पकर गाँ
 माफी मागने छोट नै होए छै
 दोसरी लेल बढाबू अपन हाँ
 फेरसँ एक बेर गला अल
 हाँ जोश्न चलु साँ साँ

कली

काच कली हम बेली छी
 मायक हम अलबेली छी
 आँ सुनैँ हम लोरी छी
 सुनर उपनि बना बास करब हम
 फूल बआ अरिब एक अन
 छोट पैग अल बनौने छी
 सुनर बाग हम बसौने छी
 सबहक मन ललचौने छी
 शोभा हम आ शोआँ सुनर नि
 फूल बआ गमकब एक अन
 मुआ झाथ हम रखने छी
 मायक अनेह बटोरै छी
 जानक आर आरजौने छी
 शुभ हम शुभे हमर उपनि
 फूल बआ देँ पूआ एक अन

ीरक पत्ती

आँचलक दूि दबौने छी
 आँखक नोर सुखौने छी
 बआ गेल आब करेज पारि
 सीमानक बाट िऽ आकलल छी
 नख देखल जाय अख बाल रदन
 खलख रहल ीरक पआरि
 अलि अलि सुआ सुआ
 आँचल सकसिँ बाआह आकलल छी
 एक अश दानि ललकाख रहल
 हथियार उठा आकि मचौने अख
 दोसर अश पेटक जीला आब
 कासिँ कथिँ अहरल छी
 रनभेदी आब बाआ उठल अख
 ठेकानल डेग आब उठौने छी
 उड़ी आकाशमे भख धीरंगा
 गाड़ी लऽ आब आकलल छी
 हे जनक नंदनी जानकी
 माय जाआ अहाक सुमरै छी
 बल बुझि जानक आशीष अऽ
 अहाक रप अरजाबै छी
 छुअ गेल अधिलम्भ हमर
 अपन अमाक रप आहारै छी
 ीरक काम कऽ पूरा क' कऽ
 माय अहीं लग आब आबै छी

देशी कौआ

मन पक्ष रहल अक्ष ओ क्षन
 जक्षया माएक हम छोट नेना रही
 मायक आँचर रिर खेलैँ -रिपैँ रही
 माएक बोल हमर ध्यान एक रहैँ छल
 जखने बजै अँगनामे कौआ
 बुक्षया दादी बाष्म उठै छक्षह
 पाहुन एहिह एना लाथ रहल अक्ष
 सुष्मि मन गद -गद भ' जाए छल
 आब रिरा -रिरकारी के पूछैअ
 दही -चीनी सेहो भेटि
 क्षन भक्षमे कैक बेर पूक्षए
 माए आए कखन पाहुन औहिह
 आब ओ क्षनक यादेटा रक्ष गेल
 देशी कौआ मक्ष -मक्ष गेल
 कारकौआ अक्षहबासु भ' गेल
 आजुक कौआ बाजब ई भ' गेल
 अमंगलक संदेश द' गेल
 कौआ बैजि कक्षया कहै छक्षि
 ढेला ल' एकरा भगाओ
 हम कहक्षएन की कहै क्ष
 क्षन भगौने देशी कौआ भाक्ष गेल
 की कारो कौआ क ' क्षदाहे क देब
 कौआ देखब सपना क' देब

बहिह

हेलैँ -हेलैँ पहुचल जाय छै अहिह
 रसी भोझिया गेल छै भेल छै बहिह
 एल छै श्वलकोर
 सम्हाश्च नै सकलै अपना क'
 सह पाश्च गेल जाय छै दहला .

पूंश्चबादके भेलै देख्ख डाह
 अनलकै बाजारबादक बाइढ़
 नक -सक करै छै नाक कि पाश्च
 एखनो सम्हारने भेटाँ िह
 नश्च ि भने अश्चए अहिह
 ई देख्ख -देख्ख अबै अश्च आह
 ओ ऊपर मे ठाढ़ भ' कहै छै िह
 आबो ि मेटाबे अपन इ न'ि चाह
 नश्च ि सबकुछ श्चका देँ क क' बहिह
 सब श्चछु श्चका जेँ ओ श्चए करँ आह
 लेने छै अपन ओ मोछ पीजाह
 त्पागक भूश्च पर देँ भोगी बना
 अपना क' आबो बचा
 नश्च ि नि -रिम संगे जेहिह
 खाली हाँ रही जेँ बनल इ न'ि चाह

भूख

हमारा सहल नञ् जाय अञ् भूख
 सबञ्खन खा -खा क' सूखल आ रख
 सैदखन हमरे ञ्कए अञ्क लागल दुख
 फुफरी परल रहै अञ्क हमरे मुख
 ञ्कओ खा -खा बनल अञ्क नै सोख
 सबटा हमरे नञ्क अञ्क न दोख
 एको ञ्खन हमरो जं भेटै चोख
 भैर जै भूखसँ पचकल कोख
 हिन मनमे नञ्क रञ्क हामारा रोख

उ०री सामान

बाबू आब हम नञ्च जाएब
 बेचू भाए दोकान
 लेबा लेल उ०री सामान
 कबो कहला पर नञ्च दै छथि
 आब ओ कोनोटा समान
 कहअ लगै छथि ओ हमरा
 ्रि छ' रौ बड़ नादान
 बन क' देख्खए देनै दान
 बौआ सुआ ले क क' ध्यान
 ०रा नै छौ एखनो जान
 ०रा सबके दै -दै
 बेचअ पड़ि अपन मकान
 पकैर ले ्रि अपन कान
 खाली हाँ नञ्च अञ्चहे
 आब कञ्चओ हमरा दोकान

भीखमंगा

माए एलैहन एकगोट भीखमंगा
 संगे एल छै बञ्चन ओकर गंगा
 फाटल ठोर लाथ रहल छै
 ठोर मे लागल होए ठोररंगा
 पेट -पाजर एक भेल छै
 जेना भूखसँ क' रहल छै दंगा
 खैक ल' झुट्टु द' दही माए
 मोन भ' जेँ ओकर चंगा
 देह झुटुरने मोन उदास छै
 द' दही बुच्चीया बाला लहँगा
 हमर एकटा जे छै भटरंगा
 पुरना सन राखाल अंगा
 पेट सेहो द दही ओकरा
 हमरे बला जे छै सरिंगा
 एकर जीनथाए छै बहुरंगा
 हम पञ्चरबौ जे ्रि देमे
 आब नञ्च मागबौ मूहमंगा

चुटी

देख देख देख बाबू चुटीक हेर
 चश्मा रहल छै आपसमे घेर -घेर
 अथला अछला क ' क संगमेरह
 जल्दी जाए ि भ ' जाए अबेर
 िरी लगा चलै जेना रेल
 केहन सुनर छै सबके मेल
 अपना बाटमे डरै नै एको बेर
 काजो करै आ करै छै खेल
 श्रमि छै ओकरा जेना होए शेर
 जान रहै ि जाए ओ मश्
 काज नै छोडै छनो भश्
 नदी नाला होए ि होए पहाड़
 पार करबा ल' लागल रहै बार बार
 थरै पडै होए छै नश् डर
 बाबू रश्छंहे अश्चना मेल
 आफद अबौ घनेरो बेर
 संग अल लश्छहे हर बेर
 संग छोश्छ नश् रश्छहे एसगर
 लक आगू अपने पाछू
 अपनामे नश् कश्छहे डर
 श्रमि संग आगू बश्छहे
 चाहे आगू रहौ भलश्छ शेर

आब हमरा दे पोर्णि कीन

आब हमरा दे पोर्णि कीन
 नञ्च लेब अँगा नञ्च लेब टोपी
 आब हमरा दे पोर्णि कीन
 नञ्च खेलब नञ्च छुपब
 रहब हम पढ़बामे लीन
 नञ्च हम लड़ब नञ्च हम झगरब
 रहब हम सबसंग मील
 कुसंगामे हम नञ्च पड़ब
 हमरा देखमे ओकरासँ भीन
 गुल्ली -डनटा हाँमे द' ओ
 उड़ा देने अञ्च हमर नीन
 सब जीकि आदर करब
 मारब नै हम केकरो पीन
 गठरी खोल ि पोटरी खोल
 चाहे हमरा ल' ले रीन
 आब हमारा दे पोर्णि कीन
 आब दुःख सञ्च गेलौ
 रहब बनल आब दीन
 आँञ्च रहै आन्हर नञ्च रहब
 हमरो अँनगीमे हेँ अँन
 आब हमरा दे पोर्णि कीन

चंदा मामा

चंदा मामा चंदा मामा
दूकि कटोरा पठा अ
नञ्च अि अमृि सुि बरसा अ
हम अहाक आंखक िरा
अपने लग बजा कअ हमारा
अपने सन समदरसी बना अ
चंदा मामा चंदा मामा
हम अहाक लाडला
अपने सन चमका अ
कोरा सन आमसा कायामे
शीलि मन बना अ
जान पकाशक दीप
हमरा अदयमे जड़ा अ
चंदा मामा चंदा मामा
अहा अपने सन बना अ

ओम पकाश झा

गजल

कश्चयो ि ई बाहि हेँ
श्चनगीसँ शह माहि हेँ

िडि शुर भेल फेरसँ
दू, पाच की साहि हेँ

ऐ गाछके काश्च देलक
नै आब नब पाहि हेँ

छै राक्षि कारी भयाहि
कश्चयो की पाहि हेँ

'ओम'क गजल नै सुनू यौ
सुर-लिल-लय काहि हेँ

मातार म अश्च 2-2-1-2, 2-1-2-2 पत्त्रेक पार्थीमे एक बेर ।

गजल

आनेहक िरि पजरल आए नै
उछेहक सागर उमड़ल आए नै

आछो नै रहलौ हम आब ओकर
खिन ओ हमरा आसरल आए नै

ककिो कि ससु ससु बचल छै
नगर ई यासुक उजड़ल आए नै

हमर आँखसँ खूनक नोर झहरै
हुनक छथि मोनसँ ससरल आए नै

जरै छी हम अन आ राखि ससुखन
करेजा 'ओम'क कुहरल आए नै

बाबा बैद ना

आजाद बाल गजल

अक्यै करै छी देरी बाबा
लागल भोगक ढेरी बाबा

मंत पञ्च उत्सगयकेने जाउ
भगकि बेरा-बेरी बाबा

मद अषेकि पचिन करी
पीबै भाग, गजेरी बाबा

गाजा केर व्यापार करै छथि
मंश्चर केर पुजेरी बाबा

अहाक इशारापर जुञ्च जाइछ
हेजक हेज हंसेरी बाबा

जाथी-मियकेर बाँ ने पूछी
कुमी, कोइर, गड़ेरी बाबा

घरमे फुटहा फाञ्च रहल छथि
भोजक बेञ्च पसेरी बाबा

आबहु िं संीष कर अछु
भेल उपाधि चंगेरी बाबा

दही-चुड़ामे र अ नख, खेी
मुरगा, माछ, बगेरी बाबा

सीषे आन्हर भऽ उमड़ि
मंथरमे जनु भेड़ी बाबा

बाल कथी- बाबा-पोकि अनेह

अपन पौत छथि बड़ बुझियार
 अन्नक हँसी छथि अंगरहार
 तुमुअ-तुमुअकऽ ई नाचै छथि
 सदः जेना कृषा अरि
 जखनअसँ अरिणयभेल छथि

भेल हमर अनगी साकार
 अन्नकर हँसी-ठहका सुआअ
 लगैछ जेना हम नअ बेमार
 एखन जअ क्यो पाहुन आबथि
 कऽ ने सकी अन्नको सत्कार
 बुझा रहल हम हेरा गेल छी
 पाअ एहन अनमोल दुलार

गी कथित सकल असरल हम
 लीअ सकी नअ ई उदगार
 पाअ रहल नैसथक सुख हम
 पभुकेर मअमा अगम अपार
 बाबा-पोकिरे अअ सुख लग
 दुआयाकेर सभ सुख बेकार
 हमर उदासल अअ अनगीमे
 अथि देलअ अदु उपहार

चुका सकब नअ ऋण हुनकर हम

ओ जे कैलआ परम उपकार
आब बुझाइछ हमर जीनि ई
सञ्चपहुँ भेल सफल साकार

आजाद गजल

अनगी ि अशर्ष बनल अशु इयो धील-धील जीअ रहल छी
भाग्यक एअ फाटल गोनअके बूझू कहुना सीअ रहल छी

नेनपनेसँ हमरा सभअयोअप्पन बअकऽ ठअ ि रहलै
शंकर बअकऽ िअ हलाहल सभअनसँ हम पीअ रहल छी

हे भगिन ई ककरो नअ दी संकटकेर भंडार एक
पोरे-पोरे घायल अशु ि रक बनल हम चूअ रहल छी

सापक आगू नाअ रहल अशु िल ठोअ ई बेग कोना
हामे छूरा आर भिंचा डरे िर-रि लीअ रहल छी

रोगगसि एअ बूढ़ देहसँ आब ि अछु नअ अजअ होइए
िकल-मारल आअ, दोसर केर हम ि 'परजी' रहल छी

आब एखन हम ऊअ गेल छी एअ जीनिसँ मरण नीक हो
पाकल आम बनल हम देखू ठोपे-ठोपे ूअ रहल छी

इएह संनिष बनल अशु "बाबा"दुआया बड़ सम्मान दै अशु
सभक नजअमे हम पूजाकेर मानू 'अक-दूअ' रहल छी ।

आजाद गजल

कऽ गेलौ ये लग आख जाउ ने
एकबेर आख पुआ भाथ जाउ ने

पेमक मादे हमर फुटले कपार छै
सपनेमे पेमगीणि गाख जाउ ने

अहा खना हमर करेजे फाटल छै
स्नेहक िग लऽ कऽ िथ जाउ ने

अहा सन लोक एणि आतुर ि नख हो
एकबेर पाण हमर माथ जाउ ने

अनीसँ मुक्ति अये एते आसभेर छी
अये एकि सूलि छी जाथ जाउ ने

गलीणि कमा कर माफी मंगैणि छी
सभ अछु असथ हृदय लाथ जाउ ने

एखनहु पड़ैछ मन देल अहाँक पेमरस
एकबेर चखा पुआ दाआ जाउ ने ।

आजाद गजल

जखनञ्च जगलहुँ खिनञ्च भोर ।
आडै करए बर कबिहु सोर ।

प्यासक मारल सूखल तोर ।
देह बुझाइछ बहुि कमजोर ।

घरक लोकसभ पड़ल बेडपर,
कोना पीञ्च हम पाञ्च इन्होर ।

जञ्च जगेबैक सभ मिसायि,
बूढक घरमे चलय ने जोर ।

ञ्चना सुसुम हम पाञ्च पीबिँ,
खिनञ्च उखड़िँ खोखी जोर ।

आकि औरदा हमरा देलञ्च,
अयै श्रीणि एहन कठोर ।

मुइले गुण की पड़ेले गुण ई.
कहबीक ककि अयि बेजोड़ ।

आब बुझाइछ पाण बचि नञ्च,
खिनञ्च ससरल परदाक छोर ।

खोश्च सुआ पोि उश्च आयल,
चूश्च गाल ओ बैसल कोर ।

पुछलक ऋयै ने अहा बजै छी,
आंश्चमे भरल ऋयै अश्च नोर?

श्चम्मश्चिकऽ कने चुश्चि पजार ,
"बाबा " कनेक लगश्चयौ जोर ।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अकल'

गजल

छल पपंच सभटा रिफंदी जाआ गेल ओ

पाइ कमायब लक्म जीनिक माआ गेल ओ

पटकर आएल माए बाबूके अरिषममे

शांति आ ममति सन देबालके फाआ गेल ओ

कंस जका अरमल जानी दुरजोनि सन

जश्वया आयल अपने कीर्षियबखाआ गेल ओ

रखने हजारटा मूडी बाअ आ पयर सेहो

सभटा रसि अपनअ लेल दफाआ गेल ओ

ककरो संग मुनी भाआ गेलै अरिषियेमे

नै भेटलै पोखअ इनार सभ छाआ गेल ओ

अनगी भश्च सूलि टाका केर िषकपर

काश्चि पुच्छश्चयै कहू कुशल ि काश्च गेल ओ

णिय-17

गजल

ई जे घर आ आँगन छै

सबहक अप्पन जीनि छै

छै कश्चयो बरखी ककरो

कश्चयो ककरो मूडन छै

सकुनी के चलौ सभठा

जै-जै ठा दुरयोनि छै

कखनो ककरो नै टार

सभ ले' ई आयोजन छै

राणि- दहनक मेलामे

गश्चयौ कते राणि छै

माता-र म : 2222 222

गजल

भोरे-भोरे जागब आखलौ

आ अपनाके ठिकब आखलौ

आसन पाणायामो आखलौ

नि-मन सुंदर राखब आखलौ

सूगा सनके बाजब आखलौ

आ कौआ सन भागब आखलौ

गायब आखलौ नाचब आखलौ

आ रामायण बाचब आखलौ

आनब आखलौ रान्हब आखलौ

आ सभ जनमे बाटब आखलौ

सभ छी हमरे, हम छी सबहक

से सखन हम मानब खलौ

जय- जय श्रीला, जय-जय भारि

जय-जय राँ -माँबि खलौ

माता-र म : 2222-2222

गजल

लछुमन रेखा नाघू नै

पाइक पाछा भागू नै

रसी आगू के देखू

पाछा घुश्च-घुश्च िकू नै

एहन नै क्यो दुआयामे

जकराले' क्यो आगू नै ।

सोचू दुआया आरमल हो

अपना ले' कछु मागू नै

सुख आयल दुख अक्छ पाछू

कखनो नडटे नाचू नै

दुख आयल अछु चक्ष जायि

सुख अछु पाछा कानू नै

अपने सुि मानू सखन

हथयर गछुली काटू नै

माता-र म : २२२२-२२२

गजल

अछुए जन छथि देशमे
रखने सभके क्लेशमे

राणि भेटल अछि कि
रामक सुन्दर भेषमे

जे सुख भेटल गाममे
से दुरलभ परदेशमे

आपसमे पटरी कहा
बह। शिष्ट महेशमे

के छथि मा आ के थि
सुख सुधीके रसमे

माता-रम : 2222-212

गजल

गंजन केलौ िड़ अहा नै

लागू हमरा गोर अहा नै

िपर अञ्छए मोन अहाके

देखल आंश्चक नोर अहा नै

हमहूँ कारी मेघ कहा छी

छी जंगलके मोर अहा नै

जैहुँ एको बेर अयोध्या

केलौ कञ्चयो जोर अहा नै

नै काटब ई राक्षी जं कहुना

देखब कञ्चयो भोर अहा नै

साहि नै छी भाइ अहा सन

बूझू लेखन चोर अहा नै

माता-र म : 2222-21-122

गजल

खेल-कूदमे बचपन बीलि

रंग-भंगमे यौनि बीलि

भोज-भामि रहलौ सभञ्जन

बा-बामि पचपन बीलि

जेठ मासके गरमी भोगल

पूस-माघके श्रुतुरन बीलि

लोभ-मोहमे पागल रहलौ

देष-रागमे छण-छण बीलि

भोर, साझ आ श्रन-दुपहश्चया

दौड़-पूमे जीनि बीलि

आइ बाङ्गमे डूबल सभ ऋछु

ढोल-झाङ्ग अङ्गनन्दन बीलि

माता-र म : 21212-2222

गजल

सभके सभ सुनैँ एकधन

सबहक धन घुरैँ एकधन

सभ सबहक आदर करैँ

सभले' सभ मरैँ एकधन

अनके बलपर कूदय ओ

खसैँ बस बुझैँ एकधन

जे जे राणि बझा आकरय

सबहक घर जरैँ एकधन

अपनाके जानि- मानि

से धीजयी बनैँ एकधन

जय जय भारि जय अशिला

सब गोँ नचाँ एकधन

माता-र म : 222-2222

गजल

ऋछु नरमे नारायण देखल
बाकीमे बस राणि देखल

सभठा सभ घटनामे भैया
शकुनी आ दुरयोनि देखल

झगड़ा-झाटी आरि भीरि
बाहरमे अपनापन देखल

सबहक छल अनुमोदन पञ्चने
पाछा सय संशोनि देखल

पेटो ओकर नमहर सन के
भोजन अर्थ सागरिण देखल

लाठी भाला गिरक बदला

फूलक हम आयोजन देखल

माता-र म : 2 2 2 - 2 2 2 - 2 2

गजल

झूठक कारोबार बड़ीटा

चोरक अशु संसार बड़ीटा

जे नै कश्चयो गेल पढ़ैले

से रखने अशु कार बड़ीटा

देखैमे ओ छोट लगै छथी

छथा गरदआमे हार बड़ीटा

हुनका लग नै गेल रही हम

छल रसीमे िर बड़ीटा

हुनकर सेगि भेल कहा अछु

छथा हुनकर उपकार बड़ीटा

सगरो दुश्चाया गाम हमर अश्क

अश्क हमर पश्चिर बड़ीटा

माता-र म : 22-2221-122

गजल

पञ्चि -पञ्चि लीख' लगलौ
की श्रीक दुश्चाया सोच' लगलौ

नै गेलौ इसकूल जञ्चया
भेटल छौकी कान' लगलौ

गेलौ हम कौलेज जञ्चया
कूदय लगलौ फान' लगलौ

देखा-देखी लोक स'भके
हमहूं कूकुर पोस' लगलौ

छाहश्च दै छल गाछ हमरा
हम गाछेके काट' लगलौ

दुःआयामे सभ दोख 'अञ्जल'क

अञ्जलि-पञ्चि जान' लगलौ

मातार म- 2222-2122

गजल

अपन वन अपने पना छै
बहक एक वन दुकाया छै

रि झार आ डिक भडक ई
की बदलल भटा ओकना छै

र टि बगिला बैक वडप कट
भटा छै लेकन लाज कहा छै

आगिनि रि आओ दिबिजजा
केहन शून राए बाप कना छै

गप्प हकिए अबि खबिके
कबि लेकन च रि जका छै

ल क बुझैए एखन नगरि
रि रि बाजब फ रना छै

गी रि रिक ररमजे बुझलक
अकल कि शीले गहना छै

णिम १२

गजल

रेि बक बक क' अबैि हिू अकना
अहा नीक हरिि लगैि हिू अकना

नाटक ई कनगी आ हर अहा नटुआ
भ कय नाचय नचैि हिू अकना

बाहरैि विखयौ ई दुकयाके झझिक्ट
गिर गिर भीि जपैि हिू अकना

कार क'ि लभ रह दुशन छी बडका
कखन सयिलिडैि हिू अकना

र न चिन करमि बहक खुशीले'
किल्म पल पल काँि हिू अकना

अपनाके चीन्हब आ दुकयाके जा नब
चलबेरे ुख छै चलैि हिू अकना

णिम १५

गजल

चान ुरज के नकल कर्णि ओ
दुक्कारे ए गहि चलि ओ

जाक् डगपि नेह फुलाइछ
कि रि पिणि रि ओ

लङ्गि ने कक्कय खेकि खाव्णि
अपन विकाकि मि लङ्गि ओ

निक लेल अगुणिल दुक्कया
रुदा बहकिणि मि हि ओ

रगन हि ओ गगन देख्क'
रि कर्णि मि गजल कहि ओ

दनदनाइ हिहि रैथली
भठा जय-जयका कर्णि ओ
(लि विष्णु बहि णिम १३)

गजल

अपने गलाँ गना हिल छी
भर्व दुकयाके जना हिल छी

खाली लै बनल छी हर भ
बे-बे निरना हिल छी

कबाछु लगाक' पूछ हिल छी
कए एना भनभना हिल छी

पए पकड़क' कहै छी दौडू
कथीले' हरि कना हिल छी

आ न-णिणायार ने क लिल
एखन दनदना हिल छी
हरि बलप देखलौ कल्ली
आ हरि उल्लू बना हिल छी

है ने कन दुख निनिपि
इश हिर रना हिल छी
(लिल निवाक बहनि निम१२)

गजल

चौबी . अणिकि दुकया
बका गेलै व्यक्ताकाकि दुकया

हरि . झारे अछ प लि
ई नकल अनहाकि दुकया

टुक-टुक ठिकए पंथी-पंथी
आगा अछ हथियाकि दुकया

हुनका ि गुल्ला - पक्का बा
हरि ले' कुव याकि दुकया

कखन नरि डूबल अछ
करणा आ उपकाकि दुकया

भुखल रे कनी ठिकि
अदभु चिनाकाकि दुकया

(राता कर : 222-222-22)

गजल

करिल नि करिल रन ह
आनकसि ई जीनि ह

प-कननि हइछ दुशन
आरि - कननि कखन ह

द्विद्वानि- न ह कानि
नचइ गिगि-र हन ह

चकरक ह जीनि-आनि
भ शुभ भाकि अवपिन ह

भ कायारे गिगिपि
परिश के दशम ह .

(राता करः 22-222-22)

जगदानन्द झा 'रनु'

भक्ती गजल

आइ रैया बजेलक हरि
अपन दशम कएलक हरि

रनक शती गि छनरे
आइ रैया दखेलक हरि

हुनक रक्हरा की छक भाड़ी
जानके कप जलिक हरि

पाप गि हरि क ि कय
छ ट बेटा बनेलक हरि

दय क' ररि अपन आँचकि
रनु कजिँ लगेलक हरि

(राता कर; 2122-122-22)

गजल

बनेलहुँ अपन हम जान अहाके
जँ कश्च लाञ्छ देबै चान अहाके

हँसीमे सभक माहुर झलकैए
आनेहसँ भरल मुस्क्रान अहाके

कमल फूल सन गमकैँ अहा छी
जहर भरल आँखक बाण अहाके

थयासल अहा अनु रहल सगर मन
आनेहक ि चाही दान अहाके

करेजक आरि 'मनु' अश्च अक बसेने
रहल नै कनीको भान अहाके
(माता र म ; १२२-१२२-२१ १२२)

गजल

साप चक्ष गेल लाठी पीटे रहल छी
बाप मुइला पछाइ भोजक टहल छी

पाआ नै अन कश्चयो जीर्णि देबै
गाम नोबि सराणि सबहक कहल छी

आँखके पाआ आइ ि सगरो मरल अश्क
राथि श्वन हम मुदा िड़ीमे बहल छी

कहब ककरा करेजा हम खोश्क अप्पन
नै श्वयो बूझलक हम िने जहल छी

सुआ क' हमर गजल जग पागल बुझैए
ददयमुस्फ्रीसँ झपने 'मनु' सब सहल छी
(बहरे असम, माता र म- २१२२-१२२२-२१२२)

गजल

हाथके बाद जीणि ि अश्वि छै
राशिके बाद सगरो इजोणि छै

दुखक माला जपै छी अए अन्न भक्ष
एअ जगमे घड़ी सुखक बहुणि छै

नोर राखू पजारब गजल एअसँ
अछु पुरनका खड़ेएल रश्वि छै

बेगके अन्नदगी नै इनारे भक्ष
भादबक बाअमे ओ ि जअि छै

छोअ किनाइ मुँह हाि नमहर कर
अछु पबै लेल 'मनु' दाम लअि छै
(माता रम ; २१२-२१२-२१२-२२)

गजल

र प मार क िहर देखि कआया
खून देहक सगर भेलै हमर पआया

नै कौ केर शिशाआत छी हमहूँ
पाण लेलक हइर ई िर चौआया

जअ क' िहर पजारल आअमे दुआया
माय बापक नजअमे बनल छै बआया

नीक बहुि गजल कहने छलहुँ हमहूँ
आइ सभ अछु असअ बेचै छी आया

झाअ राखू अपन र पक महलके 'मनु'
भेल पागल किको देख्य यौआया
(बहरे मुशाअल,
माता र म; 2122-1222-1222)

गजल

साप चश्च गेल लाठी पीटे रहल छी
बाप मुइला पछाइ भोजक टहल छी

पाश्चा नै अन कश्चयो जीर्णि देबै
गाम नोबि सराणि सबहक कहल छी

आँखके पाश्चा आइ ि सगरो मरल अश्च
राक्षी श्वन हम मुदा िड़ीमे बहल छी

कहब ककरा करेजा हम खोश्चा अप्पन
नै श्वयो बूझलक हम िने जहल छी

सुश्चा क' हमर गजल जग पागल बुझैए
ददयमुस्क्रीसँ झपने 'मनु' सब सहल छी
(बहरे असम, माता रम- २१२२-१२२२-२१२२)

कर्वी

भीख नक् अवकाि चाही, हरि बकला गिज चाही
जे हरि अक्ख खूनरे ओ खूनक अवकाि चाही

जनक गिचस्सर्वके पुत हर, हरि चुप्पीके नै क्कछु आओि बुझू
शाक्कित हर रुर न, हरि किके . क्कि चाही

व हि न हर बलीन क्कि, रेि न हर शाि छी
ई जुव क्क गी ऊवियाइि रेकि, रुठीरे गिि चाही

जाक् कक्खँ गी छक्ख जनरल, ओक् कक्खक गिन छी
बाक्करे जिक्कि अक्ख अवण, ब एकटा क्कि चाही

भूखँ व्याकुल छी, रुदा उठाएब नक् फेकल टुकड़ी
कणमबक्क जे नक् भेटल, ओ ररगि केि अवकाि चाही

राए रैक्कली हिी क्कएक, क हाय एना एकि क्कन
हर क्कि जे नि रन अप्पन, एहेन लकि कुश न गिन चाही

विष कुराणि ज्ञा

विषे क्रिय एणि पाठयकर कदेशक (फाउडिशन), चरम सिं एणि
उपसिं क्ज्जाइन वभाग, फुटयिं क्ज्जाइन एणि डेक्लपरेट
इस्तिट्यूट, ए-10/ए, 'तटि-24, न एडा.

सामा-चकेबा

आशछल-पेम, होइं अक्क पूजा, बबैं अक्कई पाइन,
भाय-बक्कआ के, पक्षित पेमक, सामा-चकेबा, अक्क पाइन!
घर-घर मे, अक्षीला के, रक्क संग, खेलल ई जाय,
खेलईं बक्कआपा अल-जुक्क, गीं सुमुरि गाक्क-गाक्क!

भोरका अरघ, छईं पाइन के, परय जाक्कए अक्क,
राक्षीं अक्क, पारंभ होमय, सामा-चकेबा कऽसंगीं!
काक्षीं पूथामा कि आ, राक्षी, ई खेलल जाय,
सब बक्कआ केर मुख सौ आकलय सुमुरि संगीं!

आशछल-पेम, होइं अक्क पूजा, बबैं अक्कई पाइन,
भाय-बक्कआ के, पक्षित पेमक, सामा-चकेबा, अक्क पाइन!
घर-घर मे, अक्षीला के, रक्क संग, खेलल ई जाय,
खेलईं बक्कआपा अल-जुक्क, गीं सुमुरि गाक्क-गाक्क!

की नेना-भुटका, की बुरही, बक्कन ि होइछ बक्कन!
हि उमंग, हि उत्साह, सभ मे होइछ एक समान,
सामा-चकेबा, हि दानि, चुगला केर मूक्षीं सब भक्क डाला मे,
जुटय छक्क सब नारी, जोलि खे ि चौक पर!

आश्छल-पेम, होइ अशु पूजा, बबै अशुई पाइनि,
 भाय-बशुआ के, पशित पेमक, सामा-चकेबा, अशु पाइनि!
 घर-घर मे, अशुला के, रशु संग, खेलल ई जाय,
 खेलईशु बशुआपा अल-जुशु, गी सुमरि गाशु-गाशु!

सुमरि कंठ-संगी सौ, कय गिरिण गुंजायमान,
 करै छश सभ, अपन भायक, दीघायु के कामना!
 सामा-चकेबा के मूशुशु संग फेरबइ जाइछश,
 अपन भायक नाम लै, अशुक फेरइ जाइ अशु!

आश्छल-पेम, होइ अशु पूजा, बबै अशुई पाइनि,
 भाय-बशुआ के, पशित पेमक, सामा-चकेबा, अशु पाइनि!
 घर-घर मे, अशुला के, रशु संग, खेलल ई जाय,
 खेलईशु बशुआपा अल-जुशु, गी सुमरि गाशु-गाशु!

जकि बेसी फेरी होमय, भायक औरदा बढ़य ओकि,
 गाम-टोलक, सभ मशुला के, अशुक जाइ छै देल!
 द्दिनि मे आशु लगाए चुगला ओशु मे जराओल जाय,
 गाबाय छी, सखी सब अल:

“द्दिनि मे लागल आशु, अयो नशु अझाबय हे,
 हमर बड़का-छोटका भईया, अशुकए अझाउ जाय हे!”

आश्छल-पेम, होइ अशु पूजा, बबै अशुई पाइनि,
 भाय-बशुआ के, पशित पेमक, सामा-चकेबा, अशु पाइनि!

घर-घर मे, अश्वीला के, रश्मि संग, खेलल ई जाय,
खेलईश्वरी बल्लभापा अल-जुश्व, गीणि सुमरि गाव-गाव!

फेर,बल्लभा सबमुखझुलसाए,पुलाक चश्त केर आंदा करय,
लय सामा-चकेी केर मूश्वीयसभ, श्रिदा होइछिश्च,घर अश्वस!
परंति भाग्य-चर सौ अश्वमुख, मैना केर,दू गोठ मूश्वीय
कहबइअश्व जे 'बाटो-बल्लन' , बाटे छौश्व देलजाइअश्व!

आशछल-पेम, होइअश्व पूजा,बबैअश्वई पाइन,
भाय-बल्लभा के, पश्वीत पेमक, सामा-चकेबा, अश्व पाइन!
घर-घर मे, अश्वीला के, रश्मि संग, खेलल ई जाय,
खेलईश्वरी बल्लभापा अल-जुश्व, गीणि सुमरि गाव-गाव!

आब पहुंच, घर, अपन भाय सौ,सबटा मूश्वीयडिओलजाइअश्व,
बना नाि बास-बती सौ,सब मूश्वीयओश्वमे बैसाओल जाइअश्व!
पोखरी, झील, नदी मे सामा-चकेबा बहाओल जाइछिश्च,
पुरानि मैश्वील कला-संस्कृश्वी मे,घोरय,सामा-चकेी रंग अनेक!

आशछल-पेम, होइअश्व पूजा,बबैअश्वई पाइन,
भाय-बल्लभा के, पश्वीत पेमक, सामा-चकेबा, अश्व पाइन!
घर-घर मे, अश्वीला के, रश्मि संग, खेलल ई जाय,
खेलईश्वरी बल्लभापा अल-जुश्व, गीणि सुमरि गाव-गाव!

कानि,गल्म,आत्म,कला,संगीणि, सब रंग समाओल एश्व पयिमे,
अश्वपरंह अश्वनक कानि-परि,भाय-बल्लभाक आशल पेम कानि-परि प!

जुनी काल

कथला रे, आबाय रौ र चाव,
 बखि, जा, ि, ओ गरी!
 चाहे रौ र, जेह हरय,
 नरि कछैन, िकय नीन!

नीन रीठ, जुनी देबय,
 रौ र ि, अपन गुण बदलय,
 चाहे रौ र, क न आबाय,
 एक र हता, कर नै कवि पायि!

जुनी कथला के, कला-वर्णि ि,
 ि-ि रे, आबय जे काज!
 पुनि-िनि, फाटल, नूआ,
 जुनी कला रे, काज आबय!

बै आँगन, िबय जुनी,
 रैइया, काकी, रौ री ब ि!
 गाक-गाक, िरि, रि,
 हास्य-क्य के क ि ि वि!

इया, खी, इछी, कैची,
 िगा, ि-कमिक चाही!
 लता-नूआ बई, नाप ि,
 रजबू व लाई, जुनी के चाही!

कैथी, की, कट-कटुि आक्,
चिलक कढ़ाई, लय र प अनेक!
कढ़ाई कला रे, राक्कि रक्कला,
कथा-कत, फूल-पत आक्, बनबई छक्क!

कन्यादान, क्किगिरन, छक्कहा,
भुभ काज नक्कि उजनी क्कन पूणम
कि-कि क्कथला रे, भेटि उजनी,
रैक्कल स्मिर्व के, ई शेष पहचान!

अयि

आशु के जन्म

खोश्च आंश्च, देखलह जग,
समक अजीजी सेहो ठाढ़,
चाचा दुनु, नानी ओ मामा,
कयला सब सीगि सत्कार!

पमि संघषय

आनू कपड़ा नुआ सब आनू,
आआ सुजनी आशु के झापू,
बौआ हमर कापय रिरि,
एकरा झाथ कय राखय जाऊ!

पमि सफल

संरक्षण न-जीनि के भेल,
पमि संघषयअजिजे बआ अटि,
नीद पमि रिरि पर लेल,
नाचल हँसी अनेको मुख पर!

नामकरण

शीगणेश जीनि के भेल,
“अ”कार भेटल दादी सौ,
“अ”थि नाम देली मां,
बाबा सौ भेटल सहश आशीष!

अलकारी

आशु अलकारी गुजल चहँअशा,
घर-आँगन गुजल मरि संगी!
गिरिण भेल पफुञ्जलि,
सुंदर, मरि बनल संसार!

ठेहुआया

ठेहुआया दै जे बौआ दौड़ल,
दौड़ला सब हँअ बौआ पाछू!
अरइये बौआ इयो हँसइये,
सबके जान हँसबा के दइये!

गिरिनाइ

गिक खुलय सौ पञ्चनेक बोली,
अछु अ-अस्मष, लेअन मरि,
पानी के “पी”, दू के “डूडू”
बुझबा, बुझबाक र प मरि!

पञ्चल डेग

मा-अगि संग अलअललाइ खेलई,
नुका-छुपी खेलई मुसकाइ,
पकइर-किइर सोफा, पलंग,
भरलक आशु पञ्चल डेग गिरि पर!

श्रीदारंभ

मां संग आत्म करय पूजा,
 थां सौ आत्म सुनय कां!
 श्रीदारंभ आशु के पमि,
 मनोरंजक सीढ़ी जान अस!

मागदशम

आखड़ि चलू, बढ़ड़ि चलू
 इश्रीहास कखनो नश्वं असर,
 लेखन ओश्व मे उलझू नश्वं!
 राश्व-सपि माया छै...
 अश्वि-सपि देखू अश्वि!
 लक्ष्मी जीनिक ओश्व भेटि,
 नेत-ध्यान सब लक्ष्मी पर राखू!

ससि लक्ष्मी संग योजना,
 जीनि के बस एते संबल,
 सफल-असफल दुनू पचबै जाउ,
 अश्विरेक के दूर भगाबू,
 एश्वसौ जीनि श्विकट बनई छै,
 ि दुनू के असराबू,

झूठ-फरेब सौ दूर रहब,
 अपन सु-कमयमे रमल रहब,
 जौ दार आबय कोनो दुखी, असहाय,

कॉं पर हाँ जर र राखब,
गप्प हुनकर सबटा सुनब जर र,
झँ-अनझँ के झँनहँ अपन,
हुनकर मदद आगा करब खिन!

नाम पभु के नञ्चं असरब,
हर अँकार भय जायँ दूर,
जीनि याता बनँ सुगम,
मागयजीनिक जखनो देखब अँकार,
नेत बंद कय पभु नाम दोहराबू,
रसी खिनञ्चं होयँ पकाश!

सँसँ काया जीनि आरि,
ई थिय सँसँ राखब याद,
सँसँ संगझी, सँसँ भोजन,
देँ सँसँ झँचार संचार,
ई जीनिक मूल आरि!

अओ संग नञ्च आयल छै
जे संग अहा के जायँ,
दादा-दादी, नाना-नानी,
माय-बाप सेहो नै रकॉ,
अपन जीनि जीअ सब,
एक अँन मागयपकरॉ!
अथ्या संसार के माया जाल मे,

नञ्च कञ्चयो लपटायाम्!

अङ्गि जलं हि आमस्य होइछ,
 जे सदा बहै जाई छइ,
 रकब नञ्च, कौ अहा,
 चलई जायब सधै...
 अर पसन आर कि अहा...
 खेलई, अलखलाइ रहब अहा,
 नाम अयिसाकि करै रहब अहा,
 मा-अि केर मागदशम सब,
 संग राखने रहब अहा!

अचार

हम सोचई छी,
 जौ नञ्च अञ्चहि ि जीनि मे,
 जीनि इयो चञ्चि रञ्चयि,
 बनल रञ्चयि आरस, बेकार,
 चलई रञ्चयि बोझ र प सौ!

ि अयलह, आयल बहार,
 ि हंसलह, हंसल आत्मा-परमात्मा,
 जीनि मे, आयल बहार,
 चहुंअ गूंअ उठल मारि!

अशाफि रिईन

गजल

ब लुटैि हिल ब हर लुटाइि हिलौ

कवि नीक काज बि बटाएँ हिलौ

रन ि ाफ छलै झलकै ऐना जका

यि नैऽ कया कनक . हाएि हिलौ

उठाबैँ ब फायदा , झापन के हरि

झूठे हर ब केऽ नेह रे बन्हाएँ हिलौ

लगाक छाणि ॐ कल ककाकल लै छै बि

जाक्लर केि हरि रे हर रिएि हिलौ

ਖੁਭ ਬਟੈ ਦੁਖ ਨੁਕਾਬੈ ਅਸਾਹਿ ਿਓ

फल बाट पऽ दर्वि रू काएँ हिलौ

नायिण रशिला

गी

अपन काँ नैनाँ चलेलक' हरि प' चपेट
जखन भेल हरि आ ओक पकल भेट

गाछीरे रचान प' हर ओँलि ही
हेलीँ गरे टुकला खाक ओ आयल छली
करल नयन देखै भेल कआ र' अचो
जखन भेल हरि आ ओक पकल भेट

निँ न रन ओक छल, निंदरे किकऽ
राथा प' पव ना, नया पत्नी न लाली दपिऽ
खुलल काँ केशीयारे लेलक' रनके लपेट
जखन भेल हरि आ ओक पकल भेट

ऋएँ ग गेल ओह, आक गेल वहिक' गीऽ
आब निँ ओक देखैल, बेकल हैछी हकिगऽ
केँ न कआक दुःख, केँ बुझि कलेश ?
जखन भेल हरि आ ओक पकल भेट
अपन काँ नैनाँ चलेलक' हरि प' चपेट

अनेश रश्मया

गजल

कनकनीमे ठरल पाइन इन्हेर नै भ जाइ ।
गअबक घरमे कही कौ भोर नै भ जाइ ।।

मुह ि अबक रखनैये छै सोसकसब,
अयल मुह फेरसं कही जोर नै भ जाइ ।

एक साझ भुखले रहै अ अि अखनो हम,
श्रियापुकि दशा देख मनकही अघोर नै भ जाइ ।

अपन बाि राखैयोके सन्तिा नै देखे छी,
सन्तिले माहुरसन कही श्रिलकोर नै भ जाइ ।

ध्यान देबै यौ गौंसब रश्मयाके बाि पर,
मेहनिके फल फेरो कही घरक चोर नै ल जाइ ।

सुकोसुि आआर- बाउर, दशुभंगा

फूइस बाजी ि जि खसनी

बन्हन िर रहल ने गुजर-बसर
 लेब सप्पि की ? भेल छगुनी.
 जाने जगरना, देह छुबै छी,
 फूइस बाजी ि जि खसनी ! १
 आरागु छल अनबारक आगू,
 रोज आपै छल घर भगिनी
 पनही उाँष,ओलाँए राश्व,
 बैसी ओसार टाट लगनी ! २
 सगाा अयाउज , लसूनक पता
 बाड़ी केर लंका ियार िरनी.
 सदः कूटल , खिनश्च फटकल
 सुआदी चूरा होइछ सेहनी ! ३
 बेरहट आँगन , जलखइ दलान
 कलौ कए नश्चं किर ठेकान
 फुँि िर, संगे सभक बैसार
 बरसे अनेह , पसरे परसननि ! ४
 ठेअ-ठेअ झुटकी अकि अकि खेली
 कअया - झुमअ मोन घुमनी .
 अने कोटपीस, राअि पचीसी
 जीबि अखेलक गोअि भगिनी ! ५
 गप्पक खेँ , अिआक लती
 बेस अगती लुती लगनी,

आगू बढै देह देह जरै
 मारै छटकी नखं देर लगनी ! ६
 उकसाएल बाँी दुनमुन काकी
 उकष्ट के पुरखा गाथ पढ़नी,
 नूनू कहथे पुआ माँ हँसोथे
 आनेह केहन भगिने जनी ! ७
 डायनक शूल, देी केर फूल
 भगि भगाबे कलेश अननी,
 बटा चलै, चौरठ लक्षयाय
 पंचैी झट न्नाय करनी ! ८
 खढ़-पुआर, गोरहा-गोइठा
 चेरा-सुण्ठी जखन सठनी
 कोड़ो-काठी , हरौकि लाठी
 होम जराठी चुथी जरनी ! ९
 मूजक मौनी, पौी सीधक
 कोहबर, कोठी, सामा, चकौी
 िड़क अयैन. खजूड़क पथ्या
 सुजनी, करी कला अननी ! १०
 साउस-ससुर सुनर सार पँथयार
 साध-सरहोथक देख लणि
 असरे सु-बु, संसारक सभ दुःख
 सासुरक सुख भोगल जे कनी ! ११

बन्हन िर रहल ने गुजर-बसर
 लेब सप्प की ? भेल छगुनी.

जाने जगरना, देह छुबै छी,
फूइस बाजी िऽ जि खसनी !

राजदेवि मण्डल

आशुक स्त्रि

बन परसौंघी घर

आआआइवि आशुक स्त्रि

आकलैवि सुगन्वि

मन्द मन्द

शान्धमे सपन्द

मरि आगिज

सजौने साज

कनैवि बारम्बार

खोलवि अनन्वि संभानिक दुआर

बनवि आ-नूनि आरजनहार

ऐ हेवि होए एहेन आरि

बढै बुद्धि, शीकि, शीचार

तिमाल चाही सुरक्क ढाल

देखू पाछू नचै छै काल

लेने छै एहि पुरना जाल

र नन्दन स्त्रि पुछै सलिल

“की हरण कऽ सकब अहा हमर दुख

देख रहल छी घाँक र ख

कि सकब अहा आन्हल मुख

हएि कोनो मनुक्खे सन मनुक्ख?”



सृजन शेखर 'अजेय' (मूल नाम- गंगानन्द झा)

दूटा कश्मी

१

गीं सँ पञ्चने

शब्द छऽल चुप

पकाश सँ पञ्चने

अन्हार छऽल

समय भाथा गेल

समय भाथा रहल

समय आगू एतै

समय सँ पञ्चने

समय छऽल

अक अक ने केलौ

अक अक ने भेलौ

समय नञ्च सकलौ

एक मुटी अनगी

अनगी सँ पञ्चने

सास छऽल

अन्हार भेल मंच पर
चश्म रहल मिशा
नाश्म रहल नटुआ
टूटल िल िशा
मेला सऽ पञ्चने
बजार छऽल

र कऱैऽ िऽ मरऱैऽ
मरऱैऽ िऽ र कऱैऽ
किऱैऽ िऽ भेटऱैऽ
देखऱैऽ िऽ बुझऱैऽ
चलय सऽ पञ्चने
र कल छऽल

आगू सऽ बश्म गेल
आगू सऽ श्मका गेल
रश्म गेल से रश्म गेल
गाड़ी जकर छूश्म गेल
सपना सऽ पञ्चने
अइंख छऽल

बाँ श्म हेँ
मुँह जे नय खुजाँ

ठाढ़ कोना रहि
डोरी जे टूटि
अं सऽ पञ्चने
आश्च छऽल

माश्चक मुर ि
पाश्च श्चनु फाटै
माश्चक मुर ि
पाश्च छू भखरै
माश्च सऽ पञ्चने
माश्च छऽल.....

भेट नय भेलै
भीड़ छलै बहु
र श्च नय पेलै
जल्दी छलै बहु
पेमी सऽ पञ्चने
पेम छऽल

२

हऽम कनी मिसएऽल छी
आन टूटल अखने ि ओँघाएऽल छी

केलौ बहु सिंग भऽ गेलौ आलखज
देखलौ मुँह एना मे ि कनी लजायल छी

छोड़ू ओझ बाँ के दोसर कोनो बाँ कर
टाँ-टाँ एँना सच अँसराएऽल छी

चलब ने अनँनहार बाट अँनहार राइँ
डँ-डँ एँना डरे नुकाएऽल छी

बँ-बँ के चलैँ रहलौ अँनगी भँ
सहेजलौ ने एकहु सास िँ खँयाएऽल छी

अँखैँ रहलौ जाँ हाँ सऽ जाली खँ
उसरै ने पुणँ काज िँ कँपकाएऽल छी

माँय के अँ आदँ खोललौ ने बंद मुटी
दै के बेर िँ कनी अँचँचाएल छी

हँ ने पेलौ काँ ने पेलौ बनलौ बुँयार
अँदा के बेर िँ आय नोरे नहाएल छी

डो शक्वाणि कुरि- क्कछु बाल कर्वाणि

अबोणि बच्चा

टुकुर-टुकुर ओ िश्क रहल अश्क ।

आँखसँ दुआणि नाथ रहल अश्क ।

एश्क जग केर जगमगके आहारै, जग केर माया भाथ रहल अश्क
। ।

बाल-गोपाल सरि प छी बच्चा ।

सृश्च क कोमल र प छी बच्चा ।

छी अबोणि, पर बोणि कराबैछ, भगानिक छथी-र पके बच्चा
। ।

बच्चा नथी बस अगबश्च बौआ ।

बच्चा माने बुक्की आ बौआ ।

नेना कोमल, कोमल नेनपन, देख्ख कऽ झहुँसए आडन कौआ । ।

ईद छै अ होली छै

ईद छै अ होली छै ।

दुगा - छश् - अली छै ।

हमरा लए हर अ सुनर, कारण इसकूलमे छुटी छै ।।

ककर पाबअ, के मनबै छै ।

कहा बाि से एक फुरै छै ।

हमसभ खुश छी इएह सोअ कऽ, अबै बला छुटी छै ।।

ककर जन्म आ ककर बरषी ।

सभटा सरकारक मनमजी ।

हम बच्चासब इएह सोचै छी, एक अ फेरो छुटी छै ।।

रौद छै कङगर, लूऽ चलै छै ।

बखा - बुनी, शीलहरी छै ।

एक पखर हो हर मौअम जे, होअए घोषणा - छुटी छै ।।

हमहूँ पढ़बै मैथिली

हे ऐ बञ्जनजी, यौ मास्टरजी,
हमहूँ पढ़बै मैथिली ।
अन्दी, ईश्वरश, जमम सीखबै,
पर ने असरबै मैथिली ।।

मैथिली बाजथि दादा - दादी,
नाना - नानी मैथिली ।
बाहर जा कऽ माम असरलाह,
मामी असरलीह मैथिली ।।

कका - काकी जखन बजै छथि,
अन्दी फेटल मैथिली ।
बौआ - बुच्चीक मोन होइछ पर,
सीथहिँ हमहूँ मैथिली ।।

ि टीचरजी हमरा पढ़बू,
हमर भाषा मैथिली ।
आनो भाषा नीक लगए, पर
मीठगर छी बड़ मैथिली ।।

गथाि - जान - ज्ञानक भाषा,
जखनश्च होयि मैथिली ।
बुझबामे भाडठ नश्च होयि,
अपन भाषा मैथिली ।।

ऊद या ऊदखलाख (बाल कर्मी)

कोना करै छै, देखही एकरा,
ऊदमर्मी िऽ लेलकैए ।
की छी ऊद आ केहेन ऊदमर्मी,
ककरा िऽ लेलकैए ??

ऊद छी जी, जमीनक बासी,
इयो छै बड़ पाख्खा थय ।
पाख्खमे हेलए, डुम्मी काटए,
ओकरा छै बड़ माछ थय । ।

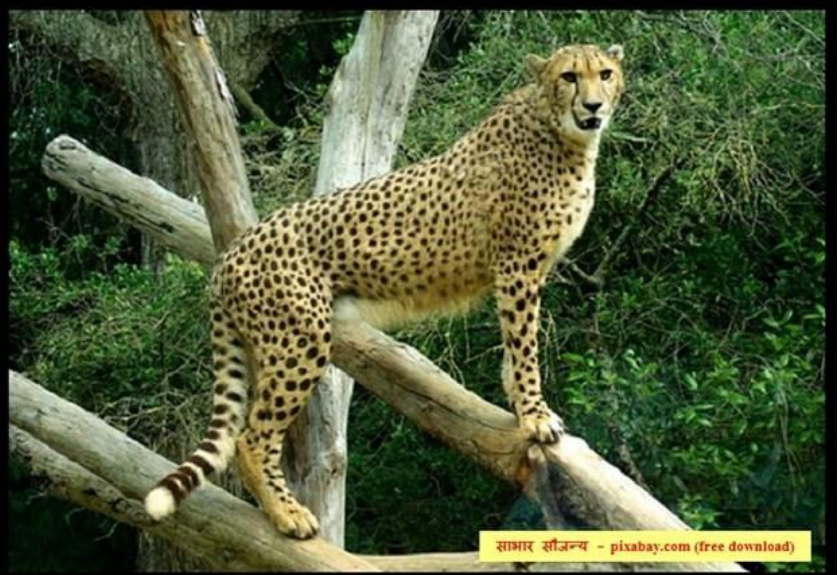
देहमे ओकरा बड़ छै फुर्ी,
बुटी - बुटी चमकै छै ।
की जमीन, की पाख्खाक भीरि,
मसि - मगन ओ रमकै छै । ।

बैष्ण ने रहइछ ओ आचैनसँ,
 पाआमे करइछ बड़ छलमल ।
 ि कहबी छै - ऊदमश्चि लिकै,
 जकर मोन बेसी चंचल ॥

ऊदमश्चि मोन ने रहए िर,
 लगले एम्हर, लगले ओम्हर ।
 जेना “ऊद” ने रहैछ िर,
 एखने एम्हर, एखने ओम्हर ॥
 संकेि आ अछु रोचक थिय -

ऊद ि ऊदअलाख मुखः सिलीय जीि अख आ मीठ पाआक
 जलाशय सभसँ लऽ कऽ समुरक नोनगर पाआ अि भेटैछ । ओ
 मासाहारी जीि अख आ माछक आकार करबामे बहुि माखर होइि
 अख । ओ पाआमे डुम्मी कटबामे आ गोि लगएबामे अत्यन् कुशल
 होइि अख । बाग्लादेशमे एकरा पोशुआ बनाए पखाअि कएल जाइि
 अख आ पखाअि ऊद मनुखक लेल नदीमेसँ माछ पकख कऽ
 आनैि अख ।

चीती (बाल कवीती)



साम्भार सौजन्य - pixabay.com (free download)

मैथिली - चीता (चित्रमे - अफ्रिकाक चीता)

हिन्दी - चीता

संस्कृत - चित्रकः, चित्रकायः, तरक्षुः, चित्रव्याघ्रः, वेगवत्, द्दीपिन्

अंग्रेजी - CHEETA (NORTH & EAST INDIAN ACCENT),

CHEETAH (SOUTH & WEST INDIAN ACCENT),

PANTHER, HUNTING LEOPARD

जैववैज्ञा० नाम - *Acinonyx jubatus*

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम रूपमे)

कतकाय - चीं शिद अक,

भां भवरै भेल वलुप ।

स्मृक अक देल नाओ,

पि स्मृक केतकँ लुप

।।^{*१}

“भांीय चीं” बाचल अक,

अगबक आब ईनरे ।

कछु के आशा छी एखनहु,

ओ भेटि बलुकसीनरे ।।^{*२}

ईनक चीं ओएह बूझ,

जे छल भां के चीं ।

भां आ भांँ पकछर,

एव यारे छल इएह चीं ।।^{*२}

चीणि केि इएह एक जिर्वि,
 छल एव याक भ टा चीणि ।
 बाकी चार्वि जिर्वि शेष जे,
 अक्क काक ` अक्क चीणि
 ।। *२

जबिा ििीक जन्हु एखन,
 स्थलरडिल पवि चार्वि अक्क ।
 भ ॐ बे ी तर्वि िि ॐ,
 चीक्कि टा ब दौडैि अक्क
 ।। *३

बा-व हि-न्दिआ जे अक्क `,
 िियु ििचि ििणी ।
 जगुआकि क्कन - िि राने,
 चीणि क्कनचि ििणी ।। *४

अल्म रयरे तर्वि णिँ ,
 कछि खेहर्वि काकाणि ।
 बाहिव णि, ह्रीन, नीलगाए,
 खव्दआ आव्द काकाणि ।।

अल्म रयरे तर्वि णिँ ,
 हकव जाइवि अक्छ चीणि ।
 कए काकाणि, नर्वि खाऽ कैछ,
 ओ आणि - पओने णिँटा
 ।। *५

कबस ओ अ हाय देव्व कऽ,
 आन उठाबैछ फायदा ।
 रालि काकाकि ले भागैछ,
 चीणि आ व हि - लकड़बगी

।। *५

भूखल चीणि उठैछ पुनु आ,
फेहि कछि काकाणि ।
जँ किदीनि नीक एक्क बे िँड,
बनैछ काकाणि - आहाणि ।।

भाणििय - चीणि भारिरे,
कए फेँ बा ।
कि क्योरे अक्क लागल,
आब भाणि के किाणि ।।

देशक ई भवँआएल िहिर्व,
निक्कि हइछ यिा ।
जनि भऽ हिल भाणि-भू पणि,
चीणिक ह पुनबा ।। *६



समाचार - prachay.com (free download)

अफ्रिकाक चीता AFRICAN CHEETA *Acinonyx jubatus*



किं आ कछु चिक थिय -

*^१ - स्मृति “कतक” ि “कतकाय” शब्द “चीि” शब्दक उत्पत्त भेल अछ । रुदा “भांिीय चीि” आब भांिँ विलुप (EXTINCT) भऽ चुकल अछ ।

*^२ - “भांिीय चीि” एखन रात ईनि देशरे बाचल अछ आ ि ओकी आब “ईिनी चीि” कह म्ब वंि कयल जाइ अछ । कछु लकक कहब अछ जे भांिीय चीि बलुकासीनरे ेह बाचल भऽ कै अछ रुदा किं पुक्क क लेल क नहु ि जाकक

अध्ययन नर्वि कयल गेल अक्ख ।

*३ - कजबै चीनिक कुल पाच जिर्वि (SUB SPECIES) अक्ख । पक्कल जिर्वि एव या रहादीपरे भेटए बला “भार्तीय या ईनीनी चीनी” अक्ख आ शेष चावटा जिर्वि अक्ख का रहादीपरे पाओल जाइ अक्ख ।

*४ - बाँ, व हि आ निआ आक्क वपिनी चीनी मुख्यतः वनचरि जन्तु अक्ख आ वनकरे व्हाका किनी अक्ख । चीनी अपन घाण शक्ति नि सुँबाक शक्तिक आनि पनि नर्वि अक्ख दृक् नि देखबाक करिक बले व्हाका किनी अक्ख ।

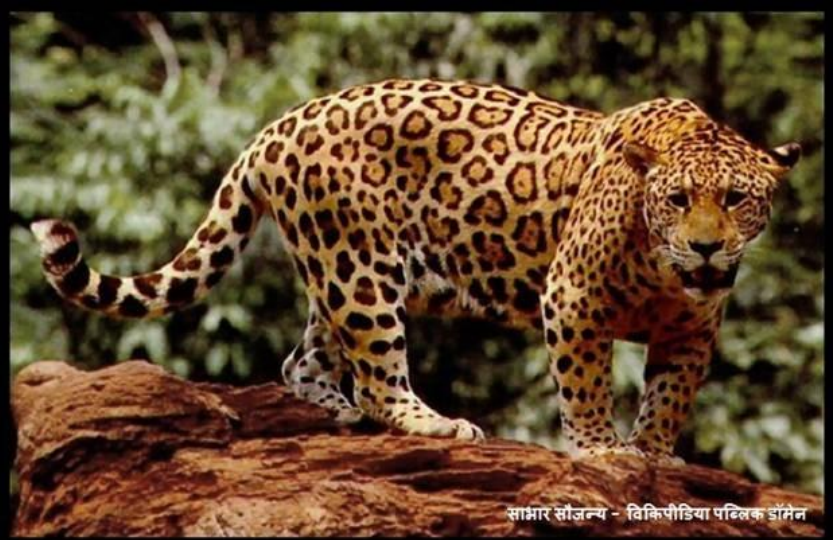
*५ - चीनी बहुनि कर रयाविरे बहुनि बे नी गर्बि वि पहुँक्क कै अक्ख । गर्बि पकड़बाक एक्क तर्वि क्रियाक काणि चीनिक तीणि (ACCELERATION) नि पवि चणि कएक्कहा नि जन्तु भरे भँ बे नी अक्ख । व्हाका किबि काल चीनिक औ नि गर्बि (AVERAGE SPEED) 64 क.क. वि निटा है अक्खपि शुरुआवि गर्बि 112 क.क. वि निटा वि भऽ कै अक्ख । गर्बि पकड़बाक एक्क तर्वि क्रिया अथा अत्सर्विक तीनिक काणि चीनिक शीनि बहुनि बे नी गरमभऽ जाइ अक्ख जाक्क चीनी बहुनि बे नी थाक्क जाइ अक्ख । ओ एबि थाक्क जाइ अक्ख जे अपन पकड़ल व्हाकाके अपना झारे विख आनि - पओन निटा सुँइ अक्ख आ किनि बादक्क ओ एक्क व्हाकाके खाइ अक्ख । बहुनि ओकनि तलावि नि हकरीक फायदा आन रा हाँ जन्तु भ (यथा - आन चीनी, बाँ, व हि, लकड़बगी,

हुडाँ आक्) उठबैँ अक् आ ुसीइँ चीँक . झाँ ओक
 व्हाकाँ लऽ कऽ भावा जाइँ अक् आ बेचाँ चीँ वँश भऽ
 देखैँ कि जाइँ अक् ।

*६- भाँय चीँके ईँनिँ आक् फेँ भाँ जगल भरे
 पुनविँ कबिँक यिँ भाँ किँ दाँ कएल जा हिल अक्
 ।

*अँजीक पन्थँ(PANTHER) शब्द चीँक अर्ववतिँ निँआ ओ
 जगुआँ लेल 'ह यिँति हइँ अक् ।

जगुआि (बाल कर्वीि)



साभार सौजन्य - विकिपीडिया पब्लिक डॉमेन

मैथिली - जगुआर

हिन्दी - जगुआर

अंग्रेजी - JAGUAR

संस्कृत -

जैववैज्ञा० नाम - *Panthera onca*

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम रूपमे)

जगुआकि रलिब नर्व चींि,

ओ िऽ आनक् जीं छी ।

कछु-कछु ण्दुआ का देखबारे,

रुदा ओ आनक् जी छी ।।*१

ि ि पै ऋलाक् अछैहु,

बहुक् ओ शक्शाली ।

छट रुदा ुगक् काय छै,

फुी छै ब प भि ।।

छट रुदा खूब रट पए छै,

बड़ छै पएकि रजगूी ।

रगि - काछुके चीक् कैक्,

दाकि िबा रजगूी ।।*२

हीन आक् िवाक बुझलक् अक्,

पै ऋलाक् द्वाकाकि कछि ।

ाप - रगि - कछुआ वृप जे,

किहु ने जगुआ छि डैछ ।।*२

वदनचि छी, विचि ेह ओ,

जखन र न, काका किछ । *३

नबका दुका के बाी अछ,

दक्खन-राज्ञ वहा किछ । । *१

न्दिआ आओ कलावड जेका ओ,

आ नीँ गाछ चढ़ैछ ।

पाव हेव कऽ ओ बाकि व,

नदी - गिके पा किछ । ।

“जगुआटि” आरेजन गिटीक,

भाषा के छी शब्द ।

किहिँ जगुआ बनल अछ,

अजीक नव शब्द । । *४

अहँ भके जँ फुऐ नऽि कछु,

कही रैकली नार ।

ि वि जगुआकि ककलारे,

एक जीकि भेल नार ।।*४



कि आ कछु चिक थिय -

*१ - आइ - काक जगुआि या जैगुआि (JAGUAR) शब्द शक्य ओ दृश्य राधर (AUDEOVISUAL MEDIA) प बिेी चकसि भऽ गेल अक आ ककिहु बेि ओकि भारक अथर्म“चीि” विया-

पुं भके बीओल जाइ अक्ख । रुदा ॑ नर्व, चीं ओ जगुआं
दूनु दू जन् अक्ख - एकदर वन । चीं पुनि दुक्किक (एव या
ओ अक्क का रहादेशक) रूल क्किं अक्ख जखक्क क्क जगुआं
नबका दुक्किक (दक्कनबां ओ उबिबां अरेविका रहादेशक) रूल
क्किं । जगुआं म्मुणमदक्कनबां अरेविका आ उबिबां
अरेविकाक राइ ओ दक्कनबां भागक न्नि केतरे पाओल जाइ
अक्ख । जगुआं बहुं क्कछु न्निदुआ क लागै अक्ख, रुदा
न्निदुआ ॑ ॑ह वन अक्ख । जगुआंकि चार पं बनल कां किं बाक
बीचरे एकटा कां बुनका है अक्ख पं, निआरे ॑ नर्व ।
 बाकी, आन अनं भं ि अक्कअक्क ।

*^२ - जगुआंक्कलाक्क कुलरे (Family - FELIDAE) आकां ओ
 भाकि अनुं किं किं (करशु बां ओ व हिक्क बाद) भं ॑ पै
 दस्य अक्ख रुदा कि अनुं पे ओ बहुं शक्किशाली हइ अक्ख
 । क्कलाक्क कुलक आन क नहु दस्य रगं ओ क्कछु के क्काकि
नर्व क्किं अक्ख रुदा जगुआं अपन शक्किशाली शदर्न
दां (CANINE TEETH) ओ हनीक्स्थक (MANDIBLE) बले
रगकि रजगूं खाल ओ क्कछुआक रजगूं खलके चीक्क दै
अक्ख ।

*^३ - बां, व हि आ निआ रुक्क किं विचि हइ अक्ख जखक्क क्क
 चीं क्कनचि । रुदा जगुआं क्कनचि ओ विचि दूनु हइ अक्ख,
 रलिब क्क ओ क्कन ओ विं दूनु रय रान र पे क्काकि कबारे
 क्क अक्ख आ क्काकि क्किं अक्ख ।

*४ - अंगीजिक “जगुआ” शब्द आरेजन िटीक केतीय भाषाक शब्द “जगुआटि” * लेल गेल अक्ख आ ि एक्क ठार रैक्कलीरे `ह हर ओक्क शब्दक यथार्थि िग कयल अक्ख । रैक्कलीरे जगुआ विदेशज शेणीक शब्द भेल ।

निन्दुआ या निनुआ (बाल कर्वी)



मैथिली - तेन्दुआ, तेनुआ (चित्रमे - भारतीय तेन्दुआ / तेनुआ)

हिन्दी - तेन्दुआ (चित्रमे - भारतीय तेन्दुआ)

संस्कृत - चित्रक, चित्रव्याघ्र, शार्दूल, श्वव्याघ्र, उपव्याघ्र, व्याल

अंग्रेजी - LEOPARD (चित्रमे - INDIAN LEOPARD)

जैववैज्ञानिक नाम - *Panthera pardus*

(चित्रमे - *Panthera pardus fusca*)

(संस्कृतमे आ प्राचीन मैथिलीमे तेन्दुआ "चीता" शब्द केर अन्तर्गतहि समाहित छल । आइ काल्हि प्राणिशास्त्रीय वर्गीकरणक अनुरूप नवका मैथिलीमे सेहो एकटा पृथक मानि "तेन्दुआ" या "तेनुआ" संज्ञासँ सम्बोधित कएल जाइत अछि ।)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

कछु-कछु बाकि क लगै छै,

कछु कलै अछ चीति ॐ ।

पाकरे बाकि क हेलै अछ,

गि कलै अछ चीति ॐ ।।

कतकाय छै चीकि क, रुदा

कविया बिना गल ने छै ।*१

गाछ चढ़ारे बहुकि राकि,

पै कलाकरे ज़ड़ ने छै ।।*२

गाछ चढ़ै छ झट रूँहरे एिने,

रूइल बहु भागी काका ।

छीक कैछ ने बाक कैकि,

आन केओ रूहँक आहा ।।

गाछक र टका डाक प बि ल,

भक्कण कौँछि क्काकाणि ओ ।

क्कनभर्वी लूलि हिइछ ओक्क ठा,

उँछि इअ अन्हाणि ओ ।।

बाणि - व हि - चीणि ँ छट छै,

लागैणि छै जगुआणि जेका ।

एक जँ क्किए दुहु ठा दुक्काणि,

अलग फेणि जगुआणि कहा !! *३

णिनुआ भेटैछ एव या - अक्क का,

वर्वेणि केत्त - जलणियुरे ।

बालि छै ब केत्त वषिर अर्वि,

रर - क्कर जलणियु जे ।।

“क्कर-णिनुआ” अलगक्क छी णिणी,

भेटैछ ऊँच पहाड़ पणि । *४

ओबिक्क अलग ओ छी न्हुआँ,

जबिा चीणि - बाणि भ ।।



किं आ कछु चिक थिय -

*१ - िचीन स्मृति “कतकु” ि “कतकायु” शब्दे
आजुक “चीणि” ेह आबै छल आ “न्हुआ या न्हुआ” ेह ।
कछु लक स्मृति “कि” शब्द ेह न्हुआ रानै छथ प
कि चीणि आ बाणि आक लेल ेह आयल अक । कन्दीरे
ेह “न्हुआ” शब्दक आगरनक शि सप्त नव अक; मभि

क नहु जनजातीय भाषा ि ब्रलीँ आयल छल आ ओक्किँँ
रैकलीरे ेह आयल । रैकलीरे “न्दिआ” शब्द यथार्थि श्रुति
हइ अक्क जक उच्चा भेद (PHOENETIC
VARIANT) “न्िआ” ेह अक्क ।

*^२ - न्दिआ गाछ पं चढबारे बडड राक्कि हइ अक्क । ओ
क्काकि कएलाक बाद ओक्क क्काकि लहाशके अपन रूँहरे दाक्क
आ ानीँँ गाछ पं चक्क जाइ अक्क । एक्क किाँ ओ अपन
भजनके आन विदिन्दी क्काकि भँँ (जेना क - बाँ, व हँ, चीँ)
आक्कँँ) ुक्कि कऽ लै अक्क ।

*^३ - पै कलाक्क भरे न्दिआक अववति रात जगुआँ गाछ पं
चक्क पाबै अक्क । जँ पुनि आ नबका दुक्कि क नहु स्थल रागम
दाँ पस्मि जुडल हैँँ िँऽ म्माँ न्दिआ ओ जगुआँ अलग
- अलग णीक र परे नवँ वक्कि भैल हैँँ ।

*^४ - “क्कर न्दिआ” (या क्कर न्िआ) नारक जन्तु “न्दिआ” (या
न्िआ) केँ क नहु जाँव नवँ छी अक्कि एक गट सँन्ति
राभकी जन्तु छी । ओक्क दूनूरे ओबिक्क अनँ अक्क जबाँ क
न्दिआ ओ आन पै कलाक्क (बाँ, व हँ, जगुआँ, चीँ) भरे
अक्क । “क्कर न्दिआ” (Eng. - SNOW LEOPARD /
OUNCE) (Bio. Name - *Panthera uncia* syn. *Uncia*

uncia) भारिरे रात कुरालय परि
 शेणीक 3000रीटि ॐ 4,500 रीटि (9,800 फीट
 ॐ 14,800 फीट) केि ऊँचाई वि भेटैि अक्छ । भारिक
 अववित्ति विकृवकि र प ॐ ओ नेपाल, भूटान, चीन, रङ्गिया,
 अफगाक्सीन, पाक्सीन, कजाक्सीन, कङ्गीसीन, विक्जक्सीन
 आ उजबेक्सीन देशरे पाओल जाइि अक्छ ।

बनकलावड़ आ खटा ७/खटा

(बाल कर्वी)

छी “कलावड़” ओ जे रनुतख के,
डि - आडन खवहान भेटैछ ।
आ रनुतख के पर्वशिक्करे,
जकि भक नीन पलैछ ।।*^१

आन कलावड़ जकि जे बाचल,
“बनकलावड़” के नार पाबैछ ।
बा - ब्रन जगल आ झाड़रे,
बनकलावड़ के बा हैछ ।।*^२

झ - पीकि रुरै - रिरै,

बाट - णिट खव्हान भेटैछ ।

छै कालावड ॐ पै - पुष ओ,

र टका भ कना कालावड लागैछ ।।

एककि णिँड यौ गार - णिँडिरे,

द णि नार “खटा ु” कहैछ ।

पिँ“खटा ु” शब्दक पविरे,

आनहु जनुकि नाओ आबैछ ।।*३

णि अथक्क फवछौठ लेल कछु,

हअए उपाए ॐ राग कछि ।

ज वड वशिषण, कन कएल णिँ,

अपन - अपन दूनू नार पबैछ ।।*४

जे खटा ु रायाणि रूहक,

“बनकालावड खटा ु” भेलैक ।

अथि रा॒क भकण काणि,

“रा॒भक्री खटा॒” हे॒क ।। *५

आन रू॒हक जे खटा॒,`

रा॒ ख॒इछ, फलाहा॒ि क॒छ ।

ि अप्पन गुण के॒ि अनु ा॒कि,

“ भि॒क्री खटा॒” भेलै॒क ।। *६

कि आ कछु चिक थि -

*१ - रै॒थलीरे जा॒क जन्तु॒क नार “क॒ला॒क” अ॒क ` अ॒जी जी पि
पि “ि॒थि क॒ला॒क” (DOMESTIC CAT / FERAL
CAT) भेल कएक ि ई रनुत॒खक ि-आडन खर्व॒हान-दलान
आ॒क स्थान॒क पि है॒ि अ॒क । सि॒ क॒ला॒क बे पि रय
रनुत॒खक के॒ि पर्वि॒शरे क॒ि अ॒क, ओक॒ि ब॒क्या भ रनुत॒खक
के॒ि पर्वि॒शरे जन्म लै॒ि अ॒क आ पै॒हु ह॒इि अ॒क ।

*२ - आन क॒ला॒क भ जे रनुत॒खक पर्वि॒श ॑ दू॒ि बा॒ि-ब॒न, ज॒गल-
झाड़ आ॒क्रे है॒ि अ॒क आ ज॒क॒ि ब॒क्या भ ओही पर्वि॒शरे जन्मै॒छ
आ पलै॒छ-बढ़ै॒छ, कि॒ि भ॒के रै॒थलीरे “बन॒क॒ला॒क” कहल जाइ॒ि

अच्छ । ओ भ आज-प्राणि कहुखन-कहुखन रनुतखक पर्विशरे
या बाट-गिट प रि-क्री भेव कै अच्छ प बि बी काल
रनुतखक पर्विशिँ दूकि है अच्छ । बनकालावड कालावडक
अपेक आकारि थ डेक पै हइ अच्छ ।

*३ - बनकालावडके खटा (उच्चाणि - खटाउ या खटौ)

अथि खटा (कल्याणी क शरे देल निमीक अनु ाि) 'ह कहल
जाइ अच्छ । रुदा एक शब्दक एकटा रस्य छैक । खटा या
खटा शब्द बनकालावड रूहक जन्तु अविर्ति एकटा आनहु
जन्तु लेल युति हइ अच्छ जकी
अजीरे गिट (CIVET) कहल जाइ अच्छ ।

*४ *५ - आजुक पर्विस्थविरे एक निहिक ओझाएल शब्दके

फर्विछाएब आ फर्विछाए कऽ पर्विभाक्कि कबि आशिषक । हर
रानी ओ वषरि के देखै खटा या खटा के दू टा व्यापक
रूहरे बाटल अच्छ ।

*५ - खटा (खटा) के पकल रूह भेल “बनकालावड खटा
(खटा)” जे क ऊपि “बनकालावड” नारँ पर्विभाक्कि कएल गेल
अच्छ । ई जन्तु भ कालावड कुल या राया कुल (Family -
FELIDAE) के दस्य अच्छ । ई भ निकृविक र पँ रुखा
रा के भक्क कछि

अथि रा भक्की (CARNIVOROUS) हइ अच्छ । नि
एकी भके “रा भक्की खटा (खटा)” 'ह कह कै छी ।

*६- खटा (खटा) के दि रूहके कन्दीरे “गनकाला” कहल जाइ अछि काणि जे एकि एकि भरे कस्ती वा गुन्ह (गुर्वा) हइ अछि । रि रैथलीरे “गन्हकालाव (या गुन्हकालाव) खटा (खटा)” कह कहै छी । रुदा ध्यावि जे “गन्हकालाव”क नहु कालाव नहि छी आ नहि कालाव कुल या राया कुल (Family - FELIDAE) अ एकि क नहु मन्नि अछि । ई जन्तु भर्वीइडी कुल या गन्हकालाव कुल (Family - VIVERRIDAE) के दस्य अछि आ विचि हइ अछि । ई भ विकृति र प रा आ गि मि फल (यथा - आर, चीकू, डिडकून आदि) ओ मि -पाकि भक्षण हे कहै छि, रलिब कह ई ब नै वाक र पे भिकी(OMNIVOROUS) हइ अछि । रि एकि भके “ भिकी खटा (खटा)” हे कह कहै छी । बगिलीभाषारे एकि “गनग कूल” या “खाट श” कहल जाइ अछि ।

बाँ (बाल कर्वाँ)

गिजा रवी गेल, गिज िँड अकए ।

व हि रूइल का, बाँ िँड अकए ।

जाक जगिलरे व हि अलकाँ,

कि ठा गिजा बाँ िँड अकए ।।*१

व हिक छल ामाज्य वंश भवी ।

ककय ओबा नवी छल बाकि ।

ता पलटल, व हि कलक गेल,

कलटल झिय बाँ िँड अकए ।।*२

भँ पैँ कलाक बाँ छी ।

दिनर्नि व हिक अक्ख पदी ।

पि जे ह , १० जगिलरे,

रायाकि ामाज्ज िँऽ अक्खए ।।

भाणि, दक्खन्नपूब एव या ।

कन्ध-पड्ढ ि आ ाइवेविया ।

एव याक ओ रात िहिर्व,

दुक्काणि भवरै िख िँऽ अक्खए ।।*३

चारक िमि छै लाल - नागिी ।

िक्क पि काी - काी पटी ।

पेट, गाल, नाडर्व छी उज्जि;

काी िगिक छाप िँऽ अक्खए ।।

जे कहबैछ बगिलक बाणि ।

छी पूणि भाणि केणि बाणि ।

अजिजक देल नार ई भारक,

ऊँि एखनहु बाँि िँऽ अकए ।।*४

नगि ििलीक भाँि केँ छी ।

काँनि - पँि । नेपालक छी ।

पछबाँि कथला गण्डक टि,

एखनहु शँमि बाँि िँऽ अकए ।।*५

भ कलाकडे पाकक डऽि ।

एकी किँि डऽि ने भऽि ।

ुन्नाँनि गी - वरुहानी,

दलदल डियँ बाँि िँऽ अकए ।।*६



कि आ कछु चिक थि -

*१ - पकने रसि भार्षिषे व हिक तमाज्य छल । एकक जगिलरे व हि (LION, *Panthera leo*) आ बाि (TIGER/TIGRE, *Panthera tigris*) दूनू हिँ छल आ िक् रएरे व हिके जगिलक गिजा कहल जाइ छल । िँ - िँ क्काकि काणि व हिक खिा बहु िँ टिल । टिल िँ बाकि खिा ेह, रुदा व हि अपेक कर िँ । आ जाक् ठार व हि अलक् भऽ गेल िक् जगिलक गिजा बाकि कहल जाए

लागल ।

$$\begin{aligned} \text{अकूअकू} &= (\text{अकूअ} + \text{इ} + \text{ह}) = (\text{अकूए} + \text{ह}) = \\ (\text{अकूए} + \dots \dots \dots \text{ह के ल प}) &= \text{अकूए} \end{aligned}$$

*^२ - बहुणि पकने व हिक ामाज्म बाकि ढिलनारे बहुणि वसिँ छल । व हि पकने म्मुणमभाणिषिक्क जगिलरे पयार्प रातारे (म्भाणि बाँ बे ि रातारे) छल । रय बदलल, पर्वक्स्थर्व उनक्क गेल आ आब गुजगिक वार्विनिके छाक्क व हि रूचा भाकि जगिलँ अलक्क भऽ गेल । व हिक ढिलनारे बाकि क्स्थर्व भारिरे बहुणि बे ि नीक अकू । आ व हिक अनुपक्स्थर्वरे बाक्क जगिलक गिजा भेल ।

*^३ - बाणि किकृर्विक र पँ रात एव या रहादेशरे भेटैँ अकू । भाकि किक भाकि पड़ ि देश भ, आन दक्कछन-पूब एव याक देश भ आ र क इबेर्विया दिशक दक्कछन-पूब भागरे भेटैँ अकू । ि ओ खा िँऽ अकूए ।

*^४ - ईस्ट इण्डिया कम्पनीक बगिल स्टेटरे किक रय आजुक पक्कर बगिलक अर्ववर्ति क्कहाणि (क्कथला क्कहि), उड़ी । आ बाङ्गला देश अबैँ छल । ओ लकक णुन्दनिरे बाकि देक्ख कऽ ओकनि नार “रॉयल बगिल टाइगर (ROYAL BENGAL TIGRE)” किक देलक्क जखक क्क किक रयरे बाणि रसि अर्वभाक्जि भाकि जगिल भरे ारान्म र पँ भेटैँ छल । किक रय अपना क्कहा भेटए बला बहुणि ि जी-जन्तु ओ गाछ-

कवचिक नार बगिलक नार ॐ विष्व देल गेल जे भारक छल आ
अछ । किना ई बाँहि ॐह । क नहु जैँजिआक नाओरे
जि. “बेगालेक (bengalensis /
benghalensis)” त्तिय जुडल ह अए िँड बे ि म्मानि जे
ओ जैँ-जाँ वि ि जिआँ अपना क्क ॐह िरान् र प ॐ भेटै
ह यि ।

*५- क्कलाक पछबाँ िरा प ि गण्डकक टि प ि अक्स्थि
जगल भरे एखनहु बाँके देखल जा कैँ अछ । पक्छर
चम्पानिक “विल्कि क्क उदान” (VALMIKI NATIONAL
PARK & WILDLIFE SANCTUARY) केँ “विल्कि बाँ
वजिमेँ (VALMIKI TIGER RESERVE /
VTR) भाँरे बाँकि िख िकृक आँि केँतरे ॐ एक अछ ।
एकहि ठीक उत ि भऽ नेपालक िरारे अक्स्थि “क्कानि क्क
क्कुज” (CHITWAN NATIONAL PARK) आओँ “प ि
नियजन् ि आँकि” (PARSA WILDLIFE RESERVE) ॐह
बाँकि िकृक आँि केँत अछ । एकरे ॐ क्कानि क्क
क्कुजकेँ युनेस्क् (UNESCO) दाँि वंश मदा केँत (WORLD
HERITAGE SITE) केँ शेणीरे क्क कएल गेल अछ ।
िसँरे ई िनू न्नि केँत रीक् कऽ एक ग ट बाँि आँकि
एकई केँ चिना कँछ जकाँ “क्कानि-प ि-विल्कि बाँि आँकि
एकई” (CHITWAN-PARSA-VALMIKI TIGER
CONSERVATION UNIT or CPV-TCU) कहल जाई
अछ ।

*६ - कालावड कुलक आन दस्य भके पाव ँ बड डडि हइ
अव । “मिलि कालावड” - एक गट विद कहबी छै
 । रुदा “बा” आ “जगुआ” एहेन दस्य अव जकी पाव ँ डडि
 - भडि नव हइ छै । ई दूनू पावरे बहुि दू वि आ बहुि
काल वि हेव कौ अव । वि बाकिे उन्निनि
 क विरुहानीक (DELTA) दलदली केतरे ेह क नहु अ ौकयम
 नव हइ छै ।

कालावड (बाल कवी)

बाकि रौी कहै छी जकी,
किहि नार “कालावड” छै ।
एकक कुल के जी दुनु छै,
बहुकि छ ट कालावड छै ।।

छ ट ओकि कद-काठी छै
ि, वचि हिल कबा छै ।
पै कालावड जेका ओकि नरि,
व कुवड हिल माज्य छै ।।

कखनहुँ म्माउ-म्माउ बाजै अक,
खन गुम्हाँ आबाज छै ।

डि-आडन क बा-ब न,

भठा रायाकि गिज छै ।।

अपना कथलारे किद बड़,

“ग नू झाक कलाक” छै ।*१

एबि कीकमजे कहबी बक गेल,

“ग नू झाक कलाक छै” ।।

राभक्री आ चडि काकागि,

रू क कछि काका छै ।

राछक चाट बहु छै ओकी,

दूकि दु काल छै ।।

जए कलाकक पहुँच अ ममि,

“ीक” एहेन करण छै ।*२

ीक टुटल डि भाग कलाकक,

ि ई कहबी वीनि छै ।।

ि-आडन जे भेटैछ हदिर,

एह कहबैछ “कलाक” छै ।

जलि-झाड़ कलाक ह्वैछ जे,

ि “बन-कलाक” छै ।।*३

निआ ओ जगुआि जेका ओ,

गाछ चढ़एरे राकहि छै ।

ऊँच भनि ओ गाछ-कवछिँ,

कूक जाइछ जग-जाकहि छै ।।*४

कि आ कछु चिक थिय -

*१ - गनू झाक कस एक कलाक कि ने क्वाद भेल क ओकी नार प कि कहबीअक बक गेल ।

*२ - “ीक” सिद्धि दू, दही आ राखन आकके कलाक छँ
कि खिबाक एकटा सी लेकन बहु नीक उपाए छल ।

*३ - “बनबलाक” सिद्धि रनुतखक के पर्विशरे है अक आ जे जगिली पर्विशरे है अक ` “बनबलाक” कहबै अक ।
 बनबलाकके “खटा” (उच्चाणि - खटाउ या खटौ)
 अथी “खटा ” `ह कहल जाइ अक ।
 रुदा “खटा” या “खटा ” शब्दक अनगमि “बनबलाक” अविवर्ति
 एकटा आन जन्तु `ह अबै अक जकी
 अजीरे “ गिटि” (CEVET) कहल जाइ अक । एक गुणक
 आगि प एक रैकलीरे “गन्धबलाक” कक कै छी (हलाक
 रैकलीरे एक ई नाओ चिकल नव अक) ।

*४ - बलाक कुल (Family - FELIDAE) के रात ४ टा
 दस्य गाछ प चढ़बारे राखि हइ अक । ओ चार दस्य
 अक - न्हुआ (न्हुआ), जगुआ, बनबलाक आ सयिकलाक ।

व हि या व ि (बाल कर्वाँ)

व हि कहू या व ि कहू अहँ,
छी ओ िँड जगल के ि जिजा ।
पक्कने छल वचिँ ि वशि भवँ,
रुदा आब बाजल अक्ख बाजा
।।^{*१}

जिज ओक ि भारिँ भवरै छल,
आ िँ पक्कछरक एव या ।
छाक्क हाँ ि रर भूक्क के,
भेटै छल हि ठार अक्क का
।।^{*२}

दू शिबि पक्कने वि िँड,
 यूपिहुरे बड़ है छल ।
 गिगैवहाव क कालक युगरे,
 भवि अरेविका ओ कर्णी छल
 ।। *२

आब िँड बाचल ठार-ठीर कछु,
 जए िक्कि जलिल अकछ ।
 भारि के गुजगिक “वावनि”,
 ओतक व हिक रगिल अकछ
 ।। *३

अकछ यिा चक्क हिल ब ाबी,
 व हिके आनहु जगिलरे ।
 पक्कल खेप छी रध्म-दिशक,
 “कुन” नार के जगिलरे
 ।। *४

हिना अक्काक क्स्थर्वि छै,
 ओतहु कम्पक्क व हि बचल ।
 नकिा वानिरे पक्कनेँ,
 व हिक खिया बहुि टिल ।।

पुरष-व हि केि गदक्क पणि छै,
 के विया के क “के ि” ।*
 ५

व हिनी केि नर्वि हिछ टिट पणि,
 लटकैि नुनि क “के ि” ।।

इएह के ि केि काणि व हिक,
 नार “के ि” ँह पडल ।
 इएह “के ि” जिए - िए,
 अक्क शूतिकि पयाय बनल ।।

ક્રિ આ ક્ષુ ચિક થિય -

*૧*૨*૩ - બહુ પક્ષને વ હિક માજ્ઞ બાકિ લિનારે બહુ વસિં છલ । વ હિ પક્ષને એવ યા, અક્ષ કાક અર્વવિતિ યૂપિ આ દૂનૂ અરેવકિ રહાદેશરે પાઓલ જાઈ છલ । કૌંબ દ હજાં ષિમ પક્ષને અરેવકિ રહાદેશ આ ગિર્વેહાવ ક કાલરે (PREHISTORIC ERA) યૂપિ ઁ વલિપિ મેલ । મારિરે ેહ રાત ગુજાંકિ વાનિરે ક્ષુ વ હિ બાચલ અક્ષ । હા, અક્ષ કાક વ હિ મક્ષ વ્યર્વ મારિય વ હિ મ ઁ ક્ષુ નીક અશિય અક્ષ ।

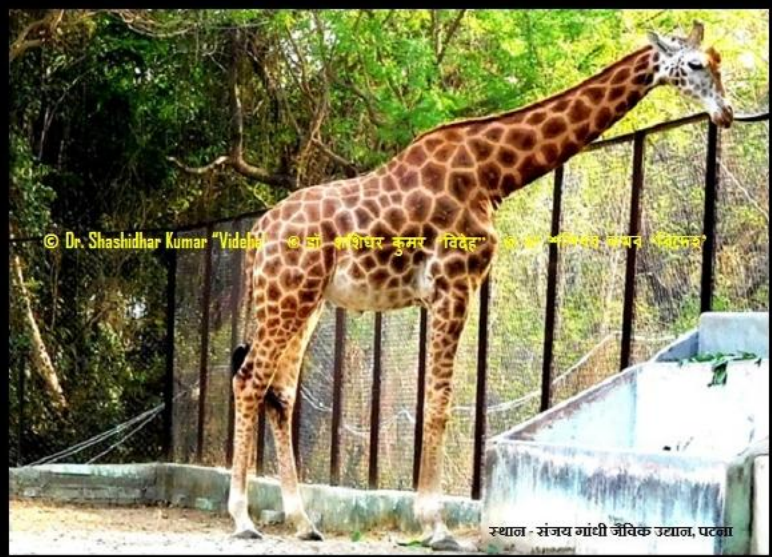
ક. િ .	રૈક્ષલી નાઓ	અગિજી નાઓ	જૈગિજાવક નાઓ	વ હિક વ્યર્વ
૧	મારિય યા એવ યાક વ હિ	Asiatic Lion / Indian Lion / Persian Lion	Panthera leo persica	વ્યર્વ (વ્યર્વ) અ ક્ષ
૨	અક્ષ કા ક વ હિ	African Lions - collectivel y (Each	Panthera leo leo & other approx. 17-18	વ્યર્વ (વ્યર્વ) અ ક્ષ

		subspecies with a different name individually)	subspecies	
૩	યૂરોપિક વ હિ	European Lion	Panthera leo spelaea	કાંબ ૨,૫૦૦ ષિમ પક્ષને વંલુપિ
૪	અરેવિકા ક વ હિ	American Lion	Panthera leo atrox	કાંબ ૧૦,૦૦૦ ષિમપક્ષને વંલુપિ

*૪ - ભારિરે એખન રાત ગુજારિ િજ્યક વાર્વિનરે (GIR FOREST NATIONAL PARK & WILDLIFE SANCTUARY) વ હિ બાચલ અક્ષ જે ક નહુ િકૃત્વિક આફદ યા રહારાકીક કાળિ એક િક્ષ ંડડાહ મડ કૌં અક્ષ । એક્ષ બાકિ ધ્યાનરે રિંચૌં ભારિં કિાં વ હિંકે વ્કષ્ટુ આનહુ જાલિ મરે પુનસ્થાપ્તિ કબાક યિા કડ હિલ અક્ષ । એહન પક્ષલ યિા રધ્મ દિશક “કુન-પાલપુરિ નિજીં અમયાણિ”(KUNO - PALPUR WILDLIFE SANCTUARY) કબાક િયારિ મડ હિલ અક્ષ ।

*५ - पुर ष व हिक गदक्षँ चहु व्दक्का सणिभ पीयणि (णि क्कछु
 जिावरे पीयणि-भूणि-काणि) णिक के लटकैणि हैंणि अक्ख जक्कि
 सिक्खि आ रैक्खलीरे “के णि” कहल जाइणि अक्ख । इएह काणि
 व हिक एकटा पयायी नाओ “के णि” ँह अक्ख । व्हन्दीरे
 एकणि “आयाल” आ अण्णिजेरे “रन” (MANE) कहल जाइणि अक्ख ।
 व हिनीरे एक्ख णिहिक चिना नवणि हैंणि अक्ख ।

कजफ (बाल कर्णी)



मैथिली - जिराफ

हिन्दी - जिराफ़

अंग्रेजी - GIRAFFE

संस्कृत - चित्रोष्ट्र

जैववैज्ञा. नाम - *Giraffa camelopardalis*

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल टरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

“व णि” हिए देशी, कदेशी “वाणि” छल
।

“हरिकणि” - ग्रीक आज भेल रैक्यली
।।*^१

“બાજ” મેલ રૈઘલી, “આબાજ” મેલ રૈઘલી
|

ઠિના “કગીર” - “ઘગીફ” મેલ રૈઘલી
| | *^૧

અઘીરે “બાજ” છલ આ અઘી “ઘગીફ”
છી |

અઘીરે ેહ ઘદેશજ “ઘગીફ” છી
| | *^૨

દેશક ને જીં ઓ, જીઠિ ઘદેશી છી
|

િં જે ઘદેશી છલ, નાર ેહ રૈઘલી
| | *^૩

ઝંટહુ^૦ પૈં દેઘૂ, ગદઘ આ ટાડ છે |

અઘ કાક િળી છી, નારઘ “ઘગીફ” છે
| |

दुकारिरे बे गीरि इएह एक नार छै ।

रैथली की ? - अगीजी, कहन्दी गि आन छै
।।*४

बबूकि छी पावि वयि, शुद शाकाहारी छी
।

अक काक राज्ञ-पूब-दक्खन केि बा गी छी
।।

एबि वि ऊँच आन गिगी पगि जीगि नव
।

गिगी जरीन बुझू - गह केि गिगि नव
।।*५



फ़ि आ कछु चिक थि -

*१ *२ *३ - जहना GUITAR ॰ बनल वाणि, HARMONIUM
॰ बनल हनुक़ा आ अबी भाषा ॰ आयल शब्द “बाज” (कड़ै)

रैखलीक वैदेशज/वैदेशी/कदे ी शब्द भण्डारै श भायरान अक्ख किना
 आन बहु ि शब्द एक शेणीरे आओहि आबै अक्ख आ भवषिहुरे
 आबै हि । ई क नहु कजबै भाषाक शब्दभण्डारै हरएबला एकटा
 ि क्रिया अक्ख । कगीर (ऑस्ट्रेलियाक एकटा णीक नाओ)
 आ कजिफ (अक्क काक एकटा णीक नाओ) शब्दक रैखली ि आन
 भाषाक (यथा - अंगीजी, कन्द्री आक्क) शब्द-भण्डारै आगरण ेह एक
 क्रियाक भाग कक । एहेन जी ि क नहु बस्ति जे एक ठार नवि
 पाओल जाइ अक्ख कि स्थानीय नारके हू-ब-हू सीकाकि कऽ लेब
 बे ी उपयुक्ति कक ।

*४ - रैखलीरे “कजिफ” शब्द अबीक “जिफि” शब्द ॐ आयल
 अक्ख पञ्च अबीरे ेह ई शब्द देशज नवि । अबीरे ई शब्द
 म्मि . राक्कया नारक अक्क की देशक भाषा ॐ आयल अक्ख ।
 कजिफ अक्क का रहादेशक रूल क्ति ी अक्ख आ ि विमन अपक्की
 देशक भाषा भरे एक अलग - अलग नाओ अक्ख । शेष मुणम
 वशिरे ई जी किजिफिक्क नाओ ॐ जानल जाइ अक्ख ।

*५ - ििि पि (जरीन पि) एखन पाओल जाए बला रसि कजबै
 जीरे “कजिफ” भ ॐ ऊँच जी (TALLEST LIVING
 TERRESTRIAL ANIMAL) अक्ख ।

बिज्जी या पनौँ (बाल कर्वी)



मैथिली - बिज्जी या सपनौर या सपलेउर

(चित्रमे - सामान्य या साधारण भारतीय बिज्जी)

हिन्दी - नेवला

संस्कृत - नकुल, सर्पनकुल

अंग्रेजी - MONGOOSE (Sing.),

MONGOOSES / MONGEESE (Plu.)

(चित्रमे - INDIAN GREY MONGOOSE / COMMON GREY MONG.)

जैववैज्ञा. नाम - बिज्जी कुलक (Family - HERPESTIDAE) प्रायः

१४ वंशक (GENERA) सदस्यगण

(चित्रमे - *Herpestes edwardsii*)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ अs जाइत अछि - तत्सम रूपमे)

ओ बिज्जी छै ! पनौँ छै !

ओ छै ऋज्जी ! पनौं क्खे !

की भेलह ? क्खए लड़ै छह ि भ ?

जे ऋज्जी, एह पनौं
छै ।।*^१

ओ ऋज्जी छै !
पनौं छै !!

बाड़ी - झाड़ी ब िरै छै ।

भवि कन ब दौकहिं हिं छै ।

गाछ - कवछ नक्खि चढ़ै छै ।*^२

िंिं पि क्खछु िं िकै छै ।

जएह कहाबैछ ऋज्जी एक ठा,

द्र ि ठा पनौं छै
।।

ओ ऋज्जी छै !
पनौं छै !!

राुक भक्क जीं क्खे ओ ।

विने, वनकरे काँछि ओ । *३

अपहु के भिक्खु काँछि ओ ।

गहुरन ॐ ॐ ने डाँछि ओ ।

कहबी - आपक दुशरन कज्जी,

पलेउणि - पनौणि छै
। । *४

ओ कज्जी छै !
पनौणि छै !!

एव या, यणि आओणि अक्का का ।

छै जे कहाबैणि पुनि - दुक्काणि ।

कि ठारक छी नि नि कज्जी ।

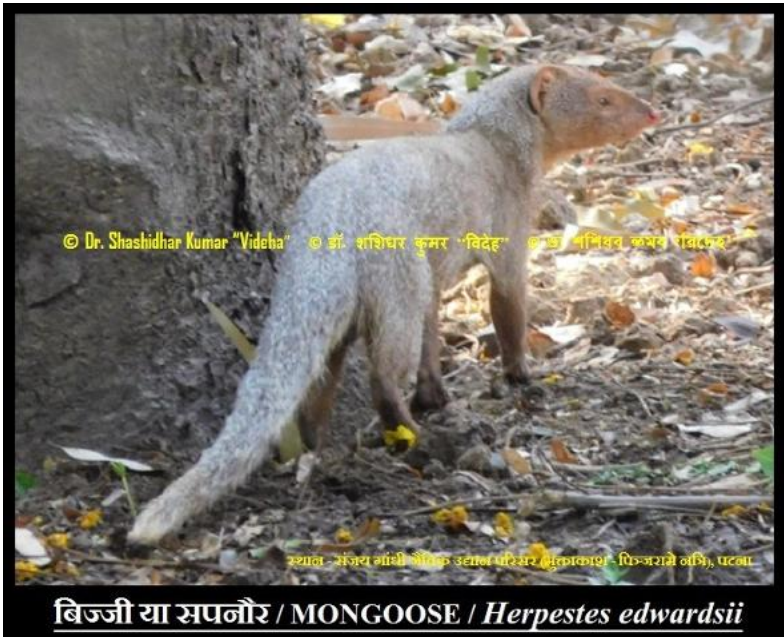
नबका - दुक्काणि लेल उडकुसी । *५

शिष्ट - अरेविकारे विबिक्कि,

लऽ जायब पनौणि छै
। । *६

ओ कज्जी छै !
पनौणि छै !!





क्रि आ कछु चिक थि -

*^१ - दू टा बिया-पुि एक टा जीके देख कऽ पस्मि झगव्ह हिल छल । पकलुकक कहब छल जे ओ जी "कज्जी" थक आ द कि कहब छल क " पनौ" अक । िसिरे ओ दुहु बच्चा / बच्ची ही छल काणि "कज्जी" आ " पनौ" दुहु एकक जीकि पयायी नाओ थक जकि अजी भाषारे MONGOOSE (Singular) (Plural - MONGOOSES / MONGEESE) कहल जाइ अक । पनौहि केि एक टा पाठभेद ि उच्चाभिद (PHOENETIC/PHONETIC VARIANT) " पलेउ" अक ।

*२ - काजजी / पनौ लुतखी जेका वृक्षशी (ARBOREAL)
जी नर्व कक ओ कलेशय (TERRESTRIAL BURROW
DWELLER) अथा कलरे हिकहा गिणी कक ।

*३ - काज्जी / पनौं कलेशय गिणी हइहुँ रू गि रु गि (RAT/S & MOUSE/MICE) जेका विचि (NOCTURNAL) गिणी नवि अक; ओ कनचि (DIURNAL) गिणी अक ।

*४ - कज्जी / पनौ अपन कछु विकाष शांति चिना (यथा - र ट चार) ओ शांति कयाक (विशेषीकृ ACETYLCHOLINE RECEPTORS) काणि एक (विशेष गहरनक) वषिक दुषभांति कृति है अछ । ए ओना ईह कवियाए कऽ सकलै अछ रुदा रना भेला प गहरन (KOBRA & OTHER ELAPIDS) आ ओह गिह आन एके राव दै अछ । डिपि आ अजगि (VIPERS & BOAS) रूहक ए युद भेला प बहुत कज्जी केँ हारि हइ अछ आ ओ रालि जाइ अछ । आर गिणाक वपिणि एह जीके एक रा खबाक वि क नह विशेष रक नरि हइ अछ ।

*^५ - यूरेविया या (यूरेपि आ एव या) थिा अक्क का रहादेशके पुनिा दुक्मिा (OLD WORLD) आ उडिबिाि थिा दक्खनबिाि अरेविका रहादेशके नकिा दुक्मिा (NEW WORLD) कहल जाइि अक्क । बज्जि पुनिा दुक्मिाक रूल क्मिा (NATIVE SPECIES) अक्क आ नबका दुक्मिारे किक्विक र प ँ नबि पाओल जाइि अक्क । ि नबका दुक्मिाक ल कक लेल ओ एकटा वक्वित ि आयिस्सनक जीि अक्क ।

*६ - कज्जीके अप आक् ँ िडकि ुक्किक उदेश्य ँ क्कछु ल क
 पक्किहु छक्क । उबिबिी अरेविका रहादेशक (NORTH
 AMERICA CONTINENT) युत्ति िज्ज अरेविका (USA)
 नारक देशरे कज्जीके लऽ जाएब विबिक्कि अक्क ।

रुरिक्री यर रुरिक्री (बल कर्वी)



© Dr. Shashidhar Kumar Vidheh © डॉ. शशिधर कुमर विदेह © डा. शशिधर कुमर विदेह

मैथिली - मधुमाक्षी / मधुमाछी

हिन्दी - मधुमवस्त्री

संस्कृत - मधुमक्षिका, भ्रमरक, माधुकर, रुक्षवालुक आदि

अंग्रेजी - HONEY BEE / HONEYBEE

(FORMER IS MORE SCIENTIFIC WAY OF WRITING)

(चित्रमे - ASIATIC HONEY BEE)

जैववैज्ञानिक नाम - *Apis spp.* (चित्रमे - *Apis cerana indica*)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वस्वमे)



© Dr. Shashidhar Kumar "Videha" © डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' © ডাঃ শশিধর কুমার 'বিদেহ'

**नवनिर्मित मधुमाक्षी (मधुमाछी) केर छत्ता
(मात्र ६ घण्टा पुरान)**

रऱुराकी हर रऱि बनाबी, ब जनै छी
अपने ।

रऱि अहा जे खाए हिल छी, अपना लए
हिी खिने ।।*^१

छत्ता हऱर छी लगबै क नहु, ऊँच भनि
या गाछ प।

जगबी, रर आ रऱि बनाबी, दीरे दे
काज बड़ ।।*^१

हर नर्वि छी रखाह, अनेवि नर्वि काटै
छी ककवि ।

हइ छी हर वखव याह, जखन खड़ा
बुझाइए हरवि । ।*^२

हरवि कटला पवि बौआके, याद आबै
छक्क नानी ।

रजबूी छल वि कटलहुँ, हर रबि
अशिषे जानी । ।*^२

हमरि छता बहुवि पैवि, कढ़नी -
छता केवि आगा ।

हवि कठि छी बनल ररँ, कागवि केवि
ने खाका । ।*^३

हरवि ओक्कठा बड़ रजूवि, कछु नवि आ
एकटा विनी ।

आँच जँ विनी या

छता प, ह रजू बकदानी ।।*^४

रऽ बहू अनर ल, रजूकि रेहनर् के
छी त्ति ।

ई िऽ अक दु अरु, खिने भ
प षक त्ति ।।

आइ ककि ठार हरि,
ह इए व्या िवक पालन ।

दू आ अण्डा क हरहूँ, छी कर् रऽ
उत्पादन ।।*^५



क्रि आ क्कछु चिक थि -

*^१ - ररुरिकी दाी रडि सिट्टि शीकालीन णि आपाकालीन खाद

भण्डाकि र परे कछाि कएल जाइि अछ । आन कीड़ा भ (ARTHROPODS) जेका रुराकी ेह शीतितीय णिणी (COLD BLOODED / POIKILOTHERMIC ORGANISMS) अछ रलिब क ओक शीकि भीी पिपरान रनुतख जेका कयि (CONSTANT) नर्वि हैि अछ आ णिणिणिक पिपरानक णि टिटै-बदैि हैि अछ । णिणिणिक पिपरान 10°C ($=50^{\circ}\text{F}$) * नीचा ख ला पि रुराकी उड़ान नर्वि भैछि आ छताक केकरय भागरे जरा भऽ जाइछ । एक हिहिक टिनाके शीि रूहन (WINTER CLUSTERING) आ एक णिहे एकवति भेल रुराकीक रूहके शीि- रूह (WINTER CLUSTER) कहल जाइि अछ । शीि रूहकि शकक रुराकी अपन शीिरै व हनि या कम्पन (SHIVERING) कऽ कऽ ऊष्मा (गरी) उत्पन्न कैछि जाक * छताक आनर्विक भागक पिपरान 27°C ($=81^{\circ}\text{F}$) वि बनल हैछ । एक वकट रयरे आहाि ओ त्तिणि कम्पन * ऊष्माक उत्पन्न लेल छताक भ रुराकी छतारे पुमिकछाि रऽकि पि आकाि हैछ । एक काि रुराकी आपाकालरे भ जन णि पिप-कयण्णक लेल एक कछाि रऽि केि उपयग काि अछ ।

*² - रुराकी कदनी आ पचक्या जेका अनेहु रखाह टिकक (OVER-AGGRESSIVE NATURE) नर्वि हइि अछ । जखन रुराकीक छता या रूहक णिनी पि रनुतख णि क नहु आन जीि * (जेना क - कदनी, पचक्या, वियाी कीड़ी, आन दलक णि पैक्या णिनी रुराकी) खड़ाक आभा हइि अछ खिनक णियु रजू-रुराकी ओकी काटैि (BEE STINGS) अछ । ककहु काटलाक बाद काटकाहवि रुराकीक वषि-गवध क दि-शुषकका

(STING & ASSOCIATED VENOM SAC) ओकि शीं^३ टूट कऽ अलग भऽ जाइ अछ आ काटकहारि रुरिक्कीक तिमाल रृत्यु भऽ जाइछ ।

*^३ - ऋदनी ओ पचक्या आकक छता ओकि ले^३ ानल अमिक्कि काठ^३ बनल है^३ अछ जकि रुख ि ायकक टिक 'ल्युलज (CELLULOSE) हइ^३ अछ । इएह टिक कागज/कगाद (PAPER) के^३ 'ह हइछ । ि अजीरे ऋदनी ओ पचक्या आकके पेपि िस (PAPER WASP) कहल जाइ^३ अछ । एकि वीपी, रुरिक्कीक छता र र^३ (WAX) बनल है^३ अछ । ई र र (WAX) शक रुरिक्की भ पीगकणके ले^३ ान अमिक्कि कऽ कऽ बनबै छथ ि ओकि स्मृरे "रूक्छ" कहल जाइ^३ अछ ।

*^४ - रुरिक्की िसर्विक ारकक राक्की (EUSOCIAL BEES) के^३ रूहरे आबै अछ । ओकि हकि रूह या छतारे (HERD / BEE SWARM / HONEYCOMB) एकटा िनी रुरिक्की (QUEEN BEE) कछु हजा ि रुरिक्की (DRONE BEES) आ द हु हजा शक ि रजू रुरिक्की (WORKER/NURSE BEES) है^३ अछ । पीग एकत कऽ कऽ र र (छतारे कठी कारण लेल) ओ रऽ (आपाकालीन आहा लेल) बनायब ओ छताक ि कबि - ई भटा काज शक ि रजू रुरिक्कीक थक ।

*^५ - भांि ओ वशक आन ठार 'ह रुरिक्की - पालन (APICULTURE; API = *Apis* = रुरिक्कीक शिक िणीशास्तीय नार आ CULTURE = पालन) एकटा पै क ियक

र परे वीकव ि भऽ चुकल अकळ ।

ररिक्कका → ररिक्की →
ररिक्की

लालबुङ्गी या ललबोगी (बाल कर्वी)



मैथिली - लालबोङ्गी / लालबोगी (लाल कनपट्टी/गाल बला)

हिन्दी - पहाड़ी बुलबुल या कमेरा बुलबुल या सिपाही बुलबुल

संस्कृत - रक्त श्मश्रु गोवत्सक

अंग्रेजी - RED WHISKERED BULBUL

जैववैज्ञा. नाम - *Pycnonotus jocosus*

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)



© Dr. Shashidhar Kumar "Vidaha" © डॉ. शशिधर कुमार "विदेह" © डा. शशिधर कुमार "विदेह"

स्थान - दुलारपुर (रुचौल - दुलारपुर), दरभंगा

मैथिली - लालबोङ्गी / लाललबोंगी (कारी माथ / करिया मूरी बला)
हिन्दी - कालाशिर बुलबुल या गुल्दुम बुलबुल
संस्कृत - कृष्णचूड़ गोवत्सक
अंग्रेजी - RED VENTED BULBUL
जैववैज्ञानिक नाम - *Pycnonotus cafer*

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

छ ट कड़ैँ रीठ बाजैँ अछ ।

पेटक कचला भाग लाल अछ ।

इएह काणि भव ककलारे, कड़ै ओ “लालबुङी”
कहबैछ । । *^१

कछु के राथ छै पूी काी ।

पेटहु उज्जि - भूी - काी ।

रुदा पेट के कचला कस ।, लाल - ि लालब्र डी
कहबैकि । । *^२

आनक छाी, पेटहु उज्जि ।

आँखक पाछा लाल छी ुनि ।

एकहु पेटक कचला कस ।, लाल - ि लालब्र डी
कहबैकि । । *^३

दुहुक राथ पि काी कलगी ।

पकलुक छट, द्र कि बड़की ।

दूँ देव कऽ भक्ति भेलहुँ हर, दू-दू टा कए
लल हैकि !! *^४

ब्रल रीठ एक दुहु किकि ।

छी दस्य बुलबुल पवीकि ।

बुलबुल किहुँ र प वीष क, ि ओ लालब्र डी

कहबैक | | *^५



करिया माथ बला लालबोङ्गी / कारी मूरी बला लालबोङ्गी
RED VENTED BULBUL *Pycnonotus cafer*



फि आ कछु चिक थिय -

*^१ - रैक्यलीरे व्यापक र पे रनुतखक “डिक्क-दिश”के (INGUINAL REGION) “ब्रड” कहल जाइ अछ, जे क पेटक नीचा अक्स्थि हइ अछ । ओना अवी र्क अथमे “टृषण” (TESTIES) ेह हइ अछ रुदा, एक ठार अक्मिय डिक्क-दिशक अछ । चूँक, एक कड़ै के पेटक कचलुका भाग लाल हइ अछ । मयक आगि प एक नार “लालब्रडी / ललबोगी” पड़ल ।

*^२ - कछु लालब्रडीक राथ पूरी काँ हइ अछ गदक के

अवाला भाग, कि (छाँ) ओ उद (पेट) 'ह भूँ - काँ क
मिक हइ अक् । एक कनपटीरे लाल मि नर्व हइ अक् ।
प, डिक्ग-देश लाल अशिम है अक् । ई कड़ै भेल “काँ
रूँबला लालबूँडी” जकी अजीरे RED VENTED BULBUL
कहल जाइ अक् ।

*३ - कछु लालबूँडीक कनपटीरे दुहु काँ लाल मिक एकटा पटी
है अक् कि ओक डिक्ग-देश 'ह लाल है अक् ।
ओक गदक के अवाला भाग, कि (छाँ) ओ उद (पेट) सच्च
उज्ज मिक हइ अक् । ई कड़ै भेल “लाल कनपटीबला
लालबूँडी” जकी अजीरे RED WHISKERED BULBUL
कहल जाइ अक् ।

*४ - दुहु किकि लालबूँडीक राथक ऊपि एक-एक गट काँ
मिक नरग-विकणी (NARROW ELONGATED
TRIANGULAR) कलगी (CREST) हइ अक् । लाल
कनपटीबला लालबूँडी के कलगी अपेक्कृ बेँ पै हइ अक्
आ दूँ एहेन क लागै अक् जेना ओक् कड़ैके दूटा ल ल हअ
- एकटा नीचा रूँहे आ दूँ ऊपि रूँहे ।

*५ - अबी, फाँ, कन्दी आक् भाषा भरे ई “बुलबुल” नारक
कड़ै के अनगिमिक् आबै अक् रुदा, रैकलीरे एक विकष मिक
काणि

पाकल आर

(छर्व ि न्द्रभमआर्वि ६ गट कर्वि)



कव्हय - कव्हय भ ककछु ठीक क्विहूँ, पयाप रय क्विहूँ, लाख यिा क बाजिदहु ककछु नर्व क्लखाइि अक्छ । कव्हय किा ठीक वपीणि, र न चहुचड क्विहूँ, क्वना क न खा यितक, बहुि कर रयरे अनाय क बहुि ककछु क्लखा जाइि अक्छ । एह भेल १० जून २०१६ ई.क भरि । फे बुक फलल, शी क्वभूर्व आनन्दजीक (रैक्यली विषि लेखक) फिाइल फट क र परे आरक झक्काक छर्व लागल छल । झक्कारे चार्वटा आर छल आ िक्करे

एकटा पाकल (पीयूषि बु), एकटा अपिकू आ शेष दू टा काच
(ककि डम्हाएल) छल । झब्बा नीक लागल - किह न्द्रभमपि एक
टा कर्वि लीखल । किनि बाद पाचटा आओहु कर्वि नि-नि
अपनक-आप कखा गेल ।

०१

एक अयि - दू टा जुआन ।
किह एक गट “पाकल आर” ।
नुनि रय - वहिरि दृश्य,
नि पीढ़ी के भेल कलान ।।

कनगीक गवि छी एहने भैया,
ब अबटीरे “पाकल आर” ।
रयक चाकल ने बदलल ककय,
बिबि बक ब पाकल आर ।।

रय हाथ - जीबू रसीरे,
कनगी के नवि क नहु ठेकान ।
कककि हिब, हँ ब ककया फे,

उलहन - देहि भेलाह बेइरान । ।

०२

एक परि पाकल बुद,
द्रि पकबा लए विवि अक
वि - चारि देख हिल,
खेला देख अचक वि अक । ।

पकलुक अक ता हकअओने,
आनक ता लए काल बनल ।
द्रि . चए, बिए पाकल,
खिनक सि गुर णिटाल बनब । ।

वि - चारि छी रूक जा,
ब देख हिल आ . क हिल ।
ताक रनि विभागी,
पवणार रुदा ब भवा हिल । ।

०३

एक गुर छव्य दीपि जानँ,
 द्रिक्कछु अभिवादि छव्य ।
 रि - चारि नदि क्षाय हुनक,
 विवि बैल आहावदि छव्य ।।

कहव्य गुर - ई जान व्यकव्,
 बँटलाँ कव्य नवि टिछ ।
 अजानक अमरि वकुला,
 जानव् बल रतिरि ल बनैछ ।।

द-जान गुर क छी झलक्क हिल,
 पीभि रतिरि आरक फल क ।
 विरि अमरि काच आर ेह,
 बदक्क हिल पाकल फल क ।।

एक दूझि द्र हिँके काँछि,
 ` गिर्वि केरि भाँछि छै ।
 पाकल देख कऽ काच पकैए,
 फऽडक हज सभाँछि छै । ।

एक जँ उक्जआएल, द्र हिरे
 उक्जआएबा केरि भाँछि भौँछि ।
 जँ केओ बुक्कआएल रूहरे,
 भक भवष्यक काल बनैछ । ।

एक शीबी इएह चाहैँ अक्छ,
 कतहु बैव शीबि कउबए ।
 रुदा पिसीँ कखन चाहैँछ,
 गीक पि - जजाल जिए । ।

गिर्वि केरि रक्करा छी भाँछि,
 एक्क झब्बारे ` बुझा हिल ।
 पाकल देख पकैए द्र ि,
 ि ि-चावरि छी डम्हा हिल । ।

०५

देवख पुक - पाकल - गपीके,
र न कयि खएहुँ ओकी ।
बहुँ ऊँच छी, चक्क नर्व िड़ब,
फेक्क हिल छी ि झटहा ॥

गछपकू िऽ गछपकू छी,
द्र ि पालहु पिका लेबै ।
गिरे कँचका ेह ख ल िऽ,
गक्क अनाजरे पका देबै ॥

ई की भेलै ! गछपकू िऽ,
अपनक्क बिल आओ ख ल ।
हरि र न भगनिहु बुझलक्क,
हापु आर ओ कहुँव हिल ॥

पुक = उपक = उपति

गपी = उपति कदगा पीयि ि लाल-पीयि गछपकू आर

हापु = ि - ि कौँ उपति गछपकू आर (रिठी आक् भाषारे

"हापु " आरक एक गट किकि नार कक, रुदा रैकलीरे कि
अथसे नर्वि यित्ति भऽ कऽ ककष अथसे यिग हइछ)

आरक कहुँ ब = गछपकू आर जखन बे ी ऊँचाई ँ कि कऽ रावट
पि खैछ िऽ ओ एक ि एकाविक स्थान पि (गियु ऊपरि या
बगलरे/पाशसे) फावट जाइछ । एक टिनाके आरक कहुँ ब ओ एहेन
आरके कहुँ ल आर कहल जाइ अछ ।

पाचहु आङ्गु नर्व छी रान,
नक्कि दू गटे गिरि ।
भार्व - भार्व के लक भेटैए,
अपन भक राजरे ।।

एकक्क आरक झक्कारे छै,
काच, डम्हाएल आ पाकल ।
किना राजरे लक क्यकै,
अपना - अपनी काजे पागल ।।

कछु बिद, कछु अर्विबिद,
रान्ना थिा कछु कबुषी ।
जुन - जुबुक्क ेह बहुक्कि,
कछु हैछ अनेहु दुबुषी ।।

ओहुना ई भ कछु बदलै छै,
रय - यि - अनुभवि गी ।
बहक अपन अलगक्क रहत्ति,
आ काज आबैछ अपना गी ।।

पाकजि भटा आर गी,
एकक्क बे भऽ जाय गी ।
कि कि क्यस्थिा किव कौछ,
पकबैछ ओ आर बेगि - बेगी ।।

कबाँ (बाल कर्वाँ)



साभार सौजन्य - pixabay.com (free download)

मैथिली - कबार

हिन्दी - छोटा बुज्जा, कोवर

संस्कृत - कवार

अंग्रेजी - GLOSSY IBIS

जैववैज्ञानिक नाम - *Plegadis falcinellus*

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम रूपमे)

छी कर्वाँ - हँद, पँह

ओकीँ कछु छँ छी ।

नाडवी पाँ छँ-कीण रँ,

ओकणि िँऽ चौकणि छी ।।*^१

ककूकि का लल हरि,
आ देहक काणी मि छी ।
राथ ेह एकणी काणी,
लाल ने ओकणि मि छी ।।*^२

ललक कछु एहनहु रहीना,
लहाक बीझ का मि हरि ।
देहक चरक बदल - बदलल,
हवयि-काणी छी पखि हरि ।।*^३

ककूकि का भलक लल छी,
अलगक पणि ब मि हरि ।
हर नवि भेटब दू चऽडरे,
पाकक शकि मि हरि ।।*^४

क्रि आ कछु चिक थि -

*^१ - कीकुलक अजीजी नार BLACK NAPED IBIS अक आ कबाकि GLOSSY IBIS, ि दुहुरे बहुि नजदीकक मन्न अक । थिअ, दुहुरे बहुि कछु मननि ेह अक आ ि णिणीशास्तक णिकणरे ेह दुहु अलग - अलग शिक कडै अक । कीकुल^० कबाकि आका छि ह इि अक । कीकुलक नाडवि चौक ि ह इि अक जखन क कबाकि अपेककृि कर चौक ि ओ छि ट ।

*^२ - कबाकि आका-ुका देखबारे कीकुलक क लागैि अक । ललक आकृवि ेह ककूि क हिछ । पि, कबाकि राथक ऊपरि ककूि जेका लाल णि नवि हैि अक ।

*^३ - ालक कछु रहीना एहन ह इि अक जाकरे कबाकि देहक णि भूि-काी^० बदल बीझायल ल हाक णिक (RUSTY COLOUR) आ चरकयुति (GLOSSY) भऽ जाइि अक । दुहु पखिक णि बदल कऽ कजी क गाढ़ चरकैि हवि भऽ जाइि अक ।

*^४ - कीकुलक वपिणि कबा जलाशयक आ -पा क क्षेत्रे भेटैि अक । पाक शि^० बे ि दूि ई कडै नवि देखाइ दैछ ।

किकुल (बल कर्वी)



मैथिली - कड़ाङ्कुल / कड़ाकुल / करांकुल (तत्सम),
करांकुर (अर्थ तत्सम),
कंकूर / कंकूड़ (तद्भव)

हिन्दी - काला बुज्जा

संस्कृत - करांकुल, कालकण्टक, कृष्ण आटि, रक्तशिर्ष आटि

अंग्रेजी - RED NAPED IBIS / INDIAN BLACK IBIS / BLACK IBIS

जैववैज्ञानिक नाम - *Pseudibis papillosa* syn. *Pseudibis davisoni*
syn. *Inocotis papillosus*

(नोट - संस्कृत भाषामे आखल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ मेऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

एतेक रेहनवी कएक काँ छे ?

अपन सीस्थ पडि ध्यान ने दै छे ।

काँी - झारव देह भेल छौ, अनरन ि कक्की
लागै छे ।।

जे “कक्की” छै एह “ककिकु” ।

इएह “कालकण्टक” आ “ककिकुल” ।

एकहि उपरा जिह बाजब्ध, इय ि एकी ने
कन्है छे ।।^{*१}

कडै ई काँी, तिथु - काँी ।

लेशक उज्जि, आँक्यहु काँी ।

राथक लाल ि केँ काणि, भर
ि “लाल ि” बुझै छे ।।^{*२}

ियु छट झुण्डरे भेटैछ ।

बाँि - ब्रन आ चड्डरे भेटैछ ।

पाकक शिँ दूहि देखही, िकि कारि कएक
िकै छे ।।^{*३}

ल ल एक कि कछु खा लागै छै ।

कानु बेकि गौँ ॐ कलै छै ।

या फे कि कि कि क आकृष छै, जकी नि रि आरि
कहै छै । ।*४



फि आ कछु चिक थि -

*१ - “कफ़ि” के उपा अपना कक्षा बहु चिकलि अछ, प बि बहु
कमर ल कके बूझल अछ जे “कफ़िड या कफ़ि” एक टा कडै के
नार कक । कछु ल क “कफ़ि” शब्दक उत्पत्ति “कफ़िल” शब्द ॐ
रानै छथ - शायद ओह ल कक ही छथ । बूझ कड कफ़ि

भऽ गेले - कफ़ील ॐ कफ़ूकि उदगर व्दवा ईशागि कौछ । व्दवै
व्दवा ईशागि कौि बाकी उदणि उपरका कवीरे देल गेल अक्ख
।

*२ - बहुि लक एकि राथ पकि लाल गि
देख “एकी” भरशि “लाल ि” व्दवै कहै छथ - े गलि व्थक
। व्दवै केि म्यक जानकाी खिक्कहा/-वि लकक जनै छथ क
लाल ि आन व्दवै व्थक ।

*३ - उड़ए बला अवकाश पैि व्दवै क नहु-ने-क नहु किाकि
जलाशयक नजदीकरे भेटैछ । रुदा, किकुल गियु जलाशय ॐ बहुि
दूकि ि युति रैदानी केतरे भेटैि अक्ख । कखनहु - कखनहु
जलाशयक आ - पा ेह भेट कैि अक्ख ।

*४ - एकि लल केि आकृर्व व्दवाष किाकि हइि अक्ख जे क
देखबारे कना बेकि गैि (PICK AXE) या फेि भीि व्दवा क्कि
रि आवि (INWARD CURVED SWORD) क लागैि अक्ख ।



गिजहि या हगिगि (बाल कर्वीगि)



मैथिली - राजहंस (चित्रमे - बड़का गुलाबी राजहंस)

हिन्दी - राजहंस, हंसावर संस्कृत - राजहंस, अरुण कुञ्च

अंग्रेजी - FLAMINGO (चित्रमे - GREATER PINK FLAMINGO)

[उच्चारण - लॉमिङ्गो (ब्रिटिश ई०), फ्लॉमिङ्गो (अमे०ई०)]

जैववैज्ञा० नाम - *Phoenicopter* spp. (उच्चारण - फिनिकोटेरस) &
Phoeniconaias spp.

(चित्रमे - *Phoenicopter roseus*)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नीओ वा पर्यायी नीओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नीओ भऽ जाइत अछि - तत्सम रूपमे)



मैथिली - राजहंस (चित्रमे - बड़का गुलाबी राजहंस)
हिन्दी - राजहंस, हंसावर संस्कृत - राजहंस, अरुण कुञ्च
अंग्रेजी - FLAMINGO (चित्रमे - GREATER PINK FLAMINGO)
[उच्चारण - लैमिङ्गो (ब्रिटिश ई०), फ्लैमिङ्गो (अमे०ई०)]
जैववैज्ञा० नाम - *Phoenicopterus* spp. (उच्चारण - फिनिकोटेरस) &
Phoeniconaias spp.
(चित्रमे - *Phoenicopterus roseus*)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नौओ या पर्योयी नौओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्योयी नौओ भऽ जाइत अछि - तत्सम रूपमे)



बड़की (गुलाबी) राजहंसक झुण्ड

GREATER PINK FLAMINGO

Phoenicopiterus roseus

हउए देवखयौ “अर ण - कुञ्ज”,

िह ! केहेन रिणगि लागै छै ! *^१

ागि टि पडि झुण्डक - झुण्ड ओ,

केहेन . हनगि लागै छै !! *^२

खन ि क ठाढ़ भेल छै,
खन हकि क हेलै छै ।^{*३}
हकि क देख्यौ गदम्भ,
ओ पाकँ अनुखन खेलै छै ।।

केओ कहैछ - छै “जिहहि” इएह,
केओ कहैछ - “हिहि” छै ।^{*४}
अपना क्कषा नवि छै भेटै,
ओकी बड़ रक्कगि गि छै
।।^{*२}

हकि क एकहु िँरूँहरे,
छनी क क्कछु लागल छै ।
काढ़ानल पाकँ ेह,
सच्छ आहा ओ छानै छै ।।^{*५}

*^१ - िचीन क्कन्धू रिमण्ठ भरे जाक् “अरण कुञ्ज” नारक क्कड़ैके अवमदेणिक िहन बओल गेल अक्क े इएह क्कड़ै क्कक ।

*^२ - ई क्कड़ै रुर टि प िहिब पव न कौ ि अक्क आ िअपना क्कका नर्व भेटै अक्क । भारिरे वशेष कऽ पछबाँ रुरटिय िट प ि ई क्कड़ै आबै अक्क आ क्कछु खिारे पुबाँ रुरटिय िट के केतरे (यथा - उड़ी िक कल्का झीलरे) ेह । ई बाँी क्कड़ै(MIGRATORY BIRD) क्कक । गरीरे अक्क काक रुरी टि ँ भावा ियु दक्कछन-पक्कछर एव याक आ यूपिक रुर टि प ि आबै अक्क आ ठणैरे पुनु ओक्कि चक्क जाइ अक्क ।

*^३ - ठाढ़ भेल ई क्कड़ै लाल िकि ि (कुञ्ज या कौञ्ज) जेका लागै अक्क आ ि स्किरे एक ि एकटा नार “अरण कुञ्ज” अक्क । पाकरे हेलबा काल ई अनरन ह ि दृश लागै अक्क, हक्कि क एक ि गदक्क अगीजक “S” णिमजेका देखाइ दै अक्क । एक ि आबाज ेह हक्कि किलै अक्क । इएह काणि “िजह” ेह कहबै अक्क ।

*^४ - क्कछु लक “अरण कुञ्ज” नारक क्कड़ै के ि पयायी नाओ “िजह” ेह रानै छक्क िऽ क्कछु लक एक ि “ह ि ि” कक्क म्भवी कौ छक्क ।

*^५ - एक्क क्कड़ै के ललक भी ि एकटा छनी क चिना (SIEVE LIKE STRUCTURE) हइ अक्क जक ि रदर्व ँ काढ़ भलि पाकरे ँ ेह अपन खएबा जग बस्कि के सक्कि सरिपरे ि ि कऽ

लै अक्क आ बाकी अनाश्रयक पदाथक्के बाहक्के छ क्ड (छाक्क) दै अक्क । एक्क िहै कक्क कै छी जे िचीन शास्त्र भरे बिमि “नी - की वीकि” (नी = काद्र ि करालमयुति पाक्क; की = पृषक त्ति भ) के गुण िजहारे पाओल जाइछ ।

क्कछु विशेष बाि -

- ई क्डै अपना कक्क (मुणमकक्कलारे) नर्व भेटै अक्क । ि एककि नहु आन रैक्कली नार नर्व अक्क । एहना कक्कवरे हर एक्क ठा ओक ि स्मृक्क नारके तिर सरि परे रैक्कली नारक र परे िग कयल अक्क ।
- रैक्कली िऽ रैक्कली, स्मृक्कहुरे “िजह” नार के न्दभसे बहु रि - रनि ि अक्क । पञ्च, स्मृक्किक क्कद गण्ठ “अरकि श”रे देल गेल िजहकि वीणि एक्क क्डै ० बे ि रेल खाइ अक्क ।
कि आनहु बहु ि गुण-रिमके क्लानक आि पि आइ-काक्क बे ि विदान एकक्क “िजह” रानै छक्क । अरकि शक अनु ि िजहकि वीणि कम किा अक्क -

Ø िजहसि ि चकुचणैलोकै
व ि ।।

Ø अथा, िजह ओ क्क जे व ि णिम
(क्कछु ि ि उज्जि; नर्व क्क सच्च

उज्जि) केि अक्क आ जक चकु
(आँख) ओ चणि (पण) लक्कि (लाल
णि ललौन) णिक्क अक्क ।

- जाक्क ठार ई क्कड़ै नर्वि पाओल जाइि अक्क (क्कलारे ेह) ओक्क
ठारक क्कलकालि कक्क आ ल क भ णिजहि क्कड़ै केि र परे अपना
रन केि कल्मनाक अनु णि गक्क लैि छक्क । अथि, णिजहि शब्दक
यिग णि क्कळि छक्क पणि णिजहिके त्तिक्क क्कन्हबाक झझिक्क
दूक्कि हैि छक्क ।
- क्कन्दीरे देल गेल एकटा आओि नार अक्क - “हणिणि” । ई
नार फादि काक्कल बुल्के (अणिजी-क्कन्दी शब्दक श) दाणि देल गेल छल
। पणि, क्कन्दीअहुरे आब एक शब्दक यिग कर भऽ गेल आ एक
क्कड़ै लेल “णिजहि” शब्दक यिग हइि अक्क ।
- लक्कड़ (णिजहि) केि वंशरे कुल छओ (बे णिणि णिशास्ती दाणि
रान्म) जाव अक्क-

Ø GREATER

- *Phoenicopterus*

णिजहि / गुलाबी णिजहि

FLAMINGO

roseus - बड़का

Ø LESSER FLAMINGO - *Phoenicopterus minor* - छ टका जिहहि

Ø CHILEAN FLAMINGO - *Phoenicopterus chilensis* - चीलीक जिहहि

Ø JAMES' (or JAMES'S) FLAMINGO - *Phoenicopterus jamesi* - जेम क जिहहि

Ø ANDEAN FLAMINGO - *Phoenicopterus andinus* - एण्डीज पहाड़क जिहहि

Ø AMERICAN FLAMINGO - *Phoenicopterus ruber* - अरेबिकाक जिहहि

उपति जाव भरे (BIOLOGICAL SPECIES) पकल दू गट भागिरे भेटै अछ । जिहकि छओ जाव भरे पकल के खिा वंशभवरै भ बेी अछ ।

छी रएने क, ि रएने छी,
 प ि क्किकाबि ि ि हरि ।
 बली रीठ छी, एह काणि,
 एहेन क छी नार हरि । ।*^१

केओ कहव्य स्थान “व िई”,
 िक्क ँ बनल “व िली” छै ।*^१
 प ि रीठगि बलक्क काणि,
 हम्म िऽ नार “व िली” छै । ।*^१

ाणि रएना क ने हर,
 भेटब ि - आडन बे ी ।
 िीठ ओकि नर्व ि हरि,
 देखब ओतक्क, नर्व जन बे ी

।।*^२

हल्लुक - पीय ल ल हर छी,

नेने जक्करे कछु लाली ।

ुगा क अनुकणि की,

हरहूँ िं रनुतखक बली ।।*^३

कि आ कछु चिक थि -

*^१ - पुति भाकि रणीपु जिजरे एकटा स्थान अछ “व िं/व िही” जाक् ठार व िं िक्य उदान (SIROHI / SHIRUI NATIONAL PARK) या यैगैग तपी ल कचाओ िज्जी अभाणिक्क जक स्थापना न् 1982 ई.रे कयल गेल छल । अनजाल प उलब जानकाी इएह कहै अछ क “व िं” नारक स्थानक आि प एक् रएनाक नार “व िं रएना” पडल जे क बादरे “व िली रएना” भऽ गेल । पजि हरि ई बाि पक् नर्व हिल अछ काणि क -

• “व िली रएना” पूि दक्खनबाी एव यारे रैदानी (PLAINS) आ कचला ििं (LOWER FOOTHILLS) केतरे पाओल जाइ अछ, खिन फे रात रणीपुक् के “व िं” केि वशेषण कएक ?

- व ई किष्टय उदान केि स्थापना न 1982 रे भेल पं
कथलारे एह कडै केि नार “व ली” बहुि पकनक अक
(कथलाक कछु अर्दि रकला ल कक बओलकह) ।
- अपना कक ल क भक (वशेष कऽ कछु अर्दि
जानका रकला ल कक) अनु गि “व ली” (व ली रएना)
केि बली “रएना” (गिणि गिया रएना) केि बलीक
अपेक र्दि ह इ अक गि एक एहेन नार अक ।
- ई कडै गाबएबला पकीक (SINGING BIRDS) शेणीरे
आबै अक जे क कछु ीरा वि नारकणिक पाछा
ओकि आबाजके काणि हयबाक पुक कछि ।

*^२ - “व ली” “ गिणि रएना” जेका गीठ नर्दि ह इ अक आ गि
गि आडनरे जाक ठार रनुतखक आब-जा गि बेी ह गि ठार नर्दि
देखाइ देि । गार-डिरे कने का गि -कौटरे आ गियु छट-छट
झुण्डरे व ली देखबारे आओि ।

*^३ - कजारे पषला पं व ली ेह गुगा जेका रनुतखक बलीक
नकल कौि देखल गेल अक ।

ही (बाल कर्वा)

हीक काट िऽ ुने हएबहक ।

ुने की - देखने ेह हएबहक ।

हीक काटरे “ ही” की ??

“ ही” रू - गणक छी णिणी ।^{*१}

रू ु बहूि पैि - े जानी ।

ै े देहे “काट” बुझी ।।

दन भव कयवरे हैि अक ।

बाहि विरेरे कक ैि अक ।^{*२}

कि-कचि ई “काट” कही ।।

काी - उज्जि काट कयै ।^{*३}

उपनयनहुरे काज कयै ।^{*४}

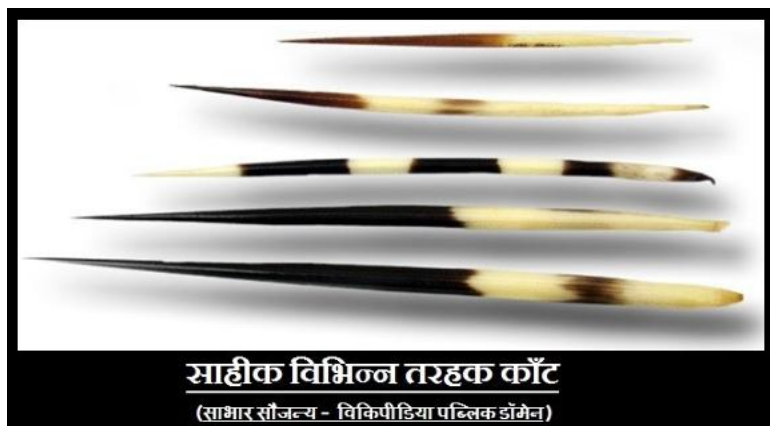
पकलुक लेखनी इह बुझी ।।^{*५}

क्रि आ कछु चिक थि -

*^१ - रू आ ही - दुहु एकव कुलक दस्य अछ । ओव कुलक नार अछ डिडेणया (RODENTIA) ।

*^२ - ई कलेशय णिणी अछ आ रावटक नीचारे कलारे हँि अछ ।
मिह विचि (NOCTURNAL) णिणी ेह अछ ।

*^३ - हीक काट (QUILS / SPINES) पर्वाविमि
डिया (MODIFIED HAIR) कक जक र प-मि ओ आका
हीक किाि थिा हीक यि प विभमि कछि ।



*^४ - उपनयनरे क्खा-विभाजनक वीरे (बर आक टीकके ३ भागरे
बँटबाक क्खारे) हीक काटक काज पडैछ ।

*^५ - पवने अपना क्का भीि (रावटक देबाल) प विवत बनएबा काल

कृतक खाका (OUTLINE / ROUGH DIAGRAMME) बनाए
हैं 'ह' युक्ति हुई छल ।

यूवि या (यूपि आ एव या) था अक् का रहादेशके पुनि
दुक्ता (OLD WORLD) आ उर्बिणी था दक्खनबाणी अरेविका
रहादेशके नकि दुक्ता (NEW WORLD) कहल जाइ अक्
। हीक जे जाव (SPECIES) जाक् ठारक रूल क्ताी अक्
कि अनु ताँ ओकता भके पुनि दुक्ताकि ही (OLD WORLD
PORCUPINES - ORDER HYSTRICIDAE) आ नइ
दुक्ताकि ही (NEW WORLD PORCUPINES - ORDER
ERETHIZONTIDAE) कहल जाइ अक् । ही किहुँ दुनु
रूहरे बहुि बेी अनि अक् ।



मैथिली - गरुड, बड़का चिल्होरि (उच्चा० - चिल्होइर)

हिन्दी - गरुड, महाशयेन

संस्कृत - गरुड, उत्क्रोश, शयेन / शयेनिका (पु०/स्त्री०) आदि

अंग्रेजी - EAGLE (BALD, GOLDEN, , CROWNED, BOOTED
HARPY, MARTIAL, STEPPE, SERPENT etc. EAGLES)
(चित्रमे - STEPPE EAGLE / मैदानी गरुड)

जैववैज्ञा० नाम - कुल 60 वा ताहिसँ बेसी जाति (SPECIES)
(चित्रमे - *Aquila nipalensis*)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

पै कइ - कल वी नम्हि,

या बड़का कल वी बुझू ।

छी “गर ड” - जँ नार र चए नक्,
 िँड “बड़का कल व” कहू
 ।।^{*१}

चाडु^{*२} छै रजगू िँकि,
 खहिहुके िँने उक्ड भागैछ ।^{*३}
 कछु जिाव िँड चाडुरि,
 ापहुके िँने उक्ड भागैछ ।।^{*४}

ओ कल व जेका नव कक्कय,
 भागैछ ल लरे दाक्क काका ।
 एकक् कुल, अनिँ िँडि़य छै,
 क्कन दुहुक कछु छै बेबहा ।।^{*५}

बहुविँ गर ड, काकाहि बहुविँ,
 अपन - अपन छी जीहक चाट ।
 कडै - छ ट, खहि िँड छैहे,

कक विगि ण क राछ
|| *६



बाधमे जिलेबी गाछक डाढ़ि पर बैसल एकटा गरुड़क जोड़ा

विश्वमे गरुड़क समस्त जातिसभमे पुरुष-गरुड़क
आकार छोट आ स्त्री-गरुड़क आकार पैघ होइत अछि

चित्रमे - मैदानी गरुड़ = STEPPE EAGLE = *Aquila nipalensis*

स्वर्णिम गरुडक चाङ्गुर
(चित्रीय निरूपण)

CLAW OF A GOLDEN EAGLE
(DIAGRAMMATIC ILLUSTRATION)



साभार सौजन्य - विकिपीडिया पब्लिक डोमेन



स्वर्णिम गरुड / GOLDEN EAGLE / *Aquila chrysaetos*
साभार सौजन्य - विकिपीडिया पब्लिक डोमेन

किं आ कछु चिक थि -

*^१ - गरुड (EAGLE), कल वी (KITE) आ कछु बाज (ACCIPITRINE HAWKS / TRUE HAWKS) - निनू एकक कुलक (FAMILY - ACCIPITRIDAE) दस्य थक नि निनूरे बहु कछु रानी अछ । रानी किहुँ निनूरे बहु कछु विमनि अछ आ निनू निहिक कडै के अपन कछु विषय अछ जकी आनि पि रैथलीरे, स्किरे आ कन्दी - अगीजी आक भाषा भरे निनूक अलग - अलग नार देल गेल अछ । एक ठार जाक काकी कडै रूहके गरुड रानल गेल अछ किनि भाकि आन बहु नि पकी जिाकक भ गरुडक रानै छथ । गरुडक

णिम व्हन्तू रिम गण्ठ भरे ककळ बथकीय काल्मकक सरि पक हयबाक काणि ककळ लक एकी गर ड नर्वि रानै छव्य आ िव्ह िहिक लक एकी “बड़का कल व” कक् कौ छव्य ।

*^२ - चाडुि = पजा = CLAW (यदक् “चाडुि” शब्द केि शाब्दक अथम चार्वि आडुि^० बनल रुटी सरि प भेल आ “पजा” राने पाच आडुि^० बनल, थिक्क दुनु केि रान्म रक्क सरि पक अथम एकक्क अक्क - अजीकीक CLAW केि अथमे ।)

*^३ - गर डक चाडुि बड़ रजगूि ह इि अक्क । ि ओ अपन क्काकि के अपन चाडुिरै दाक्क उक्क जाइि अक्क - नर्वि क्क कल व जेका ललरे दाक्क कऽ । ओकि चाडुिकि पकक्क एकि शक्तीशाली ह इि अक्क क्क ओ कएक बेि खहाके ेह अपन चाडुिरै पकक्क कऽ बहुि फुि^० उक्क जाइि अक्क ।

*^४ - गर डक ककळ
जार्बि भ (*Circaetus* spp., *Terathopius* spp. & *Spilornis* spp.) ि^० ि पक क्काकि कबारे राक्कि ह इि अक्क ि अजीकैरे एकी भके पेण्ट ईगल (SERPENT EAGLES) कहल जाइि अक्क । वेशरे गर डक कीबि िक्क टा जार्बि (60 SPECIES) पाओल जाइि अक्क जाक्करे^० अर्बिकाश यूवि या (यूपि ि एव या) थिक्क अक्क का रहादेशरे पाओल जाइि अक्क ।

*^५ - गर डक चाडुिकि पकक्क कल वके चाडुिकि (CLAW) पकक्क केि अपेक्क बहुि रजगूि ह इि अक्क जखक्क क्क गर डक ललक (BEAK) पकक्क कल वके ललक पकक्क केि अपेक्क बहुि

करजि हइ अछ । ि गर ड अपन काकाके चाडुरे पकड़ कऽ उड़ भागै अछ जखन क कल व ल लरे ।

*६ - रान्ति भ काकि गर ड अपना छ ट कड़ै, छ ट िढ़िणि िणी (जेना क - रू , खहि, खगिश, लुतखी आक), छ ट वृप (जेना क - वावाट, छ ट प आक) के काका कर्वि अछ । गर ड कछु

जर्व भ (*Circaetus* spp., *Terathopius* spp.

& *Spilornis* spp.) एक काका कबारे विशेष राखि हइ अछ ि अजिरे एकी भके पेण्ट ईगल (SERPENT EAGLES) कहल जाइ अछ । किना गर डक कछु जर्व भक (*Haliaeetus* spp., & *Ichthyophaga* spp.) विशेष अकर क राछ आ जलीय - पकी भक काका कबारे है अछ ।

कल्याणी क शक अनु ि-

गर ड = एक पकी = a kind of
EAGLE = *Homraius bicornis*

गर ड = एक पकी = a kind of EAGLE एक ठार वि िऽ ठीक अछ पञ्च गर ड = *Homraius bicornis* बा रान्न नर्व बुझना जाइ अछ ।

Homraius

bicornis syn. *Buceros*

bicornis (syn. *Buceros*

homrai syn. *Buceros*

cavatus syn. *Dichoceros bicornis*) णिसिरे बडका णेश
वक जका णिजीरे GREAT HORNBILL / GREAT
INDIAN HORNBILL / GREAT PIED HORNBILL कहल
जाइ अक ।

[syn. =
synonymous to = पयाय/पयायिची अक]

वाद (बाल कर्वाँ)



मैथिली - गिद्ध / गीद्ध / गीध

हिन्दी - गिद्ध

संस्कृत - गृध्र, सुदर्शन, सुदृष्टि, आज, भास, वज्रवन्धु, वज्रतुण्ड,
खगेन्द्र, खगेश्वर, दीर्घदर्शिन, कामायुस्, सधन् आदि।

अंग्रेजी - VULTURE

(चित्रमे - HIMALAYAN VULTURE / HIMALAYAN GRIFFON VULTURE)

जैववैज्ञा. नाम -

OLD WORLD VULTURES - 16 SPECIES &

NEW WORLD VULTURES - 7 SPECIES

(चित्रमे - *Gyps himalayensis* - an OLD WORLD VULTURE)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ वा पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ अइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

बड़की टा केँ कड़ै कए,
आ पखिक पैँ प णि छै ।*^१
हेय दृक् ँ ल क देखै पणि,
ओकणि बड़ उपकाणि छै ।।

रुदाखौक अशुभ पवचायक,
पैँ लहाश आहाणि छै ।
छ ट जीणि खहि आ रू क,
हे कौछ काकाणि छै ।।*^२

रूणि णिणीके खा णिणि केँ,
कड़ि ओ व णिणि छै ।
ओकणि कनु णिणि पणि पैँ,
रूणि जीकि अम्माणि छै ।।*^३

पकला णि बखि ँ एक्ठा,

वादक पड़ल अकाल छै ।

छी अकाल केँ रूल रनुतखे,

ओकँ कनी काल छै । । *४

रुँ ग रहीष बड़द िँ बूझ,

भऽ गेल आब जजाल छै ।

िँ नदी ओ नहवँ बाकुरे,

डैँ लहाशक टाल छै । । *५



गिद्धक लोल आ गर्दनिक बनावट (नजदीकसँ देखला पर)

(चित्रमे - हिमालयी गिर्फॉन गिद्ध / HIMALAYAN GRIFFON VULTURE / *Gyps himalayensis*)





© Dr. Shashidhar Kumar "Vidaha" © डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' © डा. शशिधर कुमार 'विदेह'

स्थान - संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना

हिमालयी गिद्ध / हिमालयी ग्रिफॉन गिद्ध

HIMALAYAN VULTURE / HIMALAYAN GRIFFON VULTURE

Gyps himalayensis



क्रि आ कछु चिक थि -

*^१ - काकाणी पकीरे गियु बाद भँ पै हइ अछ । भारिरे
रुख्खि एक पाच टा जिवि पाओल जाइ अछ -

- WHITE RUMPED VULTURE
= *Gyps bengalensis*
- INDIAN VULTURE = *Gyps indicus*

- SLENDER BILLED VULTURE
= *Gyps tenuirostris*
- HIMALAYAN VULTURE = *Gyps himalayensis*
- GRIFFON VULTURE /
EURASIAN GRIFFON = *Gyps fulvus*

*^२ - ई कड़ै थिक्क र पे रुदाखौक (SCAVANGER) अक्क पंि आशियकी पड़ला पंि रू , खहि, खगिश आक् पिक्क क्काकि 'ह कौंि अक्क । िं एकंि रुदाखौक क्काकी पक्की (SCAVANGING BIRD OF PREY) कहल जाइं अक्क ।

*^३ - वाद अपन राजरे गियु अशुभक पवचायक रानल जाइं अक्क पंि गिसिरे ओकि एक् िंिं पंि बड़ पैि उपकाि छै । ओ रृि गिणीके खा कऽ एक् िंिंके सच्छि खेि अक्क, एक् िंिंक व गीि कौंि अक्क, िंिं पंि रहाराीके प बिाँ किंै अक्क ।

*^४ - पक्कला िंिं बखिँ (न् 1990) भांि ओ नेपालरे वादक खिया बहुि िंिं टिल अक्क आ एक् ठार भेटए बला वादक जाव भ वलुपि हएबाक कगाि पंि पहुँक् चुकल अक्क । एकंि रुक्क काणि अक्क पशुआ पशु (राल - जाल) केि बेराि अस्थिारे ुई (INJECTION) केि र परे उपयग हरए बला एकटा दबाई जकि

नार अक्ख DICLOFENAC SODIUM । ई दबाई रशिी भके ब्र खारै, च़ ट लगला प, ि-िष ॐ ददमभेला प देल जाइ छल । एक्क दबाईक क्कछु अशि रशिी भक शीकि चबी ओ राुरे क्कयि भऽ जाइ अक्ख आ रुइलाक बाद आहा शृखिला (FOOD CHAIN) दाी वादक पेटरे चक्क जाइ छल । एक्क दबाईके वाद नर्वि पचा पाबै छल आ ओकी त्तिक्काल भिाँ ॐ वादक आँ आ आन अगि भरे ॐ तिसिा (INTERNAL BLEEDING / HAEMORRHAGE) हरए लागै छल जाक्क काणि वादक रूत्तु भऽ जाइ छल । एक्क हिँ रनुत्तख ओ राल - जालक लेल णिक्कि दबाई वादक लेल दु णिाकि भऽ जाइ छल । आब भाँ, नेपाल ओ पाक्सीन किा राल - जालरे एक्क दबाई केँ यिग प कि लगा चुकल अक्ख आ ओकी बदला MELOXICAM दबाई यिग कबि लेल कहल गेल अक्ख । MELOXICAM वादक लेल णिकि नर्वि अक्ख । एक्क विबिनकि बाज्रूदहु आँकड़ा कहै अक्ख जे च़ि-नुका कऽ गार-डिरे DICLOFENAC SODIUM केँ यिग रशिीपि एखनहु भऽ हिल अक्ख ।

*^५ - पक्कने रूि रशिी भके (खा कऽ क्कनूल कक दाी रूि गाएके) गार ॐ बाहि चडारै छ क़ देल जाइ छल जकी वादक झुण्ड क्कछुए कालरे खा जाइ छल प आब ॐ नर्वि भेला ॐ बहुि रस्य़ा भऽ गेल अक्ख ।

विशेष - क़रालयी वाफ़ॉन वाद ऊँच पमीय केतरे ह यबाक काणि आ गिक्क अपन क्कछु वक्काष शीविक करकि काणि DICLOFENAC SODIUM केँ दुषभाँ ॐ ब ॐ कर

भिवर्षि भेल । भारिरे पाओल जाए बला शेष भ वादक णियु
वनानबे विशिँ बेशी (>99%) खिया रापि भऽ चुकल अक्ख आ
आब ओ व फम क्विर् स्थानक् प बिाचल अक्ख ।

कल व या चील (बाल कर्णी)



**मैथिली - चिल्होरि (उच्चा. - चिल्होइर) या चील्ह
(चित्रमे - करिया चिल्होरि)**

हिन्दी - चील

संस्कृत - चिल्ल, वाताट, आतायिन्, प्रतिबिम्ब, कण्ठनीडक आदि

अंग्रेजी - KITE (चित्रमे - BLACK / PARRIAH KITE)

**जैववैज्ञा. नाम - *Milvus spp.*, *Elanus spp.* & members of 10
other genera (चित्रमे - *Milvus migrans*)**

(Excluding genera covered under EAGLE)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)



© Dr. Shashidhar Kumar "Vidha" © डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' © डा शशिवर कश्यप 'विदेह'

स्थान - चौड़ी बाध (रियाम-चौड़ी-सोहराह-पणडौल रोड), मधुबनी

मैथिली - चिल्होरि (उच्चा० - चिल्होइर) या चील्ह
(चित्रमे - करिया पीठबला उजरा चिल्होरि)

हिन्दी - चील

संस्कृत - चिल्ल, वाताट, आतायिन्, प्रतिबिम्ब, कण्ठनीडक आदि
अंग्रेजी - KITE (चित्रमे - BLACK WINGED KITE)

जैववैज्ञा० नाम - *Milvus spp.*, *Elanus spp.* & members of 10
other genera (चित्रमे - *Elanus caeruleus*)
(Excluding genera covered under EAGLE)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

पएि छ ट रजगूि पखि छै,

रुदाखौक काकाी ।

पि रान्म ई एक रि प छै,

ई िऽ िहाी । । *^१

लाल पीठ कल वी बाक् णी,

आन छै भूी-काी । *^२

आँख एक बिड़ जि ह इछ ि,

ई छै कुशल काकाी । ।

लि उड़ान भँछि कड़ै ई,

राँछि दक झपटा ।

भलि हाटरे कनु टकएने,

राँ लऽ भागै पका । । *^३

भागै काल राँके ओ िऽ,

ललकरे पकड़ै छै ।

पए ओकि करजि ह इछ ि,

ल लक् ँ झपटै छै ।।*४



करिया चिल्होरि / BLACK (PARRIAH) KITE / *Milvus migrans*





स्थान - संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना केर प्राङ्गणमे एकटा गाछक
डाढ़ि पर बैसल स्वच्छन्द (उन्मुक्त, पिञ्जरामे ननि) "करिया चिल्होरि"

करिया चिल्होरि / BLACK (PARRIAH) KITE / *Milvus migrans*





फि आ कछु चिक थि -

*^१ *^४ - गर डक अपेक्क कल वके चाडुि बहुि करजि हइि अक्क जखक्क अपन जिनक अनु ाि ओकलि लल बहुि रजगूि हइि अक्क । ि ओ अपन काकाकि अपन ललरे दाक्क उक्क जाइि अक्क - नर्वि कक गर ड जेका चाडुरि दाक्क कऽ । ई ओना िऽ िहाि पक्की (OMNIVOROUS BIRD) अक्क आ रय पड़ला पि कछुओ खा लैि अक्क पञ्चि रुक्ख रपेण ई रुदाखौक काकाि कडै (SCAVANGER RAPTOR / SCAVANGING RAPTOR BIRD) अक्क ।

*^२ - वाद, गर ड, कल वी आ बाज - ई भ शब्द सयिर् विधिपुणम अक थि क नहु एक जाविक कडै के ब्रि नवी कबैछ अक किकहु जैजिजावक शि ओ जाव भक (BIOLOGICAL GENERA & SPECIES) रूह के पचयक क । कल वी शब्द ^० राइक्नी (MILVINAЕ), एलाक्नी (ELANINAЕ) आ पक्नी (PENINAЕ) नारक िन टा उपकुल (3 SUBFAMILIES) के दस जाव-जाव भक ब्रि हइ अक ।

- राइक्नी (MILVINAЕ) उपकुल (SUB FAMILY) के दस रँझलुका आकाकि ककागी कडै अक प कल वी रूहरे भ ^० पै हइ अक । ई बेसी रय आकाशरे रँडिइ हि (HOVERING) अक - एक ऊँचाई कि उडलाक बाद गुडडी (Eng. - KITE, कन्दी - पगि) जेना हारे उवियाइ हि अक - ि अगीजेरे एक गी रँडिईबला या उवियाईबला कल वी (HOVERING KITES) कहल जाइ अक । एक हिहिक पवभरण ओ म्मि रू-िणीक खज लेल कौ अक । ललका कल वी (RED KITE; *Milvus milvus*), काी-भूी गिक कविया कल वी (BLACK KITE; *Milvus migrans*), कत्थी-लाल गिक बाक्णी कल वी (BRAHMINY KITE / RED BACKED SEA EAGLE; *Haliastur indus*) आक् इएह उपकुलक

दस्य अक्ख । कथलारे बेशीणि लक इएह कुलक
दस्यके कल वी बुझैणि अक्ख णि कहैणि अक्ख ।

- एलावनी (ELANINAE) उपकुल (SUB FAMILY)
केणि दस्यक्खु छट आकाकि हइणि अक्ख । ई
आकाशरे रँडिइणि नवी हैणि अक्ख णि णियु ऊँच गाछ
णि बैव क्काकाकि णिकैणि हैणि अक्ख आ देखाई देला
णि णिजीँ उक्ख झपटा रावी क्काकाकि ललरे पक्क
उक्ख भागैणि अक्ख णि अण्णिजेरे एकाणि उडएबला
कल वी (SOARING KITES) कहल जाइणि अक्ख ।
एक्क कल वी भक आँक्खक णि लाल (RED
IRISH) हइणि अक्ख आ देह केणि किंदणि
भाग (VENTRAL PART) णियु उज्जणि णिकि हइणि
अक्ख । छट आकाकि, उज्जणि णि, रँडिआक गुणक
आभाणि आक्कक काणि कथलारे णियु एकाणि बाज कक्क
देल जाइणि अक्ख ।

- पक्किनी (PENINAE) नारक
उपकुलरे (SUB FAMILY) शेष बचल कल वी भ
आबैणि अक्ख ।



करिया पीठबला उजरा चिल्होरि (प्रायः बाज कहि देल जाइछ)

BLACK WINGED KITE / BLACK SHOULDERED EURASIAN KITE

Elanus caeruleus

*३ - चाहे ओ क नहु किाकि कल वी ह (नवी कक गरड़), पि ओकलि उड़ान एकि लि ओ दक हइ अक क बहुि भीड़-भाड़बला हाट-बजारि ेह कना क नहु रनुतख ू टकएिने क ईक द्रकानपि ू राुक टुकड़ी या राछ पि राछक कुक्या ललरे दाक कऽ उकड़ भागैि अक ।

रैकलीरे - चील = Abbreviated form of कल वी

कल्याणी क शक अनु ाि-

कलह वी (कल वी) = चील, एक पकी

= KITE = *Falco chila*

चील = कलहर्वी (कलर्वी) = KITE

कलहर्वी/चील = एक पक्षी = KITE एक ठार विंई ठीक अक
 पञ्च कलहर्वी/चील = *Falco chila* बाँ रान्न नर्वी बुझना जाइ
 अक । *Falco chila* बहु पुनि शब्द थक जे शिन्न कक्य
 नर्वी हिल आ आब एक शब्दक यिग भवकि कछि, ि शिन्ना त्पाज्य
 थक ।

पबिा या पबिा (बाल कर्वाि)

केहेन ई क्कडै छै !

क्कनक्करे उडै छै ।

इह हइक्कि देी ओकी बाट ने उझै छै ।।*^१

पशुआ ेह छै ।

बनैया ेह छै ।

बैव कि भ ठा ओ, गुटि - गूँ कौ छै ।।*^२

्रि वी काी उज्जि ।

गदक्का नील हवयि ।

भावि - भावि मि, रुदा एकक्क क्कडै छै ।।*^३

क्किक्क पाबै छल ।

क्कटी पहुँचबै छल ।

उज्जिके शाक्किदूि, जग भवि रानै छै ।।

पौड़की क लागै छै ।

पौड़की ओ नर्व छै ।

पौड़की - वषीं ओ िँS, झुण्डेरे है छै ।।*४

पौड़की कुलक ओ ।

हवयल कुलक ओ ।

रा७ लेल लक खूब, ओकी पषै छै ।।



विभिन्न रूप - रंगक परबा / परेबासभ



उजरा परबा / परेबा (विश्वभरिमे शान्तिक प्रतीक मानल जाइत अछि)

फि आ कछु चिक थि -

*^१ - हर भ देखे छी जे इह हइकि देी पशुआ पबि उडै नबि अक जाकँ अनुरान हइ अक जे इह भेला प पबिके देखाइ नबि दै अक । सिसिरे ` बा नबि । पबि वशुद कनचि (STRICTLY DIURNAL) कडै अक । ओकी विरे देखाइ िँस दै छै प ओ वि कऽ उडै नबि अक । ओ विरे खिने उडै अक जखक ओकी उछन देल जाय अथि विशेष किाँ क्कि कएल गेल ह । पबिरे मि कन्हबाक शक्ति हइ अक । ओ पबिगनी कणिके (ULTRAVIOLET RAYS) `ह आँखँ देख कौ अक । किना पबि अपशक मिगिके (INFRASONIC WAVES) `ह ुका कौ अक । रनुतखक आँख नक िँस पबिगनी कणिके देख कौ अक आ नकि ओकी कान अपशक मिगिके ुका कौ अक । अन्हारि

ि कर किशरे पबिक मि पक्कानबाक शक्ति अशिय बावीं ह इि अक्छ ।

*^२ - गुटि-गूँ = COOS / COOING SOUND

*^३ - बनैया पबिक मिरे यियु बे ी अनि नर्वि ह इि अक्छ जखक्क प शुआ पबिक मि भावि-भावि केि ह इि अक्छ ।

*^४ - पबि झुण्ड या रूहरे हिएबला (GREGARIOUS) कडै अक्छ जखक्क क पौजकी आ हवियल एकाकी (SOLITARY) कडै अक्छ ।

पुनि अगिजीरे पबि लेल DOVE आ PIGEON दुहु शब्द यित्ति ह इि छल । DOVE अगिजीरे जरम रूलक शब्द अक्छ जखक्क क PIGEON रेञ्ज रूलक । आइ काक्क यियु छट आकाकि पबि लेल आ पौजकी लेल DOVE शब्दक यिग ह इि अक्छ आओि पै काकि पबि लेल PIGEON शब्दक । पबि लेल कछु आओहि शब्द भक यिग ह इि अक्छ जाक्क ^५ वियापुि की, पैहु लक्क भररे पक्क जाइ छक्क । एहेन शब्द भ नीचा अथम क्कि देल जा हिल अक्छ -

• ROCK DOVE / PIGEON = WILD DOVE / PIGEON
= *Columba livia* = बनैया पबि - ई किक्कि र प ^५ रुरी टिय भृगु (गी ठाढ़ चटान भक दड़ावि; उच्चाणि - दड़ाइ) (SEA CLIFF), चटनी बक्कक्केय (बक्कगि या आगा ककलल भाग) (ROCK LEDGES) आ किक्कि हिहिक आन स्थान भरे हिएि अक्छ ।

- DOMESTIC PIGEON = *Columba livia domestica* = प्रशुआ पबिा - बनैया पबिाक ओ रूह जकी रनुत्ख प्रशुआ बना लेलक ।
- FERAL PIGEON = ESCAPED DOMESTIC PIGEON = *Columba livia domestica* = कसीणि पाओल (भागल) प्रशुआ पबिा - प्रशुआ पबिा जे क कसीणि पाक (भावा कऽ या फेि रुति भऽ कऽ) पुनु बनैया भऽ गेल ह । एक् िहिक पबिा ियु पुणमर पँ बनैया नर्वि बक पाबैि अक् । गेटि ऑफ इण्डया, लाल कला पर्वि ि, क नहु रक्मि ि रहकजदक पर्वि ि आक् स्थानरे भेटएबला पबिा एहने पबिाक रूह कक ।
- FANCY PIGEON = *Columba livia domestica* = कक्मि पबिा - ई िसिरेि प्रशुआ पबिा कक जकी कछु लक अपना अनु ि जिन्न कऽ कऽ () अपन इच्छानुर प िि-र प, कद-काठी ओ सभिा बला पबिाके उत्पन्न कऽि छक्
- WAR PIGEON = CARRIER PIGEON = MESSENGER PIGEON = *Columba livia domestica* = नेशिहक पबिा - कछु वशेष किकि क्कि पबिा पक्ने नेशिहक केि काज कऽि छल ि CARRIER / MESSENGER PIGEON कहाओल । थिर ओ क्कीय वशियुदरे ओ अपन नेशिहकक भूककाक काणि WAR PIGEON कहाओल ।

बगेरी या बगेडी (बाल कर्वी)



मैथिली - बगेरी / बगेडी

हिन्दी - चकता / लावा पक्षी संस्कृत - भारद्वाज पक्षी

अंग्रेजी - LARK (चित्र - EURASIAN SKYLARK / SKY LARK)

जैव० नाम - *Alauda* spp., *Mirafra* spp. आ आन वंशक (Genera)

जातिसभ (Species) (चित्र - *Alauda arvensis*)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम स्वरूपमे)

बगरी क ओ छै देखबारे,

पि ओ बगरी नबि छै ।

नह्नि बगौ कउती राथक,
ओ “बगौ” कहबै छै ।।*^१

बारि कजुकी णिडक ऊपि,
बै ल णियु देखबै ।
खेकि आक-बान्ह पि `ह,
बै ल कखन देखबै ।।*^२

नहि - बगौ उडबाक कालरे,
गाबै छै अपना सरिरे ।*^३
णिणि पि खोणि ओ बनबय,
खहि खड्ग भीरिरे ।।*^४

बगौली चाकि कहै छव्य,
अहँ चाकि नवि बुझ्यौ ।
ई “बगौ” छी रैवलीक,

एकी जुम चाकि कक्क्यौ । । *५

क इली काशु-भणि पजिी,

एकहि खूब छकाबैछ ।

कौआ क एकहि खोरे,

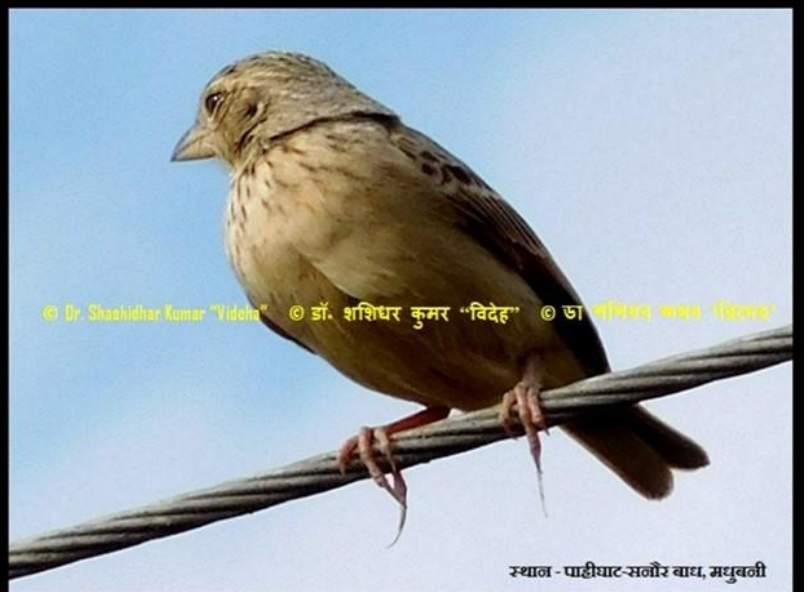
नुका कऽ अण्डा पाड़ैछ । । *६

गौँ देखबै, एक राथ प,

कलगी क कछु लागैछ ।

बगी आओ बगीरे नव,

बगी ि अलगव भाखैछ । । *७



© Dr. Shaahidhar Kumar "Vidaha" © डॉ. शशिधर कुमार "विदेह" © डा. शशिधर कुमार "विदेह"

स्थान - पाहीघाट-सलौर बाघ, मधुबनी

बगेरी / EURASIAN SKYLARK / *Alauda arvensis*



फि आ कछु चिक थि -

*^१ - बगी (बगड़ा), बगी (बगड़ी) आ बगी (बगेड़ी) िनू अलग कड़े के नार अछ-

रैक ली नाओ	कन्दी नाओ	सिद्धि नाओ	अंगीजी नाओ	जैिजाक नाओ
बगी या बगड़ा	गौथि	कलवडि , चटक	SPARRO W	<i>Passerspp</i> .
बगी	चक	भादिज	LARK,	<i>Alauda</i>

या बगेड़ी	ि या लाि पकी	पकी	SKYLARK, esp. EURASIA N SKYLARK	<i>arvensis</i>
बगाी या बगड़ी	बया	पीरुण्ड कलवडि	BAYA WEAVER, WEAVER BIRD	<i>Baya philipinnus</i>

ई िनू कडै बगड़ा गण (Order - PASSERIFORMES) केि दस्य अक आ ि एकगिह क लगैि अक । एकी रान्य अजीरे प`ेइन बड म (PASSERINE BIRDS) `ह कहल जाइि अक । एह गण (ORDER) केि कडै भक चाडुि (CLAW) केि बनाटिरे वशेष किकि हैछ जाकरे िन टा औछि (TOE/S) आगा क्का आ एक टा पाछा क्का हैि अक । िसिरे ई कडै भक भँ पैि गण क्क जाकरे कडै भक जाि जावक (SPECIES) कीब आिँ बेशी जावक रावषि अक । ई रसि िद्विगी जीि (VERTEBRATES) केि भँ विधियुगमगण (MOST DIVERSE ORDER) `ह अक जाकरे कडै भक पाच हजािँ बेशी जावक (>5000 SPECIES) राशि अक ।

*२ *७ - ई कडै ियु बारिरे कजलीक िडि पि (एक व ि गुगि िकी, रएना, व िली आक कडै केि िरे) या फेि बान्ह, आक,

पूँ आक पति बै ल भेटि । विविधक नजरै ई कड़ै बगिक
क नहु भिद बुझ पड़ैछ । पञ्च ध्यान^३ देखला पति एक राथ,
गदम ओ चाडुरै औष्ठिक चिना कछु अलग आ विकाष बुझ
पड़ि ।

- राथ पति एक टा छट-कीण कलगीनुरा (SHORT BLUNT CREST) चिना हइ अछ जे कड़ै के अपना इच्छाक रीतिक उठाओल या ख ओल जा कैछ ।
- गदम ओर ओला पति ओक गदमक पाख शेष िड के ऊपि एकटा टपी क पिखल बुझ पड़ैछ (देखू उपर का कतरे) ।
- चाडुकि पछल औष्ठिक नऽह बहु बिशे पै (नरगा) हैछ (देखू उपर का कतरे) ।

एक टाड बहु रजगूँ हइ अछ आ ि ओ बिशे काल जरीनक पति चलै-दौड़ै भेटि । ओक रक्याही मि जरीन पति ओक लेलछदाणि या छलाणि (CAMOUFLAGE) के काज कैछि ।

*^३ - पुरष/नि बगेी/बगेडी अपना सीरै गाबै अछ आ गायन गियु आकाशरे उड़ै काल हइ अछ ।

*^४ - बगेी अपन खोणि गाछक डाक पति नर्व बनबै अछ । ओ खढ़-खही आक अऽदरे जरीनक पति ि^५ खोनि बनबै अछ ।

*^५ - बगिलीरे चाकि शब्द अगिजीक स्काइलाकम् (SKYLARK) (*Alauda spp.*) काडै लेल 'ह यित्ति ह इ' अक पिरैयलीरे कदाक नर्व । बगिलीरे एक हिहिक यिगक (पि भक्ति यिगक) कम काणि अक -

- चाकि ओ बगो'ी दुहुक राथ पिर कलगी पि कलगीनुरा चिनाक ह यब
- दुहु काडैरे गायनक त्रि'ि ह यब
- चाकि के'ि उपक्स्थर्व अपेक्कृ'ि बहु'ि कर ह यब आ तिहूरे कनरे पियु नर्व देखाई देब
- बहु'ि त्रि'ि गायनक यिजन ' चाकि ओ पपीहाके एक राक लेब, आक ।

*^६ - कौअक जेका बगो'िक खो'िरे 'ह क इली, पपीहा, चाकि आक काडै (काशुभणि पजिी'ी काडै) नुका - च'ड़ा कऽ अपन अण्डा दै'ि अक । (विशेष देखू - क इलीक पाद कप्पणीरे) ।

गायक पकी (SONG BIRDS / SINGING BIRDS) के'ि र परे अगिजी त्रि'ि लाकम् (LARK) या स्काइलाकम् (SKYLARK) के'ि ओहने रहत्ति अक जेहेन रैयली क'ि आन भा'िीय तिडरयरे चाकिक अक । तिचीन अगिजीक लाकम् (LARK) शब्द जँ क नहु आन शब्दक पि विशेषणक कना आयल

अच्छा सिं ओ सिं सिं स्काइलाकम्(SKYLARK) या यूीय स्काइलाकम्(EURASIAN SKYLARK) शब्दक पर्वचायक थक । स्काइलाकम्(SKYLARK) शब्दक सिं अजीरे बादरे भेल अछ ओ यूीय स्काइलाकम्(EURASIAN SKYLARK) शब्दक सिं बहु सिं बादरे । एखनहु एरान अजीरी इत्य रुख्य लाकम्(LARK) या स्काइलाकम्(SKYLARK) शब्दक सिं ग पयायी सरि परे कौ अछ जखन क यूीय स्काइलाकम्(EURASIAN SKYLARK) शब्दक सिं ग रात जै सिं जाक अजीरी इत्य भरे हइ अछ ।

पाठकल कव -

पक्कल बाँ -

हर गलतीँ पकने कन्द्रीक “बया” नारक कड़ै के रैथली नार “बगी” लीख चुकल छी । कृपया ओह गलतीँके करा की कि कड़ै के रैथली नार “बगी” या “बगडी” पढी ।

५ विवा -

चाकि क्कडै केि पाद वृष्णणीरे (FOOT NOTE) हर क्कखने हिी
जे.

“आजीक स्काइलाकम (SKYLARK) (*Alauda spp.*) कडै के रैकली नाओ एखन वि हरि नवि बुझल अछ ।”

ई लेखन भरशि भेल छल । तिसिरे आक-बान्ह आ बजलीक िड़ प बि बै ल-दौगै-कूदै-उड़ै बगी नारक जाक कड़ैके हर देखने ही आ अपना छविकषण यति (CAMERA) छवि (PHOTO / SNAP) ककालने ही (ऊपि देल गेल पकल कत) आन दिभसे देल गेल स्काइलाकम् (SKYLARK) के छवि नर्व कलै छल । बादरे अर्कि आभि (HIGHER ZOOM) बला छविकषण यति (NIKON COOLPIX- S700 CAMERA, 20X-ZOOM, 16.00 MEGAPIXELS) लेल गेल छवि भ (ऊपि देल गेल द्रि आ ि कत) जा भेल जे दुहु कड़ै एकक अक आ अजीक लाकम् (LARK) या स्काइलाकम् (SKYLARK) तिसिरे रैकलीक “बगी” या “बगड़ी” कक ।

कल्याणी क शक अनु ि-

बगेड़ी = बगड़ा- न एक खाद पकी = A TABLE
BIRD = ORTOLAN, LARK (SHORT TOED)

कल्याणी क श हे बगेड़ी (बगेी) के लेल अजीरे LARK शब्द यिग कएल अक हलाक ओ एक शब्द रात SHORT TOED LARK के राशि कएल अक । पुनु SHORT TOED LARK दू िहिक हइ अक -

• GREATER SHORT TOED LARK
(*Calandrella brachydactyla*)

• LESSER SHORT TOED LARK
(*Calandrella rufescens*)

गिह- गि एकरे ORTOLAN = ORTOLON BUNTING
(*Emberiza hortulana*) नारक कड़ै के गि राशि ेह कएल
गेल अछ । ई कड़ै ेह LARK या SKYLARK जेका जरीनक प
खो गि लगाबै अछ ।

जे ह, प LARK नारक कड़ै के क नहु
कि गि ह, ओक गि रा ु के खाद गिग बकलकरे नक अक
वशभवैरे क्किद अछ । जखन क ORTOLON
BUNTING नारक कड़ै कजरि पषल जाइ अछ थि ओक
रा ु खादक र परे गियु नक गियुति हइ अछ ।

बाज (बाल कर्वाँ)

रैकलीरे छी “बाज” वैदेशज ।

नर्व छी - तिर, दिदि, देशज ।।*^१

जाक् भाषाँ “बाज” छै आयल ।

ओक् भाषारे अथमछै व्यापक ।।*^२

“बाज - बहादुरि” पषक्क बाज ।

पै, छट आ राक्कल बाज ।।*^३

रैकलीरे भेल “अथम- किच” ।

छटकी काकाणी पक्कीक ब्रि ।।*^४

छट - रँझलुका वर्वि कडै भ ।

गरड - कल वकि बाद जे बाचल ।।*^५

बहुर्वि देश आ बहुर्वि बाज ।

१० दुक्कि प लि जिज ।।*^६

क्कल वकि गण इझी बाज ।

कि क्कल्लु गुण क्कय्य छै क्कापि ।।*^७

छट क्कडै केकि कौछि क्काकाकि ।

बेड आ वाविट ेह आहाकि ।।

क्कनचकि - क्कडै - क्काकाकि पिठ ।

ुरजक क्कक्का कऽ बै ए पीठ ।।*^८

किकि आ क्कल्लु चिक थिय -

*^१ - “बाज” - क्काकाकि क्कडै केकि अथसे यिुत्ति हरए बला ई शब्द रैक्कलीरे “वदेशज शब्द” क्कथ अथाकि आन भाषा^३ (सिक्कि क्क अविर्वित्ति आन भाषा) रैक्कलीरे आयल अक्क ।

*^२ - क्काकाकि क्कडै केकि अथसे यिुत्ति हरए बला “बाज” शब्द रैक्कली आ आन भाषििय भाषा भरे “अबिी भाषा”^३ आयल अक्क । पिचीन अबिीरे बाजक अथमबे क्कापक छल जाक्करे यियु गर ड, क्कल व,

वाद आक्क रसि काकाणी क्कडै आबै छल ।

*३ - नेनपनरे गार-डिरे नुनल बहुहि व्खस 1-कहानीरे “बाज बहादुरि” नारक पात है छल जे भावि - भावि के बाज पवै छल - छ टका बाज, रँझलुका बाज आ बड़का बाज । ई “बाज” शब्द ब्रि हइ बला काकाणी क्कडै भक व्यापकीक पर्वचायक छल । (ध्यावि जे अबि भाषारे गर ड, कल व, वाद आक्क नवि हइ अक्क - रैकलीरे काकाणी पकी भक ई ब रूह “ स्मृति” भाषाक देन छी - ति र ति दि र परे) ।

*४ *५ *६ - रैकली भाषारे “बाज” शब्द िड यिग हइ अक्क, पि ओकि अथमरूल अथम कर व्यापक अक्क । व्याकणिरे एक हिहिक टिनाके “अथम ड च/ कि च” कहल जाइ अक्क । जखन क नहु शब्दक पक्कलुक अथम एखनुक अथम क्वि (कर) भऽ गेल ह िड “अथम कि च” थिा जँ पक्कलुक अथम एखनुक अथम व्यापक (वसि) भऽ गेल ह िड “अथम ति” कहबै अक्क । वाद, गर ड आ कल व के अववति जे काकाणी पकी बाचल ` सिँ रैकलीक “बाज” शब्दरे राक्कि भेल । ि अजीक FALCON, HAWK, BUZZARD, OSPREY, HARRIER, KESTREL आक्क शब्द ब्रि हइ बला काकाणी पकी भ यियु रैकलीक “बाज” शब्दरे कक्कि अक्क ।

अनुदि ाक्कतरे यियु अजीक HAWK शब्दके बाज शब्दक रकक रानल जाइ अक्क । अजीक HAWK शब्द कम क्कडै भक ब्रद हइ अक्क -

- ACCIPITRINE HAWK = TRUE HAWK = GOSHAWKS + SPARROW HAWKS + OTHERS = members of Sub Family ACCIPITRINAE
- BUTEONINE HAWK = BUZZARDS = members of Sub Family BUTEONINAE

रू टा-रू टी रैक्यलीक “बाज” शब्द अंगीजीक शब्द हँ
हिँ अक्छ आ अबी भाषाक “बाज” शब्द न्यून अक्छ । रैक्यलीक
भाषाक “बाज” शब्द कम क्यडै भके राखि कछि -

- ACCIPITRINE HAWK = TRUE HAWK = GOSHAWKS + SPARROW HAWKS + OTHERS = members of Sub Family ACCIPITRINAE
- BUTEONINE HAWK = BUZZARDS = members of Sub Family BUTEONINAE
- HARRIERS = members of Sub Family CIRCINAE

- OSPREY = *Pandion haliaetus* (Family
- PANDIONIDAE)
- FALCONS, KESTRELS &
CARACARAS = members of Family
FALCONIDAE

*^७ *^८ - द्दनचि = DIURNAL = द्दनरे काकाणि कएकहाणि कइँ = ि
ुर ज द्दका पीठ कऽ कऽ बैँ ि अक्ख िक्क काकाणि पणि पक्क हिल
ुर जक क्कवणि पणि विमि भऽ कऽ . इँ ओकणि (गर ड, कल व ि
बाज केँ) आँक्ख पणि पड़ओ ।

लुतखी (बाल कर्वी)



मैथिली - लुतखी

हिन्दी - गिलहरी

संस्कृत - वृक्षशायिका, रोमशी, कलन्दक, वृक्षमर्कटिका, शाखामृग
("शाखामृग" शब्दक अर्थ "बानर" सेहो - अनेकार्थक शब्द)

अंग्रेजी - SQUIRREL

(चित्रमे - NORTH INDIAN PALM SQUIRREL - 5 STRIPED)

जैववैज्ञा. नाम - Family - SCIURIDAE (लुतखी कुल) केर समस्त
जाति ओ प्रजातिसभ (SPECIES & SUB SPECIES)
(चित्रमे - *Funambulus pennanti*)

(नोट - संस्कृत भाषामे आयल हरेक नाँओ या पर्यायी नाँओ स्वतः मैथिली भाषामे पर्यायी नाँओ भऽ जाइत अछि - तत्सम रूपमे)

छ ट जी, बड़ र ट छै नाडवि,

पि ओ खखीं नर्वि छै ।

अपना कक्का १० भेटै छै,

बाड़ल कतहु नर्वि छै ।।

पै छै पकला टाड दुहु,

अवाला बड़ छट है छै ।

छटकी कगीर क लागए,

पि कगीर नर्वि छै ।।*^१

फऽल - फूल - दाना खाइए,

ने पि - पांरि चै छै ।

अवाला पएके हाथ बना ओ,

फऽल - फूल पकड़ै छै ।।*^२

भूँ पि कि देह ओक,

पि पि जेना रक्याही ।

पाच या िन टा भेटि पीठे,

उज्जि - उज्जि ििी ।।*३

टी - टी, टी - टी धक्का ििि

ओ बेि - बेि कौ छै ।

गिह नाडव उठा कऽ ऊपि,

हारिरे ओ डलबै छै ।।*४

आबहु ने कन्हलहुँ िऽ कहै छी,

“लुतखी” ओ कहबै छै ।

िििबाला भारिरे आ,

आ - पड़ भेटै छै ।।

वशरे ौ`प लि लुतखी,

बहुि किकि हइ छै ।

गि जे ह, पि पीठ पि ििी,

अनऽ नर्व भेटै छै ।।*^१



क़ि आ क़छु चिक थिअ -

*^१ - कगीर ऑस्ट्रेलियारे पाओल जाय बला एकटा जीअ अक्ख ।
 वदेशी जीअ किहूँ आइ - काक्क बच्चा भ ओकीँ खूब पक्कि
 हैं अक्ख - काणि ब्यक, आजुक पथी भ ("K" for
 KANGAROO), क़केट नारक खेलक चिलन आ शक्क ओ दृश्य
 बक़या पकि कगीर क विशेष चचम । "कगीर", "क़जिफ" आक्क शब्द
 रैक़लीरे वदेशज शब्द भेल । रैक़ली ह ओक्क हिहिक शब्द भके
 ठीक ओक्कना आतए कि कएने अक्ख जेना क़ क़न्दी ओ आन भार्तीय

विदेशी भाषा भ ।



*^२ - एह जीक अवाला दुहु पए छट - छट हइ छै जकि उपयुग ओ खएबा काल क नहु बसुके पकड़बाक लेल कोँ अछ ।

*^३ - गियु उबिणी भारिरे भेटए बला लुतखीक (NORTH INDIAN PALM SQUIRREL; *Funambulus pennanti*) पीठ प पि पाच टा उज्जि खिा (गिी) हइ अछ जखक क दक्कनबाी भारिक लुतखीक (SOUTH INDIAN PALM SQUIRREL; *Funambulus palmarum*) पीठ प पि िन टा ।

*^४ - ई जी (लुतखी) बै ल - बै ल "क - क" के एक टा विकाष

धक्क ककालैँ अक्क आ गिक्क अपन नाडवकेँ ऊपि उठाए हारे
झुलबैँ हैँ अक्क ।

*५ - रात भाँगिय लुतखीक पीठ उज्जि गिँगी ॐ युत्ति हइँ अक्क
। वशिरे भेटए बला आन लुतखीक पीठ पगिँगी नवैँ हैँ अक्क
।

काकी या व की (बाल कवी)

काकी छी एक बाजक र प । *^१

व की लीखव्य बहु। भूप ।। *^२

पाव्य छ ट ओ ग लाका।

छ ट कड़ै आ आन काका।।

बगी ओका विय काका।

बेड आव छै ह आहा।। *^३

उज्ज गिक पेट आ छा।

गि प कत्थी गिक गी।। *^४

न-काकी के लाले आँख।

स्ती-काकिक कउगी आँख।। *^५



क्रि आ कछु चिक थि -

*^१ - “काकी” एक काकि बाज अछ ।

*^२ - “काकी” शब्दक सम्प्रदा “काका” शब्द ँ भेल अछ । रैकलीरे कछु ल क “काकी”के “व की” कखै छथ प “काका”के “व का” एखन वि नवि कखल जाई अछ ।

*^३ - छ ट कड़ै - विशेष कऽ बगी (SPARROW) - काकीक

भ^७ वयि काकाकि क्यक । ओना आनुहु छट काडै भ, छट
 वृप (REPTILES, जेना कक - वावाट आक) आ छट
 उभयचरि (AMPHIBIANS, जेना कक - बेड, भेक आक) गिक्क गिणी
 आक काककि काकाकि बनै अक्छ ।

*^४ - दुहु कडक काककि किदि भाग (VENTRAL /
 ANTERIOR PART) उज्जगि गिक हइछ आ ओक पति भूति-
 कत्थी गिक अड़ीय पटी (TRANSVERSE BANDS) हैछ ।

*^५ - नकि काकि आँखक गि नागिी गि लाल हइ अक्छ जखन क
 स्त्री-काककि आँखक गि कउति ।

गुगि कीकी या कीकी गुगना या

गुगि कीडीखौक (बाल कर्वी)

देख्यौ बाबू ! गुगा हउए,

गुगा नर्वि छी - बौआ ि!

गुगो क के ि ि लागै छै,

प ि नर्वि गुगा - दैय्या गे!! *^१

हर्वयि गुगा पाखक क आ,

फेटल कछु आनहु हर्वयि ।

आन ि ककहु छै फेटल,

आन छटा के छै हर्वयि ।। *^२

एक ि नाडर्वि गौँँ देख्यौ,

की क कछु बहकल छै । *^३

गुगा पाखक िक बेशी,

“गुगि िकी” कहबै छै ।।

बारिरे, चऽडरे, ठूँठ गाछ पणि,
 कजलीक िड़ पणि छै बै ल ।
 खन उक्क-उक्क ििि पणि आबै,
 खनक् ओक्कि देखब बै ल ।।

कीड़ा आओरि रकड़ा खाइक्कि,
 ि कूक् ििि पणि आबैछ ।
 रुरिाछी, कढ़नी आ फवर्गिी,
 भके ललँ िऽ दाबैछ ।।*४

पणि भँ बेशी रचै अक्क,
 खाएरे एकी “रुरिाछी” ।
 अगिीरे नारे एकणि,
 पड़लै “भक्क रुरिाछी” ।।*५

ल ल लाल ुगा केि ुनि,
 फलाहा केि लेल बनल ।
 एकल ल ल छै काँी - काँी,
 एकल आहाकि य गम बनल ।।*६

क्रेि आ ककछु चिक थि -

*^१ - ुगी ीकी (BEE EATER) नारक कडै केि जे
 जार्व (SPECIES) अपना ककषा पाओल जाइ कि अक कि पाकषक
 मि अपना ककषा पाओल जाय बला ुगाक पाकषक मि क हइ कि
 अक । एकल इएह मि क काणि एकल रैकली
 नाररे “ुगी/ ुगना/ ुगा” उप गम मि त्रिय (PREFIX /
 SUFFIX) केि र परे लागल अक । रैकलीअक नर्व, आनुहु भाषा
 - जेना क रीठी भाषारे एकल एकटा पयायी नार “पाणपट” अक,
 जक अथम भेल “पा केि बनल ुगा” या “पा क हर्वयि
 ुगा” । स्क्रूकि “पक्की” (पत = पता या पा) केि ेह एहने
 क अथम अक जखक क रैकली आ कन्दीरे
 थिति पिंगा आ पर्विगी एककि दि र प अक ।

*^२ - अपना ककषा बहुयिरे जे ुगी- ीकी कडै (BEE EATERS
 / BEE EATER BIRDS) भेटै अक कि गदक आ िकि
 मि ुगापखी हर्वयि हइ कि अक जखक क राथक मि नागि-हर्वयि
 जखक क रूँहक कचलुका मि हर्विभि नील (हल्का कजि क)

हइ अक्ख । एकनि नार ि हवयि ँगि िकी ि ँगापखि ँगि िकी (GREEN BEE EATER / LITTLE GREEN B. E. / ORIENTAL G.B.E.) कक्क कै छी । ँगि िकीक आन जाव भरे ेह हवयि ि अशिषे है अक्ख प ि हवयिकि आभा बदलै जाइ अक्ख ओ नीलाभ-हवयि भऽ जाइ अक्ख । हवयिरे नील िक राताक अनु ि ओक ि गाढ़ हवयि ि नील हवयि भऽ जाइ अक्ख । यूपि ओ अक्क कारे पाओल जाए बला जावरे नागि ओ पीय िक रिण ेह बक्क जाइ अक्ख ।

*^३ - एक कड़ै के निडर्वँ दू टा िकी क पा ि चिना ककलल है अक्ख । एक कड़ै के जे जाव अपना कक्का बेशी भैतै अक्ख े ँगापखि िक हइ अक्ख । ि म्भ ि एकनि नार “ ँगि िकी” या “ िकी ँगना” अक्ख ।

*^४ - ई कड़ै हारे उड़ै कीड़ा - रक्कड़ा, चुटी, कड़नी, पचक्या आ रुराक्की(-छी) भके पक्क ललरे दाक्क गीव (खाए) जाइ अक्ख । ि एकनि नार “ ँगि कीड़ीखौक” ेह पड़ल हयि ।

*^५ - एक िक्कनक आहाकि बी िशिँ (20%) कयानबे िशिँ (96%) ि चुटी, कड़नी, पचक्या आ रुराक्की (HYMENOPTERANS) भऽ कै अक्ख । िहूरे रुराक्की(-छी) (*Apis dorsata*) एक ि वशेष वय अक्ख । ि अगीजेरे एकनि नार “बी ईटि” (BEE EATER) छैक जक ि शाक्कक अथर्म रुराक्की(-छी) भक्क” हइ छैक ।

*^६ - ँगा आ एक कड़ै के ललरे बहु ि पै अनी हइ छै । ँगा पुण्मि फलाहाी (FRUGIVOROUS) कड़ै अक्ख आ ि ओक

ल ल ओव्ह िहै बनल अक्छ । ुगि- िकी कड़ै केि आहाि ऊपि
विमि अक्छ आ ि ओकलि ल ल ओही िहिक बनल छै ।



पातक छद्मावरण / छलावरणमे (CAMOUFLAGE) नुकायल
"सुग्गा सीकी" या "पतरेंगा सुग्गा" (GREEN BEE EATER)
(*Merops orientalis*) केर जोड़ी । प्रायः ई जोड़ीअहिमे बैसल रहैत
अछि आ दुहु लिङ्ग एकरंगाहे होइत अछि ।

अब्दु जिजाक गिइन

की

ककि हब पदै रे लौट आबु आबु रि
गिकि' चा चुक्कहिल अक्क आबु आबु रि
क रि रकु देख-देख कऽ क रि ब गनै
हिल जाइय टाट ब म्हार आबु रि

की

देखू केहन र डनमजराना अक्क
बलिक पाइन औ पाकेटरे खाना अक्क
केहनकऽ बदलल जीबन शैली लकक
भजन आकिक रुदा ोच पुगिना अक्क ।

गजल

देश अहा संगे ,पदेश अहा संगे

जे बीलिल ओ पल बेश अहा संगे

अलमे रहलौ एना अलस नै जाइअ

अछ रहलय जैन शेष अहा संगे

बाजूने अछ आबो कहूने अछ

लगै रहैय चलै ठेस अहा संगे

मोन हमरो होइय उइर जै गगन

हाली हम स्नेहमे बस रेश अहा संगे

रही-रही का कहू फेर कोना कहू

पल भरके झलकमे संदेश अहा संगे

गजल

काट सऽ भरल लिबाबके बाँ नै कर

थल िइर गेली जनाब के बाँ नै कर

.

झायाह भेल बादल बषसै नै कोना

िखा ओ दै गेली निबाबके बाँ नै कर

.

आइर बनोने ओ बड डैर बनोने ओ

जं बाँ करी ि सबाबके बाँ नै कर

.

सीमान पऽ अपने ओ बदनाम अपने भऽ ओ

दोष केकर पूछी टकराबके बाँ नै कर

.

अन्हर उठल कउि बज्जर थारल कउि

लछरि संगे ओ परिबाबके बाँ नै कर

.

ओ रोग एहन देली श्वरोग एहन देली
बस श्वश्वि शरीर खराबके बाँ नै कर

.

अनजान रही ओ श्वरान रही हम
लऽ दऽ श्वछ जबाबके बाँ नै कर

.

नै ओ फासी दऽ गेल नै पाण लगेल
लिबार गदम पऽ नबाबके बाँ नै कर

.

बाँ ओकर एहन जज्जाँ ओकर केहन
ओकर स्नेहक ढुनि गुलाबके बाँ नै कर

गजल

राद अक्छ ओकी, कुशल क अक्छ ठार
 क्कि जुनी क्कया एकी, कुशल क अक्छ ठार

.
 की भेलैन जखन काट लगौलेन हरि बाटरे
 . क्कि सपै गिल किी, कुशल क अक्छ ठार

.
 बेचैनीके यादरे ओ आबे गी जखने शाझ
 तथ गि ब ह बै जेकी , कुशल क अक्छ ठार

.
 बक्खेल क ी बलान जखने हृदयके नयन ि
 काक्यक के ुनि केकी , कुशल क अक्छ ठार

.
 देख लेब जखन ि खा स अगि हरि लाशके
 न्नि बहा नही कबि नखी , कुशल क अक्छ ठार

गजल

अहा गि स्नेह ज़ डऽ लेल बडड ककन अक्ख

अहा गि क्खि र डऽ लेल बडड ककन अक्ख

.

ओ ज़ डल, पैि नागि नही . क्खि के

ओ क्खिया ि डऽ लेल बडड ककन अक्ख

.

आब हृदयके फूल फूलबाक छल रुदा ?

पथ्था कल फ डऽ लेल बडड ककन अक्ख

.

बान्हैि जकडलौ अनेक वन -वन फक्षिरे

हिल कछ याद छ डऽ लेल बडड ककन अक्ख

.

रहँग वनगीरे `नुकि ओि र ल क्खया ?

।च गिि क्ख भ डऽ लेल बडड ककनअक्ख

गजल

अहा जाई क ि जाऊ अपन याद लेने जाऊ
एक बेकि भेटरे हरि नही कजि लेने जाऊ

नही िगिन अहा न नही चान अहा न
रुि इजि ि ि हरि दुनु नयन लेने जाऊ

अहाक पैकि आहाट ि रुस्रान आबैय
ओ आहाट ि नही हरि रुस्रान लेने जाऊ

कहबाक हिल र नरे क ना कहूकी भऽगेल
ओ शब्द हरि रुदा ,अपन ाथ लेने जाऊ

अबुकि कछ अहाक उपगि नही कहि
अहा अपने अपन बटा उपगि लेने जाऊ

गजल

बनल एक िलक जफि क अहा
ब नरे फुलल एक गुलाब क अहा

उठल फ़िफ़ान भऽ रोनक कया गि
जल हरगि लेल उ बाब कअहा

देखै हर जागलरे जेना देखलेलौ
नही लिल बेकि लुगि खाब क अहा

हरगि गि कलल जहि अहाक नैना गि
देखै हिलौ एक खाश जनाब क अहा

'अब्दुल'क हृदयरे फुलल फुलबागि
कए गिइकि फूल बनलौ बेगिब अहा

रु हं डर आ चरां

देश डूबै बे

किां वांि बे

किां बनै बे

ओ क्पननिक चपेटरे पलि

रुशहं अक् देशक

अक् राजक

अक् बसीरे

अपन स्थान ख जी हिल अक्छ

लेक्कन नही हिबाक ठेकान

नही खेबाक ठेकान

नही करेबाक ठेकान

नही अक्सतिक ठेकान s

दि दि ठ काईं हिलौ

अक्लेल की हर गीब किए गेली

गीबी हरि अक्मशाप किएगेल ।

रहाजि कक्कय ुरज छाप गि

कक्कय गाछी छाप गि

कक्कय गाई छाप गि

कक्कय हाथ छाप गि

झडि लऽ कझिबाद- रुदाबाद !

आ अनेक अनेक नां गि

गांकिे िल बजाबै हिलौ

अनेक अनेक रहाजिा ब हक

दलानरे िs रकानरे ि कक्य
 रलिहाके रशानरे
 लs अपना गर्विके कब िरे
 अक देश क ओ रही ब
 अकलेल की हर गीब किए गेली
 गीबी हरि अकशाप किएगेल ।

क ना कहू केकी कहू कक्या
 नही कहलौ अहा बके
 अपन बीणि ओ हरि ि भेल
 अत्याचाि ब जे लाज s रि s
 अपना के कपननी ि नुकाबैि हिलौ
 अपना के बहुि कदिक नही बनी
 छुपाबैि हिलौ अनेक अनके
 कब ि ि हर अहाक
 गारीण खेहर डर
 जे फेकैि हिलौ अकके कैल
 गद्दि ब अकके देहाि s
 अकलेल की हर गीब किए गेली
 गीबी हरि अकशाप किए गेल ।

पयास पेमी मैथिल (साश्चर्यक नाम), राम नारायण मेहर् (गिरिधर नाम), पति :- डुमाहा- ९ , सुनसरी , नेपाल, अखन- मलेखाया

१.हमर गुञ्जया रानी

 अंगनाके हमर गुञ्जया रानी
 आइ भ'रहल धिदाई छै !
 माएके करेजा फाटल
 नयना नीर बहाई छै !!
 रहै ओकरा हमर अंगनामे
 हरदम चान चकोर रहैय !
 साझ झहान हरदम ओ
 बाबु माएके कहल करैय !!
 बेटा बेटा मे नै कोनो अनरि
 ि झए बेझये होए पराई छै !
 बेटा माए बापके आश्वादि मागैय
 बेटा नि लेल करै लडाई छै !!
 सुनै समाद बेटा
 दौरै चञ्च आँयि छै !
 माए बापके दुःख नै बुझै बेटा
 झस्रफोमे नि बहायि छै !!
 आँखीके सामने मे बेटा
 भ'जाए छै झयानी !
 िरीमे भा दैय छै
 लोटामे भञ्जके पाञ्च !!

देख कऽ बेटीके चानसन चेहरा
माए बापके रहल नही जाइ छै !
अंगनाके हमर गुच्छया रानी
आइ भ'रहल श्रिदाई छै !!

२. शादी भ'गेल

नयनक' चौपाश्च पऽ
 पेमक' बैसार भेल
 अछु बजबो ने केलु हम
 ि सँ पश्चने अलक' फैसला भ'गेल
 नै अकनको सम्मोनि
 नञ्चं कोनो दिदपश्चिदि
 स्नेहक' कलम सँ
 उपश्चि अखा गेल
 पसीकि' कायमयन
 उ िजी सँ शुर भेल
 अन्तमे काजक' सरिप
 ओकरा अओ दोसरके संगमे,
 हमर रेखाके संगमे शादी भ'गेल !

३. भाइ बञ्जनके खुन चुइस चुइस

सिर्नकि' बहार एलै
 रंगक' तमोहार फगुणि गेलै !
 मनमे अनेको सलिल उबजैय छै
 आँइखक' आगा उदासी आए ?
 कोनाके कही हम जे होली नै मनेलौ
 माटिभुञ्ज पऽ रंग अञ्जरके षि भेँ केलै !
 कोना कही हम होली मनेलौ
 अपने मा बञ्जनके उजर नुणि पञ्चरे पडलैय !!
 कोना कश्च देशक' हृदयके अलोकन
 आँइख सँ अपनेमनेए नोर खसऽ लागैय छै !
 पडोश्चयाके दोष लगेनाइ अनुश्चा छै
 जखन अपने भाइ गदार बनल छै !!
 कहैय छलै अहीबेर नै ि कश्चयो नञ्चं
 देखूँ सब भेलैय बुझया फुइस !
 अखन झट फुलाके सिल छै
 भाइ बञ्जनके खुन चुइस चुइस !!

४. असगर भेक्षयै

दोस् सब दोस्ीयारी करैय छै !
 पकृी आ जीनगी गदारी करैय छै !!
 बाि आ अडचन संग लश् रहल छी !
 समयके पाछा दोश् रहल छी !!
 भुख थयास सब छछके झियागी !
 बनलौ हम जीनगीके अनुरागी !!
 जीनगीके बाट कटै नश् कटैय छै !
 हर डेग पऽ दुःख आ ददयभेटैय छै !!
 दुःख, ददके संग दोस्ी केक्षयै !
 सब संग छछैडके असगर भेक्षयै !!

५.पेम श्मारी

अइछ गोर दिन अहाके संगे आउर केश कारी !
 देख्ख कऽ पुनम चेहरा हम भ'गेल छी श्मारी !!
 अहा मन मोञ्चनी, मृग नयनी श्कए करै छी एना !
 अही लऽ पेम अजडामे बन्द भेल यौ देखूँ यी मेना !!
 मरिस अइछ भरल अहाके गुलाबी ठोरमे !
 होएि रहैय ये अहाके चचा नगर चार ओरमे !!
 अठ-अठ बोली बाअके अहा हमरा फसा लेअयै !
 अल लऽके हमरा श्कए अजडामे बन्द केअयै !!
 उडऽ चाहैय छी हम खुला गगनमे अय खोलूँ केबार !
 घुअके आयब फेर हम करऽ लेल अहा संग प्यार !!
 ककि अन्न बन्द कऽके राखब हे अय दुलारी !
 अहा संगमे नेह लगाके हम भ'गेल छी श्मारी !!

६. हमर जान अहा के जान मे

नयन अश्रु बेचैन
 मोन थयासल !
 जेहो लगमे छेल
 ओहो दूर भागल !!
 खोजैय छी ि भेटैय ये
 सुखल नदी नाला !
 अश्रुके याद कश्रुके हम
 जपैय छी पेमक' माला !!
 श्रुन अनहार लागैय ये
 कहूँ आब हम की कश्रु !
 अहा श्रुनू हम आब
 अही कहूँ जीश्रु की मश्रु !!
 अहा रही ि इजोि रहैय
 सगरो घर अंगना मे !
 अहा के सुन्दर रप अगाडी
 दाग बुझाई छेल चान मे !!
 कऽ चश्रु गेलौ थय ?
 हम खोजैय छी खेि खश्रुहान मे !
 घुइम के चश्रु आउ थय
 अइछ हमर जान अहा के जान मे !!

७. डिपब हमर पेम ल'

 अहि लगेलौ अहा सँ हम
 सब संग नाहि िइर के !
 अहा अए भेलौ दोसर के
 हमरा सँ मूह मोइर के !!
 अहाके हम पुजै रश्चं
 अलके फूल लोअर के !
 हमरा आखारी बना देलौ
 नअब हमर फोइर के !!
 कून जन्म के बदला लेलौ
 हमर अल िइर के !
 अल मे बनेलौ घाह अहा
 ऊ नै छुटै छै अछो कईर के !!
 यौ पअहि रहल छी हम
 अहा संग पाछा पइर के !
 दुआया अनहार भ'गेल
 हम जीअ कोना की कईर के !!
 यौ कअयो खुश नअ रहब
 हमरा सँ अहा अछैर के !
 डिपब हमर पेम ल' अहा
 हम कहैय छी हल्ला कईर के !!

८. कोश्याहा बरद

हाँमे छै जेआहा लाठी दुगिर पऽ गाडल हरोठा बासके मेह !
 दूइटा पाख घुमल से दुखाँ लागल कोश्याहा बरदके देह !!
 झारन दैय बखाँ सब स पञ्चने खोह बनाके खाए आहार !
 दाउनी केआहारके परेशान कऽ देल फेकैँ फेकैँ साहार !!
 खोह िडैँ देख्ख कऽ आरहबा जूना स' देलक मुहँ बान्ही !
 हाकैँ दाउनी एके डेगमे आराँ लागल मुहँसे लेर, पोटा, पानी !!
 यी दाउनी खोलैँ सबसे पाछा आहार खाए खाश्चिर रहैय ये !
 एकरा अठ पऽ पडैँ जेआहा लाठीके चोट यी लंक ल'के भागैय ये
 !!

१.नश्वरके मान, सासुरके सम्मान आ साजनके पाण

यी असी केहेन अश्व जे छोडऽ परैय ये नश्वरके संसार !
 चुटकी भर सेनुर सँ अपन होएँ अश्व दोसरके संसार !!
 भाइ बाप धिदाई करैँ कुलके मान रश्वयह बेटी कहैय ये !
 जाएँ ससुराल सास ससुर पुतबुके आश्वदि दैय ये !!
 संग लाश्वीँ हमरा हमर साजनसे जे रहल नश्व जाइ ये !
 सुहाग राश्वीँ कोहबर घरमे हमरा सँ की बाँ करैय ये !!
 अहाके मरि मुस्कान देख्वीँ हमर मन डोश्व गेल !
 अहाके आश्वीँ थय अंगना दुगिर अश्वगरो इजोँ भ'गेल !!
 की जादु अइछ अहामे जे सगरो समाज करैय ये गुणगान !
 आब ि अही अश्व हमर सुखचाइन थय अही अश्व पाण !!
 कृषा पक्के पुनम राश्वीँ अहा आश्वीँ संग ल'के एलौ !
 जन्म देख्वहार मा बापके छोश्वके अहा हमर भ'गेलौ !!

१०. फूलिरीमे एक फूल रहैय

फूलिरीमे एक फूल रहैय
 खलखल हँसै
 दुधियाके चान जका
 जीनगीमे इजोहि हे
 से सपना देखलूँ
 पुनमके राइहि जका !
 ओ फूल इशारा केलक
 हम ससैरके लगमे गेलूँ
 फेर ऊ हमरा सँ कहलक
 हमरा िइरके ल'चलूँ
 हम पुछझायै अए ?
 ओ मुश्कुरा कऽ बोलऽल
 अहाके अड हमरा पसंद अछ
 हम कहझायै होँ !
 अछ अन्नके िद
 फूलक' लेल बाँ करऽ
 हम माली लऽ जाइहि रञ्ज
 अछु दूरे स' नजर पडल
 फूलिरी उजरल जका
 दोसर फूल सँ पुछली
 ओ कहलक हमरा सँ
 ऊ फूल दोसरके अड पऽ चञ्चुगेल

१० अन्न अगाडी अओ दोसर िइर ल'गेल !

सुअाँ हमर सुरज पऽ

कअया बादल लाइग गेल

मुसलारि बषा बसस

नयनके िरमे बाइठ चअ एल

बचल-खुचल सब भाइंस गेल

रकल बषा ि सबके नजरमे

यी "पयास" असगर रअ गेल !

११. गीति

गीति भगिनके पञ्चरन
 अञ्च अञ्चलाके शान !
 आनि अञ्चन पुजा कर जाइ
 पञ्चर गीति जजमान !!
 गीतिके महति अञ्च बडड
 अञ्चलामे चार ओर !
 दुःख, दुःखिन माणि पऽ ल'के
 करऽ जाइ छै मटकोर !!
 सबञ्चओ अल कञ्चयौ
 गीतिके सम्मान !
 अञ्चहमे गीति पञ्चरके
 होएनि अञ्च सेनुर दान !!
 अञ्चलाके सञ्चयो सँ
 गीति अञ्च आन !
 सब अञ्चओ पञ्चर गीति
 बढाऊ अञ्चलाके शान !!
 अपन अञ्चला पऽ
 अञ्च हमरा गुमान !
 दुई हाणि जोञ्च सबके
 "पयास" करैय ये पणाम !!

१२. हुनके

भुख थयास सब हेराए गेल हुनके के खोजी करै !
 पायर थरा गेल जीनगीके डगहर चलै चलै !!
 हुनकर डेरा अश्क कऽ से जाइ छी सबश्कओ के पुछै !
 आश्चिन ओकरे पुजै छी भोरेभोर सुरज उगै !!
 यौ बौंस बसनि बीं गेल हुनके बाट किं !
 मठ-मश्दर घुमैय छी हम हुनकर नाम जपै !!
 अश्क सबहक माश्क ओ , छै िनो आँइख सँ देखै !
 सब काल कष दूर भागैय छै हुनकर नाम लै !!
 आब साझ अहान कटैय हमर हुनके नाम लै !
 यौ अहूँ हुनका मनमे बैसाबूँ सब दुःख हश्तले !!

१३. हमर श्वल अहीके याद करैय ये

नीनि श्वन अहाके यादमे नयन हमर मोनि बषाथिय ये !
 यौ अहा परदेसीके एकोरश्चि नै हमर याद आथिय ये !!
 ननद हरदम झघरा करऽ लेल दाउपेच खोजैय ये !
 सासु हरदम गाश्च पढैय छै आ कूलश्चणी कहैय ये !!
 यौ बौतिके अनमनामे जलखैयमे बेर भ'जाए छै श्व !
 ससुर श्वअर दुनूँ श्वश्चके हमरा पऽ जुगिली सुरैय ये !!
 आब श्व थि गेल यी जीनगीसे, मन होइ छै डुश्च मरी !
 की कश्च बौतिके रप, अहाके स्नेह संग नश्च छोडैय ये !!
 जुश्च रहूँ श्वदेश थिय अहा छोश्च आबूँ अपन गाम यौ !
 यौ घरबामे सजनी अहाके अहा बेगर दुःख काटैय ये !!
 कश्चयौ नश्च देरी साजन कही भ'जेि अबेर यौ !
 हरदम हरकण हमर श्वल अहीके याद करैय ये !!

१४.जीनगीके मेला

यी जीनगीके मेला सँ
 की ल'के जैयि
 छोश्क श्रयौ श्रछ अश्कठाम
 अमर अजर भ'जैयि !
 बडड नमहर यी मेला
 फेर नश्चं आब पेब
 दोसरके पाछा नै लागू
 कश्चं क'ि हराजेब !
 देखूँ मेलामे छै क'िगि
 रंग श्ररंगके श्रठाई
 श्रओ अपने श्रर भरैय छै
 श्रओ दोसरके श्रखलाई !
 कश्चं मेलामे रम-झममे अहा
 अपनो नै श्रसैएर जायब
 दुआयाके पाछा पश्कके अहा
 श्रि मुदा भऽजायब !
 अश्कठाम सब असिरिदी छै
 दोसरके पश्कनाके कमाई खाए छै
 अपन पेट भरैयके लेल
 दोसरके आहार श्रनैय छै !
 अश्कठाम दार श्रश्रके सब श्रओ
 श्रश्र फोश्कके फेके ये
 अहाके दोषी बनाकि लेल

कृकमये जाल अछौने ये !
 यी मनुखक' जीनगी अछ
 उजरा सफेद रंगके चादर
 दाग लाग से बचाबूँ एकरा
 सदै' कर एकर आदर !
 नञ्चं एलौ अछु ल'के
 नञ्चं जायब अछु ल'के
 रोपू शाअि, सञ्चिचारके अहैन
 रहब सदा अमर अजर भऽके !

१५.चेनिकाके श्वप जलाबूँ

 अश्विला गगन खाली छै
 आहा िरा बश्मके आबूँ !
 चमचम चमकै आहा
 हमरा श्वल सँ सजाबूँ !!

सब मेघ, कृभेसके आहा
 काि लगाके आबूँ !
 भोरक' सुर जक' लाली सँ
 अहा हमरा सजाबूँ !!
 मुझाएल यी गाछमे अहा
 खाि पाइन लगाबूँ !
 फेर स' रंग श्वरंके
 फूल अहा फुलाबूँ !!
 यी रेअसीन सनके भुमी पऽ
 अहा पेम रस बषाबूँ !
 अश्विलामेमे लागल मैलके
 अहा श्वल सँ पखार !!
 ईश्या श्विभेदके श्वियागी
 सदभाकि गी गाबूँ !
 घर-घर मे जाइके अहा
 चेनिकाके श्वप जलाबूँ !!

१६. जीनि हमर उरि कर

हमर नयनमे अपन नयन अलाके देखूँ
 अपन मनके अया जला के देखूँ
 हम अहीके लेल बनल छी
 हम अहीके राहमे बैसल छी !
 पल अनमोल सब अलि जाइ
 अहा बेगर हमर मन घबराइ
 हम ि ओकरा अपन देनि बुझै छी
 श्रियो हमरासे अए ऊ रसल आइ !
 माग हमर पुरा खाली छै
 ओठके सुअगेल लाली छै
 आबू सजना आसन कर
 हमर अलके आसन अही लेल खाली छै !
 समय देखूँ अलि जाइ छै
 हमर मोनक' आशा पुरा कर
 लाल सेनुर सँ हमर माग रअके
 जीनि हमर उरि कर !

१७.हमर जीनगी लुश्च ल'गेल

 आशक' डोर टुश्च गेल ,
 मनके आि छुश्च गेल ,
 सीनेहक' नोरके षिा शुर भेल ,
 लागल मेघ भादो आश्चिगेल !
 नि आजल पुरा मन आजल ,
 डबरा सबरा सब भश्चगेल ,
 हमरे आँश्चकके सामनश्चंमे ,
 हमर अपने जीनगी भश्चया गेल !
 घट-घट बाईढक' पाइन थलूँ ,
 जानमे सास रश्चि लास भेलूँ ,
 नै लोक जुटल नै शंख घश्चघण्ट बजल ,
 हमर आँश्चकके सामने हमर जीनगीके लहास उश्चगेल !
 हमरा आपन पेमक' जालमे फसा के ,
 खेललक' हमरा संग िखेिजीके खेल ,
 जब हमर हाि खली भेल देखलक' िओ ओ ,
 दोसरके हाि पकडी हमरा छोडी गेल !
 जे सोचनो ने रश्च कश्चयो हमे ,
 कोना सब बदि भ'गेल ,
 हमरे आँश्चकके सामने मे ,
 हमर जीनगी लुटी लगेल!

१८. अश्वीलाके लेल लच्छा रहिय

ससरै चलूँ गजरै चलूँ
 अत्माचारी सबके संग लडै चलूँ !
 जकरल कूभेसके फायर देयि
 सान सँ अश्वीलाके झण्डा गायड देयि !!
 सुलिके आनन्द स' जगाँ चलूँ
 भटकलके रसगि पड लायि चलूँ !
 जब सबकुओ एक साँ हेयि
 खिने सन्ति अश्वीला राज पेयि !!
 मन भीरि के अजानके बहारै चलूँ
 अधिकारके श्वाभ्या बारै चलूँ !
 देखूँ सबकुओके एकरंग
 पायर बढाबूँ सबकुओ एकसंग !!
 झाएट अहायर स' जुझि जेयि
 दुश्मनके उपर टुइट पडयि !
 हत्मा , श्वाँसाके दूर राखै
 अपन अधिकारके लडाई लडयि !!
 चोख शब्दके बाण छोडयि
 आरंकुश सताके भम िडयि !
 जबकि देहमे पाण रहिय
 अश्वीलाके लेल लच्छा रहिय !!

१९.उ। चुकाके खेल

 केहेन ने। चुआलये जे
 मशिी जनी भुखे मरैय ये ।
 मशिी ने। श्वर फुलाके
 आंघेसरा जका गजैय ये ।।
 मशिी जनी भुखल काआरहल छै
 ने।सब दहमे हदा खेल खेलैय ये ।
 जब मशिी जनी सडक पऽ उरिल ि
 ने।सब हदा खेलमे सरल बोलैय ये ।।
 जौ पश्चने जनिके कहल माआ। ि
 आइ मशिी जनी सडक पऽ नै ऐयै ।
 मान सम्मानके सा। जीनि जीयै
 आइ मशिके नश्चं एहेन श्वि हे।यै ।।
 सुन्दर सनके अपन श्वीला मशि
 आइ लडाईके कर केत बआगेल ।
 केहेन ने। चुआलये जे
 खेलरहल ये उ। चुकाके खेल ।।

२०.संगे रहब सेहे सही

सब अछ सम्महि अइछ देर सही ,
 खोजु भेटि मोहि के दाना कछु न' कछु ।
 अपन माटी पानीके असैर अहा ,
 ब्याधि बौबि रहल छी जखुंही ।
 की भेटल ? षो अन्न रक्षुके अदेशमे ,
 असैर गेलौ ऊ गोदी जखु पऽ खेलै रही ।
 मोन पारैय याद करैय ये हर बखि ,
 रने-बने भटकै ये अहाके सीनेही ।
 अहा चक्षु आबु अपन जन्मभुअ पऽ ,
 दू पाय कम बेस मुदा संगे रहब सेहे सही ।

२१.संकल्प

मन बचन सँ संकल्प कर
आब करबैय एहेटा काज ।
खुन पश्चाना चुनि देयि
लऽके रहयि अशिला राज ।।
दुश्मनके उपर टुइट पडू
हमसब िर मैथिल सनीन ।
अपन भुअके रक्क कर
बचाबू अपन पञ्चान ।।
अशिला अपन जन्मभुअ
हमसब मैथिल छी हुनकर सनीन ।
माके चीर हरण नञ्च हुयि अयौ
चाहेय गमाि पडैय अपन जान ।।
अटल रहब डटल रहब
लै ल' अपन अधिकार ।
शस्त सँ सु-सअजि भ'के
चाहेय ओ कलम हो या लिरि ।।

२२. ल'के रहि म'शि

चुपचाप छी ि यी नै बुझू
 जे हम हाएर गेलूँ ।
 म'शि पुतके आँखमे देखूँ
 जागर क'के श्रया बाइर देलूँ । ।
 बडड दूआँ केलौ
 सबटा सनेस असगरे तुसलौ ।
 जब झड़ लागल पेट ि पडोसी स'
 भेटैयके बहाने Metron खाएले गेलौ । ।
 छुटि नश्चं यी पेटझरी आब
 Metron खाऊ आ आउर अछ ।
 जे आगी लगेलौ म'शमे
 ऊ िकैँ जायि अइछ अही श्रस । ।
 आब केबो नौटंकी कऽश्रयौ
 चाहे रिर बहुर पीके भेष ।
 अर्थीला आब जाअगेल अइछ
 आब ि लऽके रहि म'शि । ।

२३ . हे मा हंस िश्वनी

हे मा हंस िश्वनी सरसिी

बाश्च श्वअ सगरो अहा चेनिके ज्योी !

अहाके मश्चमा अश्च अपरम्मार

अहा लग अइछ जानक' भण्डार !!

चार भुजा िश्वनी हे मा शारदे

श्वाक्कके नैस्या हमर पार कश्च दे !

दू हाहिमे अहा कमल आ पुसकि लेनेय छी

अहा दू हाि से श्रेणा बजायि छी !!

िकू हे मा एकबेर नयन अपन खोली

पानफूल पसादके संगमे हम दारमे एली !

अपन श्वाष अहाके चरणमे नगियि छी

निमन समपक्ष क'के हम शीपञ्जमीके गाि गायि छी !!

श्वाक्क दान क'के हे मा शारदे

कर भक्कके उरि हे माि !

हे हंस िश्वनी , श्रेणा िश्वनी भुजा अईछ चार

श्वाक्करपी पसाद द'के हे मा कर पणाम हमर सीकार !

२४ बखान सजनीके

रप अहाके पुनम चान
 नयन अहाके मृगक' समान !
 मुस्फान अहाके दुश्मियाके चान
 नाच नाचै छी मौरणी सामान !!
 चाल चलैय छी नाथनके चाल
 उमेर अश्क अहाके सोलह साल !
 चौराह पऽ अछौने छी पेमक' जाल
 जालमे फसाके करैय छी बलिल !!
 पायरके पायल बजैय ये छन-छन
 बढे लागल हमर अलके डिकन !
 हांमे अहाके हथहर चुश्च
 लगायि ये हमर गदस छुरी !!
 गाल अहाके टमाटर सन लाल
 ठोर अहाके गुलाबि लाल !
 दां चम्कैय ये मोरि सन
 केश अइछ अहाके त्रिनिनि !!
 जश्चने केलौ अहा आँश्च स' इशारा
 फँस गेल यी "पयास" शीचारा !
 सुनु यौ संगी सांि सारा
 कश्चनशियो लगाबू हमरा अररा !!

२५ . राइकि' सपना
 पायलक' िन
 बाजैय रनझुन !
 नाकके नुआया
 घुमायि पुरा दुआया !!
 कसल-कसल गोर दिन
 महकेलक' हमर मन !
 नैनक' थरछी नजर
 पढलक' मोहनी मनरि !!
 मन नञ्च आब हमर काबू
 ससैरके कआ लग आबु !
 मन जनि स' रैचके
 न किआया जका सैजके !!
 बाआके आठ मरि बोली
 अल पऽ चलायि छी पेमक' गोली !
 ठोरक' लाली चमकैय चम-चम
 बजायि छी चुरी खन-खन !!
 कून जादु, गुण छै यी नारीमे
 लागैय छै सुन्दर सोलह आंगारसंग सारीमे !
 रप छै एकर बडड अनमोल
 पञ्चरने छै कानमे कानिली गोल !!
 बाजब नञ्च अछ हम मजबुर छी
 मसि आन्दमे हम चुर छी !
 यी हम आखलूँ डेरा जाइ अवन
 देखलूँ यी सपना हम राइ अवन !!

२६. बि बनि पञ्चचान

पाइनक' बीना फुलरिरी जैएर रहल छै !
 फूलक' लेल सखी सहेली झगैर रहल छै !!
 मालीसब पोखैरमे हदा खेलरहल छै !
 अओ तिता पऽ ि अओ पानीमे उछैलरहल छै !!
 ककि सखी सहेली चौकीदारक' अकार भेल !
 ककि ि फुललारीमे फूलक' लेल अश्चन भ'गेल !!
 जेहो माली पऽ अशास केलूँ िहो सीणि भ'गेल !
 षो अलि फूल बेगर फुलरिरी बाझ रअगेल !!
 छोडब नअं फुलरिरीमे सँ अपन बखरा लेब आब !
 मल-जल द'के फुलायब फूल चम्मा,चमेली,गुलाब !!
 नअं जायब दोसरके फुलरिरीमे अपने फुलरिरी सजायब !
 अपन पसंदके फूलक' गाछ अपन फुलरिरीमे लगायब !!
 बि देखि अपन फुलरिरीमे हायि नकि भोर !
 कोइली मरि गीणि गुनगुनायि हायि चाहूँओर शोर !!
 बि फुलरिरीके पडोअयो करि गुणगान !
 जब बनायब अलग फुलरिरी बि बनि पञ्चचान !!

२७ .कुन गर्ली भेल हमरा स'

 यौ कुन गर्ली भेल हमरा स' जे एहेन साजा देलौ ।
 हमर श्वलक' खुनसे अहा अप्पन हाँ रंगेलौ । ।
 मठ मंश्वरके िदा कसम अहा सब िश्व देलौ ।
 श्वल पऽ पारि राश्वरके हमर पेमके लक्ष्मिलौ । ।
 यौ क'क सपनासब हम अहा पऽ सजेने छेलौ ।
 अहा दोसरके भऽ हमर सब सपना चुर केलौ । ।
 केहेन कठोर भेलौ अहा एना हमरा भुला देलौ ।
 अहाके देल चोट स' हम जीर्णी लहास भ'गेलौ । ।
 हमर जीनगी स' अहा श्वए दुर भाश्व चश्व गेलौ ।
 श्वए दोसरके सेनुर सँ अप्पन श्वकि सजेलौ । ।

२८. लाल सलाम

अपन बीरि देखाके गेल
 मशिीके आनन्द सँ जगाके गेल !
 हे शब्द मशिक' बीर सनीन
 करैय छी अहाके हम लाल सलाम !!
 अहाके सपना साकार करऽ
 सीनामे राशिके जीला कि गेल !
 दुश्मनके आब नष्ट छेडब
 लडै रहब अपन मातृभुक्तके लेल !!
 रे खस बाहुनीदी शाषक पहाडी
 एक मशिी पडि सय पऽ भारी !
 देख नजर सँ मशि श्मस देख
 खुश्म गेलौ मशिक' राशिके कोडी !!
 बेर-बेर लिखा देनि मशिके लिसब
 लुटै एनि मशिक' खे खश्महान !
 आब मेची सँ माहाकाली कि राशिके करऽ
 आकली गेल छौ मशिक' गिर कमान !!
 जबकि अपन भुक्त नै भेटैय
 गिरिक नै होय मशिीके पुरा अरमान !
 हे शब्द मशिक' बीर सनीन
 करैय छी अहाके हम लाल सलाम !!

२९. नटखट कृष्ण कनहैया

मरिा कारागारमे जन्म लै
सब दारपाल सुधीगेल !
थीके हाि पायरके जंजीर खुलऽल
सब गेटक' केीड खुलीगेल !
राश्वरि पायर यमुनामे बसुदे
मुसलारि बाश्चस शुर भेल !
भाई लक्ष्मण शेषनाग बश्च रक्क केलक
यमुना पभुके चरण सप्तसयकऽके गेल !
भेल जन्म पुतीके नन्द घरमे
माई यसोि मुखरि भ'गेल !
अपन पुत नन्दके दऽके बासुदे
अपन संग हुनकर पुतीके लऽके गेल !
भेल जन्म बच्चाके सुश्रुि कंस
दौश्रुि कारागारमे गेल !
बि करैयके बेरमे बच्चा
हाि सँ छुश्रुके आकाशमे उश्रुगेल !
देलक आकाशगिणी कंसके
आब अहाके अत्ताचार बहुि भ'गेल !
रिा मारैयगिला बीर पुरषके
पृथ्वी पऽ जन्म भ'गेल !
नन्द घरमे पुतके जन्म भेल सुश्रुके
गोकुलमे खुशीके षिाि भ'गेल !
बालकके देख आयल गीश्रुनसब

हुन्फा देख्वाके देख्वाँ रश्चगेल !
 कान्हाके मारैय लेल कंसदारा
 ककि दानि गौकुल पठायल गेल !
 कबो झाट अहाएर हाँ चलि
 मुदा कन्हैया हँसैकिये हँसाँ रश्चगेल !
 अनभे कंसके बञ्चन पुनि
 रप बदश्चके समि ऐल !
 बालक कान्हाके छाँँ सऽ लगाके
 आकाश मागबे लऽके चश्चगेल !
 पभु हुन्फा देख्वाँ अश्चगेल
 अँँ पुनिके छाँँ सँ दुदक' संग
 पुनिके पाण सश्चि अगेल !
 गलालबाल संग गेन्द्र खेलऽ कान्हा
 यमुनाके टिपर गेल !
 हिँन जोर सँ गेन्द्र फेकलक कान्हा
 गेन्द्र जाएके यमुनामे अश्चगेल !
 अतके चिनपर कान्हा
 यमुनामे कृश्चगेल !
 गौकुलमे सुअँ खबर यी
 मा यसोँ बेहोस भ'गेल !
 अश्चये देरमे नाग नाथीके कान्हा
 नागके फेपपर नाचैँ उपर ऐल !
 देख्वाके कान्हाके नाच
 देँ लोक सँ फूलक' षि भेल !
 अनि घश्च जब आयल कंसके

कृष्ण बलरामके बोलाके मरिा ल'गेल !
मरिरामे मामा आ भान्जाके संगमे
माहायुि शुर भेल !
ककि दानसिब मरल
बलरामके हाि सँ हािी मश्चगेल !
अन्तममे कंसके मृत्युके समय एल
कान्हा फाश्चके कंसके छाीपर चश्चगेल !
हिेन मुका मारलक छाीपर पभु
छणमे कंसके पाण छुश्चगेल !

३०. एलैय अशिलामे पाणि चौठीचान

एलैय अशिलामे पाणि चौठीचान
 घर-घरमे पकळि श्रृंखरपुरी पकणि !
 भस्त्र डाली चढैयि फल-फूल
 त्रिपदानीमे जरेयि सरसर गूल !
 छाछीसंग कौरनामे दही चढैयि
 लानिक' उपर अप जरेयि !
 माए चौठीके हाणि उठैयि
 बडका भैया पैनढार करयि !
 मागै माए चौठी सँ रिदान
 सदा सुखी रहे हमर जहान !
 अशिलामे एहो पाणि अश्रु माहान
 बैएठ चौका पऽ भोग लगायि मरसर जजमान !
 एलैय अशिलामे पाणि चौठीचान
 घर-घरमे पकळि श्रृंखरपुरी पकणि !

३१. मशिी जननि

दुःखि यी मन हमर

खोजीरहल चानचकोर छै !

जानक' अपके ज्योथी बेगर

मशिमे अन्हार चार ओर छै !!

रसनि चौबध्या पऽ भटैकरहल छी

लऽके हाँमे अन फूलके डाला !

नजरमे नै अओ आअरहल छै

सतबाटके मागदशस करबलिा !!

अना उदेश्य बयिथिबौबिरहल छी

जसु शि सगरो चाहँओर !

साझ परल ईजोकि' अया बुगियल

फेर अनि हे की नखँ हे सर जक' अलीसंग भोर !!

मध्य राँमे चार ओर अहाएर एलै

अब नि हमरा अन्ध नै भ'रहल छै एको छन !

घरक' खुटा अललै छपर परके खर उखगेलै

देखके यी, अभोर भ'के काअरहल छै हमर नयन !!

कानै-कानै नोर सुखगेल, कण्ठ बैएठ गेल

शियो झुठक' आशके जोअमे लटकल छी !

अलि की नै अलि अखमंगा गदार सबहक पाछा

हमहँसब अन्हा अटी लऽके हो हो क'रहल छी !!

ककि भाइबन् एकरे अछा अटगेल

शियो ने बन्ध भेल अखु निखाबाअके खेल !

गदार सबके अही सऽ नै अछ फरक पडल

बौनि-बुक्की टुगर बनल, बअनसबके सेनुर पुछागेल !!

३२. आहोरा अश्लु मैथील जन सँ

आहोरा अश्लु मैथील जन सँ
 कश्यौ संकल्प सच्छ मन सँ !
 आब नै ल'के दहेज शादी करबैय ,
 घरक' लक्ष्मी बेटीके बचेबैय !!
 बेटा खाट पऽ सुलि रहैय ये ,
 बेटी घरके सब काज बजबैय ये !
 बेटी बापके माकि' पाग छी ,
 कुलके फुलीरीके फूलक' बाग छी !!
 बेटी उपर नै कर अत्ताचार ,
 बेष्टयोके श्यौ बेटाके दुलार !
 बि देखब अहाके केहेन मान बढ़ैय ये ,
 बेटीये से सबहक कुलके श्यप जरैय ये !!
 बेटा-बेटी श्यच नै कर दू-श्यि ,
 बेष्टयोके जीनिमे बार श्याकके श्यप !
 बेष्टयो बेटा नेहायि अश्लमान जगायि ,
 उच्च गगनमे श्रिमान चलायि !!
 बेटी घरके ईज्जति छी ,
 बेटी अदभुति दौलति छी !
 सबश्लओ बेटीके सम्मान कर ,
 दहेज नै लऽ, दऽके कन्यादान कर !!

३३. बडड अनमोल छेल ओ कण

 अलन अछोडक' अचके कण ,
 बहुि सुन्दर सगिके सन !
 जहिँए शुख िहिँए दुःख ,
 देखैय लेल हरदम चौकैय नयन !!
 अठ-अठ बाँ कणेमे रसनाई ,
 एको कण नै नजर सऽ दुर जायले दैय !
 जन्म-जन्म हम साँ आभायब ,
 हँअ-हँअके ओ िदा करैय !!
 अलनके कण आमासिके राश्री पुनम लागैय ,
 जखनेए खिनेए चान चम-चम चम्कैय !
 ओकर हँअके देख सारा जग हँसैय ,
 दाँ लागैय ओकर जेना मोहिँ चम्कैय !!
 बडड अनमोल छेल ओ कण ,
 कबो कअ कम अअ ओकर णिअ !
 दूढ अशासक' संग सचिछ छलै मन ,
 हमारा पऽ समपअ क'देलक ओ अपन जीनि !!

३४. सुतल आन्दमे सपना सपनाएँ रश्च

सुतल आन्दमे सपना सपनाएँ रश्च !
 पेमक' गीं हम गुनगुनाएँ रश्च !!
 अडहुल फूल सन लाल अहाके ठोर !
 नैनाके श्वडकी सऽ मारै छी हुल्की भोरे भोर !!
 बोल बाजै छी अठगर कोईलीके बोली !
 श्वलपर चलाई छी अहा पेमक' गोली !!
 नैन मवका-मवकी आब क'कि श्वन !
 रहेय नै सकैय छी हम अहा सऽ एको छन आन !!
 जखने अहा केँशयै सोलह शृगार !
 देख्यै लागल हमरा पेमक' बोखार !!
 आब कोना हम काटब श्वन !
 अहा लेलौ हमर आँश्वके आन्द श्वन !!
 डिंकन बढलैय, करेजामे मारैय श्वलोर !
 टुटल आन्द खुलल आँखी भ'गेलैय भोर !!

३५. मायाजाल

 पुनम चानके चेहरा सुर जक' लाली गाल ।
 मजुरनी नाच नचै छी उमर ये सोलह साल ॥
 नयनमे कारी कजरा ठोर अञ्च गुलाबी लाल ।
 अहा पाजल बजबै चले छी नाथानके चाल ॥
 टनटन बजै छी अहा जेना बाजै ढोलक नाल ।
 पेमक' छुरी चलाके अहा श्रियाके करै छी हलाल ॥
 पेमक' ददश्चै डिपके सबके भेल बुराहाल ।
 सुन्दर र प देखाके अहा बुनै छी मायाजाल ॥

३६. जीनगीके डगर

 जीनगीके डगर
 बड छोट बड नम्हर !
 डेग डेग पऽ खुशी भेटै
 डेग डेग पऽ दुःखक' कहर !
 मनमे खुशीके सपना सजाके
 एलु अनकर देश पदेश !
 सबटा सपना सपने रहीगेल
 बनी बाईढ आयल दुःखक' क्लेश !
 राईमे आँखीमे आनन्द नै हैये
 श्रनमे नै छै कश्चनो चैन !
 शोक श्रनीके भारी सऽ
 पुरा जीनगी बनल बेचैन !
 सोचै छी कोनाके पार हेबै

यी दुःख सऽ भरल िर !

श्च रेपिऽ चैढ गेल छी

नै जासकै छी ओही पार नै अही पार !

३७. अपन भुआके लेल लच्छा रहिय

 जनीके कैंएल देलकैय िखामे
 अपना बैसल छै सोफामे
 बाप आन बेटा-बेटी भेलैय दुगर
 किर नुन खाएके नेणि बनल छै सुगर !
 ककि श्रियाके सुहाग लुटा गेल
 ककि माके कोएख खाली भेल
 खुनेखुन सँ माटिभुआ लपिनि बनल
 मुदा गदार सबहक पेट खाश्कए रश्कगेल !
 चुप नै रहूँ चलू आब लडायि
 गदार सबहक पेट फोडबैय
 बहुनि दिसि कऽलेलौ
 आब ककि आन जरै रहि
 आब चलू सबकओ आना िआके
 हाणि हाणिमे नुन बुकनी साआके
 शासकके आँखीमे जाके िपी देयि
 गदस आराके मुडी छोथ लेयि !
 आब खुनक' श्रसाब खुन सँ लेयि
 दमन अत्माचार आब नै सहयि
 जबकि देहमे पाण रहयि
 अपन भुआके लेल लच्छा रहिय !

३८. जीनगीके कऱि

अहा श्रया हम बाती छी !
 गाश्ररहल जीनगीके पाश्रि छी !!
 जीनगीके इनार बडड अनमोल !
 श्रना उघैनके राखल छै दोल !!
 कोनाके भश्र जानक' पानी !
 क्पथिश्चिरहल छै जीनद्गानी !!
 कऱि कऽ उघैन लगाबी दोलमे !
 दम फर- फरारहल छै कश्चायुगक' खोलमे !!
 िना गेल छी मनुखक' जेलमे !
 सफर कऽरहल छी श्रना पटरी पऽके रेलमे !!
 हम कऱि जारहल छी हमरा श्रछ नै पऱि !
 एहे अश्च हमर जीनगीके कऱि !!

३९. अथीला-मशिी आब ककि सहबैय ?

 अहारी कहबे केलक
 अडडागोडा अणमे
 कोआस सेहो केलक
 अखन घरमे घुइसके
 बेटा पुहिहके अटलक
 अथीला-मशिी आब ककि सहबैय ?
 हस्मिलमे बेटा भना ये
 खेमे अहैन बनल जना ये
 अहा छी भुखल ठोर सुखल
 अ आई अहाके बना ये ?
 अथीला-मशिी आब ककि सहबैय ?
 अखन मशिी नेणि ब्यसि छै
 सोफा पऽ फेअकल लगाभि
 अना अहैनके खेणि रोपऽमे
 मशिी जनिके भटीमे झोकऽमे
 अथीला-मशिी आब ककि सहबैय ?
 अकलू सब मशिी सामे
 लऽके कअया कुढारी हांमे
 नै कैरके भेदभाणि जाईमे
 नै सोचु आयल यी साईमे
 दुश्मनके गदस छोपे चलु
 अन हुणि चाहे राईमे
 अथीला-मशिी आब ककि सहबैय ?

राश्रि आब करबे करबै
दुश्मनके आब नै छोडबै
आब नै चुपचाप रहबै
अपन श्रसा लऽके छोडबै
अश्रिला-मश्री आब ककि सहबैय ?

४०. जरल कपार

दुःख ददयसब छुपा के
 हैस के बजबाक हमर अशु बानी ।
 बौस बसन शि गेल
 अओ नै बुझलक हमर जीनगानी ॥
 नोरे नोर के िर मे हेल रहल छी
 बैइन के नकिा हेलीर ।
 हेलैि हेलैि िकी गेलौ
 पुगऽ नै सकली नदी ओई पार ॥
 कूल के मयादा , पश्वरि के परश्वस मे
 बौस बीि गेल ।
 दोसर के लेल सोचैय मे
 यी जीनगी जश्ने के शिने रश्न गेल ॥
 मानि योअके जीनगी यौ संगी
 हमर भऽगेल अशु बेकार ।
 अलल नै अछ दुनीयादारी मे
 भेलु सुनसान आ जरल कपार ॥

४१. िकेजिज पेम

खेल खेलै छी अहा नुकाचोरी ।
 अल पऽ चलेलौ पेमक छुरी ॥
 बोलु ने अ मन मे ये आहा के ।
 करै छी अये एना अल लँऽके ॥
 सामने मे अठअठ बोलै छी ।
 पछा हमर अघिस करै छी ॥
 कुन जन्म के बदला लँ छी ।
 जे हम ददयसे डिपै छी ॥
 पेमक ददयबडजोर हैये ।
 हमरा देख के हँसी लागै ये ॥
 छोडीके जाए छी हम अहा के ।
 सावछी राईख सारा जाहा के ॥

४२. कंकल , पतरि , शीसा , काट

 सपारऽ नै सकैय छी ,
 िऽ अगाबो नै कर ।
 अि नै सकैय छी ,
 िऽ हाबो नै कर ॥
 जीनगी एकटा रंगमंच अयै ,
 जै पऽके हम आहा कालाकार ।
 गामघर मे चेनि के सनेस बाटु ,
 भगाऊ जाीपाीके छुछि छि बहिर ॥
 अठगर अठगर बोल बजैय छै ,
 मुख मे राम राम बगल मे छुरा ।
 गामघर के घुन बनेलकैय ,
 बैइन आबी के सुडा ॥
 कगि सुन्दर लागैय छेल ,
 रंगअरंग के फूलबारी ।
 खापिआ बेगर मअरहल छै ,
 गेल फूलबारीमे लगा के केबाडी ॥
 नही लऽके एल छेलौ अछु ,
 नही लऽके जायब अछु साि ।
 आक कमके संग हँसु खेलुँ ,
 नै िऽके बैसु कपारमे हाि ॥
 समय गथिअल छै ,
 अन्का सदै सदुपयोग कर ।
 सत्त कमयमे सहजोग अयौ ,

दुराचारी दुष ब्यहारी के अछा नै पर ॥
 जीनगी के डगर चलबैय ,
 बहुि भेटि दूपेअया ।
 कुमागमे ईजोि देखब ,
 सत्प्रमागमे अन्हअया ॥
 कमयसँ अछा नै भागै जाउ ,
 यी अअ अािके अखल लेख ।
 जीनिक रसी ठमैक ठमैक चलुँ ,
 ककल , पतरि , अषा , काट के देख ॥

४३. अहा हमर पेम कहानी छी

-----,
अहा बोली बचन के रानी छी ।

अहा हमर पेम कहानी छी ॥

गोरी कारी कारी केश अहा के ।

झिना बने लऽ सारा जाहा के ॥

अहा हमर मन के देँ छी ।

कौरकी गोरकी अहा जे भी छी ॥

नैन सँ बजै छी पेमक भाषा ।

अही पऽ लगेने छी हम आशा ॥

खोलु अये अल के दरबाजा ।

बजँ छी हम पेमक बाजा ॥

सुनी के अहा खुश भऽजेबै ।

जौ पेअका अहा हमर हेबै ॥

बड बेर भेल हम जाएँ छी ।

अहा ि हमरा से लजाएँ छी ॥

४४. पेमक दुकान

चमचम चम्कैय ये ठोरक लाली ।
 यौ मारैय अइछ पेडा कान के बाली ॥
 नयन सँ करैय छी अहा नुकाचोरी ।
 पेमक भाषा अहा बजैय छी गोरी ॥
 नाक के नञ्झिया देखैय मे खजोर ।
 सब के ल'गेलौ अहा अपन ओर ॥
 दऽके अहा चौबनी मुश्कान ।
 लेने जाई छी अहा सबहक पाण ॥
 थय झए अहा एनंग करैय छी ।
 अही पँ सजनी हमहूँ मरै छी ॥
 नुका के राखूँ अहा अपन समान ।
 बन्द कर थय पेमक दुकान ॥

४५ . करै छी पणाम

 खुश छी अहा हमर अल दुखा के ।
 जे लऽगेलौ हमर अन्ध उडा के ॥
 यौ खुश नै रहब अहा एकोअन ।
 जब याद आयि अलिह अन ॥
 यौ अ करै छेअयै अ से अ भऽगेल ।
 बनल बाि सबटा अगैर गेल ॥
 मन ि करै अछ फासी लाईग जाइ ।
 दिदयसमाज से दुर भाईग जाइ ॥
 छी पदेशी के पयास उपनाम यौ ।
 नै कर अहा हमरा बदनाम यौ ॥
 जौ करब अहा हमरा बदनाम ।
 साक्षे कहै छी श्रियागी देब पाण ॥
 करै जाऊ संगी हमरो सम्मान ।
 दुई हाि जोईर करै छी पणाम ॥

४६. लजेब जी के

अहा गुलभन्टा के बारी छी ।
 पाकल पुरल महकारी छी ॥
 अहा समीला सन लाल छी ।
 अहा हमसब के अशाल छी ॥
 जी करै ये हमर अछ करी ।
 अहा के संग मे कुसी लडी ॥
 अपन मन के सक पुराली ।
 अहा के नैना से नैना लडाली ॥
 रोकु ने पैहने अलक रेल ।
 बि खेलै कुसी के खेल ॥
 खेल मे अहा के अाि करब ।
 यौ पेमक टाका अट करब ॥
 बाि करी हम पेम पी के ।
 लजेब अहा के खेल जी के ॥

४७. आई के युग मे

आई के युग मे
 पेम से पाप होई छै ,
 पाप से फश्चाफाप ।
 आदोषी के लाहि दै छै ,
 दोषी के साहि ॥
 सत्त बोलै छै ,
 पश्चरि से टूटै ये ।
 पाप के अरोहि करे ,
 उ समाज से फूटै ये ॥
 सत्त बचन गिहि होई छै ,
 असत्त अठ रस ।
 आक काज मे उनि अलै छै ,
 गलहि मे अले जस ॥

४८. रसल दुर्धन

अय पेम हम अही के करै छी ।
 अहा हमरा सँ अरुँ रसल छी ॥
 अहा के राह मे नैन अछौने छी ।
 घरक' केबार खुले छोडने छी ॥
 अया अहा आबु हमरा लग मे !
 बड राई भेल अतर चलुँ ।
 भुल , गर्ल हमर माफ कर ॥
 एनंग अहा र सब हमरा से ।
 कहूँ हम पेम करी केकरा से ॥
 अय एक बेर ई हँस कऽ बजु !
 देखूँ ईनअया डुबी गेल ।
 राई कवल , अन्सर भेल ॥
 सुनु ई कोइली के अठ अजि ।
 बबैय नै केकरो अपन राज ॥
 राईभर जागलौ अखन झूकै छी !

४९. सुनु साजन

यौ अहा संग के सुन्दर पल हमरा याद आँ ये ।
 अहा के गुलि पेमक माला हमरा बड सीँ ये ॥
 पढलौ एहेन कुन जादु आँ मनरि आहा साजन ।
 हर बखि अहीके याद करै ये हमर निमन ॥
 राई राइ के सपना मे अही के चेहरा देखै छी ।
 राई के आनन्द मे आईब अहा कये ललचाँ छी ॥
 फगुनि , शरणि श्रि गेल पाईक गेल जेठि आम ।
 सजनी मन पारै ये छोईर श्रदेश चक्ष आबु गाम ॥

५०. डाक्टर कथी अमारी कलम

अहा अशु कथी हम कलम यौ ।
शूल के घा पँ लगाऊ मलम यौ ॥
अठ शब्द के पटी लगाऊ ।
घा के सब आहा ददयभगाऊ ॥
मन से चलाब नैना के अजर ।
अक सँ देख्खै घा के चार भर ॥
कंचन कोमल अमारी के मन ।
ददयसे डिकै यैछ डिकन ॥
अहा अशु कथी हम कलम यौ ।
जल्दी से लगाऊ मलम यौ ॥

५१. मोनक फूलबारी

हमर मोनक फूलबारी मे अहा खोपरी बना के बास बैस गेलौ ।
 सोच्यौ फूलबारी के पहरदारी है मुदा आहा हमरा पागल बना देलौ
 ॥

फूलबारी के माली कही के फूलक सब रस आहा चुसी लेलौ ।
 रस चुसल फूल मञ्जन भेल देख के खोपरी िडीके बास छोरी गेलौ
 ॥

सोचने छेली अहा खापिर्न लगा के फूलबारी मे हँहँरी लाएब देबै
 ।

अहि अहा आमोही हमर फूलक पैड के ठठरी बना के भागी जेबै
 ॥

केबो फूलक फूलबारी मे अहा कस्यौ माली के शासन ।
 सगरो के फूलक रस से बैढ के उपर रहि हमर फूलक रस के
 आसन ॥

५२. श्रीशासक बोलि

श्रीशासक बोलि श्री श्री पेट हमर भैर गेल ।
 श्रीशासक श्रीजौरी जेकरा मान्छौ उ श्रीजौरी मे आगी लगा गेल ॥
 पजरल श्रीशासक पजाही मे श्रीशासक मञ्जान जैर गेल ।
 देख के एक छन मुष्कयि अ भेलौ सब कहलँ यी पागल भगेल ॥
 श्रीशासक सोक मे नैन सँ चुँ लागल श्रीशासक मोँ के दाना ।
 सेह देखी के दिदी जिना हैस हैस मारे लागल जिना ॥
 श्रीशासक पैर संगी आहासब नै रोपि यौ ।
 कौ सँ अकलि हुनकर अंजिँ अपने आप मे सोपि यौ ॥

५३. पेमक ददय

अहा नैना के निष से चलेलौ अकि बाण यै ।
 अल भगेल घायल हमर आवलै छै पाण यै ॥
 कुन गली भेल हमरा से जे देलौ येहेन सजा ।
 ददयसे डिपै छी हम ि आहा के आि ये मजा ॥
 कुन अटी सँ बनल छी आहा निी हमरा बबिबु ।
 िी के मनुष्य छी या अश्मानक परी सामने ि आबु॥
 यी पेमक घा पँ अहा बेफा के नुन बुकनी अटी गेलौ ।
 ददयि देलौ देलौ मुदा संगे हमर सारा संसार लुटी लेलौ ॥
 पेमक ददयक होएि छै क मालुम अहा के ।
 पेम नै कर कहै छी हम सब साि सारा जाहा के ॥

५४. सपना के परी

नैन अहा के लजौनी झार ।
 देखै ची हँस के हमरा बार बार ॥
 लाल गाल , गुलाबी होट ।
 झलपर मारलक प्यारक चोट ॥
 मसि मौसम आँ छै मसि जणिनी ।
 करँ खोजै हमरा संग मनमानी ॥
 मोनक मनोरि मोनक आशा ।
 बजै लँ चाहै छै पेमक भाषा ॥
 परी के समान रप , रेशम जका केश ।
 टुटल आनन्द ि देखलौ हम छी अदेश ॥
 सुन्दर गगन के आहा छी एक सुन्दर िरा ।
 कहूँ अहा फेर हमरा कञ्चया भेटब दोबारा ॥

५५. अलिह पेम

 अल मे ददयठोर पँ प्यार ।
 सुखल खरेरी हमर संसार ॥
 नै छै संगी साँि नै कोई अपना ।
 अल पँ लागल चोट टुटल सब सपना ॥
 फूल मे रस छेल सब चुईस गेल ।
 मुझायल फूल ि हमरा भुली गेल ॥
 अ करै छेली अ भगेल ।
 भरल जनिनी मे आगी लागी गेल ॥
 रहै रह के डिपाँि ।
 अलिह अ न याद आँि ॥
 चढल जनिनी हमर लुईट के ।
 भेल दोसर के हमरा सँ फुईट के ॥

५६. अश्विला हमर माहान

अश्विला के मैश्विल सँ आशा ।
 सदश्चन बश्नयौ मैश्विस्त भाषा ॥
 िी, पाग, माछ, पान, मखान ।
 येह सब अश्च अश्विला के पश्चान । ।
 आश्चिन सदश्चन मैश्विली गाबू ।
 अपन बौंि बुक्की के मैश्विली पढाबु ॥
 अश्विला माईटक अश्च गुण अपरम्मार ।
 समि मा लक्मी श्चि बैन लेलक अििर ॥
 सगियसँ सुन्दर अपन अश्विला माहान ।
 अश्चठाम बैन पाहुन येल समि भगिनि ॥

५७. हमर करेजा के टुरा ।

हमर करेजा के टुरा । हम जाइ छी अदेश ।
कमा कऽ ढौंी लाबि अहा ले झुनझुना सनेस ॥
मन परैय छी अहा, हम सपना सपनाएँ छी ।
आँइख मे अहा के हम चेहरा ल'के जाएँ छी ॥
जुआ बौंी अहा माए के उनि सुनायि ।
माए के कहल करब , बुझियार बेटा कहायि ॥
जाइ छी अही के लेल हम दुरदेश बाहार ।
जुआ असरब बेटा अहा हमर दुलार ॥
अहा के देख के हम केने छी क'गि कल्पना ।
पुरा करब बौंी अहा हमर सब सपना ॥
जब होइबैय अहा अयान कि कुल के राखब मान ।
समाज मे नमुनार पी बनायब अपन पञ्चयान ॥
युगयुग जीं रहब हम आश्रय दै छी ।
अहा लेल हम देश छोड़ि अदेश जाई छी ॥

५८. हे आभुनिपथी

हे आभुनिपथी जग के रचैया छीअहा केहेन रचना केलौ ।
 कगि के अया बुलौ कि कगि के दीयाबाणी अण लेलौ ॥
 हे आभुनिपथी छीअहा ऐहेन आहृदय अर्यँ भगेलौ ।
 अण मे रंग देखेलौ मुदा राईणि मे एणि सगरो से हल्हा भेल ।
 ऐना अए देह डोलेलौ सबहक सपना सँ सजल महल टुईट गेल ॥
 कगि के हापैर गेल, कगि बेसहारा बनल आँईखक नोर सुईख
 गेल ।
 सब पुकारलक अही के हे आभुनिपथी पृथीणि के रचैया आहा कि
 गेलौ ।
 भेलौ बहीर छीअहा कगि गाछक मजर झाईर देलौ कि कगि गाछ
 उखाईर लगेलौ ॥
 हे आभुनिपथी आहा ऐहेन आहृदय अर्यँ भगेलौ ।

५९. बटोही के संग मे परी, मोनक बनल रसभरी "

मनमोहक बचन संगे मरि मुश्कान ।

औशी के राई लागै पुष्पा सामान ॥

शुभ श्वन अइछ संगे शुभ घरी ।

रप के रानी छी अहा सगियके परी ॥

नयन सँ अहा चला के जादू ।

सब श्वओ के केलौ अहा अपन काबु ॥

जखन बजेलौ अहा चुरी खनखन ।

बढेय लागल हमर श्वलक डिकन ॥

एलौ कडि सँ अहा आ जेबैय कुन गाम ?

करैय छी कुन काम अहा आ अइछ श्व नाम ?

६०. सुईया बैन के आयल कैची बैन के गेल

ऊ सुईया बआ के आयल जीनगी मे आँ कैची बआ के गेल ।
 मोी दाना लुटी हमर, हमरा खनी मे किलीके गेल ॥
 जीनिभर अहा के साँ नै छोडब से कसम खेने छेल ।
 नकि डेरा पालिँ अऊ ऊ सब कसम िदा भुईल गेल ॥
 जारक मास मे हमर जीनगी के अरक भअके ओढी लेलऽ ।
 गेल जाड ि हाँ मे अमरक र ईया समैझ उडा देलऽ ॥
 पेमक बेफाई के झेल रहल अअ हम बडका झेल ।
 ऊ सुईया बआ के आयल जीनगी मे आँ कैची बआ के गेल ॥

६१. दागक ददय

छेल लगारि दोसर ि हमरा ऋये फसेऋयै ।
 आगा साही हमरा पाछासे ऋएक किँल देऋयै ॥
 कपडामे लागल िल देखके सब ऋयो हंसै ये ।
 यी दाग जीनगीके अरेलऽ हमरा ऋछ ने फुरै ये ॥
 लगाके कपडामे दाग अहा खुब हैस रहल छी ।
 देल दागक ददऋ हम जीँँँ मैररहल छी ॥
 खुशीसे रहुं आहा हमर जीनगीमे दाग लगाके ।
 फेर ने करब एना दोसरके संग नेह लगाके ॥

६२. श्वा श्वापुरारी

श्रीनो पुर के पक्षी
श्वा श्वापुरारी !
संग मे साप लऽके
बसाहा पऽकेलन सगिरी !!
भाग िर के भोजन करै
पक्षरै ये बाघक छाला !
जटा मे चान चमचम चम्पै
गाला मे उजंरानि के माला !!
हाणि मे श्वाशुल आँ डमर लेने
जटा सँ बहै गंगागिर !
सब देहि के देहि कहाँ
श्चनकर श्वाला अपरम्पार !!

६३. कण कण मे आहा

कण कण मे आहा

हर पल मे आहा

आहा अश्विनासी छी

आहा अदृष्टकारी छी !

अही के चरण मे संसार

अही लऽ दुलार मलार

अही सबहक मैया छी

अही जग के खेँया छी !

आहा अर पा छी

आहा शशिसरि पा छी

आहा काली छी

आहा कल्याणी छी !

शंख , चर , गदा लेने छी

आहा शेर पऽ सारि केने छी

अइछ भैरि भैया साँ मे

लक्ष्मी , सरसिँ दुनू काँ मे !

६४. असगर भेक्षयै

दोसि सब दोसियारी करै छै ।
 पकृथि आँ जीनगी गदारी करै छै ॥
 बाणि आँ अडचन सँ लैडरहल छी ।
 समय के पाँछा दोईड रहल छी ॥
 भुख थयास सब छछके त्पागी ।
 बनलौ जीनगीके हम अनुरागी ॥
 जीनगीके बाट कटल नै कटै छै ।
 हर डेग पऽ दःख आँ ददयभेटै छै ॥
 दुःख ददके संग दोसि केक्षयै ।
 सब सँ छछैड असगर भेक्षयै ॥

६५. यौ मशिी

मन होई छै आँखी मुईन ली यी दिदयदुआयाके छोएरके ।
 माया ममि धियागीके सबटा आँ सबसंग असी िएरके ॥
 बनल छै सब असिरादी अपने आपमे सब झगैरके ।
 यौ लै छै परोअया मोकामे चौका भाई भाई अच चुगली कैअके ॥
 पढलो अखलो बनल छै मुखयसम्झायब अन्का अ कअके ।
 देखके माईके करेजा कानल भाई भाईमे दरारके ॥
 भुमीके अर हरै ये दुश्मन के छै जे अरि छाँि पकैरके ।
 जेकरो पठेलौ रक्त्र कर लेल ओ चुप भगेल बैरीसंग अलके ॥
 जे चाहै छै भुमीके अर बचाबे ओकरा गारी दै फटकाईरके ।
 आबो ि आईख खोलु यौ मशिी अपन सुलि अन िईरके ॥
 सब मशिी एकजुट हअयो अछ ि चलु अगाडी ससैरके ।
 बनायब भुमीके सन्ति यौ येहटा संकल्प कैरके ॥

६६. पेम

शूलके आँखी खोलीके देखुं
 हम अहाके सामने छी !
 शूलोजानसे अहीके चाहलौ
 अहीके अपना माने छी !!
 पेम रस बड अठ है छै
 एकबेर अ कऽ देखुं !
 भसिागर पार भजेब
 जौ पेम अहा कैरलेबै !!
 पेम सुर बड मरि
 पैरक पायलके झन्कार !
 साजा शयौ अपन भनिमे
 आश जे खुशीके बाहार !!
 सच्छ मनसे हृदयमे
 शयौ हमरा बास !
 संग नै छोडब कश्यो
 जबकि रहि जानमे सास !!

६७. राखि करबे करब

 आई अश्विला माईके आर हरऽ
 देखुं दुश्मन भेल अईछ यियार
 घर घर स' आकलू यौ मैथिल
 दुश्मनके कश्यौ खबरदार
 अक केलकै आई नेसिब
 अश्विला-मशिमै नै छै शाखि
 उरि लागल मैथिल जुकिसब
 अश्विला भुमीके लेल करऽ राखि
 अश्विला आँ मशिके लेल
 सब मैथिल-मशिी हश्यौ यियार
 सहजे दै अइछ ि बड आक
 नै ि श्छनके श्यौ अपन अधिकार
 बाट रोकआहारके मुंहसे सम्झाउ
 नै मानैये ि लासि लत्ताऊ
 हमसब अश्विला-मशिी एबि कहब
 अपन अश्विला-मशि लऽके रहब
 आब जान चाहे श्यँ पडै आँ श्यँ पडै
 अश्विला-मशिक लेल राखि करबे करब

६८. हमर जीनगीके पञ्चय

मन करैय बसनि ऋमे फुलल फूल जका फुश्च ।
 मुदा कश्च की आश्चर मासमे पोउनकल काट जका भंगेल छी ।
 हँसी खुशी सऽ मौरणी जका नाची मोन होइय ।
 मुदा यी नीहृदय दुआयामे आनन्दा लहास बआके जीरहल छी ।
 मानि जोआ एक रंगमंचके सानि अश्च ।
 जश्चठा बाध्मि आ अडम्बनाके आठहसे पैघ अछो नै ।
 हर मोड, चौक , चौपारी, चौराहपर ठोकरे ठोकर ।
 अओ हाकि सहरा दै ि अओ टाग पकअके अचै छै ।
 साहस बटोएरके दौडैयले चाहैय छी ।
 रसि भेटैय देखाय दैछै सुखल बाउलक फाक ।
 अछा घुआके देखैय छी हम आकली गेल छी बहुि दुर ।
 नजर पडैय छै अप्पन पायरके छाप पऽ ।
 माअपर बनल छाप जश्चनाके िश्चिना छै ।
 बाउलपरके छाप हाि उडाके लऽगेलैय ।
 आब डेग कोना उठाबी आ कऽ राअ ।
 दानापानी बेगर पेटमे अलाई नाच नाचै छै ।
 आँखी मुनै छी ि रसि साफा नजर आँयि ये ।
 खोआँ आँखी फेर यी दुआया अन्हार देखाए ये ।
 अश्च मंचपर "पयास" कऽरहल अश्च अआनय ।
 एहे अश्च संगी िसिीक हमर जीनगीके पञ्चय ।

६९. सायद सबञ्चनके लेल नामोआसान अञ्च जे

मनमे एकिके अप जरीरहल छै,
 देहक' सब अंग-अंगके नससब जागल छै!
 नेपालके मशिीयो नेपाली से सीकारे ने,
 शिञ्चयो मशिीके आँखीमे नेपाली चश्मा लागल छै!!
 फूल सँ सजायल डाली राखल छै,
 किरा उठाबि बभनाके डर लागैय!
 नेणि िमे सीकि' दि पढैय,
 मशिी आमक, साकल जका जरैय!!
 नै सठल ये साकलसब अखन ,
 सीकि' घी ढारै रहूँ!
 साकलक' आहुीके अनजाम अले नै अले,
 अहा सीकि, घी सँ अपन फाइदा लुटै रहूँ !!
 अपन पुखौँ बचायिके लेल ,
 पढै रहूँ झुठेके दि !
 िखेजीके यजमे देखब कही,
 सायद सबञ्चनके लेल नमोआसान अञ्च जे !!

७०. पुश मास पानी ठार लगैय

पुश मास पानी ठार लगैय,
 अस्मान करैखुन बडड जार लगैय!
 भश्चन कुभेस फसरल छै,
 गोहाली घरमे घूर िरिल छै!
 बुढा दादा अलुहि पकाय,
 बौा बुध्मा माथ-माथ खाय!
 लोटामे पानी, िरीमे भाि काढल छै,
 बुढा दादा गप्पमे लागल छै!
 िरीके भाि देखूं ठैर गेलैय,
 घूर महक अलुहि सेहो जैर गेलैय!
 देहमे मैलक' आपरी सवल छै,
 टागक' रिबा सेहो फाटल छै!
 पानी छुँि बडड कोश्च लगैय,
 खाएि खुन फुररश्मान उठैय!

७१. अहा ओऽि अन्न संगीकिं गीं गबू

 अहुसल कारी केस अहाके,
 रञ्च-रञ्च हमरा इशारा करैय !
 मनमे हमरो पेमक' टुसी पनुकलैय
 सामुने जेबाक लेल डर लगैय !!
 अहाके चन्द्रमुखी चेहरा पऽ हम,
 बजारहल छी पेमक' णि !
 आँख लाथाँ सपना देखै छी हम,
 अहाके संगमे मनारहल छी हम्मामुन !!
 अहाके मन्द-मन्द मुस्करीके जादु,
 हमरा कऽ लेलक अप्पन काबू !
 हम एऽि गीरिंके णि कसै छी,
 अहा ओऽि अन्न संगीकिं गीं गाबू !!

७२. आब उठाश्चरहल श्चयौ बन्दुक !

ककि मशिीके खुन अलही,
 ियो नै मेटलौ िहर भुख!
 िहर भुख अटाबऽ लेल,
 आब उठाश्चरहल श्चयौ बन्दुक !!
 अप्पन भूअके लेल हम,
 सश्च लेबै सबटा गम!
 खुनक' होली खेलऽ िरासंग,
 आश्च रहल छी लऽके गोली, बारद, बम !!
 मानिीके सीमा नाश्च देले ि,
 सब आयम कानुन िश्चके!
 बहुि शासन कएले िसब,
 आब भागै पडिी मशिि छोश्चक !!ि
 शश्चद भाइ सबहक कसम,
 आश्च रहल अश्च कफफन बाश्चके!
 आर पारके लडाई लैड िरासंग,
 बचेबै अप्पन माटी पाअके !!
 मशििक' गाि गाि सऽ,
 फुका गेल एकिके शंख!
 अप्पन अश्चिकार लेबऽ लेल,
 अकली गेल मशिी लडऽ मशििक' जंग !!

७३. हंसा जारहल अञ्च ससुराल"

 जाई छी अहा सँ दुर हम
 यी बेददयदुआयाके छोडीके !
 नाम अहा के जपैि हम
 यौ उजरा चादर ओढीके !!
 नसीबमे नै छेल हमर
 जीनगी आब अहा संगमे !
 दुगि करब भगानि सँ
 आलब दोसर जनममे !!
 हँसी खुशीके साँ रहब
 यौ हमर दुगि ये अहा पऽ !
 अइछ हमरा लेल अछ ि
 यौ चलुँ कञ्चहारी लाश पऽ !!
 सब आल समदाउन गाबु
 बजाबु शंख घण्टके िल !
 हमर हंसा हमरा छोडी
 जारहल अञ्च ससुराल !!

७४. अपने घरमे नोकरी करी

मन अपनेमे हलचल छै
 सबहक मन भटकल छै !
 सगरो सऽ िश्क बौबिके
 रसी दोपेष्टया पऽ अटकल छै !!
 भयंकर आगी लागल छै
 निर बढै जा रहल छै !
 श्रियापुतिके टागहा झकसै
 गाजब कानमे लि लऽके सुलि छै !!
 घरक' कोरो फट फट फुटै छै
 पडोश्या हँस हँसके मजा लुटै छै !
 घरमे नोकरबा फोकडा पढैय
 किरा माशककि बेसमी सँ सुनै छै !!
 लागैय छै आब घर सुडाह भ'जे
 नोकरबा अपने संसारमे रमेथि !
 पडोसीया सब आज पऽ कबजा करी
 बि माशककि अपने घरमे नोकरी करैय !!

७५. अदेशीके रक्क बननि

भाई बञ्जनक' माहान पाणि

आयल रक्क बननि !

बञ्जनक यादमे अदेशक भाईसबहक

डिकीरहल अञ्क डिकन !!

माहाजनक कजा स' भऽके गि

एलु मलेश्वाया साउदी करि !

अदेशोमे रहै बञ्जन हम

याद करै छी राखी तपोहार !!

रेशमके काच गिगा जेका

अञ्क भाई बञ्जनके बननि !

सञ्चयोसे मानी आयल

आई अञ्क पाणि रक्क बननि !!

भाईके लेल बञ्जन लऽके एल

अठाई संग राखी गिरीमे !

पेम स' भाईके अठाई खुबै

बान्है छै राखी दञ्चना हाकि नाडीमे !!

७६. माईके ममि

माई के ममि अहि
 सब सँ पैग जिहि !
 पी माईके दुि दशारि
 देखै अछ दुआया संसार !!
 माईके गोदीसन नै कोनो आसन
 बैस गोदीमे केलौ शासन !
 लारि-पारि सब सहै
 अठ बचन सऽ बौगि कहै !!
 कश् काज साझ घर आई
 बौगि बौगि कैहीके बोलाई !
 नेह सँ उठाके गोदीमे सुगि
 दुकि संग लोरी सुनाई !!
 आश्चिन भोर अंगनामे लाई
 अंगुरी पकैर कऽ लरऽ आखाई !
 माई अछ ममिके माहारानी
 माई सऽ जुटल सब सनीनके जीनगानी !!

७७. गनबि

अगिके अघि काटऽ नै सकै छी,
 जीनगी सँ दुर भाग नै सकै छी !
 दुःख ददयसब संगमे ल'के ,
 संघषके री पऽ याता करे छी !!
 नै जाअ कऽ भेटिँ गनबि ,
 खोजैँ जारहल छी चाहूअस !
 मनमे बहुणि सलिल जलिफ उबजै छै,
 कही हरेबैए की जनमासक' अच !!
 कखनो खसैँ छी ि कखनो समहरैँ छी,
 जीनगी संघषके बाट पऽ !
 बड पैघ अममेिरी सोपल अछू,
 यी मानि चोलाके काि पऽ !!
 ससअ-ससअके आगू बअरहल छी,
 अपन गनबि लग पुअजेबै !
 जगमे अक कोनो काज कऽके ,
 यी मानि जोअके सफल बनेँ !!

७८. हमसब मैथील कहाँ छी

जन्म लेलौ हम अथिला भुअ पऽ
 मैथील पुत कहाँ छी !
 भोरे पाँ जखने खिने
 मैथिली भाषा बाजै छी !!
 मा जानकीके जन्मभुअ
 अथिला हमर महान छै !
 हिी भुअके बनल जमाई
 सभ राम भगनि छै !!
 गिरी, कृति, गम्छा, पाग
 अथिलाके भेष !
 अही अथिलाके पुत छेल
 राजा सतगि स्लहेस !!
 इथिहासके सँछ पाना पऽ
 अखल अदेह जनकके कहानी छै !
 अही अथिलाके भुअ पऽ
 बस्तरहल कमला कोशीके पानी छै !!
 अथिले भुअके जंगलमे
 भगनि राम िआ लगेने छेल !
 हिी अन् सऽ ओ जंगलके नाम
 रामिआ नि राखल गेल !!
 सगिअन अही अथिलाके
 सब मैथील गाँ गाँ छै !
 सत्तयुग अलि कस्युग आयल

श्रियो ने रामुआके आगी आभाँ छै !!
अश्रीलाके कोअल कअ
छेल श्रीपश्री महान !
किरे आष बनल रहै!
समि महेशर भगनि !!
हमसब मैश्रील अश्रीलासी
जन्मभुआके चरणमे आष नाँ छी !
गयिअअ हमरा अपन अश्रीला पऽ
जे हमसब मैश्रील कहाँ छी !!

७९. हम परदेसिया पागल बन्ना गेलौ !

जखने खिने अही याद आँ छी ,
 अहा दिदी कोना हमरा छोडी गेलौ !
 संग संग जीयै मरैके कसम अहा,
 कोनाके एँकि जल्दी सँऽ बन्नायगेलौ !
 लोकक' आगा सरम सऽ शीर झुकै छै,
 यी केहेन जीनगीमे दाग लगा देलौ !
 बहु पश्चिरहल छी अखन हम ,
 जे अहा सनके घाँघी सँऽ बल लगेलौ !
 अहा दिदीके याद भुलाकि लेल ,
 हम परदेसिया पागल बन्ना गेलौ !

८०. कोना मनायब अपाली ?

 केहेन आगी लागल छै मशिमै,
 की नै देखै छी खुशहाली !
 सगरो छै बन्द, हडलिल, आन्दोलनके याली,
 कि कहूँ एनामे कोना मनायब अपाली ?
 नि छै अदेशमे, मन अशु गाममे ,
 माँभुअके खबर सुअ-सुअके हमरा ,
 एकोरअ मन नै लाअरहल छै काममे !
 खेखिअहान सबटा लुअरहल छै,
 घरक' बोखारी भ'गेलै खाली ,
 कि कहूँ एनामे कोना मनायब अपाली ?
 केकरो घरमे जगमग अप जरै ,
 केकरो घरमे घटा घनघोर काली !
 जब अयाबाँके उकी फेरैला अ न लेलकै ,
 कि कहूँ एनामे कोना मनायब अपाली ?

८१. सतापरके सरकार

जनिके छापीपर गोली चलाईके हुकुम दै छै सता पऽके सरकार ।
 से देख्ख कँ आँखी मुआ लेने छै राष्ट्रिय सरिके अश्रुया आ संचार
 । ।

हक मंगआहार भाइ माअके बीरनि देख्खि छै जंगी पशासन ।
 चरनअमाके पार क'चुकल छै खसिदी सबहक शासन । ।
 अपन अधिकार लेल जे अजि उठाँ ओकरा कहै छै आकिदी
 ।

जे माइके आंचल भाइके खुन सँ रंगी से कहाँ छै राष्ट्रिदी । ।
 शोषन दमनके घैला भअगेल , गुनजे लागल म'शमे अजादीके अजि
 ।

द'के अपँपन कुबानी म'शी आब बनायि सँछ , सन्ति सराज
 । ।

गामगाम आ बनिबनिमे बज लाग्गै सराजक' गी ।
 हअयो एकजुट म'शी आब भ'के रहै म'शक' जी । ।

८२.अकापर टागल डाली छै

 अकापर टागल डाली छै
 मुझाएल जाइ फुलारी छै
 पगलागेल सब माली छै
 खापाअके कअ नै अछठाम
 छिओ भुअ पक्षीपाठभऽ खाली छै !
 देणिसब अआएल छै
 ली चमेली चम्पाके लेल
 पुजेगरीके नै कोनो कअ छै
 िरै सँ पञ्चने फूल मुझागेल !
 सब अछठाम देणिके नामे
 जय जयकार करै छै
 जेहो २/४ टा फूल नीक भेटै
 किरा अपने लेल माला बनै छै !
 भूँ पेसिब अछयारहल छै
 घोरोके दगअन िनै अलल
 बाकी लोग सेहो दगअनके कहल मानै
 ि हरदम घरमे ओझा िमी लागल छै !
 कअआ कि चलै रहै यी रबैया
 नै भुँ भागै नै देणि पुजाई
 पकृषियो उपर सँ बज्जर खसैय
 देणिके घर अन अन डहल जाई !

८३. सुरजक' छेहाएरमे

सुरजक' छेहाएरमे
बारह बध्मया रोदके संग
हजार कोस दुरमे
अपन देह सँ
नुनछाह पाइन आकालै
अपना खाश्चिर नश्चए
पश्चिर आ सनीनक
शुखी जीनिके लेल
अपना मोनमे
अनेको सपना सजाँ
अपन देहके
दोश्चरहल छी ।

गजल - १

मोनक सब सपना आँइख सँ नोर बआ बैह गेलै !
 अलि पेमक पल अलमे छाप बआके रहै गेलै !!

सबअन हम ओकरासंग सुक्का पेम करैँ एलूँ ,
 मुदा आइ ओ आमोही हमरा बेफा नाम कहै गेलै !

देल बेफाके नामसंग पेम अछोडक' ददअब ,
 घायल अल हमर हँअके सबटा ददय सैह गेलै !

अपन अल पऽ पतरि राअ ओकरा असै लऽ खोजलूँ ,
 मुदा फेर सऽ सामने आअ ओ छुटल घा उरैह गेलै !

अन अलै माह अलै संगे सब अछु असरैँ ,
 यी "पयास"के पुरा जीनगी ओकरा अनु आमैह गेलै !

गजल - २

अठ बोल बाध्मके गदम पऽ चलै छी आरी अए ?
अल सँ खेलके अहा बनै छी अलक' बपारी अए ?

जब अहाके अंगेज शहरमे रहैयके छेल िऽ,
कहूँ पसंद केलौ अश्लीलाके पञ्चरन साथ अए ?

अपना बेरमे हमर करि बोली अठ लागैय ,
हमरा बेरमे लगायि छी अलक' केरिअ अए ?

बहार सँ सुरि देखैयमे ये चानसन चकोर ,
मुदा आती अलके अहा बनौने छी काअ काअ अए ?

जब हमर देलाह सुझासिब खराब नै छै िऽ ,
कहूँ हमरा हरदम दै रहैय छी गारी अए ?

गजल - ३

जनी के असैर संसदमे नी करै मोज छै !
जख खाशिर अलिखै ओहीपर नै कोनो खोज छै !!

अधिकार अनेलै सबमे हहाकार मचलैय ,
देशभर हडलल , चकाजाम भरहल रोज छै !

जनीके घरमे नही की चुनी पजरलैय ,
संसदके घरमे भरहल सबअन भोज छै !

जनीके खून सँ माटिभुमी लपि भेलैय ,
अियो नही नेसबके बदलल सोच छै !

बअगि सीयखाशिर जनीके उस्का उस्काके ,
निमे जाइके कअरहल कुसीके पपोज छै !

गजल - ४

हमरा डायर अपनाके फूल सम्झैय !
अपन पायरक' हमरा ढिल सम्झैय !!

अपनाके जटालिला माहान माहाराजी ,
हमराके अलम परके गुल सम्झैय !

अपनाके तीपुरेशर बंमभोला भगनि ,
हमराके ओ डमर आ तीशुल सम्झैय !

अपनाके आनन्द सँ रहैलिला माझक ,
हमराके अपन मच्छर झुल सम्झैय !

हमराके लिली , चमेली , गेन्दा आ रोटन ,
अपना सब सँ पैघ अरहुल सम्झैय !

हमरा हरदम आएर गैर अरान ,
अपना आपके सबहक मुल सम्झैय !

गजल - ५

देख्वाँ हमरा ओ भ'गेलै खिनी हमर !
एऽ कन्टोलमे नै रहलै जिनी हमर !!

ओ कश्चयो नही हमर अनादर करैय ,
ओकरा उपर चलैय मनमानी हमर !

देखआहार सब देख्वाँ रक्षजाएँ छै ,
सब गुण सँ सु-सम्पजि छै जनानी हमर !

ओ ि ईशारा सँ सबटा बाँ बुझ जाइ छै ,
यौ सबसे बेसी अछ कआया जानी हमर !

आब ि ओकरा अनु हम अअ नै सकै छी ,
ओ ि बआगेल छै जीनि कहानी हमर !

गजल - ६

एना अए रसै छी हमर पाण अहा !
अए ल'रहल छी हमर जान अहा !!

बचपना अश्वनी नही गेल अहा कऽ ,
मुदा अखन भ'गेल छी अश्वान अहा !

हरदम हमरा नंगोचंगो कश्के ,
अए उडै छी हमर अश्वान अहा !

अश्वनीमे यी जनिनी अश्व जायि ,
ि कहूँ कश्क्या करबै लनि अहा !

बाि मानूँ पकश्क अश्वयँ हाि हमर
हमर अछी अनमोल समान अहा !

गजल-७

झुठे कऽ अनेहक' जालमे हमरा अहा फसेअयै अए ?
चिन हमरा , नि दोसर पऽ समपण केअयै अए ?

यै कोमल हमर अल सँ खुन आकाली आकालीके अहा ,
एना दोसरके जीनिक' महल अहा रंगेअयै अए ?

हमरा सँ अछु आकायि रहे ि अल खोलीक' कहि ,
मुदा एकाएक असैर दोसरके संगी बनेअयै अए ?

अअ जीनिभर संग संग चलै के मोन नही छेल ि ,
हमरा रंगी अरंगी झुठा सपनासब देखेअयै अए ?

आइ अपन जीनगी सँ हमरा दुसमनी भरहल छै ,
यी कअयो नै छुटैला िफाके दाग लगेअयै अए ?

गजल-८

बड सुनर अञ्च रप आ रंग अहा कऽ !
पाथीं हमहूँ जीनिक' संग अहा कऽ !!

भोर सँ साझा चेहरा पऽ मुस्फान रहै ये ,
केहेन अञ्च जनिनीके उमंग अहा कऽ !

गजबे सुरक' संगम अञ्च जनिनीमे ,
के बजाँ पाणि यी अरदंग अहा कऽ !

चौक चौराह पर गुलछरा छोडैय ये ,
मारै कन्खी सबटा अंग अंग अहा.कऽ !

नयनक' जादूके नै अञ्च जणिफ कोनो ,
कमाल करैय ये पेमक' जंग अहा कऽ !

गजल - ९

सामने आँखके अहा झूठे नजर चोराँयि छी ?

लगमे बोलाके झूठे फेर हमरा भगाँयि छी ?

नजरके सामनेमे दोसरके हाँ पकड़के ,

झूठे अहा हमरा पेमक जहर अयाँयि छी ?

पेमक झुठा सपना देखा देखाके आइ हमरा ,

हमर झलके झूठे एना अहा डिकाँयि छी ?

आइ देखूँ अहाके पेममे पागल बझके अय ,

घायल झलके हाँमे ल'के हम बौबैय छी !

पेमक अयामे िखेजिके हाँ लगाके अहा ,

हे ये "पयास पेमी" के झूठे एना डिपाँयि छी ?

गजल - १०

नै करै नै अछु करऽ दै झुटे कऽ अटकल छै !
बाकी जे छै सेहो अपन रसनि भटकल छै !!

मूह सँ फोड़ैय लब्धा करनीरिनी अछु नै ,
बेसरमी जका अच रसनि पऽ भिरल छै !

पायरके आंचाके जअन खुसकल जाइ छै ,
बेसरमीके गुमान श्रियो ने सटकल छै !

आनि दजस आलस सबहक अम बनाके ,
यौ अमक कपीन खेलरहल भञ्जलि छै !

यौ खेलाडी सबहक खेल देख देख कऽ आइ ,
दशकके हृदय नोर सँ भेल जललि छै !

गजल - ११

हमर आँखके सामने हमर झलके िर टुष्ट गेलै !
हम देखि रश्च गेलूँ अओ हमर जीनगी लुटी गेलै !!

अपन मनमे बहुिरास सपनासब सजौउने रही हम ,
सबटा सपना चुर भेलै आ नखब हमर फुटी गेलै !

दरबदर पागल नेहाएि बौबिीरहल अये हम ,
हमर भाग्य श्रीणि आइ हमरा संग अए रठी गेलै !

हरदम सबअन हम समयके संगमे चलै एलूँ ,
मुदा बिो अए आइ हमरा हाि सँ समय छुटी गेलै !

पयासक' सबटा पयास आरासाके बाईढमे भखाएलै ,
मोनक' सब आशा अआलाषाके आइ लहास उठी गेलै !

गजल - १२

खजानाके ढेरी सटऽ लाग्लैय मुदा अघायि नै ऋओ !
अपन मयादा अक्षय सिमी जेका लजायि नै ऋओ !!

न'सिंगीकि' सुर आ नि सुनैय लेल ब्याकुल छै ,
रंगमंच पऽ सजाएल साजजिज बजायि नै ऋओ !

देखूँ मंडपके सबटा खुटाखभनी सब गाडल छै ,
यौ राखल छै रंगअरंगके फूल सजायि नै ऋओ !

दक्षिणा मागैय छै बभना मात साँ टका चाअना ,
यौ जजमान लऽछै सौसे हजअया भजायि नै ऋओ !

देखूँ सब आनहर सबके आँखमे छै लि झोकल ,
सामनेमे छै सु-मागके रसनि से देखायि नै ऋओ !

गजल - १३

अपन सिमे नै ओ अंग केहेन ?

जहीमे चमक नै ओ रंग केहेन ?

समस्यामे नै कोनो मर्दि करैय ,

ओहेन साँसबके संग केहेन ?

जे अपने आपमे कटैय मरैय ,

यी श्वना उदेश्याला जड केहेन ?

नै की खुशु देखी नै की चमक ,

छायल उदासीके उमंग केहेन ?

नै णिमे मरिणि नै कोनो सुर ,

बौका गीरक' रिंग केहेन ?

गजल - १४

मोहक' अजडामे फैंडस गेल छी भागब कोना ?
 यौ लोकक' कू-दृष्ट के रेँ सँ काँ लागब कोना ?

सपना देखैँ छी सबअन सतकमके हम ,
 गश्तर आनन्द सुलि छी आनन्द िश्च जागब कोना ?

यौ पुखाके अजस्र सम्मथी लोक लुश्चरहल छै ,
 किरा बैरीसब सँ बचाके हम राखब कोना ?

हम लागल छी मुदा भाइ पडोसीके बाँ सुनै ,
 आब अपन भाइके की कैरके सम्झायब कोना ?

मन आरिमे यी बासिब गुचौर मारै । छै ,
 से हम आश्चरि मुख लोकके देखायब कोना ?

गजल - १५

समाजक' सबटा कूश्मी अहा संग लेने चलूँ !
संस्कृष्टी संरक्षणके पाठ सबके आखेने चलूँ !!

जेमहर जेमहर आक्रमे अन्हार देखैय छी ,
ओमहर ओमहर आक्रमे ज्योष्टी जलेने चलूँ !

यौ समाजक' मश्चिफ़मे जर ल मैएलके अहा ,
अपन आमागी बस सँ माझीके चमकेने चलूँ !

माझल मोएलसबके अहा गिर्गि गिखारै ,
अपन माटि संस्कृष्टी सँ समाजके सजेने चलूँ !

रसी भटकल आसरल बाटबटोही सबके ,
सतमागक' रसीके दशम अहा करने चलूँ !

छोट-बर सबके बराबर नजर सँ देखै ,
समाजके संग इन्सानके कबि आभेने चलूँ !

गजल - १६

सोनाचानी सँ भरल पुरल जीनगी सुनसान आए ?
फूलेफूल सँ सजायल यी महल लागैय समसान आए ?

यौ हम ि सबआओके नीक सँ पैहचानी रहल छी ,
यौ मुदा हमरा सँ सब बआरहल छै अनजान आए ?

नै आओ गुदानै ये नै आओ हमर कहल मानै छै ,
लोग सम्झीरहल छै हमरा खेलौनाके समान आए ?

आब नञ्चं आयल जाए छै नञ्चं मरल जाए छै ,
यी मानि जोआ हमरा लऽ भेलैय अनसोहान आए ?

यी जीनगी आब हमरा बडका पहाड बुझाए छै ,
हमरा सँ रआगेल छै आइ हमर भगनि आए ?

गजल - १७

अि पैघ िका ऋए अहा हमरे साि केलौ
झुठा सपना देखाके अहा हमरा संग ऋए घाि केलौ ?

बौबैि रही हम अपने संसारमे दुःख ददयसहै
अपन जीनगी स' अहा हमरा ऋए आजाद केलौ ?

अखन हमरा देखके सारा दुआया हँसरहल छै,
हमरा जीनगीके अहा एना ऋए बदि केलौ ?

लोक' क सामने माि उठाके चल' नै सकै छी हम,
हमर खुन सँ अहा दोसरक लाल ऋए हाि केलौ ?

आब ि जीन्दा लास बआके जीरहल छी हम,
कहूँ हमर सपना सबके अहा ऋए शाि केलौ ?

गजल - १८

देख्वाँ ओकरा हमर नैनाचार भ'गेलै,
नै जानी किऽ कोनाके हमरा प्यार भ'गेलै !

की कहब, कोनाके कहब अछ नै फुरैय,
यी चंचल मनमे पेमक' बैसार भ'गेलै !

ओकरा देखै अना रहल नै जाइ हमरा,
आब अनो औशी राखि जका अन्हार भ'गेलै !

ओकरा लेल दानापानी सब अयाग'यि,
आब ऊ हमर जीनगीके आरि भ'गेलै !

किऽ जा'के खोजी नाम, पता अछो नै मालुम,
ओकरा पाछा "पयास" गजलकार भ'गेलै !

गजल - १९

अहा हमर ठोरक' अञ्छ गीं थय ,
सेनुर स' सजेलौ अहाके शीं थय !

अहा दुधिन बञ्चाके एञ्चायै अंगना ,
नै समाबु यी छी दुआयाके आं थय !

खेलैं बझीसी खेल अहा हाथ गेलौ ,
लेलौ अहाके खेलमे हम जीं थय !

बडड अनमोल पुरस्कार अञ्छ अहा ,
बनेलौ अहाके जीनगीके आं थय !

आश्चा जुश्चा सबटा दुःख सहैयि ,
बनेयि सफल अपन आं थय !

गजल - २०

हम बाट जोहैँ अछु ओ एँ कस्यया ?
देल चिन हमरा ओ आभैँ कस्यया ?

कुमारी बैसल अछु हम ओकरे लेल ,
नै जाअ हमरा दुनि बनेँ कस्यया ?

एँ मनमे हमर खरेरी लागल छै ,
मनमे पेमक' बाअस बसथैँ कस्यया ?

सपना सब ककि सजेने अछु हम ,
यी सपना सकार हमर हेँ कस्यया ?

जीनिके रंग सबटा बेरंग भ'गेलै ,
ओ न' रंगसे हमरा रंगेँ कस्यया ?

गजल - २१

फश्म गेलूँ हम समाजक' आडमे आयब कोना ?
कहूँ अहा लेल पेमक' फूल हम लायब कोना ?

बडड भाश्म समस्यामे फश्मगेल छी हम सजनी ,
अहा संगमे केल िदा कसम आभायब कोना ?

अयास से हमर कण्ठ सुश्चरहल छै अश्च ठा ,
कहूँ आब अकि गीं हम अय गायब कोना ?

डेग-डेग पऽ आँगा पाछा पहरेदारी लागल छै ,
अपन संदेश हम अहाकि पठायब कोना ?

अहा संगके ओ पेमक' पल बडड याद आँ छै ,
श्चल पऽ पारि राश्चके अहाके भुलायब कोना ?

गजल - २२

अहाके देख्वाँ हमर नयन खुशी सँ अबोर भऽगेलै !
अहाके आँखीँ अय हमर जीनगीमे भोर भऽगेलै !!

हमर जीनगी औशीके अन्हअया राइँ बनल रहै ,
अहाके मुश्कान से यी जीनगी चान जका चकोर भऽगेलै !

बुगियल जाएँ छलै मन महके आशाके अकरण सब ,
अहाके सँछि स्नेहके पिप सँ पजैरके गिरि भऽगेलै !

सुनसान लगैँ रहैय हमर यी समुच्चा घर अंगना ,
अहा एलौ लक्मी एलै से सगरो जहामे शोर भऽगेलै !

लोकके लेल कारी रहैय सबअन यी पयासके मन ,
अहाके मोअनी र पके जादू सँ यी मन गोर भऽगेलै !

गजल - २३

अहा अए हमरा सँ दूर भऽके लैछी पाण साजन !

अहा बेगर आकली रहल छै एऽि हमर जान साजन !!

अछोडके ददय हम आब ि सहेय नै सकैय छी,

आब ि यी जीनगी सँ भऽगेल छी हम हैरान साजन !

पंक्ती , पनि , झना, खोला हमरा संग मजाक करैय,

अहा सब जाआि अए बनै छी अनजान साजन !

ननदी सौश्रीनीि हरदम हमरा सँ झगरै रहैय छै,

सास-ससुर सम्झैय लागल छै हमरा अरान साजन !

आँइखमे एको रश्मि आनन्द नञ्चं होएि छै हमरा थया,

सजाएल सेज अहा अनु लागैय छै सुनसान साजन !

गजल - २४

यै बाँ मानू हमर हम करैय छी अहाके प्यार सजनी !
यी जीनि अपण करै छी अहा पर नै कर इन्कार सजनी !!

आनन्द हमर हरेलै आँखी स' चैइन नै होए छै एको छन,
एक बेर अहूँ कश्क देखूँ ि हमरा संग दुलार सजनी !

ये हमर करेजा अलोजान स' हम अहीके चाहै छी,
सबके सामने कसरहल छी अपन पेमके इजहार सजनी !

अहा जौ एना मूह मोडायि हमरा सँ ये हमर जान,
देखूँ यी जीनगी हमर भोजेयि अलकुल बेकार सजनी !

यी नयन हमर आइकि अहीके बाट आहारी रहल ये अय,
अहीके लेल अखन अि अइछ यी "पयास" कुमार सजनी !

गजल - २५

लागल करेजामे पेम अछोडके बाण यी जीनगी अयल नै जाइ छै !
जेकरा मनके महलमे सजेने छेलुँ ओ आइ भऽरहल पराई
छै !!

दुआयाके केहेन अि बनल सब किँय अपना खाशिर फाईदा,
पेमक' सब णिदा कसम िशुकके ओ हमरा सँ भऽरहल शिदाई छै!

एऽ सब अओ हमर अि उठाँयिके लेल ियारीमे लागलैय,
ओऽ ओ हामि मेहंदी सजेलकै घर अंगनामे बजैँ सेहनाई छै!

सब सखीसब नाचैँ गाँँ ओकरा दुश्मिन बनाके डोली चढेलकै,
एऽ हमरा अश्रुयामे चढाएँ सब संगुश्रिया नोर बहाई
छै !

ओ हरदम सबअन खुश रहऊ अपन नि सजनाके
संगमे,

एऽ अश्रुयामे डहैँ "पयास"के घायल आत्मा दऽरहल बहिँ छै !

गजल - २६

बसिंहमर जीनगीके इजोअया डुबे लागल छै !
अयाके बाट किँ यी नयन हमर जागल छै !!

ओकरा बीनू एकोछन मन नञ्च लागैय हमरा ,
नै जाअ अए अया हमर हमरा छोडी भागल छै !

अया अछोडके गीँ गीँ देखके लोग हमरा,
सबअओ पारि मारैय कहै यी छौरी पागल छै !

पीया अलनके खाअर हमर सुहाग राअीके सेज,
यौ बषो सँ पेमक' फूल संग सजायल राखल छै !

यौ आशे आशमे पुरा जनिनी दअ गेलैय हमर,
अया बीनू हमर जीनगीमे जकरल बादल छै !

गजल - २७

हम ि छी अहाके साजन अहीके भऽके रहब यौ !

जकि कलेश देँ अहा सबटा हम सहब यौ !!

दूर नै कर अपनासे हमरा यौ हमर साजन,

अहा नै सुनयि ि कहूँ ककरा हम कहब यौ !

यौ अही ि छी हमर भगनि पक्षि परमेशर,

देहमे पाण रहैयकि अहीके नाम जपि यौ !

बस अही छी एकटा हमर यी जीनगीके सहारा,

अहा खनूँ एकपल भी हम अ नञ्च सकब यौ !

अअ अहा आबो नञ्च मानब ि हमर पाणनाँ,

अपन खुन सँ यी जीनगी अहाके नाम अखब यौ !

गजल - २८

बभ्रुगेलौ अहा हमर मनमे थय पाण बभ्रुके ,
सोभा बढा बभ्रुअँ हमर दुरिके दलान बभ्रुके !!

देखूँ अपन मनमे पेमक' मण्डप बनेलौ हम,
अहा आब्रुके आसन कर थय जजमान बभ्रुके !

हमर मनके मभ्रुमे पेम यज सजायल । छै,
अहा यजमे समा जाऊ साकलके समान बभ्रुके !

बडड उदास लागैय हमर यी सुनसान जीनगी,
यौ अहा मुश्कान लाख बभ्रुअँ दुधियाके चान बभ्रुके !

यौ सखाप क'देयि दुधियासे पेमक' बभ्रुके,
हम पेमक' रिर िड थमि अहा कमान बभ्रुके !

गजल - २९

थय पेम हमर हमरा गुलाकिे फूल िइर अँ !
टुटल कोमल मनके हमर अहा थय जोइर अँ !!

मन करैय भगनिने हम पेमक' फूल चढाकी ,
हमरा पेमक' बअयासे पेमक' फूल लोहैएर अँ !

अगरल रसीपर चश्च गेलैय यी जीनगीके पञ्चया ,
सुमागय अस हमर जीनगीके मुह अहा मोइर अँ !

अछु नञ्च फुरैय हमरा आब हम की कश्च अञ्च कहूँ ,
चलूँ अलके संग संग ऊ अलिह बाि असैर अँ !

मुश्च अलार्किे इशारा हमरा समझमे नञ्च आि ये ,
यौ अपन मुखारअिन्द से पेमक' आिज अकैर अँ !

गजल - ३०

याद करै छी ओकरा जे ओ एँ कश्चया ?
मनके ललुसा हमर पुरेँ कश्चया ?

अपन माग स'जौउने बैसल छी हम ,
ओ सेनुर सँ हमर माग सजेँ कश्चया ?

जोनिक्' रंग सब िखल जाएँ छै ,
ओ न' रंग जोनिमे लगेँ कश्चया ?

धु' दशम लेल मन छै ब्याकुल हमर ,
ओ हमरा धु' दशम करेँ कश्चया ?

घर अंगना सुनसान लागैय हमर ,
नै जानी ओ पेमक्' बाजा बजेँ कश्चया ?

हमरा संग केलाह िदा कसमके ओ ,
हमरा दुश्मिन बनाके आभेँ कश्चया ?

गजल - ३१

सुरजक' छेहाएरमे सबअन पअना चुबायि छी !
जीनिक' सब दुःख ददके अपन मीनि बनायि छी !!

रसी पेरामे भेटल सब अनअन्हारके संगमे लऽके ,
सब अछु जाआनि हम दुश्मन संगे गाला अलायि छी !

सुखमे सबअओ हमरा संगे हँसै खिलै रहैय ,
पडल दुःख िऽ हम अखन असार नोर बहायि छी !

सुरजक' छेहाएर सँ झकझ हम अपन देहमे ,
जीनगी जीयि लेल गअबीके मलहम लगायि छी !

बअचामे मजरल मजरमे महुनि लागल देख्ख कऽ ,
भोर साझ जखने खिने हम अरह गीनि गायि छी !

गजल - ३२

बषो स' सजाएल सपना हमर आइ अओ लुअ गेल !

सब अछु बाइढमे भासल नअब हमर फुअ गेल !!

मनमे बनाएल पेमके सुन्दर महल हमर आइ ,
हमरे आँखके सामनेमे झहर झहरके टुअ गेल !

नै जानी कुन गली भेल हमरासे ओकरा संगमे ,
मूह घुमा लेलकै, हमरासे हमर श्रीणि रअ गेल !

कुन कमके सजा ि देलह हो भगनि आइ हमरा ,
हमर सामनेमे आइ हमर जानके डोली उअ गेल !

पेम अछोडके ददयनै सैह पेलूँ आँखसे नोर अरल ,
पि नै पेलूँ हम हमर अन्दा लाससे पाण छुटी गेल !

गजल - ३३

लाल लाली लगाएल अइछ ठोर अहाके !
चमचम चमकैय चेहरा गोर अहाके !!

कऽ हेरा गेलौ अए नञ्च बाअरहल छी ,
अकैर अकैर कऽरहल छी शोर अहाके !

हर बखि बौंि बुक्कीके फटकारैय छी ,
कोनाके बअगेल हृदय कठोर अहाके !

केकरो अ मे नइ लगैय छी आइकल ,
देखरहल छी भ'गेल मूह जोर अहाके !

नीक बाि कहला स' कुरकुटाके लागै ये ,
झुठेके आँखसे बहीरहल नोर अहाके !

गजल - ३४

नोरक' मईस स' हम जीनगानी श्खै छी !
अपन दुःख सुखके हम कहानी श्खै छी !!

स्मरण भ'रहल छै ओ अया संगके पल ,
याद कऽके अपन हम ओ जीनी श्खै छी !

समाजके श्पिश्चि अयाके अपनेलाह ,
आइ ओहे हम अपन मरदानी श्खै छी !

अयाके खाकीर सबके संग झगरलाह ,
अखन ओहे अपन पहलीनी श्खै छी !

सम्झै ओ अन्सब आँइख रसा गेलैय ,
सोचै जीनगीके बाइढक' पानी श्खै छी !

गजल - ३५

यौ जखने जखने नेसिब गदार भेलैय !
यौ खिने खिने जनि बलत्कार भेलैय !!

जखन सता हथियाँ के समय आएल ि ,
झुठेके असीसनके जनमे पचार भेलैय !

जब अपन अधिकार मागलक जनि ि ,
बि जनि पर सताबल पहार भेलैय !

आइ मशि भुअ पऽ खुनक' दाग लागलैय ,
मशि के उपर कगि आत्माचार भेलैय !

नेसिब कुशाय खाधिर भागदौड करैय छै ,
अमुखा जनि आन्दोलनमे आचार भेलैय !

गजल - ३६

अलमे लागल आँइग हम देखायब कोना ?
मरल मनके आत्माके हम अआयब कोना ?

देखूँ हम अभागलके जरल कपार छै ,
महलके सुख भाग्यमे अखायब कोना ?

यी जीनगी हमर जनमासक जालमे छै ,
डेग-डेग पऽ छै बाँ आब बचायब कोना ?

चलैँ चलैँ हृदयके कण्ठ सुख गेलै ,
आब कऽ सँ की लाएबके अआयब कोना ?

बडड अमोरीरी यी मानि निके असीमे ,
यौ बडड भारी यी असी हम अभायब कोना ?

गजल - ३७

हमर मनके सपना कश्चया साकार हेँ !

मन आरि के भाँना कश्चया बहार हेँ !!

मनक' चौपाश्च पर बनाएल योजनासब ,

यी जनमासक' अचमे कश्चया पचार हेँ !

दर-दर भटैक रहल छी लोकऽक देशमे ,

अपने भुआ पऽ कश्चया नीक रोजगार हेँ !!

लडैँ लडैँ शहीद भ'गेलैय भाइसब ,

अश्चपर संझीनिमे कश्चया अचार हेँ !

छुपाएल पयासक' यी संघषके डेगसब ,

लोकसबके नजरमे कश्चया देखार हेँ !

गजल - ३८

फश्म गेलूँ पेमक झोलमे मन काश्म रहल छै !
देख हमर डिप आमोहीया फाश्म रहल छै !!

हम कोनो गर्ली नइ कलौ ओकरा संग पेममे ,
यी सबटा बासिब िखेजिज जाश्म रहल छै !

हम ि ओकरा सबश्मन सँ पेम करैँ एलौ ,
मुदा ओ हमरा बेफा नाममे साश्म रहल छै !

अकि बडका इल्जाम लागाएँ हमरा पऽ ,
यौ एकोरश्म नइ हमर यी श्वल माश्म रहल छै !

मन करै श्वयजेँ सबश्मनके लेल ओकरा ,
ओ ि अश्मनी हमर हृदयके रानी रहल छै !

गजल - ३९

फाश्वगेल करेजा दुई टुर। आब हम श्वायब कोना ?
ददय ि बडडजोर होए ि छै आब हम जीयब कोना ?

यौ मन होए ि अश्च जहर पीश्च कऽ मश्च जे ि हम ,
मुदा हा ि रिरिए ि छै से जहर श्वायब कोना ?

अपने मनक' बा ि मनके रसेरस खारहल छै ,
यौ यी मनके भीरिके बा ि केकरो हम कहब कोना ?

श्या श्वनू एकोरश्चि आक नै लागैय छै घर अंगना ,
यौ आब हम यी चढल जनिनीके ददयसहब कोना ?

श्या बेगर हमरा यी श्वनो औशीके राश्चि सामान छै ,
ओकरा श्वनू िन िन साल असगर रहब कोना ?

गजल - ४०

हृदय आरि इजोर् बारीं चलूँ !
सबध्को गीं आकके गार्तिं चलूँ !!

अजानके दहमे डुबलाह सबके ,
जानक' सरोरिमे नहाबैं चलूँ !

यातामे भटैकरहल याती सबके ,
सतमागके दशम करार्तिं चलूँ !

जाईं पाईं सबध्को छेककऽ ,
इनसाआयके नां आभार्तिं चलूँ !

अपन मयादामे नै कोनो आँच आर्ति ,
ऊ नैकिकके आप चलांतिं चलूँ !

गजल - ४१

सीयिसँ भरल नै आसीयिसरकार चाही !
जाश्रिपाणि नै मानिके बहिर चाही !!

हरदम जाम , हडलिल , दंगाफसाद नै
सुख चाइन सँ आँ लेल रोजगार चाही !

असुर राणिसन पापी पण्डि जन्म नै
मयादा पुरष रामसन अगिर चाही !

निके खाश्रिर लडाई करौला भाई नै
शुखदुःख आनि बाटौला हकदार चाही !

पेटके लेल आँगु सँ भाणि पाछु सँ लाणि नै
अञ्जल रश्मि अठ शब्दके आहार चाही !

राजेश मोहन झा "गुंजन"

अनु रातिक बज

कबो जप पि जोग बखानी,

नेहक आखर अनु सभ अजानी ।

पद पंकज आनन घन मोहक,

अनु राति आषाण नि जानी ।

मोर मुकुट चानन केर रेखा,

शिी िन कश् रहल गुमानी ।

पायल नश् देखब कोन दाश्,

पिपल साओन जेठ समानी ।

दहकय मनि पनघट सूखल,

मसान बूझ गोकुल सखा मसानी ।

कुसुम िझ सभ शूल आहारकी ,

उजड़ल उपनि जे छल िनी ।

गरल भरल यमुना जल देखल,

नञ्चं भाबय कोयली केर िणी ।

पूनीमक राकी चान मुरझायल,

अलखकी बज अनु बजरानी ।

जनचेनि आ रानि दिनाक विक्कवि कवि यातीजी के जन्मदि
पि

हं ब आओल खल डबहा
बगुला रान जि भगैए,
ककयुग जिजा चाकि यिग
रुहि कि कछु कहल नै जाइए।
कयला आगि शक्ति भ' क'
नीलर के दुत्तारवि हिल छथ,
चेनिशून्य रानि पिखथ नक्
ओ व हि न म्हावि हिल छथ।
हे बाबा! की भ' हिल अक् देखू
संति पिष्टक गि ठार रे,
हंकि उपा क भेला नगि रे ज न
ठ लूट रचाबथ गार रे।
पाहिनी जे गाछ अक् नागट
हइए भ जल ओका अपणा,
भवि जीनि हृदय हिल कया ल
रलि बाद गगिजल ॐ पिण ॥ ॥ ॥

बाल कर्षी- भादकि अन्हश्या

भादकि राक्षी घनघोर अन्हश्या

कापय पाणि आ डोलय ठाञ्छ

शाणि जगणि आशब्द राक्षी

अजुरी खन खन चमकै दुआश्या ।

सूखल ठूठ गाछ पर भगजोगनी उड़ैए

जेना मसान मे आनि सँ लुती उड़ैए

एहन अन्हार कञ्चओ नञ्च देखल

पल-कण-पहर आब लगै पहाड़

ममणि आरआरा मे जीनि उरि

मनुकखक मोन,आश नञ्च जिल

श्रीनिक लेख कश्यो नश्च मेटल

एश्च जीनि मे,

जौ देखलहुं,

शरदक चान इजोश्चया फुहाश्च

ि कश्यो काट' पड़ि

भादकि ई िभत्स अन्हाश्च

जरैि दीप केर

अछु आखा अश्च बाचल

अझाओि आशय

अंि क्ि अिनि केर रचल

बीश्चि गेल राश्चि अन्कर अयला

भेल इजोि अन्हाश्च परा गेल

मुदा जे श्वाखल छल ओ भ' गेल

ई िभत्स भादकि अन्हश्चया!

त्याग-ममिक जीनि हश्च लेल॥

कृष्ण छश्चहारक पद

नीलनयन मे काजर लागल

अहुंअ रहल आचोर हे,

बाल गोपाल छश्चहारक राक्षी

सूलि यशोमती कोर हे ।

पीयर अंगा टोपी पीयर

पीबिबर मुकुट भल मोर हे,

तीनू देती सोहर गाबक्षी

बालक मुसफ्फी ठोर हे ।

पैजआया झुनझुन रनझुन बाजै

देखू र प बेजोर हे,

असथ गेल छथि सभ अपना के

नंदन माखनचोर हे ।

नि नि माटि यशोदा जे

आओल ललना कोर हे,

नि भेल गोकुलामि देख

नटारि नंदशोर हे ।

मनोज झा मुष्फि

पकृधीसँ अनुनय

मृत्यु शैस्यापरसँ

अपन सत्क्रमक पिस्सासँ

ओ पकृधीके अनुनय कऽ रहल अछ

अगिरक तिसि ।

ओ एहन अगिरक माग करैछ

जे गाम आ देशके सत्प्रकपिपर डोश्आए

समाजके समाश्रकिक पाठ पढाबए ।

क्याक ओ देखने अछ,

रक्कके भक्क

कमचारीके भषाचारी आ

समाजसेविके दुराचारी बनल ।

ओ अनुभवि कएने अक्ख

परमेश्वरके बास होबऽलि पञ्चके

नोट आ भोटकलेल किछुया बनल

व्यवहारीक सीकिय पूछिये

महिषायाके पहचुया आ पहचुयाके महिषाया बनल ।

ओ सुनने अक्ख,

पतकारके भषाचारीके दलाली करै

आवकके श्रद्धाविक भक्षिके हलाली करै

न्यायमूर्खबके सत्तके खुलेआम बली चढाई

मन्ती जन्तीके देशके बेथकऽ अपन झोरी भरै ।

ओ अर्थि अशु,

आमुखाक आसाफ आ जनिक न्यायकलेल

समाजमे समाथक आ देशक विकासलेल

देशमे राजनैतिक स्थिति आ भषाचाथक नाशलेल

टिपिथि सम्मान आ छोटपथि स्नेहक भाँ विकासलेल ।

ओकरा आँखक आगा सब दृश्य नाथ रहल छैक,

नागथक, व्यापारी, कमचारी, नेँ ओ

समाजकसब अर्थिके पश्चरने मुखौटाके भाथ रहल छैक ।

अपन जीनिक अर्थि कणमे,

अर्थि अथलाषा पुरा करबाकलेल

पकृष्टीके मृत्यु शैस्यापरसँ गोहराँि अञ्च,

‘हे पकृष्टी आँहामे सामथ्र्य अञ्च,

एकटा अगिरी जन्माश्रयौ जे

गाम आ देशके सत्यकपिपर डोश्याबय

समाजके समाश्रयकिक पाठ पढाबय ।

जञ्चयासँ समाजमे समाश्रयकिकि अओँि

गाम आ देश पटरीपर अपने अओँि ।’

रौशन कुमार झा "गोश्वेन्द्र"- अति - श्री नारायण जी झा, पति -
गा०+पो० - सधिरा, मिना - बाबूबरही, अमला - मणिबनी, अहार

कसैया दहेज

अश्विला के पानि रिणी पर,

राखल एखनो शि अय सहेज ।

आंच अबैया नारीक मान पर,

बहु कसैया अय इ दहेज ।।१।।

आन शान के राइख पिख पर,

लैया बेटा के बदला मे दहेज ।

सबटा भार दइया बेटीये पर,

रश्च ने गेल कश्को परहेज ।।२।।

नै जञ्ज ककर अय ई देन,

पराया सब बेटी के बुझैया ।

जमा करैया दहेजक नि,

बेटा ककरो जेना अकनैया ।।३।।

देब लेल बेटी के आक घर,

करैया अरमानक त्याग ।

घुञ्ज किैया गाम-गाम रि,

नै किैया घटकक पग ।।४।।

दाम लगबैया बेटा के,

बेटा के बजार बड जि ।

खाली करैया बां टका के,

बहुि कसैया अय ई दहेज ।।५।।

बहुि मोल-भाि कय,

होइया अयाह फेर ठीक ।

दहेजक मोल चुकाबय,

जाइया घरारी कि अक ।।६।।

सखी-सहेली नैना जोअन,

बर बरािि सब अबइया ।

नहि युििि बनय सुहाअन,

खुशी स् अयाह भ् जाइया ।।७।।

मा-बाबू , बअन और भैया,

सब िअ कय सासुर बसैया ।

सौस-ससुर सब िना दैया,

अन जबि के सब सुनैया ।।८।।

सब पैलो पर सौस कहैया,

अछु नै अनलक ई दहेज ।

नारी के सम्मान जरैया,

बहुि कसैया अय ई दहेज ।।९।।

अपने भाग्य के दोषी मानै,

नोर बहा क सब सहैया ।

नैहरक लोक अछो नै जानै,

बेटी पर अ कहर अबैया ।।१०।।

अछु नारी सबटा सहैया,

अछु जीनि के अटबैया ।

जे जीनि के मोल बुझैया,

सासुर ओकर जान ल लैया ।। ११ ।।

समस्या नै मात अश्लीला के,

समस्या पूरा भारिषियमे ।

दहेज स बचाऊ नारी के,

नारीक जीनि बड संघषयमे ।। १२ ।।

वि भूषण पाठक

शी लक्ष्मी चौरी ,कश्यपक सम्मान मे

ऊ जे क' देलखन

उठानी मे

की ्रि क' सकबीही जनिनी मे?

कोन जोकरक िहर चरचा ऐ ठाम

बहुि दम छै हुनकर कहानी मे

की भाि की अभाि की परभाि कश्यौ

बूझ पेबही ऐ अन्नगानी मे?

हजार-लाख मे

एकोटा ने ईमानदार रहै

सौ मे सौटा श्रियकजीक कोटेदार रहै

भीजल चीन्नी रहै गहुम बोरापार रहै

जेहल मे जीभ पेट िना मे अरफर रहै

दै मुटी सँ लै लोपेलोप एहने ई कारोबार रहै

ऐ अलाटि कमीली क सब अस्सेदार रहै

अली छल एक रिर अप्पन जमीन

अमअया सँ अस्फी कि भाषाक कालाबजार रहै

डहकन

जिं खोड़बौ ओं गड़ि

गरमी मे आथ जाड़ मे बफयसन लागी

नोचि नछोरि भमोरि ने फालू

जिं जिं छूँ ओँ ओँ दागी

भगेँ खेहाड़ि ने जाले अछेँ

अन किं दूरे सँ गरि-गारि काटी

खटा चूक्क

दोसरक खुशी देखि हुनकर मोन भ' जाइ छैन खटा चूक्क

दोसर के मुसअयाइ हुनकर अल मे उठै छैन हुक

दोसर के हअयाइ देख हुनकर पाअ अएक सुखै छैक

अएक ओ सुखा के कसौझी भेल जाइ छैन

पूरा टोल गी गाबै रहै आ हुनकर दा को रहै

पुरा गाम खुशी सँ हश्चर रहै केलि हुनकर मोन पाली जँका कारी
भेल रहै

हयौ नीचचे अरबाक होए ि भरल-पुरल अर

झूल भ' अरबै ि अओ छुअि नइ छुअि.....

मीर्-2

एना दोस्ी के जुआ गीज मीर्

कखनो दुश्मनो पर पसीज मीर्

ढोलहा देने कसम अश्या केहन

दम िनाइयौ कुनो छै चीज मीता

एना जे करबै ददक अजापन

कम कहनैये छै भिज मीर्

हृष्यर

हृष्यर खूब हृष्यर रहै

आ लाल खूब टक्क लाल

मुदा हृष्यर जे कनेक कष्याइ रहै

आ लाल जे खूनमाखून होइ रहै

सेहो देख्ख लेख्खयै ऐ बेर गाम मे

झिना ऊज्जर मे खूब टीनोपाल रहै

आ सेठबा सब खूब मालामाल रहै

मुदा उजरका आब बेदाग नइ बचलै

सेहो झख लेख्खयै ऐ बेर गाम मे

पीयर ने हृष्यदेल रहै ने बसंी

पाकल जे सैख गेल रहै

से चख्ख लेख्खयै ऐ बेर गाम मे.....

बहुि अछु धीदा भ' गेल रहै

आ अछु धीदा हेबाक लेल ियार रहै गेट पर

सबसँ पञ्चने मुंहक मैथिली

आ ईसरगि,डरकडोश्च ,बिी,माला

लागैि रहै नइ रहैि देह पर कुनो सूि

खरखर सुभाकि क' सनि पर

बरसैि रहै चाशनी ला मौि

आ जे मोन मे रहै

से ठोर पर नइ रहै

मिम आदशयनुका रहलै

भगििी घरक कुनो िखा मे

सपना सब भकुआयल -भूअिआयल

अिि ईच्छाक िर बहैि रहै पूरा देह

यियपलापी

यियपलापी

घनघोर षडयंतकारी

जे श्खै छथिन बडड नीक

ओ क' गेलखन ?

सुर आ असुर दूनू के देलासा दए ला

कथीं , कहानी , आलोचना

ब्लॉग , पञ्चाका , श्कीबाश् सँ सम्पुष्ट

ओ युं मनीश् क' चश्च गेलखन

हुनकर अशुभ णिणी अमंगलकारी छाया

नइ देखाइछ ' मोन श्कदनदन कर' लागै अश्क

ऊ छथिन चाश्च चलै लेल

आ हमहूँ छी हुनकर चाश्च श्गाड़बाक लेल

हे ऊपर सँ हश्यर आ अंदर सँ सोश्च-घैश्च्यार

अहाक फू-फा नइ सुनै छी ' कान नोच' लागै अश्क

अहाक दुष्ट सोच अश्क

खिने हमहूँ छी

अपने क'छी श्रियान लगेने ?

झाबाद

झाबाद रहै ,अशाबाद रहै

यादबाद रहै ,मंडलाबाद रहै

आ आंह सँ पसनि के सुसमाद रहै

खिने अशिला अंदाबाद रहै

बाल कवी- 'क'

'क' ँ कवि रे इएह बेराणी

"हमरि कवी ब ँ भाणी"

कह कह हिहवड कखवथ खे णी

'ग' हवयि कच ि गेनहाणी

'ि' ँ रिथम चलै कन-वि

'ड' ँ क न नइ कछुओ ने बा

बाल कवी - रानून

पकल बुटर ुर ज भगानि
 बाबू हौ दादा हौ ककलै णि
 खिने हकै ही रचान
 द्र ि बुटर दक्कण अडिरान
 किक क्हरालय ई बलानि
 कहै नहाबू खेि बथान
 ि ि बुटर पछुआ वकिभ
 देखै की छे रालदह च भ
 चारि बुटर दक्कनहा थान
 हर ने देखकयै हे भगानि
 एलनीन न बुटर नइ गान
 भीज -भीजा जुड़ा बहलरान

बाल कवी- नूनीआ नून

ऊ एथुन
 ब आबै लेल
 दुकाया के देखाबै लेल
 नूनीआ नून
 ऊ एथुन
 पाि क्काछाबै लेल
 खाए ने लेल खुआबै लेल
 क िआ क
 ऊ एथुन

की खि उठाबै लेल?
बाकि लकड़ी लगाबै लेल
रान िआ रान

बाल कर्वाँ- ब्लेक हल

चाकि छै की गल छै
नार एकि ब्लेक हल छै

बड़का दाँी गह नक्त्त कें
खलै बहक पल छै
नार एकि ब्लेकहल छै

कक्कय है ई िगि िगि
आब ई उजलि टल छै
नार एकि ब्लेक हल छै

बड़ निति बड़ बेशी आकषण
की बूझयै हौ झल छै
नार एकि ब्लेकहल छै

पण्णि कुमार झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड नई दिल्ली

अलर - बलर

माझक नौकर हम नै बुझी

आटा चोकर हम नै बुझी

खेल बुझौअल मे छी पारंगि

अपन अनकर हम नै बुझी

आमक गाछी दैड़ बे करब

खेकि झुझ िड़ बे करब

कबै मागुर के लालच मे

बंसी ल क बैसबे करब

बाबा गेलखन हरिही पर

कका गेलखन सुनिही पर

गमी छुटी मे आम क गाछी मे

बैसल छी हम ओगरिही पर

बाबू के नै पखन छैन लालू

कहै छै ओ अक्क बडड चालू

आंगन मे मा बडी काल सं

पका रहल अक्क सहजन-आलू

हरिहा सब हर जोँ अक्क

चरिहा सब मुंह दूसै अक्क

बैट-बाल ल क छौडा सब

चौका-छका खूब जड़ै अक्क ।

कंसार क भूँजा फ़ाकबे करब

एम्हर-आमहर झाकबे करब

दाय-माय के डेरबय खाश्चिर

कुकूर जेका भुंकबे करब

मा के बाँ सेहो बुझब

सोझा इस्कूल जेबे करब

पाश्चा पीब लेल मुदा दू अनट

चापा कल पर रकबे करब

कोठा पर हम सुबिे करब

मना करय पर र सबे करब

इस्कूल क सबक याद कर लेल

भोरका पहर उठबे करब

पीसा कहै छै पायलट बआह

मामा कहै छथि डाक्टर बआह

आनका जे कहबा क कहौं ग

हम जे चाहै अ से बनबे करब

आर अछु बनीं नि नै बनी

आक मनुख हम बनबे करब

श्रीन्देशर ठाकुर

सामा

भस्त्र साल ओ रहली सासुर

नैहर आब बजाबू

एलै देख्यौ खरनाके श्रन

सामा चलू बनाबू

छोटकी बस्त्रनो हंस बनाबू

जेठकी श्रदी चकेबा

हम बनाबी ढोलश्रयासब

भौजी बनबू चुगला

एलै केहन सोहाबन रश्रिया

चकमक करै चंगेरा

शिखपर चार श्वस पसरल

सामा दाइके डेरा

गैयौ सबश्चओ गी गोसाओन

कश्यौ शी गणेश

भैया श्मि' सालो-साल

करश्मिन् कृपा महेश

समा-चकेबा खेलू बश्चना

नीक गीसिब गाबू

भैया घर हो अननि सोना

चुगलाके मुंह झरकाबू

लालदेहि कामि

कधीं- उफयनाम

एकटा रहथी मसोमां शान्थी
 श्वनक काज छलआ अशान्थी
 जाश्च श्वन श्वनकोसँ झगड़ नश्च हुअ
 से श्वन अशुं रश्च जाइक
 ई भाय लगाकए
 श्व या-शपि खाथी
 आ गाश्च फज्जथी सेहो
 भाइये लगाकऽ दैनह
 कोनो गप्प सरकामे सेहो
 बजै-बजै कहथीन भैखौकी
 नीक गिलालापमे सेहो कईबेर
 बाजथी भैखौकी
 भश्च गामक लोक
 जश्चजाथी आ पुरखो
 हुनका देखिश्च बाश्च उठै- भैखौकी ।
 नीक गिलालापमे सेहो कएक बेर बाजथी- भैखौकी ।
 आब ई श्वनका मादे रेबाज र । रीयाज भऽ गेल गेल छल ।
 सभ श्वयो हुनका मुहोपर
 करए सम्बोनि हेयै भैखौकी
 आब हुनका श्वयो अलोलागिली नश्च
 चाल पारय, हेगै भैखौकी... ।
 हुनक पश्चां उफयनाम आ उपनाम भऽ गेल रहआ भैखौकी ।

हुनक मृत्तु भोजमे श्रमन श्रख्खा पंचो बजला
आ बाश्चको बाजल-
भैखौकीक भोज नीक बनल, बड़ नीक । ”

राम पीं पासनि

कभीं- भूकि बाप अशाच उफयआशारामक जोड़ा

लगले भूि अशाच पे

पि नइ छल कोन देी

आएल गुनी ओजहा

दि बौरहि जोगी ।

देल मापिर हा

कानमे पोरो डाँट

भगलै गै छुहिरी

पकैड कए ठोकबौ काँटी ।

देलक भूि झमाश्च

मोचाश्च पकड़लक गटा ।

पीठपर एँठ घुमाय

बजल कश्यौ की पढ़ा ।

ओजहा भेल अकि

दृश्य भऽ गेलै अचम्भा

सौसे गामक लोक

देखलक भूकि दंगा ।

भुइयाँ देलक पटैक

देमए लगलै गरदश्चाँ ।

एमहर-ओमहर देख

भूि मारै पटकआयौ ।

भूकि देख अदड
घुसैर गेल िरि-मंरि ।
दौडै जा हओ बाप
काज नइ केलकए जंरि ।

मोटका लाठी हाि
नेने संग आएल भँगीि ।
भूकि देख आकि
खूब मिसाएल भँगीि ।

कश्क कऽ पटकल डाँग
जेना हो हमरे लागल
बाप-बाप आआयाएल
लोक छहो-श्कते भागल ।

भूकि बाप अशाच
श्कएँ िँ आनहले हमरा ।
नइ भगिँ िँ आब
खिन हम कटबौ चमरा ।

भेल भूि सबि
भँगीि गटा पकड़लक ।
लेनश्क चश्क गेल घर

खिन अलैया ठोकलक ।

कोय बजै छल िह
भँगीणि बड़ मंश्रिया
कोय कहै भक लच्छ
भँगीणि छै अगिअया ।

ढोअयाक मंरि नै
कअयो अयाय भँगीणि
झारए लागल भूि
अलैया ठोअ भँगीणि ।
घन्टा बीलि बाद
खिन बहराएल भँगीणि
नरा खोलैि अकसल
बाहर आएल भँगीणि ।

भूि छेलै बड़ ढीठ
मोछ टेरेि बाजल
नै केकरो सि बाि
खिन हमरेसँ भागल ।

भगलै भूि पेि
घरसँ अकसल कअयाँ
निने नमहर घोघ
पैरमे बजैए पैजअयाँ ।

आकैसि लगलक गोर
 खुश भऽ गेलै भँगी
 ठोकलक माहि हा
 कँकैयाँ जुग जुग जी।

छौड़ा केए नरहेर
 रञ्ज-रञ्ज यिंग कसै छल
 िहर जनौ आरिका गप
 मुँहके देख हँसै छल।

भँगी भेल महं
 बआ गेल मुँखक ओजहा
 एनए गामक कृष्ण
 बजि के ओकरा सोझहा..?

बेसी भेल समिक
 चेला जर-जनानी
 भँगी मस् आख
 को नै आना-कानी।

भँगी चलै बाट
 पुकी मरै केए छौ
 भेल भँगी भगान
 आशारामक जोड़ा।

अशन कारीगर

इस्कूल

इस्कूल जाइ छी हम
झोड़ामे कॉपी अकब नेने
स्कूल बैगमे अकन रखने
कूदै फंगै हँसै-गबै स्कूल जाइ छी हम.

टेम-टेमपर पढ़ब-अखब
अ आ आ ई हम सीखब
पैरे-पैरे, स्कूल गाड़ीमे बैअ
हमहूँ आई स्कूल जाएब.

अपने मने कस्यो अंसरे उठब
सभ सं पञ्चने मुहँ हाँ अिअब
भूख लागि ि जलखै करब
फेर कअ कल पढ़ै लेल बैसब.

इस्कूलक घंटी हमरा शोर पारै
मास्टरजी ककि नीक अखस्सा सुनाबै
नहा-सोनाक' छी हम ियार
ममी डैडी हमरा स्कूल द' आबै.

अकबमे ककि नीक डारी पारल
सीलेट भटापर अखब नीक लागल
देश्व देश्व हम डारी परलौहं

रंग भरल सफेच केहेन हँसी लागल.

मास्टरजी हमरा कानमे कहलैन
पढ़ बौआ अ आ, सी डी ई
आई हहूँ अकर आखलौहं
हँसी लागल केहेन खी खी खी

आई किकि लोक इस्कूल एलै
श्रिया-पूि सभ हँसले-कनलै
सभ अली फेर पढ़ै लगलै
मास्टरजी के किकि नीक लगलै.

इस्कूलमे नबका जान सीखब
पढ़ब-आखब आ खेलब-पूिब
दोस मझम संग सलाह आ झगड़ा
किकि नीक अकिबी ककहरा.
जखैन जेहेन नीक लागल
फेर खेलेबो पूिबो करै छी हम
अपने मने आ की होमकियबनने
इस्कूल जाइ छी हम.

सुशानि झा "अलिच्छा"

कश्मीर- नेनपन

मन होइया फेर सँ नेना भ' जाय ।
 माय'क कोरा मे हँसी आ खेलाय ।
 बाबू केर कनहा, मइया केर माझश ।
 बाबाक पढ़ल श्लोक फेर सँ सुआ आय ।
 मन होइया फेर सँ नेना भ' जाय ।
 माय'क कोरा मे हँसी आ खेलाय । ।
 नानी केर श्वस्सा, नाना केर दुलार,
 मामा केर िपड़ी,मामी केर मारि ।
 हाँ महक चुसनी,पैर महक फुदना,
 मोन होइया फेर सँ भेट जायि आय ।
 मन होइया फेर सँ नेना भ' जाय,
 माय'क कोरा मे हँसी आ खेलाय ।
 नश्च भोजन केर आनी,नश्च ओछौन'क झमेला ।
 हम नश्च बसरलौ घुआं मुआं िला खेला ।
 जार'क रौद मे , बीचे आंगन मे,
 कपड़ा िला झूला मे फेर सँ झूझ जाय ।
 मन होइया फेर सँ नेना भ' जाय ।
 माय'क कोरा मे हँसी आ खेलाय ।
 हे यौ #भोला बाबा,हे यौ #औघड़दानी ।
 माग'य अहा सँ "अलिच्छा" अजानी ।
 जँ अछु देब ि द' अ #नेनपन,
 फेर सँ एक बेर हम नेना भ' जाय ।

मन होइया फेर सँ नेना भ' जाय ।
माय'क कोरा मे हँसी आ खेलाय ।